मुस्तनद-मुदल्लल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

5 तफ़सीर इब्ने कसीर

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابن کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुद्दीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द 5

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

नाशिरान-ناشران

شعبہ نشر واشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

بِسْـــــمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيم

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वगैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

मुस्तनद-मुदलल्ल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابنِ کثیر

तफ़्सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुद्दीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

नाशिर-ناشر

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

شعبہ نشر و اشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित है

इस किताब के प्रकाशन सबंधी सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई व्यक्ति/संस्था/प्रकाशन आदि इस किताब को मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के ख़िलाफ़ कठोर क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्ज–ख़र्च के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षैत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब: **तफ़सीर इब्ने कसीर**

मुरत्तिब (अ़रबी): **एमामुद्दीन इब्ने कसीर (रह.)**

उर्दू तर्जुमा: **मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी (रह.)**

हिन्दी तर्जुमा: **दारूत–तर्जुमा, शोबा नश्रो इशाअ़त**
जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर (राज.)

तस्हीह व नज़्रे सानी: **मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी, 97857-69878**

लेज़र टाइपसेटिंग: **मोहम्मद अकबर, 85030-26306**

मेनेजिंग डायरेक्टर: **अली हम्जा, 82338-55857**

प्रिण्टिंग: **अनमोल प्रिण्टस, बासनी इण्डस्टील एरिया,**
9414131426 जोधपुर (राज.)

बाइंडिंग: **मो. शाहिद, कमाल बाइंडिंग हाउस,**
9351668223 जोधपुर (राज.)

तादाद पेज: 576

प्रकाशन (प्रथम संस्करण) जिलक़िदा 1438 हिजरी (अगस्त 2017 इस्वी)

ता'दाद: 1100 कॉपी क़ीमत: 5000/– रुपये

प्रकाशक

शहरी जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर

सूबाई जमीअ़त अहले हदीस, राजस्थान

फेहरिस्ते-मज़ामीन

तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द : 5

सूरह बनी इस्राईल की फ़ज़ीलत	13
आयते मेअराज की तफ्सीर	13
क्या आप (ﷺ) ने शबे मेअराज अल्लाह तआला को देखा?	16
वाक़िया मेअराज और इमाम अहमद (रह.) की बयानकर्दा रिवायत	16
वाक़िया मेअराज और अबूदाऊद की नक्लकर्दा रिवायत	17
इब्ने जरीर (रह.) की रिवायत	18
एक और रिवायत का ज़िक्र	19
इब्ने अबी हातिम की रिवायत	19
एक और रिवायत का ज़िक्र	21
मुश्रिकीन ने वाक़िया मेअराज की तस्दीक़ न की	22
इमाम अहमद (रह.) की नक्लकर्दा एक और रिवायत	22
दलाइलुन्नबुव्वा पर लम्बी रिवायत	23
इमाम तिर्मिज़ी (रह.) की रिवायत	27
एक और रिवायत का ज़िक्र	28
एक और रिवायत	29
जुज़्ए हसन बिन अरफ़ा की रिवायत	30
इमाम अहमद (रह.) की एक और रिवायत	31
एक लम्बी रिवायत का ज़िक्र	32
बैहक़ी की रिवायत	37
दूध और शहद की वज़ाहत	40
आप (ﷺ) का मेअराज जिस्मानी था या रूहानी?	40
अबू नुऐम (रह.) की रिवायत में एक फ़ायदा	41
वाक़िया मेअराज के बाद हज़रत मूसा (ﷺ) का ज़िक्र	44
बनी इस्राईल की दो बार सरकशी	44
बैतुल मक्दिस पर क़ब्ज़ा	45
इंसान की बेसब्री का बयान	47
दिन और रात अल्लाह तआला की क़ुदरत की दलील	47
चाँद के बारे में एक सवाल	48
हर कोई अपना नामा-ए-आमाल देख लेगा	48
लफ्ज़े ताइर का मअनी	49
फ़र्मांबरदारी में इंसान का अपना ही फ़ायदा है	50
मुश्रिकीन के बच्चों का क्या अंजाम होगा? नवीं हदीस	54
मज्कूरा मसला में हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) की वज़ाहत	55
मोमिनों के फ़ौत हो जाने वाले बच्चे कहाँ होंगे?	57
अल्लाह तआला का हुक्म आने का मफ्हूम	58
अल्लाह तआला ख़ूब देखने वाला है	59
तालिबे दुनिया का अंजाम	60
आख़िरत में लोगों के मुख़्तलिफ़ दरजात होंगे	60
अल्लाह तआला वहदहू ला शरीक लहू है	61
वालिदैन का मक़ाम और उनके साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म	61
वालिदा का हक़	63
तौबा करने वालों के लिए हुक्मे इलाही	63
सिलारहमी का हुक्म	64
इसराफ़ और फ़िज़ूलख़र्ची से बचने का हुक्म	65
ख़र्च करने में दरम्यानी राह इख़्तियार की जाए	66
तमअ (लालच) से बचो	67
ग़रीबी और अमीरी अल्लाह तआला के हाथ में है	67
लोगों तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का रोज़ी देने वाला अल्लाह है	68
ज़िना (बदकारी) कबीरा गुनाह है	68
नाहक़ क़त्ल हराम है	69
क़ातिलीने उस्मान (रज़ि.) का मामला	69
यतीम का माल न खाओ	71
नाप-तोल में कमी न करो	71
बग़ैर इल्म के गवाही न दो	71
तकब्बुर के साथ चलना मना है	72
आजिज़ी की फ़ज़ीलत	72

अल्लाह तआला की कोई औलाद नहीं	74
हक़ के दलाइल वाज़ेह हैं	74
हर चीज़ अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करती है	75
दिलों पर पर्दे का मफ्हूम	78
सरदाराने कुरैश छुपकर हुज़ूर (ﷺ) का कुरआन सुनते थे	79
मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना	81
बातचीत मुहज़्ज़ब होनी चाहिए	82
मर्तबों में फ़र्क़	83
ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों का ज़िक्र	83
जिन्हें लोग मअबूद समझते हैं वह ख़ुद अल्लाह की इबादत करते हैं	84
मुंकिरीन के लिए तबाही है	85
निशानियाँ देखने के बाद ईमान न लाना अज़ाब की वजह है	85
निशानियाँ लोगों को डराने के लिए होती हैं	86
मेअराज का सब मंज़र आप (ﷺ) ने आँखों से देखा	87
इब्लीस की हठधर्मी	89
शैतान को मोहलत दी गई	89
माल और औलाद में शिर्कत का मफ्हूम	89
कश्तियाँ तिजारत का ज़रिया हैं	90
समुन्द्रों में भी कारसाज़ अल्लाह ही है	91
समुन्द्र में डुबोने वाला ख़ुश्की में भी धंसा सकता है	91
तमाम मख़्लूक़ात पर इंसान को फ़ज़ीलत	92
इंसान फ़रिश्तों से भी अफ़ज़ल है	93
क़ियामत के दिन इमाम से क्या मुराद है?	94
अहले हदीस की फ़ज़ीलत	94
कुफ़्फ़ार बरोज़े क़ियामत अंधे होंगे	94
अल्लाह तआला ही पैग़म्बर (ﷺ) को दीन पर क़ायम रखता है	95
जब यहूदियों ने नबी (ﷺ) को शाम जाने का मश्वरा दिया	96
कुरआन में पाँचों नमाज़ों का ज़िक्र	97
कुरआनल फ़ज्र का मअनी	98
पैग़म्बर (ﷺ) को नमाज़े तहज्जुद का हुक्म	98
मक़ामे महमूद और हुज़ूर (ﷺ) के फ़ज़ाइल	99
सिफ़ारिश का बयान	99
मक़ामे महमूद के बारे में मज़ीद अहादीस	100
सिफ़ारिश की लम्बी हदीस और मक़ामे महमूद	100
आप (ﷺ) को हिज्रत करने का हुक्म	106
ग़ल्बा-ए-दीन अल्लाह के हुक्म से मुम्किन है	106
हक़ क़ायम रहने वाला और बातिल मिटने वाला है	107
कुरआन मोमिनों के लिए शिफ़ा है	107
इंसान की ख़ुदग़र्ज़ी	108
जब आप (ﷺ) से रूह के बारे में पूछा गया	109
कुरआन यक़ीनन मोजिज़ा है	112
मुश्रिकीन की अजीब अजीब माँगें	113
अक्सर लोग पैग़म्बरों के इंसान होने की वजह से ईमान न लाए	117
पैग़म्बर (ﷺ) का इंसान होना अल्लाह तआला का इंसानियत पर अज़ीम एहसान है	118
पैग़म्बरों की सच्चाई का बड़ा गवाह ख़ुद अल्लाह है	118
कुफ़्फ़ार दोबारा जी उठने के क़ाइल न थे	120
अल्लाह तआला ने ख़ज़ानों का मालिक किसी इंसान को क्यूँ न बनाया?	121
हज़रत मूसा (ﷺ) के नौ मोजिज़ात	122
कुरआन हक़ है	125
कुरआन सुनकर मोमिनों की कैफ़ियत क्या होती है?	125
अल्लाह तआला के अस्मा-ए-हुस्ना के वास्ते से दुआ करो	126
तफ्सीर सूरह कहफ़	131
सूरह कहफ़ की फ़ज़ीलत	131
अल्लाह तआला ने कुरआन को ज़रिय-ए-नूर बनाया	133
सूरह कहफ़ का शाने नुज़ूल	133
दुनिया की ज़ीनतें ख़त्म होने वाली हैं	134
अस्हाबे कहफ़ का ज़माना	138
कुछ ग़ार के बारे में	140
अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता	142
तीन सौ नौ साल के बाद अस्हाबे कहफ़ बेदार (जगे) हुए तो?	143
अस्हाबे कहफ़ का वाक़िया मरकर जी उठने की वाज़ेह दलील है	144
क़ब्र पुख़्ता न बनाई जाए	146

अस्हाबे कहफ़ की गिनती	147
हर काम से पहले इंशाअल्लाह कहना चाहिए	147
अस्हाबे कहफ़ के ठहरने की मुद्दत	149
कमज़ोर सहाबा की फ़ज़ीलत का बयान	150
अल्लाह तआला के ज़िक्र की फ़ज़ीलत	151
जहन्नम की ख़ोफ़नाकियाँ	152
फ़र्मांबरदारों के लिए जन्नतों की नेअमतें	153
दो बाग़ वाले आदमियों का क़िस्सा	154
दुनिया के ख़त्म होने की मिसाल	158
बाक़ियाते सालिहात क्या हैं	159
क़ियामत की होलनाकियों और हिसाबो किताब का ज़िक्र	162
शैतान इंसान का दुश्मन है	165
अल्लाह तआला का कोई वज़ीर मुशीर नहीहै	166
क़ियामत के दिन मुज्रिम कहीं भाग न सकेंगे	167
इंसान बड़ा झगड़ालू है	168
लोग अज़ाब देखने का मुतालबा और हक़ का इंकार करते हैं	169
बड़ा ज़ालिम कौन	170
हज़रत मूसा (ﷺ) और ख़िज़्र (ﷺ) का वाक़िया	171
बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत	172
हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) और मूसा (ﷺ) में बातचीत	177
हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने कश्ती तोड़ दी	178
हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने एक बच्चे को क़त्ल कर डाला	179
हज़रत मूसा (ﷺ) की मअज़िरत	180
हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) का दीवार तअमीर करना	181
कश्ती यतीम बच्चों की थी	181
यह बच्चा काफ़िर और सरकश बनने वाला था	182
दीवार दो यतीम बच्चों की थी	183
हज़रत ज़ुल क़रनैन का वाक़िया	186
ज़ुल क़रनैन कौन हैं?	186
ज़ुल क़रनैन की वजहे तस्मिया	187
ज़ुल्क़रनैन सूरज ग़ुरूब होने की जगह पहुँचे	188
सूरज कहाँ ग़ुरूब होता है?	188
ज़ुल क़रनैन सूरज उगने की जगह पहुँचे	190
सूरज कहाँ से निकलता है?	190
ज़ुलक़रनैन दो दीवारों के पास पहुँचे	191
ज़ुल्क़रनैन ने सीसा पिलाई हुई दीवार बनाई	192
याजूज माजूज और दीवार	193
क़ियामत के क़रीब यह दीवार चूरा चूरा हो जाएगी	195
जब सूर फूँका जाएगा	195
कुफ्फ़ार को पहले जहन्नम दिखाई जाएगी	197
आमाल के लिहाज़ से ज्यादा घाटे में कौन हैं	197
नेक लोगों की मेहमानी	199
सात समुन्द्रों की स्याही भी रब की तअरीफ़ नहीं लिख सकती	199
तफ्सीर सूरह मरयम	206
हज़रत ज़करिय्या (ﷺ) का ज़िक्र	206
लड़के की ख़ुशख़बरी पर हज़रत ज़करिय्या (ﷺ) का तअज्जुब	210
हज़रत ज़करिय्या (ﷺ) का निशानी तलब करना	210
हज़रत यहया (ﷺ) की ख़ूबियाँ	211
घबराहट के तीन औक़ात	212
हज़रत मरयम (ﷺ) का ज़िक्र	213
जिब्रईल (ﷺ) इंसानी शक्ल में आये	214
हज़रत मरयम (ﷺ) खजूर के तने के पास चली गईं	216
हज़रत मरयम (ﷺ) के लिए इन्आमाते इलाही	218
मरयम (ﷺ) ईसा (ﷺ) को लेकर आती हैं	220
हज़रत ईसा (ﷺ) ने माँ की गोद में बोलकर गवाही दी	222
हज़रत ईसा (ﷺ) का असल वाक़िया	224
ईसाईयों ने दीने ईसा को बदल दिया	225
ज़ालिम क़ियामत के दिन सब कुछ देख लेंगे	227
हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की अपने वालिद से बातचीत	229
वालिद का बेवक़ूफ़ाना जवाब	230
इब्राहीम (ﷺ) को इस्हाक़ और यअक़ूब (ﷺ) अता हुए	231
हज़रत मूसा (ﷺ) का ज़िक्र	232
हज़रत इस्माईल (ﷺ) वादे के पक्के थे	233
हज़रत इदरीस (ﷺ) के बुलंद मर्तबे का ज़िक्र	235
अम्बिया (ﷺ) पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल का तज़्किरा	236

अम्बिया (अलैहि.) की नस्ल	237
नाअहल जानशीन	238
मोमिन जन्नतों के वारिस होंगे	240
फ़रिश्ते अल्लाह तआला के हुक्म के बग़ैर नहीं उतरते	242
अल्लाह की क़सम महशर बरपा होगा	244
हर कोई जहन्नम पर से गुज़रेगा	245
पुलसिरात का ज़िक्र	246
कुफ्फ़ार मोमिनों से मज़ाक़ करते हैं	249
गुमराह और हिदायत याफ्ता लोग	250
आस बिन वाइल की सरकशी	251
क़ियामत के दिन झूठे मअबूद अपनी इबादत करने वालों से रिश्ता न होने की बात करेंगे	253
परहेज़गार अल्लाह तआला के मेहमान होंगे	254
ज़ाते इलाही पर बहुत बड़ा बोहतान	256
अहले तौहीद को अल्लाह की मुहब्बत मिलेगी	258
तफ्सीर सूरह ताहा	262
अल्लाह तआला की सिफ़ाते आलिया	263
हज़रत मूसा (अलैहि.) का वाक़िया	266
हज़रत मूसा (अलैहि.) को नबुव्वत अता होती है	266
मूसा (अ.) के असा (लकड़ी) का ज़िक्र	268
हज़रत मूसा (अलैहि.) के मोजिज़ात	270
हज़रत मूसा (अलैहि.) के तफ्सीली हालात	273
हज़रत मूसा (अलैहि.) मदयन में	285
तब्लीग़ नर्म लहजा से करो	286
अल्लाह के सिवा किसी से न डरो	287
तमाम सूरतें अल्लाह तआला ने बनाई है	290
हर चीज़ का इल्म अल्लाह को है	290
सब नेअमतेंअल्लाह तआला अता करता है	291
फ़िरओन ने मोजिज़ात को जादू कहा	292
फ़िरओन ने जादूगर बुलाकर मुकाबला करने की कोशिश की	293
जादूगरों पर हज़रत मूसा (अलैहि.) की बरतरी	295
जादूगर ईमान ले आये	296
जहन्नम में मौत न आएगी	298
अमले सालेह करने वाले के लिए जन्नत	298
हज़रत मूसा (अलैहि.) का क़ौम को लेकर रात को निकलना	300
जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब उतरे वह तबाह हुआ	301
क़ौमे मूसा की आज़माइश	303
झूठे मअबूदों की पूजा एक फ़ित्ना	305
हज़रत मूसा (अलैहि.) की हारून (अलैहि.) पर नाराज़ी	305
सामेरी से हज़रत मूसा (अलैहि.) की बातचीत और बद्दुआ	307
क़ियामत के दिन अपना अपना बोझ उठाना होगा	308
जब सूर फूँका जाएगा	309
पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे	310
क़ियामत के दिन सिफ़ारिश का बयान	311
कुरआन बरहक़ और अल्लाह तआला की वही है	312
इंसान ख़ता (ग़लतियों) का पुतला है	314
हज़रत आदम व हव्वा (अलैहि.) को जन्नत से निकाला गया	317
आख़िरत का अज़ाब बहुत सख्त है	318
पहली क़ौमों का ज़िक्र	318
सुबह व शाम के अज़्कार व दुआएँ	319
दुनिया का लालच न करो	320
घरवालों को नमाज़ की ताकीद करना	321
कुफ्फ़ार, पैग़म्बर (सल्ल.) से मोजिज़ा मांगते हैं	322
तफ्सीर सूरह अम्बिया	326
क़ियामत क़रीब आ गई है	327
तमाम रसूल मर्द और बशर (इंसान) थे	330
कुरआन नसीहत है	331
आसमान की पैदाइश अल्लाह तआला की अजीब कुदरत है	332
अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूद नहीहै	334
मअबूदाने बातिला (झूठे मअबूदों) की हक़ीक़त	335
कुफ्फ़ारे मक्का की बोहतानबाज़ी	336
अल्लाह तआला की कुदरत का तज़्किरा	337
मौत अटल हक़ीक़त है	340
कुफ्फ़ार का मज़ाक़	341
क़ियामत सबको आजिज़ कर देगी	342
पहले लोग भी रसूलों से मज़ाक़ करते रहे	342
कुफ्फ़ार और अल्लाह तआला की कुछ निशानियाँ	344

फ़ज़ाइले ज़िक्रे ला इलाहा इल्लल्लाह	344
तौरात की फ़ज़ीलत	346
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) बचपन से ही हिदायत याफ्ता थे	347
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) बुत तोड़ते हैं	349
जो नफ़ा नुक्सान का मालिक नहीं वह मअबूद नहीं	351
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) पर आग का ठण्डा होना	352
मुल्के शाम और मक्का मुकर्रमा	354
हज़रत नूह (عليه السلام) की दुआ	355
हज़रत दाऊद और सुलेमान (عليه السلام) का एक फ़ैसला	357
हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के ताबेअ चीज़ें	360
हज़रत अय्यूब (عليه السلام) की बीमारी, सब्र और दुआए सेहत	361
हज़रत इस्माईल (عليه السلام) और इदरीस (عليه السلام) और ज़ुलकिफ्ल (عليه السلام) का ज़िक्र	365
हज़रत यूनुस (عليه السلام) का ज़िक्र	367
हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) का वाक़िया	371
हज़रत मरयम (عليها السلام) का ज़िक्रे ख़ैर	372
उम्मत एक, रब एक	373
याजूज माजूज का तज़्किरा	373
मज़ीद अलामाते क़ियामत का ज़िक्र	376
मअबूदाने बातिला का अंजाम	377
आसमान लपेट दिया जाएगा	380
ज़मीन के वारिस अल्लाह के नेक बंदे ही होंगे	381
अल्लाह एक है	383
तफ्सीर सूरह हज्ज	387
क़ियामत की होलनाकियाँ	387
मैदाने महशर	388
अल्लाह तआला के बारे में बोहतानबाज़ी	392
इंसानी पैदाइश के मुख़्तलिफ़ अदवार	392
पैदा होने से पहले तक्दीर का लिखा जाना	392
इंसान की ज़ईफ़ुल उम्री	393
मरने के बाद ज़िन्दा होने की एक और दलील	394
जाहिल मुक़ल्लिदों की हालत	395
मफ़ाद परस्त लोगों का ज़िक्र	397
हर चीज़ अल्लाह को सज्दा कर रही है	399
मोमिन और काफ़िर का इख़्तिलाफ़	402
जन्नतियों पर इन्आमात	404
मस्जिदुल हराम से रोकना बड़ा गुनाह है	405
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) और बैतुल्लाह	408
शआइरल्लाह तक्दीसे ईमान की निशानी है	413
क़ुर्बानी के मसाइल	414
क़ुर्बानी की अहमियत	417
क़ुर्बानी के फ़ज़ाइल	418
तक्वा की फ़ज़ीलत	422
जिहाद की इजाज़त और उसका पसेमंज़र	425
अम्बिया (عليهم السلام) को झुठलाने का अंजाम	429
क़ियामत के दिन की मिक्दार का बयान	430
वही इलाही में बातिल की मिलावट नहीं हो सकती	433
क़ुरआन मजीद और कुफ्फ़ार की हालत	436
हिज्रत और जिहाद का सवाब	436
रात और दिन का आना जाना	438
दोबारा ज़िन्दा होने की मिसाल से वज़ाहत	439
हर क़ौम की शरीअत का तज़्किरा	441
सबसे पहले क़लम को पैदा किया गया	442
कलामुल्लाह से बेरग्बती क़ाबिले गिरफ्त है	443
मअबूदाने बातिला की बेबसी	444
मंसबे रिसालत का हक़दार कौन?	445
इस्लाम आसान दीन है	446
तफ्सीर सूरह मुअमिनून	451
अल्लाह के नेक बन्दों की सिफ़ात	452
इंसान की पैदाइश और उसकी हक़ीक़त	456
आसमान की पैदाइश का तज़्किरा	459
चंद बड़ी नेअमतों का ज़िक्र	460
नूह (عليه السلام) और मुतकब्बिर सरदार	461
नूह (عليه السلام) को कश्ती बनाने का हुक्म	463
क़ौमे नूह (عليه السلام) के बाद आद व समूद	464
मुख़्तलिफ़ उम्मतों का ज़िक्र	465
हज़रत मूसा और हारून (عليهما السلام) और फ़िरऔन	466

हज़रत ईसा (ﷺ) की पैदाइश, अल्लाह तआला की कुदरते कामिला का इज़्हार	467
तमाम अम्बिया (ﷺ) की दावत एक थी	467
मोमिन नेक आमाल करके भी डरते हैं	470
इस्लाम बहुत आसान दीन है	471
कुरआन बेमिस्ल और बेनज़ीर किताब है	473
अल्लाह तआला के अज़ाब और कुफ़्फ़ार की हठधर्मी	477
मुश्रिकीन भी अल्लाह तआला ही को ख़ालिक़ मालिक मानते थे	479
आसमानों व ज़मीन का निज़ाम अल्लाह ही के हाथ में है	481
बुराई का जवाब भलाई से देना हिम्मत का काम है	483
बरज़ख़ और अज़ाबे क़ब्र	484
मैदाने महशर का नक्शा	486
कुफ़्फ़ार की पशेमानी (शर्मिन्दगी)	488
दोज़ख़ियों को अल्लाह तआला की डाँट	489
इंसान बेकार नहीं बनाया गया	490
मुसीबत में काम आने वाला कौन है?	492
तफ्सीर सूरह नूर	495
हद्दे रजम और कोड़ों की सज़ा	495
बदकार औरतें और बदकार मर्द	499
पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाने वाले की सज़ा	502
लिआन कब और कैसे?	503
हज़रत आइशा (रज़ि.) की पाकीज़गी और फ़ज़ीलत	507
सिद्दीक़ा (रज़ि.) की पाकदामनी का आसमानी ऐलान	515
आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) की अज़्मत का बयान	516
शैतानी राहें	519
सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का वाक़िया	520
इफ़्फ़त मआब औरतों पर तोहमत की सज़ा	521
बदकार औरतें बदकार मर्दों के लिए और सालेहा औरतें नेक मर्दों के लिए	523
घरों में दाख़िले के आदाब	525
नज़रें झुकाकर चलो	530
परदे के शरई हुक्म	532
निकाह के अहकाम	537
लौण्डियों को बदकारी पर मजबूर मत करो	539
अल्लाह तआला के नूर की ख़ूबसूरत मिसाल	541
आदाबे मस्जिद	544
काफ़िर व मुश्रिक के नेक आमाल की मिसाल	552
हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह बयान करती है	553
अल्लाह तआला की कुदरत की निशानियाँ	555
मुख़्तलिफ़ जानदारों की तख़्लीक़ का ज़िक्र	555
कामयाब और नाकाम लोग?	556
मोमिन की ज़ुबान और काफ़िर का दिल	558
अहले ईमान से ख़िलाफ़त व हुकूमत का वादा	560
आमाले ख़ैर की तर्ग़ीब	565
बग़ैर इजाज़त घरों में दाख़िले मम्नूअ है	566
क़रीबी रिश्तेदारों के घर और मुतअल्लिक़ा आदाब	569
आदाबे मज्लिस	572
हर एक की हर हरकत को वह जानता है	574

सूरह
बनी इस्राईल

سورۃ الاسراء / سورہ بنی اسرائیل

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह बनी इस्राईल - 17

आयातः 111 मक्की सूरह, पैराग्राफः10

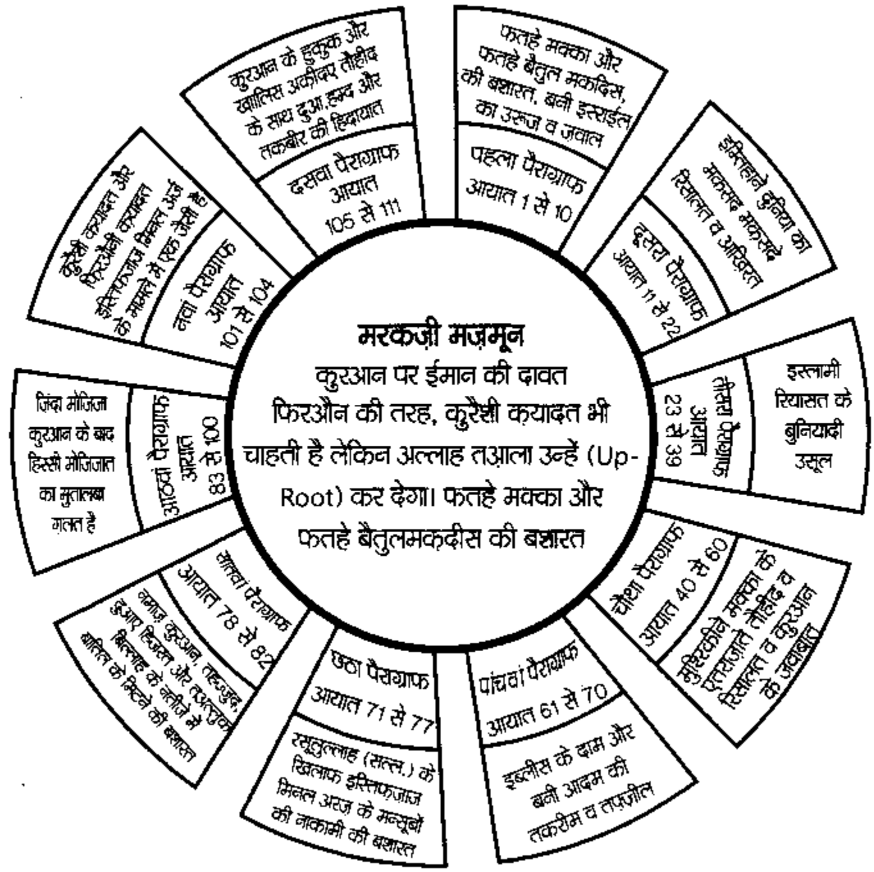

ज़मानए नुज़ूलः

सूरह बनी इस्राईल का दूसरा नाम सूरह इस्रा है।

इस्रा का मतलब रात का सफ़र है, (जो ख़ाने का'बा से बैतुल मक़दिस तक जाने और फिर लौटने पर मुश्तमिल था) ये सूरह मेराज के मौक़े पर, ग़ालिबन 12 नबवी में, हिजरत से एक साल पहले नाज़िल हुई, जब कुरैशी क़यादत रसूलुल्लाह (सल्ल.) के ख़िलाफ़ इख़राज और क़त्ल की साज़िशें कर रही थी। मेराज का सफ़र के मौक़े पर, हज़रत जिब्रील ने रसूल (सल्ल.) को मदीना मुनव्वरा भी दिखाया, जिसकी तरफ़ हिजरत का इशारा, आयत नम्बर 80 में मौजूद है। सहीह अक़्वाल के मुताबिक़ मेराज का वाक़िआ, रजब 12 नबवी में पेश आया था।

سورۃ الاسراء / سورہ بنی اسرائیل

तफ़्सीर सूरह बनी इस्राईल

सूरह बनी इस्राईल की फ़ज़ीलत : सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि "सूरह बनी इस्राईल और सूरह कहफ़ और सूरह मरयम सबसे पहली, सबसे बेहतर और बड़ी फ़ज़ीलत वाली हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल, बाब नम्बर 1; हदीस : 4708) मुस्नद अहमद में है, हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नफ़्ली रोज़े कभी तो इस तरह लगातार रखते चले जाते कि हम अपने दिल में कहते, शायद हुज़ूर (ﷺ) ये पूरा महीना रोज़ों ही में गुज़ार देंगे और कभी कभी बिलकुल ही न रखते यहाँ तक कि हम समझ लेते कि शायद आप इस महीने में रोज़े रखेंगे ही नहीं और आप (ﷺ) की आदते मुबारका थी कि हर रात सूरह बनी इस्राईल और सूरह ज़ुमर पढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब क़िराअतु सूरति बनी इस्राईल वज़्ज़ुमर क़ब्लन्नौम....: 2920; मुख़्तसरन व सनदुहू हसन; अहमद : 6/189; हाकिम : 4/434)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है"

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ
بٰرَکْنَا حَوْلَہٗ لِنُرِیَہٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّہٗ ھُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ①

तर्जुमा : "पाक है वह अल्लाह तआला जो अपने बन्दे को रात ही रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया जिसके आसपास हमने बरकत दे रखी है इसलिए कि हम उसे अपनी कुदरत के कुछ नमूने दिखाएँ, यक़ीनन अल्लाह ही ख़ूब सुनने वाला देखने वाला है।" (1)

आयते मेअराज की तफ़्सीर (आयत 1) : अल्लाह तआला अपनी ज़ात पाक की इज़्ज़त व अज़्मत और अपनी पाकीज़गी व कुदरत बयान करता है कि वह हर चीज़ पर क़ादिर है उस जैसी कुदरत किसी में नहीं। वही इबादतों के लायक़ और सिर्फ़ वही सारी मख़्लूक़ की परवरिश करने वाला है। वह अपने बन्दे यानी हज़रत

मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) को एक ही रात के एक हिस्से में मक्का मुकर्रमा की मस्जिद से बैतुल मक़्दिस की मस्जिद तक ले गया जो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) के ज़माने से अम्बिया का मर्कज़ रहा। इसीलिए तमाम अम्बिया (عليهم السلام) वहीं आपके पास जमा किये गए और आपने वहीं उन्ही की जगह उन सबकी इमामत की। जो दलील है इस अम्र की इमामे आज़म आप ही हैं (صلوات الله وسلامه عليه وعليهم اجمعين) (सल्वातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अज्मईन) इस मस्जिद के आसपास हमने बरकत दे रखी है फल फूल खेत और बाग़ात वग़ैरह से यह इसलिए कि हमारा इरादा अपने इस मुहतरम रसूल (ﷺ) को अपनी ज़बरदस्त निशानियाँ दिखाने का था जो आपने उस रात मुलाहिज़ा कीं। अल्लाह तआला अपने बन्दों की मोमिनों और काफ़िरों की यक़ीन वालों और मुंकिरों की सबकी बातें सुनने वाला है और सबको देख रहा है। हर एक को वही देगा जिसका वह मुस्तहिक़ है दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

मेअराज की बाबत बहुत सी हदीसें हैं जो अब बयान हो रही हैं। सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से मरवी है कि ''मेअराज वाली रात जबकि कअबतुल्लाह से आपको बुलाया गया आपके पास तीन फ़रिश्ते आए, इससे पहले कि आपकी तरफ़ वही की जाए। उस वक़्त आप बैतुल्लाह में सोये हुए थे। उनमें से अगले ने पूछा कि यह इन सबमें से कौन हैं? दरम्यान वाले ने जवाब दिया कि यह इन सब में बेहतर हैं। तो सबसे अख़ीर वाले ने कहा कि फिर इनको ले चलो। बस उस रात तो इतना ही हुआ फिर आपने उन्हें न देखा। दूसरी रात फिर यह तीनों आए उस वक़्त भी आप सो रहे थे। लेकिन आपका सोना इस तरह का था कि आँखें सोयी थीं और दिल जाग रहा था तमाम अम्बिया की नींद इसी तरह की होती है। उस रात उन्होंने आपसे कोई बात नहीं की। आपको उठाकर ज़मज़म के कूएँ के पास लिटाया और आपका सीना गर्दन तक ख़ुद जिब्राईल (عليه السلام) ने अपने हाथ से चीरा और सीने और पेट की तमाम चीज़ें निकालकर उन्हें अपने हाथ से ज़मज़म के पानी से धोया, जब ख़ूब पाक व साफ़ कर चुके तो आपके पास एक सोने का तश्त लाया गया जिसमें सोने का एक बड़ा प्याला था जो हिक्मत और ईमान से भरा हुआ था उससे आपके सीने को और गले की रगों को भर दिया। फिर सीने को सी दिया गया। फिर आपको आसमाने दुनिया की तरफ़ लेकर चढ़े वहाँ के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खटखटाया, फ़रिश्तों ने पूछा कि कौन? आपने फ़र्माया, ज़िब्राईल। पूछा कि आपके साथ कौन हैं? फ़र्माया, मेरे साथ मुहम्मद (ﷺ) हैं। पूछा क्या आपको बुलाया गया है? जवाब दिया कि हाँ! सब बहुत ख़ुश हुए और मरहबा कहते हुए आपको ले गए। आसमानी फ़रिश्ते भी कुछ नहीं जानते कि ज़मीन पर अल्लाह तआला क्या कुछ करना चाहता है जब तक कि उन्हें मालूम न करा दिया जाए। आपने आसमाने दुनिया पर हज़रत आदम (عليه السلام) को पाया। जिब्राईल (عليه السلام) ने तआरुफ़ (परिचय) कराया कि यह आपके वालिद (हज़रत आदम عليه السلام) हैं, इन्हें सलाम कीजिए। आपने सलाम किया। हज़रत आदम (عليه السلام) ने जवाब दिया, मरहबा कहा और फ़र्माया आप मेरे बहुत ही अच्छे बेटे हैं। वहाँ दो नहरें जारी देखकर आपने हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) से पूछा कि यह नहरें क्या हैं? आपने जवाब दिया कि नील और फ़रात का उंसुर (पार्ट)। फिर आपको आसमान में ले चले। आपने एक और नहर देखी जिस पर लूअ लूअ और मोतियों के बालाख़ाने थे जिसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क थी। पूछा यह कौनसी नहर है? जवाब मिला कि यह नहरे कौसर है, यह आपके परवरदिगार

ने आपके लिए तैयार कर रखी है। फिर आपको दूसरे आसमान पर ले गए, वहाँ के फ़रिश्तों से भी वही बातें हुईं। फिर आपको तीसरे आसमान पर ले गए, वहाँ के फ़रिश्तों से भी वही सवाल जवाब वग़ैरह हुए जो पहले आसमान पर और दूसरे आसमान पर हुए थे। फिर आपको चौथे आसमान पर चढ़ाया गया। उन फ़रिश्तों ने भी इसी तरह पूछा और जवाब पाया वग़ैरह। फिर पाँचवें आसमान पर चढ़ाए गये, वहाँ भी वही कहा सुना गया। फिर छठे पर और फिर सातवें आसमान पर गए वहाँ भी यही बातचीत हुई। हर आसमान पर वहाँ के नबियों से मुलाक़ातें हुईं जिनके नाम हुज़ूर (ﷺ) ने बतलाए जिनमें से मुझे यह याद हैं कि दूसरे आसमान में हज़रत इदरीस (عليه السلام) और चौथे आसमान में हज़रत हारून (عليه السلام) पाँचवें वाले का नाम मुझे याद नहीं, छठे में हज़रत इब्राहीम(عليه السلام) सातवें में हज़रत मूसा कलीमुल्लाह (अलैहि व अला साइरिल अम्बियाइ सलवातुल्लाहि व सलामुहू) जब आप यहाँ से भी ऊँचे चले तो हज़रत मूसा (عليه السلام) ने कहा, या अल्लाह! मेरा ख़्याल था कि मुझसे बुलंद तू किसी को न करेगा। अब आप उस बुलंदी पर पहुँचे जिसका इल्म अल्लाह तआला ही को है यहाँ तक कि सिदरतुल मुंतहा तक पहुँचे और अल्लाह तआला आपसे बहुत ही नज़दीक हुआ बक़द्र दो कमान के बल्कि उससे भी कम दूरी पर। फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से आपकी जानिब वह़ी की गई जिसमें आपकी उम्मत पर हर दिन रात में पचास नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं। जब आप वहाँ से उतरे तो हज़रत मूसा (عليه السلام) ने आपको रोका और पूछा कि क्या हुक्म मिला? फ़र्माया दिन रात में पचास नमाज़ों का। कलीमुल्लाह (عليه السلام) ने फ़र्माया, यह आपकी उम्मत की ताक़त से बाहर है आप वापिस जाईए और कमी की तलब कीजिए। आपने हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) की तरफ़ देखा कि गोया आप उनसे मश्वरा ले रहे हैं। उनका भी इशारा पाया कि अगर आपकी मर्ज़ी हो तो क्या हर्ज है। आप फिर अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ गए और अपनी जगह ठहरकर दुआ की या अल्लाह! हमें तख़्फ़ीफ़ (छूट) अता कर। मेरी उम्मत इसकी ताक़त नहीं रखती। पस अल्लाह ने दस नमाज़ें कम कर दीं। फिर आप वापिस लौटे। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फिर आपको रोका और यह सुनकर फ़र्माया कि जाओ और कम कराओ। आप फिर गए फिर कम हुईं, यहाँ तक कि आख़िर में पाँच रह गईं। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फिर भी फ़र्माया कि देखो! मैं बनी इस्राईल में अपनी उम्र गुज़ार चुका हूँ उन्हें इससे भी कम का हुक्म था लेकिन फिर भी वह बेताक़त साबित हुए और उसे छोड़ बैठे आपकी उम्मत तो उनसे भी कमज़ोर है जिस्म के ऐतिबार से भी और दिल बदन आँख कान के ऐतिबार से भी, आप फिर जाईए और अल्लाह तआला से तख़्फ़ीफ़ की तलब कीजिए। आपने फिर हस्बे आदत हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) की तरफ़ देखा। हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) आपको फिर ऊपर ले गए। आपने अल्लाह तआला से अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत के जिस्म, दिल, कान, आँखें और बदन कमज़ोर हैं हमसे और भी तख़्फ़ीफ़ कर। उसी वक़्त अल्लाह तआला ने फ़र्माया, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आपने जवाब दिया, लब्बैक व सअ़दैक। फ़र्माया, सुनो! मेरी बातें बदलती नहीं। जो मैंने अब मुक़र्रर किया है यही मैं उम्मुल किताब में लिख चुका हूँ। यह पाँच हैं पढ़ने के एतिबार से और पचास हैं सवाब के ऐतिबार से। जब आप वापिस आये, हज़रत मूसा (عليه السلام) ने कहा, कहो सवाल मंज़ूर हुआ? आपने फ़र्माया, कमी हो गई यानी पाँच और सवाब पचास कामिल हो गया। हर नेकी का सवाब दस गुना अता फ़र्माया, जाने का वादा हो गया, हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फिर फ़र्माया कि मैं बनी इस्राईल का तजुर्बा कर चुका

हूँ उन्होंने इससे भी हल्के अह़काम को छोड़ दिया था आप फिर जाइए और परवरदिगार से कमी त़लब कीजिए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जवाब दिया कि ऐ कलीमुल्लाह (عليه السلام)! मैं गया आया अब तो मुझे शर्म आती है। आपने फ़र्माया, अच्छा फिर तशरीफ़ ले जाइए। बिस्मिल्लाह कीजिए। अब जब आप जागे तो आप मस्जिदुल ह़राम में थे।'' स़ह़ीह़ बुख़ारी में यह ह़दीस किताबुत्तौह़ीद में भी है और सिफ़तुन्नबी में भी है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तौह़ीद, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिही अ़ज़्ज़ व जल्ल (व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा) : 7517; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 162) यही रिवायत शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबू नम्र से मरवी है लेकिन उन्होंने इज़्तिराब कर दिया है अपने ह़ाफ़्ज़े की कमज़ोरी की वजह से बिलकुल ठीक याद नहीं रखा। इन अह़ादीस के आख़िर में इसका बयान आएगा, इंशाअल्लाह। कुछ इसे वाक़िया ख़्वाब बयान करते हैं, शायद इस जुम्ला की बिना पर जो इसके आख़िर में वारिद है, वल्लाहु आ़लम!

क्या आप (ﷺ) ने शबे मेअ़राज अल्लाह तआ़ला को देखा? ह़ाफ़िज़ अबूबक्र बैहक़ी (रह़.) इस ह़दीस के इस जुम्ले को जिसमें है कि ''फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला क़रीब हुआ और उतर आया पस बक़द्र दो कमान के हो गया बल्कि और नज़दीक।'' शरीक नामी रावी की वह ज़्यादती बतलाते हैं जिसमें वह मुंफ़रिद (अकेले) हैं। इसीलिए कुछ ह़ज़रात ने कहा है कि आपने उस रात अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल को देखा। लेकिन ह़ज़रत आ़इशा, ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द, ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) इन आयतों को इस पर मह़मूल करते हैं कि आपने ह़ज़रत जिब्राईल (عليه السلام) को देखा, यही ज़्यादा सही है और इमाम बैहक़ी का फ़र्मान बिलकुल ह़क़ है। और रिवायत में है कि जब आपसे ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने सवाल किया कि आपने अल्लाह तआ़ला को देखा है तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''वह नूर है मैं उसे कैसे देख सकता हूँ।'' और रिवायत में है कि ''मैंने नूर देखा है।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही (ﷺ) (नूरून इन्नी अराहू) : 178) जो सूरह नज्म में है (ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى) (53/नज्म : 8) यानी फिर वह नज़दीक हुआ और उतर आया। इससे मुराद ह़ज़रत जिब्राईल (عليه السلام) हैं जैसे कि उन तीनों स़ह़ाबियों का बयान है। स़ह़ाबा में से तो कोई इस आयत की इस तफ़्सीर में इनका मुख़ालिफ़ नज़र नहीं आता।

वाक़िया मेअ़राज और इमाम अह़मद (रह़.) की बयानकर्दा रिवायत : मुस्नद अह़मद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मेरे पास बुर्राक़ लाया गया जो गधे से ऊँचा और ख़च्चर से नीचा था जो एक एक क़दम इतनी इतनी दूर रखता था जितनी दूर उसकी नज़र पहुँचे। मैं उस पर सवार हुआ वह मुझे ले चला। मैं बैतुल मक़्दिस पहुँचा और उसी खूँटे में उसे बाँध दिया जहाँ तमाम नबी उसे बाँधा करते थे। फिर मैंने मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ अदा की। जब वहाँ से निकला तो (ह़ज़रत) जिब्राईल मेरे पास एक बर्तन में शराब लाए और एक में दूध लाए। मैंने दूध को पसंद कर लिया। जिब्राईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, फ़ित़रत तक पहुँच गए।'' फिर ऊपर वाली ह़दीस की त़रह़ ''पहले आसमान पर पहुँचना, उसका खुलवाना, फ़रिश्तों का पूछना, जवाब देना, हर आसमान पर इसी त़रह़ बयान है। पहले आसमान पर ह़ज़रत आदम (عليه السلام) से मुलाक़ात हुई जिन्होंने मरह़बा कहा, और दुआए ख़ैर की। दूसरे आसमान पर ह़ज़रत यह़या और ह़ज़रत ईसा (عليه السلام) से मुलाक़ात होने का ज़िक्र है जो दोनों आपस में ख़ालाज़ाद भाई थे उन दोनों ने भी आपको मरह़बा कहा और दुआए ख़ैर दी।

फिर तीसरे आसमान पर हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) से मुलाक़ात हुई जिन्हें आधा हुस्न दिया गया है आपने भी मरहबा कहा, नेक दुआ की। फिर चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस (عليه السلام) से मुलाक़ात हुई जिनकी बाबत फ़र्माने बारी तआला है (وَّ رَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا) (19/मरयम : 57) हमने उसे ऊँची जगह उठा लिया है पाँचवें आसमान पर हज़रत हारून (عليه السلام) से मुलाक़ात हुई। छठे आसमान पर हज़रत मूसा (عليه السلام) से मुलाक़ात हुई। सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को बेतुल मअमूर से तकिया लगाये बैठे हुए देखा। बैतुल मामूर में हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं मगर जो आज गए उनकी बारी फिर क़यामत तक नहीं आने की। फिर सिदरतुल मुंतहा तक पहुँचे जिसके पत्ते हाथी के कानों के बराबर थे और जिसके फल मटके जैसे। उसे अम्रे इलाही ने ढक रखा था उस ख़ूबी का कोई बयान नहीं कर सकता। फिर वह्री होने का और पचास नमाज़ों के फ़र्ज़ होने का और बमश्वरा हज़रत मूसा (عليه السلام) वापिस जा जाकर कमी करा कराकर पाँच तक पहुँचने का बयान है उसमें हर बार के सवाल पर पाँच की कमी का ज़िक्र है। इसमें यह भी है कि आख़िर में आपसे फ़र्माया गया जो नेकी का इरादा करे। अगर वह उसको न कर सके तब भी उसे एक नेकी का सवाब मिल जाता है और अगर कर ले तो दस नेकियों का सवाब मिलता है और गुनाह के सिर्फ़ इरादे से गुनाह नहीं लिखा जाता और कर लेने से एक ही गुनाह लिखा जाता है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अल्इस्रा बिरसूलिल्लाहि (ﷺ) इलस्समावाति व फ़र्ज़िस्सल्वात...) : 162; अहमद : 3/148) इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि जिस रात आपको इस्रा बैतुल्लाह (ख़ान-ए-कअबा) से बैतुल मक़्दिस तक हुआ। उसी रात मेअराज भी हुई और यही हक़ है जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं। मुस्नद अहमद में है कि बुर्राक़ को लगाम भी थी और ज़ीन भी थी। जब वह सवारी के वक़्त कसमसाया तो हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने कहा, क्या कर रहा है? वल्लाह! तुझ पर आपसे पहले आपसे ज़्यादा बुज़ुर्ग शख़्स कोई सवार नहीं हुआ। पस बुर्राक़ पसीना पसीना हो गया। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति बनी इस्राईल : 3131; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा रावी मुदल्लस है और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं। अहमद : 3/164; इब्ने हिब्बान : 46; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/362) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब मुझे मेरे रब अज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ चढ़ाया गया तो मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जिनके तांबे के नाख़ुन थे जिनसे वह अपने चेहरों और सीनों को नोच और छील रहे थे। मैंने पूछा, यह कौन लोग हैं? तो जवाब दिया गया कि वह हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे और उनकी इज़्ज़त आबरू के दर पे रहते थे।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल ग़ीबत : 4878; व सनदुहू हसन; अहमद : 3/224)

वाक़िया मेअराज और अबूदाऊद की नक़्लकर्दा रिवायत : अबूदाऊद में है कि ''मेअराज वाली रात जब मैं हज़रत मूसा (عليه السلام) की क़ब्र से गुज़रा तो मैंने उन्हें वहाँ नमाज़ में खड़ा पाया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब मिन फ़ज़ाइलि मूसा अलैहिस्सलाम : 2375; अहमद : 3/120; इब्ने हिब्बान : 49) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आपसे मस्जिदे अक़्सा के निशानात पूछे। जो आपने बताने शुरु किए ही थे कि हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) कहने लगे आप बजा इर्शाद फ़र्मा रहे हैं और सच्चे हैं। मेरी गवाही है कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) हैं। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उसे देख रखा था।'' (अबू यअला : 4084; व सनदुहू सहीहुन) मुस्नदे

बज़्ज़ार में है कि आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया "मैं सोया हुआ था। जो (हज़रत) जिब्रईल (عليه السلام) आए और मेरे दोनों शानों के बीच हाथ रख दिया पस मैं खड़ा होकर एक दरख़्त में बैठ गया जिसमें परिन्दों के मकान जैसे थे एक में हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) बैठ गये वह दरख़्त फूल गया और ऊँचा होना शुरु हुआ, यहाँ तक कि अगर मैं चाहता तो आसमान को छू लेता, मैं तो अपनी चादर ठीक कर रहा था लेकिन मैंने देखा कि (हज़रत) जिब्रईल (عليه السلام) सख़्त तवाज़ोअ और फ़रोतनी के आलम में हैं तो मैं जान गया कि अल्लाह तआला की मअरिफ़त के इल्म में यह मुझसे अफ़ज़ल हैं। आसमान का एक दरवाज़ा मेरे लिए खोला गया। मैंने एक ज़बरदस्त अज़ीमुश्शान नूर देखा जो हिजाब (पर्दे) में था और उसके उस तरफ़ याकूत और मोती थे। फिर मेरी जानिब बहुत कुछ वही की गई।" दलाइले बैहक़ी में है कि "हुज़ूर (ﷺ) अपने सहाबा की जमाअत में बैठे हुए थे जो जिब्रईल (عليه السلام) आए और आपकी पीठ को उँगली से इशारा किया। आप उनके साथ एक दरख़्त की जानिब चले जिसमें परिन्दों के जैसे घौंसले थे, आख़िर तक। उसमें यह भी है कि जब हमारी तरफ़ नूर उतरा तो हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) तो बेहोश होकर गिर पड़े, आख़िर तक। फिर मेरी जानिब वही की गई कि नबी और बादशाह होना चाहते हो या नबी और बन्दा होना चाहते हो और जन्नती?" हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने उसी तरह तवाज़ोअ से गिरे हुए मुझसे इशारे से फ़र्माया कि तवाज़ोअ इख़्तियार करो। तो मैंने जवाब दिया कि अल्लाह! मैं नबी और बन्दा बनना मंज़ूर करता हूँ।" (यह रिवायत मुर्सल है और इसकी सनद में मुहम्मद बिन उमेर मज्हूल रावी है।) अगर यह रिवायत सही हो जाए तो मुम्किन है कि यह वाक़िया मेअराज के सिवा और हो क्योंकि इसमें न बैतुल मक़्दिस का ज़िक्र है न आसमान पर चढ़ने का, वल्लाहु आलम!

इब्ने जरीर (रह.) की रिवायत : बज़्ज़ार की एक रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को देखा। लेकिन यह रिवायत ग़रीब है। इब्ने जरीर में है कि "बुर्राक़ ने जब हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) की बात सुनी और फिर वह आपको सवार कराकर चला तो आपने रास्ते के एक किनारे पर एक बुढ़िया को देखा। पूछा यह कौन है? जवाब मिला कि चले चलिए फिर आपने चलते चलते देखा कि कोई रास्ते से अलग है और आपको बुला रहा है फिर आप आगे बढ़े तो देखा कि अल्लाह तआला की एक मख़्लूक़ है और बआवाज़े बुलंद कह रही है (अस्सलामु अलैका या अव्वलुस्सलाम अलैका या आख़िरुस्सलाम अलैका या हाशिर) जिब्रईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, जवाब दीजिए। आपने उन के सलाम का जवाब दिया। फिर दोबारा ऐसा ही हुआ, फिर तीसरी मर्तबा भी यही हुआ यहाँ तक कि आप बैतुल मक़्दिस पहुँचे। वहाँ आपके सामने पानी और शराब और दूध पेश किया गया। आप (ﷺ) ने दूध ले लिया। जिब्रईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, आपने राज़े फ़ित्रत को पा लिया। अगर आप पानी का बर्तन लेकर पी लेते तो आपकी उम्मत ग़र्क़ हो जाती और अगर आप शराब पी लेते तो आपकी उम्मत बहक जाती। फिर आपके लिए हज़रत आदम (عليه السلام) से लेकर आपके ज़माने तक के तमाम अम्बिया (عليه السلام) भेजे गए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनकी इमामत कराई और उस रात सबने नमाज़ आपकी इक़्तिदा में पढ़ी, फिर हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, रास्ते के किनारे जिस बुढ़िया को देखा था वह गोया यह दिखाया गया था कि दुनिया की उम्र अब सिर्फ़ इतनी ही बाक़ी है जैसे उस बुढ़िया की उम्र और जिसकी आवाज़ पर आप तवज्जा करने वाले थे वह दुश्मने इलाही इब्लीस था और जिनकी सलाम की आवाज़ें आपने

सुनीं वह इब्राहीम, मूसा और ईसा (عليه السلام) थे।'' (बैहक़ी फ़ी दलाइलिन्नुबुव्वा : 2/362; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) इसमें भी कुछ लफ़्ज़ में ग़राबत और नकारत है, वल्लाहु आलम!

एक और रिवायत का ज़िक्र : और रिवायत में है कि ''जब मैं बुर्राक़ पर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) के साथ चला तो एक जगह उन्होंने मुझसे फ़र्माया कि यहीं उतरकर नमाज़ अदा कीजिए। जब मैं नमाज़ पढ़ चुका तो फ़र्माया, जानते हो यह कौनसी जगह है? तय्यिबा यानी मदीना है। यही हिज्रतगाह है फिर एक और जगह मुझसे नमाज़ पढ़वाई और फ़र्माया यह तूरे सीना है जहाँ अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (عليه السلام) से कलाम किया फिर एक और जगह नमाज़ पढ़वाकर फ़र्माया, यह बैतुल्लहम है जहाँ हज़रत ईसा (عليه السلام) पैदा हुए। फिर मैं बैतुल मक़्दिस पहुँचा वहाँ तमाम अम्बिया (عليهم السلام) जमा हुए, जिब्राईल (عليه السلام) ने मुझे इमाम बनाया। मैंने उनकी इमामत की। फिर मुझे आसमान की तरफ़ चढ़ा ले गए। फिर आपका एक एक आसमान पर पहुँचना वहाँ पैग़म्बरों से मिलना मज़्कूर है। फ़र्माते हैं जब मैं सिदरतुल मुंतहा तक पहुँचा तो मुझे एक नूरानी बादल ने ढक लिया, मैं उसी वक़्त सज्दा में गिर पड़ा। फिर आप पर पचास नमाज़ों का फ़र्ज़ होना और कम होना वग़ैरह का बयान है। आख़िर में हज़रत मूसा (عليه السلام) के बयान में है कि मेरी उम्मत पर तो सिर्फ़ दो नमाज़ें मुक़र्रर हुई थीं लेकिन वह उन्हें भी न बजा लाए। आप फिर पाँच से भी कमी चाहने के लिए गए तो फ़र्माया गया कि मैंने तो आसमान और ज़मीन की पैदाइश वाले दिन ही तुझ पर और तेरी उम्मत पर यह पाँच नमाज़ें मुक़र्रर कर दी थीं। यह पढ़ने में पाँच हैं और सवाब में पचास हैं पस तू और तेरी उम्मत इसकी हिफ़ाज़त करे। आप फ़र्माते हैं अब मुझे यक़ीन हो गया कि अल्लाह तआला का यही आख़िरी हुक्म है। फिर जब मैं हज़रत मूसा (عليه السلام) के पास पहुँचा तो आपने मुझे फिर वापिस लौटने का मश्वरा दिया लेकिन चूँकि मैं मालूम कर चुका था कि यह अल्लाह तआला का हतमी (आख़िरी) हुक्म है इसलिए मैं फिर अल्लाह तआला के पास न गया।'' (नसाई, किताबुस्सलात, बाब फ़र्ज़ुस्सलाति व ज़िक्रु इख़्तिलाफ़िन्नाक़िलीन.... : 451; व सनदुहू हसन)

इब्ने अबी हातिम की रिवायत : इब्ने अबी हातिम में भी मेअ़राज के वाक़िया की लम्बी हदीस है उसमें यह भी है कि ''जब आप बैतुल मक़्दिस की मस्जिद के पास उस दरवाज़े पर पहुँचे जिसे बाबे मुहम्मद (ﷺ) कहा जाता है, वहीं एक पत्थर था जिसे हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने अपनी उँगली लगाई तो उसमें सूराख़ हो गया। वहीं आपने बुर्राक़ को बाँधा और मस्जिद पर चढ़ गए। बीचों बीच पहुँच जाने के बाद हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने कहा, आपने अल्लाह तआला से यह आरज़ू की है कि वह आपको हूरें दिखाए? आपने फ़र्माया, हाँ! कहा आइए वह यह हैं, सलाम कीजिए वह सख़रा के बाएँ जानिब बैठी हुई थीं। मैंने वहाँ पहुँचकर उन्हें सलाम किया। सबने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैंने पूछा तुम सब कौन हो? उन्होंने कहा, हम नेक सीरत ख़ूबसूरत हूरें हम बीवियाँ हैं अल्लाह तआला के उन परहेज़गारों की जो नेक लोग हैं। जो गुनाहों के मेल कुचेल से दूर हैं जो पाक करके हमारे पास लाये जाएँगे फिर न निकाले जाएँगे, हमारे पास ही रहेंगे, कभी जुदा न होंगे, हमेशा ज़िन्दा रहेंगे, कभी न मरेंगे। मैं उनके पास से चला आया, वहीं लोग जमा होना शुरु हो गए और ज़रा ही देर में बहुत से आदमी जमा हो गए। मुअज़्ज़िन ने अज़ान कही, तक्बीर हुई और हम सब खड़े हो गए, मुंतज़िर थे कि इमामत कौन करेगा कि जिब्राईल (عليه السلام) ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे आगे कर दिया। मैंने उन्हें नमाज़ पढ़ाई जब फ़ारिग़

हुआ तो जिब्राईल (عليه السلام) ने कहा, जानते भी हो किनको आपने नमाज़ पढ़ाई? मैंने कहा, नहीं! फ़र्माया आपके पीछे यह सब मुक़्तदी अल्लाह तअ़ला के पैग़म्बर थे, जिन्हें अल्लाह तआ़ला मब्ऊ़स कर चुका है फिर मेरा हाथ थामकर आसमान की तरफ़ ले चले। फिर बयान है कि आसमानों के दरवाज़े खुलवाये। फ़रिश्तों ने सवाल किया, जवाब पाकर दरवाज़े खोले वग़ैरह। पहले आसमान पर हज़रत आदम (عليه السلام) से मुलाक़ात हुई, उन्होंने फ़र्माया, मेरे बेटे और नेक नबी को मरहबा (ख़ुशआमदेद) हो। उसमें चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस (عليه السلام) से मुलाक़ात करने का ज़िक्र भी है सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) से मिलने और उनके भी वही फ़र्माने का ज़िक्र है जो हज़रत आदम (عليه السلام) ने फ़र्माया था फिर मुझे वहाँ से भी ऊँचा ले गए। मैं ने एक नहर देखी जिसमें लूअ लूअ याक़ूत और ज़बरजद के जाम थे और बेहतरीन ख़ुशरंग सब्ज़ परिन्द थे मैंने कहा, यह तो निहायत ही नफ़ीस परिन्द हैं। जिब्राईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, हाँ! इनके खाने वाले इनसे भी अच्छे हैं। फिर फ़र्माया मालूम भी है कि यह कौनसी नहर है? मैंने कहा, नहीं! फ़र्माया, वह नहरे कोसर है जो अल्लाह तआला ने आपको अ़ता कर रखी है। इसमें सोने चाँदी के आबख़ोरे थे जो याक़ूत व ज़मर्रुद से जड़ाव थे उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद था। मैंने एक सोने का प्याला लेकर पानी भरकर पिया तो वह शहद से भी ज़्यादा मीठा था और मुश्क से भी ज़्यादा ख़ुश्बूदार था। जब मैं उससे भी ऊपर पहुँचा तो एक निहायत ख़ुश रंग बादल ने मुझे आ घेरा जिसमें मुख़्तलिफ़ रंग थे जिब्राईल (عليه السلام) ने तो मुझे छोड़ दिया और मैं अल्लाह तआ़ला के सामने सज्दा में गिर पड़ा। फिर पचास नमाज़ों के फ़र्ज़ होने का बयान है। फिर आप वापिस हुए। हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने तो कुछ न फ़र्माया लेकिन हज़रत मूसा (عليه السلام) ने आपको समझा बुझाकर वापिस तलबे तख़फ़ीफ़ के लिए भेजा। अल्ग़र्ज़ इसी तरह आपका बार बार आना, बादल में ढक जाना दुआ करना, तख़फ़ीफ़ होना, हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) से मिलते हुए आना और हज़रत मूसा (عليه السلام) से बयान करना यहाँ तक कि पाँच नमाज़ों का रह जाना बयान है वग़ैरह। आप फ़र्माते हैं फिर जिब्राईल (عليه السلام) मुझे लेकर नीचे उतरे मैंने उनसे पूछा कि जिस आसमान पर मैं पहुँचा वहाँ के फ़रिश्तों ने ख़ुशी ज़ाहिर की, हँस हँसकर मुस्कुराते हुए मुझसे मिले सिवाए एक फ़रिश्ते के कि उसने मेरे सलाम का जवाब तो दिया मुझे मरहबा भी कहा लेकिन मुस्कुराये नहीं। यह कौन हैं और इसकी क्या वजह है? हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, वह मालिक हैं जहन्नम के दारोग़ा हैं अपने पैदा होने से लेकर आज तक वह हँसे ही नहीं और क़यामत तक हँसेंगे भी नहीं, क्योंकि इनकी ख़ुशी का यही एक बड़ा मौक़ा था। वापसी में क़ुरैशियों के एक क़ाफ़िले को देखा जो ग़ल्ला लादे जा रहा था। उसमें एक ऊँट था जिस पर एक सफ़ेद और एक स्याह बोरा था जब आप उसके क़रीब से गुज़रे तो वह चमक गया और मुड़ गया गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया। आप इसी तरह अपनी जगह पहुँचा दिये गए। सुबह आपने अपने उस मेअ़राज का ज़िक्र लोगों से किया। मुश्रिकों ने जब यह सुना तो वह सीधे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास पहुँचे और कहने लगे लो! तुम्हारे पैग़म्बर साहब तो कहते हैं कि वह आज की एक ही रात में महीने भर के फ़ासले के मक़ाम तक हो आए। आपने जवाब दिया कि अगर फ़िल वाक़ेअ़ आपने यह फ़र्माया हो तो आप सच्चे हैं हम तो इससे भी बड़ी बात में आपको सच्चा जानते हैं हम मानते हैं कि आपको आन की आन में आसमान से ख़बरें पहुँचती हैं। मुश्रिकों ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से कहा कि आप अपनी सच्चाई की कोई

अलामत भी पेश कर सकते हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! मैंने रास्ते में फ़लाँ फ़लाँ जगह क़ुरैश का क़ाफ़िला देखा है उनका एक ऊँट जिस पर सफ़ेद और काले रंग के दो बोरे हैं वह हमें देखकर बिदका, घूमा और चक्कर खाकर गिर पड़ा और टाँग टूट गई। जब वह क़ाफ़िला आया तो लोगों ने उनसे जाकर पूछा कि रास्ते में कोई नई बात तो नहीं हुई? उन्होंने कहा, हाँ! हुई फ़लाँ ऊँट फ़लाँ जगह इस तरह गिरा वग़ैरह। कहते हैं कि अबूबक्र (रज़ि.) की इसी तस्दीक़ की वजह से उन्हें सिद्दीक़ कहा गया है फिर आपसे लोगों ने सवाल किया कि आपने तो (हज़रत) ईसा (अलैहि.) और हज़रत मूसा (अलैहि.) से भी मुलाक़ात की है, उनके हुलिये (शक्लो सूरत) तो बयान कीजिए। आपने फ़र्माया, हाँ! हज़रत मूसा (अलैहि.) तो गेहूआँ रंग के हैं जैसे अज़्दे ओमान के आदमी होते हैं और ईसा (अलैहि.) दरम्याना क़द के कुछ सुर्ख़ी माइल रंग के हैं और ऐसा मालूम होता है कि गोया उनके बालों से पानी के क़तरे टपक रहे हैं'' इस स्याक़ में भी अजाइब व ग़राइब हैं। मुस्नद अहमद में है कि ''मैं हतीम में और रिवायत में है कि हजर में सोया हुआ था कि आने वाला आया। एक ने बीच वाले से कहा और वह मेरे पास आया और यहाँ से यहाँ तक चाक कर डाला यानी गले के पास से नाफ़ तक।'' फिर मुंदर्जा बाला हदीसों के मुताबिक़ बयान है। इसमें है कि ''छठे आसमान पर (हज़रत) मूसा (अलैहि.) से मैंने सलाम किया आपने जवाब दिया और फ़र्माया, नेक भाई और नेक नबी को मरहबा हो। जब मैं वहाँ से आगे बढ़ गया तो आप रो दिए, पूछा गया कि क्यूँ रोये? जवाब दिया कि इसलिए कि जो बच्चा मेरे बाद नबी बनाकर भेजा गया उसकी उम्मत बनिस्बत मेरी उम्मत के जन्नत में ज़्यादा तादाद में जाएगी। इसमें है कि सिदरतुल मुंतहा के पास चार नहरें देखीं, दो ज़ाहिरी दो छुपी हुई। मैंने जिब्राईल (अलैहि.) से पूछा, आपने मुझे बताया कि बातिनी तो जन्नत की नहरें हैं और ज़ाहिरी नील और फ़रात हैं। फिर मेरी जानिब बैतुल मअ़मूर बुलंद किया गया। फिर मेरे पास शराब का दूध का और शहद का बर्तन आया। मैंने दूध का बर्तन ले लिया। फ़र्माया, यह फ़ितरत है जिस पर तू है और तेरी उम्मत। इसमें है कि जब पाँच नमाज़ें ही रह गईं और फिर भी कलीमुल्लाह ने वापसी का मश्वरा दिया तो आपने फ़र्माया मैं तो अपने रब से सवाल करते करते शर्मा गया। अब मैं राज़ी हूँ और तस्लीम कर लेता हूँ।'' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति सलवातुल्लाहि अलैहिम : 3207; सहीह मुस्लिम : 164; अहमद : 4/208; इब्ने हिब्बान : 28)

एक और रिवायत का ज़िक्र : और रिवायत में है कि ''मेरे घर की छत खोल दी गई, मैं उस वक़्त मक्का में था आख़िर तक। उसमें है कि जब मैं जिब्राईल (अलैहि.) के साथ आसमाने दुनिया पर चढ़ा तो मैंने देखा कि एक साहब बैठे हुए हैं जिनके दाएँ बाएँ बड़ी बड़ी जमाअ़त है वह दाहिनी जानिब देखकर मुस्कुरा देते हैं और हँसने लगते हैं और जब बाएँ जानिब नज़र उठती है तो रो देते हैं। मैंने जिब्राईल (अलैहि.) से पूछा कि यह कौन हैं और इनके दाएँ बाएँ कौन हैं? फ़र्माया, यह आदम (अलैहि.) हैं और यह इनकी औलाद है। दाएँ जानिब वाले जन्नती हैं और बाएँ तरफ़ वाले जहन्नमी हैं, उन्हें देखकर ख़ुश होते हैं और इन्हें देखकर रंजीदा। इस रिवायत में है कि हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) से छठे आसमान पर मुलाक़ात हुई। इसमें है कि सातवें आसमान से मैं और ऊँचा पहुँचाया गया, मुस्तवी में पहुँच कर मैंने क़लमों के लिखने की आवाज़ें सुनीं। उसमें है कि जब हज़रत मूसा (अलैहि.) के मश्वरे से मैं तलबे तख़्फ़ीफ़ के लिए गया तो अल्लाह तआ़ला ने आधी माफ़ कर दीं फिर गया फिर

आधी माफ़ हुई फिर गया तो पाँच मुक़र्रर हुईं। इसमें है कि सिदरतुल मुंतहा से होकर मैं जन्नत में पहुँचाया गया, जहाँ सच्चे मोतियों के ख़ेमे थे और जहाँ की मिट्टी मुश्के ख़ालिस़ थी।'' यह पूरी ह़दीस स़ह़ीह़ बुख़ारी में किताबुस़्स़लात में है और ज़िक्रे बनी इस्राईल में भी है और बयाने ह़ज्ज में और अह़ादीसे अम्बिया में भी है, इमाम मुस्लिम (रह़.) ने स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल ईमान में भी वारिद की है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुस़्स़लात, बाब कैफ़ा फ़ुरिज़तिस़्स़लातु फ़िल इस्रा : 349, 3342; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 163)

मुस्नद अह़मद में है कि अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ ने ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) से कहा कि अगर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखता तो कम अज़्कम एक बात तो ज़रूर पूछ लेता। आपने पूछा कि वो क्या बात है? कहा, यही कि आपने अल्लाह तआ़ला को देखा है? तो ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने फ़र्माया यह तो मैंने आपसे पूछा था आपने जवाब दिया कि ''मैंने उसे नूर देखा मैं उसे कैसे देख सकता हूँ?'' (अह़मद : 5/147, अबू अ़वाना : 384; व रवाहु मुस्लिम : 178 वहुव स़ह़ीह़ुन) और रिवायत में है कि ''वह नूर है मैं उसे कहाँ से देख सकता हूँ? एक रिवायत में है कि ''मैंने नूर देखा।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही अ़लैहिस्सलामि ((नूरून इन्नी अराहू) : 178; अह़मद : 5/171)

मुश्रिकीन ने वाक़िया मेअ़राज की तस्दीक़ न की : बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब मैंने मेअ़राज के वाक़िया का लोगों से ज़िक्र किया और क़ुरैश ने मुझे झुठलाया मैं उस वक़्त ह़तीम में खड़ा हुआ था, अल्लाह तआ़ला ने बैतुल मक़्दिस मेरी नज़रों के सामने ला दिया और उसे बिलकुल ज़ाहिर कर दिया। अब जो निशानियाँ वह मुझसे पूछते थे मैं देखता जाता था और बतलाता जाता था।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंस़ार, बाब ह़दीसुल इस्रा : 3886; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 170) बैहक़ी में है कि ''बैतुल मक़्दिस में आपने ह़ज़रत इब्राहीम, ह़ज़रत मूसा और ह़ज़रत ईसा (अ़लैहि.) से मुलाक़ात की। उसमें है कि जब वापिस आकर आपने लोगों में यह क़िस्स़ा बयान किया तो बहुत लोग फ़ित्ने में पड़ गए जिन्होंने आपके साथ नमाज़ पढ़ी थी। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की जमाअ़त उसी वक़्त दौड़ी भागी ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास पहुँची और कहने लगे, लो और सुनो! आज तो तुम्हारे साथी एक अ़जीब ख़बर सुना रहे हैं कहते हैं एक ही रात में वह बैतुल मक़्दिस से होकर आ भी गए। आपने फ़र्माया अगर वह फ़र्माते हैं तो सच है वाक़ेई हो आए हैं। उन्होंने कहा, यानी तुम इसे भी मान लेते हो कि रात का जाए और सुबह़ से पहले मुल्के शाम से वापिस मक्का पहुँच जाए। आपने फ़र्माया, इससे भी ज़्यादा बड़ी बात को मैं इससे बहुत पहले से मानता चला आया हूँ यानी मैं मानता हूँ कि उनके पास से आसमान से ख़बरें आती हैं और वह उन तमाम में सच्चे हैं। उसी वक़्त से आपका लक़ब अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) हुआ।'' (सनदुहू ज़ईफ़ुन)

इमाम अह़मद (रह़.) की नक़्लकर्दा एक और रिवायत : मुस्नद अह़मद में है कि ह़ज़रत ज़र्र बिन हुबैश (रह़.) फ़र्माते हैं कि मैं ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के पास आया। उस वक़्त आप मेअ़राज का वाक़िया बयान फ़र्मा रहे थे कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हम चले यहाँ तक कि बैतुल मक़्दिस पहुँचे।'' दोनों स़ाह़ब अंदर नहीं गए। मैंने ये सुनते ही कहा, ग़लत है। रसूलुल्लाह (ﷺ) अंदर गए बल्कि उस रात आपने वहाँ नमाज़ भी पढ़ी। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया तेरा क्या नाम है? मैं तुझे जानता तो हूँ लेकिन नाम याद नहीं आ रहा। मैंने कहा, मेरा नाम

ज़र्र बिन हुबैश है। फ़र्माया तुमने यह बात कैसे मालूम कर ली? मैंने कहा, यह तो क़ुरआन की ख़बर है। आपने फ़र्माया, जिसने क़ुरआन से बात कही, उसने नजात पायी। पढ़िये वह कौनसी आयत है। तो मैंने (सुब्हानल्लज़ी) की यह आयत पढ़ी। आपने फ़र्माया, इसमें किस लफ़्ज़ के मअनी हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने वहाँ नमाज़ अदा की वरना आपने इस रात वहाँ नमाज़ नहीं पढ़ी और अगर पढ़ लेते तो तुम पर इसी तरह वहाँ की नमाज़ लिख दी जाती जिस तरह बैतुल्लाह की है, वल्लाह! वह दोनों बुर्राक़ पर ही रहे यहाँ तक कि आसमान के दरवाज़े उनके लिए खुल गए, पस जन्नत दोज़ख़ देख ली और आख़िरत के वादे की और तमाम चीज़ें फिर वैसे के वैसे ही लौट आये। फिर आप ख़ूब हँसे और फ़र्माने लगे मज़ा तो यह है कि यह लोग कहते हैं कि वहाँ आपने बुर्राक़ बाँधा कि कहीं भाग न जाए। हालाँकि आलिमुल ग़ैब वश्शहादा बारी तआला ने उसे आपके लिए मुसख़्ख़र किया था। मैंने पूछा, क्यूँ जनाब यह बुर्राक़ क्या है? कहा, एक सफ़ेद रंग का लम्बे क़द का जानवर जो एक एक क़दम इतनी दूर रखता है जितनी दूर नज़र काम करे। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति बनी इस्राईल : 3147; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 5/387; हाकिम : 2/359; इब्ने हिब्बान : 45; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/364) लेकिन यह याद रहे कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के सिर्फ़ इंकार से वह रिवायतें जिनमें बैतुल मक़्दिस की नमाज़ का सबूत है वह मुक़द्दम है, वल्लाहु आलम!

दलाइलुन्नबुव्वा पर लम्बी रिवायत : हाफ़िज़ अबूबक्र बैहक़ी (रह.) की किताब दलाइलुन्नबुव्वा में है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) के अस्हाब ने आपसे मेअराज के वाक़िया के ज़िक्र की दरख़्वास्त की तो आपने पहले तो यही आयत (सुब्हानल्लज़ी) की तिलावत की और फ़र्माया कि ''मैं इशा के बाद मस्जिद में सोया हुआ था जो एक आने वाले ने आकर मुझे जगाया। मैं उठ बैठा लेकिन कोई नज़र न पड़ा, हाँ! कुछ जानवर सा नज़र आया, मैंने ग़ौर से देखा और बराबर देखता हुआ मस्जिद के बाहर चला गया तो मुझे एक अजीब जानवर दिखाई दिया, हमारे जानवरों में से तो उसके कुछ मुशाबा ख़च्चर है। हिलते हुए और ऊपर को उठे हुए कानों वाला था उसका नाम बुर्राक़ है मुझसे पहले के अम्बिया भी उसी पर सवार होते रहे। मैं उस पर सवार होकर चला ही था जो मेरी दाएँ जानिब से किसी ने आवाज़ दी कि मुहम्मद (ﷺ)! मेरी तरफ़ देख, मैं तुझसे कुछ पूछूँगा। लेकिन न मैंने जवाब दिया, न ठहरा। फिर जो ज़रा और आगे बढ़ा तो बाएँ जानिब से भी आवाज़ आयी लेकिन मैं वहाँ भी न ठहरा, न देखा, न जवाब दिया। फिर कुछ आगे गया कि एक औरत दुनिया भर की ज़ीनत किये हुए बाहें खोले खड़ी हुई है उसने मुझे इसी तरह आवाज़ दी कि मैं कुछ पूछना चाहती हूँ, लेकिन मैंने न उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात किया, न ठहरा। फिर आपका बैतुल मक़्दिस पहुँचना, दूध का बर्तन लेना और हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) के फ़र्मान से ख़ुश होकर दो बार तक्बीर कहना है फिर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने पूछा, आपके चेहरे पर फ़िक्र कैस है? मैंने वह दोनों वाक़िये रास्ते के बयान किए तो आपने फ़र्माया कि पहला शख़्स तो यहूदी था, अगर आप उसे जवाब देते या वहाँ ठहरते तो आपकी उम्मत यहूदी हो जाती। दूसरा ईसाइयत की दावत देने वाला था, वहाँ अगर आप ठहरते और उससे बातें करते तो आपकी उम्मत ईसाई हो जाती और वह औरत जो थी वह दुनिया थी अगर आप उसे जवाब देते या वहाँ ठहरते तो आपकी उम्मत दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह देकर गुमराह हो जाती। फिर मैं और जिब्राईल (عليه السلام) बैतुल मक़्दिस में गए हम दोनों ने

दो दो रकअतें अदा कीं, फिर हमारे सामने मेअराज लाई गई जिससे बनी आदम की रूहें चढ़ती हैं। दुनिया ने ऐसी अच्छी चीज़ कभी नहीं देखी तुम नहीं देखते कि मरने वाले की आँखें आसमान की तरफ़ चढ़ जाती हैं। उसी सीढ़ी को देखते हुए ताज्जुब के साथ हम दोनों ऊपर चढ़ गए मैंने इस्माईल नामी फ़रिश्ते से मुलाक़ात की जो आसमाने दुनिया का सरदार है जिसके हाथ तले सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हैं। जिनमें से हर एक फ़रिश्ते के साथ उसके लश्करी फ़रिश्तों की तादाद एक लाख है। फ़र्माने इलाही है "तेरे रब के लश्करों को सिर्फ़ वही जानता है।" (74/मुद्दस्सिर : 31) हज़रत जिब्रईल (ﷺ) ने उस आसमान का दरवाज़ा खुलवाना चाहा। पूछा गया कौन है? कहा जिब्रईल। पूछा गया आपके साथ और कौन हैं ? बतलाया कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हैं। कहा गया कि क्या इनकी तरफ़ भेजा गया है? जवाब दिया कि हाँ! वहाँ मैंने हज़रत आदम (ﷺ) को देखा उसी हैयत (सूरत) में जिसमें वह उस दिन थे जिस दिन अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा किया था उनकी असली सूरत पर। उनके सामने उनकी औलाद की रूहें पेश की जाती हैं नेक लोगों की रूहों को देखकर फ़र्माते हैं पाक रूह है और पाक जिस्म भी है इसे इल्लिय्यीन में ले जाओ। और बुरों की रूहों को देखकर फ़र्माते हैं ख़बीस रूह है जिस्म भी ख़बीस है इसे सिज्जीन में ले जाओ। कुछ ही आगे चला कि मैंने देखा कि ख़्वान (डिश) लगे हुए हैं जिन पर निहायत नफ़ीस गोश्त भुना हुआ है और दूसरी जानिब और दस्तरख़्वान लगे हुए हैं जिन पर बदबूदार सड़ा भुसा गोश्त रखा हुआ है कुछ लोग हैं जो उम्दा गोश्त के तो पास भी नहीं आते और उस सड़े हुए गोश्त को खा रहे हैं। मैंने पूछा, जिब्रईल (ﷺ)! यह कौन लोग हैं। जवाब दिया कि आपकी उम्मत के वह लोग हैं जो हलाल को छोड़कर हराम की रग़बत करते थे। फिर मैं कुछ और चला तो कुछ और लोगों को देखा उनके होंठ ऊँट की तरह के हैं उनके मुँह फाड़ फाड़कर फ़रिश्ते उन्हें उस गोश्त के लुक़्मे दे रहे हैं जो उनके दूसरे रास्ते से वापिस निकल जाता है वह चीख़ चिल्ला रहे हैं और अल्लाह तआला के सामने आजिज़ी कर रहे हैं। मैंने पूछा, जिब्रईल (ﷺ)! यह कौन लोग हैं? फ़र्माया यह आपकी उम्मत के वह लोग हैं जो यतीमों का माल नाहक़ खा जाया करते थे जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खायें वह अपने पेट में आग भर रहे हैं और वह ज़रूर भड़कती हुई जहन्नम की आग में जाएँगे। मैं कुछ दूर और चला। देखा कि कुछ औरतें अपने सीनों के बल उल्टी लटकी हुई हैं और हाय वाय कर रही हैं। मेरे पूछने पर जवाब मिला कि यह आपकी उम्मत की ज़िनाकार औरतें हैं। मैं कुछ दूर और चला तो देखा कि कुछ लोगों के पेट बड़े बड़े घड़ों जैसे हैं जब वह उठना चाहते हैं गिर गिर पड़ते हैं और बार बार कह रहे हैं कि ऐ अल्लाह! क़यामत क़ायम न हो, फ़िरऔनी जानवरों से वह रौंदे जाते हैं और अल्लाह तआला के सामने आह व ज़ारी कर रहे हैं। मैंने पूछा यह कौन लोग हैं? तो जिब्रईल (ﷺ) ने फ़र्माया, यह आपकी उम्मत के वह लोग हैं जो सूद (ब्याज) खाते थे, सूदख़ोर उन लोगों की तरह ही खड़े होंगे जिन्हें शैतान ने बावला बना रखा है। मैं कुछ दूर और चला तो देखा कि कुछ लोग हैं जिनके पहलू से गोश्त काट काटकर फ़रिश्ते उन्हें खिला रहे हैं और कहते जाते हैं कि जिस तरह अपने भाई का गोश्त अपनी ज़िन्दगी में खाता रहा अब भी खा। मैंने पूछा जिब्रईल (ﷺ)! यह कौन लोग हैं? आपने फ़र्माया, यह आपकी उम्मत के ऐबजू और आवाराकश लोग हैं फिर हम दूसरे आसमान पर चढ़े तो मैंने वहाँ एक निहायत ही हसीन शख़्स को देखा जो और हसीन लोगों पर वही अहमियत रखता है जो फ़ज़ीलत चाँद को सितारों पर है। मैंने पूछा, जिब्रईल (ﷺ)! यह कौन हैं ? उन्होंने फ़र्माया, यह आपके भाई (हज़रत) यूसुफ़ (ﷺ) हैं और इनके साथ इनकी

क़ौम के कुछ लोग हैं। मैंने उन्हें सलाम किया जिसका जवाब उन्होंने दिया। फिर हम तीसरे आसमान की तरफ़ चढ़े उसे खुलवाया वहाँ (हज़रत) यह्या और (हज़रत) ईसा (अलैहि.) को देखा, उनके साथ उनकी क़ौम के कुछ आदमी थे, मैंने उन्हें सलाम किया और उन्होंने मुझे जवाब दिया। फिर मैं चौथे आसमान की तरफ़ चढ़ा वहाँ हज़रत इदरीस (अलैहि.) को पाया, जिन्हें अल्लाह तआला ने बुलंद मकान पर उठा लिया है। मैंने सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया फिर पाचवें आसमान की तरफ़ चढ़ा। वहाँ (हज़रत) हारून (अलैहि.) थे जिनकी आधी दाढ़ी सफ़ेद थी और आधी काली और बहुत लम्बी दाढ़ी थी, क़रीब क़रीब नाफ़ तक। मैंने हज़रत जिब्राईल (अलैहि.) से सवाल किया, उन्होंने बतलाया कि यह अपनी क़ौम के हर दिल अज़ीज़ हज़रत हारून बिन इमरान (अलैहि.) हैं। इनके साथ इनकी क़ौम की जमाअत है इनहोंने भी मेरे सलाम का जवाब दिया। फिर मैं छठे आसमान की तरफ़ चढ़ा। वहाँ हज़रत मूसा बिन इमरान (अलैहि.) से मुलाक़ात हुई आपका गंदुम गूँ रंग था बाल बहुत थे अगर दो कुर्ते भी पहन लें तो बाल उनसे गुज़र जाएँ। आप फ़र्माने लगे लोग यह ख़्याल करते हैं कि मैं अल्लाह तआला के पास उनसे बड़े मर्तबे का हूँ हालाँकि यह मुझसे बड़े मर्तबे के हैं। जिब्राईल (अलैहि.) से पूछने पर मुझे मालूम हुआ कि आप हज़रत मूसा बिन इमरान (अलैहि.) हैं। आपके पास भी आपकी क़ौम के लोग थे। आपने भी मेरे सलाम का जवाब दिया। फिर मैं सातवें आसमान की तरफ़ चढ़ वहाँ मैंने अपने वालिद हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अलैहि.) को अपनी पीठ बैतुल मअमूर से टिकाए हुए बैठा देखा। आप बहुत ही बेहतर आदमी हैं। पूछने पर मुझे आपका नाम भी मालूम हुआ। मैंने सलाम किया, आपने जवाब दिया मैंने अपनी उम्मत को आधो आध देखा। आधी के तो सफ़ेद बगूला जैसे कपड़े थे और आधी के बहुत काले कपड़े थे। मैं बैतुल मअमूर में गया। मेरे साथ ही सफ़ेद कपड़े वाले सब गए और दूसरे जिनके ख़ाकी कपड़े थे वह सब रोक दिये गए हैं वह भी ख़ैर पर। फिर हम सबने वहाँ नमाज़ अदा की और वहाँ से सब बाहर आए। उस बैतुल मअमूर में हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन जो एक दिन पढ़ गए उनकी बारी क़यामत तक नहीं आती। फिर मैं सिदरतुल मुंतहा की जानिब बुलंद किया गया जिसका हर हर पत्ता इतना बड़ा था कि मेरी सारी उम्मत को ढाँक ले। उसमें से एक नहर जारी थी जिसका नाम सल्सबील है। फिर उसमें से दो चश्मे फूटे हैं एक नहरे कौसर दूसरा नहरे रहमत। मैंने उसमें गुस्ल किया। मेरे अगले पिछले सब गुनाह माफ़ हो गए। फिर मैं जन्नत की तरफ़ चढ़ाया गया। वहाँ मैंने एक हूर देखी। उससे पूछा तू किसकी है? उसने कहा, हज़रत ज़ेद बिन हारिसा (रज़ि.) की। वहाँ मैंने न बिगड़ने वाले पानी और मज़ा मुतग़य्यर न होने वाले दूध की और बेनशा लज़ीज़ शराब और साफ़ सुथरे शहद की नहरें देखीं। उसके अनार बड़े बड़े ढोलों के बराबर थे। उसके परिन्द तुम्हारे इन बुख़्ती (ऊँट) जैसे थे। बेशक अल्लाह तआला ने अपने नेक बंदों के लिए वह नेअमतें तैयार की हैं जो न किसी आँख ने देखीं न किसी कान ने सुनीं, न किसी इंसान के दिल पर उनका ख़्याल तक गुज़रा। फिर मेरे सामने जहन्नम पेश की गयी जहाँ ग़ज़बे इलाही नाराज़गी इलाही थी उसमें अगर पत्थर और लोहा डाला जाए तो वह उसे भी खा जाए। फिर मेरे सामने से वह बंद कर दी गई। मैं फिर सिदरतुल मुंतहा तक पहुँचा दिया गया और मुझे ढाँप लिया पस मेरे और उसके बीच सिर्फ़ बक़द्र दो कमानों के फ़ासला रह गया बल्कि और क़रीब और सिदरतुल मुंतहा के हर एक पत्ते पर फ़रिश्ता आ गया और मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं और फ़र्माया कि तेरे लिए हर नेकी के बदले दस हैं, तू जब किसी नेकी का इरादा करेगा भले बजा न लाए ताहम नेकी लिखी

जाएगी और जब बजा भी लाए तो दस नेकियाँ लिखी जाएँगी और बुराई के महज़ इरादे पर बग़ैर किये हुए कुछ भी न लिखा जाएगा और अगर कर ली तो सिर्फ़ एक ही बुराई गिनी जाएगी। फिर हज़रत मूसा(ﷺ) के पास आने और आपके मश्वरे से जाने और कमी होने का ज़िक्र है। जैसे कि बयान गुज़र चुका। आख़िर में जब पाँच रह गईं तो फ़रिश्ते ने निदा की कि मेरा फ़रीज़ा पूरा हो गया मैंने अपने बन्दों पर तख़्फ़ीफ़ कर दी और उन्हें हर नेकी के बदले उसी जैसी दस नेकियाँ दीं। हज़रत मूसा (ﷺ) ने वापसी पर अबकी मर्तबा भी मुझे फिर वापिस जाने का मश्वरा दिया लेकिन मैंने कहा, अब तो जाते हुए मुझे कुछ शर्म सी मालूम होती है। फिर आपने सुबह को मक्का में इन अजायबात का ज़िक्र किया कि मैं इस रात बैतुल मक़्दिस पहुँचा, आसमानों पर चढ़ाया गया और यह यह देखा। इस पर अबू जहल बिन हिशाम कहने लगा लो! ताज्जुब की बात सुनो ऊँटों को मारते पीटते हम तो बैतुल मक़्दिस महीनों भर में पहुँचें और महीना भर ही वापसी में लग जाए, यह कहते हैं दो माह की मसाफ़त एक ही रात में तै कर आए। आपने फ़र्माया, सुनो! जाते वक़्त मैंने तुम्हारे क़ाफ़िले को फ़लाँ जगह देखा था और आते वक़्त वह मुझे अक़्बा में मिला। सुनो! उसमें फ़लाँ फ़लाँ शख़्स है। फ़लाँ उस रंग के ऊँट पर है और उसके पास यह अस्बाब हैं। अबूजहल ने कहा, ख़बरें तो दे रहा है देखिए कैसी निकलें? इस पर उनसे एक शख़्स ने कहा मैं बैतुल मक़्दिस का हाल तुम सबसे ज़्यादा जानता हूँ उसकी इमारत का हाल उसकी शक्लो सूरत पहाड़ से उसकी नज़दीकी वग़ैरह। पस रसूलुल्लाह (ﷺ) से हिजाबात दूर कर दिये गए और जैसे हम घर में बैठे घर की चीज़ों को देखते हैं उसी तरह आपके सामने बैतुल मक़्दिस कर दिया गया। आप फ़र्माने लगे इसकी बनावट इस तरह की है इसकी हैयत इस तरह की है वह पहाड़ से इस क़द्र नज़दीक है वग़ैरह। उसने कहा, बेशक आप सच फ़र्माते हैं। फिर उसने कुफ़्फ़ार के मज्मआ की तरफ़ देखकर कहा, मुहम्मद (ﷺ) अपनी बात में सच्चे हैं या कुछ ऐसे ही अल्फ़ाज़ कहे।'' (दलाइलुन्नबुव्वा : 2/390, 396; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; इसकी सनद में अमारा बिन जुवैन अबू हारून अब्दी है जिसे नसाई ने मतरूक कहा है। (अल्मीज़ान : 3/173; रक़म : 2018) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को ज़ईफ़ुन जिद्दा क़रार दिया है। (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ : 5459)

यह रिवायत और भी बहुत सी किताबों में है। हमने बावजूद इसकी ग़ुर्बत और नकारत और ज़ुअफ़ के इसे इसलिए बयान किया है कि इसमें और हदीसों के बहुत से शवाहिद हैं और इसलिए भी कि बैहक़ी में है कि जाबिर बिन अबी हकीम कहते हैं मैंने ख़्वाब में रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, पूछा कि हुज़ूर (ﷺ)! आपकी उम्मत में एक शख़्स हैं जिन्हें सुफ़्यान सोरी कहा जाता है। इसमें कोई हर्ज तो नहीं है? आपने फ़र्माया, कोई हर्ज नहीं, मैंने फिर और रावियों के नाम बयान करके पूछा कि वह आपकी हदीस बयान करते हैं कि आपने फ़र्माया है कि आपको रात मेअराज हुई आपने आसमान में देखा, आख़िर तक। आपने फ़र्माया, हाँ! ठीक है। मैंने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! आपकी उम्मत के लोग आपकी तरफ़ से मेअराज वाले वाक़िया में बहुत सी अजीबो ग़रीब बातें बयान करते हैं। आपने फ़र्माया, हाँ! वह बातें क़िस्सा कहने वालों की हैं।'' (बैहक़ी फ़िद्दलाइल : 2/405; यह ख़्वाबो ख़्याल की बात है जिसकी कोई शरई हुज्जत नहीं है।)

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) की रिवायत : तिर्मिज़ी शरीफ़ में है कि हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि.) फ़र्माते हैं हमने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अपने मेअ़राज की केफ़ियत तो बयान कीजिए। आपने फ़र्माया, "सुनो! मैंने अपने अस्हाब को मक्का में इशा की नमाज़ देर से पढ़ाई। फिर जिब्रईल (عليه السلام) मेरे पास सफ़ेद रंग का एक जानवर लाए गधे से ऊँचा और ख़च्चर से नीचा और मुझसे फ़र्माया कि इस पर सवार हो जाइए। उसने कुछ सख़्ती की तो आपने उसका कान मरोड़ा और मुझे उस पर सवार कर दिया। इसमें मदीना में नमाज़ पढ़ने का फिर मदयन में उस दरख़्त के पास नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र है जहाँ हज़रत मूसा (عليه السلام) ठहरे थे। फिर बैतुल्लहम में नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र है जहाँ हज़रत ईसा (عليه السلام) तवल्लुद (पैदा) हुए थे। फिर बैतुल मक़्दिस में नमाज़ पढ़ने का। वहाँ सख़्त प्यास लगने का और दूध और शहद के बर्तन आने का और पेटभर दूध पीने का ज़िक्र है, फ़र्माते हैं वहीं एक शैख़ तकिया लगाए बैठे थे जिन्होंने कहा, यह फ़ितरत तक पहुँच गए और राह याफ़्ता हुए। फिर हम एक वादी पर आए जहाँ जहन्नम को मैंने देखा जो सख़्त दहकते हुए अंगारे की तरह थी फिर लौटते हुए फ़लाँ जगह क़ुरैश का क़ाफ़िला हमें मिला जो अपने किसी गुमशुदा ऊँट की तलाश में था। मैंने उन्हें सलाम किया, कुछ लोगों ने मेरी आवाज़ भी पहचान ली और आपस में कहने लगे, यह आवाज़ तो बिलकुल मुहम्मद (ﷺ) की है। फिर सुबह से पहले मैं अपने अस्हाब के पास मक्का मुकर्रमा पहुँच गया। मेरे पास अबूबक्र (रज़ि.) आए और कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप रात में कहाँ थे? जहाँ जहाँ ख़याल पहुँचा मैंने सब जगह तलाश किया लेकिन आप न मिले, मैंने कहा, मैं तो रात बैतुल मक़्दिस हो आया। कहा वह तो यहाँ से महीने भर की दूरी पर है। अच्छा वहाँ के कुछ निशानात बयान कीजिए। उसी वक़्त वह मेरे सामने कर दिया गया गोया कि मैं उसे देख रहा हूँ, अब जो भी मुझसे सवाल होता मैं देखकर जवाब दे देता। पस अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि मेरी गवाही है कि आप अल्लाह तआ़ला के सच्चे रसूल हैं लेकिन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बातें बनाने लगे कि इब्ने अबी कब्शा को देखो, कहता फिरता है कि एक ही रात में बैतुल मक़्दिस हो आया। आपने फ़र्माया, सुनो! मैं तुम्हें एक निशान बतलाऊँ। तुम्हारे क़ाफ़िले को मैंने फ़लाँ जगह पर देखा। उनका एक ऊँट गुम हो गया था जिसे फ़लाँ शख़्स ले आया। अब वह इतनी दूरी पर हैं, एक मंज़िल उनकी फ़लाँ जगह होगी, दूसरी फ़लाँ जगह और वह फ़लाँ दिन यहाँ पहुँचेंगे, उनके क़ाफ़िले में सबसे पहले गंदुमी रंग का ऊँट है जिस पर स्याह झोल पड़ी हुई है और सामान के दो काली बोरियाँ दोनों तरफ़ लदी हुई हैं। जब वह दिन आया जो दिन उस क़ाफ़िले के वापिस पहुँचने का हुज़ूर (ﷺ) ने बयान फ़र्माया था दोपहर को लोग दौड़े भागे शहर के बाहर गए कि देखें यह सब बातें सच हैं? तो देखा कि क़ाफ़िला आ रहा है और वाक़ेई वही ऊँट आगे है।" (दलाइलुन्नबुव्वा : 2/355, 357; व क़ालल बैहक़ी "हाज़ा इस्नादुन सहीहुन" व सनदुहू हसन; अल्मुअजमुल कबीर : 7142; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/73) यही रिवायत और किताबों में बहुत लम्बी भी मरवी है और इसमें बहुत बातें मुन्कर भी हैं मस्लन बैतुल्लहम में आपका नमाज़ अदा करना और हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का बैतुल मक़्दिस की निशानियाँ पूछना वग़ैरह। इब्ने अब्बास (रज़ि.) की रिवायत में है कि जब आप मेअ़राज वाली रात जन्नत में तशरीफ़ ले गए तो एक तरफ़ से पैरों की चाप की आवाज़ आई। आपने पूछा, जिब्रईल (عليه السلام)! यह कौन हैं? जवाब मिला कि यह हज़रत बिलाल मुअज़्ज़िन (रज़ि.) हैं। आपने वापस

आकर फ़र्माया, बिलाल! तू नजात पा चुके, मैंने इस इस तरह देखा। उसमें है कि हज़रत मूसा (ﷺ) ने बवक़्ते मुलाक़ात फ़र्माया, नबी उम्मी को मरहबा हो। हज़रत मूसा गंदुमी रंग के लम्बे क़द के कानों तक या कानों से क़द्रे ऊँचे बाल वाले थे। उसमें है कि हर नबी ने आपको पहले सलाम किया। जहन्नम के मुलाहिज़ा के वक़्त आपने देखा कि कुछ लोग मुरदार खा रहे हैं। पूछा, यह कौन लोग हैं? जवाब मिला जो लोगों का गोश्त खाया करते थे (यानी ग़ीबत करते थे) वहीं आपने एक शख़्स को देखा जो ख़ुद आग से लाल हो रहा था आँखें टेढ़ी तिरछी थीं। पूछा, यह कौन है? जिब्रईल (ﷺ) ने फ़र्माया यही है जिसने हज़रत सालेह (ﷺ) की ऊँटनी को मार डाला था।'' (अहमद : 1/257; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 9/300; इसकी सनद में क़ाबूस ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 3/367; रक़म : 6788) मुस्नद अहमद में है कि ''जब आपको बैतुल मक़्दिस पहुँचाकर वहाँ से वापिस लाकर एक ही रात में मक्का मुकर्रमा पहुँचा दिया गया और आपने यह ख़बर लोगों को सुनाई बैतुल मक़्दिस के निशान बतलाए उनके क़ाफ़िले की ख़बर दी तो कुछ लोग यह कहकर कि हम ऐसी बातों में इन्हें सच्चा नहीं मान सकते, इस्लाम से फिर गए। फिर यह सब अबू जहल के साथ क़त्ल किये गए। अबू जहल कहने लगा कि यह हमें शजरतुज़्ज़क़्क़ूम से डरा रहा है, लाओ खजूर और मक्खन लाओ और तमज़्ज़क़ कर लो यानी मिलाकर खा लो। और आपने उस रात दज्जाल को उसकी असली सूरत में देखा और आँखों का देखना न कि ख़्वाब में देखना। हज़रत ईसा, हज़रत मूसा और हज़रत इब्राहीम (ﷺ) को भी देखा। दज्जाल की शबीह (शक्लो सूरत) आपने बयान की वह भद्दा खबीस चुंधा है और उसकी एक आँख ऐसी क़ायम है जैसे तारा और बाल ऐसे हैं जैसे किसी दरख़्त की घनी शाख़ें। हज़रत ईसा (ﷺ) गंदुमी रंग के और मज़बूत और क़वी आदमी हैं और हज़रत इब्राहीम (ﷺ) तो बिलकुल हू ब हू मुझ जैसे ही थे'' आख़िर तक।

एक और रिवायत का ज़िक्र : एक रिवायत में है कि ''आपने मालिक को भी जो जहन्नम के दारोग़ा हैं देखा उन निशानियों में जो अल्लाह तआला ने आपको दिखाईं। फिर हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) आपके च चाज़ाद भाई ने आयते कुरआन (فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ) ((32/सज्दा : 23) पढ़ी जिसकी तफ़्सीर हज़रत क़तादा (रह.) इस तरह करते हैं कि मूसा (ﷺ) की मुलाक़ात के होने में तू शक न कर हमने उसे यानी मूसा (ﷺ) को बनी इस्राईल की हिदायत के लिए भेजा था।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब अल्इस्रा बि रसूलिल्लाहि (ﷺ) इलस्समावाति व फ़र्ज़िस्सल्वात : 165; दलाइलुन्नबुव्वा : 2 386; सहीह बुख़ारी : 3339 मुख़्तसरन) यह रिवायत सही मुस्लिम में भी है और सनद से मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मेअराज की रात एक जगह से मुझे निहायत ही आला और मस्त ख़ुश्बू की महक आने लगी। मैंने पूछा कि यह ख़ुश्बू कैसी है। जवाब मिला कि फ़िरऔन की लड़की की मशाता और उसकी औलाद के महल की। फ़िरऔन की शहज़ादी को कंघी करते हुए उसके हाथ से इत्तिफ़ाक़न कंघी गिर पड़ी तो उसकी ज़ुबान से बेसाख़्ता बिस्मिल्लाह निकल गया। उस पर शहज़ादी ने उससे कहा, अल्लाह तो मेरे बाप ही हैं। उसने जवाब दिया, नहीं! बल्कि अल्लाह तआला वह है जो मुझे और तुझे और ख़ुद फ़िरऔन को रोज़ियाँ देता है, उसने कहा, अच्छा! तो क्या तू मेरे बाप के सिवा किसी और को अपना रब मानती है? उसने जवाब दिया कि हाँ! मेरा तेरा और तेरे बाप सबका रब अल्लाह तआला ही है। उसने अपने बाप से कहलवाया। वह सख़्त ग़ज़बनाक हुआ

और उसी वक़्त उसे फ़ौरन दरबार बुलवा भेजा और कहा, क्या तू मेरे सिवा किसी और को अपना रब मानती है? उसने कहा, हाँ! मेरा और तेरा रब अल्लाह तआला ही है जो बुलंदियों वाला और बुज़ुर्गियों वाला है। फ़िरऔन ने उसी वक़्त हुक्म दिया कि तांबे की जो कढ़ाई बनी हुई है उसे ख़ूब तपाया जाए। और जब वह बिलकुल आग जैसी हो जाए तो उसके बच्चों को एक एक करके उसमें डाल दिया जाए। आख़िर में ख़ुद उसे भी इसी तरह डाल दिया जाए। चुनाँचे वह गर्म की गई जब आग जैसी हो गई तो हुक्म दिया कि इसके बच्चों को एक एक करके इसमें डालना शुरु करो। उसने कहा, बादशाह! एक दरख़्वास्त मेरी मंज़ूर कर, वह यह कि मेरी और मेरे इन बच्चों की हड्डियाँ एक ही जगह डाल देना। उसने कहा, अच्छा! तेरे कुछ हुक़ूक़ मेरे ज़िम्मे हैं इसलिए यह मंज़ूर है। जब और सब बच्चे उसमें डाल दिये गए और सब जलकर राख हो गए तो सबसे छोटे की बारी आई जो माँ की छाती से लगा हुआ दूध पी रहा था। फ़िरऔन के सिपाहियों ने उसे जब घसीटा तो उस नेक बंदी के आँखों तले अंधेरा छा गया। अल्लाह तआला ने उस बच्चे को उसी वक़्त ज़ुबान दे दी और उसने बआवाज़े बुलंद कहा, अम्माजान! अफ़सोस न करो, अम्माजान! ज़रा भी पसो पेश न करो, हक़ पर जान देना ही सबसे बड़ी नेकी है चुनाँचे उन्हें सब्र आ गया उसे भी उसमें डाल दिया और आख़िर में उन बच्चों की माँ को भी। यह ख़ुश्बू की महकें उसी के जन्नती महल से आ रही हैं। आपने इस वाक़िया के साथ ही बयान किया कि चार छोटे बच्चों ने बचपन ही में बातचीत की एक तो यही बच्चा और एक वह बच्चा जिसने हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) की पाकदामनी की शहादत दी थी और एक वह बच्चा जिसने हज़रत जुरैज वलीउल्लाह की पाकदामनी की गवाही दी थी और हज़रत ईसा बिन मरयम (ﷺ)।'' (अहमद : 1/309, 310; व सनदुहू हसन; तब्रानी : 12280) इस रिवायत की सनद बेऐब है।

एक और रिवायत : और रिवायत में है कि ''मेअराज वाली रात की सुबह मुझे यक़ीन था कि जब मैं यह ज़िक्र लोगों से करूँगा तो वह मुझे झुठलाएँगे चुनाँचे आप एक तरफ़ ग़मनाकी के साथ बैठ गये। उसी वक़्त आपके पास से दुश्मने इलाही अबू जहल गुज़रा और पास बैठकर बतौरे मज़ाक़ कहने लगा, कहिए कोई नई बात है? आपने फ़र्माया, हाँ! है। उसने कहा, क्या? आपने फ़र्माया, रात को मुझे सैर कराई गयी। उसने पूछा, कहाँ तक पहुँचे? फ़र्माया बैतुल मक़्दिस तक कहा और सुबह को फिर आप यहाँ मौजूद भी हैं? आपने फ़र्माया, हाँ! अब उस मूज़ी के दिल में ख़्याल आया कि इस वक़्त इन्हें झुठलाना अच्छा नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों के मज्मअ़े में फिर यह बात न कहें इसलिए उसने कहा, क्यूँ साहब! अगर मैं उन सब लोगों को जमा कर लूँ तो सबके सामने भी आप यही कहेंगे? आपने फ़र्माया, क्यूँ नहीं! सच्ची बातें छुपाने की नहीं होतीं। उसी वक़्त उसने हाँक लगायी कि ऐ बनी कअ़ब बिन लूई की औलादों, लो आओ। सब लोग उठ खड़े हुए और आपके पास आकर बैठ गए तो उस मल्ऊन ने कहा, अब अपनी क़ौम के लोगों के सामने वह बात बयान करो जो मुझसे कह रहे थे। तो आपने फ़र्माया, हाँ सुनो! मुझे आज रात सैर कराई गई। सबने पूछा, कहाँ तक गए। आपने फ़र्माया बैतुल मक़्दिस तक। लोगों ने कहा, अच्छा और फिर सुबह को हममें मौजूद हो? आपने फ़र्माया, हाँ! अब तो किसी ने तालियाँ पीटनी शुरु कर दीं, कोई ताज्जुब के साथ अपना हाथ अपने माथे पर रखकर बैठ रहा और सख़्त हैरत के साथ उन्होंने बिल इत्तिफ़ाक़ आपको झूठा समझा फिर कुछ देर के बाद कहने लगे, अच्छा!

तुम वहाँ की केफ़ियत और जो निशानात हम पूछें बता सकते हो? उनमें वह लोग भी थे जो बैतुल मक़्दिस हो आए थे और वहाँ के चप्पे चप्पे से वाक़िफ़ थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, पूछो क्या पूछते हो? वह पूछने लगे आप बतलाने लगे। फ़र्माते हैं कुछ ऐसे बारीक सवाल उन्होंने किये कि ज़रा घबराहट मुझे होने लगी उसी वक़्त मस्जिद मेरे सामने कर दी गई अब मैं देखता जाता था और बताता जाता था बस यूँ समझो कि अक़ील के घर के पास ही मस्जिद थी या उक़ाल के घर के पास। यह इसलिए कि कुछ औसाफ़ मुझे मस्जिद के याद नहीं रहे थे। आपके उन निशानात के बतलाने के बाद सब कहने लगे, हुज़ूर (ﷺ) ने औसाफ़ तो साफ़-साफ़ और ठीक ठीक बतलाए। अल्लाह तआला की क़सम! एक बात में भी ग़लती नहीं की।'' (अहमद : 1/309; व सनदुहू सहीहुन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11285; मुअजमुल औसत : 2468; बैहक़ी : 2/363; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/64) यह हदीस नसाई वग़ैरह में भी मौजूद है। बैहक़ी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की रिवायत से है कि ''जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मेअराज करायी गई तो आप सिदरतुल मुंतहा तक पहुँचे जो सातवें आसमान पर है जो चीज़ चढ़े वह यहीं तक पहुँचती है फिर यहाँ से उठा ली जाती है और जो उतरे वह यहीं तक उतरती है फिर यहाँ से ले ली जाती है। उस दरख़्त पर सोने की टिड्डियाँ छा रही थीं। हुज़ूर (ﷺ) को पाँच वक़्त की नमाज़ें और सूरह बक़रह के आख़िर की आयतं दी गईं और यह कि आपकी उम्मत में से जो शिर्क न करेगा उसके कबीरा गुनाह भी बख़्श दिये जाएँगे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी ज़िक्रि सिदरतिल मुंतहा : 173; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/372, 373)

जुज़्ए हसन बिन अरफ़ा की रिवायत : हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मेअराज की लम्बी हदीस भी मरवी है जिसमें ग़राबत है हसन बिन अरफ़ा (रह.) ने अपने मशहूर जुज़ में इसे वारिद किया है। हज़रत अबू ज़ुबियान (रह.) कहते हैं कि हम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के साहबज़ादे हज़रत अबू उबेदा (रह.) के पास बैठे हुए थे आपके पास मुहम्मद बिन सअद बिन अबी वक़्क़ास (रह.) भी थे तो हज़रत मुहम्मद बिन सअद (रह.) ने अबू उबेदह (रह.) से कहा तुमने मेअराज की बाबत जो कुछ अपने वालिद साहब से सुना हो सुनाओ। उन्होंने कहा मैं नहीं आप ही सुनाइए जो आपने अपने वालिद से सुना हो। पस आपने रिवायत बयान करनी शुरू की। उसमें यह भी है कि ''जब बुर्राक़ ऊँचाई पर चढ़ता उसके हाथ पैर बराबर के हो जाते। इसी तरह जब नीचे की तरफ़ उतरता तब भी बराबर ही रहते जिससे सवार को तक्लीफ़ न हो हम एक साहब के पास से गुज़रे जो लम्बी क़ामत सीधे बालों वाले गंदुमी रंग के थे ऐसे ही जैसे अज़्दशनुह क़बीले के आदमी होते हैं। वह बआवाज़े बुलंद कह रहे थे कि तूने इसका इकराम किया और इसे फ़ज़ीलत अता की। हमने उन्हें सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया। पूछा कि जिब्रईल (عليه السلام) यह तुम्हारे साथ कौन हैं? जिब्रईल (عليه السلام) ने कहा, यह अहमद हैं। उन्होंने फ़र्माया, नबी उम्मी अरबी को मरहबा हो जिसने अपने रब की रिसालत पहुँचाई और अपनी उम्मत की ख़ैरख़्वाही की। फिर हम लोटे, मैंने पूछा जिब्रईल (अ.)! यह कौन हैं? आपने फ़र्माया यह मूसा बिन इमरान (عليه السلام) हैं। मैंने कहा और यह ऐसे लफ़्ज़ों से बातें किससे कर रहे थे? फ़र्माया, अल्लाह तआला से आपके बारे में। मैंने कहा, अल्लाह तआला से और इस आवाज़ से? फ़र्माया, हाँ! अल्लाह तआला को उनकी तेज़ी मालूम है। फिर हम एक दरख़्त के पास से निकले जिसके फल चराग़ों जैसे थे उसके नीचे एक बुज़ुर्ग बैठे

हुए थे जिनके पास बहुत से छोटे बच्चे थे। हज़रत जिब्राईल (ﷺ) से आपने मेरी निस्बत पूछा उन्होंने जवाब दिया कि यह आपके लड़के अहमद (ﷺ) हैं तो आपने फ़र्माया, मरहबा हो नबी उम्मी को जिसने अपने रब की पैग़म्बरी पूरी की और अपनी उम्मत की ख़ैरख़्वाही की। मेरे ख़ुशनसीब बेटे आज रात आपकी मुलाक़ात अपने परवरदिगार से होने वाली है आपकी उम्मत सबसे आख़िरी उम्मत है और सबसे कमज़ोर भी है ख़्याल रखना ऐसे ही काम हों जो उन पर आसान रहें। फिर हम मस्जिदे अक़्सा पहुँचे। मैंने उतरकर बुर्राक़ को उसी हल्क़ा में बाँधा जिसमें अम्बिया बाँधा करते थे, फिर मस्जिद में गया वहाँ मैंने नबियों को पहचाना, कोई नमाज़ में खड़ा है कोई रुकूअ में है कोई सज्दे में। फिर मेरे पास शहद का और दूध का बर्तन लाया गया। मैंने दूध का बर्तन लेकर पी लिया। जिब्राईल (ﷺ) ने मेरे मूँढे पर हाथ रखकर फ़र्माया, फ़ित्रत को तू पहुँच गया रब्बे मुहम्मद की क़सम। फिर नमाज़ की तक्बीर हुई और मैंने उन सबको नमाज़ पढ़ाई फिर हम वापिस लौट आए।'' इसकी इस्नाद ग़रीब हैं मतन में भी ग़राइब हैं मस्लन अम्बिया का आपकी शिनाख़्त का सवाल फिर आपका उनके पास से जाने के बाद उनकी मअरिफ़त का सवाल वग़ैरह हालाँकि सहीह हदीसों में है कि हज़रत जिब्राईल (ﷺ) पहले ही आपको बतला दिया करते थे कि यह फ़लाँ नबी हैं ताकि सलाम पहचान के बाद हो। फिर इसमें है कि अम्बिया से मुलाक़ात बैतुल मक़्दिस की मस्जिद में दाख़िल होने से पहले ही हुई हालाँकि सही रिवायतों में है कि उनसे मुलाक़ात आसमानों पर हुई। फिर आप दोबारा उतरते हुए वापसी में बैतुल मक़्दिस में आए। वह सब भी आपके साथ थे और यहाँ आपने उन्हें नमाज़ पढ़ाई। फिर बुर्राक़ पर सवार होकर मक्का मुकर्रमा वापिस आए, वल्लाहु आलम!

इमाम अहमद (रह.) की एक और रिवायत : मुस्नद अहमद में इब्ने मसऊद (रज़ि.) की रिवायत है कि ''शबे मेअराज में इब्राहीम और मूसा और ईसा (ﷺ) से मिला वहाँ क़यामत के क़ायम होने के ख़ास वक़्त की बाबत मुज़ाकिरा हुआ। हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने लाइल्मी ज़ाहिर की तो कहा हज़रत मूसा (ﷺ) से पूछो, उन्होंने भी बेख़बरी ज़ाहिर की फिर तै हुआ कि हज़रत ईसा (ﷺ) पर रखो आपने फ़र्माया, इसके सही वक़्त का इल्म तो सिवाय अल्लाह तआला के किसी को नहीं। हाँ! यही तो मुझसे फ़र्माया गया है कि दज्जाल निकलने वाला है उस वक्त मेरे साथ दो छड़ियाँ होंगी। वह मुझे देखते ही सीसे की तरह घुलने लगेगा। आख़िर मेरी वजह से अल्लाह तआला उसे हलाक करेगा। फिर तो दरख़्त पत्थर भी बोल उठेंगे कि ऐ मुसलमान! देख यहाँ मेरे पीछे एक काफ़िर छुपा हुआ है आ और इसे क़त्ल कर दे। पस अल्लाह तआला उन सबको हलाक करेगा। लोग ठण्डे दिलों अपने शहरों अपने वतनों में लौट आएँगे। उसी ज़माने में याजूज माजूज निकलेंगे जो हर ऊँचाई से कूदते फाँदते आएँगे। जो चीज़ पाएँगे ग़ारत कर देंगे। जो पानी देखेंगे पी जाएँगे आख़िर लोग तंग आकर मुझसे शिकायत करेंगे। मैं अल्लाह तआला से दुआ करूँगा। अल्लाह उन सबको एक साथ ही हलाक कर देगा लेकिन ज़मीन पर उन लाशों के तअफ़्फ़ुन की वजह से चलना फिरना मुश्किल हो जाएगा। उस वक़्त अल्लाह तआला बारिश बरसाएगा जो उनकी लाशों को बहाकर समुन्द्र में डाल देगा। मुझे यह ख़ूब मालूम है कि उसके बाद फ़ौरन ही क़यामत आ जाएगी जैसे पूरे दिन की हमल वाली औरत हो कि न जाने सुबह फ़ारिग़ हो जाए या रात ही में।'' (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब फ़ित्नतिद्दज्जाल व ख़ुरूज ईसा बिन मरयम (ﷺ): 4081; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 1/375; हाकिम : 4/488)

एक लम्बी रिवायत का ज़िक्र : और एक हदीस में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) को जिस रात मस्जिदे हराम से बैतुल मक़्दिस की मस्जिद तक पहुँचाया गया, उस रात आप ज़मज़म और मक़ामे इब्राहीम के दरम्यान थे कि जिब्राईल (عليه السلام) दाएँ और मीकाईल (عليه السلام) बायें से आपको उड़ा ले गए। यहाँ तक आप आसमान की बुलंदियों तक पहुँचे। लौटते हुए आपने उनकी तस्बीहें और तस्बीहों के साथ सुनीं।" यह रिवायत इसी सूरत की आयत (تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ) (17/बनी इस्राईल : 44) की तफ़्सीर में आएगी। मुस्नद में है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) जाबिया में थे। बैतुल मक़्दिस की फ़तह का ज़िक्र हुआ। आपने हज़रत कअब (रह.) से पूछा कि तुम्हारे ख़्याल में मुझे वहाँ किस जगह नमाज़ पढ़नी चाहिए। उन्होंने फ़र्माया, मुझसे पूछते हो तो मैं तो कहूँगा कि सख़रा के पीछे नमाज़ पढ़िये ताकि सारा बैतुल मक़्दिस आपके सामने रहे। आपने फ़र्माया, तुमने वही यहूदियत की मुशाबिहत की, मैं तो उस जगह नमाज़ पढ़ूँगा जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पढ़ी है पस आपने आगे बढ़कर क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ अदा की, नमाज़ अदा करने के बाद सख़रा के आसपास से तमाम कूड़ा समेटना और अपनी चादर में बाँधकर बाहर फेंकना शुरू किया और औरों ने भी आपका हाथ बटाया। (अहमद : 1/38; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) पस आपने न तो सख़रा की ऐसी ताज़ीम की जैसे यहूद करते थे कि नमाज़ भी उसी के पीछे पढ़ते थे बल्कि उसी को क़िब्ला बना रखा था। चूँकि हज़रत कअब (रह.) भी इस्लाम से पहले यहूदी थे इसीलिए आपने ऐसी राय पेश की थी जिसे ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ने ठुकरा दिया और न आपने ईसाइयों की तरह सख़रा की एहानत की कि उन्होंने तो उसे कूड़ा करकट डालने की जगह बना रखा था बल्कि आपने ख़ुद उसके पास से कूड़ा उठाकर फेंका यह बिलकुल उस हदीस के मुशाबेह है जिसमें है कि न तो क़ब्रों पर बैठो न उनकी तरफ़ नमाज़ अदा करो। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जनाइज़, बाब अन्नही अनिल जुलूसि अलल क़ब्रि वस्सलातु इलैहि : 972; तिर्मिज़ी : 1051; अबूदाऊद : 3229; अहमद : 4/135; इब्ने हिब्बान : 2320) एक लम्बी रिवायत मेअराज की बाबत अबू हुरैरा (रज़ि.) से ग़ुर्बत वाली भी मरवी है कि उसमें है कि "हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) और मीकाईल (عليه السلام) आपके पास आए। जिब्राईल (عليه السلام) ने मीकाईल (عليه السلام) से कहा कि मेरे पास ज़मज़म के पानी का तश्त भर लाओ कि मैं इनके दिल को पाक करूँ और इनके सीने को खोल दूँ। फिर आपका पेट चाक किया और उसे तीन बार धोया और तीनों बार मीकाईल (عليه السلام) के लाए हुए पानी के तश्त से उसे धोया और आपके सीने को खोल दिया। सब ग़िल व ग़श दूर कर दिया और इल्म व हिल्म ईमान व यक़ीन से उसे भर दिया। और आपके दोनों मूँढों के बीच मुहरे नबुव्वत लगा दी और एक घोड़े पर बिठाकर आपको हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ले चले। देखा कि एक क़ौम है उधर खेती काटती है इधर बढ़ जाती है हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) से आपने पूछा। यह कौन लोग हैं? फ़र्माया, यह राहे इलाही के मुजाहिदीन हैं जिनकी नेकियाँ सात सात सौ तक बढ़ती हैं और जो ख़र्च करें उसका बदला पाते हैं। अल्लाह तआला बेहतरीन रज़्ज़ाक़ है फिर आपकी गुज़र उस क़ौम पर हुआ जिनके सिर पत्थरों से कुचले जा रहे थे हर बार ठीक हो जाते और फिर कुचले जाते। दम भर की उन्हें मोहलत न मिलती थी। मैंने पूछा, यह कौन लोग हैं? जिब्राईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, यह वह लोग हैं कि फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त इनके सिर भारी हो जाया करते थे। फिर कुछ लोगों को मैंने देखा कि अंगारे खा रहे हैं। मैंने कहा, यह कैसे लोग हैं? फ़र्माया, अपने माल की ज़कात न देने वाले। अल्लाह ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि यह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। फिर मैंने

ऐसे लोगों को देखा कि उनके सामने एक हँडिया में तो साफ़ सुथरा गोश्त है दूसरी में ख़बीस सड़ा हुआ गंदा गोश्त है। यह उस अच्छे गोश्त से तो रोक दिये गए हैं और उस बदबूदार गोश्त को खा रहे हैं। मैंने सवाल किया कि यह किस गुनाह के मुर्तकिब हैं? जवाब मिला कि यह वह मर्द हैं जो अपनी हलाल बीवियों को छोड़कर हराम औरतों के पास रात गुज़ारते थे और वह औरतें हैं जो अपने हलाल शौहरों को छोड़कर औरों के यहाँ रात गुज़ारती थीं। फिर आपने देखा कि रास्ते में एक लकड़ी है कि हर कपड़े को फाड़ देती है और हर चीज़ को ज़ख़्मी कर देती है। पूछा, यह क्या है? फ़र्माया, यह आपके उन उम्मतियों की मिसाल है जो रास्ते रोककर बैठ जाते हैं।

फिर इस आयत को पढ़ा (وَ لَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ) (7/आराफ़ : 86) यानी हर हर रास्ते पर लोगों को ख़ौफ़ज़दा करने और अल्लाह तआला की राह से रोकने को न बैठा करो। फिर देखा कि एक शख़्स बहुत बड़ा ढेर जमा किये हुए है जिसे उठा नहीं सकता, फिर भी वह और बढ़ा रहा है। पूछा जिब्राईल (عليه السلام) यह क्या है? फ़र्माया यह आपकी उम्मत का वह शख़्स है जिसके ऊपर लोगों के हुक़ूक़ इस क़द्र हैं कि वह हर्गिज़ अदा नहीं कर सकता ताहम वह और हुक़ूक़ चढ़ा रहा है और अमानतें ले रहा है। फिर आपने एक जमाअत को देखा जिनकी ज़ुबानें और होंठ लोहे की क़ैंचियों से काटे जा रहे हैं इधर कटे उधर सही हो गए, फिर कटे यही हाल बराबर जारी है। पूछा, यह कौन लोग हैं? फ़र्माया यह फ़ित्ने के वाइज़ और ख़तीब हैं। फिर देखा कि एक छोटे से पत्थर के सूराख़ में से एक बड़ा भारी बैल निकल रहा है फिर वह लौटना चाहता है लेकिन नहीं जा सकता। पूछा, जिब्राईल (عليه السلام) यह क्या है? फ़र्माया, यह वह शख़्स है जो कोई बड़ा बोल बोलता था फिर उस पर शर्मिंदा तो होता था लेकिन लौटा नहीं सकता था। फिर आप एक वादी में पहुँचे वहाँ निहायत नफ़ीस ख़ुशगवार ठण्डी हवा और दिल ख़ुशकुन मुअत्तर ख़ुश्बूदार राहत व सुकून की मुबारक सदायें सुनकर आपने पूछा, यह क्या है? हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने फ़र्माया, यह जन्नत है वह कह रही है कि या रब मुझसे अपना वादा पूरा कर मेरे बालाख़ाने रेशम मोती मूँगे सोने चाँदी जाम कटोरे शहद पानी दूध शराब वग़ैरह वग़ैरह नेअमतें बहुत ज़्यादा हो गई हैं। इसे अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिला कि हर एक मुसलमान मोमिन मर्द व औरत जो मुझे और मेरे रसूलों को मानता हो नेक अमल करता हो न मेरे साथ किसी को शरीक करता हो न मेरे बराबर किसी को समझता हो वह सब तुझमें दाख़िल होंगे। सुन जिसके दिल में मेरा डर है वह हर ख़ौफ़ से महफ़ूज़ है जो मुझसे सवाल करता है वह महरूम नहीं रहता जो मुझे क़र्ज़ देता है मैं उसे बदला देता हूँ जो मुझ पर भरोसा करता है मैं उसे किफ़ायत करता हूँ मैं सच्चा मअबूद हूँ मेरे सिवा और कोई मअबूद नहीं मेरे वादे झूठे नहीं होते। मोमिन नजात पाने वाला है, अल्लाह बरकत वाला है जो सबसे बेहतर ख़ालिक़ है। यह सुनकर जन्नत ने कहा बस मैं ख़ुश हो गयी। फिर आप एक दूसरी वादी में पहुँचे जहाँ निहायत बुरी और भयानक मकरूह आवाज़ें आ रही थीं और सख़्त बदबू थी। आपने उसकी बाबत भी जिब्राईल (عليه السلام) से पूछा उन्होंने बतलाया कि यह जहन्नम की आवाज़ है वह कह रही है कि या रब! मुझसे अपना वादा पूरा कर और मुझे वह दे। मेरे तौक़ व ज़ंजीर मेरे शोले और गर्मी मेरा थोर और लहू पीप मेरे अज़ाब और सज़ा के सामान बहुत वाफ़िर हो गये हैं, मेरे गहराव बहुत ज़्यादा है, मेरी आग बहुत तेज़ है मुझे वह दे जिसका वादा मुझसे हुआ है। अल्लाह तआला ने फ़र्माया हर मुश्रिक व काफ़िर ख़बीस मुंकिर बेईमान मर्द औरत तेरे लिए है। यह सुनकर जहन्नम ने अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर की। आप फिर चले यहाँ तक कि बैतुल मक़्दिस पहुँचे उतरकर सख़रा में अपने घोड़े को

बाँधा अंदर जाकर फ़रिश्तों के साथ नमाज़ अदा की। फ़रागत के बाद उन्होंने पूछा कि जिब्रईल (अलैहि०) यह आपके साथ कौन हैं? आपने फ़र्माया, मुहम्मद (ﷺ) हैं। उन्होंने कहा, आपकी तरफ़ भेजा गया? फ़र्माया हाँ! सबने मरहबा कहा कि बेहतरीन भाई और बहुत ही अच्छे ख़लीफ़ा हैं और बहुत अच्छाई और इज़्ज़त से आए हैं फिर आपकी मुलाक़ात नबियों की रूहों से हुई सबने अपने परवरदिगार की सना बयान की। हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने मुझे अपना ख़लील बनाया और मुझे बहुत बड़ा मुल्क दिया और ऐसा फ़र्मा बरदार इमाम बनाया जिनकी इक़्तिदा की जाती है उसी ने मुझे आग से बचा लिया और उसे मेरे लिए ठण्डक और सलामती वाली बना दी। हज़रत मूसा (अलैहि०) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ही की मेहरबानी है कि उसने मुझसे कलाम (बातचीत) किया, मेरे दुश्मनों को आले फ़िरऔन को हलाक किया। बनी इस्राईल को मेरे हाथों नजात दी, मेरी उम्मत में ऐसी जमाअत रखी जो हक़ की हादी और हक़ के साथ अदल करने वाली थी। फिर हज़रत दाऊद (अलैहि०) ने अल्लाह तआला की सना बयान करनी शुरू की कि अल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला ने मुझे अज़ीमुश्शान मुल्क दिया मुझे ज़बूर का इल्म दिया मेरे लिए लोहा नर्म कर दिया, पहाड़ों को मुसख़्ख़र कर दिया और परिन्दों को भी जो मेरे साथ तस्बीहे इलाही करते थे, मुझे हिक्मत और पुरज़ोर कलाम अता फ़र्माया। फिर हज़रत सुलेमान (अलैहि०) ने सना करनी शुरु की कि अल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला ने हवाओं को मेरे ताबेअ कर दिया और शयातीन को भी कि वह मेरे फ़र्मान के मातहत बड़े बड़े महल्लात और नक़्शे और बर्तन वग़ैरह बनाते थे, उसने मुझे जानवरों की बातचीत के समझने का इल्म अता किया, हर चीज़ में मुझे फ़ज़ीलत दी इंसानों के जिन्नों के परिन्दों के लश्कर मेरे मातहत कर दिए और अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर मुझे फ़ज़ीलत दी और मुझे वो सल्तनत दी जो मेरे बाद किसी को नहीं दी और वह भी ऐसी जिसमें पाकीज़गी ही पाकीज़गी थी और कोई हिसाब न था फिर हज़रत ईसा (अलैहि०) ने अल्लाह तआला की तअरीफ़ बयान करनी शुरू की कि उसने मुझे अपना कलिमा बनाया और मेरी मिसाल हज़रत आदम (अलैहि०) की सी है जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया था कि हो जा और वह हो गये थे। उसने मुझे किताब व हिक्मत तौरात व इंजील सिखाई। मैं मिट्टी का परिन्द बनाता था फिर उसमें फूँक मारता तो वह बहुक्मे इलाही ज़िन्दा परिन्दा बनकर उड़ जाता। मैं बचपन के अँधों को और जुज़ामियों को बहुक्मे इलाही अच्छा कर देता था मुर्दे अल्लाह की इजाज़त से ज़िन्दा हो जाते थे। मुझे उसने उठा लिया मुझे पाक साफ़ कर दिया। मुझे और मेरी वालिदा को शैतान से बचा लिया। हम पर शैतान का कुछ दख़ल न था, अब जनाब रसूले आख़िरुज़्ज़माँ (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम सबने तो अल्लाह की तअरीफ़ें बयान कर लीं अब मैं करता हूँ। अल्लाह ही के लिए हम्दो सना है जिसने मुझे रहमतुल लिल आलमीन बनाकर अपनी तमाम मख़्लूक़ के लिए डराने और ख़ुशख़बरी देने वाला बनाकर भेजा। मुझ पर क़ुरआने करीम नाज़िल किया जिसमें हर चीज़ का बयान है मेरी उम्मत को तमाम और उम्मतों से अफ़ज़ल बनाया जो कि औरों की भलाई के लिए बनाई गई है उसे बेहतरीन उम्मत बनाया उन ही को पहली और आख़िरी उम्मत बनाया, मेरा सीना खोल दिया मेरे बोझ दूर कर दिये, मेरा ज़िक्र बुलंद किया, मुझे शुरू करने वाला और ख़त्म करने वाला बनाया। हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) ने फ़र्माया, इन ही वजूहात से हज़रत मुहम्मद (ﷺ) तुम सबसे अफ़ज़ल हैं। (इमाम अबू जअफ़र राज़ी रह. फ़र्माते हैं) शुरू करने वाले आप हैं यानी बरोज़े क़यामत सिफ़ारिश आप ही से शुरू होगी। फिर आपके सामने

तीन ढके हुए बर्तन पेश किये गए। पानी के बर्तन में से आपने थोड़ा सा पानी पीकर वापिस कर दिया फिर दूध का बर्तन लेकर आपने पेट भरकर दूध पिया। फिर शराब का बर्तन लाया गया तो आपने उसके पीने से इंकार कर दिया कि मैं शिकम सेर हो चुका हूँ। हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने फ़र्माया, यह आपकी उम्मत पर हराम कर दी जाने वाली है और अगर आप इसे पी लेते तो आपकी उम्मत में से आपके ताबेदार बहुत ही कम होते। फिर आपको आसमान की तरफ़ चढ़ाया गया, दरवाज़ा खुलवाना चाहा तो पूछा गया यह कौन हैं? जिब्राईल (ﷺ) ने कहा, मुहम्मद (ﷺ) हैं। पूछा गया क्या आपकी तरफ भेज दिया गया। फ़र्माया, हाँ! उन्होंने कहा, अल्लाह इस भाई और ख़लीफ़ा को ख़ुश रखे, यह बड़े अच्छे भाई और निहायत उम्दा ख़लीफ़ा हैं। उसी वक़्त दरवाज़ा खोल दिया गया। आपने देखा कि एक शख़्स हैं पूरी पैदाइश के आम लोगों की तरह उनकी पैदाइश में कोई नुक़्स नहीं। उनके दाएँ एक दरवाज़ा है जहाँ से ख़ुश्बू की लपटें आ रही हैं और बाएँ जानिब एक दरवाज़ा है जहाँ से ख़बीस हवा आ रही है दाहिनी तरफ़ के दरवाज़ को देखकर हंस देते हैं और ख़ुश होते हैं और बाएँ तरफ़ के दरवाज़े को देखकर रो देते हैं और ग़मगीन हो जाते हैं। मैंने कहा, जिब्राईल (ﷺ)! यह शैख़ पूरी पैदाइश वाले कौन है? जिनकी ख़िल्क़त में कुछ भी नहीं घटा और यह दोनों दरवाज़े कैसे हैं? जवाब मिला कि यह आपके वालिद हज़रत आदम (ﷺ) हैं। दाएँ जानिब जन्नत का दरवाज़ा है अपनी जन्नती औलाद को देखकर ख़ुश होकर हंस देते हैं और बाएँ जानिब जहन्नम का दरवाज़ा है अपनी दोज़ख़ी औलाद को देखकर रो देते हैं और ग़मगीन हो जाते हैं। फिर दूसरे आसमान की तरफ़ चढ़े उसी तरह के सवाल जवाब के बाद दरवाज़ा खुला वहाँ आपने दो जवानों को देखा, पूछने पर मालूम हुआ कि यह हज़रत ईसा बिन मरयम (ﷺ) और हज़रत यह्या बिन ज़करिया (ﷺ) हैं यह दोनों आपस में ख़ालाज़ाद भाई होते हैं, इसी तरह तीसरे आसमान पर पहुँचे वहाँ हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) को पाया जिन्हें हुस्न में और लोगों पर वही फ़ज़ीलत थी जो चाँद को बाक़ी सितारों पर। फिर चौथे आसमान पर उसी तरह पहुँचे वहाँ हज़रत इदरीस (ﷺ) को पाया, जिन्हें अल्लाह तआला ने बुलंद मकान पर चढ़ा लिया है। फिर आप पाँचवें आसमान पर भी उन ही सवालात व जवाबात के बाद पहुँचे देखा कि एक साहब बैठे हुए हैं उनके आसपास कुछ लोग हैं जो उनसे बातें कर रहे हैं। पूछा, यह कौन हैं? जवाब मिला कि हज़रत हारून (ﷺ) हैं जो अपनी क़ौम में हर दिल अज़ीज़ थे और यह लोग बनी इस्राईल हैं। फिर इसी तरह छठे आसमान पर पहुँचे। हज़रत मूसा (ﷺ) को देखा आपके उनसे भी आगे निकल जाने पर वह रो दिये, पूछने पर सबब यह मालूम हुआ कि बनी इस्राईल मेरी निस्बत यह समझते थे कि तमाम औलादे आदम में अल्लाह तआला के पास सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग मैं हूँ लेकिन यह हैं मेरे ख़लीफ़ा जो दुनिया में हैं और मैं आख़िरत में हूँ। ख़ैर सिर्फ़ यही होते तो भी चँदाँ मुज़ायक़ा न था लेकिन हर नबी के साथ उनकी उम्मत है फिर आप इसी तरह सातवें आसमान पर पहुँचे वहाँ एक साहब को देखा जिनकी दाढ़ी में कुछ सफ़ेद बाल थे वह जन्नत के दरवाज़े पर एक कुर्सी लगाए बैठे हुए हैं उनके पास कुछ और लोग भी हैं। कुछ के चेहरे तो रोशन हैं और कुछ के चेहरों पर कुछ कम चमक है बल्कि रंग में कुछ और भी है यह लोग उठे और नहर में एक ग़ोता लगाया जिससे रंग क़द्रे निखर गया। फिर दूसरी नहर में नहाये कुछ और निखर गए फिर तीसरे में ग़ुस्ल किया बिलकुल रोशना सफ़ेद चेहरा हो गये। आकर दूसरों के साथ मिलकर बैठ गए और उन ही जैसे हो गए। आपकेसवाल पर हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने बतलाया कि यह आपके वालिद हज़रत इब्राहीम (ﷺ) हैं रूए ज़मीन पर सफ़ेद

बाल सबसे पहले इन ही के निकले। यह सफ़ेद चेहरा वाले वह ईमानदार लोग हैं जो बुराइयों से बिलकुल बचे रहे और जिनके चेहरों के रंग में कुछ कदूरत थी यह वह लोग हैं जिनसे नेकियों के साथ कुछ बुराइयाँ भी सरज़द हो गई थीं। उनकी तौबा पर अल्लाह तआला मेहरबान हो गया। पहली नहर अल्लाह तआला की रहमत है दूसरी अल्लाह तआला की नेअमत है तीसरी शराबे तहूर की नहर है जो जन्नतियों की ख़ास शराब है। फिर आप सिदरतुल मुंतहा तक पहुँचे तो आपसे कहा गया कि आप ही की सुन्नतों पर जो पाबन्दी करेगा वह यहाँ तक पहुँचाया जाता है उसकी जड़ से पाकीज़ा पानी की साफ़ सुथरे दूध की, लज़ीज़ बेनशा शराब की और साफ़ शहद की नहरें जारी थीं उस दरख़्त के साये में कोई सवार अगर सत्तर साल भी चला जाए ताहम उसका साया ख़त्म नहीं होता। उसका एक-एक पत्ता इतना बड़ा है कि एक एक उम्मत को ढाँप ले। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के नूर ने उसे चारों तरफ़ से ढक रखा था और परिन्दे की शक्ल के फ़रिश्तों ने उसे छुपा लिया था जो अल्लाह तबारक व तआला की मुहब्बत में वहाँ थे उस वक़्त अल्लाह तआला जल्ला शानुहू ने आपसे बातें कीं, फ़र्माया कि माँगो क्या माँगते हो? आपने गुज़ारिश किया कि या इलाही! तूने इब्राहीम (عليه السلام) को अपना ख़लील बनाया और उन्हें बड़ा मुल्क दिया। मूसा (عليه السلام) से तूने बातें कीं। दाऊद (عليه السلام) को अज़ीमुश्शान सल्तनत दी और उनके लिए लोहा नर्म कर दिया। सुलेमान (عليه السلام) को तूने बादशाहत दी जिन्नात इंसान शयातीन हवाएँ उनके ताबेअ फ़र्मान कर दीं और वह बादशाहत दी जो किसी को नहीं बख़्शी। ईसा (عليه السلام) को तूने तोरात व इंजील सिखाई अपने हुक्म से अंधों और कोढ़ियों को अच्छा करने वाला और मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला बनाया उन्हें और उनकी वालिदा को शैताने रजीम से बचाया कि उसे उन पर कोई दख़ल न था। मेरी निस्बत फ़र्मान हो। रब्बुल आलमीन अज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया तू मेरा ख़लील है तौरात में मैंने तुझे ख़लीलुर्रहमान का लक़ब दिया है तुझे तमाम लोगों की तरफ़ बशीर व नज़ीर बनाकर भेजा है तेरा सीना खोल दिया है तेरा बोझ उतार दिया है तेरा ज़िक्र बुलंद कर दिया है जहाँ मेरा ज़िक्र आए वहाँ तेरा ज़िक्र भी होता है और तेरी उम्मत को मैंने सब उम्मतों से बेहतर बनाया है जो लोगों के लिए बरआमद की गई है तेरी उम्मत को मैंने बेहतरीन उम्मत बनाया है तेरी ही उम्मत को अव्वलीन और आख़िरीन बनाया है उनका ख़ुत्बा जाइज़ नहीं जब तक वह तेरे बन्दे और रसूल होने की गवाही न दे लें। मैंने तेरी उम्मत में ऐसे लोग बनाए हैं जिनके दिल में उनकी किताबें हैं तुझे अज़्रूए पैदाइश सबसे अव्वल किया और अज़्रूए बिअ़सत सबसे आख़िर किया और अज़्रूए फ़ैसला भी सबसे पहले किया, तुझे मैंने सात ऐसी आयतें दीं जो बार बार दोहराई जाती हैं जो तुझसे पहले किसी नबी को नहीं मिलीं। तुझे मैंने अपने अर्श तले से सूरह बक़रह की ख़ात्मा की आयतें दीं जो तुझसे पहले किसी नबी को नहीं दी गई। मैंने तुझे कौसर अता की और मैंने तुझे इस्लाम के आठ हिस्से दिए, इस्लाम, हिज्रत, जिहाद, नमाज़, सदक़ा, रमज़ान के रोज़े नेकी का हुक्म, बुराई से रोक और मैंने तुझे शुरु करने वाला और ख़त्म करने वाला बनाया। पस आप कहने लगे मुझे मेरे रब ने छः बातों की फ़ज़ीलत अता की, कलाम की इब्तिदा और उसकी इंतिहा दी जामेअ बातें दीं तमाम लोगों की तरफ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह करने वाला बनाकर भेजा मेरे दुश्मन मुझसे महीने भर की राह पर हों वहीं से उनके दिल में मेरा डर डाल दिया गया मेरे लिए ग़नीमतें हलाल की गईं। जो मुझसे पहले किसी के लिए हलाल नहीं हुईं, मेरे लिए सारी ज़मीन मस्जिद और वुज़ू बनाई गई फिर आप पर पचास नमाज़ों के फ़र्ज़ होने का और बमश्वरा मूसा (عليه السلام) तख़्फ़ीफ़ (छूट)

तलब करने का और आख़िर में पाँच रह जाने का ज़िक्र है जैसे कि इससे पहले गुज़र चुका है पस पाँच रहीं और सवाब पचास का। जिससे आप बहुत ख़ुश हुए जाते वक़्त हज़रत मूसा (अलैहि०) सख़्त थे और आते वक़्त निहायत नर्म और सबसे बेहतर।''

और किताब की इस हदीस में यह भी है कि इसी आयत (सुब्हानल्लज़ी) की तफ़्सीर में आपने यह वाक़िया बयान फ़र्माया, यह भी वाज़ेह रहे कि इस लम्बी हदीस के एक रावी अबू जाफ़र राज़ी बज़ाहिर हाफ़्ज़े के कुछ ऐसे अच्छे नहीं मालूम होते, इसके कुछ अल्फ़ाज़ में सख़्त ग़राबत और बहुत ज़्यादा नकारत है इन्हें ज़ईफ़ भी कहा गया है और सिर्फ़ इन ही की रिवायत वाली हदीस नज़र से ख़ाली नहीं।

एक और बात यह है कि ख़्वाब वाली हदीस का कुछ हिस्सा भी इसमें आ गया है और यह भी मुम्किन है कि बहुत सी हदीसों का मज्मूआ यह हो या ख़्वाब या मेअ़राज के सिवा किसी वाक़िये की इसमें रिवायत हो, वल्लाहु आलम! बुख़ारी व मुस्लिम की एक रिवायत में आपका हज़रत मूसा (अलैहि०), हज़रत ईसा (अलैहि०) हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) के हुलिये वग़ैरह भी बयान करना मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (वज़्कुर फ़िल किताबि मरयम इज़न तबज़त मिन अहलिहा...) : 3437; सहीह मुस्लिम : 168; तिर्मिज़ी : 3130; अहमद : 2/282; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/387; इब्ने हिब्बान : 51) सहीह मुस्लिम की हदीस में हतीम में आपसे बैतुल मक़्दिस के सवालात किये जाने और फिर उसके ज़ाहिर हो जाने का वाक़िया भी है इसमें भी उन तीनों नबियों से मुलाक़ात करने का और उनके हुलिये का बयान है और यह भी कि आपने उन्हें नमाज़ में खड़ा पाया। आपने मालिक ख़ाज़िने जहन्नम को भी देखा और उन्होंने ही इब्तिदाअन आपसे सलाम किया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब ज़िक्रुल मसीहुब्नु मरयम वल मसीहिद्दज्जाल : 172; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/358) बैहक़ी वग़ैरह में कई एक सहाबा से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) के मकान पर सोये हुए थे आप इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए थे वहीं से आपको मेअ़राज हुई। फिर इमाम हाकिम ने बहुत लम्बी हदीस बयान फ़र्माई है जिसमें दर्जों का और फ़रिश्तों वग़ैरह का ज़िक्र है। अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से तो कोई चीज़ दूर नहीं बशर्ते कि वह रिवायत सही साबित हो जाए। इमाम बैहक़ी (रह.) इस रिवायत को बयान करके फ़र्माते हैं कि मक्का मुकर्रमा से बैतुल मक़्दिस तक जाने और मेअ़राज के बारे में इस हदीस में पूरी किफ़ायत है लेकिन इस रिवायत को बहुत से उलमा-ए-हदीस ने मुर्सल बयान किया है, वल्लाहु आलम!

बैहक़ी की रिवायत : अब हज़रत आइशा (रज़ि.) की रिवायत सुनिये बैहक़ी में है कि ''जब सुबह के वक़्त लोगों से हुज़ूर (ﷺ) ने इस बात का ज़िक्र किया तो बहुत से लोग मुर्तद हो गए जो इससे पहले ईमान वाले और तस्दीक़ करने वाले थे फिर हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के पास उनका जाना और आपका सच्चा मानना और सिद्दीक़ लक़ब पाना मरवी है। (हाकिम : 3/62; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; बैहक़ी फ़िद्दलाइल : 2/360; मुहम्मद बिन कसीर सन्आनी ज़ईफ़ रावी है।) ख़ुद हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को मेअ़राज मेरे ही मकान से करायी गई है उस रात आप नमाज़े इशा के बाद मेरे मकान पर ही आराम फ़र्मा थे। आप भी सो गए और हम सब भी। सुबह से कुछ ही पहले हमने हुज़ूर (ﷺ) को जगाया। फिर आपके

साथ ही हमने सुबह की नमाज़ अदा की तो आपने फ़र्माया, ऐ उम्मे हानी! मैं ने तुम्हारे साथ ही इशा की नमाज़ अदा की और अब सुबह की नमाज़ में भी तुम्हारे यहीं हूँ इस दरम्यान में अल्लाह तआला ने मुझे बैतुल मक़्दिस पहुँचाया और मैंने वहाँ नमाज़ भी पढ़ी।'' (इसकी सनद में मुहम्मद बिन साइब कल्बी मतरूक (अत्तक़रीब : 2/163; रक़्म : 240) और अबू सालेह बाज़ान ज़ईफ़ मुदल्लस रावी है। (अत्तक़रीब : 1/93) लिहाज़ा यह रिवायत मौज़ूअ है।) इसका एक रावी कल्बी मतरूक है और बिलकुल साक़ित है लेकिन इसे अबू यअ़ला में और सनद से ख़ूब बस्त (विस्तार) के साथ रिवायत किया है, तब्रानी में हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) से मंक़ूल है कि ''हुज़ूर (ﷺ) मेअ़राज की रात मेरे यहाँ सोये हुए थे। मैंने रात को आपकी हर चंद तलाश की लेकिन न पाया। डर था कि कहीं क़ुरैशियों ने कोई धोखा न किया हो लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिब्रईल (عليه السلام) मेरे पास आए और मेरा हाथ थामकर मुझे ले चले, दरवाज़े पर एक जानवर था जो ख़च्चर से छोटा और गधे से ऊँचा था मुझे उस पर सवार किया। फिर मुझे बैतुल मक़्दिस पहुँचाया हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को दिखाया वह अख़्लाक़ में और सूरत शक्ल में बिलकुल मेरे जैसे थे। हज़रत मूसा (عليه السلام) को दिखलाया, लम्बे क़द के सीधे बालों के ऐसे थे जैसे अज़्दे शनूह के क़बीले के लोग हुआ करते हैं। इसी तरह मुझे हज़रत ईसा (अ) को भी दिखाया, दरम्याना क़द सफ़ेद सुर्ख़ी माइल रंग बिलकुल ऐसे जैसे उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी (रज़ि.) हैं। दज्जाल को दिखाया एक आँख उसकी बिलकुल मिटी हुई थी। ऐसा था जैसे क़ुत्न बिन अब्दुल उज़्ज़ा। इतने इर्शाद के बाद फ़र्माया कि अच्छा मैं जाता हूँ और जो देखा है वह क़ुरैश से बयान करता हूँ। मैं ने आपका पल्ला थाम लिया और अ़र्ज़ किया, अल्लाह के लिए अपनी क़ौम में इसको बयान न करें वह आपको झुठलाएँगे, आपकी बात हर्गिज़ न मानेंगे और अगर बस चला तो आपकी बेअदबी करेंगे। लेकिन आपने झटकाकर अपना दामन मेरे हाथ से छुड़ा लिया और सीधे क़ुरैश के मज्मअ़ में पहुँचकर सारी बातें बयान कर दीं। जुबैर बिन मुत्इम कहने लगा, बस हज़रत आज हमें मालूम हो गया अगर आप सच्चे होते तो ऐसी बात हममें बैठकर न कहते एक शख़्स ने कहा, क्यूँ हज़रत! रास्ते में हमारा क़ाफ़िला भी मिला था? आपने फ़र्माया, हाँ! और उनका एक ऊँट गुम हो गया जिसकी तलाश कर रहे थे। किसी ने कहा और फ़लाँ क़बीले वालों के ऊँट भी रास्ते में मिले? आपने फ़र्माया, वह भी मिले थे फ़लाँ मक़ाम पर थे उसमें एक लाल रंग ऊँटनी थी जिसका पैर टूट गया था। उनके पास एक बड़े प्याले में पानी था जिसे मैंने पिया भी। उन्होंने कहा, अच्छा उनके ऊँटों की गिनती बतलाओ। उनमें चरवाहे कौन कौन थे यह भी बतलाओ। उसी वक़्त अल्लाह तआला ने क़ाफ़िला आपके सामने कर दिया। आपने सारी गिनती भी बतला दी और चरवाहों के नाम भी बतला दिये एक चरवाहा उनमें इब्ने अबी क़ुहाफ़ा था और यह भी फ़र्मा दिया कि वह सनिय्या पहुँच जाएँगे चुनाँचे उस वक़्त अक्सर लोग बतौर आज़माइश सनिय्या जा पहुँचे। देखा कि वाक़ेई क़ाफ़िला आ गया उनसे पूछा कि तुम्हारा ऊँट खो गया था? उन्होंने कहा, दुरुस्त है खोया था। दूसरे क़ाफ़िले वालों से पूछा क्या किसी लाल रंग की ऊँटनी का पैर टूट गया था, उन्होंने जवाब दिया कि हाँ! यह भी सही है। पूछा क्या तुम्हारे पास बड़ा प्याला पानी का भी था? अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, हाँ! अल्लाह तआला की क़सम! इसे तो मैंने आप रखा था और उनमें से न किसी ने उसे पिया न वह पानी गिराया गया। बेशक मुहम्मद (ﷺ) सच्चे हैं यह आप पर ईमान लाए और उस दिन से उनका नाम सिद्दीक़ रखा गया।'' (तब्रानी : 24/432, 434; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 1/80,

81; इसकी सनद में अब्दुल आला बिन अबुल मुसाविर मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 2/531; रक़म : 4731)

इन तमाम अहादीस की वाक़फ़ियत के बाद जिनमें सही भी हैं हसन भी हैं ज़ईफ़ भी हैं कम अज़्कम इतना ज़रूर मालूम हो गया कि हुज़ूर (ﷺ) का मक्का मुकर्रमा से बैतुल मक़्दिस तक ले जाना हुआ। और यह भी मालूम हो गया कि यह सिर्फ़ एक ही मर्तबा हुआ है भले रावियों की इबारतें इस बाब में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से हैं भले इनमें ज़्यादती कमी भी है। यह कोई बात नहीं सिवाए अम्बिया (अ.) के ख़ता से पाक कौन है। कुछ लोगों ने हर हर ऐसी रिवायत को एक अलग वाक़िया कहा है और इसके क़ाइल हुए हैं कि यह वाक़िया कई बार हुआ लेकिन यह लोग बहुत दूर निकल गए और बिलकुल अनोखी बात कही और न जाने की जगह चले गए और फिर भी मतलब हासिल नहीं हुआ। मुताख़्ख़िरीन में से कुछ ने एक और ही तौजीह पेश की है और उन्हें इस पर बड़ा नाज़ है। वह यह कि एक मर्तबा तो आपको मक्के से सिर्फ़ बैतुल मक़्दिस तक की सैर हुई। एक मर्तबा मक्के से आसमानों पर चढ़ाए गए और एक मर्तबा मक्के से बैतुल मक़्दिस और बैतुल मक़्दिस से आसमानों तक। लेकिन यह क़ौल भी बहुत दूर का और बिलकुल ग़रीब है। सलफ़ में से तो इसका क़ाइल कोई नहीं अगर ऐसा होता तो ख़ुद हज़रत (ﷺ) आप ही उसे खोलकर बयान कर देते और रावी आपसे इसके बार बार होने की रिवायत करते। बक़ौले हज़रत ज़ोहरी (रह.) मेअराज का यह वाक़िया हिज्रत से एक साल पहले का है। उर्वा भी यही कहते हैं। सुद्दी (रह.) कहते हैं, छः माह पहले का है। पस हक़ बात यह है कि हुज़ूर (ﷺ) को जागते में न कि ख़्वाब में मक्का मुकर्रमा से बैतुल मक़्दिस तक की इसरा करायी गई उस वक़्त आप बुर्राक़ पर सवार थे। मस्जिदे क़ुदुस के दरवाज़े पर आपने बुर्राक़ को बाँधा, वहाँ जाकर उसके क़िब्ला रुख़ तहिय्यतुल मस्जिद के तौर पर दो रकअत नमाज़ अदा की। फिर मेअराज लाई गयी जो दर्जों वाली है और बतौरे सीढ़ी के है उससे आप आसमाने दुनिया पर चढ़ाये गए फिर सातों आसमानों पर पहुँचाये गये हर आसमान के अल्लाह तआला के मुक़र्रिबीन से मुलाक़ातें हुईं। अम्बिया (अ.) से उनके मनाज़िल व दरजात के मुताबिक़ सलाम अलैक हुई। छठे आसमान में कलीमुल्लाह से और सातवें में ख़लीलुल्लाह से मिले। फिर उनसे भी आगे बढ़ गए, सलवातुल्लाहि अलैहिम अज्मईन। यहाँ तक कि आप मुस्तवी में पहुँचे जहाँ क़ज़ा व क़द्र की क़लमों की आवाज़ें आपने सुनीं सिदरतुल मुंतहा को देखा जिस पर अज़्मते इलाही छा रही थी। सोने की टिड्डियाँ और तरह तरह के रंग उस पर नज़र आ रहे थे फ़रिश्ते चारों तरफ़ से घेरे हुए थे। वहीं पर आपने हज़रत जिब्राईल (अ.) को उनकी असली सूरत में देखा छः सौ पर थे। वहीं आपने रफ़रफ़ सब्ज़ रंग का देखा जिसने आसमान के किनारों को ढक रखा था। बैतुल मअमूर की ज़ियारत की जो ख़लीलुल्लाह (अ.) के ज़मीनी कअबे के ठीक ऊपर आसमानों पर है यानी आसमानी कअबा है ख़लीलुल्लाह (अ.) उससे टेक लगाये बैठे हुए थे। उसमें हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इबादते इलाही के लिए जाते हैं मगर जो आज गए फिर उनकी बारी क़यामत तक नहीं आती। आपने जन्नत व जहन्नम देखी। यहीं अल्लाह तआला रहमान व रहीम ने पचास नमाज़ें फ़र्ज़ करके फिर छूट कर दी और पाँच रखीं जो ख़ास उसकी रहमत थी। उससे नमाज़ की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत भी साफ़ तौर पर ज़ाहिर है फिर आप वापिस बैतुल मक़्दिस की तरफ़ उतरे और आपके साथ तमाम अम्बिया भी उतरे वहाँ आपने उन सबको नमाज़ पढ़ाई जबकि नमाज़ का वक़्त हो गया, मुम्किन है वह उस दिन की सुबह की नमाज़ हो, हाँ! कुछ हज़रात का क़ौल है कि अम्बिया (अ.) की इमामत आपने आसमानों में की। लेकिन सही रिवायत से बज़ाहिर

यह है कि आपने वापसी में इमामत करायी। उसकी एक दलील तो यह है कि जब आसमानों पर अम्बिया से आपकी मुलाक़ात होती है तो आप हर एक की बाबत हज़रत जिब्राईल (ﷺ) से पूछते हैं कि यह कौन हैं? अगर बैतुल मक़्दिस में ही उनकी इमामत आपने कराई होती तो अब चंदा इस सवाल की ज़रूरत नहीं रहती। दूसरे यह कि सबसे पहले और सबसे बड़ी ग़र्ज़ तो बुलंदी पर जनाब बारी तआला के हुज़ूर में हाज़िर होना था तो बज़ाहिर यही बात सब पर मुक़द्दम थी। जब यह हो चुका और आप पर और आपकी उम्मत पर उस रात में जो फ़रीज़-ए-नमाज़ मुक़र्रर होना था वह भी हो चुका अब आपको अपने भाईयों के साथ जमा होने का मौक़ा मिला और उन सबके सामने आपकी बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत ज़ाहिर करने के लिए हज़रत जिब्राईल (ﷺ) के इशारे से आपने इमाम बनकर उन्हें नमाज़ पढ़ाई। ''फिर बैतुल मक़्दिस से बसवारी बुर्राक़ आप वापिस रात के अंधेरे और सुबह के कुछ यूँ ही से उजाले के वक़्त मक्का मुकर्रमा पहुँच गए'' वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

दूध और शहद की वज़ाहत : अब यह जो मरवी है कि आपके सामने दूध और शहद या दूध और शराब या दूध और पानी पेश किया गया या चारों ही चीज़ें उसकी बाबत रिवायतों में यह भी है कि यह वाक़िया बैतुल क़ुदुस का है और यह भी है कि यह वाक़िया आसमानों का है लेकिन यह हो सकता है कि दोनों ही जगह यह चीज़ आपके सामने पेश हुई हो इसलिए कि जैसे किसी आने वाले के सामने बतौर मेहमानी के कुछ चीज़ रखी जाती है इसी तरह यह था, वल्लाहु आलम!

आप (ﷺ) का मेअराज जिस्मानी था या रूहानी? फिर इसमें भी लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया है कि मेअराज आपके जिस्म व रूह समेत करायी गई थी या सिर्फ़ रूहानी तौर पर? अक्सर उलमा-ए-किराम तो यही फ़र्माते हैं कि जिस्म व रूह समेत आपको मेअराज हुई और हुई भी जागते में न कि बतौर ख़्वाब के। हाँ! इसका इंकार नहीं कि हुज़ूर (ﷺ) को पहले ख़्वाब में यही चीज़ें दिखाई गई हों। आप ख़्वाब में जो कुछ मुलाहिज़ा करते उसे उसी तरह वाक़ेअ में जागते हुए भी मुलाहिज़ा कर लेते। इसकी बड़ी दलील एक तो यही है कि इस वाक़िया के बयान करने से पहले अल्लाह तआला ने अपनी पाकीज़गी बयान की है। इस उस्लूबे बयान का तक़ाज़ा यह है कि इसके बाद की बात कोई बड़ी अहम है अगर यह वाक़िया ख़्वाब का माना जाए तो ख़्वाब में ऐसी बातें देख लेना उतना अहम नहीं कि उसको बयान करते हुए अल्लाह तआला पहले से बतौर एहसान और बतौर इज़्हारे क़ुदरत पर अपनी तस्बीह बयान करे। फिर अगर यह वाक़िया ख़्वाब का ही था तो कुफ़्फ़ार इस तरह जल्दी से आपकी तक्ज़ीब न करते एक शख़्स अपना ख़्वाब और ख़्वाब में देखी हुई अजाइब चीज़ें बयान कर रहा है कर कोई वजह नहीं थी कि भिड़ भिड़ाकर आ जाएँ और सुनते ही सख़्ती से इंकार करने लगें। फिर जो लोग कि इससे पहले आप पर ईमान ला चुके थे और आपकी रिसालत को क़बूल कर चुके थे क्या वजह है कि वह वाक़िया मेअराज को सुनकर इस्लाम से फिर जाते हैं इससे भी ज़ाहिर है कि आपने ख़्वाब का क़िस्सा बयान नहीं किया था। फिर क़ुरआन के लफ़्ज़ (बिअब्दिही) पर ग़ौर कीजिए अब्द का इत्लाक़ रूह और जिस्म दोनों के मज्मूआ पर आता है। फिर (अस्रा बि अबिदही लैलन) का फ़र्माना इस चीज़ को और साफ़ कर देता है कि वह अपने बन्दे को रात के थोड़े से हिस्से में ले गया। उस देखने को लोगों की आज़माइश का सबब आयत (وَ مَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ) (17/बनी इस्राईल : 60) फ़र्माया गया है। अगर यह ख़्वाब ही था तो उसमें लोगों की ऐसी बड़ी कौनसी आज़माइश थी जिसे मुस्तक़िल तौर पर बयान

फ़र्माया जाता। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि यह आँखों का देखना था जो रसूलुल्लाह (ﷺ) को दिखाया गया था। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतु बनी इस्राईल बाब (वमा जअल्नर्रुअयल्लती अरयनाका इल्ला फ़ित्नतल लिन्नासि...) : 4716) ख़ुद क़ुरआन फ़र्माता है (مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَ مَا طَغٰى) (53/नज्म : 17) न तो निगाह भटकी न बहकी। ज़ाहिर है कि बसर यानी निगाह इंसान की ज़ात का एक बड़ा वस्फ़ है न कि सिर्फ़ रूह का। फिर बुर्राक़ की सवारी का लाया जाना और उस सफ़ेद चमकीले जानवर पर सवार कराकर आपको ले जाना भी इसी की दलील है कि यह वाक़िया जागते का और जिस्मानी है वरना सिर्फ़ रूह के लिए सवारी की ज़रूरत नहीं, वल्लाहु आलम! और लोग कहते हैं कि यह मेअराज सिर्फ़ रूहानी थी न कि जिस्मानी।

चुनाँचे मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) लिखते हैं हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (रज़ि.) का यह क़ौल मरवी है हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि जिस्म ग़ायब नहीं हुआ था बल्कि रूहानी मेअराज थी। इस क़ौल का इंकार नहीं किया गया क्योंकि हसन फ़र्माते हैं (وَ مَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ) (17/बनी इस्राईल : 60) आयत उतरी है और हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) की निस्बत ख़बर दी है कि उन्होंने फ़र्माया मैंने ख़्वाब में तेरा ज़िब्ह करना देखा है अब तू सोच ले क्या देखता है? फिर यही हाल रहा पस ज़ाहिर है कि अम्बिया पर वही जागते में भी आती और ख़्वाब में भी। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि "मेरी आखें सो जाती हैं और दिल जागता रहता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब अत्तख़फ़ीफ़ु फ़िल वुज़ू : 138; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1524; अबू अवाना : 2/317; मुस्नद हुमैदी : 472; अहमद : 1/220) वल्लाहु आलम! इसमें से कौनसी सच्ची बात है? आप गए और आपने बहुत सी बातें देखीं जिस हाल में भी आप थे सोते या जागते सब हक़ और सच है। यह तो था मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) का क़ौल। इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इसकी बहुत कुछ तर्दीद की है और हर तरह इसे रद्द किया है और इसे ख़िलाफ़ ज़ाहिर क़रार दिया है कि अल्फ़ाज़े क़ुरआनी के सरासर ख़िलाफ़ यह क़ौल है फिर इसके ख़िलाफ़ बहुत सी दलीलें क़ायम की हैं जिनमें से चंद हमने भी ऊपर बयान कर दी हैं, वल्लाहु आलम!

अबू नुऐम (रह.) की रिवायत में एक फ़ायदा : एक निहायत ही उम्दा और बहुत ज़बरदस्त फ़ायदा इस बयान में इस रिवायत से होता है जो हाफ़िज़ अबू नुऐम अस्बहानी (रह.) किताब दलाइलुन्नबुव्वा में लाये हैं कि जब दहिया बिन ख़लीफ़ा (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ैसरे रूम के पास बतौर क़ासिद के अपने नामा-ए-मुबारक के साथ भेजा यह गए पहुँचे और अरब ताजिरों को जो मुल्के शाम में थे हिरक़्ल ने जमा किया उनमें अबू सुफ़्यान सख़र बिन हर्ब था और उसके साथी मक्के के और काफ़िर भी थे फिर उसने उनसे बहुत से सवालात किये जो बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में मज़्कूर हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब कैफ़ा काना बदउल वही इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 7; सहीह मुस्लिम : 1773) अबू सुफ़्यान की अव्वल से आख़िर तक यही कोशिश रही कि किसी तरह हुज़ूर (ﷺ) की बुराई और हिक़ारत उसके सामने करे ताकि बादशाह के दिल का मैलान हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ न हो। वह ख़ुद कहता है कि मैं सिर्फ़ इस डर से ग़लत बातें करने और तोहमतें धरने से बाज़ रहा कि कहीं मेरा कोई झूठ इस पर न खुल जाए फिर तो यह मेरी बात को झुठला देगा और बड़ी नदामत होगी।

उसी वक़्त दिल में ख़्याल आ गया और मैंने कहा, बादशाह सलामत सुनिए मैं एक वाक़िया बयान करूँ जिससे आप पर यह बात खुल जाएगी कि मुहम्मद (ﷺ) बड़े झूठे आदमी हैं। सुनिए! एक दिन वह कहने लगे कि उस रात वह मक्का से चले और आपकी इस मस्जिद में यानी बैतुल मक़्दिस की मस्जिदे क़ुदुस में आए और फिर वापिस सुबह से पहले मक्के पहुँच गए। मेरी यह बात सुनते ही बैतुल मक़्दिस का लाट पादरी जो शाहे रूम की उस मज्लिस में उसके पास बड़ी इज़्ज़त से बैठा था फ़ौरन ही बोल उठा कि यह बिलकुल सच है मुझे उस रात का इल्म है। क़ैसर ने ताज्जुबख़ेज़ नज़र से उसकी तरफ़ देखा और अदब से पूछा। जनाब को कैसे मालूम हुआ? उसने कहा, सुनिये मेरी आदत थी और यह काम मैंने अपने बारे में कर रखा था कि जब तक मस्जिद के तमाम दरवाज़े अपने हाथ से बंद न कर लूँ सोता न था उस रात मैं दरवाज़े बन्द करने को खड़ा हुआ था, सब दरवाज़े अच्छी तरह बंद कर दिए लेकिन एक दरवाज़ा मुझसे बंद न हो सका। मैंने हर तरह से ज़ोर लगाए लेकिन कवाड़ अपनी जगह से सिरका भी नहीं। मैंने उसी वक़्त अपने आदमियों को आवाज़ दी। वह आए हम सबने मिलकर ताक़त लगाई लेकिन सबके सब नाकाम रहे, बस यह मालूम हो रहा था कि गोया हम किसी पहाड़ को उसकी जगह से सरकाना चाहते हैं वह चस्का तक नहीं हिला भी तो नहीं। मैंने बढ़ई बुलवाए उन्होंने देखा भाला तरकीबें कीं कोशिशें कीं लेकिन वह भी हार गए और कहने लगे, सुबह पर रखिए, चुनाँचे वह दरवाज़ा उस रात यूँ ही रहा दोनों कवाड़ बिलकुल खुले रहे। मैं सुबह ही उस दरवाज़े के पास गया तो देखा कि उसके पास कोने में जो चट्टान पत्थर की थी उसमें एक सूराख़ है और ऐसा मालूम होता है कि उसमें रात को किसी ने कोई जानवर बाँधा है उसके असर और निशान मोजूद थे। मैं समझ गया और मैंने उसी वक़्त अपनी जमाअत से कहा कि आज की रात यह हमारी मस्जिद किसी नबी के लिए खुली रखी गयी और उसने यहाँ ज़रूर नमाज़ अदा की है। यह हदीस बहुत लम्बी है।

हज़रत अबुल ख़त्ताब उमर बिन दहिया (रह.) अपनी किताब अत्तनवीर फ़ी मौलिदिस्सिराजिल मुनीर में हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत से मेअराज की हदीस वारिद करके उसके बारे में निहायत उम्दा कलाम करके फिर फ़र्माते हैं मेअराज की हदीस मुतवातिर है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब, हज़रत अली, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत अबू ज़र्र, हज़रत मालिक बिन सअसआ, हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अबू सईद, हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) हज़रत शद्दाद बिन औस, हज़रत उबय बिन कअब, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन कुर्ज़, हज़रत अबू हिबा, हज़रत अबू लैला, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र, हज़रत जाबिर, हज़रत हुज़ैफ़ा, हज़रत बुरैदा, हज़रत अबू अय्यूब, हज़रत अबू उमामा, हज़रत समुरा बिन जुंदुब, हज़रत अबुल हमरा (रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन) हज़रत सुहैब (रह.), हज़रत उम्मे हानी, हज़रत आइशा (रज़ि.), हज़रत अस्मा (रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है।

इनमें से कुछ ने तो इसे लम्बा बयान किया है और कुछ ने मुख़्तसर। भले उनमें से कुछ रिवायतें सनदन सही नहीं लेकिन बिल जुम्ला सेहत के साथ वाक़िया मेअराज साबित है और मुसलमान इज्माई तौर पर उसके क़ाइल हैं हाँ! बेशक ज़िन्दीक़ और मुल्हिद लोग इसके मुंकिर हैं, वह अल्लाह तआला के नूरानी चराग़ को अपने मुँह की फूँकों से बुझाना चाहते हैं लेकिन वह पूरी रोशनी के साथ चमकता हुआ ही रहेगा भले काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا
② ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③ وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي
الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ
اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ وَكَانَ
وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ⑤ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ
وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ⑥ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۣ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ۭ فَاِذَا
جَاۗءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْۗءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ
وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ⑦ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا
جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ⑧

तर्जुमा : ''हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बना दिया कि तुम मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ न बनाना। (2) ऐ उन लोगों की औलाद! जिन्हें हमने नूह (عليه السلام) के साथ चढ़ा लिया था वह तो हमारा बड़ा ही शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3) हमने बनी इस्राईल के लिए उनकी किताब में साफ़ फ़ैसला कर दिया था कि तुम ज़मीन में दोबारा फ़साद बरपा करोगे और तुम बड़ी ज़बरदस्त ज़्यादतियाँ करने लगोगे। (4) इन दोनों वादों में से पहले के आते ही हम तुम्हारे मुक़ाबले पर अपने बन्दों को उठा खड़ा करेंगे जो बड़े ही लड़ाका होंगे। पस वह तुम्हारे घरों के अंदर तक फैल पड़ेंगे। अल्लाह तआला का यह वादा पूरा होना ही था। (5) फिर हम उन पर तुम्हारा ग़ल्बा फेरेंगे और माल और औलाद से तुम्हारी मदद करेंगे और तुम्हें बड़े जत्थे वाला कर देंगे। (6) अगर तुमने अच्छे काम किये तो ख़ुद अपने ही फ़ायदे के लिए अच्छे काम करोगे और अगर तुमने बुराइयाँ कीं तो भी अपने ही लिए फिर जब दूसरा वादा आएगा तो वह तुम्हारे मुँह बिगाड़ देगा और पहली बार की तरह फिर इसी मस्जिद में घुस जाएँगे। और जिस जिस चीज़ पर क़ाबू पाएँगे तोड़ फोड़कर जड़ से उखाड़ देंगे। (7) तुम्हारा रब तो इस बात पर है कि तुम पर रहम करे। हाँ! अगर तुम फिर भी वही करने लगे तो हम भी दोबारा ऐसा ही करेंगे हमने मुंकिरों का क़ैदख़ाना जहन्नम को बना रखा है।'' (8)

वाक़िया मेअ़राज के बाद ह़ज़रत मूसा (علیہ السلام) का ज़िक्र (आयत 2-8) : हुज़ूर (ﷺ) के वाक़िया मेअ़राज के बयान के बाद अपने पैग़म्बर कलीमुल्लाह ह़ज़रत मूसा (علیہ السلام) का ज़िक्र बयान करता है। क़ुरआने करीम में ज़मूमन यह दोनों बयान एक साथ आये हैं इसी त़रह़ तौरात और क़ुरआन का बयान भी मिला जुला होता है। ह़ज़रत मूसा (علیہ السلام) की किताब का नाम तौरात है वह किताब बनी इस्राईल के लिए हादी थी उन्हें हुक्म हुआ था कि अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और को वली और मददगार और मअ़बूद न समझें हर एक नबी तौह़ीदे इलाही लेकर आता रहा है। फिर उन्हें कहा जाता है कि ऐ उन बुज़ुर्गों की औलादों! जिन्हें हमने अपने इस एह़सान से नवाज़ा था कि तूफ़ाने नूह़ की आ़लमगीर हलाकत से उन्हें बचा लिया और अपने प्यारे पैग़म्बर ह़ज़रत नूह़ (علیہ السلام) के साथ कश्ती पर चढ़ा लिया था। तुम्हें अपने बड़ों की त़रह़ हमारी शुक्रगुज़ारी करनी चाहिए। देखो मैंने तुम्हारी त़रफ़ अपने आख़िरी रसूल मुह़म्मद (ﷺ) को भेजा है। मरवी है कि ह़ज़रत नूह़ (علیہ السلام) चूँकि खाकर पीकर पहनकर ग़र्ज़ हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो-सना बयान करते रहते थे इसलिए आपको शुक्रगुज़ार बन्दा कहा गया। (त़ब्री : 17/354; ह़ाकिम : 2/360; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) मुस्नद अह़मद वग़ैरह में फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि "अल्लाह तआ़ला अपने उस बन्दे से बहुत ही ख़ुश होता है जो निवाला खाये तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाए और पानी का घूँट पिये तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ़, बाब इस्तिह़बाबु ह़म्दिल्लाहि तआ़ला बअ़दल अक्ल वश्शुर्ब : 2734; अह़मद : 3/117; तिर्मिज़ी : 1817; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4332) यह भी मरवी है कि आप हर ह़ाल में अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते रहते। सिफ़ारिश वाली लम्बी ह़दीस जो बुख़ारी वग़ैरह में है उसमें है कि "जब लोग त़लबे सिफ़ारिश के लिए ह़ज़रत नूह़ (علیہ السلام) के पास आएँगे तो उनसे कहेंगे कि ज़मीन वालों की त़रफ़ आप ही पहले रसूल हैं अल्लाह तआ़ला ने आपका नाम शुक्रगुज़ार बन्दा रखा है आप अपने रब से हमारी सिफ़ारिश कर दीजिए"..आख़िर तक। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतु बनी इस्राईल बाब (ज़ुर्रियतम मन ह़मल्ना मअ़ नूह़, इन्नहू काना अ़ब्दन शकूरा...) : 4712; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 194)

बनी इस्राईल की दो बार सरकशी : जो किताब बनी इस्राईल पर उतरी थी उसमें ही अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पहले ही से ख़बर दे दी थी कि वह ज़मीन पर दो मर्तबा सरकशी करेंगे और सख़्त फ़साद बरपा करेंगे पस यहाँ पर क़ज़ैना के मअ़नी मुक़र्रर कर देना और पहले ही से ख़बर दे देने के हैं जैसे आयत (وَ قَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ) (15/ह़िज्र : 66) में यही मअ़नी हैं। पस इनके पहले फ़साद के वक़्त हमने अपनी मख़्लूक़ में से उन लोगों को मुसल्लत़ किया जो बड़े ही लड़ने वाले सख़्त जान साज़ो-सामान से पूरे लेस थे। वह इन पर छा गए इनके शहर छीन लिए लूट मार करके इनके घरों तक को ख़ाली करके बेख़ौफ़ व ख़त़र वापिस चले गए। अल्लाह तआ़ला का वादा पूरा होना ही था। कहते हैं कि यह जालूत का लश्कर था। फिर अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल की मदद की और यह ह़ज़रत त़ालूत की बादशाहत में फिर लड़े और ह़ज़रत दाऊद (علیہ السلام) ने जालूत को क़त्ल कर दिया। यह भी कहा गया है कि मूसल का बादशाह सख़ारीब और उसके लश्कर ने उन पर फ़ौजकशी की थी। कुछ कहते हैं बाबिल का बादशाह बुख़्ते नस्सर चढ़ आया था। इब्ने अबी ह़ातिम ने यहाँ पर एक अ़जीबो ग़रीब क़िस्सा नक़्ल किया है कि किस त़रह़ उस शख़्स ने बतदरीज तरक़्क़ी की थी। पहले तो यह एक फ़क़ीर था, पड़ा रहता था और भीख मांगकर गुज़ारा करता था। फिर तो बैतुल मक़्दिस तक उसने फ़तह़ कर

लिया और वहाँ पर बनी इस्राईल को बे दरेग़ क़त्ल किया। इब्ने जरीर (रह.) ने इस आयत की तफ़्सीर में एक लम्बी मरफ़ूअ ह़दीस बयान की है जो महज़ मौज़ूअ (मनगढ़त) है और उसके मौज़ूअ होने में किसी को शक नहीं हो सकता। ताज्जुब है कि बावजूद इस क़द्र वाफ़िर इल्म के हज़रत इमाम साहब ने यह ह़दीस वारिद कर दी।

हमारे उस्ताद शैख़ हाफ़िज़ अबुल हज्जाज मिज़्ज़ी (रह.) ने इसके मौज़ूअ होने की तसरीह की है और किताब के हाशिया पर भी लिख दिया है। इस बारे में बनी इस्राईल की रिवायतें भी बहुत सी हैं लेकिन हम उन्हें वारिद करके बेफ़ायदा अपनी किताब को लम्बा नहीं करना चाहते क्योंकि उनमें से कुछ तो मौज़ूअ हैं और कुछ भले ऐसी न हों लेकिन बि हम्दिल्लाह हमें इन रिवायतों की कोई ज़रूरत नहीं किताबुल्लाह हमें और तमाम किताबों से बेनियाज़ कर देने वाली है अल्लाह की किताब और उसके रसूल की ह़दीसों ने हमें इन चीज़ों का मोहताज नहीं रखा।

बैतुल मक़्दिस पर क़ब्ज़ा : मतलब सिर्फ़ इस क़द्र है कि बनी इस्राईल की सरकशी के वक़्त अल्लाह ने उनके दुश्मन उन पर मुसल्लत कर दिए जिन्होंने उन्हें ख़ूब मज़ा चखाया बुरी तरह दुर्गत बनाई उनके बाल बच्चों को नहे तेग़ किया उन्हें इस क़द्र ज़लील किया कि उनके घरों तक में घुसकर उनका सतियानाश किया और उनकी सरकशी की पूरी सज़ा दी। उन्होंने भी ज़ुल्मो ज़्यादती में कोई कसर नहीं रखी थी, अवाम तो अवाम उन्होंने तो नबियों के गले रेते थे उलमा को बरसरे बाज़ार क़त्ल किया था बुख़्ते नस्सर मुल्के शाम पर ग़ालिब आया, बैतुल मक़्दिस को वीरान कर दिया वहाँ के बाशिन्दों को क़त्ल किया फिर दमिश्क़ पहुँचा। यहाँ देखा कि एक सख़्त पत्थर पर ख़ून जोश मार रहा है पूछा यह क्या है? लोगों ने कहा, हमने तो इसे बाप दादों से इसी तरह देखा है यह ख़ून बराबर उबलता रहता है ठहरता नहीं। उसने वहीं पर क़त्ले आम शुरू कर दिया। सत्तर हज़ार मुसलमान वग़ैरह उसके हाथों यहाँ क़त्ल हुए पस वह ख़ून ठहर गया। (तब्री : 17/329) उसने उलमा और हाफ़िज़ों को और तमाम शरीफ़ और ज़ी इज़्ज़त लोगों को बेदर्दी से क़त्ल किया उनमें कोई भी हाफ़िज़े तौरात न बचा। फिर क़ैद करना शुरू किया उन क़ैदियों में नबीज़ादे भी थे ग़र्ज़ एक लरज़ाख़ेज़ हंगामा हुआ। लेकिन चूँकि सही रिवायतों से बल्कि सेहत के क़रीब वाली रिवायतों से भी तफ़्सीलात नहीं मिलतीं इसलिए हमने उन्हें छोड़ दिया है, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माता है नेकी करने वाला दरअसल अपना ही भला करता है और बुराई करने वाला हक़ीक़त में अपना ही बुरा करता है जैसे इर्शाद है (مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَ مَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا) (41/हामीम अस्सज्दा : 46) जो शख़्स नेक काम करे वह उसके अपने लिए है और जो बुराई करे उसका बोझ भी उसी पर है। फिर जब दूसरा वादा आया और फिर बनी इस्राईल ने अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियों पर खुले आम कमर कस ली और बेबाकी और बेहयाई के साथ ज़ुल्म करने शुरू कर दिये तो फिर उनके दुश्मन चढ़ दौड़े कि वह उनकी शक्लें बिगाड़ दें और बैतुल मक़्दिस की मस्जिद जिस तरह पहले इन्होंने अपने क़ब्ज़े में कर ली थी अब फिर दोबारा कर लें और जहाँ तक बन पड़े हर चीज़ का सतियानाश कर दें चुनाँचे यह भी होकर रहा। तुम्हारा रब तो है ही रहमो-करम करने वाला और उससे नाउम्मीदी नाज़ेबा है बहुत मुम्किन है कि फिर से दुश्मनों को पस्त कर दे। हाँ! यह याद रहे कि इधर तुमने सर उठाया उधर हमने तुम्हारा सर कुचला, इधर तुमने फ़साद मचाया, उधर हमने तुम्हें बर्बाद किया। यह तो हुई दुनियावी सज़ा। अभी आख़िरत की ज़बरदस्त और ग़ैर फ़ानी सज़ा बाक़ी है। जहन्नम काफ़िरों का क़ैदख़ाना है जहाँ से न वह निकल सकें, न भाग सकें। हमेशा के

लिए उनका ओढ़ना बिछौना यही है। (त़ब्री : 17/390) हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं फिर भी उन्होंने सर उठाया और यक्सर फ़र्माने इलाही को छोड़ा और मुसलमानों से भिड़ गए तो अल्लाह तआला ने मुहम्मद (ﷺ) को उन पर ग़ालिब कर दिया और उन्हें ज़लील होकर जिज़्या देना पड़ा। (त़ब्री : 17/389)

***

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٠﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन यह क़ुरआन वह रास्ता दिखाता है जो बहुत ही सीधा है और ईमान वालों को जो नेक आमाल करते हैं इस बात की ख़ुशख़बरी देता है कि इनके लिए बहुत बड़ा अज्र है। (9) और यह कि जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।'' (10)

(आयत 9, 10) : अल्लाह तबारक व तआला अपनी पाक किताब की तअरीफ़ में फ़र्माता है कि यह क़ुरआन बेहतरीन राह की तरफ़ रहबरी करता है। ईमानदार जो ईमान के मुताबिक़ फ़र्माने नबवी पर अमल भी करें उन्हें यह बशारतें सुनाता है कि उनके लिए अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा अज्र है उन्हें बेशुमार सवाब मिलेगा। और जो ईमान से ख़ाली हैं उन्हें यह क़ुरआन क़यामत के दिन दर्दनाक अज़ाबों की ख़बर देता है। जैसे फ़र्मान है (فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ) (3/आले इमरान : 21) इन्हें अलमनाक अज़ाबों की ख़बर पहुँचा दे।

***

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِتَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾

तर्जुमा : ''इंसान बुराई की दुआएँ माँगने लगता है, बिलकुल उसकी अपनी भलाई की दुआ की तरह इंसान है ही बड़ा जल्दबाज़। (11) हमने रात और दिन अपनी क़ुदरत के निशान बनाए हैं रात की निशानी को तो हमने बेनूर कर दिया है और दिन की निशानी को मुनव्वर दिखाने वाली बनाई है ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश कर सको और इसलिए भी कि बरसों का शुमार (गिनती) और हिसाब मालूम कर सको। और हर चीज़ को हमने ख़ूब तफ़्सील से बयान फ़र्मा दिया है।'' (12)

इंसान की बेसब्री का बयान (आयत 11, 12) : यानी इंसान कभी कभी दिलगीर (दिल छोटा करके) और नाउम्मीद होकर अपनी सख़्त ग़लती से ख़ुद अपने लिए बुराई की दुआ मांगने लगता है कभी अपने माल व औलाद के लिए बद दुआ करने लगता है कभी मौत की कभी हलाकत की कभी बर्बादी और लानत की। लेकिन उसका अल्लाह तआला उस पर ख़ुद उससे भी ज़्यादा मेहरबान है इधर वह दुआ करे उधर क़बूल कर ले तो अभी हलाक हो जाए। (तब्री : 17/393, 394) हदीस में भी है कि "अपनी जान व माल के लिए बद दुआ न करो ऐसा न हो कि किसी कुबूलियत की साअत में ऐसा कोई कलिम-ए- बद ज़ुबान से निकल जाए।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब हदीसे जाबिर तवील व क़िस्सतु अबिल यस्र : 3009; इब्ने हिब्बान : 5742) इसकी वजह सिर्फ़ इंसान की इज़्तिराबी हालत और उसकी जल्दबाज़ी है यह है ही जल्दबाज़। हज़रत सलमान फ़ारसी और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इस मौक़े पर हज़रत आदम (ﷺ) का वाक़िया ज़िकर किया है कि अभी पैरों तले तक रूह नहीं पहुँची थी जो आपने खड़े होने का इरादा किया। रूह सिर की तरफ़ से आ रही थी नाक तक पहुँची तो छींक आई, आपने अल्हम्दु लिल्लाह कहा। तो अल्लाह तआला ने फ़र्माया (यरहमुका रब्बुका या आदम!) ऐ आदम! तुझ पर तेरा रब रहम करे। जब आँखों तक पहुँची तो आँखें खोलकर देखने लगे जब और नीचे के हिस्सों में पहुँची तो ख़ुशी से अपने आपको देखने लगे अभी पैरों तक नहीं पहुँची थी जो चलने का इरादा किया लेकिन न चल सके तो दुआ करने लगे कि अल्लाह तआला रात से पहले रूह आ जाए। (तब्री : 17/394, 395)

दिन और रात अल्लाह तआला की क़ुदरत की दलील : अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत की बड़ी बड़ी निशानियों में से दो का यहाँ बयान करता है कि दिन रात उसने अलग अलग वज़अ के बनाए, रात को आराम के लिए दिन रोज़ी की तलाश के लिए कि उसमें काम काज करो सन्अत व हिर्फ़त करो, सैर व सफ़र करो। रात दिन के इख़्तिलाफ़ से दिनों की जुम्ओं की महीनों की बरसों की गिनती मालूम कर सको कि लेन देन में मामलात में क़र्ज़ में, मुद्दत में, इबादत के कामों में सहूलत और पहचान हो जाए। अगर एक ही वक़्त रहता तो बड़ी मुश्किल हो जाती, सच है अगर अल्लाह तआला चाहता तो हमेशा रात ही रात रखता कोई इतनी क़ुदरत नहीं रखता कि दिन कर दे और अगर वह हमेशा दिन ही दिन रखता तो किसकी मजाल थी कि रात ला दे? यह निशानाते क़ुदरत सुनने देखने के क़ाबिल हैं यह उसी की रहमत है कि रात सुकून के लिए बनाई और दिन रोज़ी की तलाश के लिए। इन दोनों को एक दूसरे के पीछे लगातार आने वाले बनाए ताकि शुक्र व नसीहत का इरादा रखने वाले कामयाब हो सकें। उसी के हाथ रात दिन का इख़्तिलाफ़ है, वह रात का पर्दा दिन पर और दिन का लिफ़ाफ़ा रात पर चढ़ा देता है, सूरज और चाँद उसी की मातहती में हैं, हर एक अपने मुक़र्ररा वक़्त पर चल फिर रहा है वह अल्लाह तआला ग़ालिब और ग़फ़्फ़ार है, वह सुबह का चाक करने वाला है उसी ने रात सुकून वाली बनाई है और सूरज चाँद को मुक़र्रर किया है यह अल्लाह अज़ीज़ व अलीम का मुक़र्रर किया हुआ अंदाज़ा है। रात अपने अंधेरे से चाँद के ज़ाहिर होने से पहचानी जाती है और दिन रोशनी से और सूरज के चढ़ने से मालूम हो जाता है। सूरज चाँद दोनों ही रोशन और मुनव्वर हैं लेकिन उनमें भी पूरा तफ़ावुत (फ़र्क़) रखा कि हर एक पहचान लिया जा सके। सूरज को बहुत रोशन और चाँद को नूरानी उसी ने किया है। मंज़िलें उसी ने मुक़र्रर की

हैं ताकि हिसाब और साल मालूम रहें। अल्लाह तआला की यह पैदाइश हक़ है, आख़िर तक।

चाँद के बारे में एक सवाल : कुरआन में है लोग तुझसे चाँद के बारे में पूछते हैं कह दे वह लोगों के लिए औक़ात हैं और हज्ज के लिए भी, आख़िर तक। रात का अंधेरा हट जाता है और दिन का उजाला आ जाता है। सूरज दिन की अलामत है चाँद रात का निशान है। (तब्री : 17/396) अल्लाह तआला ने चाँद को कुछ स्याही वाला पैदा किया है पस रात की निशानी चाँद को बनिस्बत सूरज के माँद कर दिया है उसमें एक तरह का धब्बा रख दिया है। इब्नुल कुवाअ ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि.) से पूछा कि चाँद में यह छाई कैसी है? आपने फ़र्माया इसी का बयान इस आयत में है कि हमने रात के निशान यानी चाँद में महवियत धुँधलका डाल दिया और दिन का निशान ख़ूब रोशन है, यह चाँद से ज़्यादा मुनव्वर और चाँद से बहुत बड़ा है। दिन रात को दो निशानियाँ मुक़र्रर कर दी हैं, पैदाइश ही उनकी इसी तरह की है। (तब्री : 17/397)

***

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَهُ طَٰٓئِرَهُۥ فِى عُنُقِهِۦ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ كِتَٰبًا يَلْقَىٰهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾

ٱقْرَأْ كِتَٰبَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾

तर्जुमा : "हमने हर इंसान की बुराई भलाई को उसके गले लगा दिया है और क़यामत के दिन हम उसके सामने उसका नामाएआमाल निकालेंगे जिसे वह अपने रूबरू खुला हुआ पा लेगा। (13) ले ख़ुद ही अपनी किताब आप ही पढ़ ले। आज तो तू आप ही अपना ख़ुद हिसाब लेने को काफ़ी है।" (14)

हर कोई अपना नामा-ए-आमाल देख लेगा (आयत 13, 14) : ऊपर की आयतों में ज़माने का ज़िक्र किया जिसमें इंसान के आमाल होते हैं अब यहाँ फ़र्माया है कि इसका जो अमल होता है भला हो या बुरा, वह उस पर चिपक जाता है नेकी का नेक बदला मिलेगा बदी का बुरा, ख़्वाह वह कितनी ही कम मिक़्दार में क्यूँ न हो। (तब्री : 17/398) जैसे फ़र्मान है ज़र्रा बराबर की ख़ैर और उतनी ही शर्र हर शख़्स क़यामत के दिन देख लेगा। (99/ज़िलज़ाल : 5, 6) और जैसे फ़र्मान है, दाएँ और बाएँ जानिब वह बैठे हुए हैं जो बात मुँह से निकले वह उसी वक़्त लिख लेता है। (52/तूर : 16) और जगह है (وَ إِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَٰفِظِينَ) (82/इंफ़ितार : 10) तुम पर निगहबान हैं जो बुज़ुर्ग हैं और लिखने वाले हैं तुम्हारे हर काम से बाख़बर हैं और आयत में है तुम्हें सिर्फ़ तुम्हारे किये हुए आमाल का बदला मिलेगा। और जगह है हर बुराई करने वाले को सज़ा दी जाएगी। (50/क़ाफ़ : 17) मक़सूद यह है कि इब्ने आदम के छोटे बड़े छुपे खुले नेक बुरे आमाल सुबह शाम दिन रात बराबर लिखे जा रहे हैं।

मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्बत्ता हर इंसान की शामते अमल उसकी गर्दन में है।'' इब्ने लहीआ (रह.) फ़र्माते हैं यहाँ तक कि शगून लेना भी। (अहमद : 3/360; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यह रिवायत इब्ने लहीआ के इख़्तिलात और अबुज़्ज़ुबेर की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है।) लेकिन इस हदीस की यह तशरीह ग़रीब है, वल्लाहु आलम!

इसके आमाल के मज्मूओ की किताब क़यामत के दिन या तो उसके दाएँ हाथ में दी जाएगी या बाएँ में। नेकों के दाएँ हाथ में और बुरों के बाएँ हाथ में खुली हुई होगी कि वह भी पढ़ ले और दूसरे भी देख लें। उसकी तमाम उम्र के कुल आमाल उसमें लिखे हुए होंगे। जैसे फ़र्माने इलाही है (يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَ أَخَّرَ) (75/क़ियामा : 13) उस दिन इंसान अपने तमाम अगले पिछले आमाल से ख़बरदार कर दिया जाएंगे इंसान तो अपने मामले में ख़ुद ही हुज्जत है भले वह अपनी बेगुनाही में कितने ही बहाने पेश कर दे। उस वक़्त उससे फ़र्माया जाएगा कि तू ख़ूब जानता है कि तुझ पर ज़ुल्म न किया जाएगा, उसमें वही लिखा गया है जो तूने किया है। उस वक़्त चूँकि भूली बिसरी बातें भी याद आ जाएँगी इसलिए दरहक़ीक़त कोई उज़्र पेश करने की गुंजाइश न रहेगी। फिर सामने किताब है जो पढ़ रहा है ख़्वाह वह दुनिया में अनपढ़ ही था लेकिन आज हर शख़्स उसे पढ़ लेगा। गर्दन का ज़िक्र ख़ास तरीक़े पर इसलिए किया कि वह एक ख़ास हिस्सा है। उसमें जो चीज़ लटका दी गई वह चिपक गई, शायरों ने भी इस ख़्याल को ज़ाहिर किया है। रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है ''बीमारी का मुतअद्दी होना कोई चीज़ नहीं फ़ाल कोई चीज़ नहीं, हर इंसान का अमल उसके गले का हार है'' और रिवायत में है कि ''शगुन हर इंसान का उसके गले का हार है।'' (मुस्नद अहमद : 3/342; व सनदुहू ज़ईफ़ुन इसकी सनद में भी इब्ने लहीआ मुख़्तलत रावी है।) आपका फ़र्मान है कि ''हर दिन के अमल पर मुहर लग जाती है। जब मोमिन बीमार होता है तो फ़रिश्ते कहते हैं या अल्लाह! तूने फ़लाँ को तो रोक लिया है। अल्लाह तआला जल्ल जलालुहू फ़र्माता है इसके जो अमल थे वह बराबर लिखते जाओ यहाँ तक कि मैं इसे तंदुरुस्त कर दूँ या फ़ौत कर दूँ।'' (मुस्नद अहमद : 4/146; व सनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 2/303)

लफ़्ज़े ताइर का मअनी : क़तादा (रह.) कहते हैं कि इस आयत में ताइर से मुराद अमल हैं। हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं ऐ इब्ने आदम! तेरे दाएँ बाएँ फ़रिश्ते बैठे हैं सहीफ़े खुले रखे हैं दाहिनी जानिब वाला नेकियाँ और बाएँ जानिब वाला बुराइयाँ लिख रहा है अब तुझे इख़्तियार है ज़्यादा नेकी कर या ज़्यादा बुराई। तेरी मौत पर यह दफ़्तर लपेट दिये जाएँगे और तेरी क़ब्र में तेरी गर्दन में लटका दिये जाएँगे। क़यामत के दिन खुले हुए तेरे सामने पेश कर दिये जाएँगे और तुझसे कहा जाएगा ले! अपना नामा-ए-आमाल ख़ुद पढ़ ले और तू ही हिसाब व इंसाफ़ कर ले। अल्लाह तआला की क़सम! वह बड़ा ही आदिल है जो तेरा मामला तेरे ही सुपुर्द कर रहा है। (तब्री : 17/400)

***

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ⑮

तर्जुमा : "जो राहे रास्त हासिल कर ले वह ख़ुद अपने ही भले के लिए राह पाता है और जो भटक जाए उसका बोझ उसी के ऊपर होता है कोई बोझ वाला किसी और का बोझ अपने ऊपर न लादेगा हमारी आदत नहीं कि रसूल भेजने से पहले ही अ़ज़ाब करने लगें।" (15)

फ़र्मांबरदारी में इंसान का अपना ही फ़ायदा है (आयत 15) : जिसने राहे रास्त इख़्तियार की हक़ की इत्तिबाअ़ की, नबुव्वत की मानी उसके अपने हक़ में अच्छाई है और जो हक़ से हटा, सही राह से फिरा, उसका वबाल उसी पर है, कोई किसी के गुनाह में पकड़ा न जाएगा, हर एक का अ़मल उसी के साथ है, कोई न होगा जो दूसरे का बोझ बटाए। और जगह क़ुरआन में है (وَ لَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَ اَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ) (29/अन्कबूत : 13) और आयत में है (وَ مِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ) (16/नहल : 25) यानी अपने बोझ के साथ यह उनके बोझ भी उठाएँगे जिन्हें इन्होंने बहका रखा था। पस इन दोनों मज़्मूनों में कोई मनाफ़ात (डिस्पुट) न समझी जाए इसलिए कि गुमराह करने वालों पर उनके गुमराह करने का बोझ है, न कि उनके बोझ हल्के किये जाएँ और उन पर लादे जाएँ, हमारा आ़दिल अल्लाह तआ़ला ऐसा नहीं करता। फिर अपनी एक और रहमत बयान करता है कि वह रसूल के पहुँचने से पहले किसी उम्मत को अ़ज़ाब नहीं करता। चुनाँचे सूरह मुल्क में है कि जहन्नमियों से दारोग़े पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास डराने वाले नहीं आए थे? वह जवाब देंगे बेशक आए थे लेकिन हमने उन्हें सच्चा न समझा, उन्हें झुठला दिया और साफ़ कह दिया कि तुम तो यूँ ही बहक रहे हो, सिरे से बात ही अनहोनी है कि अल्लाह तआ़ला किसी पर कुछ उतारे। (67/मुल्क : 8, 9) इसी तरह जब यह लोग जहन्नम की तरफ़ गिरोह गिरोह पहुँचाये जा रहे होंगे, उस वक़्त भी दारोग़े इनसे पूछेंगे कि क्या तुममें से ही रसूल नहीं आए थे? जो तुम्हारे रब की आयतें तुम्हारे सामने पढ़ते हों और तुम्हें इस दिन की मुलाक़ात से डराते हों? यह जवाब देंगे कि हाँ! यक़ीनन आए। लेकिन कलिमा अ़ज़ाब काफ़िरों पर ठीक उतरा। (39/ज़ुमर : 71) और आयत में है कि कुफ़्फ़ार जहन्नम में पड़े चीख़ रहे होंगे कि या अल्लाह! हमें इससे निकाल दे तो हम अपने पिछले करतूत छोड़कर नेक आमाल करेंगे। तो उनसे कहा जाएगा कि क्या मैंने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि अगर नसीहत हासिल करना चाहते तो कर सकते थे और मैंने तुममें अपने रसूल भी भेजे थे जिन्होंने ख़ूब आगाह कर दिया था अब तो अ़ज़ाब बर्दाश्त करो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (35/फ़ातिर : 37) अल्ग़र्ज़ और भी बहुत सी आयतों से साबित है कि अल्लाह तआ़ला बग़ैर रसूल भेजे किसी को जहन्नम में नहीं भेजता।

सहीह बुख़ारी (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिल्लाहि तआ़ला (इन्न रहमतल्लाहि क़रीबुम् मिनल मुहसिनीन...) : 7449) में आयत (اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ) (7/आराफ़ : 56) की तफ़्सीर में एक लम्बी हदीस मरवी है जिसमें जन्नत, जहन्नम का कलाम है फिर है कि

"जन्नत के बारे में अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म न करेगा और वह जहन्नम के लिए एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा जो उसमें डाल दी जाएगी। वह कहती रहेगी कि क्या अभी और भी बाक़ी है?" उसकी बाबत उलमा की एक जमाअत ने बहुत कुछ कलाम किया है, दरअसल यह जन्नत के बारे में है इसलिए कि वह दारे फ़ज़्ल है और जहन्नम दारे अदल है उसमें बग़ैर उज़्र तोड़े बग़ैर हुज्जत ज़ाहिर किये कोई दाख़िल न किया जाएगा, इसलिए हाफ़िज़ाने हदीस की एक जमाअत का ख़याल है कि रावी को उसमें उल्टा याद रह गया और इसकी दलील बुख़ारी व मुस्लिम की वह रिवायत है जिसमें इसी हदीस के आख़िर में है कि "दोज़ख़ न भरेगी यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसमें अपना क़दम रख देगा उस वक़्त वह कहेगी, बस बस और उस वक़्त भर जाएगी और चारों तरफ़ से सिमट जाएगी। अल्लाह तआला किसी पर ज़ुल्म न करेगा, हाँ! जन्नत के लिए एक नई मख़्लूक़ पैदा करेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरत क़ाफ़ बाब क़ौलुहू (व तक़ूलु हल मिम मज़ीद) : 4850; सहीह मुस्लिम : 2846) बाक़ी रहा यह मसला कि काफ़िरों के जो नाबालिग़ छोटे बच्चे बचपन में मर जाते हैं और जो दीवाने लोग हैं और बहरे और जो ऐसे ज़माने में गुज़रे हैं जिस वक़्त ज़मीन पर कोई रसूल या दीन की सही तालीम नहीं होती और उन्हें दावते इस्लाम नहीं पहुँचती और जो बिलकुल बूढ़े हवास बाख़्ता हों उनके लिए क्या हुक्म है? इस बारे में शुरू से इख़्तिलाफ़ चला आ रहा है उनके बारे में जो हदीसें हैं वह मैं आपके सामने बयान करता हूँ फिर अइम्मा का कलाम भी मुख़्तसरन ज़िक्र करूँगा, अल्लाह तआला मदद करे।

पहली हदीस : मुस्नद अहमद में है "चार क़िस्म के लोग क़यामत के दिन अल्लाह तआला से बातचीत करेंगे एक तो बिलकुल बहरा आदमी जो कुछ नहीं सुनता और दूसरा बिलकुल अहमक़ पागल आदमी जो कुछ भी नहीं जानता, तीसरा बिलकुल बूढ़ा फूस आदमी जिसके हवास दुरुस्त नहीं, चौथे वह लोग जो ऐसे ज़मानों में गुज़रे हैं जिनमें कोई पैग़म्बर या उसकी तअलीम मौजूद न थी। बहरा तो कहेगा, इस्लाम आया लेकिन मेरे कान में कोई आवाज़ न पहुँची, दीवाना कहेगा इस्लाम आया लेकिन मेरी हालत तो यह थी कि बच्चे मुझ पर मींगनियाँ फेंक रहे थे और बिलकुल बूढ़े बदहवास आदमी कहेंगे कि इस्लाम आया लेकिन मेरे होशो-हवास ही सही न थे, जो मैं समझ सकता, रसूलों के ज़मानों का और उनकी तअलीम को मौजूद न पाने वाले का क़ौल होगा कि न रसूल आए, न मैंने हक़ पाया, फिर मैं कैसे अमल करता? अल्लाह तआला उनकी तरफ़ पैग़ाम भेजेगा कि अच्छा! जाओ जहन्नम में कूद जाओ। अल्लाह तआला की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर वह हुक्मबरदारी कर लें और जहन्नम में कूद पड़ें तो जहन्नम की आग उन पर ठण्डक और सलामती वाली हो जाएगी।" (मुस्नद अहमद : 4/24; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 2174; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/216)

और रिवायत में है कि "जो कूद पड़ेंगे उन पर सलामती और ठण्डक हो जाएगी और जो रुकेंगे उन्हें हुक्म न मानने की वजह से घसीटकर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।" (मुस्नद अहमद : 4/24; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; तबरानी : 841; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/216) इब्ने जरीर में इस हदीस के बयान के बाद हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) का यह फ़र्मान भी है कि अगर तुम चाहो तो इसकी तस्दीक़ में कलामुल्लाह की आयत (वमा कुन्ना मुअ़ज़्ज़िबीन) पढ़ लो।

दूसरी हदीस : अबूदाऊद तयालिसी में है कि हमने हज़रत अनस (रज़ि.) से सवाल किया कि अबू हम्ज़ा मुश्रिकों के बच्चों के बारे में आप क्या फ़र्माते हैं? आपने फ़र्माया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि "वह गुनहगार नहीं जो दोज़ख़ में अज़ाब किये जाएँ और नेककार नहीं जो जन्नत में बदला दिये जाएँ।" (मुस्नदे तयालिसी : 2111; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअ़ला मुख़्तसरन : 4090; इसकी सनद में यज़ीद रक़्क़ाशी ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/361; रक़म : 220)

तीसरी हदीस : अबू यअ़ला में है कि "उन चारों के उ़ज़्र सुनकर जनाब बारी तआ़ला कहेगा कि औरों के पास तो मैं अपने रसूल भेजता था लेकिन तुमसे मैं आप कहता हूँ कि जाओ! इस जहन्नम में चले जाओ। जहन्नम में से भी फ़र्माने बारी से एक गर्दन ऊँची होगी। उस फ़र्मान को सुनते ही वह लोग जो नेक तबियत होंगे, फ़ौरन दौड़कर उसमें कूद पड़ेंगे और जो बद बातिन हैं वह कहेंगे, अल्लाह तआ़ला हम इसी से बचने के लिए तो यह उ़ज़्र मअ़ज़िरत कर रहे थे। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा, जब तुम ख़ुद मेरी नहीं मानते तो मेरे रसूलों की बात कहाँ मानते। अब तुम्हारे लिए फ़ैसला यही है कि तुम जहन्नमी हो और इन फ़र्मांबरदारों से कहा जाएगा कि तुम बेशक जन्नती हो तुमने मेरी इताअ़त कर ली।" (मुस्नद अबी यअ़ला : 4224; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में लैस बिन अबी सुलैम मुख़्तलत रावी है। (अत्तक़रीब : 2/138)

चौथी हदीस : मुस्नदे अबी यअ़ला मूसली में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुसलमानों की औलाद के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़र्माया, "वह अपने बाप बच्चों के साथ है। फिर मुश्रिकीन की औलादों के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया, वह अपने बापों के साथ है तो कहा गया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! उन्होंने कोई अ़मल तो किया नहीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! लेकिन अल्लाह तआ़ला बख़ूबी जानता है।" अबू यअ़ला कमा फ़ी इत्तिहाफ़िल ख़ैरा (10290)

पाँचवीं हदीस : हाफ़िज़ अबूबक्र अहमद बिन अ़म्र बिन अ़ब्दुल ख़ालिक़ बज़्ज़ार (रह.) अपनी मुस्नद में रिवायत करते हैं कि "क़यामत के दिन अहले जाहिलियत अपने बोझ अपनी कमरों पर लादे हुए आएँगे और अल्लाह के सामने उ़ज़्र करेंगे कि न हमारे पास तेरे रसूल पहुँचे, न हमें तेरा कोई हुक्म पहुँचा अगर ऐसा होता तो हम जी खोलकर मान लेते। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा अच्छा! अब अगर हुक्म दूँ तो मान लोगे वह कहेंगे, हाँ! हाँ! बेशक बिला चूँ चरा। अल्लाह तबारक व तआ़ला कहेगा, अच्छा जाओ जहन्नम के पास जाकर उसमें दाख़िल हो जाओ। यह चलेंगे यहाँ तक कि उसके पास पहुँच जाएँगे अब जो उसका जोश और उसकी आवाज़ और उसके अ़ज़ाब देखेंगे तो वापिस आ जाएँगे और कहेंगे, ऐ अल्लाह! हमें इससे तू बचा ले। अल्लाह तआ़ला कहेगा, देखो! तुम इक़रार कर चुके हो कि मेरी फ़र्मांबरदारी करोगे, फिर यह नाफ़र्मानी क्यूँ? वह कहेंगे अच्छा! अब से मान लेंगे और कर गुज़रेंगे। चुनाँचे इनसे मज़बूत अ़हदो-पैमान लिए जाएँगे फिर यही हुक्म होगा। यह जाएँगे और फिर ख़ौफ़ज़दा होकर वापिस लौटेंगे और कहेंगे, ऐ अल्लाह! हम तो डर गए हमसे तो इस फ़र्मान पर अ़मल नहीं हो सकता। अब जनाब बारी कहेगा तुम नाफ़र्मानी कर चुके, अब जाओ ज़िल्लत के साथ जहन्नमी बन जाओ। आप फ़र्माते हैं कि अगर पहली मर्तबा यह बहुक्मे इलाही उसमें कूद जाते तो जहन्नम

की आग उन पर ठण्डी हो जाती और उनका एक रुवाँ भी न जलाती।'' (हाकिम : 4/449, 450; व सनदुहू हसन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 3433; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/347) इमाम बज़्ज़ार (रह.) फ़र्माते हैं इस हदीस का मतन मअरूफ़ नहीं, अय्यूब से सिर्फ़ अब्बाद ही रिवायत करते हैं और अब्बाद से सिर्फ़ रैहान बिन सईद ही रिवायत करते हैं। मैं कहता हूँ इसे इब्ने हिब्बान ने सिक़ा बतलाया है, यह्या बिन मुईन और नसाई कहते हैं इनमें कोई डर ख़ौफ़ की बात नहीं। अबूदाऊद ने इनसे रिवायत नहीं की। अबू हातिम कहते हैं यह शैख़ हैं इनमें कोई हर्ज नहीं इनकी हदीसें लिख ली जाती हैं और इनसे दलील नहीं ली जाती।

छठी हदीस : इमाम मुहम्मद बिन यहला ज़ोहली (रह.) रिवायत लाए हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है ''ख़ाली ज़माने वाले और मज्नून और बच्चे अल्लाह तआला के सामने आएँगे। एक कहेगा मेरे पास तेरी किताब पहुँची ही नहीं। मज्नून कहेगा मैं भलाई बुराई की तमीज़ ही नहीं रखता। बच्चा कहेगा कि मैंने समझ बूझ का बुलूग़त का ज़माना पाया ही नहीं। उसी वक़्त उनके सामने आग शोले मारने लगेगी। अल्लाह तआला कहेगा, इसे हटा दो। तो जो आगे चलकर नेकी करने वाले थे वह तो इताअत गुज़ारी कर लेंगे और जो उस उज़्र के हट जाने के बाद भी नाफ़र्मानी करने वाले थे वह रुक जाएँगे तो अल्लाह तआला कहेगा जब तुम मेरी ही बराहे रास्त नहीं मानते तो मेरे पैग़म्बरों की क्या मान कर देते।'' (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2166; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/219; इसकी सनद में अतिया औफ़ी ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/24; रक़म : 216)

सातवीं हदीस : इन ही तीनों शख़्सों के बारे में ऊपर वाली हदीसों की तरह है। इसमें यह भी है कि ''जब यह जहन्नम के पास पहुँचेंगे तो उसमें से ऐसे शोले बुलंद होंगे कि यह समझ लेंगे कि यह तो सारी दुनिया को जलाकर राख कर देंगे, दौड़ते हुए वापिस लौट आएँगे। फिर दोबारा भी यही होगा। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल कहेगा, तुम्हारी पैदाइश से पहले ही तुम्हारे आमाल की मुझको ख़बर थी। मैंने इल्म होते हुए तुम्हें पैदा किया था उसी इल्म के मुताबिक़ तुम हो। ऐ जहन्नम! इन्हें दबोच ले। चुनाँचे उसी वक़्त आग उन्हें लुक़्मा (निवाला) बना लेगी।'' (तब्रानी : 20/83; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/216; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; इसकी सनद में अम्र बिन वाक़िद है जिसे बुख़ारी ने मुंकरुल हदीस और दारे क़ुत्नी ने मतरूक रावी कहा है। (अल्मीज़ान : 3/291; रक़म : 6464)

आठवीं हदीस : हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की रिवायत उनके अपने क़ौल समेत पहले बयान हो चुकी है। सहीहैन में आप ही से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हर बच्चा दीने इस्लाम पर पैदा होता है फिर उसके माँ बाप उसे यहूदी नसरानी मजूसी बना लेते हैं जैसे कि बकरी के सही सलामत बच्चे के कान काट दिया करते हैं।'' लोगों ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! अगर वह बचपन ही में मर जाएँ तो? आपने फ़र्माया ''अल्लाह उनके आमाल की सही और पूरी ख़बर रखता है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल क़द्र, बाब अल्लाहु आलमु बिमा कानू आमिलीनः 6599; सहीह मुस्लिम : 2658; तिर्मिज़ी :2138; अहमद : 2/253; इब्ने हिब्बान :130) मुस्नद की हदीस में है कि ''मुसलमान बच्चों की किफ़ालत जन्नत में हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के सुपुर्द है।'' (अहमद : 2/326; व सनदुहू हसन; व सह्हहहुल हाकिम : 2/370; व वाफ़क़हुज़्ज़हबी; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/219) सही मुस्लिम में हदीसे क़ुदसी है कि ''मैं ने अपने बन्दों को मुवह्हिद एक तरफ़ा ख़ालिस बनाया है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अस्सिफ़ातुल्लती युअरफ़ु बिहा फ़िद्दुनिया अहलुल जन्नाः 2865) एक रिवायत में इसके साथ ही मुसलमान का लफ़्ज़ भी है।

मुश्रिकीन के बच्चों का क्या अंजाम होगा? नवीं हदीसः हाफ़िज़ अबूबक्र बरक़ानी अपनी किताब अल्मुस्तख़्रज अलल बुख़ारी में रिवायत लाए हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया "हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा किया जाता है।" लोगों ने बआवाज़े बुलंद पूछा कि मुश्रिकों के बच्चे भी? आपने फ़र्माया, "मुश्रिकों के बच्चे भी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब तअबीरुर्रुअया बअद सलातिस्सुब्ह :8047) तबरानी की हदीस में है कि "मुश्रिकों के बच्चे अहले जन्नत के ख़ादिम बनाए जाएँगे।" (मुस्नदे बज़्ज़ारः2172; अल्मुअजमुल कबीरः 6993)

दसवीं हदीस : मुस्नदे अहमद में है कि एक सहाबी ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जन्नत में कौन कौन जाएँगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "नबी शुहदा और बच्चे और ज़िन्दा दफ़न किये हुए बच्चे।" (अबूदाऊद : किताबुल जिहाद, बाब फ़ी फ़ज़्लिश्शहादा : 2521; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हस्ना राविया मज्हूलतुल हाल है। बैहक़ी : 9/163; अहमद : 5/58; इब्ने अबी शैबा : 5/339; मअरिफ़तुस्सहाबा : 864) उलमा में से कुछ का मस्लक तो यह है कि उनके बारे में हम तवक़्क़ुफ़ करते हैं, ख़ामोश हैं इनकी दलील भी गुज़र चुकी। कुछ कहते हैं यह जन्नती हैं, उनकी दलील मेअराज वाली वह हदीस है जो सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत समुरा बिन जुन्दुब (रज़ि.) से मरवी है कि "आपने अपने उस ख़्वाब में एक शख़्स को एक जन्नती दरख़्त तले देखा जिनके पास बहुत से बच्चे थे। सवाल पर हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने बतलाया कि यह हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) हैं और उनके पास यह बच्चे मुसलमानों और मुश्रिकों की औलाद हैं। लोगों ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! मुश्रिकीन की औलाद भी। आपने फ़र्माया, हाँ! मुश्रिकीन की औलाद भी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तअबीर,बाब तअबीरुर्रुअया बअद सलातिस्सुब्ह : 7047) कुछ उलमा फ़र्माते हैं यह दोज़ख़ी हैं क्योंकि एक हदीस में है कि वह अपने बापों के साथ हैं। कुछ उलमा कहते हैं उनका इम्तिहान क़यामत के मैदानों में हो जाएगा, इताअत गुज़ार जन्नत में जाएँगे, अल्लाह तआला अपने साबिक़ इल्म का इज़्हार करके फिर उन्हें जन्नत में पहुँचाएगा और कुछ बवजह अपनी नाफ़र्मानी के जो उस इम्तिहान के वक़्त उनसे सरज़द होगी और अल्लाह तआला अपना पहला इल्म आशकारा कर देगा उस वक़्त उन्हें जहन्नम का हुक्म होगा। इस मज़हब से तमाम हदीसों और मुख़्तलिफ़ दलीलों में जमा हो जाती है और पहले की हदीसें जो एक दूसरे को तक़्वियत पहुँचाती हैं इस मअनी की कई एक हैं। शैख़ अबुल अली बिन इस्माईल अशअरी (रह.) ने यही मज़हब अहले सुन्नत वल जमाअत का नक़्ल फ़र्माया है और इसी की ताईद इमाम बैहक़ी (रह.) ने किताबुल एतिक़ाद में की है। और भी बहुत से मुहक़्क़िक़ीन उलमा और परख वाले हाफ़िज़ों ने यही फ़र्माया है। शैख़ अबू उमर बिन अब्दुल बर्र नमरी ने इम्तिहान की कुछ रिवायतें बयान करके लिखा है कि इस बारे की हदीसें क़वी नहीं हैं और इनसे हुज्जत साबित नहीं होती और अहले इल्म इनका इंकार करते हैं इसलिए कि आख़िरत दारे जज़ा है दारे अमल नहीं है और न दारे इम्तिहान है और जहन्नम में जाने का हुक्म भी तो इंसानी ताक़त से बाहर का हुक्म है और अल्लाह की यह आदत नहीं। इमाम साहब के इस क़ौल का जवाब भी सुन लीजिए इस बारे में जो हदीसें हैं उनमें से कुछ तो बिलकुल सही हैं जैसे कि अइम्मा उलमा ने तसरीह की है कुछ हसन हैं और कुछ ज़ईफ़ भी हैं लेकिन वह बवजह सहीह और हसन हदीसों के क़वी हो जाती हैं और जब यह है तो ज़ाहिर है कि यह हदीसें हुज्जत व दलील के क़ाबिल हुईं।

अब रहा इमाम साहब का यह फ़र्मान कि आख़िरत दारे अमल और दारे इम्तिहान नहीं, वह दारे जज़ा है, यह बेशक सही है लेकिन इससे इसकी नफ़ी कैसे हो गई कि क़यामत के मुख़्तलिफ़ मैदानों की पेशियों में जन्नत दोज़ख़ के दुख़ूल से पहले कोई अहकाम न दिये जाएँगे। शैख़ अबुल हसन अशअरी ने तो मज़हबे अहले सुन्नत वल जमाअत के अक़ाइद में बच्चों के इम्तिहान को दाख़िल किया है। मज़ीद बराँ आयते क़ुरआन (يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ) (68/क़लम : 42) इसकी खुली दलील है कि मुनाफ़िक़ व मोमिन की तमीज़ के लिए पिण्डली खोल दी जाएगी और सज्दे का हुक्म होगा। सिहाह की हदीसों में है कि "मोमिन तो सज्दा कर लेंगे और मुनाफ़िक़ उल्टे मुँह पीठ के बल गिर पड़ेंगे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नून वल क़लमि, बाब (यौम युक्शफ़ु अन साक़) : 4919; सहीह मुस्लिम : 183) सहीहैन में उस शख़्स का क़िस्सा भी है "जो सबसे आख़िर में जहन्नम से निकलेगा कि वह अल्लाह से वादे वईद करेगा और कुछ सवाल न करेगा, सिवा इस सवाल के उसके पूरा होने के बाद वह अपने क़ौलो क़रार से फिर जाएगा और एक और सवाल कर बैठेगा वग़ैरह। आख़िर में अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि इब्ने आदम! तू बड़ा बदअहद है, अच्छा जा जन्नत में चला जा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब फ़ज़्लुस्सुजूद : 806; सहीह मुस्लिम : 182) फिर इमाम साहब का यह फ़र्माना कि उन्हें इनकी ताक़त से ख़ारिज बात का यानी जहन्नम में कूद पड़ने का हुक्म कैसे होगा? अल्लाह तआला किसी को उसकी वुस्अत से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता। यह भी सेहते हदीस में कोई रोक पैदा नहीं कर सकता। ख़ुद इमाम साहब और तमाम मुसलमान मानते हैं कि पुल सिरात पर से गुज़रने का हुक्म सबको होगा जो जहन्नम की पीठ पर होगा और तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक होगा। मोमिन उस पर से अपनी नेकियों के अंदाज़े से गुज़र जाएँगे। कुछ मिस्ल बिजली के कुछ मिस्ल हवा के कुछ मिस्ल घोड़े के, कुछ मिस्ल ऊँटों के, कुछ मिस्ल भागने वालों के, कुछ मिस्ल पैदल चलने वालों के कुछ घुटनों सिरक सिरककर कुछ कट कटकर जहन्नम में गिर पड़ेंगे। पस जब यह चीज़ वहाँ है तो उन्हें जहन्नम में कूद पड़ने का हुक्म तो इससे कोई बड़ा नहीं बल्कि यह इससे बड़ा और बहुत भारी है। और सुनिए हदीस में है कि 'दज्जा त के साथ आग और बाग़ होगा। शारेअ (ﷺ) ने मोमिनों को हुक्म दिया है कि वह जिसे आग देख रहे हैं उसमें से पियें वह उनके लिए ठण्डक और सलामती की चीज़ है।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब मा ज़िक्रु अन बनी इस्राईल : 3450; सहीह मुस्लिम : 2934) पस यह साफ़ नज़ीर है इस वाक़िया की। और लीजिए बनू इस्राईल ने जब गौशाला परस्ती की। उसकी सज़ा में अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि वह आपस में एक दूसरे को क़त्ल करें एक बादल ने आकर उन्हें ढाँप लिया। अब जो तलवार चली तो सुबह ही सुबह बादल फटने से पहले उनमें से सत्तर हज़ार आदमी क़त्ल हो चुके थे। बेटे ने बाप को और बाप ने बेटे को क़त्ल किया। क्या यह हुक्म इस हुक्म से कम था? क्या इसका अमल नफ़्स पर गिराँ नहीं फिर तो इसकी निस्बत भी कह देना चाहिए था कि अल्लाह तआला किसी नफ़्स को उसकी बर्दाश्त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता।

मज़्कूरा मसला में हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) की वज़ाहत : इन तमाम बहसों के साफ़ होने के बाद अब सुनिए! मुश्रिकीन के बचपन में मरे हुए बच्चों की बाबत भी बहुत से क़ौल हैं, एक तो यह कि यह सब जन्नती हैं इनकी दलील वही मेअराज में हज़रत इब्राहीम (ﷺ) के पास मुश्रिकों और मुसलमानों के बच्चों को हुज़ूर

(ﷺ) का देखना है और दलील इनकी मुस्नद की वह रिवायत है जो पहले गुज़र चुकी है कि आपने फ़र्माया, ''बच्चे जन्नत में हैं।'' हाँ! इम्तिहान होने की जो हदीसें गुज़रीं वह उनमें से ख़ास हैं। पस जिनकी निस्बत रब्बुल आलमीन को मालूम है कि वह मुतीअ और फ़र्मांबरदार हैं उनकी रूह आलमे बरज़ख़ में हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के पास हैं और मुसलमानों के बच्चों की रूहें भी और जिनकी निस्बत अल्लाह तआला जानता है कि वह क़बूल करने वाली नहीं उनका हुक्म अल्लाह के सुपुर्द है। वह क़यामत के दिन जहन्नमी होंगे जैसे कि अहादीसे इम्तिहान से ज़ाहिर है। इमाम अशअरी (रह.) ने इसे अहले सुन्नत से नक़्ल किया है। अब कोई तो कहता है कि यह मुस्तक़िल तौर पर जन्नती हैं कोई कहता है यह अहले जन्नत के ख़ादिम हैं। भले ऐसी हदीस अबूदाऊद तयालिसी में है लेकिन इसकी सनद ज़ईफ़ है, वल्लाहु आलम!

दूसरा क़ौल यह है कि मुश्रिकों के बच्चे भी अपने बाप दादों के साथ जहन्नम में जाएँगे जैसे कि मुस्नद वग़ैरह की हदीस में है कि ''वह अपने बाप दादों के ताबेदार हैं।' यह सुनकर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने पूछा भी कि बावजूद बेअमल होने के? आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''वह क्या अमल करने वाले थे उसे अल्लाह तआला बख़ूबी जानता है।'' (मुस्नद अहमद : 6/84; व सनदुहू हसन) अबूदाऊद में है हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुसलमानों की औलाद की बाबत सवाल किया तो आपने फ़र्माया कि ''वह अपने बाप दादों के साथ हैं।'' मैंने कहा, मुश्रिकों की औलाद? आपने फ़र्माया ''वह अपने बाप दादों के साथ हैं।'' मैंने कहा, बग़ैर इसके कि उन्होंने कोई अमल किया हो? आपने फ़र्माया, ''वह क्या करते यह अल्लाह तआला के इल्म में है।'' (अबू दाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़ी ज़िरारिल मुश्रिकीन : 4712) मुस्नद की हदीस में है कि आपने फ़र्माया ''अगर तू चाहे तो मैं उनका रोना पीटना और चीख़ना चिल्लाना भी तुझे सुना दूँ।'' (मुस्नद अहमद : 6/208; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/220; इसकी सनद में अबू अक़ील यहया बिन मुतवक्किल वाहियुल हदीस है (अल्मीज़ान : 4/404; रक़म : 9614) इमाम अहमद (रह.) के साहबज़ादे रिवायत लाए हैं कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने उन दो बच्चों की निस्बत सवाल किया जो जाहिलियत के ज़माने में फ़ौत हो गए थे। आपने फ़र्माया, ''वह दोनों दोज़ख़ में हैं जब आपने देखा कि यह बात उन्हें बहुत भारी पड़ी है तो आपने फ़र्माया अगर तुम उनकी जगह देख लेतीं तो तुम ख़ुद उनसे बेज़ार हो जातीं।'' हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने पूछा, अच्छा! जो बच्चा आपसे हुआ था? आपने फ़र्माया, ''सुनो! मोमिन और उनकी औलाद जन्नती हैं और मुश्रिक और उनकी औलाद जहन्नमी।'' फिर आपने यह आयत पढ़ी (وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ) (52/तूर : 21) जो लोग ईमान लाए और उनकी औलादों ने उनकी इत्तिबाअ ईमान के साथ की हम उनकी औलादें उन ही के साथ मिला देंगे।'' (मुस्नद अहमद : 1/134, 135; ज़वाइद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसका रावी मुहम्मद बिन उस्मान नामालूम है। अस्सुन्ना : 213) यह हदीस ग़रीब है इसकी इस्नाद में मुहम्मद बिन उस्मान रावी मज्हूलुल हाल हैं और उनके शैख़ ज़ाज़ान ने हज़रत अली (रज़ि.) को नहीं पाया, वल्लाहु आलम! अबूदाऊद में हदीस है ''ज़िन्दा दफ़न करने वाली और ज़िन्दा दफ़न की हुई दोज़ख़ी हैं।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़ी ज़िरारिल मुश्रिकीन : 4717; वहुव सहीहुन) हज़रत सलमा बिन क़ैस अश्जई

(रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं अपने भाई को लिए हुए रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और कहा कि हुज़ूर (ﷺ)! हमारी माँ जाहिलियत के ज़माने में मर गई हैं, वह सिलारह़मी करने वाली और मेहमान नवाज़ थीं। हमारी एक नाबालिग बहन को उन्होंने ज़िन्दा दफ़न कर दिया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''ऐसा करने वाली और जिसके साथ ऐसा किया गया है दोनों जहन्नमी हैं यह और बात है कि वह इस्लाम को पा ले और उसे क़बूल कर ले।'' (अह़मद : 3/478)

तीसरा क़ौल यह है कि इनके बारे में तवक़्क़ुफ़ करना चाहिए कोई फ़ैसलाकुन बात एक त़रफ़ा न कहनी चाहिए। इनका ऐतिमाद आपके इस फ़र्मान पर है कि इनके आमाल का सही और पूरा इल्म अल्लाह तआला को है। बुख़ारी में है कि मुश्रिकों की औलाद के बारे में जब आपसे सवाल हुआ तो आपने उन ही लफ़्ज़ों में जवाब दिया था। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल क़द्र, बाब अल्लाहु आलमु बिमा कानू आमिलीन... : 6600; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2660) कुछ बुज़ुर्ग कहते हैं कि यह आराफ़ में रखे जाएँगे। इस क़ौल का भी नतीजा यही है कि यह जन्नती हैं इसलिए कि आराफ़ कोई रहने सहने की जगह नहीं यहाँ वाले बिल आख़िर जन्नत में ही जाएँगे जैसे कि सूरह आराफ़ की तफ़्सीर में हम इसकी तक़रीर कर आए हैं, वल्लाहु आलम!

मोमिनों के फ़ौत हो जाने वाले बच्चे कहाँ होंगे? यह तो था इख़्तिलाफ़ मुश्रिकों की औलाद के बारे में लेकिन मोमिनों की नाबालिग़ औलाद के बारे में तो उलमा का बिला इख़्तिलाफ़ यही क़ौल है कि वह जन्नती हैं। जैसे कि ह़ज़रत इमाम अह़मद (रह़.) का क़ौल है और यही लोगों में मशहूर भी है और इंशाअल्लाह! हमें भी यही उम्मीद है लेकिन कुछ उलमा से मंक़ूल है कि वह उनके बारे में तवक़्क़ुफ़ करते हैं और कहते हैं कि सब सच्चे अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसकी चाहत के मातह़त हैं। अहले फ़िक़ा और अहले ह़दीस की एक जमाअत इस त़रफ़ भी गई है, मौता इमाम मालिक (रह़.) के अब्वाबुल क़द्र की ह़दीसों में भी कुछ इसी जैसा है भले इमाम मालिक (रह़.) का कोई फ़ैसला इसमें नहीं लेकिन कुछ मुताख़्ख़िरीन का क़ौल है कि मुसलमान बच्चे तो जन्नती हैं और मुश्रिकों के बच्चे मशिय्यते इलाही के मातह़त हैं। इब्ने अब्दुल बर्र ने इस बात को इसी वज़ाह़त से बयान किया है लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। किताबुत्तज़्किरा में इमाम क़ुर्तुबी (रह़.) ने भी यही फ़र्माया है, वल्लाहु आलम! इस बारे में उन बुज़ुर्गों ने एक ह़दीस यह भी वारिद की है कि अंसारियों के एक बच्चे के जनाज़े में हुज़ूर (ﷺ) को बुलाया गया तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, उस बच्चे को मरह़बा हो यह तो जन्नत की चिड़िया है, न बुराई का कोई काम किया न उस ज़माने को पहुँचा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''इसके सिवा कुछ और भी। ऐ आइशा सुनो! अल्लाह तबारक व तआला ने जन्नत और जन्नतियों को मुक़र्रर कर दिया है ह़ालाँकि वह अपने बाप की पीठ में थे इसी त़रह़ उसने जहन्नम को पैदा किया है और उसमें जलने वाले पैदा किये हैं ह़ालाँकि वह अभी अपने बापों की पीठों में हैं।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब मअनी कुल्लु मौलूदिन यूलदु अलल फ़ित़रति : 2662; अबूदाऊद : 4713; इब्ने माजा : 82; अह़मद : 6/41; इब्ने ह़िब्बान : 138)

चूँकि यह मसला सही दलील के बग़ैर साबित नहीं हो सकता और अपनी बेइल्मी के बाइस बग़ैर सबूते शारेअ के इसमें कलाम करने लगे हैं इसलिए उलमा की एक जमाअत ने इसमें कलाम करना ही पसंद नहीं

किया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.), क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र सिद्दीक़ और मुहम्मद बिन हनीफ़िया (रह.) वग़ैरह का मज़हब यही है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने तो मिम्बर पर ख़ुत्बा में फ़र्माया था कि हुज़ूर (ﷺ) का इर्शाद है कि ''इस उम्मत का काम ठीक ठाक रहेगा जब तक कि यह बच्चों के बारे में और तक़्दीर के बारे में कुछ कलाम न करेंगे।'' (हाकिम : 1/33; इब्ने हिब्बान : 6724; व सनदुहू हसन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 2180; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/202) इमाम इब्ने हिब्बान (रह.) कहते हैं मुराद इससे मुश्रिकों के बच्चों के बारे में कलाम न करना है और किताबों में यह रिवायत हज़रत अ़ब्दुल्लाह के अपने क़ौल से मौक़ूफ़न मरवी है।

***

وَإِذَآ أَرَدْنَآ أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا۟ فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا ٱلْقَوْلُ فَدَمَّرْنَٰهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ ٱلْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ خَبِيرًۢا بَصِيرًا ﴿١٧﴾

तर्जुमा : ''जब हम किसी बस्ती की हलाकत का इरादा कर लेते हैं तो वहाँ के ख़ुशहाल लोगों को कुछ हुक्म देते हैं वह उस बस्ती में खुली नाफ़र्मानी करने लगते हैं तो उन पर बात साबित हो जाती है फिर हम उसे तहो-बाला कर देते हैं। (16) हमने नूह (عليه السلام) के बाद भी बहुत सी क़ौमें हलाक कर दीं। तेरा रब अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी ख़बरदार और ख़ूब देखने भालने वाला है।'' (17)

अल्लाह तआ़ला का हुक्म आने का मफ़्हूम (आयत 16, 17) : मशहूर क़िरअत तो (अमर्ना) है इस अम्र से मुराद तक़्दीरी अम्र है जैसे और आयत में है (أَتَىٰهَآ أَمْرُنَا) (10/यूनुस : 24) यानी वहाँ हमारा मुक़र्ररकर्दा अम्र (हुक्म) आ जाता है रात को या दिन को। याद रहे कि अल्लाह बुराइयों का हुक्म नहीं करता। मतलब यह है कि वह फ़ह्हशकारियों में मुब्तला हो जाते हैं और उस वजह से मुस्तहिक़े अ़ज़ाब हो जाते हैं। (तब्री : 17/403) यह भी मअ़नी किये गए हैं कि हम उन्हें अपनी इताअ़त के अहकाम करने को कहते हैं वह बुराइयों में लग जाते हैं फिर हमारा सज़ा का क़ौल उन पर रास्त आ जाता है जिनकी क़िरअत (अम्मर्ना) है वह कहते हैं मतलब यह है कि वहाँ के सरदार हम बदकारों को बना देते हैं वह वहाँ अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानियाँ करने लगते हैं यहाँ तक कि अ़ज़ाबे इलाही उन्हें उस बस्ती समेत तहस नहस कर देता है। जैसे फ़र्मान है (وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِى كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَٰبِرَ مُجْرِمِيهَا) (6/अन्आम : 123) हमने हर बस्ती में बड़े बड़े मुज्रिम रखे हैं। (तब्री : 17/404) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यानी हम उनके दुश्मन बढ़ा देते हैं वहाँ सरकशों की ज़्यादती कर देते हैं। (तब्री : 404) मुस्नद अहमद की एक हदीस में है ''बेहतर माल जानवर है

जो ज़्यादा बच्चे देने वाला हो या रास्ता है जो खजूर के दरख़्तों से पटा हुआ हो।'' (मुस्नद अहमद : 3/468; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अयास बिन ज़ुहैर मज्हूलुल हाल है।) कुछ कहते हैं यह तनासुब है जैसे कि आपका क़ौल गुनाह वालियाँ न कि अज्र पाने वालियाँ। (इब्ने माजा, किताबुल जनाइज़, बाब मा जाअ फ़ी इत्तिबाइन्निसाइल जनाइज़ : 1578; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस्माईल बिन सुलेमान बिन अबिल मुग़ीरा कूफ़ी ज़ईफ़ रावी है।)

अल्लाह तआला ख़ूब देखने वाला है : ऐ क़ुरैशियों! होश संभालो मेरे इस बुज़ुर्ग रसूल को झुठलाकर बेख़ौफ़ न हो जाओ, अपने से पहले नूह (عليه السلام) के बाद के लोगों को देखो कि रसूलों को झुठलाने ने उनका नामो-निशान मिटा दिया। इससे यह भी मालूम होता है कि नूह (عليه السلام) से पहले के हज़रत आदम (عليه السلام) तक के लोग दीने इस्लाम पर थे। पस तुम ऐ क़ुरैशियों! कुछ इनसे ज़्यादा साज़ो-सामान और गिनती और ताक़त वाले नहीं हो बावजूद इसके तुम अशरफ़ुर्रुसुल ख़ातिमुन्नबिय्यीन को झुठला रहे हो पस तुम अ़ज़ाबों और सज़ाओं के ज़्यादा लायक़ हो। अल्लाह तआला पर अपने किसी बन्दे का कोई अ़मल छुपा हुआ नहीं। ख़ैरो शर सब उस पर ज़ाहिर है खुला छुपा सब वह जानता है, हर अ़मल को ख़ुद देख रहा है।

***

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ
يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ
عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ
دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾

तर्जुमा : ''जिसका इरादा सिर्फ़ इस जल्दी वाली दुनिया का ही हुआ उसे हम यहाँ जिस क़द्र जिसके लिए चाहें सरेदस्त (हाथो हाथ) देते हैं बिल आख़िर उसके लिए हम जहन्नम मुक़र्रर कर देते हैं जहाँ वह बुरे हालों धुत्कारा हुआ दाख़िल होगा।(18) और जिसका इरादा आख़िरत का हो और जैसी कोशिश उसके लिए होनी चाहिए वह करता भी हो और हो भी वह ईमान वाला पस यही लोग हैं जिनकी कोशिश की अल्लाह तआला के यहाँ पूरी क़द्रदानी की जाएगी। (19) हर एक को हम बहम पहुँचाए जाते हैं उन्हें भी और इन्हें भी तेरे परवरदिगार के इन्आमात में से तेरे परवरदिगार की बख़्शिश रुकी हुई नहीं है। (20) देख ले कि इनमें एक को एक पर हमने किस तरह फ़ज़ीलत दे रखी है और आख़िरत तो दर्जों की तमीज़ में और भी बढ़कर है और फ़ज़ीलत के लिहाज़ से भी बहुत बड़ी है।'' (21)

तालिबे दुनिया का अंजाम (आयत 18-21) : कुछ ज़रूरी नहीं कि तालिबे दुनिया की हर हर चाहत पूरी ही हो जिसका जो इरादा अल्लाह तआला पूरा करना चाहे कर दे लेकिन हाँ! ऐसे लोग आख़िरत में ख़ाली हाथ रह जाएँगे। यह तो वहाँ जहन्नम के गढ़े में घिरे हुए होंगे। निहायत बुरे हालों ज़िल्लत ख़्वारी में होंगे क्योंकि यहाँ उन्होंने यही कहा था फ़ानी को बाक़ी पर दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दी थी इसलिए वहाँ रहमते इलाही से दूर हैं। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में घर न हो, यह उसका माल है जिसका आख़िरत में माल न हो, इसे तो वही जमा करता रहता है जिसके पास अपनी अक़्ल न हो।" (मुस्नद अहमद : 6/71; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; शुअबुल ईमान : 10638; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/288)

हाँ! जो तालिबे दीदारे आख़िरत हो जाए और सही तरीक़े से आख़िरत में काम आने वाली नेकियाँ मुताबिक़े सुन्नत करता रहे और उसके दिल में भी ईमान तस्दीक़ और यक़ीन हो अज़ाब सवाब के वादे सही जानता हो, अल्लाह तआला और रसूल को मानता हो उनकी कोशिश क़द्रदानी से देखी जाएगी, नेक बदला मिलेगा।

यानी इन दोनों क़िस्मों के लोगों को एक वह जिनका मतलब सिर्फ़ दुनिया है दूसरे वह जो तालिबे आख़िरत हैं। दोनों क़िस्म के लोगों को हम बढ़ाते रहते हैं जिसमें भी वह हैं यह तेरे रब की अता है। वह ऐसा मुतसर्रिफ़ और हाकिम है जो कभी ज़ुल्म नहीं करता। मुस्तहिक़े सआदत को सआदत और मुस्तहिक़े शक़ावत को शक़ावत दे देता है। उसके अहकाम कोई रद्द नहीं कर सकता, उसके रोकते हुए को कोई दे नहीं सकता। उसके इरादों को कोई टाल नहीं सकता। तेरे रब की नेअमतें आम हैं, न किसी के रोके से रुकें न किसी के हटाए से हटें। वह न कम होती हैं, न घटती हैं।

आख़िरत में लोगों के मुख़्तलिफ़ दरजात होंगे : देख लो कि हमने दुनिया में इंसानों के कई दर्जे रखे हैं। उनमें अमीर भी हैं फ़क़ीर भी हैं, दरम्याना हालत में भी हैं, अच्छे भी हैं, बुरे भी हैं और दरम्याने दर्जे के भी। कोई बचपन में मरता है कोई बड़ा बूढ़ा होकर कोई उसके बीच। आख़िरत दर्जों के एतिबार से दुनिया से भी बढ़ी हुई है। कुछ तो जहन्नम के गढ़ों में होंगे, तौक़ व ज़ंजीर पहने हुए कोई जन्नत के दर्जों में होंगे, बुलंद व बाला। बालाख़ानों में नेअमत व राहत सुरूर व ख़ुशी में। फिर ख़ुद जन्नतियों में भी दर्जों का तफ़ावुत होगा, एक एक दर्जे में ज़मीनो आसमान का सा फ़र्क़ होगा। जन्नत में ऐसे एक सौ दर्जे हैं। बुलंद दर्जों वाले इल्लिय्यीन को इस तरह देखेंगे जैसे तुम किसी चमकते हुए सितारे को आसमान की ऊँचाई पर देखते हो।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति व अन्नहा मख़्लूक़ा : 3656; सहीह मुस्लिम : 2831) पस आख़िरत दर्जों और फ़ज़ीलतों के ऐतिबार से बहुत बड़ी है। तब्रानी में है "जो बन्दा दुनिया में जो दर्जा बढ़ाना चाहेगा और अपनी चाहत में कामयाब हो जाएगा वह आख़िरत का दर्जा घटा देगा और अपनी चाहत में कामयाब हो जाएगा वह आख़िरत का दर्जा घटा देगा जो इससे बहुत बड़ा है।" फिर आपने यही आयत पढ़ी। (तब्रानी : 6101; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; अब्दुल ग़फ़ूर बिन सईद मतरूक रावी है, हिल्यतुल औलिया : 4/204)

***

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ
اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ
اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ
وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : "अल्लाह के साथ किसी और को मअ़बूद न ठहरा कि आख़िरकार तू बुरे हालों बेकस होकर बैठ जाए। (22) तेरा परवरदिगार साफ़ साफ़ हुक्म दे चुका है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करना और माँ बाप के साथ सुलूक व एहसान करना अगर तेरी मौजूदगी में उनमें से एक या यह दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उनके आगे उफ़ तक न कहना, न उन्हें डाँट डपट करना बल्कि उनके साथ अदबो-एहतिराम से बातचीत करना। (23) और आजिज़ी और मुहब्बत के साथ उनके सामने तवाज़ोअ़ का बाज़ू पस्त रखे रहना और दुआ करते रहना कि ऐ मेरे परवरदिगार! इन पर वैसा ही रहम कर जैसा इन्होंने मेरे बचपन में मेरी परवरिश की है।" (24)

अल्लाह तआ़ला वहदहू ला शरीक लहू है (आयत 22-24) : यह ख़िताब हर एक मुकल्लफ़ से है आपकी तमाम उम्मत को हक़ तबारक व तआ़ला फ़र्माता है कि अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करो, अगर ऐसा करोगे तो ज़लील हो जाओगे अल्लाह की मदद हट जाएगी जिसकी इबादत करोगे उसी के सुपुर्द कर दिए जाओगे और यह ज़ाहिर है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई नफ़ा व नुक़्सान का मालिक नहीं, वह वहदुहू ला शरीका लहू है। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जिसे फ़ाक़ा पहुँचे और लोगों से उसे बंद कराना चाहे उसका फ़ाक़ा बंद न होगा और जो अल्लाह तआ़ला से उसकी बाबत दुआ करे अल्लाह उसके पास तवंगरी (मालदारी) भेज देगा या तो जल्दी या देर से। (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़िल इस्तिअफ़ाफ़ : 1645; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2326; अहमद : 1/407; मुस्नदे अबी यअ़ला : 5318; हाकिम : 2/408)

वालिदैन का मक़ाम और उनके साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म : यहाँ क़ज़ा मअ़नी में हुक्म फ़र्माने के हैं। ताकीदी हुक्मे इलाही जो कभी टलने वाला नहीं यही है कि इबादत अल्लाह ही की हो और वालिदैन की इताअ़त में बाल बराबर भी फ़र्क़ न आए। उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) और मस्ऊद (रज़ि.) और ज़ह्हाक (रह.) की क़िरअत में क़ज़ा के बदले वस्सा है। (तबरी : 17/413) यह दोनों हुक्म एक साथ जैसे यहाँ हैं ऐसे ही और भी बहुत सी आयतों में हैं जैसे फ़र्मान है (اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ) (31/लुक़्मान : 14) मेरा शुक्र कर और अपने माँ बाप का भी एहसानमंद रह। ख़ुसूसन उनके बुढ़ापे के ज़माने में उनका पूरा अदब करना कोई बात

ज़ुबान से न निकालना यहाँ तक कि उनके सामने उफ़ भी न कहना, न कोई ऐसा काम करना जो उन्हें बुरा मालूम हो, अपना हाथ उनकी तरफ़ बेअदबी से न बढ़ाना, बल्कि अदब इज़्ज़त और एहतिराम के साथ उनसे बातचीत करना, नर्मी और तहज़ीब से बातचीत करना उनकी रज़ामंदी के काम करना, दुख न देना, सताना नहीं उनके सामने तवाज़ोअ व आजिज़ी फ़रोतनी और ख़ाकसारी से रहना उनके लिए उनके बुढ़ापे में उनके इंतिक़ाल के बाद दुआएँ करते रहना, ख़ुसूसन यह दुआ कि ऐ अल्लाह' इन पर रहम कर जैसे रहम से इन्होंने मेरे बचपन के ज़माने में मेरी परवरिश की। हाँ! ईमानदारों को काफ़िरों के लिए दुआ की मनाही है, भले वह माँ बाप ही क्यूँ न हों। (तब्री : 17/321) माँ बाप से सुलूक व एहसान के अहकाम की हदीसें बहुत सी हैं। एक रिवायत में है कि आपने मिम्बर पर चढ़ते हुए तीन बार आमीन कही। जब आपसे वजह पूछी गई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मेरे पास जिब्रईल (عليه السلام) आए और कहा, ऐ नबी! उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिसके पास तेरा ज़िक्र हो और उसने तुझ पर दुरूद न पढ़ी हो, कहिए, आमीन! चुनाँचे मैंने आमीन कही। फिर फ़र्माया, उस शख़्स की नाक भी अल्लाह तआला ख़ाक आलूद करे जिसकी ज़िन्दगी में माहे रमज़ान आया और चला भी गया और उस शख़्स की बख़्शिश न हुई, आमीन कहिए! चुनाचे मैंने उस पर भी आमीन कही। फिर फ़र्माया, अल्लाह तआला उसे भी बर्बाद करे जिसने अपने माँ बाप को या उनमें एक को पा लिया और फिर भी उनकी ख़िदमत करके जन्नत में न पहुँच सका, कहिए आमीन! मैंने कहा आमीन।'' (मज्मउज़्ज़वाइद : 10/166; अन अनस (रज़ि.); तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब रग़िमा अन्फ़ु रजुलिन ज़ुकिरत इन्दहू... : 3545; व सनदुहू हसन अल्अदबुल मुफ़रद : 646; इब्ने हिब्बान : 907; अन अबी हुरैरा (रज़ि.)) मुस्नद अहमद की हदीस में है ''जिसने किसी मुसलमान माँ बाप के यतीम बच्चे को पाला और खिलाया पिलाया यहाँ तक कि वह बेनियाज़ हो गया उसके लिए यक़ीनन जन्नत वाजिब है और जिसने किसी मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद किया, अल्लाह उसे जहन्नम से आज़ाद कर देगा उसके एक एक हिस्से के बदले उसका एक एक हिस्सा जहन्नम से आज़ाद होगा।'' (अहमद : 5/29; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अली बिन ज़ेद ज़ईफ़ रावी है।) इस हदीस की एक सनद में है ''जिसने अपने माँ बाप को या दोनों में से किसी एक को पा लिया फिर भी दोज़ख़ में गया अल्लाह तआला उसे अपनी रहमत से दूर करे।'' (अहमद : 4/344; व सनदुहू सहीहुन)

मुस्नद अहमद की एक रिवायत में यह तीनों चीज़ें एक साथ बयान हुई हैं यानी आज़ाद की गई गर्दन ख़िदमते वालिदेन और परवरिशे यतीम। (मुस्नदे अहमद : 4/344; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/139) एक रिवायत में माँ बाप की निस्बत यह भी है कि अल्लाह तआला उसे दूर करे और उसे बर्बाद करे......) (मुस्नद अहमद : 4/344; व सनदुहू सहीहुन) एक रिवायत में तीन मर्तबा उसके लिए यह बद्दुआ है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब रग़िमा मन अदरका अबवैहि औ अहदहुमा... : 2551; अहमद : 2/346) एक रिवायत में हुज़ूर (ﷺ) का नाम सुनकर दुरूद न पढ़ने वाले और माहे रमज़ान में बख़्शिशे इलाही से महरूम रह जाने वाले और माँ बाप की ख़िदमत और रज़ामंदी से जन्नत में न पहुँचने वाले के लिए ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) का यह बद्दुआ करना मंक़ूल है। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब रग़िमा अन्फ़ु रजुलिन ज़ुकिरत इन्दहू.... : 3545; व सनदुहू हसन; अहमद : 2/254; इब्ने हिब्बान : 908) एक अंसारी

ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया कि मेरे माँ बाप के इंतिक़ाल के बाद भी उनके साथ मैं कोई सुलूक कर सकता हूँ? आपने फ़र्माया, ''हाँ! चार सुलूक उनके जनाज़े की नमाज़, उनके लिए दुआए इस्तिग़फ़ार, उनके वादों को पूरा करना, उनके दोस्तों की इज़्ज़त करना और वह सिलारहमी जो सिर्फ़ उनकी वजह से हो यह है वह सुलूक जो उनकी मौत के बाद भी तू उनके साथ कर सकता है।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी बिर्रि वालिदेन : 5142; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 3664; अहमद : 3/498)

वालिदा का हक़ : एक शख़्स ने आकर हुज़ूर (ﷺ) से कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं जिहाद के इरादे से आपकी ख़िदमत में ख़ुशख़बरी लेकर आया हूँ। आपने फ़र्माया, ''तेरी माँ है?'' उसने कहा, हाँ! फ़र्माया, जा! उसी की ख़िदमत में लगा रह, जन्नत उसके पैरों के पास है।'' दो बार तीन बार उसने मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर अपनी यही बात दोहरायी और यही जवाब हुज़ूर (ﷺ) ने भी दोहराया। (नसाई, किताबुल जिहाद, बाब अर्रुख़्सतु फ़ित्तख़ल्लुफ़ लिमल्लहू वालिदा : 3106; इब्ने माजा : 2781; अहमद : 3/429; शैख़ अल्बानी (रह.) ने इसे सहीहुल इस्नाद कहा है। देखिए (अल्इरवाउ तहत, रक़म : 1199) इसकी सनद सही है।) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारे बापों की निस्बत वसिय्यत करता है अल्लाह तआला तुम्हारी माओं की निस्बत वसिय्यत करता है पिछले जुम्ले को तीन बार बयान करके फ़र्माया अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारे क़राबतमंदों की बाबत वसिय्यत करता है सबसे ज़्यादा नज़दीक वाला फिर उसके पास वाला।'' (इब्ने माजा, किताबुल अदब, बाब बिर्रुल वालिदेन : 3661; वहुव हसन; अहमद : 4/132) फ़र्माते हैं ''देने वाले का हाथ ऊँचा है। अपनी माँ से सुलूक कर और अपने बाप से और बहन से और अपने भाई से फिर जो उसके बाद क़रीब हो उसी तरह दर्जा ब दर्जा।'' (अहमद : 4/64; व सनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/98) बज़्ज़ार की मुस्नद में ज़ईफ़ सनद मरवी है कि एक साहब अपनी माँ को उठाये हुए तवाफ़ कर रहे थे, हुज़ूर (ﷺ) से पूछने लगे कि अब तो मैंने अपनी वालिदा का हक़ अदा कर दिया? आपने फ़माया, ''एक शिमा भी नहीं।'' (अल्मुअजमुस्सग़ीर : 1/92, 93; अल्बज़्ज़ार : 1872 व सनदुहू ज़ईफ़ुन) वल्लाहु आलम!

***

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा रब बख़ूबी जानता है अगर तुम नेक हो तो वह तो रुजूअ करने वालों को बख़्शने वाला है।'' (25)

तौबा करने वालों के लिए हुक्मे इलाही (आयत 25) : इससे मुराद वह लोग हैं जिनसे जल्दी में अपने माँ बाप के साथ कोई ऐसी बात हो जाती है जिसे वह अपने नज़दीक ऐब की और गुनाह की बात नहीं समझते चूँकि उनकी निय्यत अच्छी होती है इसलिए अल्लाह तआला उन पर रहमत करता है जो माँ बाप का फ़र्मांबरदार और नमाज़ी हो उसकी ख़ताएँ अल्लाह तआला के यहाँ माफ़ हैं। (तब्री : 17/422) कहते हैं कि

(अव्वाबीना) वह लोग हैं जो मग़रिब और इशा के बीच नवाफ़िल पढ़ें। कुछ कहते हैं जो ज़ुहा की नमाज़ अदा करते रहें जो हर गुनाह के बाद तौबा कर लिया करें जो जल्दी से भलाई की तरफ़ लौट आया करें। (तब्री : 17/423) तंहाई में अपने गुनाहों को याद करके ख़ुलूसे दिल से तौबा कर लिया करें। (तब्री : 17/424) उबेदा (रह.) कहते हैं जो बराबर हर मज्लिस से उठते हुए यह दुआ पढ़ लिया करें (अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली मा असब्तु फ़ी मज्लिसी हाज़ा) इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं, पहला क़ौल यह है कि जो गुनाह से तौबा कर लिया करें मअ़सियत से ताअ़त की तरफ़ आ जाया करें अल्लाह तआला की नापसंदी के कामों को छोड़ करके उसकी रज़ामंदी और पसंदीदगी के काम करने लगें। (तब्री : 17/425) यही क़ौल बहुत ठीक है क्योंकि अव्वाब मुश्तक़ है औब से और इसके मअ़नी रुजूअ़ करने के हैं। जैसे अ़रब कहते हैं (अबा फ़ुलानुन) और जैसे क़ुरआन में है (إِنَّ إِلَيْنَآ إِيَابَهُمْ) (88/ग़ाशिया : 25) उसका लौटना हमारी ही तरफ़ है। सहीह हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) जब सफ़र से लौटते तो फ़र्माते (आइबूना ताइबूना आबिदूना लि रब्बिना हामिदून) लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादतें करने वाले, अपने रब की ही तअ़रीफ़ें करने वाले। (सहीह बुख़ारी, किताबुल उ़म्रह, बाब मा यक़ूलु इज़ा रजअ़ मिनल हज्जि अविल उ़म्रति अविल ग़ज़्वति : 1797; सहीह मुस्लिम : 1344; अबूदाऊद : 2770; अहमद : 2/63; इब्ने हिब्बान : 2707)

***

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : "रिश्तेदारों का और मिस्कीनों का और मुसाफ़िरों का हक़ अदा करते रहो और इसराफ़ और बेजा ख़र्च से बचो। (26) बेजा ख़र्च करने वाले शैतानों के भाई हैं। और शैतान अपने परवरदिगार का बड़ा ही नाशुक्रा है। (27) और अगर तुझे इनसे मुँह फेर लेना पड़े अपने रब की उस रहमत की जुस्तजू में जिसकी तू उम्मीद रखता है तो भी तुझे चाहिए कि उम्दगी और नर्मी से इन्हें समझा दे।" (28)

सिलारहमी का हुक्म (आयत 26-28) : माँ बाप के साथ सुलूक व एहसान का हुक्म देने के बाद अब क़रीबी रिश्तेदारों के साथ सिला रहमी का हुक्म देता है। हदीस में है "अपनी माँ से सुलूक कर और अपने बाप से फिर जो ज़्यादा क़रीब हो और फिर जो ज़्यादा क़रीब हो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर वस्सिला, बाब बिर्रुल वालिदैनि व अय्युहुमा अहक़्क़ु बिही : 2548) और हदीस में है "जो अपने रिज़्क़ की और अपनी उम्र

की तरक़्क़ी चाहता हो उसे सिलारहमी करनी चाहिए।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मय्युंब्सितु लहू फ़िर्रिज़्कि लि सिलतिर्रहिम : 5986; सहीह मुस्लिम : 2557; अहमद : 3/229; इब्ने हिब्बान : 438) बज़्ज़ार में है इस आयत के उतरते ही रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाकर फ़िदक अता फ़र्माया। (मुस्नदे अबी यअला : 1075; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/52; इसकी सनद में अतिया औफ़ी मजरूह रावी है। (अत्तक़रीब : 2/24; रक़म : 216) इस हदीस की सनद सही नहीं और वाक़िया भी कुछ ठीक नहीं मालूम होता इसलिए कि यह आयत मक्की है और उस वक़्त तक बाग़े फ़िदक हुज़ूर (स.) के क़ब्ज़े में न था। 7 हिज्री में ख़ैबर फ़तह हुआ। तब बाग़े फ़िदक आपके क़ब्ज़े में आया। पस यह क़िस्सा बंद नहीं बैठता। मसाकीन और मुसाफ़िरीन की पूरी तफ़्सीर सूरह तौबा में गुज़र चुकी है यहाँ दोहराने की कतई ज़रूरत नहीं।

इसराफ़ और फ़िज़ूलख़र्ची से बचने का हुक्म : ख़र्च का हुक्म करके फिर इसराफ़ से मना फ़र्माता है। न तो इंसान को कंजूस होना चाहिए न मुस्रिफ़ (फ़िज़ूल ख़र्ची करने वाला) बल्कि एतिदाल इख़्तियार करे जैसे और आयत में है (وَ الَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَ لَمْ يَقْتُرُوْا) (25/फ़ुरक़ान : 67) यानी ईमान वाले अपने ख़र्च में न तो हद से गुज़रते हैं न बिलकुल हाथ रोक लेते हैं। फिर इसराफ़ की बुराइयाँ बयान करता है कि ऐसे लोग शैतान जैसे हैं। तब्ज़ीर कहते हैं ग़ैर हक़ में ख़र्च करने को। (तब्री : 17/428; हाकिम : 2/361; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) अपना कुल माल भी अगर अल्लाह की राह में दे दे तो यह तब्ज़ीर व इसराफ़ नहीं और ग़ैर हक़ में थोड़ा सा भी दे तो मुबज़्ज़िर है। (तब्री : 17/429) बनू तमीम के एक शख़्स ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं मालदार आदमी हूँ और अहलो अयाल कुंबे क़बीले वाला हूँ तो मुझे बतलाइए कि मैं क्या तरीका इख़्तियार करूँ? आपने फ़र्माया, ''अपने माल की ज़कात अलग कर उससे तू पाक साफ़ हो जाएगा। अपने रिश्तेदारों से सुलूक कर, मांगने वाले का हक़ पहचानता रह और पड़ौसी और मिस्कीन का भी।'' उसने कहा हुज़ूर (ﷺ)! और थोड़े अल्फ़ाज़ में पूरी बात समझा दीजिए। आपने फ़र्माया, ''क़राबतदारों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों का हक़ अदा कर और बेजा ख़र्च न कर।'' उसने कहा (हस्बियल्लाहु) अच्छा हुज़ूर (ﷺ)! जब मैं आपके क़ासिद को ज़कात अदा करूँ तो अल्लाह तआला व रसूल (ﷺ) के नज़दीक मैं बरी हो गया? आपने फ़र्माया, हाँ! जब तूने मेरे क़ासिद को दे दिया तो तू बरी हो गया और तेरे लिए अज्र साबित हो गया? अब जो इसे बदल डाले उसका गुनाह उसके ज़िम्मे है।'' (अहमद : 3/136; व सनदुहू ज़ई फ़ुन लि इंक़िताइही अल्मुअजमुल औसत : 8797) यहाँ फ़र्मान है कि इसराफ़ और बेवक़ूफ़ी और अल्लाह की इताअत के छोड़ देने और नाफ़र्मानी के इर्तिकाब की वजह से मुस्रिफ़ लोग शैतान के भाई बन जाते हैं , शैतान में यह बुरी ख़स्लत है कि वह रब की नेअमतों का नाशुक्रा, उसकी इताअत छोड़ने वाला, उसकी नाफ़र्मानी और मुख़ालिफ़त का आमिल है। फिर फ़र्माता है कि इन क़राबतदारों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों में से कोई कभी तुझसे कुछ सवाल कर बैठे और उस वक़्त तेरे हाथ तले कुछ न हो और इस वजह से तुझे उनसे मुँह फेरना पड़े तो भी जवाब नर्मी से दे कि भाई! जब अल्लाह हमें देगा, इंशाअल्लाह! हम आपके हक़ न भूलेंगे, वग़ैरह। (तब्री : 17/431)

***

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : ''अपना हाथ गर्दन से बँधा हुआ न रख और न उसे बिलकुल ही खोल दिया कर कि फिर मलामत किया हुआ और पछताता हुआ बैठ जाए। (29) यक़ीनन तेरा रब जिसके लिए चाहे रोज़ी कुशादा कर देता है और तंग भी। यक़ीनन वो अपने बन्दों से बाख़बर और ख़ूब देखने वाला है।'' (30)

ख़र्च करने में दरम्यानी राह इख़्तियार की जाए (आयत 29, 30) : हुक्म हो रहा है कि अपनी ज़िन्दगी में अपनी म्याना रविश रखो। न कंजूस बनो, न मुस्रिफ़, हाथ गर्दन से न बाँध लो यानी कंजूसी न करो कि किसी को न दो। यहूदियों ने भी इसी मुहावरे को इस्तेमाल किया है और कहा है कि अल्लाह तआला के हाथ बँधे हुए हैं। उन पर अल्लाह तआला की लअनतें नाज़िल हों कि यह अल्लाह तआला को बख़ीली की तरफ़ मंसूब करते थे जिससे अल्लाह तआला करीम व वह्हाब पाक और बहुत दूर है। पस बुख़्ल से मना करके फिर इसराफ़ से रोकता है कि इतना सख़ी न बन जाओ कि अपनी ताक़त से ज़्यादा दे डालो। फिर इन दोनों हुक्मों का सबब बयान फ़र्माता है कि बख़ीली से तो मलामती बन जाओगे हर एक की उँगली उठेगी कि यह बड़ा कंजूस है हर एक दूर हो जाएगा कि यह सिर्फ़ बेफ़ेज़ आदमी है। जैसे ज़ुहैर ने अपने मुअल्लक़ा में कहा है वमन काना ज़ा मालिव्वं यब्ख़लु बिमालिही अला क़ौमिही युस्तग़ना अन्हू व युज़म्ममु यानी जो मालदार होकर बख़ीली करे लोग उससे बेनियाज़ होकर उसकी बुराई करते हैं। पस कंजूसी की वजह से इंसान बुरा बन जाता है और लोगों की नज़रों से गिर जाता है हर एक उसे मलामत करने लगता है और जो हद से ज़्यादा ख़र्च कर गुज़रता है वह थककर बैठ जाता है उसके हाथ में नहीं रहता, कमज़ोर और मजबूर हो जाता है जैसे कोई जानवर जो चलते चलते थक जाए और रास्ते में अड़ जाए। (हसीरुन) सूरह मुल्क में आया है पस यह बतौरे लिफ़ और नश्र के है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि ''कंजूस और सख़ी की मिसाल उन दो शख़्सों जैसी है जिन पर दो लोहे के जुब्बे हों, सीने से गले तक। सख़ी तो ज्यों ज्यों ख़र्च करता है उसकी कड़ियाँ ढीली होती जाती हैं और उसके हाथ खुलते जाते हैं और वह जुब्बा बढ़ जाता है यहाँ तक कि उसकी पोरियों तक पहुँच जाता है और उसके असर को मिटाता है और कंजूस जब कभी ख़र्च का इरादा करता है तो उसके जुब्बे की कड़ियाँ और सिमट जाती हैं वह हर पल उसे वसीअ करना चाहता है लेकिन उसमें कोई गुंजाइश नहीं निकलती।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब मिस्लुल बख़ीलिल मुतसद्दिक़ : 1443; सहीह मुस्लिम : 1021) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया ''इधर उधर अल्लाह तआला की हर राह में ख़र्च करती रह जमा न रखा कर, वरना अल्लाह तआला भी रोक लेगा। गाँठ बाँधकर रोक न लिया कर, वरना फिर अल्लाह तआला भी सर बंद कर लेगा। एक और रिवायत में है ''गिनती करके न रखा कर, वरना अल्लाह तआला भी गिनती करके रोक लेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब हिबतुल मर्अति लि ग़ैरि ज़ौजिहा :

2589; सहीह मुस्लिम : 1029; अहमद : 6/345; इब्ने हिब्बान :3209) सहीह मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से फ़र्माया कि "तू राहे अल्लाह में ख़र्च किया कर, अल्लाह तआला तुझे देता रहेगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब अल्हस्स अलन्नफ़क़ति व तब्शीरिल मुंफ़िक़ बिल ख़ल्फ़ : 993) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "हर सुबह दो फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं एक दुआ करता है कि ऐ अल्लाह! सख़ी को बदला दे और दूसरा दुआ करता है कि बख़ील का माल तल्फ़ कर।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (फ़अम्मा मन अअ़ता वत्तक़ा...) : 1442; सहीह मुस्लिम : 1010) मुस्लिम में है "सदक़े ख़ैरात से किसी का माल नहीं घटता और हर सख़ावत करने वाले को अल्लाह तआला इज़्ज़तदार कर देता है और जो शख़्स अल्लाह के हुक्म की वजह से दूसरों से आजिज़ाना बर्ताव करे अल्लाह उसे बुलंद दर्जे का कर देता है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब इस्तिहबाबुल अफ़्व वत्तवाज़ोअ : 2588; तिर्मिज़ी : 2029; अहमद : 2/235; इब्ने हिब्बान : 3248)

तमअ (लालच) से बचो : एक और हदीस में है "तमअ से बचो इसी ने तुमसे पहले लोगों को हलाक किया है, तमअ का पहला हुक्म यह होता है कि बख़ीली करो, उन्होंने बख़ीली (कंजूसी) की फिर उसने उन्हें सिलारहमी तोड़ने को कहा, उन्होंने वह भी किया, फिर फ़िस्क़ो फ़िजूर का हुक्म दिया, यह उस पर भी कारबंद हुए।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़िश्शुह्हि : 1698; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 2/159; हाकिम : 1/11; इब्ने हिब्बान : 5176; बैहक़ी : 10/243) बैहक़ी में है कि "जब इंसान ख़ैरात करता है सत्तर (70) शैतानों के जबड़े टूट जाते हैं।" (अहमद : 5/350; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्अअमश मुदल्लस व अन्अन; बैहक़ी : 4/187; हाकिम : 1/417) मुस्नद की हदीस में है "दरम्याना ख़र्च रखने वाला कभी फ़क़ीर नहीं होता।" (अहमद : 1/447; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; तब्रानी : 10118; शुअबुल ईमान : 6559; इसकी सनद में इब्राहीम बिन मुस्लिम हिज्री ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 1/65; रक़म : 216)

ग़रीबी और अमीरी अल्लाह तआला के हाथ में है : फिर फ़र्माता है कि रिज़्क़ देने वाला कुशादगी करने वाला तंगी में डालने वाला अपनी मख़्लूक़ में अपनी हस्बे मंशा हेर फेर करने वाला जिसे चाहे ग़नी और जिसे चाहे फ़क़ीर करने वाला अल्लाह ही है। हर बात में उसकी हिक्मत है, वही अपनी हिक्मतों का अलीम है। वह ख़ूब जानता है और देखता है कि मुस्तहिक़े इमारत (कुर्सी) कौन है और मुस्तहिक़े फ़क़ीरी कौन है। हदीसे क़ुदसी में है "मेरे कुछ बन्दे वह हैं कि फ़क़ीरी ही के क़ाबिल हैं अगर मैं उन्हें अमीर बना दूँ तो उनका दीन तबाह हो जाए और मेरे कुछ बन्दे ऐसे भी हैं जो अमीरी के लायक़ हैं अगर मैं उन्हें फ़क़ीर बना दूं तो उनका दीन बिगड़ जाए।" (मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/270; हैसमी (रह.) कहते हैं इसकी सनद में एक जमाअत मज्हूल रावियों की है।) हाँ! यह याद रहे कि कुछ लोगों के हक़ में अमीरी अल्लाह तआला की तरफ़ से ढील के तौर पर होती है और कुछ के लिए फ़क़ीरी अज़ाब के तौर पर होती है। अल्लाह तआला हमें इन दोनों से बचाए, आमीन तक़ब्बल या रब्बल आलमीन!

***

وَلَا تَقْتُلُوٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً

كَبِيْرًا ۝۳۱ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝۳۲

तर्जुमा : "मुफ़्लिसी के डर से अपनी औलादों को क़त्ल न करो, उनको और तुमको हम ही रोज़ियाँ देते हैं। यक़ीनन उनका क़त्ल करना बड़ा गुनाह है। (31) ख़बरदार! ज़िना (बदकारी) के क़रीब भी न फटकना क्योंकि वह बड़ी बेहयाई है और बहुत ही बुरा रास्ता है।" (32)

लोगों तुम्हारा और तुम्हारी औलाद को रोज़ी देने वाला अल्लाह है (आयत 31,32) : देखो अल्लाह तआला अपने बन्दों पर बनिस्बत उनके माँ बापों के भी ज़्यादा मेहरबान है। एक तरफ़ माँ बाप को हुक्म देता है कि अपना माल अपने बच्चों को बतौर वर्से के दो। और दूसरी जानिब फ़र्माता है कि इन्हें मार न डालो। जाहिलियत में लोग न तो लड़कियों को वर्सा देते थे न उनका ज़िन्दा रखना पसंद करते थे बल्कि (दुख़्तर कशी) बेटियों को मारना उनकी क़ौम का एक आम रिवाज था। क़ुरआन उस बुरे रिवाज की तर्दीद करता है कि यह ख़याल किस क़द्र घटिया है कि उन्हें खिलाएँगे कहाँ से? किसी की रोज़ी किसी के ज़िम्मे नहीं, सबको रोज़ी देने वाला अल्लाह तआला ही है। सूरह अन्आम में फ़र्माया (وَ لَا تَقْتُلُوٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ) (6/अन्आम : 151) फ़क़ीरी और तंगदस्ती के डर से अपनी औलादों की जान न लिया करो। तुम्हें और उन्हें रोज़ियाँ देने वाले हम हैं उनका क़त्ल जुर्मे अज़ीम और गुनाहे कबीरा है। ख़िता की दूसरी क़िरअत ख़ता है दोनों के मअनी एक ही हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह क्या है? आपने फ़र्माया, यह कि "तू किसी को अल्लाह का शरीक ठहराए हालाँकि उसी अकेले ने तुझे पैदा किया है" मैंने पूछा, उसके बाद? फ़र्माया, यह कि "तू अपनी औलाद को इस डर से क़त्ल कर दे कि वह तेरे साथ खाएँगे।" मैंने कहा, उसके बाद फ़र्माया यह कि "तू अपनी पड़ोसन से ज़िनाकारी करे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (फ़ला तज्अलू लिल्लाहि अंदादा) : 7520; सहीह मुस्लिम : 86; अहमद : 1/434; तिर्मिज़ी : 3183; इब्ने हिब्बान : 4414)

ज़िना (बदकारी) कबीरा गुनाह है : ज़िनाकारी और उसके पास की तमाम स्याहकारियों से क़ुरआन रोक रहा है। ज़िना को शरीअत ने कबीरा और बहुत सख़्त गुनाह कहा है। वह बदतरीन तरीक़ा और निहायत बुरी राह है। मुस्नद अहमद में है कि एक नौजवान ने ज़िनाकारी की इजाज़त आपसे चाही। लोग उस पर झुक पड़े कि चुप रह क्या कह रहा है क्या कर रहा है। आपने उसे अपने क़रीब बुलाकर फ़र्माया, "बैठ जाओ।" जब वह बैठ गया तो आपने फ़र्माया, "क्या तू उस काम को अपनी माँ के लिए पसंद करता है?" उसने कहा, नहीं! अल्लाह तआला की क़सम! या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे आप पर अल्लाह फ़िदा करे हर्गिज़ नहीं। आपने फ़र्माया, "फिर सोच ले कि कोई और कैसे पसंद करेगा?" आपने फ़र्माया, "अच्छा तू इसे अपनी बेटी के लिए पसंद करता है?" उसने इसी तरह ताकीद से इंकार किया। आपने फ़र्माया, "ठीक इसी तरह कोई भी इसे अपनी

बेटियों के लिए पसंद नहीं करता, अच्छा! अपनी बहन के लिए इसे तू पसंद करता है?'' उसने इसी तरह इंकार किया। आपने फ़र्माया, ''इसी तरह दूसरे भी अपनी बहनों के लिए इसे मकरूह समझते हैं। बता क्या तू चाहेगा कि कोई तेरी फूफी से ऐसा करे? उसने उसी सख़्ती से मना किया। आपने फ़र्माया, ''इसी तरह कोई और भी इसे अपनी फूफी के लिए न चाहेगा। अच्छा अपनी ख़ाला के लिए?'' उसने कहा, हर्गिज़ नहीं! फ़र्माया ''इसी तरह और सब लोग भी।'' फिर आपने अपना हाथ उसके सर पर रखकर दुआ की कि ''ऐ अल्लाह! इसके गुनाह बख़्श, इसके दिल को पाक कर, इसे अस्मत वाला बना।'' फिर तो यह हालत थी कि यह नौजवान किसी की तरफ़ नज़र भी न उठाता था। (अहमद : 5/256; वसनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/129) इब्ने अबिदुनिया में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''शिर्क के बाद कोई गुनाह ज़िनाकारी से बढ़कर नहीं कि आदमी अपना नुत्फ़ा किसी ऐसे रह्म में डाले जो उसके लिए हलाल नहीं।'' (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।)

***

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿٣٣﴾

तर्जुमा : ''और किसी जान का जिसका मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है हर्गिज़ नाहक़ न क़त्ल करो। और जो शख़्स मज़्लूम होने की सूरत में मार डाला जाए हम ने उसके वारिसों को ताक़त दे रखी है पस उसे चाहिए कि मार डालने में ज़्यादती न करे, बेशक वह मदद किया गया है।'' (33)

नाहक़ क़त्ल हराम है (आयत 33) : बग़ैर हक़्क़े शरई के किसी को क़त्ल करना हराम है। बुख़ारी व मुस्लिम में है ''जो मुसलमान अल्लाह तआला के वाहिद होने की और मुहम्मद (ﷺ) के रसूल होने की गवाही देता हो उसका क़त्ल तीन बातों में से एक के सिवा हलाल नहीं, या तो उसने किसी को क़त्ल किया हो या शादीशुदा हो और फिर ज़िना किया हो या दीन को छोड़कर जमाअत को छोड़ दिया हो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दियात, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (अन्नफ़्सा बिन्नफ़्सि वल ऐना बिल ऐनि) : 6878; सहीह मुस्लिम : 1676) सुनन में है ''सारी दुनिया का फ़ना हो जाना अल्लाह के नज़दीक एक मोमिन के क़त्ल से ज़्यादा आसान है। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दियात, बाब मा जाअ फ़ी तशदीदि क़त्लिल मोमिन : 1395; वहुव हसन; नसाई : 3992; इब्ने माजा : 2619) अगर कोई शख़्स नाहक़ दूसरे के हाथों क़त्ल किया गया है तो उसके वारिसों को अल्लाह तआला ने क़ातिल पर ग़ालिब कर दिया है उसे क़िसास लेने और बिलकुल माफ़ कर देने में से एक का इख़्तियार है।

क़ातिलीने उस्मान (रज़ि.) का मामला : एक अजीब बात यह है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इस आयत के उमूम से हज़रत मुआविया (रज़ि.) की सल्तनत पर इस्तिदलाल किया है कि वह बादशाह बन जाएँगे

इसलिए कि हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के वली आप ही थे और हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) इंतिहाई मज़्लूमी के साथ शहीद किये गए थे। हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) क़ातिलाने उ़स्मान को हज़रत अ़ली (रज़ि.) से तलब करते थे कि उनसे क़िसास़ (बदला) लें इसलिए कि यह भी उमवी थे और हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) भी उमवी थे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) इसमें ज़रा ढील कर रहे थे। इधर हज़रत अ़ली (रज़ि.) का मुतालबा हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) से यह था कि मुल्के शाम उनके सुपुर्द कर दें। हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) फ़र्माते थे उस वक़्त तक जब तक कि आप क़ातिलाने उ़स्मान मेरे सुपुर्द न कर दें, मैं मुल्के शम को आपकी ज़ेरे हुकूमत न करूँगा। चुनाँचे आपने तमाम अहले शाम के साथ हज़रत अ़ली (रज़ि.) की बेअ़त से इंकार कर दिया। इस झगड़े ने तूल पकड़ा और हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) शाम के हुक्मरान बन गए। मुअ़जम तबरानी में यह रिवायत है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने रात की बातचीत में एक बार फ़र्माया कि आज मैं तुम्हें एक बात सुनाता हूँ न तो वह ऐसी पोशीदा है न ऐसी ऐलानिया। हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के साथ जो कुछ किया गया उस वक़्त मैंने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को मश्वरा दिया कि आप यक्सूई इख़्तियार कर लें, वल्लाह! अगर आप किसी पत्थर में भी छुपे हुए होंगे तो निकाल लिए जाएँगे लेकिन उन्होंने मेरी न मानी अब एक और सुनो! अल्लाह तआ़ला की क़सम! मुआ़विया (रज़ि.) तुम पर बादशाह हो जाएँगे इसलिए कि अल्लाह का फ़र्मान है जो मज़्लूम मार डाला जाए हम उसके वारिसों को ग़ल्बा और ताक़त देते हैं फिर उन्हें क़त्ल के बदले में क़त्ल में हद से न गुज़रना चाहिए आख़िर तक। सुनो! ये कुरैशी तो तुम्हें फ़ारस और रूम के तरीक़ों पर आमादा कर देंगे और सुनो! तुम पर नसारा और यहूद और मजूसी खड़े हो जाएँगे उस वक़्त जिसने उसको थाम लिया जो मअ़रूफ़ है उसने नजात पा ली और जिसने छोड़ दिया और अफ़सोस कि तुम छोड़ने वाले ही हो तो तुम मिस्ल एक ज़माने वालों को होओगे कि वह भी हलाक होने वालों में हलाक हो गए। अब फ़र्माया वली को क़त्ल के बदले में हद से न गुज़रना चाहिए कि वह क़त्ल के साथ मुस्ला करे कान नाक काटे या क़ातिल के सिवा और से बदला ले। वली मक़्तूल शरीअ़त ग़ल्बा और ताक़त के लिहाज़ से हर तरह मदद किया गया है।

***

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ
الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٤﴾ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ
خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : "यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ सिवाए उस तरीक़े के जो बहुत ही बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए और वादे पूरे किया करो क्यों कि क़ौलो क़रार की बाज़पुर्स होने वाली है। (34) और जब नापने लगो तो भरपूर पैमाने से नापो और सीधी तराज़ू से तौला करो। यही बेहतर है और अंजाम के लिहाज़ से भी बहुत अच्छा है।" (35)

यतीम का माल न खाओ (आयत 34, 35) : यतीम के माल में बदनिय्यती से हेर फेर न करो उनके माल उनकी बुलूग़त से पहले साफ़ कर डालने के नापाक इरादों से बचो। जिसकी परवरिश में यतीम बच्चे हों अगर वह ख़ुद मालदार है तब तो उसे उन यतीमों के माल से बिलकुल अलग रहना चाहिए और अगर वह फ़क़ीर मोह्ताज है तो ख़ैर बक़द्रे मअरूफ़ खा ले। सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अबू ज़र (रज़ि.) से फ़र्माया "मैं तो तुझे बहुत कमज़ोर देख रहा हूँ और तेरे लिए वही पसंद करता हूँ जो ख़ुद अपने लिए चाहता हूँ ख़बरदार! कभी दो शख़्सों का वाली न बनना और न कभी यतीम के माल का मुतवल्ली बनना।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब कराहतुल इमारत बिग़ैरि ज़रूरतिन : 1826; अबूदाऊद : 2868; इब्ने हिब्बान : 5564)

फिर फ़र्माता है वादा वफ़ाई किया करो जो वादे वईद जो लेन देन हो जाए उसकी पासबानी करो उसकी बाबत क़यामत के दिन जवाबदेही होगी।

नाप-तोल में कमी न करो : नाप पैमाना पूरा भरकर दिया करो। लोगों को उनकी चीज़ घटाकर कम न दो। (क़िस्तास) की दूसरी क़िरअत (क़ुस्तास) भी है फिर हुक्म होता है बग़ैर पासंग के सही वज़न बतलाने वाली सीधी तराज़ू से बग़ैर डंडी मारे तोला करो दोनों जहान में तुम सबके लिए यही बेहतरी है दुनिया में भी यह तुम्हारे व्यापार की रौनक़ है और आख़िरत में भी यह तुम्हारे छुटकारे की दलील है। (तब्री : 17/446) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ऐ ताजिरो! तुम्हें इन दो चीज़ों को सौंपा गया है जिनकी वजह से तुमसे पहले के लोग बर्बाद हो गए यानी नाप तौल। नबी (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जो शख़्स किसी हराम पर क़ुदरत रखते हुए सिर्फ़ ख़ौफ़े इलाही से उसे छोड़ दे तो अल्लाह उसे उससे बेहतर चीज़ अता करेगा।" (तब्री : 17/446)

***

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ
مَسْـُٔوْلًا ﴿٣٦﴾ وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ
طُوْلًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾

तर्जुमा : "जिस बात की तुझे ख़बर ही न हो उसके पीछे मत पड़। क्योंकि कान और आँख और दिल उनमें से हर एक से पूछगछ की जाने वाली है। (36) ज़मीन में अकड़कर न चला कर कि न तू ज़मीन को फाड़ सकता है और न लम्बाई में पहाड़ों को पहुँच सकता है। (37) इन सब कामों की बुराई तेरे रब के नज़दीक सख़्त नापसंद है।" (38)

बग़ैर इल्म के गवाही न दो (आयत 36-38) : यानी जिस बात का इल्म न हो उसमें ज़ुबान न हिलाओ। बेइल्म के किसी की ऐबजोई और बोहतानबाज़ी न करो। झूठी गवाहियाँ न देते फिरो बेदेखे न कह दिया करो कि

मैंने देखा। न बे सुने सुनना बयान करो। न बेइल्मी पर अपना जानना बयान करो। क्योंकि इन तमाम बातों की जवाबदेही अल्लाह तआला के यहाँ होगी। (तब्री : 17/446, 447) ग़र्ज़ वहम, ख़्याल और गुमान के तौर पर कुछ कहना मना हो रहा है। जैसे अल्लाह फ़र्माता है (اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ) (49/हुजुरात : 12) ज़्यादा गुमान से बचो कुछ गुमान गुनाह हैं।

हदीस में है ''गुमान से बचो गुमान बदतरीन झूठी बात है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यन्हा अनित्तहासुद वत्तदाबुर : 6066; सहीह मुस्लिम : 2563; अहमद : 2/465; इब्ने हिब्बान : 5687) अबूदाऊद की हदीस में है 'इंसान का यह तकिया कलाम बहुत ही बुरा है कि लोग ख़्याल करते हैं। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी क़ौलिर्रजुल ज़अमू : 4972; वहुव सहीहुन; अबू क़लाबा मुदल्लस नहीं हैं ताहम इनके सुनने की सराहत मुअजमुस्सहाबा (6885) में मौजूद है। अल्अदबुल मुफ़रद : 7625; अहमद : 5/401; ज़ुहद : 377) और हदीस में है बदतरीन बोहतान यह है कि इंसान झूठ मूट कोई ख़्वाब गढ़ ले।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तअबीर, बाब मन कज़िब फ़ी हिल्मिही : 7043) और सही हदीस में है ''जो शख़्स ऐसा ख़्वाब ख़ुद से गढ़ ले क़ियामत के दिन उसे यह तक्लीफ़ दी जाएगी कि वह दो जौ के बीच गिरह लगाए और यह उससे हर्गिज़ नहीं होगा।'' (सहीह बुख़ारी हवाला साबिक़ : 7042; अहमद : 1/612; इब्ने हिब्बान : 5686) क़यामत के दिन आँख कान दिल सबसे पूछताछ होगी सबको जवाबदेही करनी होगी। यहाँ पर (तिल्क) की जगह (ऊलाइका) का इस्तेमाल है अरब में यह इस्तेमाल बराबर जारी है यहाँ तक कि शायरों के शेअरों में भी।

तकब्बुर के साथ चलना मना है : अकड़कर इतराकर तकब्बुर के साथ चलने से अल्लाह तआला अपने बन्दों को मना करता है यह आदत सरकश और मग़रूर लोगों की है। फिर उसे नीचे दिखाने के लिए फ़र्माता है कि भले कितने ही बुलंद सर होकर चलो लेकिन पहाड़ों की बुलंदी से पस्त ही रहोगे और भले कैसे ही खटपट करते हुए पैर मार मारकर चलो लेकिन ज़मीन को फाड़ नहीं सकते बल्कि ऐसे लोगों का बरअक्स हाल होता है जैसे कि हदीस में आया है कि ''एक शख़्स चादर जोड़े में तकब्बुर करता हुआ जा रहा था जो वहीं ज़मीन में धंसा दिया गया जो आज तक धंसता हुआ चला जा रहा है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब मन जर्र सौबहू मिनल ख़ैलाइ : 5789; सहीह मुस्लिम : 2088; अहमद : 2/315; मुस्नदे अबी यअला : 6334) क़ुरआन में क़ारून का क़िस्सा मौजूद है कि वह अपने महल्लात के साथ ज़मीन में धंसा दिया गया।

आजिज़ी की फ़ज़ीलत : हाँ तवाज़ोअ नर्मी फ़रोतनी और आजिज़ी करने वाले को अल्लाह तआला बुलंद मर्तबा और आली क़द्र करता है। हदीस में है कि ''झुकने वालों को अल्लाह बुलंद करता है'' वह अपने तईं हक़ीर समझता है और लोग उसे जलीलुल क़द्र समझते हैं और तकब्बुर करने वाला अपने तईं बड़ा आदमी समझता है और लोगों की नज़रों में वह ज़लीलो ख़ार होता है यहाँ तक कि वह उसे कुत्तों और सूअरों से भी ज़्यादा हक़ीर समझते हैं। (मिश्कातुल मसाबीह, किताबुल अदब, बाब अल्ग़ज़बु वल किब्र : 5046; शुअबुल ईमान : 8140; व सनदुहू मौज़ूअ; इसकी सनद में करीमी और सईद बिन सलाम अत्तार झूठे रावी हैं।) इमाम अबूबक्र इब्ने अबिदुनिया अपनी किताब अल ख़मूल वत्तवाज़ोअ में लाए हैं कि इब्नुल अहीम

दरबारे मंसूर में जा रहा था रेशमी जुब्बा पहने हुआ था और पिण्डलियों के ऊपर से उसे दोहरा सिलवाया था कि नीचे से कुबा भी दिखाई दे और अकड़ता ऐंठता जा रहा था।

हज़रत हसन (रह.) ने उसे इस हालत में देखकर फ़र्माया अफ़ूह नक चढ़ा बल खाया, रुख़सारें फूला, अपने डँड बाज़ू देखता, अपने तईं तोलता नेअ़मतों के ज़िक्रो शुक्र को भूला, रब के अहकाम को छोड़ा, अल्लाह के हक़ को तोड़ा, दीवानों की चाल चलता, जिस्म के हर हिस्से में किसी की दी हुई नेअ़मत रखता, शैतान की लअ़नत का मारा वह देखो जा रहा है। इब्ने अहीम ने सुन लिया और उसी वक़्त लौट आया और उज़्र मअ़ज़िरत करने लगा। आपने फ़र्माया, मुझसे मअ़ज़िरत क्या करता है अल्लाह तआ़ला से तौबा कर और इसे छोड़ दे, क्या तूने अल्लाह तआ़ला का यह फ़र्मान नहीं सुना (वला तम्शि फ़िल अर्ज़ि मरहन)

आबिद बख़्तरी ने आले अ़ली में से एक शख़्स को अकड़ता हुआ चलता देखकर फ़र्माया, ऐ शख़्स! जिसने तुझे यह इकराम दिया है उसकी रविश ऐसी न थी। उसने उसी वक़्त तौबा कर ली।

इब्ने उमर (रज़ि.) ने एक ऐसे शख़्स को देखकर फ़र्माया कि शैतान के यही भाई होते हैं हज़रत ख़ालिद बिन मअ़दान (रह.) फ़र्माते हैं लोगों! अकड़ अकड़कर चलना छोड़ दो। इब्ने अबिद्दुनिया में हदीस है कि "जब मेरी उम्मत तबख़्तुर और तकब्बुर चाल चलने लगेगी और फ़ारसियों और रूमियों को अपनी ख़िदमत में लगाएगी तो अल्लाह तआ़ला एक को एक पर मुसल्लत कर देगा।

(सय्यिउहू) की दूसरी क़िरअत (सय्यिअतुन) है तो मअ़नी यह हुए कि जिन कामों से हमने तुम्हें रोका है यह सब काम निहायत बुरे हैं और अल्लाह तआ़ला के नापसंदीदा हैं यानी अपनी औलाद को क़त्ल न करो से लेकर अकड़कर न चलो तक के तमाम काम। और (सय्यिउहू) की क़िरअत पर मतलब यह है कि (व क़ज़ा रब्बुका) से यहाँ तक जो अहकाम और जो मुमानिअ़त और रोक बयान हुई उसमें जिन बुरे कामों का ज़िक्र है वह सब अल्लाह के नज़दीक मकरूह काम हैं। इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने यही तौजीह की है।

***

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ

مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۳۹﴾

तर्जुमा : "यह भी मिन्जुम्ला उस वही के है जो तेरी जानिब तेरे रब ने हिक्मत से उतारी है तू अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और को मअ़बूद न बनाना कि मलामत ख़ोर और लअ़नत किया हुआ करके दोज़ख़ में डाल दिया जाए।" (39)

(आयत 39) : यह अहकाम हमने दिये हें सब बेहतरीन और साफ़ हैं और जिन बातों से हमने रोका है वह बड़ी ज़लील ख़स्लतें हैं। हम यह सब बातें तेरी तरफ़ वही के ज़रिये नाज़िल कर रहे हैं कि तू लोगों को हुक्म दे

और मना कर दे। देख मेरे साथ किसी को मअ़बूद न ठहराना वरना वह वक़्त आएगा कि ख़ुद अपने तईं मलामत करने लगेगा और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भी मलामत होगी बल्कि तमाम मख़्लूक़ की तरफ़ से भी और तू हर भलाई से दूर कर दिया जाएगा। इस आयत में बवास्ता रसूलुल्लाह (ﷺ) आपकी उम्मत से ख़िताब है क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) तो मअ़सूम हैं।

***

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ۭ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ۭ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤١﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ

اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ

عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾

तर्जुमा : ''क्या बेटों के लिए तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें छांट लिया और ख़ुद अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बना लीं? बेशक तुम बहुत बड़ी बात बोल रहे हो। (40) हमने तो इस क़ुरआन में हर हर तरह बयान कर दिया कि लोग समझ जाएँ लेकिन इस पर भी उन्हें तो नफ़रत ही बढ़ती रहती है। (41) कह दे कि अगर अल्लाह तआ़ला के साथ और मअ़बूद भी होते जैसे कि यह लोग कहते हैं तो ज़रूर वह अब तक तो मालिके अ़र्श की जानिब राह ढूँढ निकालते। (42) जो कुछ यह कहते हैं उससे वह पाक और बालातर बहुत दूर और बहुत बुलंद है।'' (43)

अल्लाह तआ़ला की कोई औलाद नहीं (आयत 40-43) : मल्ऊन मुश्रिकों की तर्दीद हो रही है कि यह तुमने ख़ूब तक़्सीम की है कि बेटे तुम्हारे बेटियाँ अल्लाह की जो तुम्हें नापसंद, जिनसे तुम जलो कुढ़ो बल्कि ज़िन्दा दफ़न कर दो उन्हें अल्लाह के लिए साबित करो। और आयतों में भी उनका यह कमीनापन बयान हुआ है कि यह कहते हैं रब रहमान की औलाद है। हक़ीक़तन इनका यह क़ौल निहायत ही बुरा है बहुत मुम्किन है कि इससे आसमान फट जाए ज़मीन शक़्क़ हो जाए पहाड़ चूरा चूरा हो जाएँ कि यह रब रहमान की औलाद ठहरा रहे हैं हालाँकि अल्लाह तआ़ला को यह किसी तरह लायक़ ही नहीं। ज़मीनो आसमान की कुल मख़्लूक़ उसकी गुलाम है सब उसके शुमार में हैं और गिनती में और एक एक उसके सामने क़यामत के दिन तंहा पेश होने वाला है। (19/मरयम : 88-95)

हक़ के दलाइल वाज़ेह हैं : इस पाक किताब में हमने तमाम मिसालें खोल खोलकर बयान कर दी हैं वादे वईद साफ़ तौर पर मज़्कूर हैं ताकि लोग बुराइयों से और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी से बचें। लेकिन ताहम ज़ालिम लोग तो हक़ से नफ़रत रखते और दूर भागने में ही बढ़ रहे हैं।

जो मुश्रिक अल्लाह तआला के साथ औरों की भी इबादत करते हैं और उन्हें अल्लाह तआला के शरीक मानते हैं और समझते हैं कि उन्हीं की वजह से हम कुर्बे इलाही हासिल कर सकते हैं। इनसे कहो कि तुम्हारा यह गुमाने फ़ासिद कुछ भी जान रखता होता और अल्लाह तआला के साथ वाक़ेई कोई ऐसे मअबूद होते कि वह जिसे चाहें कुर्बे इलाही ही दिलवा दें और जिसको चाहें सिफ़ारिश कर दें। तो ख़ुद वह मअबूद ही उसकी इबादत करते उसका कुर्ब ढूँढ़ते। पस तुम्हें सिर्फ़ उसी की इबादतें करनी चाहिएँ न उसके सिवा दूसरे की इबादतें, न दूसरे मअबूद की कोई ज़रूरत कि अल्लाह तआला में और तमाम में वह वास्ता बने कि अल्लाह तआला को यह वास्ते नापसंद मालूम होते हैं और उनसे वह इंकार करता है। अपने तमाम नबियों और रसूलों की ज़ुबान से इससे मना फ़र्माता रहा।

उसकी ज़ात ज़ालिमों के बयानकर्दा इस वस्फ़ से बिलकुल पाक है और उसके सिवा कोई मअबूद नहीं। इन आलूदगियों से हमारा मौला पाक है वह अहद व समद है। वह माँ बाप और औलाद से पाक है उस जैसा कोई नहीं।

***

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : ''सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ भी इनमें है उसी की तस्बीह कर रहे हैं ऐसी कोई चीज़ नहीं जो उसे पाकीज़गी और तारीफ़ के साथ याद न करती हो हाँ! यह सही है कि तुम उनकी तस्बीह नहीं समझ सकते, वह बड़ा बुर्दबार और बख़्शिश करने वाला है।'' (44)

हर चीज़ अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करती है (आयत 44) : सातों आसमान और ज़मीन और उनमें बसने वाली कुल मख़्लूक़ उसकी पाकीज़गी और बड़ाई बयान करती है और मुश्रिकीन जो निकम्मे और बातिल औसाफ़ अल्लाह की ज़ात के लिए मानते हैं उनसे यह तमाम मख़्लूक़ बरा'त का इज़्हार करती है और उसकी उलूहियत और रुबूबियत में उसे वाहिद और ला शरीक मानती है। हर हस्ती अल्लाह तआला की तौहीद की खुली दलील है। इन नालायक़ लोगों के क़ौलों से मख़्लूक़ तक्लीफ़ में है। क़रीब है कि आसमान फट जाए ज़मीन धंस जाए पहाड़ टूट जाएँ। तब्रानी में मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को मक़ामे इब्राहीम और ज़मज़म के बीच से जिब्राईल व मीकाइल (عليه السلام) मस्जिदे अक़्सा तक शबे मेअराज में ले गए, जिब्राईल (عليه السلام) आपके दाएँ थे और मीकाईल (عليه السلام) बाएँ। आपको सातों आसमानों तक उड़ा ले गए वहाँ से आप लौटे। आप फ़र्माते हैं कि ''मैंने बुलंद आसमानों में बहुत सी तस्बीहों के साथ यह तस्बीह सुनी कि (सब्बहतिस्समावातुल उला मिन ज़िल मुहाबति मुश्फ़िक़ातिज़्ज़विल उलुव्वि बिमा अला। सुब्हानल् अलिय्यिल आला। सुब्हानहू व तआला)। मख़्लूक़ में से हर हर चीज़ उसकी पाकीज़गी और तअरीफ़ बयान करती है लेकिन ऐ लोगों! तुम

उनकी तस्बीह़ को नहीं समझते इसलिए कि वह तुम्हारी ज़ुबान में नहीं। ह़ैवानात, नबातात, जमादात सब उसके तस्बीह़ करने वाले हैं। (मज्मउ ज़वाइद : 1/78; अल्मुअजमुल औसत़ : 3754; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मिस्कीन बिन मैमून ग़ैर मअरूफ़ रावी है।) इब्ने मसऊद (रज़ि.) से सही बुख़ारी में साबित है कि खाना खाते में खाने की तस्बीह़ हम सुनते रहते थे। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब अ़लामातिन्नबुव्वत फ़िल इस्लामि : 3579; तिर्मिज़ी : 3633; इब्ने ह़िब्बान : 6493) अबू ज़र्र (रज़ि.) वाली ह़दीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी मुट्ठी में चंद कंकरियाँ लीं, मैंने ख़ुद सुना कि वह शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की त़रह़ तस्बीह़े इलाही कर रही थीं। (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2413; अल्मुअजमुल औसत़ : 1266; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; स़ालेह़ बिन अबी अख़्ज़र ज़ईफ़ रावी है।) इसी त़रह़ ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ में और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) और ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के हाथ में भी। यह ह़दीस सही में और मुस्नदों में मशहूर है। कुछ लोगों को हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी ऊँटनियों और जानवरों पर सवार खड़े हुए देखकर फ़र्माया कि "सवारी सलामती के साथ लो और फिर अच्छाई से छोड़ दिया करो रास्तों और बाज़ारों में लोगों से बातें करने की कुर्सियाँ अपनी सवारियों को न बना लिया करो, सुनो! बहुत सी सवारियाँ अपने सवारों से भी ज़्यादा ज़िक्रुल्लाह करने वाली और उनसे भी बेहतर व अफ़ज़ल होती है।" (अह़मद : 3/439; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में इब्ने लहीआ, ज़िबान वग़ैरह ज़ईफ़ रावी हैं। (अत्तक़रीब : 1/44; रक़म : 574; 1/257) सुनन नसाई में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने मेंढक के मार डालने को मना किया और फ़र्माया, "उसका बोलना तस्बीह़े इलाही है।" (अल्मुअजमुल औसत़ : 3728; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुसय्यब बिन वाज़ेह़ ज़ईफ़ है। मज्मउज़्ज़वाइद : 4/41) और ह़दीस में है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह" का कलिमा इख़्लास से कहने के बाद ही किसी की नेकी क़ाबिले क़बूल होती है। अल्ह़म्दु लिल्लाह! कलिमा शुक्र है इसका न कहने वाला अल्लाह तआला का नाशुक्रा है। अल्लाहु अकबर ज़मीनो आसमान की फ़िज़ा भर देता है। सुब्ह़ानल्लाह का कलिमा मख़्लूक़ की तस्बीह़ है। अल्लाह ने किसी मख़्लूक़ को तस्बीह़ और नमाज़ के इक़रार से बाक़ी नहीं छोड़ा। जब कोई ला ह़ौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़ता है तो अल्लाह फ़र्माता है मेरा बंदा मुत़ीअ हुआ और मुझे सौंपा।" (त़ब्री : 17/456) मुस्नद अह़मद में है कि एक आ़राबी त़यालिसी जुब्बा पहने हुए जिसमें रेशमी कफ़ और रेशमी घुँडियाँ थीं, हुज़ूर (ﷺ) के पास आया और कहने लगा कि उस शख़्स का इरादा इसके सिवा कुछ नहीं कि चरवाहों के लड़कों को ऊँचा करे और सरदारों के लड़कों को ज़लील करे। आप (ﷺ) को ग़ुस्सा आ गया और उसका दामन घसीटते हुए फ़र्माया कि "तुझे मैं जानवरों का लिबास पहने हुए तो देखता नहीं हूँ?" फिर हुज़ूर (ﷺ) वापिस चले आए और बैठकर फ़र्माने लगे कि "ह़ज़रत नूह़ (عليه السلام) ने अपनी वफ़ात के वक़्त अपने बच्चों को बुलाकर कहा कि मैं तुम्हें बत़ौर वसिय्यत के दो हुक्म देता हूँ और दो मुमानिअ़त। एक तो मैं तुम्हें अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने से मना करता हूँ, दूसरे तकब्बुर से रोकता हूँ और पहला हुक्म तो तुम्हें यह करता हूँ कि ला इलाहा इल्लल्लाहु कहते रहो इसलिए कि आसमान और ज़मीन और इनमें की तमाम चीज़ें एक पलड़े में रख दी जाएँ और दूसरे में सिर्फ़ यही कलिमा हो तो भी यही कलिमा वज़नी रहेगा। सुनो! अगर तमाम आसमान व ज़मीन एक ह़ल्क़ा बना दिये जाएँ और उन पर उसको रख दिया जाए तो वह उन्हें चूर चूर कर दे। दूसरा हुक्म मेरा (सुब्ह़ानल्लाहि वबि ह़म्दिही) पढ़ने का है कि यह हर चीज़ की नमाज़ है और इसी

की वजह से हर एक को रिज़्क़ दिया जाता है।'' (अह्मद : 2/225; व सनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/619) इब्ने जरीर में है कि आपने फ़र्माया, ''आओ मैं तुम्हें बतलाऊँ कि हज़रत नूह (ﷺ) ने अपने लड़के को क्या हुक्म दिया फ़र्माया कि प्यारे बच्चे! मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि सुब्हानल्लाह कहा करो यह कुल मख़्लूक़ की तस्बीह है और इसी से मख़्लूक़ को रोज़ी दी जाती है। अल्लाह तआला कहता है कि हर चीज़ उसकी तस्बीह व तह्मीद बयान करती है।'' इसकी इस्नाद बवजह नस्र बिन अब्दुर्रहमान रावी के ज़ईफ़ हैं। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं सुतूने दरख़्त दरवाज़ों की चोलें उनकी भिड़ते खुलते आवाज़ पानी की घड़घड़ाहट यह सब तस्बीहे इलाही है। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हर चीज़ हम्दो सना के बयान में मशग़ूल है इब्राहीम (रह.) कहते हैं कि तआम भी तस्बीह करता रहता है। सूरह हज्ज की आयत भी इसकी गवाही देती है और मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि हर ज़ी रूह चीज़ तस्बीह करती है जैसे हैवानात और नबातात।

एक मर्तबा हज़रत हसन (रह.) के पास दस्तरख़्वान आया तो अबू यज़ीद रक़्क़ाशी ने कहा कि ऐ अबू सईद! क्या यह दस्तरख़्वान भी तस्बीह करता है। आपने फ़र्माया, हाँ! मतलब यह है कि जब तक तर लकड़ी की सूरत था तस्बीह करता था। जब कटकर सूख गया तस्बीह जाती रही। इस क़ौल की ताईद में इस हदीस से भी मदद ली जा सकती है कि हुज़ूर (ﷺ) दो क़ब्रों के पास से गुज़रते हैं तो फ़र्माते हैं, ''इन्हें अज़ाब किया जा रहा है और किसी बड़ी चीज़ में नहीं एक तो पेशाब के वक़्त पर्दे का ख़्याल नहीं करता था और दूसरा चुग़लख़ोर था।'' फिर आपने एक गीली टहनी लेकर उसके दो टुकड़े करके दो क़ब्रों पर गाड़ दिये और फ़र्माया कि ''शायद जब तक यह सूख न जाये इनके अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ रहे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब अज़ाबिल क़ब्रि मिनल ग़ीबति वल बौल : 1378; सहीह मुस्लिम : 292; अबूदाऊद : 20; तिर्मिज़ी : 70; इब्ने माजा : 347; अह्मद : 1/225; इब्ने हिब्बान : 3128) इसलिए कुछ उलमा ने कहा है कि जब तक यह गीली रहेंगी तस्बीह पढ़ती रहेंगी जब सूख जाएँगी तस्बीह बंद हो जाएगी, वल्लाहु आलम! अल्लाह तआला हकीम व ग़फ़ूर है अपने गुनाहगारों को सज़ा देने में जल्दी नहीं करता देर करता है फिर भी अगर कुफ़्र व फ़िस्क़ पर अड़ा रहे तो बेपनाह पकड़ नाज़िल करता है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है ''अल्लाह तआला ज़ालिम को मोहलत देता है फिर जब मुवाख़िज़ा (पकड़) करता है तो नहीं छोड़ता। देखो क़ुरआन में है कि जब तेरा रब किसी बस्ती के लोगों को मज़ालिम पर पकड़ता है तो फिर ऐसी ही पकड़ होती है'' आख़िर तक। और आयत में है कि बहुत सी ज़ालिम बस्तियों को हमने मोहलत दी फिर आख़िरकार पकड़ लिया। (11/हूद : 102) (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हूद बाब क़ौलुहू (व कज़ालिका अख़्ज़ा रब्बुका इज़ा अख़ज़ल क़ुरा वहिया ज़ालिमति....) : 4686; सहीह मुस्लिम : 2583; तिर्मिज़ी : 3110; इब्ने माजा : 4018; इब्ने हिब्बान : 5175; बैहक़ी : 6/94) और आयत में है (فَكَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ اَهۡلَكۡنٰهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ) (22/हज्ज : 45) हाँ! जो गुनाहों से रुक जाए उनसे हट जाए तौबा कर ले तो अल्लाह भी उस पर रहम और मेहरबानी करता है। जैसे आयते क़ुरआन में है जो शख़्स बुराई करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह को बख़्शने वाला और मेहरबान पाएगा। (4/निसाअ : 110) सूरह फ़ातिर के आख़िर की आयतों में भी यही बयान है।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا
﴿٤٥﴾ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي
الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : "तू जब कुरआन पढ़ता है हम तेरे और उन लोगों के बीच जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते एक पोशीदा पर्दा डाल देते हैं। (45) और उनके दिलों पर हम पर्दे डाल देते हैं कि इसे समझें और उनके कानों में बोझ और जब तू सिर्फ़ अल्लाह तआला ही का ज़िक्र उसकी तौहीद के साथ इस कुरआन में करता है तो वह रूगर्दानी करते पीठ फेरकर भाग खड़े होते हैं।" (46)

दिलों पर पर्दे का मफ़्हूम (आयत 45, 46) : फ़र्माता है कि कुरआन की तिलावत के वक़्त उन के दिलों पर पर्दे पड़ जाते हैं कोई असर उनके दिलों तक नहीं पहुँचता वह हिजाब उन्हें छुपा लेता है। यहाँ मस्तूर सातिर के मअ़नी में है जैसे मैमून मशऊम यामिन और शाइम के मअ़नी में हैं। वह पर्दे भले बज़ाहिर नज़र न आएँ लेकिन हिदायत में और उनमें हृद्दे फ़ासिल हो जाते हैं। मुस्नदे अबी यअ़ला मूसली में है कि सूरह (तब्बत यदा) के उतरने पर ख़बीसा उम्मे जमील शोर मचाती धारदार पत्थर हाथ में लिये यह कहती हुई आई कि इस मुज़म्मिम को हम नहीं मानने के। हमें इसका दीन नापसंद है हम इसके फ़र्मान के मुख़ालिफ़ हैं। उस वक़्त रसूले करीम (ﷺ) बैठे हुए थे, हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आपके पास थे कहने लगे, हुज़ूर (ﷺ)! यह आ रही है और आपको देख लेगी। आपने फ़र्माया, "बेफ़िक्र रहो यह मुझे नहीं देख सकती।" और आपने उससे बचने के लिए तिलावते कुरआन शुरू कर दी यही आयत तिलावत की। वह आई और हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) से पूछने लगी कि मैंने सुना है तुम्हारे नबी ने मेरी हिज्व की है। आपने फ़र्माया, नहीं! रब्बे कअ़बा की क़सम! तेरी कोई हिज्व हुज़ूर (ﷺ) ने नहीं की। वह यह कहती हुई लौटी कि तमाम कुरैश जानते हैं कि मैं उनके सरदार की लड़की हूँ। (मुस्नदे अबी यअ़ला : 25, हाकिम : 2/361) (अकिन्नतन) किनान की जमा है उस पर्दे ने उनके दिलों को ढक दिया है जिससे यह कुरआन समझ नहीं सकते, इनके कानों में बोझ है जिससे वह कुरआन इस तरह सुन नहीं सकते कि उन्हें फ़ायदा पहुँचे और जब तू कुरआन में अल्लाह तआला की वहदानियत का ज़िक्र पढ़ता है तो यह बेतरह भाग खड़े होते हैं। नुफ़ूर जमा है नाफ़िर की जैसे क़ाइद की जमा कुऊ़द आती है और हो सकता है कि यह मसदर बग़ैर फ़ेअ़ल हो, वल्लाहु आलम!

जैसे और आयत में है कि अल्लाह तआला वाहिद के ज़िक्र से बेईमानों के दिल उचाट हो जाते हैं। (39/ज़ुमर : 45) मुसलमानों का ला इलाहा इल्लल्लाह कहना मुश्रिकों पर बहुत भारी पड़ता था। इब्लीस और उसका लश्कर उससे बहुत चिढ़ता था। इसके दबाने की पूरी कोशिश करता था लेकिन अल्लाह तआला का इरादा इनके बरख़िलाफ़ इसे बुलंद करने और इज़्ज़त देने और फैलाने का था। यही वह कलिमा है कि इसको

मानने वाला कामयाब होता है, इस पर अमल करने वाला मदद दिया जाता है। देख लो उस जज़ीरे के हालात तुम्हारे सामने हैं कि यहाँ से वहाँ तक यह पाक कलिमा फैल गया। (तब्री : 17/458) यह भी कहा गया है कि इससे मुराद शैतानों का भागना है भले बात यह ठीक है कि अल्लाह तआला का ज़िक्र से अज़ान से तिलावते कुरआन से शैतान भागता है लेकिन इस आयत की यह तफ़्सीर करनी ग़राबत से ख़ाली नहीं।

***

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾

तर्जुमा : "इसे सुनते वक़्त इनकी निय्यतों से हम ख़ूब आगाह हैं जब यह तेरी तरफ़ कान लगाये हुए होते हैं तब भी और जब यह मश्वरा करते हैं तब भी जबकि यह ज़ालिम कहते हैं कि तुम उसकी ताबेदारी में लगे हुए हो जिस पर जादू कर दिया गया है। (47) देख तो सही कि तेरी क्या क्या मिसालें बयान करते फिरते हैं और बहक रहे हैं अब तो राह पाना इनके बस में नहीं रहा।" (48)

सरदाराने कुरैश छुपकर हुज़ूर (ﷺ) का कुरआन सुनते थे (आयत 47, 48) : सरदाराने कुफ़्र जो आपस में बातें बनाते थे वह हुज़ूर (ﷺ) को पहुँचाई जा रही हैं कि आप तो तिलावत में मशग़ूल होते हैं यह चुपके चुपके कहा करते हैं कि इस पर किसी ने जादू कर दिया है और हो सकता है कि यह मतलब हो कि यह तो एक इंसान है जो खाने पीने का मोहताज है भले यह लफ़्ज़ इसी मअनी में शेअर में भी है और इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इसी को ठीक भी बतलाया है लेकिन है यह ग़ौरतलब। इनका इरादा उस मौक़े पर उस कहने से यह था कि ख़ुद यह जादू में मुब्तला है कोई है जो इसे इस मौक़े पर कुछ पढ़ा जाता है। काफ़िर लोग तरह तरह के वहम आपकी निस्बत ज़ाहिर करते थे। कोई कहता आप शायर हैं कोई कहता काहिन हैं, कोई मज्नून बतलाता कोई जादूगर वग़ैरह। इसलिए फ़र्माता है कि देखो! यह कैसे बहक रहे हैं कि हक़ की जानिब आ ही नहीं सकते।

सीरते मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि अबू सुफ़्यान बिन हर्ब, अबू जहल बिन हिशाम, अख़नस बिन शुरैक़ रात के वक़्त अपने अपने घरों से कलामुल्लाह हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबानी सुनने के लिए निकले। आप अपने घर में रात को नमाज़ पढ़ रहे थे यह लोग चुपचाप आकर इधर उधर छुपकर बैठ गये। एक को दूसरे की ख़बर न थी, रात को सुनते रहे, फ़ज्र होते वक़्त यहाँ से चले इत्तिफ़ाक़न रास्ते में सबकी मुलाक़ात हो गई एक दूसरे को मलामत करने लगे और कहने लगे, अब से यह हरकत न करना वरना और लोग तो बिलकुल इसी के हो जाएँगे लेकिन रात को फिर यह तीनों आ गए और अपनी अपनी जगह बैठकर कुरआन सुनने में रात गुज़ारी। सुबह वापिस चले, रास्ते में मिल गए फिर से कल की बातें दोहराने और आज पक्का इरादा किया कि अब से

ऐसा काम हर्गिज़ कोई न करेगा तीसरी रात फिर यही हुआ। इस बार उन्होंने कहा, आओ अहद कर लें कि अब नहीं आएँगे चुनाँचे क़ौलो क़रार करके अलग हुए, सुबह को अख़नस अपनी लाठी संभालते हुए अबू सुफ़्यान के घर पहुँचा और कहने लगा, अबू हंज़ला! मुझे बतलाओ, तुम्हारी अपनी राय हुज़ूर (ﷺ) के बारे में क्या है? उसने कहा, अबू सअल्बा! जो आयते क़ुरआनी मैंने सुनी हैं उनमें से बहुत सी आयतों का मतलब मअनी में जान गया हूँ लेकिन बहुत सी आयतों की मुराद मुझे मालूम नहीं हुई। अख़नस ने कहा, वल्लाह! मेरा भी यही हाल है। यहाँ से होकर अख़नस अबू जहल के पास पहुँचा। उससे भी यही सवाल किया। उसने कहा, सुनिए शराफ़त व सरदारी के बारे में हमारा बनू अब्दे मुनाफ़ से मुद्दत का झगड़ा चला आता है उन्होंने खिलाया हमने भी खिलाना शुरु कर दिया। उन्होंने सवारियाँ दीं हमने भी उन्हें सवारियों के जानवर दिये उन्होंने लोगों के साथ सुलूक किये और उन्हें इन्आमात दिये हमने भी उनसे पीछे रहना पसंद न किया। अब जबकि हम इन तमाम बातों में वह और हम बराबर हैं इस दौड़ में जब वह बाज़ी ले जा न सके तो झट से उन्होंने कहा कि हममें नबुव्वत है हममें एक शख़्स है जिसके पास आसमानी वही आती है अब बताओ इसको हम कैसे मान लें ? वल्लाह! न उस पर हम ईमान लाएँगे, न कभी उसे सच्चा कहेंगे। उस वक़्त अख़नस उसे छोड़कर चल दिया।

***

وَقَالُوٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ خَلۡقًا جَدِيۡدًا ﴿٤٩﴾ قُلۡ كُوۡنُوۡا حِجَارَةً اَوۡ
حَدِيۡدًا ﴿٥٠﴾ اَوۡ خَلۡقًا مِّمَّا يَكۡبُرُ فِىۡ صُدُوۡرِكُمۡ‌ۚ فَسَيَقُوۡلُوۡنَ مَنۡ يُّعِيۡدُنَا‌ ؕ قُلِ الَّذِىۡ
فَطَرَكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ‌ ۚ فَسَيُنۡغِضُوۡنَ اِلَيۡكَ رُءُوۡسَهُمۡ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هُوَ‌ ؕ قُلۡ عَسٰٓى اَنۡ
يَّكُوۡنَ قَرِيۡبًا ﴿٥١﴾ يَوۡمَ يَدۡعُوۡكُمۡ فَتَسۡتَجِيۡبُوۡنَ بِحَمۡدِهٖ وَتَظُنُّوۡنَ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿٥٢﴾

तर्जुमा : ''कहने लगे कि क्या जबकि हम हड्डियाँ और मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हम नई पैदाइश में फिर दोबारा उठाकर खड़े कर दिये जाएँगे?(49) जवाब दे कि तुम पत्थर बन जाओ या लोहा (50) या कोई और ऐसी ख़िल्क़त जो तुम्हारे दिलों में बहुत ही सख़्त मालूम हो अब यह पूछेंगे कि कौन है जो दोबारा हमारी ज़िन्दगी लौटाए? तू जवाब दे कि वही अल्लाह तआला जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया उस पर वह अपने सर हिला हिलाकर तुझसे पूछेंगे कि अच्छा, यह कब होगा? तो तू जवाब दे कि क्या अजब कि वह क़रीब ही आ लगी हो (51) जिस दिन वह तुम्हें बुलाएगा तुम उसकी तअरीफ़ करते हुए तअमीले इर्शाद करोगे और गुमान करने लगोगे कि तुम्हारा रहना बहुत ही थोड़ा है।'' (52)

मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना (आयत 49-52) : काफ़िर जो क़ियामत के क़ाइल न थे और मरने के बाद के जीने को मुश्किल जानते थे वह बतौर इंकार पूछा करते थे कि क्या हम जब हड्डी और मिट्टी हो जाएँगे। (तब्री : 17/464) गुबार बन जाएँगे कुछ न रहेंगे, बिलकुल मिट जाएँगे फिर भी नई पैदाइश से पैदा होंगे? सूरह नाज़िआत में इन मुंकिरों का क़ौल बयान हुआ है कि क्या हम मरे पीछे उल्टे पैर ज़िन्दगी में लौटाए जाएँगे? और वह भी ऐसी हालत में कि हमारी हड्डियाँ भी सड़गल गई हों? भई! यह तो बड़े ही घाटे की बात है। (79/नाज़िआत : 10-12) सूरह यासीन में है कि यह हमारे सामने मिसालें बयान करने बैठ गया और अपनी पैदाइश को फ़रामोश कर गया, आख़िर तक। (36/यासीन : 78) पस इन्हें जवाब दिया जाता है कि हड्डियाँ तो क्या तुम ख़्वाह पत्थर बन जाओ, ख़्वाह लोहा बन जाओ, ख़्वाह उससे भी ज़्यादा सख़्त चीज़ बन जाओ, मस्लन पहाड़ या ज़मीन या आसमान बल्कि तुम ख़ुद मौत ही क्यूँ न बन जाओ। अल्लाह तआला पर तुम्हारा ज़िन्दा करना दुभर नहीं जो चाहो हो जाओ, दोबारा उठोगे ज़रूर। (तब्री : 17/464) हदीस में है कि ''भेड़िए की सूरत में मौत को क़यामत के दिन जन्नत और दोज़ख़ के बीच लाया जाएगा और दोनों से कहा जाएगा कि इसे पहचानते हो? सब कहेंगे हाँ! फिर उसे वहीं ज़िब्ह कर दिया जाएगा और ऐलान हो जाएगा कि ऐ जन्नतियों! अब हमेशगी है मौत नहीं और ऐ जहन्नमियों! अब हमेशगी है मौत नहीं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह काफ़ हा या ऐन साद बाब क़ौलुहू अज़्ज़ व जल्ल (वंजिर्हुम यौमल हसरत) : 4730) यहाँ फ़र्मान है कि यह पूछते हैं कि अच्छा! जब हम हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे या पत्थर या लोहा हो जाएँगे या जो हम चाहें और जो बड़ी से बड़ी सख़्त चीज़ हो वही हम हो जाएँगे तो यह तो बतलाओ कि यह किसके इख़्तियार में है कि अब हमें फिर से उस ज़िन्दगी की तरफ़ लौटा दे? इनके इस सवाल और बेजा ऐतिराज़ के जवाब में तू इन्हें समझा कि तुम्हें लौटाने वाला तुम्हारा सच्चा ख़ालिक़ अल्लाह तआला है जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है जबकि तुम कुछ न थे फिर उस पर दूसरी बार की पैदाइश क्या भारी है बल्कि बहुत आसान है तुम ख़्वाह कुछ भी बन जाओ। यह जवाब चूँकि लाजवाब है भौचक्के तो हो जाएँगे लेकिन फिर भी अपनी शरारत से बाज़ नहीं आएँगे बद अक़ीदगी न छोड़ेंगे और बतौर मज़ाक़ सर हिलाते हुए कहेंगे कि अच्छा यह होगा कब? सच्चे हो तो वक़्त की तअयीन (फिक्स) कर दो। बेईमानों का यह शेवा है कि वह जल्दी मचाते हैं, हाँ है तो वह वक़्त क़रीब ही तुम उसके लिए इंतिज़ार कर लो, ग़फ़लत न बरतो, उसके आने में कोई शक नहीं आने वाली चीज़ को आई हुई समझा करो। अल्लाह तआला की एक आवाज़ के साथ ही तुम ज़मीन से निकल खड़े होओगे। एक आँख झपकाने की देर भी तो न लगेगी। अल्लाह तआला के फ़र्मान के साथ ही तुमसे मैदाने महशर भर जाएगा। क़ब्रों से उठकर अल्लाह तआला की तअरीफ़ें करते हुए उसके अहकाम की बजाआवरी में खड़े हो जाओगे। हम्द के लायक़ वही है तुम उसके हुक्म से और इरादे से बाहर नहीं हो।

हदीस में है कि ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहने वालों पर उनकी क़ब्र में कोई दहशत नहीं होगी गोया कि मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वह क़ब्रों से उठ रहे हैं। अपने सर से मिट्टी झाड़ते हुए (ला इलाहा इल्लल्लाह) कहते हुए उठ खड़े होंगे कहेंगे कि अल्लाह तआला की हम्द है जिसने हमसे ग़म को दूर कर दिया।'' सूरह फ़ातिर की तफ़्सीर में बयान आ रहा है, इंशाअल्लाह तआला!

उस वक़्त तुम्हारा यक़ीन होगा कि तुम बहुत ही कम वक़्त दुनिया में रहे गोया सुबह से शाम कोई कहेगा, दस दिन कोई कहेगा, एक दिन, कोई समझेगा एक पल ही। सवाल पर यही कहेंगे एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा ही और इस पर क़समें भी खाएँगे। इसी तरह दुनिया में भी अपने झूठ पर क़समें खाते रहे थे।

***

وَقُلْ لِّعِبَادِىْ يَقُوْلُوا الَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿۵۳﴾

तर्जुमा : "मेरे बन्दों से कह दे कि वह बहुत ही अच्छी बात मुँह से निकाले। क्योंकि शैतान आपस में फ़साद डलवाता रहता है बेशक शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।" (53)

बातचीत मुहज़्ज़ब होनी चाहिए (आयत 53) : अल्लाह तआला अपने नबी करीम (ﷺ) से फ़र्माता है कि आप मोमिन बन्दों से कह दें कि वह अच्छे लफ़्ज़ों और बेहतर फ़िक़रों और तहज़ीब से कलाम करते रहें वरना शैतान उनमें आपस में सर फिटोल और बुराई डलवा देगा लड़ाई झगड़े शुरू हो जाएँगे वह इंसान का दुश्मन है घात में लगा रहता है इसीलिए हदीस में मुसलमान भाई की तरफ़ किसी हथियार से इशारा करना भी हराम है कि कहीं शैतान उसे लगा न दे और यह जहन्नमी न बन जाए मुलाहिज़ा हो। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ितन, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (मन हमल अलैनस्सलाहा फ़लैसा मिन्ना) : 7072; सहीह मुस्लिम : 2617; अहमद : 2/317; इब्ने हिब्बान : 5948) हुज़ूर (ﷺ) ने लोगों की एक मज्लिस में फ़र्माया कि "सब मुसलमान आपस में भाई भाई हैं कोई किसी पर ज़ुल्मो सितम न करे कोई किसी को बेइज़्ज़त न करे। फिर आपने अपने सीने की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया, तक़्वा यहाँ है जो दो शख़्स आपस में दीनी दोस्त हों फिर उनमें जुदाई हो जाए उस जुदाई को उनमें से जो बयान करे वह बयान करने वाला बुरा है वह बदतर है वह निहायत शरीर है।" (मुस्नद अहमद : 5/71; व सनदुहू ज़ईफ़ुन)

***

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۵۴﴾ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۵۵﴾

तर्जुमा : "तुम्हारा रब तुमसे बनिस्बत तुम्हारे भी बहुत ज़्यादा जानने वाला है वह अगर चाहे तो तुम पर रहम कर दे चाहे तुम्हें सज़ा दे, हमने तुझे इनका ज़िम्मेदार ठहराकर नहीं भेजा। (54) आसमान व ज़मीन में जो भी है तेरा रब सबको बख़ूबी जानता है हमने कुछ पैग़म्बरों को कुछ पर बेहतरी और बरतरी दे रखी है। दाऊद (عليه السلام) को ज़बूर हमने ही अता की है।" (55)

मर्तबों में फ़र्क़ (आयत 54, 55) : तुम्हारा रब तुमसे बख़ूबी वाक़िफ़ है वह हिदायत के मुस्तहिक़ लोगों को बख़ूबी जानता है वह जिस पर चाहता है रहम करता है अपनी इताअत की तौफ़ीक़ देता है और अपनी जानिब झुका लेता है इसी तरह जिसे चाहे बदआमाली पर पकड़ लेता है और सज़ा देता है हमने तुझे इनका ज़िम्मेदार नहीं बनाया तेरा काम सिर्फ़ होशियार कर देना है तेरी बात मानने वाले जन्नती होंगे और न मानने वाले दोज़ख़ी बनेंगे। ज़मीनो आसमान के तमाम इंसान जिन्नात फ़रिश्तों का उसे इल्म है हर एक के मर्तबे का उसे इल्म है एक को एक पर फ़ज़ीलत है नबियों में भी दर्जे हैं कोई कलीमुल्लाह है कोई बुलंद दर्जा है। एक हदीस में है कि "नबियों में फ़ज़ीलतें क़ायम न किया करो।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व इन्ना यूनुसा लमिनल मुर्सलीन) : 2414; सहीह मुस्लिम : 2373) इससे मतलब सिर्फ़ तअस्सुब और नफ़्स परस्ती से अपने तौर पर फ़ज़ीलत क़ायम करना है न यह कि क़ुरआन व हदीस से साबितशुदा फ़ज़ीलत से भी इंकार। जो फ़ज़ीलत जिस नबी की अज़्रूए दलील साबित हो जाएगी उसका मानना वाजिब है।

ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों का ज़िक्र : मानी हुई बात है कि तमाम अम्बिया से रसूल अफ़ज़ल हैं और रसूलों में पाँच ऊलुल अज़्म रसूल उन सबसे अफ़ज़ल हैं जिनका नाम सूरह अहज़ाब की आयत में है यानी मुहम्मद, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा (عليهم السلام)। सूरह शूरा की आयत (شَرَعَ لَكُمْ) (42/शूरा : 13) में भी उन पाँचों के नाम मौजूद हैं। जिस तरह यह सब चीज़ें सारी उम्मत मानती है इसी तरह बग़ैर इख़्तिलाफ़ के यह भी साबित है कि उनमें भी सबसे अफ़ज़ल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) हैं। फिर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) फिर हज़रत मूसा (عليه السلام) जैसाकि मशहूर है। हमने उसके दलाइल और जगह बस्त (विस्तार) से बयान किए हैं, वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़

फिर फ़र्माता है हमने दाऊद पैग़म्बर (عليه السلام) को ज़बूर दी। यह भी उनकी फ़ज़ीलत और शर्फ़ की दलील है। सहीह बुख़ारी में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं (हज़रत) "दाऊद (عليه السلام) पर क़ुरआन इतना आसान कर दिया गया था कि जानवर पर ज़ीन कसी जाए उतनी सी देर में आप क़ुरआन पढ़ लिया करते थे।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व आतैना दाऊदा ज़बूरा) 3417)

***

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ

وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

तर्जुमा : ''कह दे कि अल्लाह तआला के सिवा जिन्हें तुम मअबूद समझ रहे हो उन्हें पुकारो लेकिन न तो वह तुमसे किसी तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं न बदल सकते हैं। (56) जिन्हें यह लोग पुकारते रहते हैं ख़ुद वह अपने रब की नज़दीकी की जुस्तजू में रहते हैं कि उनमें से कौन ज़्यादा नज़दीक हो जाए वह ख़ुद उसकी रहमत की उम्मीदवारी में लगे रहते हैं और उसके अ़ज़ाब से डर रहे हैं, बात भी यही है कि तेरे रब का अ़ज़ाब डरने की चीज़ ही है।'' (57)

जिन्हें लोग मअबूद समझते हैं वह ख़ुद अल्लाह की इबादत करते हैं (आयत 56, 57) : अल्लाह तआला के सिवा औरों की इबादत करने वालों से कहिए कि तुम उन्हें ख़ूब पुकारकर देख लो कि क्या वह तुम्हारे कुछ काम भी आ सकते हैं? न उनके बस की बात कि मुश्किल कुशाई कर दें न यह बात कि उसे किसी और पर टाल दें वह सिर्फ़ बेबस हैं , क़ादिर और ताक़त वाला सिर्फ़ अल्लाह तआला वाहिद ही है, मख़्लूक़ का ख़ालिक़, और सबका हुक्मराँ वही है। यह मुश्रिक कहा करते थे कि हम फ़रिश्तों की और मसीह (ﷺ) की और उज़ेर (ﷺ) की इबादत करते हैं। इनके मअबूद तो ख़ुद अल्लाह तआला की तरफ़ नज़दीकी की जुस्तजू में हैं। (तब्री : 17/471) सहीह बुख़ारी में है कि ''जिन जिन्नात की यह मुश्रिकीन पूजा करते थे वह ख़ुद मुसलमान हो गए थे लेकिन यह अब तक अपने कुफ़्र पर जमे हुए हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (कुलिदउल्लज़ीना ज़अमतुम मिन दूनिही) : 4714; सहीह मुस्लिम : 3030) इसलिए उन्हें ख़बरदार किया गया कि तुम्हारे मअबूद ख़ुद अल्लाह तआला की तरफ़ झुक गए। इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते हैं यह जिन्न फ़रिश्तों की एक क़िस्म से थे। हज़रत ईसा (ﷺ) हज़रत मरयम (ﷺ) हज़रत उज़ेर (ﷺ) सूरज चाँद फ़रिश्ते सब क़ुर्बे इलाही की तलाश में हैं। इब्ने जरीर फ़र्माते हैं ठीक मतलब यह है कि जिन जिन्नों को यह पूजते थे आयत में वही मुराद हैं क्योंकि हज़रत मसीह (ﷺ) वग़ैरह का ज़माना तो गुज़र चुका था और फ़रिश्ते पहले ही से आबिदे इलाही थे तो मुराद यहाँ भी जिन्नात हैं। वसीला के मअनी क़ुर्बत व नज़दीकी के हैं। जैसे कि हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल है। यह सब बुज़ुर्ग इस धुन में हैं कि कौन अल्लाह तआला से ज़्यादा नज़दीकी हासिल कर ले? वह अल्लाह तआला की रहमत के ख़्वाहाँ और उसके अ़ज़ाब से तरसाँ हैं हक़ीक़त में बग़ैर इन दोनों बातों के इबादत नामुकम्मल है। ख़ौफ़ गुनाहों से रोकता है और उम्मीद इताअत पर आमादा करती है। वाक़ेअ में उसके अ़ज़ाब हैं ही डर के क़ाबिल, अल्लाह हमें अपने अ़ज़ाब से बचाए, आमीन तक़ब्बल या रब्बल आलमीन!

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ
ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا
الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾

तर्जुमा : ''जितनी भी बस्तियाँ हैं हम क़ियामत के दिन से पहले पहले या तो उन्हें हलाक कर देने वाले हैं या सख़्त तर सज़ा देने वाले हैं, यह तो किताब में लिखा जा चुका है। (58) हमें निशानात के नाज़िल करने से रोक सिर्फ़ उसी की है कि अगले लोग उन्हें झुठला चुके हैं हमने समूदियों को बतौर निशान के ऊँटनी दी लेकिन उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया हम तो लोगों को सिर्फ़ धमकाने के लिए ही निशानात भेजते हैं।'' (59)

मुंकिरीन के लिए तबाही है (आयत 58, 59) : वह नविश्ता जो लोहे महफ़ूज़ में लिख दिया गया है वह हुक्म जारी कर दिया गया है उसका बयान इस आयत में है कि गुनहगारों की बस्तियाँ यक़ीनन वीरान कर दी जाएँगी। या तबाही के क़रीब उनके गुनाहों की वजह से हो जाएँगी। इसमें हमारी जानिब से कोई ज़ुल्म न होगा बल्कि उनके अपने करतूत का ख़मियाज़ा होगा उनके आमाल का वबाल होगा रब की आयतों और उसके रसूलों से सरकशी करने का फल होगा।

निशानियाँ देखने के बाद ईमान न लाना अज़ाब की वजह है : हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ज़माने में काफ़िरों ने आप (ﷺ) से कहा कि आपसे पहले के नबियों में से कुछ के ताबेअ हवा थी, कुछ मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे अब अगर आप चाहते हैं कि हम भी आप पर ईमान लाएँ तो आप इस सफ़ा पहाड़ को सोने का बना दीजिए हम आपकी सच्चाई के क़ाइल हो जाएँगे। आप पर वही आई कि अगर आपकी भी यही ख़्वाहिश हो तो मैं उस पहाड़ को अभी सोने का बना देता हूँ लेकिन यह ख़्याल रहे कि ''अगर फिर भी यह ईमान न लाए तो अब इन्हें मोहलत न मिलेगी, अचानक अज़ाब आ जाएगा और तबाह कर दिये जाएँगे और अगर आपको उन्हें ताख़ीर देनी और सोचने का मौक़ा देना मंज़ूर है तो मैं ऐसा न करूँ। आपने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! मैं इन्हें बाक़ी रखने में ही ख़ुश हूँ।'' (तब्री : 17/477) मुस्नद में इतना और भी है कि ''उन्होंने यह भी कहा था कि बाक़ी की और पहाड़ियाँ यहाँ से खिसक जाएँ ताकि हम यहाँ खेती बाड़ी कर सकें, आख़िर तक।'' इस पर यह आयत नाज़िल हुई। (मुस्नद अहमद : 1/258; हाकिम : 2/362)

और रिवायत में है ''आपने दुआ माँगी जिब्राईल (عليه السلام) आए और कहा कि आपका परवरदिगार आपको सलाम कहता है और फ़र्माता है कि अगर आप चाहें तो सुबह ही को यह पहाड़ सोने का हो जाएगा लेकिन अगर फिर भी इनमें से कोई ईमान न लाया तो उसे वह सज़ा होगी जो इससे पहले किसी को न हुई हो और अगर आपका इरादा हो तो मैं इन पर तौबा के और रहमत के दरवाज़े खुले छोड़ूँ? आपने दूसरी बात

इख़्तियार की।'' (मुस्नद अहमद : 1/242; वहुव हदीसुन सहीहुन; मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 700; दलाइलुन्नबुव्वा लिल बैहक़ी : 2/272) मुस्नदे अबी यअला में है कि आयत (وَ اَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ) (26/शुअरा : 214) जब उतरी तो तअमीले इर्शाद के लिए आप क़बीस पहाड़ पर चढ़ गए और फ़र्माने लगे ''ऐ अब्दे मुनाफ़! मैं तुम्हें डराने वाला हूँ।'' क़ुरैश यह आवाज़ सुनते ही जमा हो गए फिर कहने लगे सुनिए! आप नबुव्वत के मुद्दई हैं। सुलेमान (ﷺ) नबी के ताबेअ हवा थी। मूसा (ﷺ) नबी के ताबेअ दरिया हो गया था। ईसा (ﷺ) नबी मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे। तू भी नबी है अल्लाह से कह कि यह पहाड़ यहाँ से हटवाकर ज़मीन खेती के लायक़ बना दे ताकि हम खेतीबाड़ी करें। यह नहीं तो हमारे मुर्दों की ज़िन्दगी की दुआ अल्लाह से कर कि हम और वह मिलकर बैठें और उनसे बातें करें। यह भी नहीं तो इस पहाड़ को सोने का बना दे कि हम जाड़े गर्मियों के सफ़र से नजात पाएँ। उसी वक़्त आप पर वह्य उतरनी शुरु हो गई, उसके ख़ात्मे पर आपने फ़र्माया, ''उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुमने जो कुछ मुझसे मांगा था मुझे उसके हो जाने में और इस बात में कि रहमत के दरवाज़े में चले जाओ इख़्तियार दिया कि ईमान इस्लाम के बाद तुम रहमते इलाही समेट लो या तुम यह निशानात देख लो लेकिन फिर न मानो तो गुमराह हो जाओ और रहमत के दरवाज़े तुम पर बंद हो जाएँ तो मैं तो डर गया और मैंने रहमत के दरवाज़े का खुला होना पसंद किया क्योंकि दूसरी सूरत में तुम्हारे ईमान न लाने पर तुम पर वह अज़ाब उतरते जो तुमसे पहले किसी पर न उतरे हों इस पर यह आयतें उतरीं और आयत (وَ لَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ) (13/रअद : 31) नाज़िल हुई।'' (मुस्नदे अबी यअला : 679)

निशानियाँ लोगों को डराने के लिए होती हैं : यानी आयतों के भेजने और मुँह माँगे मोजिज़े के दिखाने से हम आजिज़ तो नहीं बल्कि यह हम पर बहुत आसान है जो तेरी क़ौम चाहती है हम उन्हें दिखा देते हैं लेकिन इस सूरत में उनके न मानने पर फिर हमारे अज़ाब न अटकते। अगलों को देख लो कि उसी में बर्बाद हुए, चुनाँचे सूरह माइदा में है कि मैं तुम पर दस्तरख़्वान उतार रहा हूँ लेकिन उसके बाद जो कुफ़्र करेगा उसे ऐसी सज़ा दी जाएगी जो इससे पहले किसी को न हुई हो। (5/माइदा : 115) समूदियों को देखो कि उन्होंने एक ख़ास पत्थर में से ऊँटनी का निकलना तलब किया। हज़रत सालेह (ﷺ) की दुआ पर वह निकली लेकिन वह न माने बल्कि उस ऊँटनी की कूचें काट दीं, रसूल को झुठलाते रहे जिस पर उन्हें तीन दिन की मोहलत मिली और आख़िर ग़ारत कर दिये गए। उनकी यह ऊँटनी भी अल्लाह तआला की वहदानियत की एक निशानी थी और उसके रसूल की सदाक़त की अलामत थी। लेकिन इन लोगों ने फिर भी कुफ़्र किया उसका पानी बंद किया बिल आख़िर उसे क़त्ल कर दिया जिसकी पादाश में पहले से लेकर आख़िर तक सब मार डाले गए। और अल्लाह तआला ग़ालिब की पकड़ में आ गए, आयतें सिर्फ़ धमकाने के लिए होती हैं कि वह इब्रत व नसीहत हासिल कर लें।

मरवी है कि हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के ज़माने में कूफ़ा में ज़लज़ला आया तो आपने फ़र्माया अल्लाह तआला चाहता है कि तुम उसकी जानिब झुको, तुम्हें फ़ौरन उसकी तरफ़ मुतवज्जा होना चाहिए। (तब्री : 17/478) हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में मदीना मुनव्वरा में कई बार झटके महसूस हुए तो आपने फ़र्माया, वल्लाह! तुमने ज़रूर कोई नई बात की है देखो! अगर अब ऐसा हुआ तो मैं तुम्हें सख़्त सज़ाएँ दूँगा। मुत्तफ़क़ अलैहि हदीस में है कि आपने फ़र्माया, ''सूरज चाँद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो

निशानियाँ हैं यह किसी की मौत व ह़यात से ग्रहण में नहीं आतीं बल्कि अल्लाह तआ़ला इनसे अपने बन्दों को ख़ौफ़ज़दा कर देता है जब तुम यह देखो तो ज़िक्रुल्लाह दुआ और इस्तिग़फ़ार की त़रफ़ झुक पड़ो। ऐ उम्मते मुहम्मद! वल्लाह! अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा ग़ैरत वाला कोई नहीं कि उसके लौण्डी ग़ुलाम ज़िनाकारी करें। ऐ उम्मते मुहम्मद! वल्लाह! जो मैं जानता हूँ अगर तुम जानते तो बहुत कम हँसते और बहुत ज़्यादा रोते।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल कुसूफ़, बाब अस्सदक़तु फ़िल कुसूफ़ : 1044; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 901; अबूदाऊद : 1191; बैहक़ी : 3/338)

***

وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝۶۰

तर्जुमा : **''याद कर जबकि हमने तुझसे फ़र्मा दिया कि तेरे रब ने लोगों को घेर लिया है। जो नुमाइश हमने तुझे दिखाई थी वह लोगों के लिए स़ाफ़ आज़माइश ही थी और इसी त़रह वह दरख़्त भी जिससे क़ुरआन में इज़्हारे नफ़रत किया गया है। हम उन्हें डरा रहे हैं लेकिन यह उन्हें और बड़ी सरकशी में बढ़ा रहा है।'' (60)**

मेअ़राज का सब मंज़र आप (ﷺ) ने आँखों से देखा (आयत 60) : अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआ़ला अपने रसूल (ﷺ) को तब्लीग़े दीन की रग़बत दिला रहा है और आपके बचाव की ज़िम्मेदारी ले रहा है कि सब लोग उसी की क़ुदरत तले हैं वह सब पर ग़ालिब है सब उसके मातह़त हैं वह उन सबसे तुझे बचाता रहेगा। जो हमने तुझे दिखाया वह लोगों की एक स़रीह़ आज़माइश है। यह दिखाना मेअ़राज वाली रात था जो आपकी आँखों ने देखा। नफ़रती दरख़्त से मुराद ज़क़्क़ूम का दरख़्त है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (वमा जअ़ल्नर्रुअयल्लती अरैनाका इल्ला फ़ित्नतल् लिन्नास) : 4716) बहुत से ताबेईन और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि यह दिखाना आँख का दिखाना था जो मेअ़राज की रात में दिखाया गया था। (त़बरी : 17/481) मेअ़राज की ह़दीसें बहुत तफ़्सील के साथ इस सूरत के शुरू में बयान हो चुकी हैं।

यह भी गुज़र चुका है कि मेअ़राज के वाक़िये को सुनकर बहुत से मुसलमान मुर्तद हो गए और ह़क़ से फिर गए क्योंकि उनकी अ़क़्ल में यह न आया तो अपनी जिहालत से उसे झूठा जाना और दीन को छोड़ बैठे उनके बरख़िलाफ़ पूरे ईमान वाले अपने यक़ीन में और बढ़ गए और उनके ईमान और मज़बूत हो गए, साबित क़दमी और इस्तिक़्लाल में ज़्यादा हो गए। पस इस वाक़िया को लोगों की आज़माइश और उनके इम्तिह़ान का ज़रिया अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआ़ला ने कर दिया। हुज़ूर (ﷺ) ने जब ख़बर दी और क़ुरआन में आयत उतरी कि दोज़ख़ियों को ज़क़्क़ूम का दरख़्त खिलाया जाएगा और आपने उसे देखा भी तो काफ़िरों ने उसे सच न माना और अबू जहल मल्ऊ़न मज़ाक़ उड़ाते हुए कहने लगा लाओ खजूर और मक्खन लाओ और उसका ज़क़्क़ूम

करो यानी दोनों को मिला दो और ख़ूब शोक़ से खाओ पस यही ज़क़्क़ूम है फिर उस ख़ूराक से घबराने के क्या मअ़नी? एक क़ौल यह भी है कि उससे मुराद बनू उमय्या हैं लेकिन यह क़ौल बिलकुल ज़ईफ़ और ग़रीब है पहले क़ौल के ही क़ाइल तमाम वह मुफ़स्सिरीन हैं जो इस आयत को मेअ़राज के बारे में मानते हैं जैसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) मसरूक़ अबू मालिक हसन बसरी (रहि.) वग़ैरह सहल बिन सईद (रह.) कहते हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़लाँ क़बीले वालों को अपने मिम्बर पर बंदरों की तरह नाचते हुए देखा और आपको उससे बहुत ग़म हुआ। फिर इंतिक़ाल तक आप पूरी हँसी से हँसते हुए नहीं दिखाई दिये उसी की तरफ़ इस आयत में इशारा है (तब्री : 17/484, 486; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा) लेकिन यह सनद बिलकुल ज़ईफ़ है। मुहम्मद बिन हसन बिन ज़बाला मतरूक रावी है और उनके उस्ताद भी बिलकुल ज़ईफ़ हैं। ख़ुद इमाम इब्ने जरीर (रह.) का पसंदीदा क़ौल भी यही है कि मुराद इससे मेअ़राज की रात है और शजरतज़्ज़क़्क़ूम है क्योंकि मुफ़स्सिरीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है हम काफ़िरों को अपने अ़ज़ाबों वग़ैरह से डरा रहे हैं लेकिन वह अपनी ज़िद, तकब्बुर, हटधर्मी और बेईमानी में और बढ़ रहे हैं।

***

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ
طِيْنًا ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ كَرَّمْتَ عَلَىَّ ؗ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ
جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ
وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا
غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِىْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾

तर्जुमा : "जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम (عليه السلام) को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दा किया। वह कहने लगा कि क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है। (61) अच्छा देख ले इसे तूने मुझ पर बुज़ुर्गी तो दी है लेकिन अगर मुझे भी क़ियामत तक तूने मोहलत दी तो मैं इसकी औलाद को सिवाए थोड़े लोगों के अपने बस में कर लूँगा। (62) इर्शाद हुआ कि जा! इनमें से जो भी तेरे ताबेदार हो जाएगा तो तुम सबकी सज़ा दोज़ख़ है

जो पूरा पूरा बदला है। (63) इनमें से जिसे भी तू अपनी आवाज़ से बहका ले और इन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला और इनके माल और औलाद में इनसे अपना भी साझा लगा और इन्हें दिल बहलावे दिया कर, इनसे शैतान के जितने भी वादे हुआ करते हैं सबके सब सरासर फ़रेब और धोखाधड़ी है।(64) मेरे सच्चे बन्दों पर तेरा कोई क़ाबू नहीं तेरा रब कारसाज़ी करने वाला काफ़ी है।'' (65)

इब्लीस की हठधर्मी (आयत : 61-65) : इब्लीस की पुरानी दुश्मनी से इंसान को आगाह किया जा रहा है कि वह तुम्हारे वालिद मुहतरम हज़रत आदम (ﷺ) का खुला दुश्मन था उसकी औलाद बराबर इसी तरह तुम्हारी दुश्मन है, सज्दे का हुक्म सुनकर सब फ़रिश्तों ने तो सर झुका दिया लेकिन उसने तकब्बुर जताया उसे हक़ीर समझा और साफ़ इंकार कर दिया कि नामुम्किन है कि मेरा सर किसी मिट्टी से बने हुए इंसान के सामने झुके। मैं इससे कहीं अफ़ज़ल हूँ, मैं आग हूँ यह ख़ाक है। फिर उसकी ढिटाई देखिए कि अल्लाह तआला जल्ल व अला के दरबार में गुस्ताख़ाना लहजे में कहता है कि अच्छा इसे अगर तूने मुझ पर फ़ज़ीलत दी तो क्या हुआ मैं भी इसकी औलाद को बर्बाद करके ही छोड़ूँगा सबको अपना ताबेदार बना लूँगा और बहका दूँगा कुछ यूँ ही से तो मेरे फंदे से छूट जाएँगे बाक़ी सबको ग़ारत कर दूँगा।

शैतान को मोहलत दी गई : इब्लीस ने अल्लाह तआला से मोहलत माँगी, अल्लाह तआला ने मंज़ूर कर ली और इर्शाद हुआ कि वक़्ते मालूम तक मोहलत है। (15/हिज्र : 37) तेरी और तेरी ताबेदारों की बुराइयों का बदला जहन्नम है जो पूरी सज़ा है। अपनी आवाज़ से जिसे तू बहका सके बहका ले यानी गानों से और तमाशों से उन्हें बहकाता रह। (तब्री : 17/490) जो भी अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी की तरफ़ बुलाने वाली सदा हो वह शैतानी आवाज़ है। (तब्री : 17/491) इसी तरह तू अपने प्यादे और सवार लेकर जिस पर तुझसे हमला हो सके, कर ले (रजिलुन) जमा है (राजिल) की जैसे रकिबुन जमा है राकिब की और सहिबुन जमा है साहिब की। मतलब यह है कि जिस क़द्र तुझसे हो सके उन पर अपना तसल्लुत और इक़्तिदार जमा। यह अम्र क़द्री है न कि हुक्म। शैतानों की यही ख़स्लत है कि वह बंदगाने अल्लाह तआला को भड़काते और बहकाते रहते हैं उन्हें गुनाहों पर आमादा करते रहते हैं अल्लाह तआला की मआसियत में जो सवारी पर हो और पैदल हो वह शैतानी लश्कर में है। (तब्री : 17/492) ऐसे जिन्न भी हैं और इंसान भी हैं जो उसके मुतीअ हैं। (तब्री : 17/491) जब किसी पर आवाज़ें उठाई जाएँ तो अरब कहते हैं (अज्लबा फुलानुन अला फुलान) इसी से यह माख़ूज़ है, आपका यह फ़र्मान कि घुड़दौड़ में जलिबुन नहीं। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद,बाब फ़िल जलिबिन अलल ख़ैलि फ़िस्सिबाक़ : 2581; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 1123; नसाई : 3337) वह भी उससे माख़ूज़ है। जलिबा का इश्तिक़ाक़ भी इसी से है यानी आवाज़ों का बुलंद होना।

माल और औलाद में शिर्कत का मफ़्हूम : उनके मालों में और औलादों में भी तू शरीक रह। यानी अल्लाह की नाफ़र्मानियों में उनका माल ख़र्च करा। (तब्री : 17/493) सूदख़ोरी उनसे करा बुराई से माल जमा करें और हरामकारियों में ख़र्च करें हलाल जानवरों को अपनी ख़्वाहिश से हराम क़रार दें वग़ैरह। औलाद में शिर्कत

यह है कि मस्लन ज़िनाकारी जिससे औलाद हो। (तब्री : 17/494) जो औलाद बचपन में बवजह बेवक़ूफ़ी उनके माँ बाप ने ज़िन्दा दफ़न कर दी हो या मार डाली हो उसे यहूदी नसरानी मजूसी वग़ैरह बना दिया हो। (तब्री : 17/494, 495) औलादों के नाम अब्दुल हारिस, अब्दे शम्स और अब्दे फ़ुलान रखा हो। ग़र्ज़ किसी सूरत में भी शैतान को उसमें दाख़िल किया हो या उसको साथ किया हो यही शिर्कत शैतान की है। सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है कि मैंने अपने बन्दों को एक तरफ़ा मुवह्हिद पैदा किया, फिर शैतान ने आकर उन्हें बहका दिया और हलाल चीज़ें हराम कर दीं।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अस्सिफ़ातुल्लती युअरफ़ु बिहा फ़िद्दुनिया अहलुल जन्नता व अहलुन्नार : 2865)

बुख़ारी व मुस्लिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "तुममें से जो अपनी बीवी के पास जाने का इरादा करे यह पढ़ ले (अल्लाहुम्मा जन्निब्नश्शैताना व जन्निबिश्शैताना मा रज़क़्तना) यानी या अल्लाह! तू हमें शैतान से बचा और उसे भी जो तू हमें अता करे, तो अगर उसमें कोई बच्चा अल्लाह की तरफ़ से ठहर जाएगा तो उसे हर्गिज़ हर्गिज़ शैतान कोई ज़रर न पहुँचा सकेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब तस्मियतु अला कुल्लि हालिन व इन्दल वक़ाअ : 141; सहीह मुस्लिम : 1434; अबूदाऊद : 2116; तिर्मिज़ी : 1092; इब्ने माजा : 1919; अहमद : 1/217) फिर फ़र्माता है कि जा तू इन्हें धोखे के झूठे दावे दिया कर। चुनाँचे क़ियामत के दिन यह ख़ुद कहेगा कि अल्लाह के वादे तो सब सच्चे थे और मेरे वादे सब ग़लत थे फिर फ़र्माता है कि मेरे मोमिन बन्दे मेरी हिफ़ाज़त में हैं। मैं उन्हें शैताने रजीम से बचाता रहूँगा। अल्लाह तआला की वकालत उसकी हिफ़ाज़त उसकी नुसरत उसकी ताईद बन्दों को काफ़ी है। मुस्नद अहमद में रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मोमिन अपने शैतान पर इस तरह क़ाबू पा लेता है जैसे वह शख़्स जो किसी जानवर को लगाम चढ़ाये हुए हो।" (अहमद : 2/380; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने लहीआ अन्अन)

***

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٦٦﴾

तर्जुमा : "तुम्हारा परवरदिगार वह है जो तुम्हारे लिए दरिया में कश्तियाँ चलाता है ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो। वह तुम्हारे ऊपर बहुत ही मेहरबान है।" (66)

कश्तियाँ तिजारत का ज़रिया हैं (आयत 66) : अल्लाह तआला अपना एहसान बतलाता है कि उसने अपने बन्दों को आसानी और सहूलत के लिए और उनकी तिजारत व सफ़र के लिए दरियाओं में कश्तियाँ चला दी हैं उसके फ़ज़्लो करम लुत्फ़ो रहम का एक निशान यह भी है कि तुम दूरदराज़ देशों में आ जा सकते हो और अल्लाह का फ़ज़्ल यानी अपनी रोज़ियाँ हासिल कर सकते हो।

***

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۭ
وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾

तर्जुमा : "समुन्द्र में मुसीबत पहुँचते ही जिन्हें पुकारते थे सबको गुम कर जाते हैं सिर्फ़ वही अल्लाह तआला बाक़ी रह जाता है फिर जब वह तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लाता है तो तुम मुँह फेर लेते हो। इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है। (67) तो क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो गए हो कि वह तुम्हें ख़ुश्की के किसी किनारे में धंसा दे या तुम पर पत्थरों की आँधी भेज दे फिर तुम अपने लिए किसी निगहबान को न पा सको।"(68)

समुन्द्रों में भी कारसाज़ अल्लाह ही है (आयत 67) : अल्लाह तबारक व तआला का इर्शाद हो रहा है कि बन्दे मुसीबत के वक़्त तो ख़ुलूस के साथ अपने परवरदिगार की तरफ़ झुकते हैं और उससे दिली दुआएँ करने लगते हैं और जहाँ वह मुसीबत अल्लाह तआला ने टाल दी कि यह आँखें फेर लेते हैं। फ़तहे मक्का के वक़्त जबकि अबू जहल का लड़का इक्रिमा हब्शा जाने के इरादे से भागा और कश्ती में बैठकर चला, इत्तिफ़ाक़न कश्ती तूफ़ान में फंस गई, मुख़ालिफ़ हवा के झोंके उसे पत्ते की तरह हिलाने लगे उस वक़्त कश्ती में जितने कुफ़्फ़ार थे सब एक दूसरे से कहने लगे, इस वक़्त सिवाए अल्लाह तआला के और कोई कुछ काम नहीं आने का उसी को पुकारो। इक्रिमा के दिल में उसी वक़्त ख़याल आया कि जब पानी में सिर्फ़ वही काम कर सकता है तो ज़ाहिर है कि सूखी जगह में भी वही काम आ सकता है। ऐ अल्लाह! मैं नज़्र मानता हूँ कि तूने मुझे इस आफ़त से बचा लिया तो मैं सीधा मुहम्मद (ﷺ) के हाथ में हाथ दे दूँगा। और यक़ीनन वह मुझ पर मेहरबानी और रहमो करम करेंगे। चुनाँचे समुन्द्र से पार होते ही वह सीधे रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया फिर तो इस्लाम के पहलवान साबित हुए। (हाकिम : 3/241; बिग़ैरि हाज़ल्लफ़्ज़ि व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुंक़तअ) पस फ़र्माता है कि समुन्द्र की उस मुसीबत के वक़्त तो अल्लाह तआला के सिवा सबको भूल जाते हो। लेकिन फिर उस मुसीबत के हटते ही अल्लाह तआला की तौहीद हटा देते हो और दूसरों से इल्तिजा करने लगते हो, इंसान है ही ऐसा नाशुक्रा कि नेअमतों को भुला बैठता है बल्कि मुंकिर हो जाता है हाँ! जिसे अल्लाह तआला बचा ले और तौफ़ीक़ दे।

समुन्द्र में डुबोने वाला ख़ुश्की में भी धंसा सकता है (आयत 68) : रब्बुल आलमीन लोगों को डरा रहा है कि जो तरी में डुबो सकता है वह ख़ुश्की में धंसाने की भी क़ुदरत रखता है।

फिर वहाँ तो सिर्फ़ उसी को पुकारना और यहाँ उसके साथ औरों को शरीक करना। यह किस क़द्र नाइंसाफ़ी है? वह तो तुम पर पत्थरों की बारिश बरसाकर तुम्हें हलाक कर सकता है। (तबरी : 17/498) जैसे

लूतियों पर हुई थी जिसका बयान ख़ुद क़ुरआन में कई जगह है। सूरह मुल्क में फ़र्माया कि, क्या तुम्हें उस अल्लाह तआला का डर नहीं जो आसमानों में है कि कहीं वह तुम्हें ज़मीन में न धंसा दे कि यकायक ज़मीन जुंबिश करने लगे। क्या तुम्हें आसमानों वाले अल्लाह तआला का डर नहीं कि कहीं वह तुम पर पत्थर न बरसा दे फिर जान लो कि डराने का अंजाम क्या कुछ होता है। (67/मुल्क : 16, 17) फिर फ़र्माता है कि उस वक़्त तुम न अपना मददगार पाओगे न दस्तगीर न वकील, न कारसाज़, न निगहबान, न पासबान।

***

اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾

तर्जुमा : "क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ हो गए कि अल्लाह तआला फिर तुम्हें दोबारा दरिया के सफ़र में ले आये और तुम पर तेज़ तुंद हवाओं के झोंके भेज दे और तुम्हारे कुफ़्र के बाइस तुम्हें डुबो दे फिर तुम अपने लिए हम पर उसका दावा करने वाला किसी को न पाओगे। (69) यक़ीनन हमने औलादे आदम को बड़ी इज़्ज़त दी और उन्हें ख़ुश्की और तरी की सवारियाँ दीं और उन्हें पाकीज़ा चीज़ों की रोज़ियाँ दीं और अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर उन्हें फ़ज़ीलत अ़ता की।" (70)

(आयत 69, 70) : इर्शाद हो रहा है कि ऐ इंकार करने वालों! समुन्द्र में तुम मेरी तौहीद के क़ाइल हुए बाहर आकर फिर इंकार कर गए तो क्या यह नहीं हो सकता कि फिर तुम दोबारा दरियाई सफ़र करो और तेज़ तुन्द हवा के थपेड़े तुम्हारी कश्ती को डगमगा दें और आख़िर डुबो दें। (तब्री : 17/500) और तुम्हें तुम्हारे कुफ़्र का मज़ा आ जाए फिर तो कोई मददगार खड़ा न हो, न कोई ऐसा मिल सके कि हमसे तुम्हारा बदला ले, हमारा पीछा कोई नहीं कर सकता, किसकी मजाल कि हमारे काम में उँगली उठाए। (तब्री : 17/500)

तमाम मख़्लूक़ात पर इंसान को फ़ज़ीलत : सबसे अच्छी पैदाइश इंसान की है। जैसे फ़र्मान है (لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ) (95/वत्तीन : 4) हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त पर बनाया है वह अपने पैरों पर सीधा खड़ा होकर सही चाल चलता है अपने हाथों से तमीज़ के साथ अपनी गिज़ा खाता है और हैवानात हाथ पैर से चलते हैं, मुँह से चारा चुगते हैं। फिर इसे समझ बूझ दी है जिससे नफ़ा नुक़्सान भलाई बुराई सोचता है। दीनी दुनियावी फ़ायदा मालूम कर लेता है इसकी सवारी के लिए ख़ुश्की में जानवर चौपाये दिए घोड़े ख़च्चर

ऊँट वग़ैरह और पानी के सफ़र के लिए इसे कश्तियाँ बनानी सिखा दीं इसे बेहतरीन ख़ुशगवार और ख़ुशज़ायक़ा खाने पीने की चीज़ें दीं, खेतियाँ हैं फल हैं गोश्त हैं दूध हैं और बेहतरीन बहुत सी ख़ुश ज़ायक़ेदार लज़ीज़ मज़ेदार चीज़ें फिर उम्दा मकानात रहने को अच्छे ख़ुशनुमा लिबास पहनने को क़िस्म क़िस्म के रंग बिरंगे के यहाँ की चीज़ें वहाँ और वहाँ की चीज़ें लाने ले जाने के अस्बाब उसके लिए मुहय्या कर दिए और मख़्लूक़ में से उमूमन हर एक पर इसे बरतरी बख़्शी।

इंसान फ़रिश्तों से भी अफ़ज़ल है : इस आयते करीमा से इस अम्र पर इस्तिदलाल किया गया है कि इंसान फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है, हज़रत ज़ेद बिन असलम (रह.) कहते हैं कि फ़रिश्तों ने कहा, ऐ अल्लाह! तूने औलादे आदम को दुनिया दे रखी है कि वह खाते पीते हैं और मोज मज़े करते रहे हैं तो तू इसके बदले हमें आख़िरत में ही अता कर क्योंकि हम इस दुनिया से महरूम हैं। इसके जवाब में अल्लाह जल्ल शानुहू ने इर्शाद फ़र्माया कि मुझे अपनी इज़्ज़त और अपने जलाल की क़सम! इसकी नेक औलाद को जिसे मैंने अपने हाथ से पैदा किया, उसके बराबर में हर्गिज़ न करूँगा जिसे मैंने कलिमा कुन से पैदा किया है। यह रिवायत मुर्सल है लेकिन और सनद से मुत्तसिल भी मरवी है। इब्ने असाकिर में है कि फ़रिश्तों ने कहा, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें भी तूने पैदा किया और बनू आदम का ख़ालिक़ भी तू ही है उन्हें तो खाना पानी दे रहा है कपड़े लत्ते वह पहनते हैं, निकाह शादियाँ वह करते हैं, सवारियाँ उनके लिए हैं, राहत व आराम इन्हें हासिल हैं। इनमें से किसी चीज़ के हिस्सेदार हम नहीं। ख़ैर अगर दुनिया में इनके लिए है तो यह चीज़ें आख़िरत में तू हमारे लिए कर दे इसके जवाब में जनाब बारी तआला ने फ़र्माया, जिसे मैंने अपने हाथ से पैदा किया है और अपनी रूह जिसमें मैंने फूँकी है उसे मैं उस जैसा न करूँगा जिसे मैंने कह दिया कि हो जा और वह हो गया। (इसकी सनद में मुहम्मद बिन अय्यूब राज़ी झूठा रावी है। (अल्मीज़ान : 3/487; रक़म : 7259) लिहाज़ा यह सनद मौज़ूअ है।) तब्रानी में है कि "क़ियामत के दिन इब्ने आदम से ज़्यादा बुज़ुर्ग अल्लाह के यहाँ कोई न होगा। पूछा गया कि फ़रिश्ते भी नहीं? फ़र्माया, फ़रिश्ते भी नहीं वह तो मजबूर हैं जैसे सूरज चाँद।" (तब्रानी व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में उबेदुल्लाह बिन तमाम ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 3/4; रक़म : 5348) यह रिवायत बहुत ही ग़रीब है।

***

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ

وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾ وَمَن كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٧٢﴾

तर्जुमा : "जिस दिन हम हर जमाअत को उसके पेशवा समेत बुलाएँगे फिर जिनका भी अमलनामा दाएँ हाथ में दे दिया गया वह तो शोक़ से अपना नामा-ए-आमाल पढ़ने लगेंगे और धागे बराबर भी ज़ुल्म न किये जाएँगे। (71) और जो कोई इस जहान में अंधा रहा वह आख़िरत में भी अंधा और रास्ते से बहुत ही भटका हुआ रहेगा।" (72)

क़ियामत के दिन इमाम से क्या मुराद है? (आयत 71, 72) : इमाम से मुराद यहाँ नबी हैं हर उम्मत क़ियामत के दिन अपने नबी के साथ बुलाई जाएगी। जैसे इस आयत में है (وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ) (10/यूनुस : 47) हर उम्मत का रसूल है फिर जब उनके रसूल आएँगे तो उनके बीच अदल के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा।

अहले हदीस की फ़ज़ीलत : कुछ सलफ़ का क़ौल है कि इसमें अहले हदीस की बहुत बड़ी बुज़ुर्गी है इसलिए कि उनके इमाम हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हैं। इब्ने ज़ेद (रह.) कहते हैं यहाँ इमाम से मुराद किताबुल्लाह है जो उनकी शरीअत के बारे में उतरी थी। इब्ने जरीर (रह.) इस तफ़्सीर को बहुत पसंद करते हैं और उसी को मुख़्तार कहते हैं। मुजाहिद (रह.) कहते हैं मुराद इससे उनकी किताबें हैं। मुम्किन है किताब से मुराद या तो अहकाम की किताबुल्लाह हो या नामा-ए-आमाल चुनाँचे इब्ने अब्बास (रज़ि.) इससे आमाल नामा मुराद लेते हैं। (तब्री : 17/502) अबुल आलिया हसन ज़ह्हाक (रहि.) भी यही कहते हैं। (तब्री : 17/502, 503) और यही ज़्यादातर तर्जीह वाला क़ौल है जैसे फ़र्माने इलाही है (وَ كُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ) (36/यासीन : 12) हर चीज़ का हमने ज़ाहिर किताब में एहाता कर लिया है और आयत में है (وَ وُضِعَ الْكِتٰبُ) (18/कहफ़ : 49) यानी नामा-ए-आमाल बीच में रख दिया जाएगा उस वक़्त तू देखेगा कि गुनहगार इसकी तहरीर से ख़ौफ़ज़दा हो रहे होंगे, आख़िर तक। और आयत में है हर उम्मत को तू घुटनों के बल गिरी हुई देखेगा। हर उम्मत अपनी किताब की जानिब बुलाई जा रही होगी। आज तुम्हें तुम्हारे किये हुए आमाल का बदला दिया जाएगा। यह है हमारी किताब जो तुम पर हक़ व इंसाफ़ के साथ बोलेगी जो कुछ तुम करते रहे हम बराबर लिखते रहते थे। (45/जासिया : 28, 29) यह याद रहे कि यह तफ़्सीर पहली तफ़्सीर के ख़िलाफ़ नहीं एक तरफ़ नामा-ए-आमाल हाथ में होगा दूसरी जानिब ख़ुद नबी सामने मौजूद होंगे। जैसे फ़र्मान है (وَ اَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَ وُضِعَ الْكِتٰبُ وَ جِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَ الشُّهَدَآءِ) (39/ज़ुमर : 69) ज़मीन अपने रब के नूर से चमकने लगेगी नामा-ए-आमाल रख दिया जाएगा और नबियों को और गवाहों को मौजूद कर दिया जाएगा और आयत में है (فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا) (4/निसाअ : 41) यानी क्या केफ़ियत होगी उस वक़्त जबकि हर उम्मत का हम गवाह लाएँगे और तुझे उस तेरी उम्मत पर गवाह करके लाएँगे। लेकिन यहाँ इमाम से मुराद नामा-ए-आमाल है इसीलिए इसके बाद ही फ़र्माया कि जिनके दायें हाथ में दे दिया गया। वह तो अपनी नेकियाँ फ़रहत व सुरूर, ख़ुशी व राहत से पढ़ने लगेंगे बल्कि दूसरो को दिखाते और पढ़वाते फिरेंगे। इसी का मज़ीद बयान सूरह हाक़्क़ा में है। फ़तील से मुराद लम्बा धागा है जो खजूर की गुठली के बीच में होता है बज़्ज़ार में है नबी (ﷺ) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि ''एक शख़्स को बुलवाकर उसका नामा-ए-आमाल उसके दाएँ हाथ में दिया जाएगा उसका जिस्म बढ़ जाएगा चेहरा चमकने लगेगा सर पर चमकते हुए हीरों का ताज रख दिया जाएगा, यह अपने गिरोह की तरफ़ बढ़ेगा उसे उस हाल में आता देखकर वह सब आरज़ू करने लगेंगे कि ऐ अल्लाह! हमें भी यह अता कर और हमें उसमें बरकत दे वह आते ही कहेगा कि ख़ुश हो जाओ, तुममें से हर एक को यही मिलना है।

कुफ़्फ़ार बरोज़े क़ियामत अंधे होंगे : लेकिन काफ़िर का चेहरा स्याह हो जाएगा, उसका जिस्म बढ़ जाएगा,

उसे देखकर उसके साथी कहने लगेंगे उससे अल्लाह तआला की पनाह या उसकी बुराई से अल्लाह की पनाह ऐ अल्लाह! इसे हमारे पास न ला, वहीं वह आ जाएगा। यह कहेंगे, ऐ अल्लाह! इसे रुस्वा कर यह जवाब देगा अल्लाह तआला तुम्हें ग़ारत करे, तुममें से हर शख़्स के लिए यही अल्लाह तआला की मार है।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति बनी इस्राईल : 3136; व सनदुहू हसन; हाकिम : 2/242, 243; इब्ने हिब्बान : 7349) इस दुनिया में जिसने अल्लाह तआला की आयतों से उसकी किताब से उसकी राहे हिदायत से चश्मपोशी की वह आख़िरत में सचमुच अंधा होगा और दुनिया से भी ज़्यादा राह भूले हुए होगा, अयाज़न बिल्लाह। (तब्री : 17/504, 505)

***

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُۥ ۖ وَإِذًا لَّاتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ أَن ثَبَّتْنَٰكَ لَقَدْ كِدتَّ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيلًا ﴿٧٤﴾ إِذًا لَّأَذَقْنَٰكَ ضِعْفَ الْحَيَوٰةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

तर्जुमा : ''यह लोग जो तुझे इस वही से जो हमने तुझ पर उतारी है बहका देना चाह रहे थे कि तू उसके सिवा कुछ और ही हमारे नाम से गढ़ गढ़ा ले तब तो तुझे यह लोग अपना दिली दोस्त बना लेते। (73) अगर हम तुझे साबित क़दम न रखते तो बहुत मुम्किन था कि उनकी तरफ़ क़द्रे क़लील माइल हो ही जाता। (74) फिर तो हम तुझे दोहरा अज़ाब तो दुनिया का करते और दोहरा ही मौत का भी फिर तो तू अपने लिए हमारे मुक़ाबले में किसी को मददगार भी न पाता।'' (75)

अल्लाह तआला ही पैग़म्बर (ﷺ) को दीन पर क़ायम रखता है (आयत 73-75) : मक्कार और फ़ुज्जार की चालाकियों से अल्लाह तआला हमेशा अपने रसूलों को बचाता रहा। आपको मासूम और साबित क़दम ही रखा ख़ुद ही आपका वली और नासिर रहा, अपनी हिफ़ाज़त और सियानत में हमेशा आपको रखा। आपकी ताईद और नुसरत बराबर करता रहा। आपके दीन को दुनिया के तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दिया। आपके मुख़ालिफ़ीन के बुलंद बांग इरादों को पस्त कर दिया, मश्रिक़ से मग़्रिब तक आपका कलिमा फैला दिया। उसी का बयान इन आयतों में है। अल्लाह तआला आप पर क़ियामत तक बेशुमार दुरूद सलाम भेजता रहे, आमीन।

***

وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا

قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾

तर्जुमा : "यह तो तेरे क़दम इस सरज़मीन से उखाड़ने ही लगे थे कि तुझे इससे निकाल दें फिर तो यह भी तेरे बाद बहुत ही कम ठहरना पाते। (76) जैसा दस्तूर इनका जो तुझसे पहले रसूल हमने भेजे, तू हमारे दस्तूर में कभी रद्दोबदल न पाएगा।" (77)

जब यहूदियों ने नबी (ﷺ) को शाम जाने का मश्वरा दिया (आयत 76, 77) : कहते हैं कि यहूदियों ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा था कि आपको मुल्के शाम चला जाना चाहिए वही नबियों का वतन है। इस शहर मदीना को छोड़ देना चाहिए इस पर यह आयत उतरी लेकिन यह क़ौल कमज़ोर है इसलिए कि यह आयत मक्की है और मदीना में आपकी रिहाइश इसके बाद हुई है। कहते हैं कि तबूक के बारे में यह आयत उतरी है। यहूदियों के कहने से कि शाम जो नबियों की और महशर की ज़मीन है आपको वहीं रहना चाहिए अगर आप सच्चे पैग़म्बर हैं तो वहाँ चले जाइए। आपने उन्हें एक हद तक सच्चा समझा। ग़ज़्व-ए-तबूक से आपकी निय्यत यही थी लेकिन तबूक पहुँचते ही सूरह बनी इस्राईल की आयतें उतरीं, उसके बाद कि सूरत ख़त्म कर दी गई थी (वइन कादू) से (तहवीलन) तक और अल्लाह तआला ने आपको मदीने की वापसी का हुक्म दिया और फ़र्माया, वहीं आपकी मौत ज़ीस्त (ज़िन्दगी) वहीं से दोबारा उठकर खड़ा होना है लेकिन इसकी सनद भी नज़र से ख़ाली नहीं और साफ़ ज़ाहिर है कि यह वाक़िया भी ठीक नहीं। तबूक का ग़ज़्वा यहूद के कहने से न था बल्कि अल्लाह तआला का फ़र्मान मौजूद है (قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ) (9/तौबा : 213) जो कुफ़्फ़ार तुम्हारे आसपास हैं इनसे जिहाद करो। और आयत में है कि जो अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखते अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) के हरामकर्दा को हराम नहीं समझते हैं और हक़ को क़बूल नहीं करते, ऐसे अहले किताब से अल्लाह तआला की राह में जिहाद करो यहाँ तक कि वह ज़िल्लत के साथ जिज़्या देना मंज़ूर कर लें। (9/तौबा : 29) और वजह इस ग़ज़्वे की यह थी कि आपके जो अस्हाब (रज़ि.) जंगे मोता में शहीद कर दिये गए थे उनका बदला लिया जाए, वल्लाहु आलम! और अगर मुंदर्जा बाला वाक़िया सही हो जाए तो इसी पर वह हदीस महमूल की जाएगी जिसमें है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मक्का मदीना और शाम में क़ुरआन नाज़िल हुआ है।" (तब्रानी : 7717; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/157) वलीद (रह.) तो इसकी शरह में लिखते हैं कि शाम से मुराद बैतुल मक़्दिस है लेकिन शाम से मुराद तबूक क्यूँ न ली जाए जो बिलकुल साफ़ और बहुत दुरुस्त है, वल्लाहु आलम!

एक क़ौल यह है कि इससे मुराद काफ़िरों का वह इरादा है जो उन्होंने मक्के से जिलावतन करने के बारे में किया था चुनाँचे यही हुआ भी कि जब उन्होंने आपको निकाला फिर यह भी वहाँ ज़्यादा मुद्दत न गुज़ार सके अल्लाह तआला ने फ़ौरन ही आपको ग़ालिब किया। डेढ़ साल ही गुज़रा था कि बद्र की लड़ाई बग़ैर किसी

तैयारी और ख़बर के अचानक हो गई और वहीं काफ़िरों का और कुफ़्र का धड़ टूट गया। उनके शरीफ़ रईस तहे तेग़ हुए, उनकी शानो शौकत खाक में मिल गई, उनके सरदार क़ैद में आ गये। पस फ़र्माया कि यही आदत पहले से जारी है अगले रसूलों के साथ भी यही हुआ कि कुफ़्फ़ार ने जब उन्हें तंग किया और देश निकाला दिया फिर वह भी बच न सके, अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें ग़ारत और बेनिशान कर दिया। हाँ! चूँकि हमारे पैग़म्बर रसूले रहमत थे इसलिए कोई आसमानी आम अज़ाब उन काफ़िरों पर न आया। जैसे फ़र्मान है (وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ) (8/अन्फ़ाल : 33) यानी तेरी मौजूदगी में अल्लाह तआला इन्हें अज़ाब न करेगा।

***

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿۷۸﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾

तर्जुमा : ''नमाज़ को क़ायम रख आफ़ताब के ढलने से लेकर रात की तारीकी तक और फ़ज्र का कुरआन पढ़ना भी यक़ीनन फ़ज्र के वक़्त का कुरआन पढ़ना हाज़िर किया गया हुआ है। (78) रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद की नमाज़ में कुरआन की तिलावत कर, यह ज़्यादती तेरे लिए है अन्क़रीब तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद में खड़ा करेगा।'' (79)

कुरआन में पाँचों नमाज़ों का ज़िक्र (आयत 78, 79) : नमाज़ों को वक़्तों की पाबन्दी के साथ अदा करने का हुक्म हो रहा है। (दुलूक) से मुराद गुरूब है या ज़वाल है। (तबरी : 17/514) इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने ज़वाल के क़ौल को पसंद किया है और अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल भी यही है। हज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं मैंने हुज़ूर (ﷺ) की और आपके साथ उन सहाबा (रज़ि.) की जिन्हें आप चाहें दावत का खाना खाकर सूरज ढल जाने के बाद आप मेरे यहाँ से चले। (हज़रत) अबूबक्र (रज़ि.) से फ़र्माया, चलो यही वक़्त दुलूके शम्स का है। (तबरी : 17/518) पस पाँचों नमाज़ों का वक़्त इस आयत में बयान हो गया। (ग़सक़) से मुराद अंधेरा है, जो कहते हैं कि 'दुलूक' से मुराद गुरूब है उनके नज़दीक ज़ुहर अस्र मग़रिब और इशा का बयान तो इसमें है और फ़ज्र का बयान (व कुरआनल फ़ज्र) में है। हदीस से बतवातुर (बेइन्तिहा) क़ौल व अफ़आल हुज़ूर (ﷺ) से पाँचों नमाज़ों के औक़ात साबित हैं और मुसलमान बिहम्दिल्लाह अब तक इस पर हैं हर पिछले ज़माने के लोग अगले ज़माने वालों से बराबर लेते चले आते हैं जैसे कि इन मसाइल के बयान की जगह इसकी तफ़्सील मौजूद है, वल्हम्दु लिल्लाह! सुबह की तिलावते कुरआन पर दिन और रात के फ़रिश्ते आते हैं। (तबरी : 17/520; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरति बनी इस्राईल : 3135; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 670; अहमद : 2/474) सहीह बुख़ारी में है कि ''तंहा शख़्स की नमाज़ पर जमाअत की नमाज़ पच्चीस दर्जे फ़ज़ीलत रखती है, सुबह की नमाज़ के वक़्त दिन और रात के फ़रिश्ते इकट्ठे

होते हैं।'' उसे बयान करके रावी हदीस हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने फ़र्माया, तुम क़ुरआन की इस आयत को पढ़ लो (वक़ुरआनल फ़ज्रि) (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब क़ौलुहू (इन्ना क़ुरआनल फ़ज्रि कान मशहूदा...) : 4717; सहीह मुस्लिम : 649)

क़ुरआनल फ़ज्र का मअ़नी : बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''रात के और दिन के फ़रिश्ते तुममें बराबर पे दर पे आते रहते हैं। सुबह की और अ़सर की नमाज़ के वक़्त उनका इज्तिमाअ़ हो जाता है तुममें जिन फ़रिश्तों ने रात गुज़ारी वह जब चढ़ जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनसे पूछता है बावजूद यह कि वह उनसे ज़्यादा जानने वाला है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा? वह जवाब देते हैं कि हम इनके पास पहुँचे तो उन्हें नमाज़ में पाया और वापिस आए तो नमाज़ में छोड़कर आए।''(सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब फ़ज़्लु सलातिल अ़सर : 555; सहीह मुस्लिम : 232; अहमद : 2/486; इब्ने हिब्बान : 1737) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि यह चोकीदार फ़रिश्ते सुबह की नमाज़ में जमा होते हैं फिर यह चढ़ जाते हैं और वह ठहर जाते हैं। (त़ब्री : 17/521) इब्ने जरीर की एक हदीस में अल्लाह तआ़ला के नुज़ूल फ़र्माने और इस इर्शाद फ़र्माने का ज़िक्र किया है कि ''कोई है जो मुझसे इस्तिग़फ़ार करे और मैं इसे बख़्शूँ। कोई है कि मुझसे सवाल करे और मैं उसे दूँ। कोई है जो मुझसे दुआ करे और मैं उसकी दुआ को क़बूल करूँ। यहाँ तक कि सुबह तुलूअ़ हो जाती है पस उस वक़्त पर अल्लाह तआ़ला मौजूद होता है और रात के फ़रिश्ते और दिन के फ़रिश्ते जमा होते हैं।'' (इसकी सनद में ज़ियाद बिन मुहम्मद अंसारी मुंकरुल हदीस है। (अल्मीज़ान : 2/98; रक़म : 2988) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।)

पैग़म्बर (ﷺ) को नमाज़े तहज्जुद का हुक्म : फिर अल्लाह तआ़ला अपने पैग़म्बर (ﷺ) को तहज्जुद की नमाज़ का हुक्म करता है, फ़र्ज़ों का तो हुक्म है ही। सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) से पूछा गया कि फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कौनसी नमाज़ अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया, ''रात की नमाज़''(सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम बाब फ़ज़्ल सौमुल मुहर्रम : 1163; अबूदाऊदउ : 2429; इब्ने माजा : 742; अहमद : 2/303; मुस्नदे अबी यअ़ला : 6392) तहज्जुद कहते हैं नींद के बाद की नमाज़ को। लुग़त में मुफ़स्सिरीन की तफ़्सीरों में और हदीस में यह मौजूद है आपकी आदत भी यही थी कि सोकर उठते फिर तहज्जुद (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद बाब मन नामा अव्वलल्लैल व अहया आख़िरहू : 1146; सहीह मुस्लिम : 739) पढ़ते जैसे कि अपनी जगह बयान मौजूद है। हाँ! हसन बसरी (रह.) का क़ौल है कि जो नमाज़ इशा के बाद हो। (त़ब्री : 17/524) मुम्किन है कि इससे भी मुराद सो जाने के बाद हो। फिर फ़र्माया यह ज़्यादती तेरे लिए है कुछ तो कहते हैं तहज्जुद की नमाज़ औरों के बरख़िलाफ़ सिर्फ़ हुज़ूर (ﷺ) पर फ़र्ज़ थी।

कुछ कहते हैं यह ख़ुसूसियत इस वजह से है कि आपके तमाम अगले पिछले गुनाह माफ़ थे और उम्मतियों की इस नमाज़ की वजह से उनके गुनाह दूर हो जाते हैं। (त़ब्री : 17/565; अहमद : 5/255) हमारे इस हुक्म की बजाआवरी पर हम तुम्हें उस जगह खड़ा करेंगे जहाँ खड़ा होने पर तमाम मख़्लूक़ आपकी तारीफ़ें करेगी और ख़ुद ख़ालिक़े अकबर भी कहता है कि मक़ामे महमूद पर क़ियामत के दिन आप अपनी उम्मत की सिफ़ारिश के लिए जाएँगे ताकि उस दिन की घबराहट से आप उन्हें राहत दें। (त़ब्री : 17/526)

मक़ामे महमूद और हुज़ूर (ﷺ) के फ़ज़ाइल : हज़रत हुज़ेफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं "लोग एक ही मैदान में जमा किये जाएँगे पुकारने वाला अपनी आवाज़ उन्हें सुनाएगा, आँखे खुल जाएँगी, नंगे पैर, नंगे बदन होंगे, जैसे कि पैदा किये गए थे। सब खड़े होंगे, कोई भी बग़ैर अल्लाह की इजाज़त के बात न कर सकेगा। आवाज़ आएगी, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप कहेंगे (लब्बैक व सअदैक) ऐ अल्लाह! तमाम भलाई तेरे ही हाथ है बुराई तेरी जानिब से नहीं। राहयाफ़्ता वही है जिसे तू हिदायत बख़्शे। तेरा गुलाम तेरे सामने मौजूद है वह तेरी ही मदद से क़ायम है वह तेरी ही जानिब झुकने वाला है तेरी पकड़ से सिवाय तेरे दरबार के और कोई पनाह की जगह नहीं, तू बरकतों वाला और बुलंदियों वाला है, ऐ रब्बुल बैत! तू पाक है।"यह है मक़ामे महमूद जिसका ज़िक्र अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला ने इस आयत में किया है। (तब्री : 17/526) पस यह मक़ाम मक़ामे सिफ़ारिश है। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं क़ियामत के दिन सबसे पहले ज़मीन से आप बाहर आएँगे और सबसे पहले सिफ़ारिश आप ही करेंगे। (तब्री : 17/528) अहले इल्म कहते हैं कि यही मक़ामे महमूद है जिसका वादा अल्लाह करीम ने अपने रसूले मक़्बूल (ﷺ) से किया है बेशक हुज़ूर (ﷺ) की बहुत सी बुज़ुर्गियाँ क़ियामत के दिन ऐसी होंगी जिनमें कोई और आपका शरीक नहीं और बहुत सी बुज़ुर्गियाँ ऐसी मिलेंगी जिनमें कोई आपकी बराबरी का नहीं, सबसे पहले आप ही की क़ब्र की ज़मीन शक़ होगी और आप सवारी पर सवार महशर की तरफ़ जाएँगे, आपका एक झण्डा होगा कि हज़रत आदम (अलैहि.) से लेकर सबके सब उसके नीचे होंगे। आपको हौज़े कौसर मिलेगा जिस पर सबसे ज़्यादा लोग वारिद होंगे। बहुत बड़ी सिफ़ारिश आपकी होगी कि अल्लाह तआला मख़्लूक़ के फ़ैसलों के लिए आए और यह उसके बाद होगा कि लोग हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा (अलैहि.) के पास हो आएँगे और सब इंकार कर देंगे। फिर आप (ﷺ) के पास आएँगे और आप उसके लिए तैयार होंगे, जैसे कि इसकी हदीसें मुफ़स्सल आ रही हैं, इंशाअल्लाह!

सिफ़ारिश का बयान : आप उन लोगों की सिफ़ारिश करेंगे जिनकी बाबत हुक्म हो चुका होगा कि उन्हें जहन्नम की तरफ़ ले जाएँ फिर वह आपकी सिफ़ारिश से वापिस लौटा दिये जाएँगे। सबसे पहले आप ही की उम्मत के फ़ैसले किये जाएँगे आप ही अपनी उम्मत समेत सबसे पहले पुलसिरात पर से पार होंगे। आप ही जन्नत में ले जाने के पहले सिफ़ारिशी होंगे। जैसे सहीह मुस्लिम की हदीस से साबित है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिन्नबी (ﷺ) (अना अव्वलुन्नास यश्फ़उ फ़िल जन्नति अना अक्सरुल अम्बिया तबअन) : 196) सूर की हदीस में है कि "तमाम मोमिन आप ही की सिफ़ारिश से जन्नत में जाएँगे" सबसे पहले आप जन्नत में जाएँगे और आपकी उम्मत और उम्मतों से पहले जाएगी, आपकी सिफ़ारिश से कम दर्जे के जन्नती आला और बुलंद दर्जे पाएँगे। आप ही साहिबे वसीला हैं जो जन्नत की सबसे आला मंज़िल है जो आपके सिवा किसी और को नहीं मिलने की। यह सही है कि बहुक्मे इलाही गुनहगारों की सिफ़ारिश फ़रिश्ते भी करेंगे, नबी भी करेंगे लेकिन हुज़ूर (ﷺ) की सिफ़ारिश जिस क़द्र लोगों के बारे में होगी उनकी गिनती का सिवाए अल्लाह तआला के किसी को इल्म नहीं, इसमें कोई आपके मिस्ल और बराबर नहीं। किताबुस्सीरत के आख़िर मे बाबुल ख़साइस में मैंने इसे ख़ूब ख़ुलासे से बयान किया है, वल्हम्दु लिल्लाह!

मक़ामे महमूद के बारे में मज़ीद अहादीस : अब मक़ामे महमूद के बारे की हदीसें सुनिए, अल्लाह तआला हमारी मदद करे।

बुख़ारी में है हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''लोग क़ियामत के दिन घुटनों के बल गिरे हुए होंगे हर उम्मत अपने नबी के पीछे होगी कि ऐ फ़लाँ! हमारी सिफ़ारिश कीजिए, यहाँ तक कि सिफ़ारिश की इंतिहा मुहम्मद (ﷺ) की तरफ़ होगी पस यही वह है कि अल्लाह तआला आपको मक़ामे महमूद पर खड़ा करेगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब क़ौलुहू (असा अय्यंब्असका रब्बुका मक़ामम महमूदा) : 4718) इब्ने जरीर में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''सूरज बहुत नज़दीक होगा यहाँ तक कि पसीना आधे कानों तक पहुँच जाएगा। उसी हालत में लोग (हज़रत) आदम (عليه السلام) से फ़रियाद करेंगे वह साफ़ इंकार कर देंगे, फिर (हज़रत) मूसा (عليه السلام) से कहेंगे, आप भी यही जवाब देंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं, फिर हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से कहेंगे। आप मख़्लूक़ की सिफ़ारिश के लिए चलेंगे यहाँ तक कि जन्नत के दरवाज़े का कुण्डा थाम लेंगे। पस उस दिन अल्लाह तआला आपको मक़ामे महमूद पर पहुँचाएगा।'' (तब्री : 17/529)

बुख़ारी की इस रिवायत के आख़िर में यह भी है कि ''अहले महशर सबके सब उस वक़्त आपकी तारीफ़ें करेंगे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब मन सअलन्नास तकस्सुरन : 1475; अबूदाऊद : 529; तिर्मिज़ी : 211; अहमद : 3/354; इब्ने हिब्बान : 1689) बुख़ारी में है ''जो शख़्स अज़ान सुनकर (अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद्दअवतित्ताम्मति) पढ़ ले उसके लिए क़ियामत के दिन मेरी सिफ़ारिश हलाल है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब क़ौलुहू (असा अय्यब्असका रब्बुका...) : 4719) मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''क़ियामत के दिन मैं नबियों का इमाम, उनका ख़तीब और उनका सिफ़ारिशी होगा, मैं यह कुछ बतौर फ़ख़्र के नहीं कहता।'' (मुस्नद अहमद : 5/137; तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब (सलुल्लाहा लिल वसीलति...) : 3613; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4314) इसे तिर्मिज़ी भी लाए हैं और हसन सहीह कहा है। इब्ने माजा में भी यह है। हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) से वह हदीस गुज़र चुकी है जिसमें क़ुरआन को सात क़िरातों पर पढ़ने का बयान है उसके आख़िर में है कि ''मैंने कहा ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को बख़्श दे, इलाही मेरी उम्मत को बख़्श दे, तीसरी दुआ मैंने उस दिन के लिए उठा रखी है जिस दिन तमाम मख़्लूक़ मेरी तरफ़ रग़्बत करेगी यहाँ तक कि इब्राहीम (عليه السلام) भी।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब बयानुल क़ुरआन उंज़िला अला सब्अति अहरूफ़ : 820)

सिफ़ारिश की लम्बी हदीस और मक़ामे महमूद : मुस्नद अहमद में है कि ''मोमिन क़ियामत के दिन जमा होंगे फिर उनके दिल में ख़्याल डाला जाएगा कि हम किसी से कहें, वह हमारी सिफ़ारिश करके हमें इस जगह से आराम दे पस सबके सब (हज़रत) आदम (عليه السلام) के पास आएँगे और कहेंगे कि ऐ आदम! आप तमाम इंसानों के बाप हैं अल्लाह तआला ने आपको अपने हाथ से पैदा किया आपके लिए अपने फ़रिश्तों से सज्दा कराया और आपको तमाम चीज़ों के नाम बतलाए, आप अपने रब के पास हमारी सिफ़ारिश ले जाइए ताकि हमें इस जगह से राहत मिले। हज़रत आदम (عليه السلام) जवाब देंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ। आपको अपना

गुनाह याद आ जाएगा और अल्लाह तआला से शर्माने लगेंगे। फ़र्माएँगे तुम (हज़रत) नूह (अ.) के पास जाओ वह अल्लाह तआला के पहले रसूल हैं। जिन्हें ज़मीन वालों की तरफ़ अल्लाह पाक ने भेजा है। यह आएँगे यहाँ से भी यही जवाब पाएँगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ, आपको भी अपनी ख़ता याद आ जाएगी कि अल्लाह तआला से वह सवाल किया था जिसका आपको इल्म न था। पस अपने परवरदिगार से शर्माएँगे और कहेंगे कि तुम इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (ﷺ) के पास जाओ, वह आपके पास आएँगे। आप कहेंगे मैं इस क़ाबिल नहीं तुम (हज़रत) मूसा (ﷺ) के पास जाओ, अल्लाह तआला ने उनसे कलाम किया है और उन्हें तौरात दी है। लोग (हज़रत) मूसा (ﷺ) के पास आएँगे लेकिन वह कहेंगे कि मुझमें इतनी क़ाबिलियत कहाँ? फिर उस क़त्ल का ज़िक्र करेंगे जो बग़ैर किसी मक़्तूल के बदले के आपने कर दिया था। पस इस वजह से अल्लाह तआला से शर्माने लगेंगे और कहेंगे, तुम ईसा (ﷺ) के पास जाओ, जो अल्लाह तआला के बन्दे, उसका कलिमा और उसकी रूह हैं। वह यहाँ आएँगे लेकिन आप कहेंगे मैं उस जगह के क़ाबिल नहीं हूँ, तुम मुहम्मद (ﷺ) के पास जाओ, जिनके अगले पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये गए हैं। पस वह सब मेरे पास आएँगे, मैं खड़ा होऊँगा, अपने रब से इजाज़त चाहूँगा जब उसे देखूँगा तो सज्दे में गिर पडूँगा जब तक अल्लाह तआला को मंज़ूर होगा मैं सज्दे में ही रहूँगा। फिर फ़र्माया जाएगा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! सर उठाइए, कहिए, सुना जाएगा, सिफ़ारिश कीजिए, क़बूल की जाएगी, माँगिये दिया जाएगा। पस मैं सर उठाऊँगा और अल्लाह तआला की वह तारीफ़ें बयान करूँगा जो वह मुझे सिखाएगा। फिर मैं सिफ़ारिश करूँगा। मेरे लिए एक हद मुक़र्रर कर दी जाएगी, मैं उन्हें जन्नत में पहुँचा आऊँगा फिर दोबारा जनाब बारी में हाज़िर होकर अपने रब को देखकर सज्दे में गिर जाऊँगा जब तक वह चाहे मुझे सज्दे में ही रहने देगा फिर कहा जाएगा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! सर उठाओ कहो सुना जाएगा, सवाल करो दिया जाएगा। सिफ़ारिश करो क़बूल की जाएगी। पस मैं सर उठाकर अपने रब की हम्द बयान करूँगा जो वह मुझे सिखाएगा। फिर मैं सिफ़ारिश करूँगा तो मेरे लिए एक हद मुक़र्रर कर दी जाएगी। मैं उन्हें भी जन्नत में पहुँचा आऊँगा।

फिर तीसरी बार लौटूँगा अपने रब को देखते ही सज्दे में चला जाऊँगा, जब तक वह चाहेगा उसी हालत में पड़ा रहूँगा, फिर फ़र्माया जाएगा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! सर उठाइए, बात कीजिए, सुनी जाएगी, सवाल कीजिए अता किया जाएगा, सिफ़ारिश कीजिए क़बूल की जाएगी। चुनाँचे मैं सर उठाकर वह हम्द बयान करके जो मुझे वह सिखाएगा सिफ़ारिश करूँगा पस मेरे लिए हदबंदी की जाएगी, मैं उन्हें भी जन्नत में पहुँचा आऊँगा फिर चौथी बार वापिस आऊँगा और कहूँगा, बारी तआला अब तो सिर्फ़ वही बाक़ी रह गए हैं जिन्हें क़ुरआन ने रोक लिया है फ़र्माते हैं जहन्नम में से हर वह शख़्स निकल आएगा जिसने (ला इलाहा इल्लल्लाह) कहा हो और उसके दिल में गेहूँ के दाने के बराबर भी ईमान हो फिर वह लोग भी दोज़ख़ से निकाले जाएँगे जिन्होंने (ला इलाहा इल्लल्लाह) कहा हो और उनके दिल में एक ज़र्रे के बराबर भी ईमान हो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (लिमा ख़लक़्तु बियदि) : 7410; सहीह मुस्लिम : 193; अहमद : 3/116; इब्ने हिब्बान : 6464)

मुस्नद अहमद में है कि आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मेरी उम्मत पुल सिरात से गुज़र रही होगी मैं वहीं

खड़ा देख रहा होउँगा, जो मेरे पास हज़रत ईसा (अलै.) आएँगे और कहेंगे, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अम्बिया की जमाअत आपसे कुछ माँगती है वह सब आपके लिए जमा हैं और अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि तमाम उम्मतों को जहाँ भी चाहे अलग अलग कर दे इस वक़्त वह सख़्त ग़मगीन हैं, तमाम मख़्लूक़ पसीनों में गोया लगाम चढ़ा दी गई है मोमिन पर तो वह मिस्ल ज़ुकाम के है लेकिन काफ़िर पर तो मौत का ढाँप लेना है, आप कहेंगे कि ठहरो! वहीं आता हूँ पस आप जाएँगे, अर्श तले खड़े रहेंगे और वह इज़्ज़त व आबरू मिलेगी कि किसी बरगुज़ीदा फ़रिश्ते और किसी भेजे हुए नबी व रसूल को न मिली हो। फिर अल्लाह तआला हज़रत जिब्रईल (अलै.) की तरफ़ वही करेगा कि मुहम्मद (ﷺ) के पास जाओ और कहो कि आप सर उठाइए, मांगिये मिलेगा, सिफ़ारिश कीजिए क़बूल होगी पस मुझे अपनी उम्मत की सिफ़ारिश मिलेगी कि हर निन्यान्वे में से एक निकाल लाऊँगा, मैं बार बार अपने रब अज़्ज़ व जल्ला की तरफ़ आता जाता रहूँगा और हर बार सिफ़ारिश करूँगा यहाँ तक कि जनाब बारी मुझसे कहेगा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! जाओ मख़्लूक़े इलाही में से जिसने भी एक दिन भी ख़ुलूस के साथ (ला इलाहा इल्लल्लाह) की गवाही दी हो और उसी पर मरा हो उसे भी जन्नत में पहुँचा आओ।'' (मुस्नद अहमद : 3/178; व सनदुहू सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/373)

मुस्नद अहमद में है हज़रत बुरैदा (रज़ि.) हज़रत मुआविया (रज़ि.) के पास गए उस वक़्त एक शख़्स कुछ कह रहा था उन्होंने भी कुछ कहने की इजाज़त चाही, हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने इजाज़त दे दी आपका ख़्याल यह था कि जो कुछ यह पहला शख़्स कह रहा है वही बुरैदा भी कहेंगे। हज़रत बुरैदा (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि आप फ़र्माते हैं ''मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि ज़मीन पर जितने दरख़्त और कंकर हैं उनकी गिनती के बराबर लोगों की सिफ़ारिश मैं करूँगा''पस ऐ मुआविया (रज़ि.)! आपको तो इसकी उम्मीद हो और हज़रत अली (रज़ि.) इससे नाउम्मीद हैं? (मुस्नद अहमद : 5/347; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्राईल मिलाई ज़ईफ़ है। मज्मउज़्ज़वाइद : 10/378)

मुस्नद अहमद में है कि मुलैका के दोनों लड़के रसूले करीम (ﷺ) के पास आए और कहने लगे, हमारी माँ हमारे वालिद की बड़ी ही इज़्ज़त करती थीं बच्चों पर बड़ी मेहरबानी और शफ़्क़त करती थीं, मेहमान नवाज़ी में कोई दक़ीक़ा उठा न रखती थीं, हाँ! उन्होंने जाहिलियत के ज़माने में अपनी लड़कियाँ ज़िन्दा दफ़न कर दी थीं, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''फिर वह जहन्नम में पहुँची।'' वह दोनों ग़मगीन होकर लौटे तो आपने हुक्म दिया कि ''उन्हें वापिस बुला लाओ'' वह लौटे और उनके चेहरे पर ख़ुशी थी कि शायद अब हुज़ूर (ﷺ) कोई अच्छी बात सुनाएँगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''सुनो! मेरी माँ और तुम्हारी माँ दोनों एक साथ ही हैं।'' एक मुनाफ़िक़ यह सुनकर कहने लगा कि इससे उसकी माँ को क्या फ़ायदा? हम इसके पीछे जाते हैं एक अंसारी जो हुज़ूर (ﷺ) से सबसे ज़्यादा सवालात करने का आदी था, कहने लगा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या इसके या इन दोनों के बारे में आपसे अल्लाह तआला ने कोई वादा किया है? आप समझ गए कि उसने कुछ सुना है। फ़र्माने लगे ''न मेरे रब ने चाहा, न मुझे इस बारे में कोई तमअ दी, सुनो! मैं क़ियामत के दिन मक़ामे महमूद पर पहुँचाया जाऊँगा'' अंसारी ने कहा, वह क्या मक़ाम है? आपने फ़र्माया ''यह उस वक़्त जबकि तुम्हें नंगे बदन बेख़त्ना लाया जाएगा, सबसे पहले हज़रत इब्राहीम (अलै.) कपड़े पहनाए जाएँगे।

अल्लाह तआला कहेगा, मेरे ख़लील को कपड़े पहनाओ पस दो चादरें सफ़ेद रंग की पहनाई जाएँगी और आप अर्श की तरफ़ मुँह किये बैठ जाएँगे फिर मेरा लिबास लाया जाएगा। मैं उनकी दाएँ तरफ़ उस जगह खड़ा हो जाऊँगा कि तमाम पहले और आख़िर के लोग रश्क करेंगे और कौसर से लेकर हौज़ तक उनके लिए खोल दिया जाएगा।'' मुनाफ़िक़ कहने लगे, पानी के जारी होने के लिए तो मिट्टी और कंकर लाज़मी हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ! उसकी मिट्टी मुश्क है और कंकर मोती हैं।'' उसने कहा कि हमने तो कभी ऐसा नहीं सुना, अच्छा पानी के किनारे दरख़्त भी होने चाहिएँ। अंसारी ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! वहाँ दरख़्त भी होंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ! सोने की डालियों वाले।'' मुनाफ़िक़ ने कहा, आज जैसी बात तो हमने कभी नहीं सुनी, अच्छा दरख़्तों में पत्ते और फल भी होने चाहिए। अंसारी ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि क्या उन दरख़्तों में फल भी होंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ! क़िस्म-क़िस्म के जवाहिर उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद होगा और शहद से ज़्यादा मीठा होगा। एक घूँट भी जिसने उसमें से पी लिया वह कभी भी प्यासा न होगा और जो उससे महरूम रह गया वह फिर कभी आसूदा न होगा।'' (मुस्नद अहमद : 1/398, 399; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 3478; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/361)

अबूदाऊद तयालिसी में है कि ''फिर अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल सिफ़ारिश की इजाज़त देगा। पस रूहुल कुदुस हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) खड़े होंगे। फिर हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) खड़े होंगे फिर हज़रत ईसा (عليه السلام) या हज़रत मूसा(عليه السلام) खड़े होंगे फिर हमारे नबी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) खड़े होंगे। आप (ﷺ) से ज़्यादा किसी की सिफ़ारिश न होगी।'' यही मक़ामे महमूद है जिसका ज़िक्र इस आयत में है। (मुस्नदे तयालिसी : 389; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) मुस्नद अहमद में है कि ''लोग क़ियामत के दिन उठाए जाएँगे। मैं अपनी उम्मत समेत एक टीले पर खड़ा होऊँगा, मुझे अल्लाह तआला सब्ज़ रंग हुल्ला (जोड़ा) पहनाएगा। फिर मुझे इजाज़त दी जाएगी और जो कुछ कहना चाहूँगा कहूँगा। यही मक़ामे महमूद है।'' (मुस्नद अहमद : 3/456; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़ोहरी अन्अन; अन्निहाया फ़िल फ़ितन वल मलाहिम बि तहक़ीक़ी : 646; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/51)

मुस्नद अहमद में है कि ''क़ियामत के दिन सबसे पहले मुझे सज्दा करने की इजाज़त दी जाएगी और मुझे ही सबसे पहले सर उठाने की इजाज़त मिलेगी, मैं अपने आगे पीछे, दाएँ बाएँ देखकर अपनी उम्मत को और उम्मतों में से पहचान लूँगा।'' किसी ने पूछा, हुज़ूर (ﷺ)! और सारी उम्मतें जो (हज़रत) नूह (عليه السلام) के वक़्त तक की होंगी उन सबमें से आप ख़ास अपनी उम्मत को कैसे पहचान लेंगे? आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, ''वुज़ू के असर से उनके हाथ पैर और चेहरे चमक रहे होंगे उनके सिवा और कोई ऐसा न होगा और मैं उन्हें यूँ पहचान लूँगा कि उनके नामा-ए-आमाल उनके दाएँ हाथ में दिये जाएँगे और निशान यह है कि उनकी औलादें उनके आगे आगे चल रही होंगी।'' (मुस्नद अहमद : 5/199; व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुंक़तअ; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/344) मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) के पास गोश्त लाया गया और शाने का गोश्त चूँकि आपको ज़्यादा पसंद था वही आपको दिया गया आप उसमें से गोश्त तोड़ तोड़कर खाने लगे और फ़र्माया, ''क़ियामत के दिन तमाम लोगों का सरदार मैं हूँ। अल्लाह तआला तमाम अगलों पिछलों को एक ही मैदान में जमा करेगा आवाज़ देने वाला उन्हें सुनाएगा, निगाहें ऊपर को चढ़ जाएँगी, सूरज बिलकुल नज़दीक

हो जाएगा और लोग ऐसी सख़्ती और रंजो ग़म में डूब जाएँगे जो नाक़ाबिले बर्दाश्त है, उस वक़्त वह आपस में कहेंगे कि देखो तो सही हम सब किस मुसीबत में मुब्तला हैं चलो किसी से कहकर उसे सिफ़ारिशी बनाकर अल्लाह तआला के पास भेजें। चुनाँचे मश्वरा से तै होगा और लोग हज़रत आदम (ﷺ) के पास जाएँगे और कहेंगे, आप तमाम इंसानो के बाप हैं, अल्लाह तआला ने आपको अपने हाथ से पैदा किया है आप में अपनी रूह डाली है, अपने फ़रिश्तों को आपके सामने सज्दा करने का हुक्म देकर उनसे सज्दा कराया है। आप क्या हमारी ख़स्ता हालत नहीं देख रहे? आप परवरदिगार से सिफ़ारिश कीजिए (हज़रत) आदम (ﷺ) जवाब देंगे कि मेरा रब आज इस क़द्र ग़ज़बनाक हो रहा है कि कभी इससे पहले ऐसा ग़ज़बनाक नहीं हुआ और न इसके बाद कभी होगा। अल्लाह तआला ने मुझे एक दरख़्त से रोका था लेकिन मुझसे नाफ़र्मानी हो गयी। आज तो मुझे ख़ुद अपना ख़्याल लगा हुआ है नफ़्सी नफ़्सी लगी हुई है तुम किसी और के पास जाओ। लोग वहाँ से (हज़रत) नूह (ﷺ) के पास आएँगे और कहेंगे कि ऐ नूह (ﷺ)! आपको ज़मीन वालों की तरफ़ सबसे पहले अल्लाह तआला ने रसूल बनाकर भेजा, आपका नाम उसने शुक्रगुज़ार बंदा रखा। आप हमारे लिए अपने रब के पास सिफ़ारिश कीजिए। देखिए तो हम किस मुसीबत में मुब्तला हैं? (हज़रत) नूह (ﷺ) जवाब देंगे कि आज तो मेरा रब इस क़द्र ग़ज़बनाक है कि न इससे पहले कभी ऐसा गुस्सा हुआ न इसके बाद कभी ऐसा गुस्सा होगा, मेरे लिए एक दुआ थी जो मैंने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ मांग ली। मुझे तो आज अपनी पड़ी है नफ़्सी नफ़्सी लग रही है तुम किसी और के पास जाओ। (हज़रत) इब्राहीम (ﷺ) के पास जाओ। लोग (हज़रत) इब्राहीम (ﷺ) के पास जाएँगे और कहेंगे, आप अल्लाह के नबी हैं, आप ख़लीलुल्लाह हैं, क्या आप हमारी यह हालत नहीं देखते? (हज़रत) इब्राहीम (ﷺ) कहेंगे कि आज मेरा रब सख़्त ग़ज़बनाक है कि न तो इससे पहले कभी ऐसा नाराज़ हुआ न इसके बाद कभी इससे ज़्यादा गुस्से में आएगा। फिर आप अपने झूठ याद करके नफ़्सी नफ़्सी करने लगेंगे और कहेंगे मेरे सिवा किसी और के पास जाओ। (हज़रत) मूसा (ﷺ) के पास जाओ। लोग (हज़रत) मूसा (ﷺ) के पास जाएँगे और कहेंगे, ऐ मूसा (ﷺ)! आप अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह तआला ने आपको रिसालत और अपने कलाम से नवाज़ा है आप हमारे परवरदिगार के पास हमारी सिफ़ारिश ले जाइए, देखिए तो कैसी सख़्त आफ़त में हैं? आप कहेंगे, आज तो मेरा रब सख़्त नाराज़ है ऐसा कि इससे पहले कभी ऐसा नाराज़ नहीं हुआ और न कभी इसके बाद ऐसा नाराज़ होगा, मैंने अल्लाह तआला के हुक्म के बग़ैर एक इंसान को मार डाला था, नफ़्सी नफ़्सी, नफ़्सी, तुम मुझे छोड़कर किसी और से कहो, तुम (हज़रत) ईसा (ﷺ) के पास चले जाओ। लोग (हज़रत) ईसा(ﷺ) के पास आएँगे और कहेंगे, ऐ ईसा (ﷺ)! आप रसूलुल्लाह और कलिमतुल्लाह और रूहुल्लाह हैं जो (हज़रत) मरयम (ﷺ) की तरफ़ भेजी गई। बचपन में गहवारे में ही आपने बोलना शुरू कर दिया था। जाइए हमारे रब से हमारी सिफ़ारिश कीजिए ख़्याल तो फ़र्माइए कि हम किस क़द्र बेचेन हैं? (हज़रत) ईसा (ﷺ) जवाब देंगे कि आज जैसा गुस्सा तो न पहले था न बाद में होगा, नफ़्सी नफ़्सी नफ़्सी। आप अपने किसी गुनाह का ज़िक्र न करेंगे। कहेंगे तुम किसी और ही के पास जाओ, देखो मैं बतलाऊँ तुम सब मुहम्मद (ﷺ) के पासा जाओ। चुनाँचे वह सब हुज़ूर (ﷺ) के पास आएँगे और कहेंगे, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप रसूलुल्लाह हैं आप ख़ातिमुल अम्बिया हैं,

अल्लाह तआला ने आपके तमाम अगले पिछले गुनाह माफ़ कर दिये हैं आप हमारी सिफ़ारिश कीजिए देखिए तो हम कैसी बलाओं में घिरे हुए हैं। पस मैं खड़ा हो जाऊँगा और अर्श तले आकर अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल के सामने सज्दे में गिर पड़ूँगा और फिर अल्लाह तआला मुझ पर अपनी ह़म्दो सना के वह अल्फ़ाज़ खोलेगा जो मुझसे पहले किसी और पर नहीं खुले थे, फिर मुझसे कहा जाएगा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अपना सर उठाओ मांगो तुम्हें मिलेगा, सिफ़ारिश करो मंज़ूर की जाएगी, मैं अपना सर सज्दे से उठाऊँगा और कहूँगा, मेरे परवरदिगार! मेरी उम्मत मेरे रब मेरी उम्मत! ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत। पस मुझसे कहा जाएगा कि जाओ, अपनी उम्मत में से उन लोगों को जिन पर ह़िसाब नहीं, जन्नत की दाहिनी त़रफ़ के दरवाज़े से पहुँचाओ लेकिन और तमाम दरवाज़ों से भी उन्हें रोक नहीं। उस अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ में मुह़म्मद की जान है जन्नत के दो चोखटों के बीच इतनी दूरी है जितनी मक्के और ह़िम्यर में या मक्का और बस़रा में।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (ज़ुर्रियतम् मन ह़मल्ना मअ़ नूह़ इन्नहू काना अ़ब्दन शकूरा...) : 4712; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 194; अह़मद : 2/435, 436; मुस्नदे अबी अ़वाना : 1/170; इब्ने ह़िब्बान : 7389; शरह़ुस्सुन्ना : 4332) मुस्लिम में है ''क़ियामत के दिन औलादे आदम का सरदार मैं हूँ उस दिन सबसे पहले मेरी क़ब्र की ज़मीन शक़्क़ होगी, मैं ही पहला शफ़ीअ़ हूँ और पहला सिफ़ारिश क़बूल किया गया।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब तफ़्ज़ीलु नबिय्यिना (ﷺ) अला जमीइल ख़लाइक़ : 2278) इब्ने जरीर में है कि ह़ुज़ूर (ﷺ) से इस आयत का मत़लब पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''यह शफ़ाअ़त है।'' (त़बरी : 17/529; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में दाऊद बिन यज़ीद ज़ईफ़ रावी है।) मुस्नद अह़मद में है ''मक़ामे मह़मूद वह जगह है जिसमें मैं अपनी उम्मत की सिफ़ारिश करूँगा।'' (अह़मद : 2/441; वसनदुहू ज़ईफ़ुन)

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि ''क़ियामत के दिन खाल की त़रह अल्लाह तआला ज़मीन को खींच लेगा यहाँ तक कि हर शख़्स के लिए सिर्फ़ अपने दोनों क़दम निकालने की जगह ही रहेगी। सबसे पहले मुझे त़लब किया जाएगा। (ह़ज़रत) जिब्रईल (ﷺ) अल्लाह रह़मान तबारक व तआला के दाएँ जानिब होंगे। अल्लाह की क़सम! इससे पहले उसे उसने नहीं देखा। मैं कहूँगा कि बारी तआला! इस फ़रिश्ते ने मुझसे कहा था कि इसे तू मेरी त़रफ़ भेज रहा था, अल्लाह तआला कहेगा इसने सच कहा था। अब मैं यह कहकर सिफ़ारिश करूँगा कि ऐ अल्लाह! तेरे बन्दों ने ज़मीन के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में तेरी इबादत की है।'' आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''यही मक़ामे मह़मूद है।'' (ह़ाकिम : 4/570; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) यह ह़दीस मुर्सल है।

***

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝٨٠ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝٨١

तर्जुमा : "दुआ किया कर कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे जहाँ ले जा अच्छी तरह ले जा और जहाँ से निकाल अच्छी तरह निकाल और मेरे लिए अपने पास से ग़ल्बा और इम्दाद मुक़र्रर कर दे। (80) ऐलान कर दे कि हक़ आ चुका और नाहक़ नाबूद हो गया, यक़ीनन बातिल था भी नाबूद होने वाला।" (81)

आप (ﷺ) को हिज्रत करने का हुक्म (आयत 80, 81) : मुस्नद अहमद में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि नबी (ﷺ) मक्का मुकर्रमा में थे फिर आपको हिज्रत का हुक्म हुआ और यह आयत उतरी। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़र्माते हैं यह हदीस हसन सही है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब विमिन सूरति बनी इस्राईल : 3139; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में क़ाबूस रावी ज़ईफ़ है।)

हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने मश्वरा किया कि आपको क़त्ल कर दें या निकाल दें या क़ैद कर लें पस अल्लाह का यही इरादा हुआ कि अहले मक्का को उनकी बद आमालियों का मज़ा चखा दे और उसने अपने पैग़म्बर (ﷺ) को मदीना जाने का हुक्म किया यही इस आयत में बयान हो रहा है। (तब्री : 17/533) क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं "मक्का से निकलना और मदीना में दाख़िल होना" यही क़ौल सबसे ज़्यादा मशहूर है। (तब्री : 17/535)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि सच्चाई के दाख़िले से मुराद मौत है और सच्चाई से निकलने की मुराद मौत के बाद की ज़िन्दगी है और क़ौल भी हैं लेकिन ज़्यादा सही पहला क़ौल ही है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को इख़्तियार करते हैं।

ग़ल्ब-ए-दीन अल्लाह के हुक्म से मुम्किन है : फिर हुक्म हुआ कि ग़ल्बा और मदद की दुआ हमसे करो। इस दुआ पर अल्लाह तआला ने फ़ारस और रूम का मुल्क और इज़्ज़त देने का वादा कर लिया। इतना तो हुज़ूर (ﷺ) मालूम कर चुके थे कि बग़ैर ग़ल्बे के दीन की इशाअत और ज़ोर नामुम्किन है इसलिए अल्लाह तआला से मदद व ग़ल्बा तलब किया ताकि किताबुल्लाह और हुदूदुल्लाह फ़राइज़े शरअ और क़ियामे दीन आम कर सकें।

यह गल्बा भी अल्लाह तआला की एक ज़बरदस्त रहमत है अगर यह न हो तो एक दूसरे को खा जाता हर ज़ोरावर कमज़ोर का शिकार कर लेता। (तब्री : 17/536) सुल्तान नसीर से मुराद खुली दलील भी है लेकिन पहला क़ौल औला है इसलिए कि हक़ के साथ ग़ल्बा और ताक़त भी ज़रूरी चीज़ है ताकि मुख़ालिफ़ीने हक़ दबे हुए रहें, इसीलिए अल्लाह तआला ने लोहे के उतारने के एहसान को क़ुरआन में ख़ास तौर पर ज़िक्र किया है।

एक हदीस में है कि "सल्तनत की वजह से अल्लाह तआला बहुत सी उन बुराइयों को रोक देता है जो सिर्फ़ कुरआन से नहीं रुक सकती थी।" (हमें यह रिवायत बिलकुल नहीं मिली।) यह बिलकुल वाक़िया है। बहुत से लोग हैं कि कुरआन की नसीहतें, इसके वादे वईद उन्हें बदकारियों से नहीं हटा सकते लेकिन इस्लामी ताक़त से मरऊब होकर वह बुराइयों से रुक जाते हैं।

हक़ क़ायम रहने वाला और बातिल मिटने वाला है : फिर काफ़िरों की गोश माली की जाती है कि अल्लाह तआला की जानिब से हक़ आ चुका सच्चाई उतर आयी जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं। कुरआन ईमान नफ़ा देने वाला, सच्चा इल्म अल्लाह की तरफ़ से आ गया, कुफ़्र बर्बाद ग़ारत और बेनामो-निशान हो गया, वह हक़ के मुक़ाबले में बेदस्त वपा साबित हुआ हक़ ने बातिल का दिमाग़ चूर चूर कर दिया और वह नाबूद और बेवजूद हो गया। सहीह बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्के में आए, बैतुल्लाह के आस पास तीन सौ साठ बुत थे, आप अपने हाथ की लकड़ी से उन्हें ठोकरें दे रहे थे और यही आयत पढ़ रहे थे और फ़र्माते जा रहे थे "हक़ आ चुका बातिल न दोबारा आ सकता है न लौट सकता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (वकुल जाअल हक़्कु व ज़हक़ल बातिल...) : 4720; सहीह मुस्लिम : 1781; तिर्मिज़ी : 3138; अहमद : 1/377; इब्ने हिब्बान : 5862) अबू यअला में है कि हम हुज़ूर (ﷺ) के साथ मक्के में आए, बैतुल्लाह के आसपास तीन सौ साठ बुत थे जिनकी पूजापाठ की जाती थी। आप (ﷺ) ने फ़ौरन हुक्म दिया कि इन सबको औंधे मुँह गिरा दो। फिर आपने यही आयत तिलावत की।

***

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾

तर्जुमा :"यह कुरआन जो हम नाज़िल कर रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफ़ा और रहमत है हाँ! ज़ालिमों को सिवाय नुक़्सान के और कोई ज़्यादती नहीं होती।" (82)

कुरआन मोमिनों के लिए शिफ़ा है (आयत 82) :अल्लाह तआला अपनी किताब की बाबत जिसमें झूट का कोई इम्कान नहीं, फ़र्माता है कि वह ईमानवालों के दिलों की तमाम बीमारियों की शिफ़ा है, शक, निफ़ाक़, शिर्क, टेढ़पन और बातिल की लगावट सब इससे दूर हो जाती है। ईमान हिक्मत रहमत नेकियों की रग़बत इससे हासिल होती है जो भी इस पर ईमान व यक़ीन लाए, इसे सच समझकर इसकी ताबेदारी करे, यह उसे अल्लाह तआला की रहमत के नीचे ला खड़ा करता है। हाँ! जो ज़ालिम व जाबिर हो जो इससे इंकार करे वह अल्लाह तआला से और दूर हो जाता है। कुरआन सुनकर उसका कुफ़्र और बढ़ जाता है। पस यह आफ़त काफ़िर की तरफ़ से उसके कुफ़्र की वजह से होती है न कि कुरआन की वजह से वह तो सरासर रहमत और शिफ़ा है। चुनाँचे और आयते कुरआन में है (قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّ شِفَآءٌ) (41/फ़ुस्सिलत : 44) कह दे कि यह ईमान वालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है और बेईमानों के कानों में टेंट हैं और उनकी नज़रों पर पर्दा है यह

तो दूर दराज़ से आवाज़ें दिये जाते हैं। और आयत में है (وَ اِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ) (9/तौबा : 124) जहाँ कोई सूरत उतरी कि एक गिरोह ने पूछना शुरू किया कि तुममें से किसको इसने ईमान में और बढ़ाया? सुनो! ईमान वालों के तो ईमान बढ़ जाते हैं और वह हश्शाश बश्शाश हो जाते हैं हाँ! जिनके दिलों में बीमारी है उनकी गंदगी पर गंदगी बढ़ जाती है और मरते दम तक कुफ़्र पर क़ायम रहते हैं। इस मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं। अल्ग़र्ज़ मोमिन इस पाक किताब को सुनकर नफ़ा उठाता है, हिफ़्ज़ करता है, इसे याद करता है, इसका ख़्याल रखता है और काफ़िर लोग न इससे नफ़ा उठाते, न इसे हिफ़्ज़ करते, न इसकी निगहबानी करते हैं। अल्लाह ने इसे शिफ़ा व रहमत सिर्फ़ मोमिनों के लिए बनाया है।

***

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾

तर्जुमा : ''इंसान पर जब भी हम अपनी नेअ़मत इन्आम करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है और करवट बदल लेता है और जब भी उसे कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83) कह दे कि हर शख़्स अपने तरीक़े पर आमिल है जो पूरी हिदायत के रास्ते पर हैं उन्हें तेरा रब ही बख़ूबी जानने वाला है।'' (84)

इंसान की ख़ुदग़र्ज़ी (आयत 83, 84) : ख़ैरो शर्र, बुराई भलाई में उमूमन इंसान की जो आदत है उसे कुरआने करीम बयान कर रहा है, माल, आफ़ियत, फ़तह, रिज़्क़, नुसरत, ताईद, कुशादगी और आराम पाते ही नज़रें फेर लेता है। अल्लाह तआ़ला से दूर हो जाता है गोया उसे कभी बुराई पहुँचने की ही नहीं। अल्लाह तआ़ला से करवट बदल लेता है गोया कभी की जान पहचान ही नहीं और जहाँ मुसीबत तक्लीफ़, दुख दर्द, आफ़त हादसा पहुँचा और यह नाउम्मीद हुआ। समझ लेता है कि अब भलाई छुटकारा राहत आराम मिलने का ही नहीं।

कुरआने करीम और जगह इर्शाद फ़र्माता है (وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ۭ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١١﴾) (11/हूद : 9-11) इंसान को राहतें देकर जहाँ हमने वापिस ले लीं कि यह महज़ मायूस और नाशुक्रा बन गया और जहाँ मुसीबतों से हमने आफ़ियतें दीं कि फूल गया, घमण्ड में आ गया और हाँक लगाने लगा कि बस अब बुराइयाँ मुझसे दूर हो गईं। फ़र्माता है कि हर शख़्स अपनी अपनी तर्ज़ पर अपनी तबीअ़त पर अपनी निय्यत पर अपने दीन और तरीक़े पर आमिल है तो लगे रहें। (तब्री : 17/541) इसका इल्म कि असल में सीधी राह पर कौन है सिर्फ़ अल्लाह ही

को है, इसमें मुश्रिकीन के लिए तम्बीह है कि वह अपने मस्लक पर भले कारबंद हों और अच्छा समझ रहे हों, लेकिन अल्लाह तआला के पास जाकर खुलेगा कि जिस रास्ते पर वह थे वह कैसा ख़तरनाक था। जैसे फ़र्मान है कि बेईमानों से कह दो कि अच्छा है अपनी जगह अपने काम करते जाओ...। (11/हूद : 121) बदले का वक़्त यह नहीं क़ियामत का दिन है नेकी बदी की तमीज़ उस दिन होगी सबको बदले मिलेंगे, अल्लाह तआला पर कोई बात छुपी हुई नहीं।

***

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٥﴾

तर्जुमा : "यह लोग तुझसे रूह की बाबत सवाल करते हैं तू जवाब दे कि रूह मेरे रब के हुक्म से है तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत ही कम है।" (85)

जब आप (ﷺ) से रूह के बारे में पूछा गया (आयत 85) : बुख़ारी वग़ैरह में हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) मदीने के खेतों में जा रहे थे आपके हाथ में लकड़ी थी मैं आपके साथ था। यहूदियों के एक गिरोह ने आपको देखकर आपस में कानाफूसी शुरु कर दी कि आओ इनसे रूह की बात सवाल करें। कोई कहने लगे, अच्छा! कोई रोकने लगे, कोई कहने लगे, तुम्हें इससे क्या नतीजा? कोई कहने लगे, शायद कोई जवाब ऐसा दें जो तुम्हारे ख़िलाफ़ हो। जाने दो न पूछो। आख़िर वह आए और हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया। आप अपनी लकड़ी पर टेक लगाकर ठहर गए। मैं समझ गया कि वह्नी उतर रही है ख़ामोश खड़ा रह गया। उसके बाद आपने इसी आयत की तिलावत की। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (व यस्अलूनका अनिर्रूह ...) : 4721; सहीह मुस्लिम : 2794)

इससे तो यह ज़ाहिर मालूम होता है कि यह आयत मदनी है हालाँकि पूरी सूरत मक्की है। लेकिन यह हो सकता है कि मक्का की उतरी हुई आयत से ही इस मौक़े पर मदीने के यहूदियों को जवाब देने की वह्नी हुई हो या यह कि दोबारा यही आयत नाज़िल हुई हो। मुस्नद अहमद की रिवायत से भी इस आयत का मक्के में उतरना ही मालूम होता है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि कुरैशियों ने यहूदियों से दरख़्वास्त की कि कोई मुश्किल सवाल बतलाओ कि हम इनसे पूछें, उन्होंने यह सवाल बताया, उसके जवाब में यह आयत उतरी तो यह सरकश कहने लगे, हमें बड़ा इल्म है तौरात हमें मिली है। और जिसके पास तौरात हो उसे बहुत सी भलाई मिल गई। अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़र्माई (قُل لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا) (18/कहफ़ : 109) यानी अगर तमाम समुन्द्रों की स्याही मिल जाए और उससे कलिमाते इलाही लिखने शुरु किये जाएँ तो यह रोशनाई सब ख़त्म हो जाएगी और अल्लाह तआला के कलिमात बाक़ी रह जाएँगे भले फिर तुम उसकी मदद में ऐसे ही और भी लाओ। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति बनी इस्राईल : 3140; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 1/255; मुस्नदे अबी यअला : 2501) इक्रिमा (रह.) ने यहूदियों के सवाल पर इस

आयत का उतरना और उनके इस मकरूह क़ौल पर दूसरी आयत (وَ لَوْ اَنَّ مَا فِی الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ) (31/लुक़्मान : 27) का उतरना बयान किया है यानी रूए ज़मीन के दरख़्तों की क़लमें और रूए ज़मीन के समुन्द्रों की रोशनाई और उनके साथ ही साथ ऐसे ही और समुन्द्र भी हों जब भी अल्लाह तआला के कलिमात पूरे नहीं हो सकते। इसमें शक नहीं कि तौरात का इल्म जो जहन्नम से बचाने वाला है बड़ी चीज़ है लेकिन अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी चीज़ है। (तबरी : 17/542)

इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) ने ज़िक्र किया कि मक्का में यह आयत उतरी कि तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है जब आप हिज्रत करके मदीना पहुँचे तो मदीने के उलमा-ए-यहूद आपके पास आए और कहने लगे हमने सुना है आप यूँ कहते हैं कि तुम्हें तो बहुत ही कम इल्म अता किया गया है इससे मुराद आपकी क़ौम है या हम? आपने फ़र्माया तुम भी और वह भी। उन्होंने कहा, सुनो! तुम ख़ुद कुरआन पढ़ते हो कि हमको तौरात मिली है और यह भी कुरआन में है कि उसमें हर चीज़ का बयान है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में यह भी बहुत कम है। हाँ! बेशक तुम्हें अल्लाह ने इतना इल्म दे रखा है कि तुम उस पर अमल करो तो तुम्हें बहुत कुछ नफ़ा मिले।" और यह आयत उतरी। (وَ لَوْ اَنَّ مَا فِی الْاَرْضِ) (31/लुक़्मान : 27) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मंक़ूल है कि यहूदियों ने हुज़ूर (ﷺ) से रूह की बाबत सवाल किया कि इसे जिस्म के साथ अज़ाब क्यूँ होता है? वह तो अल्लाह की तरफ़ से है चूँकि इस बारे में कोई आयत, वह्यी आप पर नहीं उतरी थी, आपने उनसे कुछ न फ़र्माया। उस वक़्त आपके पास हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) आए और यह आयत उतरी। यह सुनकर यहूदियों ने कहा, आपको इसकी ख़बर किसने दी? आपने फ़र्माया, जिब्रईल (عليه السلام) अल्लाह तआला की तरफ़ से यह फ़र्मान लाये हैं। वह कहने लगे, वह तो हमारा दुश्मन है। इस पर आयत (قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ) (2/बक़रह : 97) नाज़िल हुई यानी जिब्रईल (عليه السلام) के दुश्मन का दुश्मन अल्लाह तआला है और ऐसा शख़्स काफ़िर है। (तबरी : 17/542)

एक क़ौल यह भी है कि यहाँ रूह से मुराद हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) हैं।

एक क़ौल यह भी है कि एक ऐसा अज़ीमुश्शान फ़रिश्ता है जो तमाम मख़्लूक़ के बराबर है। एक हदीस में है कि "अल्लाह तआला का एक फ़रिश्ता ऐसा भी है कि अगर उससे सातों ज़मीनों और सातों आसमानों को एक लुक़्मा बनाने को कहा जाए तो वह बना ले। उसकी तस्बीह यह है (सुब्हानका हैसु कुन्ता) या अल्लाह! तू पाक है जहाँ भी है।" यह हदीस ग़रीब है बल्कि मुंकर है। हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि यह एक फ़रिश्ता है जिसके सत्तर हज़ार मुँह हैं और हर मुँह में सत्तर हज़ार ज़ुबानें हैं और हर ज़ुबान पर सत्तर हज़ार लुग़त हैं। वह उन तमाम ज़ुबानों से हर बोली में अल्लाह तआला की तस्बीह करता है, उसकी हर हर तस्बीह से अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता पैदा करता है जो और फ़रिश्तों के साथ अल्लाह तआला की इबादत में क़ियामत तक उड़ता रहता है। यह असर भी अजीबो ग़रीब है, वल्लाहु आलम!

सुहैली की रिवायत में तो है कि उसके एक लाख सर हैं और हर सर में एक लाख मुँह हैं और हर मुँह में एक लाख ज़ुबानें हैं। जिनसे मुख़्तलिफ़ बोलियों में वह अल्लाह की पाकी बयान करता रहता है। यह भी कहा

गया है कि मुराद इससे फ़रिश्तों की वह जमाअ़त है जो इंसानी सूरत पर है। एक क़ौल यह भी है कि यह वह फ़रिश्ते हैं कि और फ़रिश्तों को तो वह देखते हैं लेकिन और फ़रिश्ते उन्हें नहीं देख सकते, पस वह फ़रिश्तों के लिए ऐसे ही हैं जैसे हमारे लिए यह फ़रिश्ते। फिर फ़र्माता है कि इन्हें जवाब दे कि रूह अम्रे रब्बी है यानी उसकी शान से है। उसका इल्म सिर्फ़ उसी को है तुममें से किसी को नहीं, तुम्हें जो इल्म है वह अल्लाह तआ़ला ही का दिया हुआ है पस वह बहुत ही कम है मख़्लूक़ को सिर्फ़ वही मालूम है जो उसने उन्हें मालूम कराया है। ख़िज़्र और मूसा (عليه السلام) के क़िस्से में आ रहा है कि जब यह दोनों बुज़ुर्ग कश्ती पर सवार हो रहे थे उस वक़्त एक चिड़िया कश्ती के तख़्ते पर बैठकर अपनी चोंच पानी में डुबोकर उड़ गयी तो जनाब ख़िज़्र (عليه السلام) ने फ़र्माया, ऐ मूसा (عليه السلام)! मेरा और तेरा और तमाम मख़्लूक़ का इल्म अल्लाह के इल्म के सामने ऐसा और इतना ही है जितना यह चिड़िया इस समुन्द्र से ले उड़ी। (अव कमा क़ाल)

बक़ौले सुहैली कुछ लोग कहते हैं कि उन्हें उनके सवाल का जवाब नहीं दिया क्योंकि उनका सवाल ज़िद्द करने और न मानने के तौर पर था। और यह भी कहा गया है कि जवाब हो गया। मुराद यह है कि रूह अल्लाह की शरीअ़त में से है, तुम्हें उसमें न जाना चाहिए तुम जान रहे हो कि उसके पहचानने की कोई तब्ई और फ़ल्सफ़ी राह नहीं बल्कि वह शरीअ़त की जिहत से है पस तुम शरीअ़त को क़बूल कर लो लेकिन हमें तो यह तरीक़ा ख़तरे से ख़ाली नज़र नहीं आता, वल्लाहु आलम!

फिर सुहैली ने इख़्तिलाफ़े उलमा बयान कया है कि रूह नफ़्स ही है या उसके सिवा और इस बात को साबित किया है कि रूह जहन्नम में मिस्ल हवा के जारी है और निहायत लतीफ़ चीज़ जैसे कि दरख़्तों की रगों में पानी चढ़ता है और जो रूह फ़रिश्ता माँ के पेट के बच्चे में फूँकता है वह जिस्म के साथ मिलते ही नफ़्स बन जाती है और जिसकी मदद से वह अच्छी बुरी सिफ़तें अपने अंदर हासिल कर लेती है या तो ज़िक्रुल्लाह के साथ मुत्मइन होने वाली हो जाती है या बुराइयों का हुक्म करने वाली बन जाती है मस्लन पानी दरख़्त की ज़िन्दगी है, उसके दरख़्त से मिलने की वजह से वह एक ख़ास बात अपने अंदर पैदा कर लेता है अंगूर पैदा हुए फिर उनका पानी निकाला गया या शराब बनाई गई, पस वह असली पानी जिस सूरत में आया अब उसे असली पानी नहीं कहा जा सकता। इसी तरह अब जिस्म के इत्तिसाल के बाद रूह को आला रूह नहीं कहा जा सकता। इसी तरह उसे नफ़्स भी नहीं कहा जा सकता, यह कहना भी बतौरे अंजाम को पहचानने के है हासिल कलाम यह हुआ कि रूह नफ़्स और माद्दा की असल है और नफ़्स इससे और उसके बदन के साथ के इत्तिसाल से मुरक्कब है पस रूह नफ़्स है लेकिन एक वजह से न कि तमाम वुजूह से बात तो यह दिल को लगती है लेकिन हक़ीक़त का इल्म अल्लाह ही को है। (तब्री : 17/543)

लोगों ने इस बारे में बहुत कुछ कलाम किया है और बड़ी बड़ी मुस्तक़िल किताबें इस पर लिखी हैं। इस मज़्मून पर बेहतरीन किताब हाफ़िज़ इब्ने मंदा की किताब अर्रूह है।

***

وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِۦ عَلَيْنَا وَكِيلًا ﴿٨٦﴾ إِلَّا
رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُۥ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾ قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ
عَلَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْءَانِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِۦ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْءَانِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰٓ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨٩﴾

तर्जुमा : ''अगर हम चाहें तो जो वही तेरी तरफ़ हमने उतारी है सब सल्ब कर लें फिर तुझे उसके लिए हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती भी मयस्सर न आ सके। (86) यह तो सिर्फ़ तेरे रब का रहमो करम है यक़ीन मान कि तुझ पर उसका बड़ा ही फ़ज़्ल है। (87) ऐलान कर दे कि अगर तमाम इंसान और कुल जिन्नात मिलकर इस कुरआन के जैसे लाना चाहें तो उन सबसे इसके जैसा लाना नामुम्किन है भले वह आपस में एक दूसरे के मददगार भी बन जाएँ। (88) हमने तो इस कुरआन में लोगों के समझने के लिए हर तरह हेर फेर से तमाम मिसालें बयान कर दीं हैं मगर ताहम अक्सर लोग नाशुक्री से बाज़ नहीं आते।'' (89)

कुरआन यक़ीनन मोजिज़ा है (आयत 86-89) : अल्लाह तआला अपने ज़बरदस्त एहसान और अज़ीमुश्शान नेअमत को बयान कर रहा है जो उसने अपने हबीब मुहम्मद (ﷺ) पर इन्आम की है यानी आप पर वह पाक किताब नाज़िल की जिसमें कहीं से भी किसी वक़्त बातिल की आमेज़िश (मिलावट) नामुम्किन है अगर वह चाहे तो इस वही को सल्ब भी कर सकता है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं आख़िर ज़माने में एक लाल हवा चलेगी शाम की तरफ़ से यह उठेगी उस वक़्त कुरआन के वरक़ों में से और हाफ़िज़ों के दिलों में से कुरआन सल्ब हो जाएगा एक हर्फ़ भी बाक़ी नहीं रहेगा फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। (तब्री : 17/546) फिर अपना फ़ज़्लो करम और एहसान बयान करके फ़र्माता है कि इस कुरआने करीम की बुज़ुर्गी एक यह भी है कि तमाम मख़्लूक़ इसके मुक़ाबले से आजिज़ है किसी के बस में इस जैसा कलाम नहीं। जिस तरह अल्लाह तआला बेमिस्ल बेनज़ीर बेशरीक है उसी तरह उसका कलाम मिस्लियत से नज़ीर से अपने जैसे से पाक है। इब्ने इस्हाक़ ने वारिद किया है कि यहूदी आये थे और इन्होंने कहा था कि हम भी इसी जैसा कलाम बना लेते हैं पस यह आयत उतरी लेकिन हमें इसके मानने में ताम्मुल है इसलिए कि यह सूरत मक्की है और इसका कुल बयान कुरेशियों से है वही मुख़ातब हैं और यहूद के साथ मक्के में आपका इज्तिमाअ नहीं हुआ, मदीने में उनसे मेल हुआ, वल्लाहु आलम!

हमने इस पाक किताब में हर क़िस्म की दलीलें बयान करके हक़ को वाज़ेह कर दिया है और हर बात को शरह व बस्त से बयान कर दिया है बावजूद इसके भी अक्सर लोग हक़ की मुख़ालिफ़त कर रहे हैं और हक़ को धक्के दे रहे हैं और अल्लाह तआला की नाशुक्री में लगे हुए हैं।

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ
نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا
كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾ اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي
السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ
كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾

तर्जुमा : ''कहने लगे कि हम तुझ पर ईमान लाने के नहीं यहाँ तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा जारी न कर दे। (90) या ख़ुद तेरे लिए ही कोई बाग़ हो खजूरों और अंगूरो का और उसके बीच तू बहुत सी नहरें जारी कर दिखाये। (91) या तू आसमान को हम पर टुकड़े टुकड़े करके गिरा दे जैसे कि तेरा गुमान है या तो ख़ुद अल्लाह तआला को और फ़रिश्तों को हमारे सामने ला खड़ा कर दे। (92) या तेरे अपने लिए कोई सोने का घर हो जाए या तू आसमान पर चढ़ जाए और हम तो तेरे चढ़ जाने का भी उस वक़्त तक यक़ीन नहीं करेंगे जब तक कि तू हम पर कोई किताब न उतार लाए जिसे हम आप पढ़ ले, तू जवाब दे कि मेरा परवरदिगार पाक है मैं तो सिर्फ़ एक इंसान ही हूँ जो रसूल बनाया गया हूँ।'' (93)

मुश्रिकीन की अजीब अजीब माँगें (आयत 90-93) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि रबीआ के दोनों बेटे उत्बा और शैबा और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और बनी अब्दुद्दार क़बीले के दो शख़्स और अबुल बख़्तरी बनी असद का और अस्वद बिन मुत्तलिब बिन असद और ज़म्आ बिन अस्वद और वलीद बिन मुग़ीरह, अबू जहल बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या, और उमय्या बिन ख़ल्फ़ और आस़ बिन वाइल और नबिया और मुनब्बा सहमी हज्जाज के लड़के यह सब या इनमें से कुछ सूरज के ग़ुरूब होने के बाद कअबतुल्लाह के पीछे जमा हुए और कहने लगे, भई! किसी को भेजकर मुहम्मद (ﷺ) को बुला लाओ और उससे कह सुनकर आज फ़ैसला कर लो ताकि कोई उज़्र बाक़ी न रहे, चुनाँचे क़ासिद गया और ख़बर दी कि आपकी क़ौम के शरीफ़ लोग जमा हुए हैं और आपको याद किया है। चूँकि हुज़ूर (ﷺ) को उन लोगों का हर वक़्त ख़्याल रहता था आपके जी में आई कि बहुत मुम्किन है अल्लाह तआला ने उन्हें सही समझ दी हो और यह सीधी राह पर आ जाएँगे इसलिए आप फ़ौरन ही तशरीफ़ ले आये, क़ुरैशियों ने आपको देखते ही कहा कि सुनिए! आज हम आप पर हुज्जत पूरी कर देते हैं ताकि फिर हम पर किसी क़िस्म का इल्ज़ाम न आए, इसीलिए हमने आपको बुलवाया है। वल्लाह! किसी ने अपनी क़ौम को इस मुसीबत में नहीं डाला होगा जो मुसीबत

आपने हम पर खड़ी कर रखी है, तुम हमारे बाप दादों को गालियाँ देते हो। हमारे दीन को बुरा कहते हो। हमारे बुज़ुर्गों को बेवक़ूफ़ बतलाते हो। हमारे मअबूदों को बुरा कहते हो। तुमने हममें फूट डाल दी। लड़ाइयाँ खड़ी कर दीं, वल्लाह! आपने हमें किसी बुराई के पहुँचाने में कोई कसर बाक़ी न छोड़ी, अब साफ़ साफ़ सुन लीजिए और सोच समझकर जवाब दीजिए कि अगर आपका इरादा इन तमाम बातों से माल जमा करने का है तो हम मौजूद हैं हम ख़ुद आपको इस क़द्र माल जमा कर देते हैं कि आपके बराबर हममें से कोई मालदार न हो और अगर आपका इरादा इससे यह है कि आप हम पर सरदारी करें तो लो हम इसके लिए भी तैयार हैं हम आपकी सरदारी तस्लीम करते हैं और आपकी ताबेदारी मंज़ूर करते हैं। अगर आप बादशाहत के तालिब हैं तो बख़ुदा हम आज आपकी बादशाहत का ऐलान कर देते हैं और अगर वाक़ेई आपके दिमाग़ में कोई फ़ितूर है कोई जिन्न आपको सता रहा है तो हम मौजूद हैं, दिल खोलकर रक़में ख़र्च करके आपका इलाज मुआलजा करेंगे, यहाँ तक कि आपको शिफ़ा हो जाए या हम मअज़ूर समझ लिये जाएँ। यह सब सुनकर आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि "सुनो! बिहम्दिल्लाह! मुझे कोई दिमाग़ी आरज़ा या ख़लल आसेब नहीं, न ही अपनी इस रिसालत की वजह से मालदार बनना चाहता हूँ, न किसी सरदारी की लालच है, न बादशाह बनना चाहता हूँ, बल्कि मुझे अल्लाह तआला ने तुम सबकी तरफ़ अपना रसूले बरहक़ बनाकर भेजा है और मुझ पर अपनी किताब नाज़िल की है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें ख़ुशख़बरियाँ सुना दूँ और डरा धमका दूँ मैंने अपने रब के पैग़ामात पहुँचा दिए, तुम्हारी सच्ची ख़ैरख़्वाही की, तुम अगर क़बूल कर लोगे तो दोनों जहान में नसीब वाले बन जाओगे और अगर नामंज़ूर करोगे तो मैं सब्र करूँगा यहाँ तक कि जनाब बारी तआला मुझमें और तुममें सच्चा फ़ैसला कर दे।" (अव कमा क़ाल) अब सरदाराने क़ौम ने कहा कि मुहम्मद (ﷺ) अगर आपको हमारी इन बातों में से एक भी मंज़ूर नहीं तो अब और सुनो यह तो ख़ुद तुम्हें भी मालूम है कि हमसे ज़्यादा तंग शहर किसी और का नहीं, हमसे ज़्यादा कम माल कोई क़ौम नहीं, हमसे ज़्यादा पेट पीट पीटकर बहुत कम रोज़ी हासिल करने वाली भी कोई क़ौम नहीं। तो आप अपने रब से जिसने आपको अपनी रिसालत देकर भेजा है, दुआ कीजिए कि यह पहाड़ यहाँ से हटा ले ताकि हमारा इलाक़ा कुशादा हो जाए, हमारे शहरों को वुस्अत हो जाए, इसमें नहरें और चश्मे और दरिया जारी हो जाएँ, जैसे कि शाम और इराक़ में हैं और यह भी दुआ कीजिए कि हमारे बाप दादे ज़िन्दा हो जाएँ और उनमें क़ुसय बिन किलाब ज़रूर हो जो हममें एक बुज़ुर्ग सच्चा शख़्स था हम उससे पूछ लेंगे वह आपकी बाबत जो कहेगा हमें इत्मिनान हो जाएगा, अगर आपने यह कर दिया तो हमें आपकी रिसालत पर यक़ीन हो जाएगा और हम आपकी दिल से तस्दीक़ करने लगेंगे और आपकी बुज़ुर्गी के क़ाइल हो जाएँगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "मैं इन चीज़ों के साथ नहीं भेजा गया इनमें से कोई काम मेरे बस का नहीं, मैं तो अल्लाह तआला की बातें तुम्हें पहुँचाने के लिए आया हूँ तुम क़बूल कर लो दोनों जहान में ख़ुश रहोगे। न क़बूल करोगे तो मैं सब्र करूँगा, अल्लाह के हुक्म पर मुंतज़िर रहूँगा। यहाँ तक कि परवरदिगारे आलम मुझमें और तुममें फ़ैसला कर दे।" उन्होंने कहा, अच्छा, यह भी न सही लीजिए हम ख़ुद आपके लिए ही तज्वीज़ करते हैं आप अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह कोई फ़रिश्ता आपके पास भेजे जो आपकी बातों की सच्चाई और तस्दीक़ कर दे, आपकी तरफ़ से हमें जवाब दे और उससे कहकर आप अपने लिए ही बाग़ात और ख़ज़ाने और सोने चाँदी के महल बना लीजिए ताकि ख़ुद आपकी हालत सँवर जाए, बाज़ारों में फिरना चलना

हमारी तरह तलाशे मुआश (रोज़ी की तलाश) में निकलना, यह तो छूट जाए। यह भी अगर हो जाए तो हम मान लेंगे कि वाक़ेई अल्लाह तआला के यहाँ आपकी इज़्ज़त है और आप वाक़ेई अल्लाह तआला के रसूल हैं।

इसके जवाब में आप (ﷺ) ने फ़र्माया "न मैं यह करूँ न अपने रब से यह तलब करूँ, न इसके साथ मैं भेजा गया, मुझे तो अल्लाह तआला ने ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है बस और कुछ नहीं तुम अगर मान लो तो दोनों जहान में अपना भला करोगे और न मानो, न सही मैं देख रहा हूँ कि मेरा परवरदिगार मेरे और तुम्हारे बीच क्या फ़ैसला करता है।" उन्होंने कहा, अच्छा! फिर हम कहते हैं कि जाओ अपने रब से कहकर हम पर आसमान गिरा दो। तुम तो कहते ही हो कि अगर अल्लाह चाहे तो ऐसा कर दे तो फिर हम कहते हैं बस करो, ढील मत दो। आपने फ़र्माया "यह अल्लाह तआला के इख़्तियार में है, जो वह चाहे करे" जो न चाहे न करे, मुश्रिकीन ने कहा, सुनिये! क्या अल्लाह तआला को यह मालूम न था कि हम तेरे पास इस वक़्त बैठेंगे और तुझसे यह चीज़ें तलब करेंगे और इस क़िस्म के सवालात करेंगे, तो चाहिए था कि वह तुझे पहले से ख़बरदार कर देता और यह भी बता देता कि तुझे क्या जवाब देना चाहिए और जब हम तेरी न मानें तो वह हमारे साथ क्या करेगा। सुनिए! हमने तो सुना है कि आपको यह सब कुछ यमामा का एक शख़्स रहमान नामी है वह सिखा जाता है। अल्लाह तआला की क़सम! हम तो रहमान पर ईमान लाने के नहीं, नामुम्किन है कि हम उसे मानें, हमने आपसे सुबुकदोशी हासिल कर ली जो कुछ कहना सुनना था कह सुन चुके और आपने हमारी वाजिबी और इंसाफ़ की बात नहीं सुनी, अब कान खोलकर होशियार होकर सुन लीजिए कि आपको इस हालत में आज़ाद नहीं रख सकते, अब या तो हम आपको हलाक कर देंगे, या आप हमें तबाह कर दें। कोई कहने लगा हम तो फ़रिश्तों को पूजते हैं जो अल्लाह तआला की बेटियाँ हैं, किसी ने कहा, जब तक तू अल्लाह तआला को और उसके फ़रिश्तों को खुल्लम खुल्ला हमारे पास न लायेगा हम ईमान न लायेंगे, फिर मज्लिस बरख़ास्त हुई। अब्दुल्लाह बिन उबय, उमय्या बिन मुग़ीरह, अब्दुल्लाह बिन मख़ज़ूम जो आपकी फूफी हज़रत आतिका (रज़ि.) बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब का लड़का था आपके साथ हो लिया और कहने लगा कि यह तो बड़ी नाइंसाफ़ी की बात है कि क़ौम ने जो कहा, वह भी आपने मंज़ूर न किया फिर जो तलब किया, वह भी आपने पूरा न किया, फिर जिस चीज़ से आप उन्हें डराते थे वह मांगा वह भी आपने न किया। अब तो अल्लाह तआला की क़सम! मैं आप पर ईमान लाऊँगा ही नहीं, जब तक कि आप सीढ़ी लगाकर आसमानों पर चढ़कर कोई किताब न लाएँ और चार फ़रिश्ते अपने साथ अपने गवाह बनाकर न लाएँ। हुज़ूर (ﷺ) इन तमाम बातों से सख़्त रंजीदा हो गए थे आप बड़े शौक़ से गए थे कि शायद क़ौम के सरदार मेरी कुछ मान लें, लेकिन जब उनकी सरकशी और ईमान से दूरी आपने देखी तो बड़े ही ग़मज़दा होकर वापिस अपने घर लौट आए। (तब्री : 17/557)

बात यह है कि उनकी यह तमाम बातें बतौर कुफ़्र व दुश्मनी और बतौर नीचा दिखाने और लाजवाब करने की थीं वरना अगर ईमान लाने के लिए नेक निय्यती से यह सवालात करते तो बहुत मुम्किन था कि अल्लाह तआला उन्हें यह मोजिज़े दिखा देता। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) से फ़र्माया गया कि अगर आपकी चाहत हो तो जो यह माँगते हैं, मैं दिखा दूँ लेकिन यह याद रहे कि अगर फिर भी ईमान न लाए तो उन्हें वह इब्रतनाक

अज़ाब दूँगा जो पहले किसी को न दी गयी हों। और अगर आप चाहें तो मैं इन पर तौबा की क़बूलियत का और रह़मत का दरवाज़ा खुला रखूँ, आपने दूसरी बात पसंद की। (मुस्नद अह़मद : 1/242; मुस्नदे अ़ब्द बिन ह़मीद : 700; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/272; वहुव ह़दीसुन स़ह़ीहुन) अल्लाह तआला अपने नबी रह़मत और नबी तौबा पर दुरूदो सलाम बहुत बहुत नाज़िल करे, इसी बात और ह़िक्मत का ज़िक्र आयत (وَ مَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ) (17/बनी इस्राईल : 59) और आयत (وَ قَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ) (25/फ़ुरक़ान : 7) में भी है कि यह सब चीज़ें हमारे बस में हैं और यह सब मुम्किन है लेकिन इसी वजह से कि इनके ज़ाहिर हो चुकने के बाद ईमान न लाने वालों को फिर हम नहीं छोड़ा करते, हमने इन निशानात को रोक रखा है और इन कुफ़्फ़ार को ढील दे रखी है और इनका आख़िरी ठिकाना जहन्नम बना रखा है। पस इनका सवाल था कि रेगिस्ताने अ़रब में नहरें चल पड़ें दरिया उबल पड़े वग़ैरह ज़ाहिर है कि इनमें से कोई काम भी उस क़ादिर व क़य्यूम अल्लाह तआला पर भारी नहीं सब कुछ उसकी क़ुदरत तले और उसके फ़र्मान तले है लेकिन वह बख़ूबी जानता है कि यह अज़्ली काफ़िर इन मोजिज़ों को देखकर भी ईमान नहीं लाने वाले। जैसे फ़र्मान है (اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَ لَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝) (10/यूनुस : 96, 97) यानी जिन पर तेरे रब की यह बात साबित हो चुकी है उन्हें बावजूद तमामतर मोजिज़ात देख लेने के भी ईमान नसीब न होगा यहाँ तक कि वह अलमनाक अ़ज़ाबों का मुआयना न कर लें (وَ لَوْ اَنَّنَا) (6/अन्आम : 111) में फ़र्माया कि ऐ नबी! इनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ अगर हम इन पर फ़रिश्ते भी नाज़िल कर दें और मुर्दे भी इनसे बातें कर लें और इतना ही नहीं बल्कि ग़ैब की तमाम चीज़ें खुल्लम खुल्ला इनके सामने ज़ाहिर कर दें तो भी यह काफ़िर बग़ैर मशिय्यते इलाही ईमान लाने के नहीं, इनमें से अक्सर जिहालत के पुतले हैं। अपने लिए दरिया त़लब करने के बाद इन्होंने कहा, अच्छा! आप ही के लिए बाग़ात और नहरें हो जाएँ फिर कहा कि अच्छा! यह भी न सही। यह तो आप कहते हैं कि क़ियामत के दिन आसमान फट जाएगा, टुकड़े टुकड़े हो जाएगा तो अब आज ही हम पर उसके टुकड़े गिरा दीजिए चुनाँचे उन्होंने ख़ुद भी अल्लाह तआला से यही दुआ की कि या अल्लाह! अगर यह सब कुछ तेरी जानिब से ही बरह़क़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा...। (10/यूनुस : 96)

शुऐब (عليه السلام) की क़ौम ने भी यही ख़्वाहिश की थी जिस बिना पर उन पर सायबान के दिन का अ़ज़ाब उतरा। लेकिन चूँकि हमारे हुज़ूर रह़मतुल लिल आलमीन थे, आपने अल्लाह तआला से दुआ की कि वह उन्हें हलाकत से बचा ले, मुम्किन है कि यह नहीं तो इनकी औलादें ही ईमान क़बूल कर लें, तौह़ीद इख़्तियार कर लें और शिर्क छोड़ दें। आपकी यह आरज़ू पूरी हुई, अ़ज़ाब न उतरा, ख़ुद उनमें से भी बहुत सों को ईमान की दौलत नसीब हुई, यहाँ तक कि अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या जिसने आख़िर में हुज़ूर (ﷺ) के साथ जाकर आपको बातें सुनाई थीं और ईमान न लाने की क़समें खाई थीं वह भी इस्लाम के झण्डे तले आ गए, रज़ियल्लाहु अ़न्हू। ज़ुख़रुफ़ से मुराद सोना है। (त़ब्री : 7/553) बल्कि इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरअत में लफ़्ज़ (मिन ज़हबिन) है। (त़ब्री : 7/553) कुफ़्फ़ार का और मुतालबा यह था कि तेरे लिए सोने का घर हो जाए या हमारे देखते हुए तू सीढ़ी लगाकर आसमान पर चढ़ जाए और वहाँ से कोई किताब लाए जो

हर एक के नाम की अलग अलग हो। रातों रात उनके सिरहाने वह पर्चे पहुँच जाएँ उन पर उनके नाम लिखे हुए हों। इसके जवाब में हुक्म हुआ कि इनसे कह दो कि अल्लाह सुब्हानहू व तआला के आगे किसी की कुछ नहीं चलती, वह अपनी सल्तनत और मम्लकत का तंहा मालिक है, जो चाहे करे जो न चाहे न करे, तुम्हारी मुँह माँगी चीज़ ज़ाहिर करे, न करे यह उसके इख़्तियार में है, मैं तो सिर्फ़अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने वाला रसूल हूँ, मैं ने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया, अह्कामे इलाही तुम्हें पहुँचा दिये, अब जो तुमने माँगा वह अल्लाह के बस की बात है न कि मेरे बस की। मुस्नद अह़मद में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "बत़्हा मक्का की बाबत मुझसे फ़र्माया गया कि अगर तुम चाहो तो मैं इसे सोने का बना दूँ? मैंने गुज़ारिश की कि नहीं या अल्लाह! मेरी तो यह चाहत है कि एक दिन पेट भरा रहूँ और दूसरे दिन भूख में तेरी त़रफ़ झुकूँ। तज़र्रुअ और ज़ारी करूँ और बकसरत तेरी याद करूँ, भरे पेट हो जाऊँ तो तेरी ह़म्द करूँ, तेरा शुक्र बजा लाऊँ।" (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िल किफ़ाफ़ि वस्सब्रि अलैहि : 2347; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अह़मद : 5/254; उबैदुल्लाह बिन ज़ह्र और अली बिन यज़ीद ज़ईफ़ रावी हैं।) तिर्मिज़ी में भी यह ह़दीस है और इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) ने इसे ज़ईफ़ कहा है।

***

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۴﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿۹۵﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۹۶﴾

तर्जुमा : "लोगों के पास हिदायत पहुँच चुकने के बाद ईमान से रोकने वाली सिर्फ़ यही चीज़ रहीं कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने एक इंसान को ही रसूल बनाकर भेजा? (94) तू जवाब दे कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते चलते फिरते और रहते सहते होते तो हम भी उनके पास किसी आसमानी फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजते। (95) कह दो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह तआला का गवाह होना काफ़ी है, वह अपने बन्दों से ख़ूब आगाह और बख़ूबी देखने वाला है।" (96)

अक्सर लोग पैग़म्बरों के इंसान होने की वजह से ईमान न लाए (आयत 94-96) : अक्सर लोग ईमान से और रसूलों की ताबेदारी से इसी बिना पर रुक गए कि उन्हें यह समझ में न आया कि कोई इंसान भी रसूलुल्लाह बन सकता है, वह इस पर सख़्ततर ताज्जुब करते और आख़िर इंकार कर बैठे और साफ़ कह दिया कि एक इंसान हमारी रहबरी करेगा? फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने भी यही कहा था कि हम अपने जैसे दो

इंसानों पर कैसे ईमान लाएँ, ख़ुसूसन इस सूरत में कि इनकी सारी क़ौम हमारी मातहती में है। यही और उम्मतों ने अपने ज़माने के नबियों से कहा था कि तुम तो हम जैसे ही इंसान हो, सिवा इसके कछ नहीं कि तुम हमें अपने बड़ों के ख़ुदाओं से बहका रहे हो। अच्छा लाओ कोई ज़बरदस्त ग़ल्बा पेश करो। और भी इस मज़्मून की बहुत सी आयतें हैं।

पैग़म्बर (ﷺ) का इंसान होना अल्लाह तआला का इंसानियत पर अज़ीम एहसान है : इसके बाद अल्लाह तआला अपने लुत्फ़ो करम को और इंसानों में से रसूलों के भेजने की वजह को बयान करता है और इस हिक्मत को ज़ाहिर करता है कि अगर फ़रिश्ते रिसालत का काम अंजाम देते तो न उनके पास तुम बैठ उठ सकते, न उनकी बातें पूरी तरह सोच समझ सकते। इंसानी रसूल चूँकि तुम्हारे ही हमजिंस होते हैं, तुम उनसे ख़ुला मिला रख सकते हो, उनकी आदात और अत्वार देख सकते हो और मिल जुलकर उनसे अपनी ज़ुबान में तालीम हासिल कर सकते हो, उनका अमल देखकर ख़ुद सीख सकते हो। जैसे फ़र्मान है (لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ) (3/आले इमरान : 164) और आयत में है (لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ) (9/तौबा : 128) और आयत में है (كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ) (2/बक़रह : 151) मतलब सबका यही है कि यह तो अल्लाह का ज़बरदस्त एहसान है कि उसने तुममें से ही अपने रसूल भेजे कि वह आयाते इलाही तुम्हें पढ़कर सुनाएँ, तुम्हारी पाकीज़गी करें और तुम्हें किताबो हिक्मत सिखाएँ और जिन चीज़ों से तुम बेइल्म थे, वह तुम्हें आलिम बना दें पस तुम्हें मेरी याद ज़्यादा करनी चाहिए ताकि मैं भी तुम्हें याद करूँ तुम्हें मेरी शुक्रगुज़ारी करनी चाहिए और नाशुक्री से बचना चाहिए। यहाँ फ़र्माता है कि अगर ज़मीन की आबादी फ़रिश्तों की होती तो बेशक हम किसी आसमानी फ़रिश्ते को उनमें रसूल बनाकर भेजते चूँकि तुम ख़ुद इंसान हो हमने इसी मस्लिहत से इंसानों में से ही अपने रसूल बनाकर तुममें भेजे।

पैग़म्बरों की सच्चाई का बड़ा गवाह ख़ुद अल्लाह है : अपनी सच्चाई पर मैं और गवाह क्यूँ ढूँढू? अल्लाह तआला की गवाही काफ़ी है मैं उसकी पाक ज़ात पर तोहमत बाँधता हूँ तो वह आप मुझसे इंतिक़ाम लेगा। चुनाँचे क़ुरआन की सूरह हाक़्क़ा में बयान है कि अगर यह पैग़म्बर (ﷺ) ज़बरदस्ती कोई बात हमारे सिर चिपका देता तो हम इसका दाहिना हाथ थामकर इसकी गर्दन उड़ा देते और हमें इससे कोई न रोक सकता। (69/हाक़्क़ा : 44-46) फिर फ़र्माया कि किसी बंदे का हाल अल्लाह से छुपा नहीं, वह इन्आम व एहसान, हिदायत व लुत्फ़ के क़ाबिल लोगों को और गुमराही और बदबख़ती के क़ाबिल लोगों को बख़ूबी जानता है।

***

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ
سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ
عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾

तर्जुमा : ''अल्लाह तआला जिसकी रहनुमाई कर दे वह तो राह पा जाता है और जिसे वह राह से भटका दे नामुम्किन है कि तू उसका रफ़ीक़ उसके सिवा किसी और को पा ले। ऐसे लोगों का हम बरोज़े क़ियामत औंधे मुँह हश्र करेंगे, यहाँ तक कि वह अंधे, गूँगे और बहरे होंगे, उनका ठिकाना जहन्नम होगी। जब कभी वह हल्की होने लगेगी हम उन पर उसे भड़का देंगे। (97) यह सब हमारी आयतों से कुफ़्र करने और यह कहने का बदला है कि क्या जब हम हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे फिर हम नई पैदाइश मेंउठा खड़े किये जाएँगे। (98) क्या इन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की कि जिस अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया वह इन जैसों की पैदाइश पर पूरा क़ादिर है, उसी ने इनके लिए एक ऐसा वक़्त मुक़र्रर कर रखा है जो शक व शुब्हा से यक्सर ख़ाली है लेकिन नाइंसाफ़ लोग नाशुक्रे बने बग़ैर रहते ही नहीं।'' (99)

(आयत 97-99) : अल्लाह तआला इस बात को बयान करता है कि तमाम मख़्लूक़ में तसर्रुफ़ सिर्फ़ उसी का है, उसका कोई हुक्म टल नहीं सकता। उसके राह दिखाये हुए को कोई बहका नहीं सकता। न उसके बहकाये हुए की कोई दस्तगीरी कर सकता है, उसका वली और मुर्शिद कोई नहीं बन सकता। हम उन्हें औंधे मुँह मैदाने क़ियामत में महशर के मज्मअे में लाएँगे। हुज़ूर (ﷺ) से सवाल हुआ यह कैसे हो सकता है? आपने फ़र्माया, ''जिसने पैरों पर चलाया है वह सिर के बल भी चला सकता है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह फ़ुरक़ान बाब क़ौलुहू (अल्लज़ीना युहशरूना अला वुजूहिहिम इला जहन्नम) : 4760; सहीह मुस्लिम : 2806; अहमद : 3/167; इब्ने हिब्बान : 7323) मुस्नद में है कि हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने खड़े होकर फ़र्माया कि ऐ बनी ग़िफ़ार! (क़बीले के लोगों!) कहो और क़समें न खाओ। सादिक़ मुसद्दक़ पैग़म्बर ने मुझे यह हदीस सुनाई है कि ''लोग तीन क़िस्म के बनाकर हश्र में लाए जायेंगे, एक फ़ौज तो खाने पीने और पहनने ओढ़ने वाली, एक चलने और दौड़ने वाली, एक वह जिन्हें समझ में नहीं आए। आपने फ़र्माया, सवारियों पर आफ़त आ जाएगी यहाँ तक कि एक इंसान अपना हरा बाग़ देकर पालान वाली ऊँटनी ख़रीदना चाहेगा लेकिन

न मिल सकेगी। (नसाई, किताबुल जनाइज़, बाबुल बअ़स : 2088; व सनदुहू ह़सन; अह़मद : 5/165; ह़ाकिम : 2/367) यह उस वक़्त नाबीना होंगे, बेज़ुबान होंगे, कुछ भी न सुन सकेंगे। ग़र्ज़ मुख़्तलिफ़ ह़ाल होंगे और गुनाहों की शामत में गुनाहों के मुताबिक़ गिरफ़्तार किये जाएँगे। दुनिया में ह़क़ से बहरे और अँधे और गूँगे बने रहे, आज सख़्त एह़तियाज वाले दिन सचमुच के अंधे, बहरे और गूँगे बना दिये गए, इनका असली ठिकाना हर फिरकर आने और रहने सहने बसने ठहरने की जगह जहन्नम क़रार दी गई। वहाँ की आग जहाँ धीमी पड़ने को आई और भड़का दी गई, सख़्त तेज़ कर दी गई। जैसे फ़र्माया (فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا) (78/नबा : 30) यानी अब सज़ा बर्दाश्त करो सिवा अ़ज़ाब के कोई चीज़ तुम्हें ज़्यादा न की जाएगी।

कुफ़्फ़ार दोबारा जी उठने के क़ाइल न थे : फ़र्मान है कि ऊपर जिन मुंकिरों की जिस सज़ा का ज़िक्र हुआ है वह उसी के क़ाबिल थे, वह हमारी दलीलों को ग़लत जानते थे और क़ियामत के क़ाइल ही न थे और साफ़ कहते थे कि बोसीदा हड्डियाँ हो जाने के बाद मिट्टी के रेज़ों से मिल जाने के बाद हलाक और बर्बाद हो चुकने के बाद का दोबारा जी उठना तो अ़क़्ल के बाहर है।

पस इनके जवाब में क़ुरआन ने इसकी एक दलील यह पेश की कि उस ज़बरदस्त क़ुदरत के मालिक ने ज़मीनो आसमान बग़ैर किसी चीज़ के पहली बार बिला नमूना पैदा किये हैं जिसकी क़ुदरत बुलंद व बाला वसीअ और सख़्त मख़्लूक़ की इब्तिदाई पैदाइश से आजिज़ नहीं किया वह तुम्हें दोबारा पैदा करने से आजिज़ हो जाएगा? आसमान ज़मीन की पैदाइश तो तुम्हारी पैदाइश से बहुत बड़ी है वह उनके पैदा करने में नहीं थका, क्या वह मुर्दों को ज़िन्दा करने से बेक़ुदरत हो जाएगा? क्या आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ इंसानों जैसे और पैदा नहीं कर सकता? बेशक कर सकता है। उसका वस्फ़ है कि वह ख़ल्लाक़ है, वह अ़लीम है, वह क़ुदरतों वाला है। जिस चीज़ की निस्बत फ़र्मा दे कि हो जा, वह हो जाती है, उसका हुक्म ही चीज़ के वुजूद के लिए काफ़ी है। वह उन्हें क़ियामत के दिन दोबारा की नई पैदाइश में ज़रूर और क़तअ़न पैदा करेगा, उसने इनके एआदा की, इनके क़ब्रों से निकलने की मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है, उस वक़्त यह सब कुछ होकर रहेगा। यहाँ की क़द्रे ताख़ीर सिर्फ़ उस वक़्त को पूरा करने के लिए है। अफ़सोस! किस क़द्र साफ़ दलीलों के बाद भी लोग कुफ़्र व ज़लालत को नहीं छोड़ते।

***

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ۝١٠٠

तर्जुमा : **''कह दे कि अगर बिल फ़र्ज़ तुम मेरे रब की रह़मतों के ख़ज़ानों के मालिक बन जाओ तो तुम उस वक़्त भी उसके ख़र्च हो जाने के डर से उसमें कंजूसी करते, इंसान है ही तंगदिल ।''** (100)

अल्लाह तआला ने ख़ज़ानों का मालिक किसी इंसान को क्यूँ न बनाया? (आयत 100) : इंसानी तबीयत का ख़ासा बयान हो रहा है कि अल्लाह तआला की रहमत जैसी न कम होने वाली चीज़ पर भी अगर यह क़ाबिज़ हो जाए तो वहाँ भी अपनी कंजूसी और तंगदिली न छोड़े। जैसे और आयत में है कि अगर मुल्क के किसी हिस्से के यह मालिक हो जाए तो किसी को एक कोड़ी भी न परखायें। (4/निसाअ : 53) पस यह इंसानी तबीयत है, हाँ! जो अल्लाह तआला की तरफ़ से हिदायत किये जाएँ और तौफ़ीक़े ख़ैर दिये जाएँ वह इस बदख़स्लत से नफ़रत करते हैं, वह सख़ी और दूसरों का भला करने वाले होते हैं। इंसान बड़ा ही जल्दबाज़ है तक्लीफ़ के वक़्त लड़खड़ा जाता है और राहत के वक़्त फूल जाता है और दूसरों से रोकने लगता है। हाँ! नमाज़ी लोग इससे बरी हैं... (70/मआरिज : 19-22) ऐसी आयतें क़ुरआन में और भी बहुत सी हैं। इससे अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम उसकी बख़्शिश व रहम का पता भी चलता है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि ''अल्लाह तआला के हाथ पुर हैं दिन रात का ख़र्च उसमें कोई कमी नहीं लाता। शुरुआत से अब तक के ख़र्च ने भी उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं की।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (लिमा ख़लक़्तु बियदी) : 7411; सहीह मुस्लिम : 993)

***

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ
فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾ فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ
مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿۱۰۳﴾ وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا
الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿۱۰۴﴾

तर्जुमा : ''हमने मूसा (عليه السلام) को नौ मोजिज़े बिलकुल साफ़ साफ़ अता किये तो आप ही बनी इस्राईल से पूछ लें कि जब वह उनके पास पहुँचा तो फ़िरऔन बोला कि ऐ मूसा! मेरे ख़्याल में तो तुझ पर जादू कर दिया गया है। (101) मूसा (عليه السلام) ने जवाब दिया कि यह तो तुझे इल्म हो चुका है कि आसमान व ज़मीन के परवरदिगार ही ने यह मोजिज़े दिखाने समझाने को नाज़िल किये हैं, ऐ फ़िरऔन! मैं तो समझ रहा हूँ कि तू यक़ीनन बर्बाद व हलाक किया गया है। (102) आख़िर फ़िरऔन ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि उन्हें ज़मीन से ही उखेड़ दे तो हमने ख़ुद उसे और उसके तमाम साथियों को डुबो दिया। (103) उसके बाद हमने बनी इस्राईल से फ़र्मा दिया कि इस सर ज़मीन पर तुम रहो सहो हाँ! जब आख़िरत का वादा आएगा हम तुम सबको समेट और लपेटकर ले आएँगे।'' (104)

हज़रत मूसा (ﷺ) के नौ मोजिज़ात (आयत 101-104) : हज़रत मूसा (ﷺ) को नौ ऐसे मोजिज़े मिले जो आपकी नबुव्वत की सदाक़त और नबुव्वत पर खुली दलील थी, लकड़ी हाथ क़हतसाली, दरिया, तूफ़ान, टिड्डियाँ, जूएँ, मेंढक और ख़ून। यह थीं तफ़्सीलवार आयतें (निशानियाँ)। (तब्री : 17/564) मुहम्मद बिन कअब (रह.) का क़ौल है कि यह मोजिज़े हैं हाथ का चमकीला बन जाना, लकड़ी का साँप हो जाना और पाँच वह जिनका बयान सूरह आराफ़ में है और मालों काा मिट जाना और पत्थर। (तब्री : 17/565) इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है कि यह मोजिज़े आपका हाथ, आपकी लकड़ी, क़हतसालियाँ, फलों की कमी, तूफ़ान, टिड्डियाँ, जूएँ, मेंढक और ख़ून हैं। (तब्री : 17/565, 566) यह क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर बहुत साफ़ बेहतर और क़वी है। हसन बसरी (रह.) ने उनमें से क़हतसाली और फलों की कमी को एक गिनकर नवाँ मोजिज़ा आपकी लकड़ी का जादूगरों के साँपों को खा जाना बयान किया है लेकिन इन तमाम मोजिज़ों के बावजूद फ़िरऔनियों ने घमण्ड किया और अपनी गुनहगारी पर अड़े रहे बावजूद यह कि दिल यक़ीन ला चुका था मगर ज़ुल्मों ज़्यादती करके कुफ़्र व इंकार पर जम गए। अगली आयतों से इन आयतों का रब्त यह है कि जैसे आपकी क़ौम आपसे मोजिज़े तलब करती है ऐसे ही फ़िरऔनियों ने भी हज़रत मूसा (ﷺ) से मोजिज़े तलब किये जो ज़ाहिर हुए लेकिन उन्हें ईमान नसीब न हुआ, आख़िरकार हलाक कर दिये गए। इसी तरह अगर आपकी क़ौम भी मोजिज़ों के आ जाने के बाद काफ़िर ही रही तो फिर मोहलत न मिलेगी और मअन तबाह व बर्बाद कर दी जाएगी। ख़ुद फ़िरऔन ने मोजिज़े देखने के बाद हज़रत मूसा (ﷺ) को जादूगर कहकर अपना पीछा छुड़ा लिया। पस यहाँ जिन 9 निशानियों का बयान है यह वही हैं और उन ही का बयान (وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ) से (قَوْمًا فٰسِقِيْنَ) (28/क़सस : 31, 32) तक में है इन आयतों में लकड़ी का और हाथ का ज़िक्र मौजूद है और बाक़ी आयतों का बयान सूरह आराफ़ में है। इनके अलावा भी अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (ﷺ) को बहुत से मोजिज़े दिये थे मस्लन आपकी लकड़ी के लगने से एक पत्थर में से बारह चश्मों का ज़ाहिर हो जाना, या बादल का साया करना, मन्न व सल्वा का उतरना वग़ैरह वग़ैरह। यह सब नेअमतें बनी इस्राईल को मिस्र के शहर छोड़ने के बाद मिलीं पस इन मोजिज़ों को यहाँ इसलिए बयान नहीं किया कि वह फ़िरऔनियों ने नहीं देखे थे। यहाँ सिर्फ़ उन मोजिज़ों का बयान है जो फ़िरऔनियों ने देखे थे और उन्हें झुठलाया था।

मुस्नद अहमद में है कि एक यहूदी ने अपने साथी से कहा चल तो ज़रा इस नबी से इनके क़ुरआन की इस आयत के बारे में पूछ लें कि (हज़रत) मूसा (ﷺ) को वह नौ आयात क्या मिली थीं? दूसरे ने कहा, नबी न कह, सुन लेगा तो उसकी चार आँखें हो जाएँगी। अब दोनों ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह कि "अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करो, चोरी न करो, ज़िना न करो, किसी जान को नाहक़ क़त्ल न करो, जादू न करो, सूद न खाओ, बेगुनाह लोगों को पकड़कर बादशाह के दरबार में न ले जाओ कि उसे क़त्ल करा दो और पाकदामन औरतों पर बोहतान न बाँधो। फ़र्माया जिहाद से न भागो और ऐ यहूदियो! तुम पर ख़ास्सतन यह हुक्म भी था कि हफ़्ते के दिन ज़्यादती न करो।" अब तो वह बेसाख़्ता आपके हाथ पैर चूमने लगे और कहने लगे, हमारी गवाही है कि आप अल्लाह के नबी हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया,

''फिर तुम मेरी ताबेदारी क्यूँ नहीं करते? कहने लगे (हज़रत) दाऊद (عليه السلام) ने दुआ की थी कि मेरी नस्ल में नबी ज़रूर हैं और हमें डर है कि आपकी ताबेदारी के बाद यहूद हमें ज़िन्दा न छोड़ेंगे।''

तिर्मिज़ी नसाई और इब्ने माजा में भी यह हदीस है। (अहमद : 4/239; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन बाब वमिन सूरति बनी इस्राईल : 3144; वहुव हसन; नसाई : 4083; इब्ने माजा : 3705) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह बतलाते हैं लेकिन है ज़रा मुश्किल काम इस लिए कि इसके रावी अब्दुल्लाह बिन सलमा के हाफ़िज़े में क़द्रे क़सूर है और उन पर जरह भी है। मुम्किन है कि नौ कलिमात का शुब्हा नौ आयात से उन्हें हो गया हो इसलिए कि यह तौरात के अहकाम हैं, फ़िरऔन पर हुज्जत क़ायम करने वाली यह चीज़ नहीं, वल्लाहु आलम!

इसीलिए फ़िरऔन से हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया कि ऐ फ़िरऔन! यह तो तुझे भी मालूम है कि यह सब मोजिज़े सच्चे हैं और इनमें से एक एक मेरी सच्चाई की जीती जागती दलील है। मेरा ख़्याल है कि तू हलाक होना चाहता है अल्लाह तआला की लअ़नत तुझ पर उतरनी चाहती है तू मग़लूब होगा और तबाही को पहुँचेगा। (तब्री : 17/570, 571) मस्बूर के मआनी होने के इस शेअ़र में भी है,

इज़ा जारश्शैतानु फ़ी सुननिल ग़य्य   व मम माला मैलुहू मस्बूर

यानी शैतान के दोस्त हलाक होने वाले हैं (अलिम्ता) की दूसरी क़िरअत (अलिम्तु) ते के ज़बर के बदले त के पेश से भी है लेकिन जुम्हूर की क़िरात त के ज़ेर से ही है और इसी मअ़नी को वज़ाहत से इस आयत में बयान किया है (وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ) (27/नम्ल : 14) यानी जब इनके पास हमारी ज़ाहिर और बसीरत अफ़रोज़ निशानियाँ पहुँच चुकीं तो वह बोले कि यह तो खुला जादू है यह कहकर मुंकिर बन बैठे हालाँकि इनके दिलों में यक़ीन आ चुका था लेकिन सिर्फ़ जुल्मो-ज़्यादती की राह से न माना....। अल्ग़र्ज़ यह साफ़ बात है कि जिन नौ निशानियों का ज़िक्र हुआ है यह असा हाथ क़हतसासली फलों की कम पैदावारी, टिड्डियाँ, जूएँ, मेंढक और दम (ख़ून) थीं जो फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से दलील व बुरहान था और आपके मोजिज़े थे जो आपकी सच्चाई और अल्लाह तआला के वुजूद पर दलाइल थे। इन नौ निशानियों से मुराद वह अहकाम नहीं जो ऊपर की हदीस में बयान हुए क्योंकि वह फ़िरऔन और फ़िरऔनियों पर हुज्जत न थे बल्कि उन पर हुज्जत होने और उनके अहकाम के बयान होने के बीच कोई मुनासिबत ही नहीं। यह वहम सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन सलमा रावी हदीस की वजह से लोगों को पैदा हुआ है। इसकी कुछ बातें वाक़ेई क़ाबिले इंकार हैं, वल्लाहु आलम! बहुत मुम्किन है कि इन दोनों यहूदियों ने दस कलिमात का सवाल किया हो और रावी को तो नौ आयतों का वहम रह गया हो। फ़िरऔन ने इरादा किया कि इन्हें जिलावतन कर दिया जाए पस हमने ख़ुद उसे मछलियों का लुक़्मा बनाया और उसके तमाम साथियों को भी। उसके बाद हमने बनी इस्राईल से फ़र्मा दिया कि अब ज़मीन तुम्हारी है रहो सहो खाओ पियो।

इस आयत में हुज़ूर (ﷺ) को भी ज़बरदस्त बशारत है कि मक्का आपके हाथों फ़तह होगा। हालाँकि सूरत मक्की है हिज्रत से पहले नाज़िल हुई है। वाक़ेअ में हुआ भी इसी तरह कि अहले मक्का ने आपको मक्का

से निकाल देना चाहा जैसे क़ुरआन ने आयत (وَ اِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ 17/बनी इस्राईल : 76) में बयान किया है। फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी करीम (ﷺ) को ग़ालिब कर दिया और मक्के का मालिक बना दिया और फ़ातिहाना हेसियत से आप मक्के में आये और यहाँ अपना क़ब्ज़ा किया और फिर अपने हिल्म व करम से काम लेकर मक्के के मुज्रिमों को और अपने ज़ाती दुश्मनों को आम तौर पर माफ़ी दे दी। (ﷺ) अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने बनी इस्राईल जैसी कमज़ोर क़ौम को ज़मीन की मशरिक़ व मग़रिब का वारिस बना दिया था और फ़िरऔन जैसे सख़्त और मुतकब्बिर बादशाह के माल ज़मीन फल खेती और ख़ज़ानों का मालिक कर दिया।

जैसे आयत (وَ اَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ) (26/शुअरा : 59) में बयान हुआ है। यहाँ भी फ़र्माता है कि फ़िरऔन की हलाकत के बाद हमने बनी इस्राईल से फ़र्माया कि अब तुम यहाँ रहो सहो, क़ियामत के वादे के दिन तुम और तुम्हारे दुश्मन सब हमारे सामने इकट्ठे लाए जाओगे हम तुम सबको जमा करके लाएँगे।

***

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ
لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾ {السجدہ}
وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ
وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿۱۰۹﴾

तर्जुमा : "हमने इस क़ुरआन को रास्ती से उतारा और यह भी रास्ती से उतरा। हमने तुझे सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। (105) क़ुरआन को हमने थोड़ा थोड़ा करके इसलिए उतारा है कि तुम उसे बमोहलत लोगों को सुनाओ और हमने ख़ुद भी इसे बतदरीज नाज़िल किया है। (106) कह दे कि तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया है उनके पास तो जब भी इसकी तिलावत की जाती है तो वह ठोडियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। (107) और कहते हैं कि हमारा रब पाक है हमारे रब का वादा बिला शक व शुब्हा पूरा होकर रहने वाला ही है। (108) वह अपनी ठोडियों के बल रोते हुए सज्दे में गिर पड़ते हैं। और यह क़ुरआन की आजिज़ी और ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ और बढ़ा देता है।" (109)

कुरआन हक़ है (आयत 105-109) : इर्शाद है कि कुरआन हक़ के साथ नाज़िल हुआ है। यह सरासर हक़ ही है। अल्लाह तआला ने अपने इल्म के साथ नाज़िल फ़र्माया है इसकी हक़्क़ानियत पर वह ख़ुद गवाह है और फ़रिश्ते भी गवाह हैं इसमें वही है जो उसने आप अपनी दानिस्त के साथ उतारा है उसके तमाम हुक्म अहकाम और नही व मुमानिअत उसी की तरफ़ से है, हक़ वाले ने हक़ के साथ उतारा और यह हक़ के साथ ही तुझ तक पहुँचा न रास्ते में कोई बातिल की यह शान कि इससे मख़्लूत हो सके। यह बिलकुल महफ़ूज़ है कमी ज़्यादती से यक्सर पाक है पूरी ताक़त वाले अमानत और फ़रिश्ते की मअरिफ़त नाज़िल हुआ है जो आसमानों में ज़ी इज़्ज़त और वहाँ सरदार रहे तेरा काम मोमिनों को ख़ुशी सुनाना और काफ़िरों को डराना है, इस कुरआन को हमने लोहे महफ़ूज़ से बैतुल इज़्ज़त पर नाज़िल किया जो आसमाने अव्वल में है। वहाँ से थोड़ा थोड़ा मुतफ़र्रिक़ करके वाक़ियात के मुताबिक़ तैईस बरस में दुनिया पर नाज़िल हुआ। (तब्री : 17/574) इसकी दूसरी क़िराअत (फ़र्रक़्नाहू) है यानी एक एक आयत करके तफ़्सीर और तफ़्सील और तब्यीन के साथ उतारा है। (तब्री : 17/573) कि तू इसे लोगों को सहूलत के साथ पहुँचा दे और धीरे धीरे इन्हें सुना दे। हमने इसे थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया है।

कुरआन सुनकर मोमिनों की कैफ़ियत क्या होती है? फ़र्मान है कि तुम्हारे ईमान पर सदाक़ते कुरआन मौक़ूफ़ नहीं तुम मानो या न मानो कुरआन फ़ी नफ़्सिही (ख़ुद-ब-ख़ुद) कलामुल्लाह और बेशक बरहक़ है। इसका ज़िक्र तो हमेशा से क़दीम किताबों में चला आ रहा है। जो अहले किताब सालेह और आमिले किताबुल्लाह है जिन्होंने अगली किताबों में कोई तहरीफ़ तब्दीली नहीं की वह तो इस कुरआन को सुनते ही बेचैन होकर शुक्रिया का सज्दा करते हैं कि अल्लाह तेरा शुक्र है कि तूने हमारी मौजूदगी में इस रसूल को भेजा और इस कलाम को नाज़िल किया।

अपने रब की कुदरते कामिला पर उसकी तअज़ीम व तौक़ीर करते हैं। जानते थे कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा है ग़लत नहीं आज उसको पूरा होता देखकर ख़ुश होते हैं। अपने रब की तस्बीह बयान करते हैं और उसके वादे की सच्चाई का इक़रार करते हैं। ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ फ़रोतनी और आजिज़ी के साथ रोते गिड़गिड़ाते अल्लाह तआला के सामने अपनी ठोडियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। ईमान व तस्दीक़ और कलामे इलाही और रसूलुल्लाह की वजह से वह ईमान व इस्लाम में हिदायत व तक़्वा में डर और ख़ौफ़ में और बढ़ जाते हैं। यह अत्फ़ सिफ़त का सिफ़त पर है, ज़ात का ज़ात पर नहीं।

***

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَیًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰی ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَیْنَ ذٰلِكَ سَبِیْلًا ﴿۱۱۰﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِیْرًا ﴿۱۱۱﴾

तर्जुमा : ''कह दे कि अल्लाह तआला को अल्लाह तआला कहकर पुकारो या रहमान कहकर, जिस नाम से भी पुकारो तमाम अच्छे नाम उसी के हैं। न तो तू अपनी नमाज़ बहुत बुलंद आवाज़ से पढ़ और न बिलकुल पोशीदा बल्कि इसके बीच का रास्ता तलाश कर ले। (110) और यह कहता रह कि तमाम तअरीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो न औलाद रखता है न अपनी बादशाहत में किसी को शरीक व साझी रखता है। न वह ऐसा हक़ीर है कि उसका कोई हिमायती हो और तू उसकी पूरी पूरी बड़ाई बयान करता रह।'' (111)

अल्लाह तआला के अस्मा-ए-हुस्ना के वास्ते से दुआ करो (आयत 110, 111) : कुफ़्फ़ार अल्लाह तआला की रहमत की सिफ़त से इंकारी थे, उसका नाम रहमान नहीं समझते थे, तो जनाब बारी अपने नफ़्स के लिए इस नाम को साबित करता है और फ़र्माता है कि यही नहीं कि अल्लाह तआला का नाम अल्लाह हो, रहमान हो और बस इनके सिवा भी बहुत से बेहतरीन और अहसन नाम उसके हैं जिस पाक नाम से चाहो उससे दुआएँ करो। सूरह हश्र के आख़िर में भी अपने बहुत से नाम उसने बयान किये हैं। एक मुश्रिक ने हुज़ूर (ﷺ) से सज्दे की हालत में या रहमान या रहीम सुनकर कहा कि लीजिए यह मुवह्हिद हैं दो ख़ुदाओं को पुकारते हैं इस पर यह आयत उतरी। (तब्री : 17/580) फिर फ़र्माता है कि अपनी नमाज़ को बहुत ऊँची आवाज़ से न पढ़ो। इस आयत के नुज़ूल के वक़्त हुज़ूर (ﷺ) मक्का में पोशीदा थे जब सहाबा (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाते और बुलंद आवाज़ से उसमें क़िरअत पढ़ते तो मुश्रिकीन क़ुरआन को, अल्लाह तआला को, रसूल को गालियाँ देते, इसलिए हुक्म हुआ कि इस क़द्र बुलंद आवाज़ से पढ़ने की ज़रूरत नहीं कि मुश्रिकीन सुनें और गालियाँ दें। हाँ! ऐसा आहिस्ता भी न पढ़ना कि आपके साथी भी न सुन सकें बल्कि दरम्यानी आवाज़ से क़िरअत किया करो। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (वला तज्हर बिसलातिका वला तुख़ाफ़ित बिहा) : 4722; सहीह मुस्लिम : 446; तिर्मिज़ी : 3146; अहमद : 1/23) फिर जब आप हिज्रत करके मदीने पहुँचे तो यह तक्लीफ़ जाती रही अब जिस तरह चाहें पढ़ें। (तब्री : 17/584) मुश्रिकीन जहाँ क़ुरआन की तिलावत शुरू होती भाग खड़े होते। अगर कोई सुनना चाहता तो उनके डर की वजह से छुप छुपाकर बच बचाकर कुछ सुन लेता लेकिन जहाँ मुश्रिकों को मालूम हुआ तो उन्होंने उसे

सख़्त ईज़ादेही शुरु की। अब अगर बहुत बुलंद आवाज़ करें तो उनकी चिड़ और उनकी गालियों का ख़्याल और अगर बहुत धीरे कर लें तो वह जो छुपे लुके कान लगाए बैठे हैं वह महरूम। इसलिए दरम्यानी आवाज़ से क़िरअत करने का हुक्म हुआ। (तब्री : 17/585)

अल्ग़र्ज़ नमाज़ की क़िरअत के बारे में यह आयत नाज़िल हुई है। (तब्री : 17/587) मरवी है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अपनी नमाज़ में धीमी आवाज़ से क़िरअत पढ़ते थे और हज़रत उमर (रज़ि.) बआवाज़े बुलंद क़िरअत पढ़ा करते थे पस हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) से पूछा गया कि आप आहिस्ता क्यूँ पढ़ते हैं? आपने जवाब दिया कि अपने रब से सरगोशी है वह मेरी हाजात का इल्म रखता है। तो फ़र्माया गया कि यह बहुत अच्छा है। हज़रत उमर (रज़ि) से भी फ़र्माया कि आप बुलंद आवाज़ से क्यूँ पढ़ते हैं? आपने फ़र्माया, शैतान को भगाता हूँ और सोतों को उठाता हूँ। तो आपसे भी फ़र्माया गया, बहुत अच्छा है। लेकिन जब यह आयत उतरी तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से क़द्रे बुलंद आवाज़ करने को और हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) से क़द्रे पस्त आवाज़ करने का फ़र्माया गया। (अबूदाऊद, किताबुत्तत्व्वअ , बाब रफ़उस्सौति बिल क़िराअति फ़ी सलातिल्लैलि : 1329; बसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 447 मुख़्तसरन) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, यह आयत दुआ के बारे में नाज़िल हुई है, इसी तरह सौरी और मालिक, हिशाम बिन उर्वा (रहि.) से वह अपने बाप से वह हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत करते हैं आप (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि यह आयत दुआ के बारे में नाज़िल हुई है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (वला तज्हर बिसलातिका वला तुख़ाफ़ित बिहा) : 4723) यही क़ौल हज़रत मुजाहिद, हज़रत सईद बिन जुबेर, हज़रत अबू अयाज़, हज़रत मक्हूल, हज़रत उर्वा बिन जुबेर (रज़ि.) का भी है। मरवी है कि बनू तमीम (क़बीले) का एक आराबी जब भी हुज़ूर (ﷺ) नमाज़ से सलाम फेरते यह दुआ करते कि ऐ अल्लाह! मुझे ऊँट अता कर, मुझे औलाद अता कर पस यह आयत उतरी।

एक दूसरा क़ौल यह भी है कि यह आयत तशह्हुद के बारे में नाज़िल हुई है। (हाकिम : 1/230; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हफ़्स बिन ग़ियास मुदल्लस अन्अन) यह भी कहा गया है कि मुराद इससे यह है कि न तो रियाकारी करो, न अमल छोड़ो। यह भी न करो कि ऐलानिया तो उम्दा करके पढ़ो और ख़ुफ़िया बुरा करके पढ़ो, अहले किताब पोशीदा पढ़ते और इसी बीच कोई फ़िक़्रा बहुत बुलंद आवाज़ से चीख़कर ज़ुबान से निकालते, इस पर सब साथ मिलकर शोर कर देते तो उनकी मुवाफ़िक़त से मुमानिअत हुई और जिस तरह और लोग पोशीदगी करते थे उससे भी रोका गया फिर इसके बीच का रास्ता हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने बतलाया जो हुज़ूर (ﷺ) ने मस्नून फ़र्माया है। अल्लाह की हम्द करो जिसमें तमामतर कमालात और पाकीज़गी की सिफ़तें हैं जिसके तमामतर बेहतरीन नाम हैं जो तमामतर नुक़्सानात से पाक है, उसकी औलाद नहीं, उसका शरीक नहीं। वह वाहिद है, अहद है, समद है, न उसके माँ बाप, न औलाद, न उसकी जिंस का कोई और न वह ऐसा हक़ीर कि किसी की हिमायत का मोहताज हो, या वज़ीर व मुशीर की उसे ज़रूरत हो बल्कि तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ मालिक सिर्फ़ वही है, सबका मुदब्बिर मुक़्तदिर वही है उसी की मशिय्यत (चाहत) तमाम मख़्लूक़ में चलती है वह वह्दहू ला शरीका लहू है, न उसने किसी से भाईबंदी की है न वह किसी की मदद का तालिब है।

(तब्री : 17/590) तू हर वक़्त उसकी अज़्मत व जलालत किब्रियाई बड़ाई, बुज़ुर्गी बयान करता रह और मुश्रिकीन जो तोहमतें उस पर बाँधते हैं तू उनसे उसकी ज़ात की बुज़ुर्गी बड़ाई और पाकीज़गी बयानकरता रह। यहूदो नसारा तो कहते थे कि अल्लाह तआला की औलाद है मुश्रिकीन कहते थे (लब्बैक ला शरीका लका इल्ला शरीकन हुवा लका तम्लिकुहू वमा मलक) यानी हम हाज़िर बाश गुलाम हैं या अल्लाह! तेरा कोई शरीक नहीं मगर वह जो तेरी मिल्कियत में हैं। तू ही उनका और उनकी मिल्कियत का मालिक है। साबी और मजूसी कहते थे कि अगर ओलिया अल्लाह न हों तो अल्लाह तआला सारे इंतिज़ाम आप नहीं कर सकता, नऊज़ुबिल्लाह! इस पर यह आयत उतरी और इन सब बातिल परस्तों की तर्दीद कर दी गई। (तब्री : 17/590)

नबी करीम (ﷺ) अपने घर के तमाम छोटे बड़े लोगों को यह आयत सिखाया करते थे। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) आपने इस आयत का नाम आयतुल इज़्ज़ यानी इज़्ज़त वाली आयत रखा है। (अहमद : 3/439, 445; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) कुछ आसार में है कि जिस घर में रात को यह आयत पढ़ी जाए उस घर में कोई आफ़त या चोरी नहीं हो सकती, वल्लाहु आलम!

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं हुज़ूर (ﷺ) के साथ निकला मेरा हाथ आपके हाथ में था या आपका हाथ मेरे हाथ में था, राह चलते एक शख़्स को आपने देखा, निहायत रद्दी हालत में है। उससे पूछा कि क्या बात है? उसने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! बीमारियों और नुक़्सानात ने मेरी ये हालत कर दी है। आपने फ़र्माया, क्या मैं तुम्हें कुछ वज़ीफ़ा बता दूँ कि यह दुख बीमारी सब कुछ जाती रहे? उसने कहा, हाँ! हाँ! या रसूलल्लाह (ﷺ)! ज़रूर बतलाइए उहुद और बद्र में आपके साथ न होने का अफ़सोस मेरा जाता रहेगा। इस पर आप हँस पड़े और फ़र्माया, तू बद्री और उहुदी सहाबा के मर्तबे को कहाँ से पा सकता है तू उनके मुक़ाबले में सिर्फ़ ख़ाली हाथ और बेसरमाया है। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इन्हें जाने दीजिए आप मुझे बतला दीजिए आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अबू हुरैरा! यूँ कहो (तवक्कल्तु अलल हय्यिल्लज़ी ला यमूतु अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िज़ वलदन) मैंने यह वज़ीफ़ा पढ़ना शुरु कर दिया, चंद दिन गुज़रे थे कि मेरी हालत बहुत ही संवर गई। हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे देखा और पूछा, अबू हुरैरा (रज़ि.) यह क्या है? मैंने कहा, उन कलिमात की वजह से अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकत है जो आपने मुझे सिखाए थे। (मुस्नदे अबी यअ़ला : 6671; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/55) इसकी सनद ज़ईफ़ है और इसके मतन में भी नकारत है, इसे हाफ़िज़ अबू यअ़ला (रह.) अपनी किताब में लाए हैं, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह बनी इस्राईल की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह कहफ

سورة الكهف

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह कहफ - 18

आयातः 110 मक्की सूरह, पैराग्राफः 6

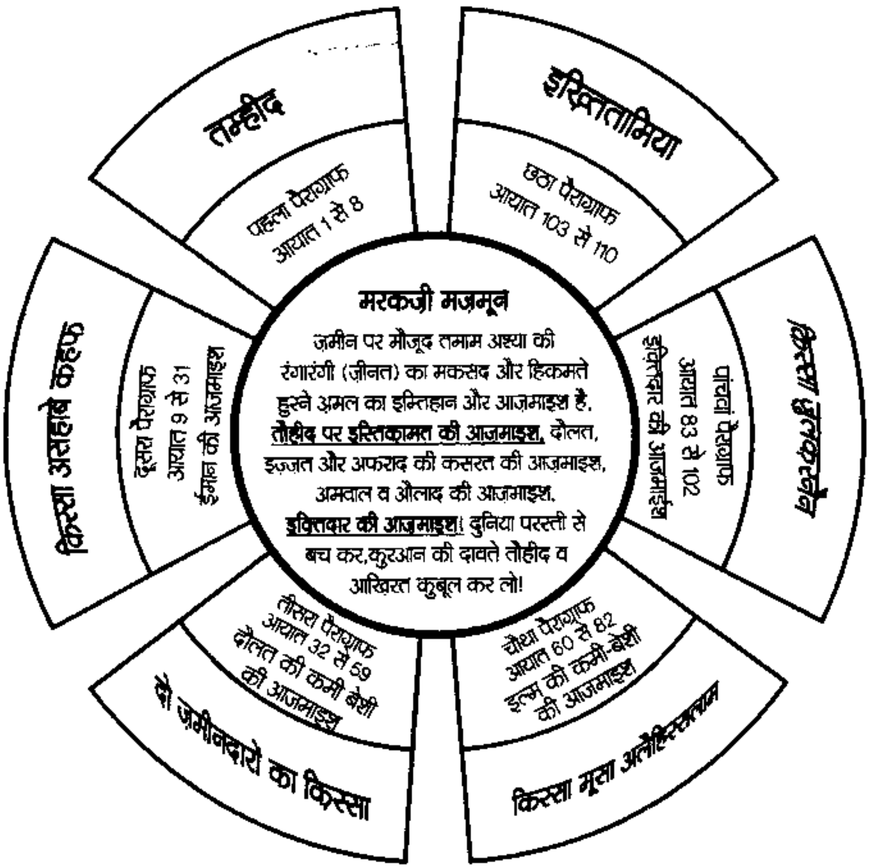

ज़मानए नुज़ूल :

सूरह (**कहफ**), सूरह (**ज़ुमर**) के नुज़ूल से पहले और हिजरते हब्शा (**रजब 5 नबवी**) से पहले, 5 नबवी के अवाइल में नाज़िल हुई, जब मुसलमान ज़ुल्म व सितम का शिकार थे। हब्श के ईसाइयों में इस्लाम की दौलत व तब्लीग़ के लिए मुसलमानों की तरबियत की गई और नौजवान सहाबा (रजि.) को असहाबे कहफ की तरह, तौहीद की आज़माइश में कामयाबी हासिल करने और कुरैश का ज़ालिम सरदारों और मुश्रिक वालिदैन के दबाव में न आने की तालीम दी गई।

سورۃ الکہف

तफ़्सीर सूरह कहफ़

इस सूरत की फ़ज़ीलत का बयान ख़ुसूसन इसकी शुरु और आख़िर की दस आयतों की फ़ज़ीलत का बयान है। और यह कि यह सूरत फ़िल्न-ए-दज्जाल से महफ़ूज़ रखने वाली है।

सूरह-कहफ़ की फ़ज़ीलत : मुस्नद अहमद में है कि एक सहाबी ने इस सूरत की तिलावत शुरु की उनके घर में एक जानवर था। उसने उछलना बिदकना शुरू कर दिया। सहाबी ने जो ग़ौर से देखा तो उन्हें सायबान की तरह एक बादल नज़र आया, जिसने उन पर साया कर रखा था। उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से ज़िक्र किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "पढ़ते रहो यह है वह सकीना जो अल्लाह तआला की तरफ़ से कुरआन की तिलावत पर नाज़िल होता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब अलामातिन्नबुव्वत फ़िल इस्लामि : 3614; सहीह मुस्लिम : 795; अहमद : 4/281; तिर्मिज़ी : 2885; इब्ने हिब्बान : 769) बुख़ारी व मुस्लिम में भी यह रिवायत है यह सहाबी हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) थे। जैसे कि सूरह बक़रह की तफ़्सीर में हम बयान कर चुके हैं। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब फ़ज़्ले सूरतिल कहफ़ व आयतिल कुर्सी : 809; अहमद : 5/196; अबूदाऊद : 4323; अमलुल यौम वलैलह् लिन्नसाई : 951)

मुस्नद अहमद में है कि "जिस शख़्स ने सूरह कहफ़ के शुरू की दस आयतें हिफ़्ज़ कर लीं वह फ़िल्न-ए-दज्जाल से बचा लिया गया।" तिर्मिज़ी में तीन आयतों का बयान है। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लि सूरतिल कहफ़ : 2886; वहुव शाज़ यह रिवायत शाज़ है सहीह दस आयात वाली सहीह मुस्लिम वग़ैरह की रिवायत है।) मुस्लिम में आख़िरी दस आयतों का ज़िक्र है। (सहीह मुस्लिम : 809) नसाई में दस आयतों को मुत्लक़ बयान किया गया है। (सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 10785; व सनदुहू सहीहुन)

मुस्नद अहमद में है कि "जो इस सूरह कहफ़ का पहले आख़िर हिस्सा पढ़ ले उसके लए उसके पैर से सर तक नूर होगा और जो इस सारी सूरत को पढ़े, उसे ज़मीन से आसमान तक का नूर मिलेगा।" (अहमद : 3/439; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/55) एक ग़रीब सनद से इब्ने मर्दवे में है कि "जुम्आ के दिन जो शख़्स सूरह कहफ़ पढ़ ले उसके पैर के तलों से लेकर आसमान की बुलंदी तक का नूर मिलेगा जो क़ियामत के दिन ख़ूब रोशन होगा और दूसरे जुम्अे तक के उसके सारे गुनाह माफ़ हो जाएँगे।" (इब्ने मर्दवे, व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन) इस हदीस के मरफ़ूअ होने में नज़र है ज़्यादा अच्छा तो इसका मौक़ूफ़ होना ही है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से मरवी है कि "जिसने सूरह कहफ़ जुम्अ़े के दिन पढ़ ली उसके पास से लेकर बैतुल्लाह तक नूरानियत होती जाती है।"

मुस्तदरक हाकिम में मरफ़ूअन मरवी है कि "जिसने सूरह कहफ़ जुम्अ़े के दिन पढ़ी उसके लिए दो जुम्आ के बीच तक नूर की रोशनी रहती है।" (हाकिम : 2/368; व सनदुहू हसन; बैहक़ी : 3/249; नुऐम बिन हम्माद हसनुल हदीस है।) बैहक़ी में है कि "जिसने सूरह कहफ़ उसी तरह पढ़ी जिस तरह नाज़िल हुई है उसके लिए क़ियामत के दिन नूर होगा।"(हाकिम : 1/564; व सनदुहू हसन; शुअ़बुल ईमान : 2446; अल्मुअ़जमुल कबीर : 1478)

हाफ़िज़ ज़िया मक़्दिसी (रह.) की किताबुल मुख़्तारा में है कि "जो शख़्स जुम्अ़े के दिन सूरह कहफ़ की तिलावत करेगा वह आठ दिन तक हर क़िस्म के फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहेगा यहाँ तक कि अगर दज्जाल भी उस वक़्त में निकले तो वह उससे भी बचा लिया जाएगा।" (तबरी : 17/595)

***

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۞ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا
شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا
۞ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۞ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۞ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ
وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۞

तर्जुमा : "तमाम तअ़रीफ़ें उसी अल्लाह के लिए सज़ावार हैं जिसने अपने बन्दे पर यह क़ुरआन उतारा और इसमें कोई कसर बाक़ी न छोड़ी। (1) बल्कि तमाम ठीक ठाक रखा ताकि अपने पास की सख़्त सज़ा से होशियार कर दे और ईमान लाने और नेक अ़मल करने वालों को ख़ुशख़बरियाँ सुना दे कि उनके लिए बेहतरीन बदले हैं। (2) जिसमें वह हमेशा हमेशा रहेंगे। (3) और उन लोगों को भी डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला औलाद रखता है। (4) असल में न तो ख़ुद इन्हें इसका इल्म है, न इनके बाप दादों को यह तो तोहमत बड़ी बुरी है जो इनके मुँह से निकल रही है सिर्फ़ झूठ बक रहे हैं।" (5)

अल्लाह तआला ने क़ुरआन को ज़रिय-ए-नूर बनाया (आयत 1-5) : हम पहले बयान कर चुके हैं कि अल्लाह तआला हर अम्र के शुरू और उसके ख़ात्मे पर अपनी तारीफ़ व ह़म्द बयान करता है, हर ह़ाल में वह क़ाबिले ह़म्द और लायक़े सना और सज़ावारे तअरीफ़ है। अव्वल आख़िर मुस्तह़िक़े ह़म्द फ़क़त उसी की ज़ात व सिफ़ात है। उसने अपने नबी करीम (ﷺ) पर क़ुरआन नाज़िल किया जो उसकी बहुत बड़ी नेअ़मत है जिससे तमाम बंदगाने इलाही अंधेरों से निकलकर नूर की त़रफ़ आ सकते हैं। उसने यह किताब ठीक ठाक और सीधी और रास्त रखी है जिसमें कोई कजी कोई कसर कोई कमी नहीं। सिराते मुस्तक़ीम की रहबरी वाज़ेह़ जली स़ाफ़ और ज़ाहिर है। बदकारों को डराने वाली, नेक लोगों को ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाली, मुअतदिल सीधी मुख़ालिफ़ों व मुंकिरों को ख़ौफ़नाक अ़ज़ाबों की ख़बर देने वाली यह किताब है जो अ़ज़ाब उसकी त़रफ़ के हैं दुनिया में भी और आख़िरत में भी ऐसे अ़ज़ाब कि न उसके से अ़ज़ाब किसी के न उसकी सी पकड़ किसी की। हाँ! जो उस पर यक़ीन करे, ईमान लाए, नेक अ़मल करे, उसे यह किताब अज्रे अ़ज़ीम की ख़ुशी सुनाती है जिस सवाब को हमेशगी और दवाम है वह जन्नत उन्हें मिलेगी जिसमें कभी फ़ना नहीं जिसकी नेअ़मतें ग़ैर फ़ानी हैं। और उन्हें भी यह अ़ज़ाबों से आगाह करता है जो अल्लाह तआला की औलाद ठहराते हैं। जैसे मुश्रिकीने मक्का कि वह फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बताते थे। (त़बरी : 17/595) बेइल्मी और जिहालत के साथ मुँह से बोले पड़ते हैं। यह तो उनके बड़े भी ऐसी बातें बेइल्मी से कहते रहे (कलिमतहू) का नसब तमीज़ की बिना पर है। तक़्दीरे इबारत इस त़रह़ है (कबुरत कलिमतहुम हाज़िही कलिमतन) और कहा गया है कि यह तअज्जुब के त़ौर पर है, तक़्दीर इबारत यह है। (अअ़ज़िम बिकलिमतिहिम कलिमतिन) जैसे कहा जाता है (अक्रिम बि ज़ैदिन रजुलन) कुछ बसरियों का क़ौल यही है। कुछ क़ारियों ने इसे (कलिमतुन) पढ़ा है जैसे कहा जाता है (अ़ज़ुम क़ौलुका व कबुरा शानुक) जुम्हूर की क़िरअत पर तो मअ़नी बिलकुल ज़ाहिर हैं कि उनके इस कलिमे की बुराई और इसका निहायत ही बुरा कलिमा होना बयान हो रहा है जो सिर्फ़ बेदलील है सिर्फ़ किज़्ब व इफ़्तिरा है इसीलिए फ़र्माया कि सिर्फ़ झूठ बकते हैं।

सूरह कहफ़ का शाने नुज़ूल : इस सूरत का शाने नुज़ूल यह बयान किया गया है कि क़ुरैशियों ने नज़्र बिन ह़ारिस और उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ को मदीने के यहूदी उ़लमा के पास भेजा कि तुम जाकर मुह़म्मद (ﷺ) की बाबत कुल ह़ालात उनसे बयान करो, उनके पास अगले अम्बिया (عليهم السلام) का इल्म है, उनसे पूछो कि इनकी आपकी बाबत क्या राय है? यह दोनों मदीने गए, अह़बारे मदीना से मिले, ह़ुज़ूर (ﷺ) के ह़ालात व औस़ाफ़ बयान किए आपकी तअ़लीम का ज़िक्र किया और कहा कि तुम ज़ी इल्म हो, बतलाओ इनकी निस्बत क्या ख़याल है? उन्होंने कहा, देखो! हम तुम्हें एक फ़ैसलाकुन बात बतलाते हैं तुम जाकर उनसे तीन सवालात करो, अगर जवाब दे दें तो उनके सच्चे होने में कुछ शक नहीं बेशक वह अल्लाह तआला के नबी और रसूल हैं और अगर जवाब न दे सकें तो उनके झूठा होने में भी कोई शक नहीं फिर जो तुम चाहो करो। उनसे पूछो कि अगले ज़माने में जो नौजवान चले गए थे;उनका वाक़िया बयान करो, वह एक अजीब वाक़िया है और उस शख़्स़ के ह़ालात पूछो जिसने तमाम ज़मीन का चक्कर लगाया था, मश्रिक़ से मग़्रिब हो आया था और रूह़ की माहियत पूछो अगर बतला दे तो उसे नबी मानकर उसकी इत्तिबाअ़ करो और अगर न बतला सके तो वह शख़्स़ झूठा है

जो चाहो करो। यह दोनों वहाँ से वापिस आए और कुरेशियों से कहा, लो भई! आख़िरी और इंतिहाई फ़ैसले की बात उन्होंने बतला दी है अब चलो हज़रत से सवालात करें। चुनाँचे यह सब आपके पास आए और तीनों सवालात किए। आपने फ़र्माया, तुम कल आओ मैं तुम्हें जवाब दूँगा'' लेकिन इंशाअल्लाह कहना भूल गए, पन्द्रह दिन गुज़र गए, न आप पर वह्यी आई, न अल्लाह की तरफ़ से उन बातों का जवाब मालूम कराया गया। अहले मक्का गए और कहने लगे कि लीजिए साहब! कल का वादा था आज पन्द्रहवाँ दिन है लेकिन वह बतला नहीं सके। इधर आपको दोहरा ग़म सताने लगा, कुरेशियों को जवाब न मिलने पर उनकी बातें सुनने का और वह्यी के बंद हो जाने का। फिर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) आए, सूरह कहफ़ नाज़िल हुई, उसी में इंशाअल्लाह न कहने पर आपको डांटा गया, उन नौजवानों का क़िस्सा बयान किया गया और उस सय्याह (चक्कर लगाने वाले का) का ज़िक्र किया गया और आयत (وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ) (17/बनी इस्राईल : 85) में रूह की बाबत जवाब दिया गया। (तब्री : 17/592)

***

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝٦ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝٧ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۝٨

तर्जुमा : ''पस अगर यह लोग इस बात पर ईमान न लाएँ तो क्या तू इनके पीछे इसी रंज में अपनी जान हलाक कर डालेगा। (6) रूए ज़मीन पर जो कुछ है हमने उसे ज़मीन की रोनक़ का बाइस बनाया है कि हम उन्हें आज़मा लें कि उनमें से कौन नेक आमाल वाला है। (7) इस पर जो कुछ है हम उसे एक हमवार साफ़ मैदान कर डालने वाले हैं।'' (8)

(आयत 6-8) : मुश्रिकीन जो आपसे दूर भागते थे ईमान न लाते थे इस पर जो रंज व अफ़सोस आपको होता था उस पर अल्लाह तआ़ला आपकी तसल्ली कर रहा है। जैसे और आयत में है कि इन पर रंज न करो। (35/फ़ातिर : 8) और जगह है इन पर इतने ग़मगीन न हो। (16/नहल : 127) और जगह है इनके ईमान न लाने से अपनी जान हलाक न करो। (26/शुअ़रा : 3) यहाँ भी यही फ़र्माया कि यह इस कुरआन पर ईमान न लाएँ तो तू अपनी जान में घुन न लगा ले, इस क़द्र ग़म व गुस्सा, रंजो अफ़सोस न कर, न घबरा, न दिल तंग हो अपना काम किये जा। (तब्री : 17/597, 598) तब्लीग़ में कोताही न कर राह याफ़्ता अपना भला करेंगे और गुमराह अपना बुरा करेंगे। हर एक का अ़मल उसके साथ है।

दुनिया की ज़ीनतें ख़त्म होने वाली हैं : फिर फ़र्माता है दुनिया फ़ानी है इसकी ज़ीनत ज़वाल (ख़त्म होने)

वाली है आख़िरत बाक़ी है उसकी नेअ़मत दवामी है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''दुनिया मीठी और सब्ज़ रंग है इसमें अल्लाह तआ़ला तुम्हें ख़लीफ़ा बनाकर देखना चाहता है कि तुम कैसे आमाल करते हो? पस दुनिया से और औरतों से बचो। बनी इस्राईल में सबसे पहला फ़ित्ना औरतों का ही था। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अक्सरु अहलिल जन्नतिल फ़ुक़राअ : 2742; तिर्मिज़ी : 2191; इब्ने माजा : 4000; अह़मद : 3/19; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1101; इब्ने ह़िब्बान : 3221) यह दुनिया ख़त्म होने वाली और ख़राब होने वाली है, उजड़ने वाली और ग़ारत होने वाली है, ज़मीन हमवार साफ़ रह जाएगी, जिस पर किसी क़िस्म की रूईदगी भी न होगी।'' जैसे और आयत में है कि क्या लोग देखते नहीं कि हम ग़ैरआबाद बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी को ले चलते हैं और उसमें से खेती पैदा करते हैं जिसे वह ख़ुद खाते हैं और उनके चौपाये भी। क्या फिर भी इनकी आँखें नहीं खुलतीं। (32/सज्दा : 27) ज़मीन और ज़मीन पर जो हैं सब फ़ना होने वाले हैं और अपने मालिके ह़क़ीक़ी के सामने पेश होने वाले हैं। पस तू कुछ भी इनसे सुने, इन्हें कैसे ही ह़ाल में देखे, मुत्लक़ अफ़सोस और रंज न कर।

***

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَٰبَ ٱلْكَهْفِ وَٱلرَّقِيمِ كَانُوا۟ مِنْ ءَايَٰتِنَا عَجَبًا ۝٩ إِذْ أَوَى ٱلْفِتْيَةُ إِلَى
ٱلْكَهْفِ فَقَالُوا۟ رَبَّنَآ ءَاتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝١٠ فَضَرَبْنَا
عَلَىٰٓ ءَاذَانِهِمْ فِى ٱلْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝١١ ثُمَّ بَعَثْنَٰهُمْ لِنَعْلَمَ أَىُّ ٱلْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا
لَبِثُوٓا۟ أَمَدًا ۝١٢

तर्जुमा : ''क्या तू अपने ख़्याल में ग़ार और कतबे वालों को हमारी निशानियों में से कोई बहुत अजीब निशानी समझ रहा है? (9) उन चंद नौजवानों ने जब ग़ार में आराम किया तो दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमें अपने पास से रह़मत अ़ता कर और हमारे काम में हमारे लिए राह याबी को आसान कर दे। (10) पस हमने उनके कानों पर गिनती के कई साल तक उसी ग़ार में पर्दे डाल दिए। (11) फिर हमने उन्हें उठाकर खड़ा किया कि हम यह मालूम कर लें कि दोनों गिरोह में से उस इंतिहाई मुद्दत को जो उन्होंने गुज़ारी किसने ज़्यादा याद रखी है।'' (12)

अस्ह़ाबे कहफ़ का तआ़रुफ़ और क़िस्सा (आयत 9-12) : अस्ह़ाबे कहफ़ का क़िस्सा इज्माल के साथ बयान हो रहा है फिर तफ़्सील के साथ बयान होगा। फ़र्माता है कि वह वाक़िया हमारी क़ुदरत के बेशुमार वाक़ियात में से एक निहायत मामूली वाक़िया है, इससे बड़े बड़े निशान रोज़मर्रा तुम्हारे सामने हैं। आसमान ज़मीन की पैदाइश, रात दिन का हेर फेर, सूरज चाँद की इताअ़त गुज़ारी वग़ैरह क़ुदरत की अनगिनत निशानियाँ

हैं जो बता रही है कि अल्लाह तआला की क़ुदरत बेअंदाज़ा है वह हर चीज़ पर क़ादिर है उस पर कोई काम मुश्किल नहीं। अस्हाबे कहफ़ से तो कहीं ज़्यादा ताज्जुबख़ेज़ और अहम निशाने क़ुदरत तुम्हारे सामने दिन रात मौजूद हैं। (तब्री : 17/601) किताबो सुन्नत का जो इल्म मैंने तुझे अता किया है वह अस्हाबे कहफ़ की शान से कहीं ज़्यादा है। (तब्री : 17/601) बहुत सी हुज्जतें मैंने अपने बन्दों पर अस्हाबे कहफ़ से ज़्यादा वाज़ेह कर दी हैं। (तब्री : 17/601) कहफ़ कहते पहाड़ी ग़ार को, जहाँ यह नौजवान छुप गए थे।

''रक़ीम'' या तो ईला के पास की वादी का नाम है या उनकी उस जगह की इमारत का नाम है। (तब्री : 17/607) या किसी आबादी का नाम है या उस पहाड़ का नाम है, उस पहाड़ का नाम नज्लूस भी आया है। ग़ार का नाम हैज़ूम कहा गया है और उनके कुत्ते का नाम हमरान बतलाया गया है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, सारे क़ुरआन को मैं जानता हूँ लेकिन लफ़्ज़े हन्नान और लफ़्ज़े अव्वाह और लफ़्ज़े रक़ीम को मुझे नहीं मालूम कि रक़ीम किसी किताब का नाम है या किसी बिना का। और रिवायत में आपसे मरवी है कि वह किताब है। सईद कहते हैं कि यह पत्थर की एक लोह थी जिस पर अस्हाबे कहफ़ का क़िस्सा लिखकर ग़ार के दरवाज़े पर उसे लगा दिया गया था। (तब्री : 17/603) अब्दुर्रहमान कहते हैं क़ुरआन में है (كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ) (83/मुतफ़्फ़िफ़ीन : 9) पस आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ तो इसकी ताईद करते हैं और यही इमाम इब्ने जरीर (रह.) का मुख़्तार (पसन्दीदा) क़ौल है कि रक़ीम फ़ईल के वज़न पर मरक़ूम के मआनी में है। जैसे मक़्तूल क़तील और मजरूह जरीह, वल्लाहु आलम!

यह नौजवान अपने दीन के बचाव के लिए अपनी क़ौम से भाग खड़े हुए थे कि कहीं वह उन्हें दीन से न बहका दें एक पहाड़ के ग़ार में घुस गए और अल्लाह तआला से दुआ की कि या इलाही! हमें अपनी जनाब से रहमत अता फ़र्मा। हमें अपनी क़ौम से छुपाए रख, हमारे इस काम में अच्छाई का अंजाम कर। हदीस की एक दुआ में है कि ''ऐ हमारे रब जो फ़ैसला तू हमारे हक़ में करे उसे अंजाम के लिहाज़ से भला कर।'' (इब्ने माजा, किताबुद्दुआ, बाब अल्जवामिउ मिनद्दुआ : 3846; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 6/147) मुस्नद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी दुआ में अर्ज़ करते कि ''ऐ रब! हमारे तमाम कामों का अंजाम अच्छा कर और हमें दुनिया की रुस्वाई और आख़िरत के अज़ाबों से बचा ले।'' (अहमद : 4/181; व सनदुहू हसन; तब्रानी : 1196; इब्ने हिब्बान : 949; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/178) यह ग़ार में जाकर जो पड़कर सोये तो बरसों गुज़र गए फिर हमने उन्हें जगाया। एक साहब दिरहम लेकर बाज़ार से सौदा ख़रीदने चले जैसे कि आ रहा है। यह इसलिए कि उन्हें वहाँ कितनी मुद्दत गुज़ारी उसे दोनों गिरोह में से कौन ज़्यादा याद रखने वाला है? उसे हम भी मालूम कर लें। (अमदन) के मआनी अदद या गिनती के हैं और कहा गया है कि ग़ायत के मआनी में भी यह लफ़्ज़ आया है जैसे कि अरब के शायरों ने अपने शेअरों में ग़ायत के मआनी में बाँधा है।

***

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۚ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾
وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ
دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هٰۤؤُلَاۤءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ۚ لَوْلَا يَاْتُوْنَ
عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا
يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ
اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

तर्जुमा : ''हम उनका सही सही वाक़िया तेरे सामने बयान कर रहे हैं। यह चंद नौजवान अपने रब पर ईमान लाए थे और हमने उनकी हिदायत में तरक़्क़ी दी थी। (13) हमने उनके दिल मज़बूत कर दिए थे जबकि यह उठ खड़े हुए और कहने लगे कि हमारा परवरदिगार तो वही है जो आसमान व ज़मीन का परवरदिगार है नामुम्किन है हम उसके सिवा किसी और मअबूद को पुकारें अगर ऐसा हो तो हमने निहायत ही ग़लत बात कही। (14) यह है हमारी क़ौम जिसने उसके सिवा और मअबूद बना रखे हैं। उनकी ख़ुदाई की यह कोई साफ़ दलील क्यूँ पेश नहीं करते, अल्लाह तआला पर झूठ इफ़्तिरा बाँधने वाले से ज़्यादा ज़ालिम कौन है? (15) जबकि तुम उनसे और अल्लाह के सिवा उनके और मअबूदों से किनाराकश हो गए तो अब तुम किसी ग़ार में जा ठहरो, तुम्हारा रब तुम पर अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम में सहूलत मुहय्या कर देगा।'' (16)

(आयत 13-16) : यहाँ से तफ़्सील के साथ अस्हाबे कहफ़ का क़िस्सा शुरू होता है कि यह चंद नौजवान थे जो दीने हक़ की तरफ़ माइल हुए और हिदायत पर आ गए, कुरेश में भी यही हुआ था कि जवानों ने तो हक़ की आवाज़ पर लब्बैक कही थी लेकिन सिवाए चंद के और बूढ़े लोग इस्लाम की तरफ़ जुरअत से माइल न हुए कहते हैं कि उनमें से कुछ के कानों में बाले थे, यह मुत्तक़ी मोमिन और राह पाने वाले नौजवानों की जमाअत थी, अपने रब की वहदानियत को मानते थे, उसकी तौहीद के क़ाइल हो गए थे और दिन ब दिन ईमान व हिदायत में बढ़ रहे थे यह और इस जैसी और आयतों और हदीसों से इस्तिदलाल करके इमाम बुख़ारी (रह.) वग़ैरह मुहद्दिसीने किराम का मज़हब है कि ईमान में ज़्यादती होती है उसमें मर्तबे हैं यह कम ज़्यादा होता रहता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) बुनियल इस्लामु अला ख़म्सिन क़ब्लल हदीस :

8) यहाँ है हमने उन्हें हिदायत में बढ़ा दिया और जगह है (وَ الَّذِیْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًی) (47/मुहम्मद : 17) हिदायत वालों की हिदायत बढ़ जाती है...) और आयत में है (فَاَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِیْمَانًا) (9/तौबा : 124) ईमानवालों के ईमान को बढ़ाती है...। और जगह इर्शाद है (لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ) (48/फ़तह़ : 4) ताकि वह अपने ईमान के साथ ही ईमान में और बढ़ जाएँ। इसी मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं।

अस्ह़ाबे कहफ़ का ज़माना : मज़्कूर है कि यह लोग ह़ज़रत मसीह़ ईसा बिन मरयम (عليه السلام) के दीन पर थे, वल्लाहु आलम!

लेकिन बज़ाहिर मालूम होता है कि यह मसीह़ (عليه السلام) के ज़माने से पहले का वाक़िया है इसकी एक दलील यह भी है कि अगर यह लोग ईसाई होते तो यहूद इस क़द्र तवज्जह से न उनके ह़ालात मालूम करते, न मालूम करने की हिदायत करते। ह़ालाँकि यह बयान गुज़र चुका है कि क़ुरैशियों ने अपने वफ़्द को मदीने के यहूद के उ़लमा के पास भेजा था कि तुम हमें कुछ ऐसी बातें बतलाओ कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की आज़माइश कर लें तो उन्होंने कहा कि तुम अस्ह़ाबे कहफ़ का और ज़ुल क़रनैन का वाक़िया आपसे पूछे और रूह़ के बारे में सवाल करे, पस मालूम होता है कि यहूद की किताब में इसका ज़िक्र था और उन्हें इस वाक़िया का इ़ल्म था जब यह साबित हुआ तो यह ज़ाहिर है कि यहूद की किताब ईसाईयत से पहले की है, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माता है कि हमने इन्हें क़ौम की मुख़ालिफ़त पर सब्र अ़ता किया और उन्होंने अपनी क़ौम की कुछ परवाह न की बल्कि वत़न और राह़त व आराम को भी छोड़ दिया। कुछ सलफ़ का बयान है कि यह लोग रूमी बादशाह की औलाद और रूम के सरदार थे एक मर्तबा कौम के साथ ईद मनाने के लिए गए थे उस ज़माने के बादशाह का नाम दक़ियानूस था बड़ा सरकश और सख़्त शख़्स था सबको शिर्क की तअ़लीम करता और सबसे बुतपरस्ती कराता था। यह नौजवान जो अपने बाप दादों के साथ उस मेले में गए थे उन्होंने जब वहाँ यह तमाशा देखा तो उनके दिल में ख़्याल आया कि बुतपरस्ती सिर्फ़ लग़्व और बात़िल चीज़ है। इबादतें और ज़बीहे़ सिर्फ़ अल्लाह के नाम पर होने चाहिएँ जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ व मालिक है पस यह लोग एक एक करके यहाँ से सिरकने लगे, एक दरख़्त के नीचे जाकर उनमें से एक साह़ब बैठ गए, दूसरे भी यहीं आ गए, तीसरे भी आए, चौथे भी आए, ग़र्ज़ एक एक करके सब यहीं जमा हो गए ह़ालाँकि एक दूसरे में तआ़रुफ़ न था लेकिन ईमान की रोशनी ने एक दूसरे को मिला दिया। ह़दीस में हैं कि ''रूहें भी एक जमाशुदा लश्कर हैं। जो राज़े अज़ल (शुरु से) तआ़रुफ़ वाली हैं वह यहाँ मिल जुलकर रहती हैं और जो वहीं अंजान रहती हैं यहाँ भी इनमें इख़्तिलाफ़ रहता है।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया, बाब अल्अरवाहु जुनूदिम मुज्नदह् : 3336; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 3637; अल्अदबुल मुफ़रद : 901; अबूदाऊद : 4834; अह़मद : 2/527; इब्ने ह़िब्बान : 6168) अ़रब कहा करते हैं कि जिंसियत ही मेल जोल की इ़ल्लत है अब सब ख़ामोश थे एक को एक से डर था कि अगर मैं अपने मा फ़िज़्ज़मीर (दिल की बात) को बता दूँगा तो यह दुश्मन हो जाएँगे किसी को दूसरे की निस्बत ख़बर न थी कि वह भी उसकी त़रह क़ौम की उस अह़मक़ाना और मुश्रिकाना रस्म से बेज़ार है, आख़िर एक दाना और जरी (बहादुर) नौजवान ने कहा कि दोस्तों! कोई न कोई

बात तो ज़रूर है कि लोगों के उस आम शुग़्ल को छोड़कर तुम उनसे अलग होकर यहाँ आ बैठे हो, मेरा तो जी चाहता है कि हर शख़्स उस बात को ज़ाहिर कर दे जिसकी वजह से उसने क़ौम को छोड़ा है, इस पर एक ने कहा, भाई बात यह है कि मुझे तो अपनी क़ौम की यह रस्म एक आँख नहीं भाती जबकि आसमान व ज़मीन का और हमारा तुम्हारा ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है तो फिर हम उसके सिवा दूसरे की इबादत क्यूँ करें? यह सुनकर दूसरे ने कहा अल्लाह तआ़ला की क़सम! यही नफ़रत मुझे यहाँ लाई है तीसरे ने भी यही कहा। जब हर एक ने यही वजह बयान की तो सबके दिल में मुहब्बत की एक लहर दौड़ गई और यह सब रोशन ख़्याल मुवह्हिद, आपस में सच्चे दोस्त और माँ जाए भाईयों से ज़्यादा एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह बन गए, आपस में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ हो गया। अब उन्होंने एक जगह मुक़र्रर कर ली, वहीं अल्लाह वाहिद की इबादत करने लगे। धीरे धीरे क़ौम को भी पता चल गया, वह उन सबको पकड़कर उस ज़ालिम मुश्रिकी बादशाह के पास ले गए और शिकायत पेश की। बादशाह ने उनसे पूछा। उन्होंने निहायत दिलेरी से अपनी तौहीद और अपना मस्लक बयान किया बल्कि बादशाह अहले दरबार और कुल दुनिया को उसकी दावत दी दिल मज़बूत कर लिया और साफ़ कह दिया कि हमारा रब वही है जो आसमान व ज़मीन का मालिक ख़ालिक़ है नामुम्किन है कि हम उसके सिवा किसी और को मअ़बूद बनाएँ। हमसे यह कभी न हो सकेगा कि उसके सिवा किसी और को पुकारें इसलिए कि शिर्क निहायत झूठी चीज़ है हम इस काम को कभी नहीं करने के। यह निहायत ही बेजा बात और लग़्व हरकत और टेढ़ी राह है। यह हमारी क़ौम मुश्रिक है अल्लाह के सिवा औरों को पुकारती और औरों की इबादत करती हैं जिसकी कोई दलील यह पेश नहीं कर सकते, पस यह ज़ालिम और काज़िब हैं। कहते हैं कि उनकी इस साफ़गोई से बादशाह बहुत बिगड़ा, उन्हें धमकाया डराया और हुक्म दिया कि उनके लिबास उतार लो और अगर यह बाज़ न आएँगे तो मैं इन्हें सख़्त सज़ा दूँगा। अब उन लोगों के दिल और मज़बूत हो गए लेकिन उन्हें यह मालूम हो गया कि यहाँ रहकर हम दीनदारी पर क़ायम नहीं रह सकते इसलिए उन्होंने क़ौम, देश और रिश्ते कुंबे छोड़ने का पक्का इरादा कर लिया। यही हुक्म भी है कि इंसान दीन के डर के वक़्त हिज्रत कर जाए। हदीस में है कि "इंसान का बेहतरीन माल मुम्किन है कि बकरियाँ हो जाएँ जिन्हें लेकर दामने कोह में और जंगलों में रहे सहे और अपने दीन के बचाव के ख़ातिर भागता फिरे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब मिनद्दीनिल फ़रारि मिनल फ़ितन : 19; अबूदाऊद : 4267; अहमद : 3/43; मुस्नदे अबी यअ़ला : 983; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11767; इब्ने माजा : 3980; इब्ने अबी शैबा : 7/448) पस ऐसे हाल में लोगों से अलग थलग हो जाना अम्रे शरई है। हाँ! अगर ऐसी हालत न हो दीन की ज़ेरदस्ती बर्बादी का ख़ौफ़ न हो तो फिर जंगलों में निकल जाना मशरूअ़ नहीं क्योंकि जुम्आ जमाअ़त की फ़ज़ीलत हाथ से जाती रहती है। जब यह लोग दीन के बचाव के लिए इतनी अहम कुर्बानी पर आमादा हो गए तो उन पर रब की रहमत नाज़िल हुई। फ़र्मा दिया गया कि ठीक है जब तुम इनके दीन से अलग हो गए तो बेहतर है कि जिस्मों से भी इनसे जुदा हो जाओ। जाओ तुम किसी ग़ार में पनाह हासिल कर लो, तुम पर तुम्हारे रब की रहमत की छाँव होगी। वह तुम्हें तुम्हारे दुश्मन की निगाहों से छुपा लेगा और तुम्हारे काम में आसानी और राहत मुहय्या कर देगा पस यह लोग मौक़ा पाकर यहाँ से भाग निकले और पहाड़ की खो में जा छुपे। बादशाह ने और क़ौम ने हर तरह तलाश किया लेकिन कोई पता न चला। अल्लाह तआ़ला ने उन पर पर्दा डाल दिया। देखिए यही बल्कि इससे ज़्यादा

ताज्जुबखेज़ वाक़िया हमारे नबी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के साथ पेश आया। आप अपने दोस्त हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के साथ ग़ारे सौर में जा छुपे, मुश्रिकीन ने बहुत कुछ दौड़ धूप की, तलाश करने में कोई कमी न रखी लेकिन हुज़ूर (ﷺ) उन्हें बावजद पूरी तलाश और सख़्त कोशिश के न मिले। अल्लाह ने उनकी बीनाई छीन ली, आसपास से गुज़रते थे, आँखें फाड़ फाड़कर देखते थे, हुज़ूर (ﷺ) मौजूद हैं और उन्हें दिखाई नहीं देते, सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) परेशान हाल होकर अर्ज़ करते हैं कि हुज़ूर (ﷺ)! अगर किसी ने अपने पैर की तरफ़ देख लिया तो हम देख लिए जाएँगे। आपने निहायत इत्मिनान से जवाब दिया कि अबूबक्र! उन दो के बारे में क्या ख़्याल है जिनका तीसरा ख़ुद अल्लाह तआला है? (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले अस्हाबिन्नबी (ﷺ), बाब मनाक़िबुल मुहाजिरीन व फ़ज़्लिहिम : 3653; सहीह मुस्लिम : 2381) कुरआन फ़र्माता है कि अगर तुम मेरे नबी की मदद न करो तो क्या हुआ? जब काफिरों ने उसे निकाल दिया मैंने ख़ुद उसकी मदद की जबकि वह दो मैं का दूसरा था जब वह दोनों ग़ार में थे जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़मगीन न हो, अल्लाह हमारे साथ है पस अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ की सकीनत उस पर नाज़िल की और ऐसे लश्कर से उसकी मदद की जिसे तुम न देख सकते थे, आख़िर उसने काफ़िरों की बात पस्त कर दी और अपना कलिमा बुलंद कर दिया। अल्लाह तआला इज़्ज़त व हिक्मत वाला है। (9/तौबा : 40) सच तो यह है कि यह वाक़िया अस्हाबे कहफ़ के वाक़िये से भी अजीबतर और अनोखा है। एक क़ौल यह भी है कि उन नौजवानों को क़ौम और बादशाह ने पा लिया। लेकिन यह क़ौल है ताम्मुल तलब। कुरआन का फ़र्मान है कि सुबह व शाम उन पर धूप आती जाती है वग़ैरह, वल्लाहु आलम!

***

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۗ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ
وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

तर्जुमा : "तू देखेगा कि आफ़ताब सूरज उगने के वक़्त उनके ग़ार से दाएँ जानिब को झुक जाता है और बवक़्ते ग़ुरूब उनकी बाईं जानिब कतरा जाता है और वह उस ग़ार की कुशादा जगह में हैं। यह है क़ुदरत अल्लाह तआला की निशानियों में से। अल्लाह तआला जिसकी रहबरी करे वह राहे रास्त पर है और जिसे वह गुमराह कर दे नामुम्किन है कि तू उसका कोई कारसाज़ और रहनुमा पा सके।" (17)

कुछ ग़ार के बारे में (आयत 17) : यह दलील है इस अम्र की कि उस ग़ार का मुँह उत्तर की तरफ़ है, सूरज तुलूअ के वक़्त उनके दाएँ जानिब धूप की छाँव झुक जाती है पस दोपहर के वक़्त वहाँ बिलकुल धूप नहीं रहती,

सूरज की बुलंदी के साथ ही ऐसी जगह से किरणें धूप की कम होती जाती हैं और सूरज के डूबने के वक़्त धूप उनके ग़ार की तरफ़ उसके दरवाजे के उत्तर रुख़ से जाती है पूरब की जानिब से इल्मे हैयत के जानने वाले इसे ख़ूब समझ सकते हैं जिन्हें सूरज चाँद और सितारों की चाल का इल्म है। अगर ग़ार का दरवाज़ा पूरब की तरफ़ होता तो सूरज के ग़ुरूब के वक़्त वहाँ धूप बिलकुल न जाती और अगर क़िब्ला रुख़ होता तो सूरज के तुलूअ के वक़्त धूप न पहुँचती और न ग़ुरूब के वक़्त पहुँचती और न साया दाएँ बाएँ झुकता और अगर दरवाज़ा पश्चिम की तरफ़ होता तो भी सूरज निकलने के वक़्त अंदर धूप न जा सकती बल्कि ज़वाल के बाद अंदर पहुँचती और फिर बराबर सूरज डूबने तक रहती। पस ठीक बात वही है जो हमने बयान की। फ़लिल्लाहिल हम्द। (तक़्रिज़ुहुम) के मअ़नी हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने तर्क करने और छोड़ देने के किये हैं। (तब्री : 17/621)

अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने हमें यह तो बतला दिया ताकि हम इसे सोचें समझें और यह नहीं बतलाया कि वह ग़ार किस शहर के किस पहाड़ में है इसलिए कि हमें इससे कोई फ़ायदा नहीं, न इससे किसी शरई मक़्सद का हासिल होना है। फिर भी कुछ मुफ़स्सिरीन ने इसमें तक्लीफ़ उठाई है। कोई कहता है वह ऐला के क़रीब है, कोई कहता है नैनवा के पास है, कोई कहता है रूम में है, कोई कहता है बल्क़ाअ में। असल इल्म अल्लाह ही को है कि वह कहाँ है अगर उसमें कोई दीनी मस्लिहत या हमारा कोई मज़हबी फ़ायदा होता तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला हमें बतला देता, अपने रसूल की ज़ुबान बयान कर देता। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "तुम्हें जो जो काम और चीज़ें जन्नत से क़रीब और जहन्नम से दूर करने वाली थीं उनमें से एक भी तर्क किए बग़ैर मैंने बतला दी हैं।" पस अल्लाह तआ़ला ने उसकी सिफ़त बयान की और उसकी जगह नहीं बतलाई। फ़र्मा दिया कि सूरज के उगने के वक़्त उनके ग़ार से वह दाएँ जानिब झुक जाता है और डूबने के वक़्त उन्हे बाईं तरफ़ छोड़ देता है, वह इससे फ़राख़ी में है। उन्हें धूप की तपिश नहीं पहुँचती, वरना उनके बदन और कपड़े जल जाते।

यह अल्लाह तआ़ला की एक निशानी है कि रब ने उन्हें उस ग़ार में पहुँचाया जहाँ उन्हें ज़िन्दा रखा धूप भी पहुँचे, हवा भी जाए, चाँद भी रहे ताकि न नींद में ख़लल आए, न नुक़्सान पहुँचे। फ़िल वाक़ेअ़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह भी कामिल निशाने क़ुदरत है उन नौजवान मुवह्हिदों की हिदायत ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने की थी, यह राहे रास्त पा चुके थे किसी के बस में न था कि उन्हें गुमराह कर सके और इसके ख़िलाफ़ जिसे वह राह न दिखाए उसका हादी कोई नहीं।

***

وَتَحۡسَبُهُمۡ اَيۡقَاظًا وَّهُمۡ رُقُوۡدٌ ۖ وَّنُقَلِّبُهُمۡ ذَاتَ الۡيَمِيۡنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلۡبُهُمۡ

بَاسِطٌ ذِرَاعَيۡهِ بِالۡوَصِيۡدِ ؕ لَوِ اطَّلَعۡتَ عَلَيۡهِمۡ لَوَلَّيۡتَ مِنۡهُمۡ فِرَارًا وَّلَمُلِئۡتَ مِنۡهُمۡ

رُعۡبًا ﴿۱۸﴾

तर्जुमा : ''तू ख़याल करेगा कि वह जगे हैं हालाँकि वह सोये हुए हैं। ख़ुद हम ही उन्हें दाएँ बाएँ करवटें दिलाया करते हैं, उनका कुत्ता भी चोखट पर अपने हाथ फैलाए हुए है अगर तू झाँककर उन्हें देखना चाहे तो ज़रूर उल्टे पैर भाग खड़ा हो और उनकी दहशत व डर से तू पुर कर दिया जाए।''(18)

(आयत 18) : यह सो रहे हैं लेकिन देखने वाला उन्हें जगा हुआ समझता है क्योंकि उनकी आँखें खुली हुई हैं। मज़्कूर है कि भेड़िया जब सोता है तो एक आँख बंद रखता है एक खुली होती है फिर उसे बंद करके दूसरी खोल देता है चुनाँचे किसी शायर ने कहा है

जानवरों और कीड़ों मकोड़ों और दुश्मनों से बचाने के लिए तो अल्लाह तआला ने नींद मे भी उनकी आँखें खुली रखी हैं और ज़मीन न खा जाए, करवटें गल न जाएँ, इसलिए अल्लाह तआला उन्हें करवटें बदलवा देता है। कहेते हैं सालभर में दो मर्तबा करवट बदलते हैं।

अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता : उनका कुत्ता भी अंगनाई में दरवाज़े के पास मिट्टी में चाखट के क़रीब बतौरे पहरेदार के बाज़ू ज़मीन पर टिकाये हुए बैठा हुआ है, दरवाज़े के बाहर इसलिए है कि जिस घर में कुत्ता, तस्वीर, जुंबी और काफ़िर शख़्स हो उस घर में फ़रिश्ते नहीं जाते जैसे कि एक हसन हदीस में वारिद हुआ है। (अबूदाऊद, किताबुत्तहारत, बाब अज्जुंबु युअख़्ख़िरुल गुस्ल : 227; व सनदुहू हसन; नसाई : 262; इब्ने माजा : 3650; बिदूनि ज़िक्रिल काफ़िर, इसी तरह बुख़ारी : 3226; सहीह मुस्लिम : 2106; में कुत्ते और तस्वीर के अल्फ़ाज़ हैं।) उस कुत्ते को भी उसी हालत में नींद आ गई है। सच है भले लोगों की सोहबत भी भलाई पैदा करती है, देखिए ना उस कुत्ते की कितनी शान हो गई कि कलामुल्लाह में उसका ज़िक्र आया, कहते हैं कि उनमें से किसी का यह शिकारी कुत्ता पला हुआ था। एक क़ौल यह भी है कि बादशाह के बावर्ची का यह कुत्ता चूँकि वह भी उनके हम मस्लक था उनके साथ हिज्रत में थे, उनका कुत्ता उनके पीछे लग गया था, वल्लाहु आलम!

कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के हाथों हज़रत इस्माईल (अ.) के बदले जो भेड़ ज़िब्ह हुआ उसका नाम जरीर था। हज़रत सुलेमान (अलैहिस्सलाम) को जिस हुदहुद ने मलिक-ए-सबा की ख़बर दी थी उसका नाम गुंफ़ुज़ था और अस्हाबे कहफ़ के उस कुत्ते का नाम क़ित्मीर था और बनी इस्राईल ने जिस बछड़े की पूजा शुरू की थी उसका नाम यहमूत था। हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) बहिश्त से हिंद में उतरे थे, हज़रत हव्वा (अलैहस्सलाम) जिद्दा में, इब्लीस शैतान दश्ते बीसान में और साँप अस्फ़हान में।

एक क़ौल है कि उस कुत्ते का नाम हमरान था, नीज़ उस कुत्ते के रंग में भी बहुत से क़ौल हैं लेकिन हमें हैरत है कि इससे क्या मतलब? क्या फ़ायदा? क्या ज़रूरत? बल्कि अजब नहीं कि ऐसी बहसें मम्नूअ हों इसलिए कि यह तो आँखें बंद करके पत्थर फेंकना है। बेदलील ज़ुबान खोलना है। फिर फ़र्माता है कि हमने उन्हें वह रौब दिया कि कोई उन्हें देख ही नहीं सकता। यह इसलिए कि उनका तमाशा न बना लें, कोई जुर्अत करके उनके पास न चला जाए, कोई उन्हें हाथ न लगा सके, वह आराम और चैन से जब तक हिक्मते इलाही ही मुक्तज़ा है, बाआराम सोते रहें। जो उन्हें देखता है मारे रौब के कलेजा थरथरा जाता है। उसी वक़्त उल्टे पैरों वापिस लौटता है उन्हें नज़र भरकर देखना भी हर एक के लिए नामुम्किन है।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا
اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى
الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ
بِكُمْ اَحَدًا ﴿۱۹﴾ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ
تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿۲۰﴾

तर्जुमा : "इसी तरह हमने उन्हें जगाकर उठा दिया कि आपस में पूछताछ कर लें एक कहने वाले ने कहा कि क्यूँ भई! तुम कितनी देर सोये रहे। उन्होंने जवाब दिया कि एक दिन या एक दिन से भी कम, कहने लगे कि तुम्हारे ठहरे रहने की मुद्दत का बख़ूबी इल्म अल्लाह ही को है, अब तो तुम अपने में से किसी को अपनी यह चाँदी देकर शहर भेजो, वह ख़ूब देखभाल ले कि शहर का कौनसा खाना पाकीज़ा है फिर उसी में से तुम्हारे खाने के लिए ले आए कि बहुत एहतियात और नर्मी बरते और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। (19) अगर यह काफ़िर तुम पर ग़ल्बा पा लेंगे तो तुम्हें पत्थरों से हलाक कर देंगे या तुम्हें फिर अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तो तुम्हें हर्गिज़ कामयाबी न मिलने की।" (20)

तीन सौ नौ साल के बाद अस्हाबे कहफ़ बेदार (जगे) हुए तो? (आयत 19, 20) : इर्शाद होता है कि जैसे हमने अपनी कुदरते कामिला से उन्हें सुला दिया था, उसी तरह अपनी कुदरत से उन्हें जगा दिया। तीन सौ नौ साल तक सोते रहे लेकिन जब जागे बिलकुल वैसे ही थे, जैसे सोते वक़्त थे बदन बाल खाल सब असली हालत में थे बस जैसे सोते वक़्त थे वैसे ही अब भी थे कि किसी क़िस्म का कोई तग़य्युर न था। आपस में कहने लगे, क्यूँ जी! हम कितनी मुद्दत तक सोये रहे? तो जवाब मिला कि एक दिन या उससे भी कम, क्योंकि सुबह के वक़्त यह सो गए थे और उस वक़्त शाम का वक़्त था इसलिए उन्हें यही ख़्याल हुआ, लेकिन फिर ख़ुद उन्हें ख़्याल हुआ कि ऐसा तो नहीं इसलिए उन्होंने दिमाग़ लगाना छोड़ दिया और फ़ैसलाकुन बात कह दी कि इसका सही इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को है। अब चूँकि भूख प्यास मालूम हो रही थी, इसलिए उन्होंने बाज़ार से सौदा मंगवाने की तज्वीज़ की। दाम (रुपये) उनके पास थे जिनमें से कुछ राहे लिल्लाह ख़र्च किये गए थे कुछ मौजूद थे तो कहने लगे, इसी शहर में किसी को रुपये देकर भेज दो, वह वहाँ से कोई पाकीज़ा चीज़ खाने पीने की लाए, यानी उम्दा और बेहतर चीज़ जैसे आयत (وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا) (24/नूर : 21) यानी अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम तुम पर न होता तो

तुममें से कोई पाक न होता और आयत में है (قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى) (87/अअ़ला : 14) वह कामयाब हो गया जिसने पाकीज़गी इख़्तियार की। ज़कात को भी ज़कात इसीलिए कहा जाता है कि वह माल को पाक कर देती है। दूसरा क़ौल यह है कि मुराद बहुत सारा खाना लाने से है जैसे खेती के बढ़ जाने के वक़्त अरब कहते हैं (ज़कज़्ज़रड़) और जैसे शायर कहते हैं,

क़बाइलुना सब्ड़ंव्व अन्तुम सलासतुन   वस्सब्ड अज़्का मिन सलासिव्वं अत्यबू

पस यहाँ भी यह लफ़्ज़ ज़्यादती और कसरत के मअ़नी में है। लेकिन पहला क़ौल ही सही है इसलिए कि अस्हाबे कहफ़ का मक़्सद इस क़ौल से हलाल चीज़ का लाना था ख़्वाह वह ज़्यादा हो या कम।

कहते हैं कि जाने वाले को बहुत सावधानी बरतनी चाहिए, आते जाते और सौदा ख़रीदने में होशियारी से काम ले, जहाँ तक हो सके, लोगों की नज़रों में न चढ़े, देखो ऐसा न हो कोई मालूम कर ले अगर उन्हें इल्म हो गया तो फिर ख़ैर नहीं, दक़ियानूस के आदमी अगर तुम्हारी जगह की ख़बर पा गए तो वह तरह तरह की सख़्त सज़ाएँ तुम्हें देंगे कि या तो तुम उनसे घबराकर दीने हक़ छोड़कर फिर काफ़िर बन जाओ या यह कि वह उन ही सज़ाओं में तुम्हारा काम तमाम कर दें। अगर तुम उनके दीन में जा मिले तो समझ लो कि तुम नजात से दूर हो गए फिर तो अल्लाह तआ़ला के यहाँ का छुटकारा तुम्हारे लिए मुश्किल हो जाएगा।

***

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَاۤ ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۗ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

तर्जुमा : "हमने इस तरह लोगों को उनके आमाल से आगाह कर दिया कि वह जान लें कि अल्लाह तआ़ला का वादा बिलकुल सच्चा है और क़ियामत में कोई शक शुब्हा नहीं। जबकि वह अपने अम्र में आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे। कहने लगे उनके ग़ार पर एक इमारत बना लो। उनका रब ही उनके हाल का ज़्यादा आ़लिम है। जिन लोगों ने उनके बारे में ग़ल्बा पाया वह कहने लगे कि हम तो इनके आसपास मस्जिद बना लेंगे।" (21)

अस्हाबे कहफ़ का वाक़िया मरकर जी उठने की वाज़ेह दलील है (आयत 21) इर्शाद हो रहा है कि इसी तरह हमने अपनी क़ुदरत से लोगों को उनके हाल पर आगाह कर दिया। ताकि अल्लाह तआ़ला के वादे और क़ियामत के आने की सच्चाई का उन्हें इल्म हो जाए। कहते हैं कि उस ज़माने के वहाँ के लोगों को क़ियामत के आने में कुछ शक पैदा हो चले थे। एक जमाअ़त तो कहती थी कि फ़क़त रूहें दोबारा जी उठेंगी जिस्म का एआ़दा न होगा पस अल्लाह तआ़ला ने सदियों बाद अस्हाबे कहफ़ को जगाकर क़ियामत के होने

और जिस्मों के दोबारा जीने की हुज्जत वाज़ेह कर दी और आँखों देखी दलील दे दी।

जो शख़्स खाना लेने गया उसने क्या देखा? मज़्कूर है कि जब उनमें से एक साहब रुपये लेकर सौदा ख़रीदने को ग़ार से बाहर निकले तो देखा कि उनकी देखी हुई एक चीज़ भी नहीं, सारा नक़्शा बदला हुआ है। उस शहर का नाम अफ़सूस था, ज़माना गुज़र चुके थे बस्तियाँ बदल चुकी थीं, सदियाँ बीत गई थीं और यह तो अपने नज़दीक यही समझे हुए थे कि हमें यहाँ पहुँचे एक आध दिन गुज़रा है। यहाँ इंक़िलाबे ज़माना और का और हो चुका था जैसे किसी ने कहा है,

अम्मद्दियारु फ़इन्नहा कदियारिहिम व अरा रिजालल हय्यि ग़ैरा रिजालिही

घर भले उन ही जैसे हैं लेकिन क़बीले के लोग तो सब और ही हैं, उसने देखा कि न तो शहर की कोई चीज़ अपने हाल पर है न शहर का एक रहने वाला जान पहचान का है, यह किसी को जानें, न उन्हें और कोई पहचाने। तमाम आम ख़ास और ही हैं। यह अपने दिल में हैरान थे, दिमाग़ चकरा रहा था कि कल शाम हम इस शहर को छोड़कर गए हैं, यह दफ़अतन हो क्या गया? हर चंद सोचता था कोई बात समझ में न आती थी। आख़िर ख़्याल करने लगा कि शायद मैं पागल हो गया हूँ या मेरे हवास ठिकाने नहीं रहे या मुझे कोई बीमारी लग गई है या मैं ख़्वाब में हूँ। लेकिन फ़ौरन ही यह ख़्यालात हट गए, मगर कोई बात बंद न बैठ सकी, इसलिए इरादा कर लिया कि मुझे सौदा लेकर इस शहर को जल्द छोड़ देना चाहिए एक दूकान पर जाकर उसे रुपये दिए और सौदा खाने पीने का तलब किया। दुकानदार ने उस सिक्के को देखकर सख़्त हैरत का इज़्हार किया और उसे अपने पड़ौसी को दिया कि मियाँ! देखना यह सिक्का कैसा है? कब का है? किस ज़माने का है? उसने दूसरे को दिया, उससे किसी और ने देखने को मांगा।

आख़िरकार वह तो एक तमाशा बन गया, हर ज़ुबान से यही निकलने लगा कि उसने किसी पुराने ज़माने का ख़ज़ाना पाया है, उसमें से यह लाया है उससे पूछो यह कहाँ का है? कौन है? यह सिक्का कहाँ से पाया? चुनाँचे लोगों ने उसे घेर लिया, घेरा डालकर खड़े हो गए और ऊपर तले टेढ़े तिरछे सवालात शुरु कर दिए। उसने कहा मैं तो इसी शहर का रहने वाला हूँ। कल शाम को मैं यहाँ से गया हूँ यहाँ का बादशाह दक़ियानूस है, अब तो सबने क़हक़हा लगाकर कहा, भई! यह तो कोई पागल आदमी है। आख़िर इसे बादशाह के सामने पेश किया। उससे सवालात हुए। उसने तमाम हाल कह सुनाया। अब एक तरफ़ बादशाह और दूसरे सब लोग हैरत में आ गए, एक तरफ़ यह ख़ुद शशदर व हैरान। आख़िर सब लोग उनके साथ हुए कि अच्छा हमें अपने और साथी दिखाओ और अपना ग़ार भी दिखाओ। यह उन्हें लेकर चले। ग़ार के पास पहुँचकर कहा, तुम ज़रा ठहरो, मैं पहले उन्हें जाकर ख़बर कर दूँ। उनके अलग हटते ही अल्लाह तआला ने उन पर बेख़बरी के पर्दे डाल दिए, उन्हें न मालूम हो सका कि वह कहाँ गया? अल्लाह तआला ने फिर उस राज़ को मख़्फ़ी कर लिया। एक रिवायत में यह भी आया है कि लोग बादशाह के साथ गए। उनसे मिले, सलाम अलैक कहा, बग़लगीर हुए, यह बादशाह ख़ुद मुसलमान था, उसका नाम तियूदूसीस था। अस्हाबे कहफ़ उनसे मिलकर बहुत ख़ुश हुए और मुहब्बत व उंसियत से मिले जुले, बातें कीं फिर वापिस जाकर अपनी अपनी जगह जा लेटे, फिर अल्लाह तआला ने उन्हें फ़ौत कर लिया, रहमतुल्लाहि अलैहिम, वल्लाहु आलम!

कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) हबीब बिन मुस्लिम (रज़ि.) के साथ एक

ग़ज़्वा में थे, वहाँ उन्होंने रूम के शहरों में एक ग़ार देखा जिसमें हड्डियाँ थीं लोगों ने कहा, यह हड्डियाँ अस्हाबे कहफ़ की हैं। आपने फ़र्माया, तीन सौ साल गुज़र चुके कि उनकी हड्डियाँ खोखली होकर मिट्टी हो गईं। (इब्ने जरीर)

पस फ़र्माता है कि जैसे हमने उन्हें अनोखी तर्ज़ पर सुलाया और बिलकुल अनोखे तौर पर जगाया, उसी तरह बिलकुल अनोखे तर्ज़ पर अहले शहर को उनके हालात से ख़बरदार किया ताकि उन्हें अल्लाह तआला के वादों की हक़्क़ानियत का इल्म हो जाए और क़ियामत के होने में और उसके बरहक़ होने में उन्हें कोई शक न रहे। उस वक़्त वह आपस में सख़्त मुख़ालिफ़ थे लड़ झगड़ रहे थे। कुछ क़ियामत के क़ाइल थे कुछ मुंकिर थे पस अस्हाबे कहफ़ का निकलना मुंकिरों पर हुज्जत और मानने वालों के लिए दलील बन गया। अब उस बस्ती वालों का इरादा हुआ कि उनके ग़ार का मुँह बंद कर दिया जाए और उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया जाए जिन्हें काम का ग़ल्बा हासिल था उन्होंने इरादा किया कि हम तो इनके आसपास मस्जिद बना लेंगे। इमाम इब्ने जरीर (रह.) उन लोगों के बारे में दो क़ौल नक़्ल करते हैं, एक यह कि उनमें से मुसलमानों ने यह कहा था, दूसरे यह कि यह क़ौल कुफ़्फ़ार का था, वल्लाहु आलम!

क़ब्र पुख़्ता न बनाई जाए : लेकिन बज़ाहिर मालूम होता है कि इसके क़ाइल कलिमा कहने वाले थे हाँ! यह बात और है कि इनका यह कहना अच्छा था या बुरा? तो इस बारे में साफ़ हदीस मौजूद है, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "अल्लाह यहूद व नसारा पर लअनत करे कि उन्होंने अपने नबियों और वलियों की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब मा यक्रहू मिन इत्तिख़ाज़िल मसाजिद अलल क़ुबूर : 1330; सहीह मुस्लिम : 531; अहमद : 6/80) जो उन्होंने किया उससे आप अपनी उम्मत को बचाना चाहते थे। इसीलिए अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में जब हज़रत दानियाल (अलैहिस्सलाम) की क़ब्र इराक़ में पायी तो फ़र्माया कि इसे पोशीदा कर दिया जाए और जो रुक़आ मिला है जिसमें कुछ लड़ाईयों वग़ैरह का ज़िक्र है उसे दफ़न कर दिया जाए।

***

سَيَقُولُونَ ثَلَٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ
وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُل رَّبِّيٓ أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِم مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا
تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَٰهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَاْىْءٍ
إِنِّى فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ وَٱذْكُر رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰٓ أَن
يَهْدِيَنِ رَبِّى لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : ''कुछ लोग कहेंगे कि अस्हाबे कहफ़ तीन थे और चौथा उनका कुत्ता था। कुछ कहेंगे कि पाँच थे और छठा उनका कुत्ता था, निशाना देखे बग़ैर पत्थर चला देना कुछ कहेंगे कि वह सात हैं और आठवाँ उनका कुत्ता था, तू कह दे कि मेरा परवरदिगार उनकी तअदाद को बख़ूबी जानने वाला है, उन्हें बहुत ही कम लोग जानते हैं। पस तू इनके मुक़द्दमे में सिर्फ़ सरसरी बातचीत ही कर और उनमें से किसी से उनके बारे में पूछताछ भी न कर। (22) हर्गिज़ हर्गिज़ किसी काम पर यूँ न कहना कि मैं इसे कल करूँगा। (23) मगर साथ ही इंशाअल्लाह कह लेना और जब भी भूले अपने परवरदिगार की याद कर लिया करना और कहते रहना कि मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरा रब मुझे इससे भी ज़्यादा हिदायत के क़रीब की बात की रहबरी करे।'' (24)

अस्हाबे कहफ़ की गिनती (आयत 22-24) : लोग अस्हाबे कहफ़ की गिनती में कुछ कुछ कहा करते थे, तीन क़िस्म के लोग थे, चौथी गिनती बयान नहीं की। दो पहले के क़ौल को तो ज़ईफ़ कर दिया कि यह अटकल के तुक्के हैं। बेनिशाने के पत्थर हैं कि अगर कहीं लग जाएँ तो कमाल नहीं, न लगें तो ज़वाल नहीं, हाँ! तीसरा क़ौल बयान करके सुकूत इख़्तियार किया, तर्दीद नहीं की यानी सात वह आठवाँ उनका कुत्ता। इससे तो मालूम होता है कि यही बात सही है और वाक़ेअ में यूँ ही है। फिर इर्शाद होता है कि ऐसे मौक़े पर बेहतर यही है कि इल्मे इलाही की तरफ़ से उसे लौटा दिया जाए ऐसी बातों में बावजूद कोई सही इल्म न होने के ग़ौरो ख़ोज़ करना बेकार है जिस बात का इल्म हो जाए, मुँह से निकाले वरना ख़ामोश रहे।

इस गिनती का सही इल्म बहुत कम लोगों को है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं उन ही में से हूँ, मैं जानता हूँ वह सात थे। (तब्री : 17/642) हज़रत अता ख़ुरासानी (रह.) का क़ौल भी यही है। (तब्री : 17/642) और यही हमने पहले लिखा था। उनमें से कुछ तो बहुत ही कम उम्र थे। अन्फ़वान शबाब में थे यह लोग दिन रात अल्लाह तआला की इबादत में मशग़ूल रहते थे, रोते रहते थे, और अल्लाह तआला से फ़रियाद करते थे। मरवी है कि यह नौ थे उनमें जो सबसे बड़े थे उनका नाम मुक्सलेमीन था, उसी ने बादशाह से बातें कीं थीं और उसे अल्लाह तआला वाहिद की इबादत की दावत दी थी। बाक़ी के नाम यह हैं। यमलीख़, मरतूनिस, किस्तूनिस, बैरूनिस, दनैमूस, यत्बूनिस और क़ाबूश। हाँ! इब्ने अब्बास (रज़ि.) की सही रिवायत यही है कि यह सात थे, आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ से भी यही मालूम होता है। शुऐब जुबाई कहते हैं उनके कुत्ते का नाम हमरान था। लेकिन उन नामों की सेहत में नज़र है, वल्लाहु आलम! उनमें की बहुत सी चीज़ें अहले किताब से ली हुई हैं। फिर अपने नबी को इर्शाद फ़र्माया कि आप इनके बारे में ज़्यादा बहस मुबाहिसा न करें, यह एक निहायत ही हल्का काम है जिसमें कोई बड़ा फ़ायदा नहीं और न उनके बारे में किसी से पूछिए, क्योंकि उमूमन वह अपने ही से जोड़कर कहते हैं। कोई सही और सच्ची दलील इनके हाथों में नहीं और अल्लाह तआला ने जो कुछ आपके सामने बयान किया है यह झूठ से पाक है शक व शुब्हा से दूर है, क़ाबिले ऐतिमाद व यक़ीन है बस यही हक़ है और सबसे मुक़द्दम है।

हर काम से पहले इंशाअल्लाह कहना चाहिए : अल्लाह तबारक व तआला अपने ख़त्मुल मुर्सलीन नबी

से इर्शाद फ़र्माता है कि जिस काम को कल करना चाहो तो यूँ न कहो कि कल करूँगा। बल्कि उसके साथ ही इंशाअल्लाह भी कह लिया करो क्यों कि कल क्या होगा उसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को है। अल्लामुल ग़ुयूब और तमाम चीज़ों पर क़ादिर सिर्फ़ वही है उसकी मदद तलब कर लिया करो। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "(हज़रत) सुलेमान बिन दाऊद (عليه السلام) की नव्वे (90) बीवियाँ थीं एक रिवायत में है (100 थीं एक में बहत्तर (72) थीं तो आप (عليه السلام) ने एक बार कहा कि आज रात मैं उन सबके पास जाऊँगा हर औरत के बच्चा होगा तो वह राहे इलाही में जिहाद करेंगे। उस वक़्त फ़रिश्ते ने कहा, इंशाअल्लाह कह मगर हज़रत सुलेमान (अ.) ने न कहा, अपने इरादे के मुताबिक़ वह सब बीवियों के पास गए मगर सिवाय एक बीवी के किसी के यहाँ बच्चा न हुआ और जिस एक के यहाँ हुआ भी वह भी आधे जिस्म का था। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "उस अल्लाह तआला की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर वह इंशाअल्लाह कह लेते तो यह इरादा उनका पूरा होता और उनकी हाजतरवाई होती और यह सब बच्चे जवान होकर अल्लाह तआला की राह के मुजाहिद बनते।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब मन तलबल वलद लिल जिहादि : 2819; सहीह मुस्लिम : 1654; मुस्नदे अबी यअला : 6244)

इसी सूरत की तफ़्सीर के शुरू में इस आयत का शाने नुज़ूल बयान हो चुका है कि जब आपसे अस्हाबे कहफ़ का क़िस्सा पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि मैं कल तुम्हें जवाब दूँगा इंशाअल्लाह न कहा. उस बिना पर पन्द्रह दिन तक वही नाज़िल न हुई। (तब्री : 17/642) इस हदीस को पूरी तरह हमने इस बात की तफ़्सीर के शुरू में बयान कर दिया है यहाँ दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। फिर बयान फ़र्माता है कि जब भूल जाए तब अपने रब को याद कर यानी इंशाअल्लाह कहना अगर मौका पर याद न आया तो जब याद आए कह लिया कर। (तब्री : 17/642) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) उस शख़्स के बारे में फ़र्माते हैं जो हलफ़ खाए कि उसे फिर भी इंशाअल्लाह कहने का हक़ है भले साल भर गुज़र चुका हो। (तब्री : 17/642) मतलब यह है कि अपने कलाम में या क़सम में इंशाअल्लाह कहना भूल गया तो जब भी याद आए कह ले भले कितना ही वक़्त गुज़र चुका हो और भले उसके ख़िलाफ़ भी हो चुका हो, इससे यह मतलब नहीं कि अब उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा नहीं रहेगा और उसे क़सम तोड़ने का इख़्तियार है यही मतलब इस क़ौल का इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने बयान किया है और यही बिलकुल ठीक है। इसी पर हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का कलाम महमूल किया जा सकता है। (तब्री : 17/646) उनसे और हज़रत मुजाहिद (रह.) से मरवी है कि मुराद इंशाअल्लाह तआला कहना भूल जाता है और रिवायत में इसके बाद यह भी है कि यह मख़्सूस है।

हुज़ूर (ﷺ) के साथ दूसरा कोई तो अपनी क़सम के साथ ही मुत्तसिल तौर पर इंशाअल्लाह कहे तो मुअतबर है यह भी एक मतलब है कि जब कोई बात भूल जाओ तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करो क्योंकि भूल शैतानी हरकत है और ज़िक्रे इलाही ही याद का ज़रिया है फिर फ़र्माया कि तुझसे किसी ऐसी बात का सवाल किया जाए कि तुझे उसका इल्म न हो तो तू अल्लाह तआला से पूछ लिया कर और उसकी तरफ़ तवज्जह कर ताकि वह तुझे ठीक बात और हिदायत वाली राह बता और दिखा दे। और भी क़ौल इसमें हैं, वल्लाहु आलम!

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

तर्जुमा : "वह लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल तक रहे बल्कि नौ साल और ज़्यादा गुज़ारे। (25) तू कह दे कि अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने की मुद्दत का बख़ूबी इल्म है आसमानों और ज़मीनों का ग़ैब सिर्फ़ उसी को मालूम है, वह क्या ही अच्छा देखने वाला सुनने वाला है। सिवाए अल्लाह तआला के उनका कोई मददगार नहीं। अल्लाह तआला अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।" (26)

अस्हाबे कहफ़ के ठहरने की मुद्दत (आयत 25, 26) : अल्लाह तआला अपने नबी को उस मुद्दत की ख़बर दे रहा है जो अस्हाबे कहफ़ ने अपने सोने के ज़माने में गुज़ारी कि वह मुद्दत सूरज के हिसाब से तीन सौ साल की थी और चाँद के हिसाब से तीन सौ नौ साल की थी। असल में शम्सी और क़मरी साल में हर सौ साल पर तीन साल का फ़र्क़ पड़ता है इसीलिए तीन सौ अलग बयान करके फिर नौ अलग बयान किये।

फिर फ़र्माता है कि जब तुझसे उनके सोने की मुद्दत पूछी जाए और तेरे पास उसका कुछ इल्म न हो और अल्लाह तआला ने तुझे वाक़िफ़ किया हो तो तू आगे न बढ़ और ऐसे उमूर मेंजवाब दिया कर कि अल्लाह ही को सही इल्म है। आसमान और ज़मीन का ग़ैब वही जानता है। हाँ! जिसे वह जो बात बता दे वह जान लेता है। हज़रत क़तादा (रह.) कहते हैं यह क़ौल कि वह तीन सौ साल ठहरे थे, अहले किताब का है और अल्लाह तआला ने उसकी तर्दीद की है और फ़र्माया है अल्लाह ही को उसका पूरा इल्म है। (तब्री : 17/647) हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से भी इसी मअनी की क़िरात मरवी है। लेकिन क़तादा (रह.) का यह क़ौल ताम्मुल तलब है इसलिए कि अहले किताब के यहाँ शम्सी साल का रिवाज है और वह तीन सौ साल मानते हैं। तीन सौ नौ का क़ौल नहीं अगर उन ही का क़ौल नक़्ल होता तो फिर अल्लाह तआला यह न फ़र्माता कि और नौ साल ज़्यादा किये। बज़ाहिर तो यही ठीक मालूम होता है कि ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला इस बात की ख़बर दे रहा है न कि किसी का क़ौल बयान करता है। यही इख़्तियार इमाम इब्ने जरीर (रह.) का है, क़तादा (रह.) की रिवायत और इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत दोनों मुन्क़तअ हैं फिर शाज़ भी हैं। जुम्हूर की क़िरअत वही है जो क़ुरआन में है। पस वह शाज़ दलील के क़ाबिल नहीं, वल्लाहु आलम!

अल्लाह तआला अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है और उनकी आवाज़ को ख़ूब सुन रहा है, इन अल्फ़ाज़ में तारीफ़ का मुबालग़ा है उन दोनों अल्फ़ाज़ में मदह का मुबालिग़ा है यानी वह ख़ूब सुनने और देखने वाला है। (तब्री : 17/650) सबके अमल देख रहा है, सबकी बातें सुन रहा है, ख़ल्क़ का ख़ालिक़, अम्र का मालिक वही है, कोई उसके फ़र्मान को रोक नहीं सकता, उसका कोई वज़ीर और मददगार नहीं, न कोई शरीक और मुशीर है वह उन तमाम कमियों से पाक है, उन तमाम नुक़्सानात से दूर है।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : ''तेरी जानिब जो तेरे रब की किताब वह्यी की गई है उसे पढ़ता रह, उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, तू उसके सिवा हर्गिज़ हर्गिज़ कोई पनाह की जगह न पाएगा। (27) अपने तईं उन्हीं के साथ रखाकर जो अपने परवरदिगार को सुबह शाम पुकारते रहते हैं। और उसी के चेहरे के इरादे रखते हैं । ख़बरदार तेरी निगाहें उनसे न हटनी पाएँ कि दुनियावी ज़िन्दगी के ठाठ के इरादे में लग जाए, देख उसका कहना न मानना जिसके दिल को हमने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया है और जो अपनी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा हुआ है और जिसका काम हद से गुज़र चुका है।''(28)

कमज़ोर सहाबा की फ़ज़ीलत का बयान (आयत 27, 28) : अल्लाह तआला करीम अपने रसूल (ﷺ) को अपने कलाम की तिलावत और उसकी तब्लीग़ की हिदायत करता है, उसकेकलिमात को न कोई बदल सके, न टाल सके, न इधर उधर कर सके, समझ ले कि उसके सिवा कोई पनाह नहीं । अगर तिलावत व तब्लीग़ छोड़ दी तो फिर बचाव की कोई सूरत नहीं। (तब्री : 17/651) जैसे और जगह है कि ऐ रसूल (ﷺ)! जो कुछ तेरी तरफ़ तेरे रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है उसकी तब्लीग़ करता रह। अगर न की तो तूने हक़े रिसालत अद नहीं किया। लोगों के शर्र से अल्लाह तआला तुझे बचाये रखेगा। (5/माइदा : 67) और आयत में है (जअह..)(28/क़सस : 85) यानी अल्लाह तआला तुझसे तेरे मंसब की बाबत क़ियामत के दिन ज़रूर सवाल करेगा, बारी तआला का ज़िक्र उसकी तस्बीह हम्द बड़ाई और बुज़ुर्गी बयान करने वालों के पास बैठा रहा कर जो सुबह शाम यादे बारी तआला में लगे रहते हैं ख़्वाह वह फ़क़ीर ही क्यूँ न हों ख़्वाह अमीर ख़्वाह रज़ील हों ख़्वाह शरीफ़, ख़्वाह क़वी हों ख़्वाह कमज़ोर।

कुरैश ने हुज़ूर (ﷺ) से दरख़्वास्त की थी कि आप छोटे लोगों की मज्लिस में न बैठा करें जैसे बिलाल, अम्मार, सुहैब, ख़ब्बाब, इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन) वग़ैरह और हमारी मज्लिसों में बैठा करें, पस अल्लाह तआला ने आपको उनकी दरख़्वास्त ठुकराने का हुक्म दिया। जैसे और आयत में है (وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ)(6/अन्आम : 52) यानी सुबह व शाम यादे अल्लाह तआला करने वालों को अपनी मज्लिस से न हटा। सहीह मुस्लिम में है कि हम छः शख़्स ग़रीब गुर्बा हुज़ूर (ﷺ) की मज्लिस में बैठे

हुए थे। सअद बिन अबी वक़्क़ास़, इब्ने मसऊद, क़बीला हुज़ैल का एक शख़्स, बिलाल और दो आदमी और इतने में मग़रूर मुश्रिकीन आए और कहने लगे, इन्हें अपनी मज्लिस में इस जुर्अत के साथ न बैठने दो। अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि हुज़ूर (ﷺ) के जी में क्या आया? जो उसी वक़्त आयत (وَ لَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ) उतरी। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब फ़ज़्ले सअद बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) : 2413)

अल्लाह तआला के ज़िक्र की फ़ज़ीलत : मुस्नद अहमद में है कि एक वाइज़ क़िस्सा सुना रहा था जो हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए। वह ख़ामोश हो गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "तुम बयान किये चले जाओ, मैं तो सुबह की नमाज़ से लेकर आफ़ताब के निकलने तक इसी मज्लिस में बैठा रहूँ, तो अपने लिए गुलाम आज़ाद करने से बेहतर समझता हूँ।" (अहमद : 5/261; व सनदुहू ज़ईफ़ुन: अबुल जअद मज्हूलुल हाल है। मज्मउज़्ज़वाइद : 1/195) और हदीस में है आप (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मैं ऐसी मज्लिस में बैठ जाऊँ यह मुझे चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा महबूब है।" (अहमद : 3/474; व सनदुहू ज़ईफ़ुन, इसकी सनद में करदूस बिन क़ैस मज्हूलुल हाल रावी है।) अबूदाऊद तयालिसी में है कि "ज़िक्रुल्लाह करने वालों के साथ सुबह की नमाज़ से सूरज निकलने तक बैठ जाना मुझे तो तमाम दुनिया से ज़्यादा प्यारा है और नमाज़े अ़स्र के बाद से सूरज डूब जाने तक अल्लाह तआला का ज़िक्र करना मुझे आठ गुलामों के आज़ाद करने से ज़्यादा प्यारा है भले वह गुलाम औलादे इस्माईल से गिराँ क़द्र और क़ीमती क्यूँ न हों, भले उनमें से एक एक की दियत बारह बारह हज़ार की (मुस्नद तयालिसी : 2104; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यज़ीद रक़्क़ाशी ज़ईफ़ रावी है।) हो तो मज्मूई क़ीमत छियान्वे हज़ार की हुई।" कुछ लोग चार गुलाम बतलाते हैं। लेकिन हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं, वल्लाह! हुज़ूर (ﷺ) ने आठ गुलाम फ़र्माए हैं। बज़्ज़ार में है कि हुज़ूर (ﷺ) आए, एक साहब सूरह कहफ़ की क़िरअत कर रहे थे आपको देखकर ख़ामोश हो गए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "यही उन लोगों की मज्लिस है जहाँ अपने नफ़्स को रोके रखने का मुझे हुक्मे इलाही हुआ है।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2326; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/167) और रिवायत में है कि या तो सूरह हिज्र की तिलावत कर रहे थे या सूरह कहफ़ की। (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2326; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मज्मउज़्ज़वाइद : 7/164; इसकी सनद में भी अम्र बिन साबित है।)

मुस्नद अहमद में है, फ़र्माते हैं "ज़िक्रे इलाही के लिए जो मज्लिस जमा हो निय्यत भी उनकी अच्छी हो तो आसमान से मुनादी आवाज़ देता है कि उठो अल्लाह ने तुम्हें बख़्श दिया, तुम्हारी बुराइयाँ भलाइयों से बदल दी गईं।" (अहमद : 3/142; व सनदुहू हसन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4141; अल्मुअजमुल औसत : 1579; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/76) तब्रानी में है कि जब यह आयत उतरी आप अपने किसी घर में थे उसी वक़्त ऐसे लोगों की तलाश में निकले कुछ लोगों को अल्लाह का ज़िक्र करते पाया जिनके बाल बिखरे हुए थे खालें ख़ुश्क थीं, बमुश्किल एक एक कपड़ा उन्हें हासिल था, फ़ौरन उनकी मज्लिस में बैठ गए और कहने लगे "अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग रखे हैं जिनके साथ बैठने का मुझे हुक्म हुआ है।" फिर फ़र्माता है उनसे तेरी आँखें तजावुज़ न करें, उन यादे इलाही करने वालों को छोड़कर मालदारों की तलाश में न लग जाना जो दीन से दूर हैं। जो इबादत से दूर हैं जिनकी बुराइयाँ बढ़ गई हैं जिनके आमाल

हिमाक़त के हैं, तू उनकी पैरवी न करना उनके तरीक़े को पसंद न करना, उन पर रश्क भरी निगाहें न डालना, उनकी नेअ़मतें ललचाई हुई नज़रों से न देखना। जैसे फ़र्मान है (وَ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ) (20/ताहा : 131) हमने उन्हें जो दुनियावी ऐशो इशरत दे रखी है, यह सिर्फ़ उनकी आज़माइश के लिए है तू ललचाई हुई नज़रों से उन्हें न देखना, दरअसल तेरे रब के पास की रोज़ी बेहतर और बहुत बाक़ी हैं।

***

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ۭ بِئْسَ الشَّرَابُ ۭ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : ''ऐलान कर दे यह सरासर बरहक़ कुरआन तुम्हारे रब की तरफ़ से है अब जो चाहे ईमान लाए, जो चाहे कुफ़्र करे, ज़ालिमों के लिए हमने वह आग तैयार कर रखी है जिसकी क़नातें उन्हें घेर लेंगी। अगर वह फ़रियादरसी चाहेंगे तो उनकी फ़रियादरसी उस पानी से की जाएगी जो पिघले हुए तांबे जैसा होगा जो चेहरे को भून देगा बड़ा ही बुरा पानी है और बड़ी बुरी आरामगाह (दोज़ख़) है।'' (29)

जहन्नम की ख़ोफ़नाकियाँ (आयत 29) : जो कुछ मैं अपने रब के पास से लाया हूँ वही हक़ और सच्चाई है, शक व शुब्हा से बिलकुल ख़ाली है। अब जिसका जी चाहे माने न चाहे न माने। न मानने वालों के लिए जहन्नम की आग तैयार है जिसकी चार दीवारी के जेलख़ाने में यह बेबस होंगे। हदीस में है कि ''जहन्नम की चार दीवारी की वुसअ़त चालीस चालीस साल की राह की है।'' (अहमद : 3/29; तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शराबे अहलिन्नार : 2584; वहुव ज़ईफ़ुन; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है। मुस्नदे अबी यअ़ला : 1389; हाकिम : 4/600) और ख़ुद वह दीवारें भी आग की हैं। (तब्री : 18/11) और रिवायत में है समुन्द्र भी जहन्नम है। पस इस आयत की तिलावत की और फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! न उसमें जाऊँ जब तक भी ज़िन्दा रहूँ और न उसका कोई क़तरा मुझे पहुँचे। (हाकिम : 4/596; ह : 8762; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या लैसा बि क़विय्यिन क़ालहू अद्दारे क़ुत्नी फ़ी सुननिही : 1/282) ''मुहल'' कहते हैं ग़लीज़ पानी को जैसे ज़ेतून के तेल की तलछट। (तब्री : 18/13) और जैसे ख़ून और पीप जो बेहद गर्म हो। (तब्री : 18/13) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने एक मर्तबा सोना पिघलाया जब वह पानी जैसा हो गया और जोश मारने लगा। फ़र्माया ''मुहलि'' की मुशाबिहत इसमें है। (तब्री : 18/13) जहन्नम का पानी भी काला है वह ख़ुद भी काली है जहन्नमी भी काले हैं। मुहलि स्याह रंग, बदबूदार, ग़लीज़, गंदगी, सख़्त गर्म चीज़ है। चेहरे के पास जाते ही खाल झुलसा देती है, मुँह जला देती है।

मुस्नद अहमद में है कि ''काफ़िर के चेहरे के पास जाते ही उसके चेहरे की खाल झुलसकर उसमें आ पड़ेगी।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शराबे अहलिन्नार : 2581; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है। अहमद : 3/70, 71) क़ुरआन में है वह पीप पिलाये जाएँगे। (47/मुहम्मद : 15) बमुश्किल उनके हलक़ से उतरेगी, चेहरे के पास आते ही खाल जलकर गिर पड़ेगी, पीते ही आँतें कट जाएँगे, उनकी हाय वाय और शोरो गुल पर यह पानी उनको पीने को दिया जाएगा। (तब्री : 18/14) भूख की शिकायत पर ज़क़ूम का दरख़्त दिया जाएगा जिससे उनकी खालें इस तरह जिस्म छोड़कर उतर जाएँगी कि उनके पहचानने वाला उन खालों को देखकर पहचान ले, फिर प्यास की शिकायत पर सख़्त गर्म खोलता हुआ पानी मिलेगा। जो चेहरे के पास पहुँचते ही तमाम गोश्त को भून डालेगा। (तब्री : 18/14) हाय क्या बुरा पानी है यह वह गर्म पानी पिलाये जाएँगे जो उनकी आँतें काट देगा, सख़्त गर्म बहते हुए नाले से उन्हें पानी पिलाया जाएगा। उनका ठिकाना उनकी मंज़िल उनका घर उनकी आरामगाह भी निहायत बुरी है। जैसे और आयत में है (إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا) (25/फ़ुरक़ान : 66) वह बड़ी बुरी जगह और बेहद कठिन मंज़िल है।

***

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۖ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन जो लोग ईमान लाए, नेक आमाल करें, हम तो किसी नेक अमल करने वाले का सवाब ज़ाया (बर्बाद) नहीं करते। (30) उनके लिए हमेशगी वाली जन्नतें हैं। उनके नीचे से नहरें जारी होंगी, वहाँ यह सोने के कंगन पहनाये जाएँगे और सब्ज़ रंग नर्म व बारीक और मोटे रेशम के लिबास पहनेंगे वहाँ तख़्तों के ऊपर तकिये लगाए हुए होंगे। क्या ख़ूब बदला है और किस क़द्र अच्छी आरामगाह है।'' (31)

फ़र्मांबरदारों के लिए जन्नतों की नेअ़मतें (आयत 30, 31) : जन्नत का ज़िक्र और उसकी ख़ुशहाली, ऊपर बुरे लोगों का हाल बयान किया, अब नेकों का आग़ाज़ व अंजाम बयान हो रहा है यह अल्लाह, रसूल और किताब के मानने वाले नेक अमल करने वाले होते हैं। उनके लिए हमेशगी वाली मदामी जन्नतें हैं। उनके बालाख़ानों के और बाग़ात के नीचे नहरें बह रही हैं। उन्हें ज़ेवरात ख़ुसूसन सोने के कंगन पहनाये जाएँगे, उनका

लिबास वहाँ ख़ालिस रेशम का होगा, नर्म बारीक और नर्म मोटे रेशम का लिबास होगा, यह बआराम शाहाना शान से मस्नदों पर जो तख़्तों पर होंगी, तकिया लगाये बैठे होंगे, कहा गया है कि लेटने और चार ज़ानू बैठने का नाम इत्तिका है मुम्किन है यही मुराद यहाँ भी हो, चुनाँचे हदीस में है ''मैं इत्तिका करके खाना नहीं खाता।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अत्इमा, बाब अल्उकुल मुत्तकिआ : 5398; तिर्मिज़ी : 1830; इब्ने माजा : 3262; अहमद : 4/309; इब्ने हिब्बान : 5240) इसमें भी यही दो क़ौल हैं (अराइका) जमा है (अरीकतुन) की तख़्त छप्पर खट वग़ैरह को कहते हैं। क्या ही अच्छा बदला है और कितनी ही अच्छी और आराम की वह जगह है बरख़िलाफ़ दोज़ख़ियों के कि उन्हें बुरी सज़ा और बुरी जगह है। सूरह फ़ुरक़ान में भी इन ही दोनों गिरोह का इसी तरह मुक़ाबले का बयान है।

***

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ
وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا
خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ
نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَّمَآ
اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

तर्जुमा : ''इन्हें उन दो शख़्सों की मिसाल भी सुना दे जिनमें से एक को हमने दो बाग़ अंगूरों के दे रखे थे जिन्हें खजूरों के दरख़्तों से हमने घेर रखा था और दोनों के बीच खेती पैदा कर दी थी। (32) दोनों बाग़ अपना फल ख़ूब लाते थे उसमें कोई कमी न थी, हमने उन बाग़ों के बीच नहर जारी कर रखी थी। (33) अल्ग़र्ज़ उसके पास मेवे थे। एक दिन उसने बातों ही बातों में अपने साथी से कहा कि मैं तुझसे ज़्यादा मालदार हूँ और जत्थे के ऐतिबार से भी ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूँ। (34) यह अपने बाग़ में गया और था अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला। कहने लगा कि मैं ख़याल नहीं कर सकता कि किसी वक़्त भी यह बाग़ बर्बाद हो जाए। (35) और न मैं क़ियामत को क़ायम होने वाली ख़याल करता हूँ और अगर बिल फ़र्ज़ मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया भी गया तो यक़ीनन मैं उस लौटने की जगह उससे भी ज़्यादा बेहतर पाऊँगा।''(36)

दो बाग़ वाले आदमियों का क़िस्सा (आयत 32-36) : चूँकि ऊपर मिस्कीन मुसलमानों और मालदार

काफ़िरों का ज़िक्र हुआ था यहाँ उनकी एक मिसाल बयान की जाती है कि दो शख़्स थे जिनमें से एक मालदार था, अंगूरों के बाग़ इर्द गिर्द खजूरों के दरख़्त बीच में खेती दरख़्त फले हुए बेलें हरी खेती सब्ज़ फल-फूल, भरपूर नुक़्सान किसी क़िस्म का नहीं, इधर उधर नहरें जारी। उसके पास हर वक़्त तरह तरह की पैदावार मौजूद मालदार शख़्स। उसकी दूसरी क़िरअत (सुम्रुन) भी है यह जमा है (सम्रतुन) की जैसे (ख़श्बतुन) की जमा (ख़ुश्बुन) अल्ग़र्ज़ उसने एक दिन अपने एक दोस्त से फ़ख़्र व गुरूर करते हुए कहा कि मैं मालदारी में इज़्ज़त व औलाद में जाह व हश्म में नौकर चाकर में तुझसे ज़्यादा हैसियत वाला हूँ। एक फ़ाजिर शख़्स की तमन्ना यही होती है कि दुनिया की यह चीज़ें उसके पास ज़्यादा से ज़्यादा हों। यह अपने बाग़ में गया, अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुआ यानी तकब्बुर, जबर, इंकारे क़ियामत और कुफ़्र करता हुआ इस क़द्र मस्त था कि उसकी ज़ुबान से निकला नामुम्किन है मेरी यह लहलहाती खेतियाँ यह फलदार दरख़्त, यह जारी नहरें, यह सरसब्ज़ बेलें, कभी फ़ना हो जाएँ, हक़ीक़त में यह उसकी कम अक़्ली और बेईमानी और दुनिया की ख़र मस्ती और अल्लाह के साथ कुफ़्र की वजह थी। इसीलिए कह रहा है कि मेरे ख़्याल से तो क़ियामत आने वाले नहीं और अगर बिलफ़र्ज़ आई भी तो ज़ाहिर है कि अल्लाह का मैं प्यारा बन्दा हूँ वरना वह मुझे इस क़द्र मालो मताअ कैसे देता? तो वहाँ भी मुझे इससे भी बेहतर अता होगा, जैसे और आयत में है (وَلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى) (41/हामीम सज्दा : 50) अगर मैं लौटाया गया तो वहाँ मेरे लिए और अच्छाई होगी। और आयत में इर्शाद है (اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا) (19/मरयम : 77) यानी तूने उसे भी देखा है जो हमारी आयतों का इंकार तो कर रहा है और बावजूद उसके उसकी तमन्ना यह है कि मुझे क़ियामत के दिन भी बकसरत माल और औलाद मिलेगी। यह अल्लाह के सामने दिलेरी करता है और अल्लाह तआला पर बातें बनाता है। इस आयत का शाने नुज़ूल आस़ बिन वाइल है जैसे कि अपने मौक़े पर आएगा, इंशाअल्लाह तआला!

***

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ
سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ
قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّيْٓ
اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا
زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾

तर्जुमा : "उसके साथी ने उससे बातें करते हुए कहा कि क्या तू उस अल्लाह से कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से फिर तुझे पूरा आदमी बना दिया है। (37) लेकिन मैं तो अक़ीदा रखता हूँ कि वही अल्लाह मेरा परवरदिगार है मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करूँगा। (38) तू अपने बाग़ में जाते वक़्त क्यूँ न कहता कि अल्लाह का चाहा होने वाला है कोई ताक़त नहीं मगर अल्लाह की मदद से अगरचे तू मुझे माल व औलाद में अपने से कमतर समझता है। (39) मगर बहुत मुम्किन है कि मेरा रब मुझे तेरे इस बाग़ से बेहतर दे और इस पर आसमानी अज़ाब भेज दे तो यह चटयल और फिसलना मैदान बन जाए (40) या इसका पानी सूख जाए और तेरे बस में न रहे कि तू उसे ढूँढ़ लाए।" (41)

(आयत 37-41) : उस काफ़िर मालदार को जो जवाब उस मोमिन मुफ़्लिस ने दिया, उसका बयान हो रहा है कि किस तरह उसने वअ़ज़ व पंद की, ईमान व यक़ीन की हिदायत की और गुमराही और गुरूर से हटाना चाहा। फ़र्माया कि तू अल्लाह के साथ कुफ़्र करता है जिसने इंसानी पैदाइश मिट्टी से शुरू की फिर उसकी नस्ल मिले जुले पानी से जारी रखी। जैसे आयत (كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ) (2/बक़रह : 28) में है कि तुम अल्लाह के साथ कैसे कुफ़्र करते हो? तुम तो मुर्दा थे उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, तुम उसकी ज़ात का उसकी नेअ़म्तों का इंकार कैसे कर सकते हो? उसकी नेअ़मतों के उसकी कुदरतों के बेशुमार नमूने ख़ुद तुममें और तुम पर मौजूद हैं। कौन नादान ऐसा है जो न जानता हो कि वह पहले कुछ न था और अल्लाह तआ़ला ने उसे मौजूद कर दिया। वह ख़ुद ब ख़ुद अपने पैदा होने पर क़ादिर न था, अल्लाह तआ़ला ने उसका वजूद बख़्शा, फिर वह इंकार करने के लायक़ कैसे हो गया? उसकी तोहीद उलूहियत से कौन इंकार कर सकता है।

मैं तो तेरे मुक़ाबले में खुले अल्फ़ाज़ में कह रहा हूँ कि मेरा रब वही वहदुहू ला शरीक लहू है मैं अपने रब के साथ शिर्क करना पसंद नहीं करता हूँ। फिर अपने साथी को नेक रग़बत दिलाने के लिए कहता है कि अपनी लहलहाती हुई खेती और हरे भरे मेवों से लदे बाग़ को देखकर तू अल्लाह का शुक्र अदा क्यूँ नहीं करता? क्यूँ माशाअल्लाह ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह नहीं कहता? इसी आयत को सामने रखकर कुछ सलफ़ का मक़ूला है कि जिसे अपनी औलाद या माल या हाल पसंद आए, उसे यह कलिमा पढ़ लेना चाहिए। अबू यअ़ला मूसली में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं, "जिस बन्दे पर अल्लाह अपनी नेअ़मत इन्आम करे, अहलो अ़याल हों, दौलतमंदी हो, फ़रज़न्द हों, फिर वह इस कलिमा को कह ले तो उसमें कोई आँच न आएगी सिवाए मौत के फिर आप इस आयत की तावील करते।" (मुअजमुल औसत : 5992; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अ़ब्दुल मलिक ज़ुरारह ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/655; रक़म : 5206)

मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "क्या मैं तुम्हें जन्नत का एक ख़ज़ाना न बतला दूँ? वह ख़ज़ाना ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहना है।" (मुस्नद अहमद : 2/469; सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात इज़ा अलाइ अक़बा : 6384; सहीह मुस्लिम : 2704; अबूदाऊद : 1528; तिर्मिज़ी : 3371; मुस्नदे अबी यअ़ला : 7252) और रिवायत में है कि "अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है मेरे इस बंदे ने मान लिया और सौंप दिया।" हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से पूछा गया तो आपने फ़र्माया सिर्फ़ ला हौला ... नहीं बल्कि वह जो सूरह कहफ़ में है (माशाअल्लाहु ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह) (अहमद : 2/335; व सनदुहू हसन; मुस्नदे

बज़्ज़ार : 3086; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/99) फिर फ़र्माया कि उस नेक शख़्स ने कहा कि मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि वह मुझे आख़िरत के दिन बेहतर नेअमतें अता करेगा और तेरे इस बाग़ को जिसे तो हमेशगी वाला समझे बैठा है तबाह कर दे, आसमान से इस पर कोई अज़ाब भेज दे, ज़ोर की बारिश आँधी के साथ आए, तमाम खेत और बाग़ पट हो जाए, सूखी साफ़ ज़मीन रह जाए, गोया कि कभी यहाँ कोई चीज़ उगी ही नहीं थी या इसकी नहरों का पानी धंसा दे। ग़ौर मस्दर है मअनी में ग़ाइर के बतौरे मुबालग़े के लाया गया है।

***

وَاُحِيۡطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصۡبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيۡهِ عَلٰى مَاۤ اَنۡفَقَ فِيۡهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوۡشِهَا وَيَقُوۡلُ يٰلَيۡتَنِىۡ لَمۡ اُشۡرِكۡ بِرَبِّىۡۤ اَحَدًا ۝٤٢ وَلَمۡ تَكُنۡ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنۡصُرُوۡنَهٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنۡتَصِرًا ۝٤٣ هُنَالِكَ الۡوَلَايَةُ لِلّٰهِ الۡحَقِّ ؕ هُوَ خَيۡرٌ ثَوَابًا وَّخَيۡرٌ عُقۡبًا ۝٤٤

तर्जुमा : ''उसके सारे फल घेर लिये गए, पस वह अपने उस ख़र्च पर जो उसने उसमें किया था अपने हाथ मलने लगा और वह बाग़ तो औंधा उल्टा पड़ा हुआ था और यह कह रहा था कि काश! मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42) उसकी हिमायत में कोई जमाअत न उठी कि अल्लाह से उसका कोई बचाव करती और न वह ख़ुद ही बदला लेने वाला बन सका। (43) यहीं से साबित है कि इख़्तियारात उस अल्लाह तआला हमेशगी वाले के ही हैं। वह सवाब देने के और अंजम के ऐतिबार से बहुत बेहतर है।'' (44)

(आयत 42 से 44) : उसका कुल माल कुल फल ग़ारत हो गया। वह मोमिन उसे जिस बात से डरा रहा था वही हो कर रही। अब तो वह अपने माल की बर्बादी पर कफ़े अफ़सोस करने लगा और आरज़ू करने लगा कि काश! मैं अल्लाह के साथ शिर्क न करता। (तब्री : 18/27) जिन पर फ़ख़्र करता था उनमें से कोई उस वक़्त काम न आया, फ़रज़न्द क़बीला सब रह गये, फ़ख़्र व ग़ुरूर सब ख़त्म हो गया न और कोई खड़ा हुआ न ख़ुद में ही कोई हिम्मत हुई, कुछ लोग (हुनालिका) पर वक़्फ़ करते हैं और उसे पहले जुम्ले के साथ मिला लेते हैं यनाी वहाँ वह अपना इंतिक़ाम न ले सका।

और कुछ (मुंतसिरन) पर आयत करके आगे से नए जुम्ले की इब्तिदा करते हैं। (वलायतु) की दूसरी क़िरअत (विलायतु) भी है। पहली क़िरअत पर मतलब यह हुआ कि हर मोमिन व काफ़िर अल्लाह तआला ही की तरफ़ रुजूअ करने वाला है उसके सिवा पनाह की जगह नहीं, अज़ाब के वक़्त कोई भी सिवाय उसके काम नहीं आ सकता। जैसे फ़र्मान है (فَلَمَّا رَاَوۡا بَاۡسَنَا قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحۡدَهٗ) (40/मोमिन : 84) यानी हमारे अज़ाब देखकर कहने लगे कि हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाते हैं और उससे पहले जिन्हें हम अल्लाह का शरीक ठहराया करते थे उनसे इंकार करते हैं और जैसे कि फ़िरऔन ने डूबने के वक़्त कहा था कि मैं उस

अल्लाह पर ईमान लाता हूँ जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए हैं। और मैं मुसलमानों में शामिल होता हूँ। उस वक़्त जवाब मिला कि अब ईमान क़बूल करता है? इससे पहले तू नाफ़र्मान रहा और मुफ़्सिदों में शामिल रहा। (10/यूनुस : 90, 91) वाव के ज़ेर की क़िरअत पर यह मअनी हुए कि वहाँ हुक्म सही तौर पर अल्लाह ही के लिए है (लिल्लाहिल हक़्क़) की दूसरी क़िरअत क़ाफ़ के पेश से भी है क्योंकि यह (अल्विलायतु) की सिफ़त है। जैसे फ़र्माने इलाही (اَلْمُلْكُ يَوْمَىِٕذِ ِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ) (25/फ़ुरक़ान : 26) में है कुछ लोग क़ाफ़ का ज़ेर पढ़ते हैं उनके नज़दीक यह सिफ़त है हक़ तआला की जैसे और आयत में है (ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ) (6/अन्आम : 62) इसीलिए फिर फ़र्माता है कि जो आमाल सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हों, उनका सवाब बहुत होता है और अंजाम के लिहाज़ से भी वह बहुत बेहतर हैं।

***

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝٤٥ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝٤٦

तर्जुमा : "उनके सामने दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल भी बयान कर जैसे पानी जिसे हम आसमान से उतारते हैं उससे ज़मीन की रूइदगी मिलती है फिर आख़िरकार वह चूरा हो जाती है जिसे हवाएँ उड़ाये लिए फिरती हैं, अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (45) माल व औलाद तो दुनिया की ही ज़ीनत है हाँ! अल्बत्ता बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तेरे रब के नज़दीक अज़्रूए सवाब और आइन्दा की अच्छी तवक़्क़ा के बहुत ही अच्छी हैं।" (46)

दुनिया के ख़त्म होने की मिसाल (आयत 45, 46) : दुनिया अपने ज़वाल और फ़ना और ख़ात्मे और बर्बादी के लिहाज़ से मिस्ल आसमानी बारिश के है जो ज़मीन के दानों वग़ैरह से मिलता है और हज़ारों पौधे लहलहाने लगते हैं, तरोताज़गी और ज़िन्दगी के आसार हर चीज़ पर ज़ाहिर होने लगते हैं लेकिन कुछ ही दिनों के गुज़रते ही वह सूख साखकर चूरा चूरा हो जाते हैं और हवाएँ उन्हें दाएँ बाएँ उड़ाये फिरती हैं। उस हालत पर जो क़ादिर था वह इस हालत पर भी क़ादिर है। उमूमन दुनिया की मिसाल बारिश से बयान की जाती है जैसे सूरह यूनुस की आयत (اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا) (10/यूनुस : 24) और जैसे सूरह ज़ुमर की आयत (اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً) (39/ज़ुमर : 21) में और जैसे सूरह हदीद की आयत में और सही हदीस में भी है "दुनिया सब्ज़ रंग मीठी है...।" (सहीह मुस्लिम, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अक्सरु अहलिल जन्नतिल फ़ुक़रा : 2742) फिर फ़र्माता है कि माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं। जैसे फ़र्माया (زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ)(3/आले इमरान : 14) इंसान के लिए ख़्वाहिशों की मुहब्बत मस्लन औरतें बेटे ख़ज़ाने वग़ैरह

मुज़य्यन कर दी गई हैं। और आयत में है (اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ) (64/तग़ाबुन : 15) तुम्हारे माल तुम्हारी औलादें फ़ित्ना हैं और अल्लाह के पास अज्रे अज़ीम है यानी उसकी तरफ़ झुकना उसकी इबादत में मशग़ूल रहना दुनिया तल्बी से बेहतर है। इसीलिए यहाँ भी इर्शाद होता है कि बाक़ियातुस्सालिहात हर लिहाज़ से उम्दा चीज़ है मस्लन पाँचों वक़्त की नमाज़ें और (सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर) और (ला इलाहा इल्लल्लाहु) और सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाह) (तब्री : 18/33) और (अल्लाहु अकबर) और (ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) के गुलाम फ़र्माते हैं कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) एक मर्तबा अपने साथियों में बैठे हुए थे जो मुअज़्ज़िन पहुँचा आपने पानी मंगवाया, एक बर्तन में क़रीब तीन पाव के पानी आया। आपने वुज़ू करके फ़र्माया हुज़ूर (ﷺ) ने इसी तरह वुज़ू करके फ़र्माया, ''जो मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू करके ज़ुहर की नमाज़ अदा करे तो सुबह से लेकर ज़ुहर तक के सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। फिर अस्र में भी इसी तरह नमाज़ पढ़ ली तो ज़ुहर से अस्र तक के तमाम गुनाह माफ़, फिर मग़्रिब की नमाज़ पढ़ ली तो अस्र से मग़्रिब तक के गुनाह माफ़, फिर इशा की नमाज़ पढ़ी तो मग़्रिब से इशा तक के गुनाह माफ़ फिर रात को वह सो रहा, सुबह उठकर नमाज़े फ़ज्र अदा की तो इशा से लेकर सुबह तक के गुनाह माफ़, यही वह नेकियाँ हैं जो बुराइयों को दूर कर देती हैं।'' लोगों ने पूछा यह तो हुईं नेकियाँ, अब ऐ उस्मान (रज़ि.)! आप बतलाइए कि बाक़ियातुस्सालिहात क्या हैं? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया **(सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अकबर वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम)** (अहमद : 1/71; वहुव हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/297)

बाक़ियाते सालिहात क्या हैं : हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) फ़र्माते हैं, बाक़ियाते सालिहात यह हैं (सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि) हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) ने अपने शागिर्द अम्मारा (रह.) से पूछा कि बतलाओ बाक़ियातुन सालिहात क्या हैं? उन्होंने जवाब दिया कि नमाज़ और रोज़ा। आपने फ़र्माया, तुमने सही जवाब नहीं दिया। उन्होंने कहा, ज़कात और हज्ज। फ़र्माया अभी भी ठीक नहीं हुआ। सुनो वह पाँच कलिमे हैं। (ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से सवाल हुआ कि आपने सिवाय अल्हम्दु लिल्लाह के चार और कलिमात बतलाए हैं। हज़रत मुजाहिद सिवाय ला हौला आख़िर तक के और चारों कलिमात बतलाते हैं।

हसन और क़तादा (रहि.) भी इन ही चारों कलिमात को बाक़ियातुन सालिहात बतलाते हैं। इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ''सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर) यह हैं बाक़ियातुन सालिहात।'' हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''बाक़ियातुन सालिहात की कसरत करो।'' पूछा गया, वह क्या हैं या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने फ़र्माया, ''तक्बीर, तहलील, तस्बीह और अल्हम्दु लिल्लाह और ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि।'' (अहमद : 3/75; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है।) सालिम बिन अब्दुल्लाह (रह.) के मौला अब्दुल्लाह बिन

अ़ब्दुर्रहमान (रह.) कहते हैं कि मुझे हज़रत सालिम (रह.) ने मुहम्मद बिन कअ़ब कुरज़ी के पास किसी काम के लिए भेजा तो उन्होंने कहा कि सालिम से कह देना कि फ़लाँ क़ब्र के पास के कोने में मुझसे मुलाक़ात करें, मुझे उनसे कुछ काम है, चुनाँचे दोनों की वहाँ मुलाक़ात हुई, सलाम अ़लैक हुई। तो सालिम ने पूछा कि आपके नज़दीक बाक़ियातुन सालिहात क्या हैं? उन्होंने फ़र्माया ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर और सुब्हानल्लाहि और ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि। सालिम ने कहा, यह आख़िरी कलिमा आपने उसमें कब से बढ़ाया? कुरज़ी (रह.) ने कहा मैं तो हमेशा से इस कलिमे को गिनती में लेता हूँ, दो तीन बार यही सवाल जवाब हुआ तो हज़रत मुहम्मद बिन कअ़ब (रह.) ने फ़र्माया, क्या तुम्हें इस कलिमे से इंकार है? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ! इंकार है कहा सुनो! मैंने हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) से सुना है उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना है कि आप (ﷺ) फ़र्माते थे "जब मुझे मेअ़राज करायी गयी, मैंने आसमान पर (हज़रत) इब्राहीम (عليه السلام) को देखा आपने हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) से पूछा कि यह आपके साथ कौन हैं? जिब्राईल (عليه السلام) ने जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ) हैं। उन्होंने मुझे मरहबा और ख़ुशआमदीद कहा और फ़र्माया, आप अपनी उम्मत से फ़र्मा दीजिए कि वह जन्नत में अपने लिए बहुत कुछ बाग़ात लगा लें उसकी मिट्टी पाक है उसकी ज़मीन कुशादा है। मैंने पूछा, वहाँ बाग़ात लगाने की क्या सूरत है? फ़र्माया (ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह) बकसरत पढ़ें।" (व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसमें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ताब मज्हूलुल हाल रावी है, इसे इब्ने हिब्बान के अलावा किसी ने सिक़ा नहीं कहा।)

मुस्नद अहमद में नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत है कि एक रात इशा की नमाज़ के बाद हुज़ूर (ﷺ) हमारे पास आये, आसमान की तरफ़ देखकर नज़रें नीची कर लीं। हमें ख़्याल हुआ कि शायद आसमान में कोई नई बात हुई है। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मेरे बाद झूठ बोलने और ज़ुल्म करने वाले बादशाह होंगे जो उनके झूठ को सच्चाए और उनके ज़ुल्म में उनकी तरफ़दारी करे वह मुझसे नहीं और न मैं उसका हूँ और जो उनके झूठ को झुठलाये और उनके ज़ुल्म में उनकी तरफ़दारी न करे वह मेरा है और मैं उसका हूँ। लोगों सुन रखो सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर यह बाक़ियातुन सालिहात यानी बाक़ी रहने वाली नेकियाँ हैं। (अहमद : 4/267, 268; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; रजुल मज्हूल है।) मुस्नद में है आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "वाह वाह पाँच कलिमात हैं और नेकी की तराज़ू में बेहद वज़नी हैं ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि और बच्चा जिसके इंतिक़ाल पर उसका बाप सब्र और तलबे अज्र करे। वाह वाह पाँच चीज़ें जो उनका यक़ीन रखता हो अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात करे, वह क़तअ़न जन्नती है (1) अल्लाह पर (2) क़ियामत के दिन पर (3) जन्नत दोज़ख़ पर (4) मरने के बाद दोबारा जी उठने पर (5) हिसाब के दिन पर ईमान रखे।" (मुस्नद अहमद : 3/443, 4/237; वहुव सहीहुन बिशशवाहिद; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/88)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि.) एक सफ़र में थे किसी जगह उतरे और अपने गुलाम से फ़र्माया कि छुरी लाओ, खेलें। हस्सान बिन अ़तिया (रह.) कहते हैं मैंने उस वक़्त कहा कि यह आपने क्या कहा? आपने फ़र्माया, वाक़ेई मैंने ग़लती की। सुनो! इस्लाम लाने के बाद से लेकर आज तक मैंने

कोई कलिमा अपनी ज़ुबान से नहीं निकाला जो मेरे लिए लगाम बन जाए सिवाय इस एक कलिमे के पस तुम लोग इसे याद से भुला दो और अब जो मैं कह रहा हूँ उसे याद रखो। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि "जब लोग सोने चाँदी के जमा करने में लग जाएँ तुम उस वक़्त इन कलिमात को बकसरत पढ़ा करो (अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकस्सुबाता फ़िल अम्रि वल अज़ीमता अलरुश्दि व अस्अलुका शुक्रा निअ़मतिका व अस्अलुका हुस्ना इबादतिका व अस्अलुका क़ल्बन सलीमव्वंअस्अलुका लिसानन सादिक़व्वं अस्अलुका मिन ख़ैरि मा तअ़लमु व अऊज़ुबिका मिन शर्रि मा तअ़लमु व अस्तग़्फ़िरुका लिमा तअ़लमु इन्नका अन्त अ़ल्लामुल ग़ुयूब) यानी "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अपने काम की साबित क़दमी और नेकी के काम का पूरा क़स्द और तेरी नेअ़मतों की शुक्रगुज़ारी की तौफ़ीक़ तलब करता हूँ और तुझसे दुआ है कि तू मुझे सलामती वाला दिल और सच्ची ज़ुबान अ़ता फ़र्मा। तेरे इल्म में जो भलाई है मैं उसका तालिब हूँ और तेरे इल्म में जो बुराई है मैं उससे तेरी पनाह चाहता हूँ, परवरदिगार! हर उस बुराई से मेरी तौबा है जो तेरे इल्म में हो, बेशक तू ही ग़ैब का जानने वाला है।" (अह़मद : 4/123; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने अबी शैबा : 10/271; ह़िल्यतुल औलिया : 1/266) हज़रत सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अहले ताइफ़ में से सबसे पहले मैं नबी (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, मैं अपने घर से सुबह ही सुबह चल खड़ा हुआ और अ़स्र के वक़्त मिना में पहुँच गया, पहाड़ पर चढ़ा फिर उतरा। फिर हुज़ूर (ﷺ) के पास पहुँचा, इस्लाम क़बूल किया। आप (ﷺ) ने मुझे सूरह (क़ुल हुवल्लाहु अह़द) और सूरह (ज़िल्ज़ाल) सिखाई और यह कलिमात सिखाए (सुब्ह़ानल्लाहि वल ह़म्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर) फ़र्माया, "यह हैं बाक़ी रहने वाली नेकियाँ।"

इसी सनद से मरवी है कि "जो शख़्स रात को उठे वुज़ू करे कुल्ली करे फिर सौ बार (सुब्ह़ानल्लाहि वल ह़म्दु लिल्लाहि वल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाह) पढ़े उसके सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं सिवाए क़त्ल के ख़ून के वह माफ़ नहीं होता।" इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं बाक़ियातुन सालिह़ात ज़िक्रुल्लाह है और (ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर सुब्ह़ानल्लाहि वल ह़म्दु लिल्लाहि तबारकल्लाहु वला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि वस्तग़्फ़िरुल्लाह व सल्लल्लाहु अ़ला रसूलि) है और रोज़ा, नमाज़, ह़ज्ज, सदक़ा, ग़ुलामों की आज़ादी, जिहाद, सिलारह़मी और कुल नेकियाँ, यह सब बाक़ियातुन सालिह़ात हैं जिनका सवाब जन्नत वालों को जब तक आसमान व ज़मीन रहें, मिलता रहता है। फ़र्माते हैं पाकीज़ा कलाम भी इसी में दाख़िल है। (तब्री : 18/35) हज़रत अ़ब्दुर्रह़मान (रह़.) फ़र्माते हैं, सब नेक आ़माल इसी में दाख़िल हैं। (तब्री : 18/35) इमाम इब्ने जरीर (रह़.) भी इसे मुख़्तार बतलाते हैं।

***

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾
وَعُرِضُوا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ۗ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَّجْعَلَ
لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ
يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً إِلَّا أَحْصٰهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا
عَمِلُوْا حَاضِرًا ۗ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ﴿٤٩﴾

तर्जुमा : ''जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे और ज़मीन को तू साफ़ खुली हुई देखेगा और तमाम लोगों का हम हश्र करेंगे उनमें से एक को भी बाक़ी न छोड़ेंगे। (47) सबके सब तेरे रब के सामने सफ़ बनाये हाज़िर किये जाएँगे यक़ीनन हम तुम्हें उसी तरह लाएँगे जिस तरह तुम्हें पहली बार हमने पैदा किया था लेकिन तुम तो इसी ख़याल में हो कि हम तुम्हारे लिए कोई वादागाह करने ही के नहीं। (48) नामाए आमाल बीच में रख दिये जाएँगे पस तू देखेगा कि गुनहगार उसकी तहरीर से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे हाय हमारी ख़राबी, यह कैसी किताब है जिसने कोई छोटा बड़ा बग़ैर घेरे बाक़ी ही नहीं छोड़ा जो कुछ उन्होंने किया था सब मौजूद पाएँगे, तेरा रब किसी पर ज़ुल्मो सितम न करेगा।'' (49)

क़ियामत की होलनाकियों और हिसाबो किताब का ज़िक्र (आयत 47 से 49) : अल्लाह तआला क़ियामत की होलनाकियों का ज़िक्र कर रहा है और जो ताज्जुबख़ेज़ बड़े बड़े काम उस दिन होंगे, उनके ज़िक्र कर रहा है कि आसमान फट जाएगा, पहाड़ उड़ जाएँगे, भले तुम्हें जमे हुए दिखाई देते हों लेकिन उस दिन तो बादलों की तरह तेज़ी से चल रहे होंगे, ज़मीन साफ़ चटयल मैदान हो जाएगी जिसमें कोई ऊँच नीच तक बाक़ी न रहेगी, न उसमें कोई मकान होगा, न छप्पर। सारी मख़्लूक़ बग़ैर आड़ के अल्लाह के बिलकुल सामने रूबरू होगी कोई भी मालिक में किसी जगह छुप न सकेगा, कोई पनाह की जगह या सर छुपाने की जगह न होगी। कोई दरख़्त पत्थर घास फूँस दिखाई न देगा, तमाम पहले आख़िर के लोग जमा होंगे, कोई छोटा बड़ा ग़ैर हाज़िर न होगा, तमाम अगले पिछले उस मुक़र्रर दिन जमा किये जाएँगे, उस दिन सब लोग हाज़िर होंगे और सब मौजूद होंगे, तमाम लोग अल्लाह के सामने सफ़ बनाये खड़े होंगे, रूह और फ़रिश्ते सफ़ें बाँधे हुए खड़े हुए होंगे, किसी को बात करने की भी जुर्अत न होगी, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह रहमान इजाज़त दे और वह बात भी मअ़क़ूल कहें, पस या तो सबकी एक ही सफ़ होगी या कई सफ़ों में होंगे। जैसे इर्शादे क़ुरआन है तेरा रब आएगा और फ़रिश्ते सफ़ ब सफ़। वहाँ मुंकिरीने क़ियामत को सबके सामने डाँट डपट की जाएगी कि देखो जिस तरह

हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था उसी तरह दूसरी बार पैदा करके अपने सामने खड़ा किया, इससे पहले तो तुम इसके क़ाइल न थे, नामा-ए-आमाल सामने कर दिये जाएँगे जिसमें हर छोटा बड़ा खुला छुपा अमल लिखा हुआ होगा। अपने बुरे अमलों को देखकर गुनहगार ख़ौफ़ व हैरत में पड़ जाएँगे और अफ़सोस व रंज से कहेंगे कि हाय! हमने अपनी उम्र कैसी ग़फ़्लत में बसर की, अफ़सोस! बदकिरदारियों में लगे रहे और देखो तो इस किताब ने एक मामला भी ऐसा नहीं छोड़ा जिसे लिखा न हो। छोटे बड़े तमाम गुनाह इसमें लिखे हुए हैं।

तब्रानी में है कि ग़ज़्व-ए-हुनैन से फ़ारिग़ होकर हम चले एक मैदान में अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) ने मंज़िल की हमसे फ़र्माया "जाओ कोई लकड़ी कोई टुकड़ी कोई कूड़ा कोई घास फूँस जो मिल जाए ले आओ।" हम सब इधर उधर हो गए, छपटियाँ छोलकर लकड़ी पत्ते काँटे दरख़्त झाड़ झंकार जो मिले ले आए, ढेर लग गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "देख रहे हो? इसी तरह गुनाह जमा होकर ढेर लग जाता है अल्लाह तआला से डरते रहो, छोटे बड़े गुनाहों से बचो क्योंकि सब लिखे जा रहे हैं। (तब्री : 5485; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/190; इसकी सनद में नफ़ीअ अबूदाऊद ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 4/272; रक़म : 9115) और शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को ज़ईफ़ क़रार दिया है। देखिए (ज़ईफ़ुत्तर्ग़ीब : 1472) और शुमार किये जा रहे हैं जो ख़ैरो शर्र भलाई बुराई जिसने किसी की की होगी, उसे मौजूद पाएगा।" जैसे आयत (يَوْمَ تَجِدُ) (3/आले इमरान : 30) और आयत (يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ) (75/क़ियामा : 13) और आयत (يَوْمَ تُبْلَى) (86/तारिक़ : 9) में है तमाम छुपी हुई चीज़ें खुल पड़ेंगी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्या, बाब इस्मुल ग़ादिर लिल बिर्रि वल फ़ाजिर : 3187; सहीह मुस्लिम : 1737; अहमद : 3/142; मुस्नदे अबी यअ़ला : 3382) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "हर बद अहद के लिए क़ियामत के दिन एक झण्डा होगा और ऐलान होगा कि यह फ़लाँ बिन फ़लाँ की बदअहदी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा युदअन्नासु बि आबाइहिम : 6177; सहीह मुस्लिम : 1735) तेरा रब ऐसा नहीं है कि मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म करे हाँ! अल्बत्ता दरगुज़र करना, माफ़ करना यह उसकी सिफ़त है, हाँ! बदकारों को अपनी कुदरत व हिक्मत, अदलो इंसाफ़ से वह सज़ा भी देता है, जहन्नम गुनहगारों और नाफ़र्मानों से भर जाएगी, फिर काफ़िरों और मुश्रिकों के सिवा और मोमिन गुनहगार छूट जाएँगे। अल्लाह तआला एक ज़र्रे के बराबर भी नाइंसाफ़ी नहीं करता, नेकियों को बढ़ाता है और गुनाहों को बराबर ही रखता है, अदल की तराज़ू उस दिन सामने होगी किसी के साथ कोई बुरा सलूक न होगा...। (21/अम्बिया : 47)

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुझे रिवायत पहुँची कि एक शख़्स ने हुज़ूर (ﷺ) से एक हदीस सुनी है जो वह बयान करते हैं, मैंने उस हदीस को ख़ास उनसे सुनने के लिए एक ऊँट ख़रीदा, सामान कसकर सफ़र किया। महीना भर के बाद शाम (जगह का नाम) में उनके पास पहुँचा तो मालूम हुआ कि वह अब्दुल्लाह बिन उनैस (रज़ि.) हैं, मैंने दरबान से कहा, जाओ ख़बर दो कि जाबिर दरवाज़े पर है। उन्होंने पूछा, क्या जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.)? मैंने कहा, जी हाँ! यह सुनते ही जल्दी के मारे चादर संभालते हुए झट से बाहर आ गए और मुझसे लिपट गए, मुआनक़ा से फ़ारिग़ होकर मैंने कहा, मुझे यह रिवायत पहुँची कि आपने क़िसास के बारे में कोई हदीस रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है तो मैंने

चाहा कि ख़ुद आपसे मैं वह हदीस सुन लूँ, इसलिए यहाँ आया और सुनते ही सफ़र शुरू कर दिया, इस डर से कि कहीं इस हदीस के सुनने से पहले मैं मर न जाऊँ या आपको मौत न आ जाए। अब आप सुनाइए वह हदीस क्या है? आपने फ़र्माया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल क़ियामत के दिन अपने तमाम बन्दों का अपने सामने हश्र करेगा नंगे बदन, बेख़त्ना, बेसरोसामान। फिर उन्हें आवाज़ देगा जिसे दूर नज़दीक वाले सारे लोग सुनेंगे, कहेगा कि मैं मालिक हूँ, मैं बदले दिलवाने वाला हूँ, कोई जहन्नमी उस वक़्त जहन्नम में न जाएगा जब तक उसका जो हक़ किसी जन्नती के ज़िम्मे हो, मैं न दिलवा दूँ और न कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल हो सकता है जब तक उसका हक़ जो जहन्नमी पर है, मैं न दिलवा दूँ भले एक थप्पड़ ही हो।" हमने कहा, हुज़ूर! यह हक़ कैसे दिलवाये जाएँगे, हालाँकि हम सब तो वहाँ नंगे पैर, नंगे बदन, बे माल व सामान होंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! उस दिन हक़ नेकियों और बुराइयों से अदा किये जाएँगे।" (मुस्नद अहमद : 3/495; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अक़ील ज़ईफ़ रावी है। मज्मउज़्ज़वाइद : 10/345) और हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "बेसींग वाली बकरी को अगर सींगों वाली बकरी ने मारा है तो उससे भी उसको बदला दिलवाया जाएगा।" (मुस्नद अहमद : 1/72; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; व हदीसे मुस्लिम (2582) युग़नी अन्हू) इसके और भी बहुत से शवाहिद हैं जिन्हें हमने बित्तफ़्सील आयत (وَ نَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ) (21/अम्बिया : 47) की तफ़्सीर में और आयत (إِلَّآ أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ ۚ مَا فَرَّطْنَا) (6/अन्आम : 38) की तफ़्सीर में बयान किये हैं।

***

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا إِلَّآ إِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهٖ ۭ أَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ أَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

तर्जुमा : "हमने सब फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि तुम आदम के सामने सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दा कर लिया, यह जिन्नों में से था उसने अपने परवरदिगार की नाफ़र्मानी की। क्या फिर भी तुम उसे और उसकी औलाद को मुझे छोड़कर अपना दोस्त बना रहे हो? हालाँकि वह तुम सबका दुश्मन है ऐसे ज़ालिमों का बहुत बुरा बदला है। (50) मैंने उन्हें आसमान व ज़मीन की पैदाइश के वक़्त मौजूद नहीं रखा था और न ख़ुद उनकी अपनी पैदाइश में और मैं गुमराह करने वालों को अपना ज़ोरेबाज़ू बनाने वाला भी नहीं।" (51)

शैतान इंसान का दुश्मन है (आयत 50, 51) : बयान हो रहा है कि इब्लीस तुम्हारा बल्कि तुम्हारे असल वालिदे मुहतरम हज़रत आदम (ﷺ) का भी पुराना दुश्मन रहा है। अपने ख़ालिक़ मालिक को छोड़कर तुम्हें उसकी बात न माननी चाहिए, अल्लाह के एहसान व इकराम उसके लुत्फ़ो करम को देखो कि उसने तुम्हें पैदा किया, तुम्हें पाला पोसा फिर उसे छोड़कर उसके बल्कि अपने भी दुश्मन शैतान को अपना दोस्त बनाना किस क़द्र ख़तरनाक ग़लती है, इसकी पूरी तफ़्सीर सूरह बक़रह के शुरू में गुज़र चुकी है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (ﷺ) को पैदा किया फिर तमाम फ़रिश्तों को बतौरे उनकी तशरीफ़ और तक्रीम के उनके सामने सज्दा करने का हुक्म दिया। सबने हुक्मबरदारी की, लेकिन चूँकि इब्लीस बदअसल था, आग से पैदा किया गया था, उसने इंकार कर दिया और फ़ासिक़ बन गया। फ़रिश्तों की पैदाइश नूरानी थी। सहीह मुस्लिम की हदीस है कि "फ़रिश्ते नूर से पैदा किये गए हैं, इब्लीस शोले मारने वाली आग से और आदम (ﷺ) उससे जिसका बयान तुम्हारे सामने कर दिया गया है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब फ़ी अहादीसे मुतफ़र्रिक़ा : 2996; अहमद : 6/153; इब्ने हिब्बान : 6155) ज़ाहिर है कि हर चीज़ अपनी असलियत पर आ जाती है और वक़्त पर बरतन में जो हो वही टपकता है भले इब्लीस फ़रिश्तों के से आमाल कर रहा था उन ही की मुशाबिहत करता था और अल्लाह की रज़ामंदी में दिन रात मशगूल था इसीलिए उनके ख़िताब में यह भी आ गया लेकिन यह सुनते ही वह अपनी असलियत पर आ गया, तकब्बुर उसकी तबीयत में समा गया और साफ़ इंकार कर बैठा। उसकी पैदाइश ही आग से थी। जैसे उसने ख़ुद कहा कि तूने मुझे आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से इब्लीस कभी भी फ़रिश्तो में से न था। वह जिन्नात की असल है जैसे कि हज़रत आदम (ﷺ) इंसान की असल हैं। यह भी मंक़ूल है कि यह जिन्नात एक क़िस्म थी फ़रिश्तों की जो तेज़ आग से पैदा किये गए थे। उसका नाम हारिस था जन्नत का दारोग़ा था। उस जमाअत के सिवा और फ़रिश्ते नूरी थे। जिन्नात की पैदाइश आग के शोले से थी।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इब्लीस शरीफ़ फ़रिश्तों में से था और बुज़ुर्ग क़बीले का था जन्नतों का दारोग़ा था, आसमाने दुनिया का बादशाह था, ज़मीन का भी सुल्तान था। उससे कुछ उसके दिल में घमण्ड आ गया था कि वह तमाम अहले आसमान से शरीफ़ है, वह घमण्ड बढ़ता जा रहा था, उसका सही अंदाज़ा अल्लाह ही को था, पस उसके इज़्हार के लिए हज़रत आदम (ﷺ) को सज्दा करने का हुक्म हुआ तो उसका घमण्ड सामने आ गया। घमण्ड की वजह से साफ़ इंकार कर दिया और काफ़िरों में जा मिला। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं वह जिन्न था यानी जन्नत का ख़ाज़िन था जैसे लोगो को शहरों की तरफ़ निस्बत कर देते हैं और कहते हैं मक्की मदनी बसरी कूफ़ी यह जन्नत का ख़ाज़िन आसमाने दुनिया के कामों का मुदब्बिर था। यहाँ के फ़रिश्तों का रईस था। इस मअसियत से पहले वह फ़रिश्तों में दाख़िल था लेकिन रहता था ज़मीन पर। सब फ़रिश्तों से ज़्यादा कोशिश से इबादत करने वाला और सबसे ज़्यादा इल्म वाला था, इसी वजह से फूल गया था उसके क़बीले का नाम जिन्न था। आसमान व ज़मीन के बीच आना जाना रखता था, रब की नाफ़र्मानी से ग़ज़ब में आ गया और शैताने रजीम बन गया और मल्ऊन हो गया, पस मुतकब्बिर शख़्स से तौबा की उम्मीद नहीं हो सकती, हाँ! तकब्बुर न हो और कोई गुनाह कर ले तो उससे नाउम्मीद नहीं होना चाहिए,

कहते हैं यह तो जन्नत के अंदर काम काज करने वालों में था। सलफ़ के और भी इस बारे में बहुत से आसार मरवी हैं। लेकिन यह अक्सरो बेशतर इस्राईली हैं, सिर्फ़ इसीलिए नक़्ल किये गए हैं कि निगाह से गुज़र जाएँ अल्लाह ही को इनके अक्सर का सहीह हाल मालूम है।

हाँ! बनी इस्राईल की रिवायतें वह तो क़तअन क़ाबिले तर्दीद हैं जो हमारे यहाँ के दलाइल के ख़िलाफ़ हों, बात यह है कि हमें तो कुरआन काफ़ी है हमें अगली किताबों की कोई ज़रूरत नहीं, हम इनसे महज़ बेनियाज़ हैं, इसलिए कि वह बदल दी गई है, कमी बेशी से ख़ाली नहीं, बहुत सी बनावटी बातें उनमें जोड़ दी गयी हैं और ऐसे लोग उनमें नहीं पाये जाते जो आला दर्जे के हाफ़िज़ हों कि मेल कुचेल दूर कर दें, खरा खोटा अलग कर लें, ज़्यादती और बातिल के मिलाने वालों की दाल न गलने दें।

मुहद्दिसीने अस्हाबुल जरह वत्तअदील का उम्मत पर एहसाने अज़ीम : जैसे कि अल्लाह रहमान ने इस उम्मत में अपने फ़ज़्लो करम से ऐसे इमाम और उलमा और सादात और बुज़ुर्ग मुत्तक़ी और पाकबाज़ हुफ़्फ़ाज़ पैदा किये हैं जिन्होंने हदीसों को जमा किया, तहरीर किया, सहीह, हसन, ज़ईफ़, मुंकर, मतरूक, मौज़ूअ सबको अलग अलग कर दिखाया। गढ़ने वालों, बनाने वालों, झूठ बोलने वालों को छांटकर अलग खड़ा कर दिया ताकि ख़त्मुल मुर्सलीन सय्यदुल आलमीन (ﷺ) का पाक और मुतबर्रक कलाम महफ़ूज़ रह सके और बातिल से बच सके और किसी का बस न चले कि आपके नाम से झूठ को रवाज दे ले और बातिल को हक़ में मिला दे पस हमारी दुआ है कि इस कुल तब्क़ा पर अल्लाह तआला अपनी रहमत व रज़ामंदी नाज़िल करे और उन सबसे ख़ुश रहे, आमीन आमीन! अल्लाह उन्हें जन्नतुल फ़िरदौस नसीब करे, और यक़ीनन उनका मंसब इसी लायक़ है, रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन!

अल्ग़र्ज़ इब्लीस इताअते इलाही से निकल गया, पस तुम्हें चाहिए कि अपने दुश्मन से दोस्ती न करो, और मुझे छोड़कर उससे रिश्ता न जोड़ो, ज़ालिमों को बड़ा बुरा बदला मिलेगा। यह मक़ाम भी बिलकुल ऐसा ही है जैसे सूरह यासीन में क़ियामत का, उसकी होलनाकियों का और नेक व बुरे लोगों के नतीजों का ज़िक्र करके फ़र्माया कि ''ऐ मुज्रिमो! तुम आज के दिन अलग हो जाओ, आख़िर तक। (36/यासीन : 59)

अल्लाह तआला का कोई वज़ीर मुशीर नहीं है : जिन जिनको तुम अल्लाह के सिवा ओलिया बनाये हुए हो वह सब तुम जैसे ही मेरे गुलाम हैं किसी चीज़ की मिल्कियत उन्हें नहीं, ज़मीनो आसमान की पैदाइश में मैंने उन्हें शामिल नहीं रखा था बल्कि उस वक़्त वह मौजूद भी न थे तमाम चीज़ों को सिर्फ़ मैंने ही पैदा किया है, सबकी तदबीर सिर्फ़ मेरे ही हाथ है मेरा कोई शरीक वज़ीर मुशीर नज़ीर नहीं। जैसे और आयत में फ़र्माया (قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ) (34/सबा : 22) जिन जिनको तुम अपने गुमान में कुछ समझ रहे हो सबको ही सिवा अल्लाह के पुकारकर देख लो, याद रखो उनको आसमान व ज़मीन में किसी एक ज़र्रे के बराबर भी इख़्तियारात नहीं, न उनका उनमें कोई साझा, न उनमें से कोई अल्लाह का मददगार है, न उनमें से कोई सिफ़ारिश कर सकता है जब तक अल्लाह की इजाज़त न हो जाए, आख़िर तक। मुझे यह लाइक़ नहीं न उसकी ज़रूरत कि किसी को ख़ुसूसन गुमराह करने वालों को अपना दोस्त व बाज़ू व मददगार बनाऊँ।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

तर्जुमा : ''जिस दिन वह कहेगा कि तुम्हारे ख़्याल में जो मेरे शरीक थे उन्हें पुकारो, यह पुकारेंगे लेकिन उनमें से कोई भी जवाब न देगा हम उनके बीच हलाकत का सामान कर देंगे। (52) गुनहगार जहन्नम को देखकर समझ लेंगे कि वह उसी में झोंके जाने वाले हैं लेकिन उससे बचने की कोई जगह न पाएँगे।''(53)

क़ियामत के दिन मुज्रिम कहीं भाग न सकेंगे (आयत 52, 53) : तमाम मुश्रिकों को क़ियामत के दिन शर्मिन्दा करने के लिए सबके सामने कहा जाएगा कि अपने शरीकों को पुकारो जिन्हें तुम दुनिया में पुकारते रहे ताकि वह तुम्हें आज के दिन की मुसीबत से बचा लें, वह पुकारेंगे लेकिन कहीं से कोई जवाब न पाएँगे। जैसे और आयत में है (وَ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰی) (6/अन्आम : 94) हम तुम्हें इसी तरह तंहा तंहा लाए जैसे कि हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो कुछ हमने तुम्हें दुनिया में दे रखा था तुम वह सब अपने पीछे छोड़ आये, आज तो हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन शरीकों में से किसी एक को भी नहीं देखते जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराये हुए थे और जिनकी सिफ़ारिश का यक़ीन किये हुए थे तुममें उनमें रिश्ते टूट गये और तुम्हारे गुमान बातिल साबित हो चुके, आख़िर तक। और आयत में है (وَ قِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ) (28/क़सस : 64)

कहा जाएगा कि अपने शरीकों को पुकारो, यह पुकारेंगे लेकिन वह जवाब न देंगे, आख़िर तक। इसी मज़्मून को आयत (وَمَنْ اَضَلُّ) (46/अह्क़ाफ़ : 5) से दो आयतों तक बयान फ़र्माया है।

सूरह मरयम में इर्शाद है कि उन्होंने अपनी इज़्ज़त के लिए अल्लाह के सिवा और बहुत से मअ़बूद बना रखे हैं लेकिन ऐसा होने का नहीं वह तो सब उनकी इबादत के मुंकिर हो जाएँगे और उल्टे उनके दुश्मन बन जाएँगे। (19/मरयम : 81, 82) उनमें और उनके मअ़बूदाने बातिल में आड़ हिजाब और हलाकत का गढा हम बना देंगे ताकि यह उनसे और वह इनसे मिल न सकें, नेक राह और गुमराह अलग अलग रहें, जहन्नम की यह वादी उन्हें आपस में न मिलने देगी, कहते हैं यह वादी लहू पीप की होगी, उनमें आपस में उस दिन दुश्मनी हो जाएगी।

बज़ाहिर मालूम होता है कि मुराद इससे हलाकत है और यह भी हो सकता है कि जहन्नम की कोई वादी भी हो या और कोई फ़ासला की वादी हो। मक़्सद यह है कि उन आबिदों को वह मअ़बूद जवाब तक न देंगे, न यह आपस में एक दूसरे से मिल सकेंगे क्योंकि उनके बीच हलाकत होगी और होलनाक उमूर होंगे।

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा है, मुराद यह है कि मुश्रिकों और मुसलमानों में हम आड़ कर देंगे। (तब्री : 18/46) और आयत (وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ١٤) (30/रूम : 14) और आयत (يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ) (30/रूम : 43) और आयत (وَ امْتَازُوا الْيَوْمَ) (36/यूनुस : 59) और आयत (وَ يَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا) (6/अन्आम : 22) वग़ैरह में है यह गुनहगार जहन्नम देख लेंगे, सत्तर हज़ार लगामों में वह जड़ी हुई होगी, हर हर लगाम पर सत्तर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे, देखते ही समझ लेंगे कि हमारा क़ैदख़ाना यही है बग़ैर दाख़िले के दाख़िले से भी ज़्यादा रंजो ग़म और मुसीबत व अलम शुरू हो जाएगा, अज़ाब का यक़ीन अज़ाब से पहले का अज़ाब है लेकिन कोई छुटकारे की राह न पाएँगे, कोई नजात की सूरत नज़र न आएगी। हदीस में है कि "पाँच हज़ार साल तक काफ़िर उसी कपकपी में रहेगा कि जहन्नम उसके सामने है और उसका कलेजा क़ाबू से बाहर है।" (मुस्नद अहमद : 3/75; ह : 11714; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1385; हाकिम : 4/597)

***

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : "हमने तो इस क़ुरआन में हर हर तरीक़े से तमाम की तमाम मिसालें लोगों के लिए बयान कर दी हैं लेकिन इंसान तमाम चीज़ों से ज़्यादा झगड़ालू है। (54) लोगों के पास हिदायत आ चुकने के बाद उन्हें ईमान लाने और अपने रब से तौबा करने से सिर्फ़ उसी चीज़ ने रोका कि अगले लोगों का सा मामला उन्हें पेश आए या उनके सामने खुल्लम खुल्ला अज़ाब आ मौजूद हो जाए। (55) हम तो अपने रसूलों को सिर्फ़ इसलिए भी भेजते हैं कि वह ख़ुशख़बरियाँ सुना दें और डरा दें। काफ़िर लोग झूठी बातों को सनद बनाकर झगड़े करके चाहते हैं कि इससे हक़ को लड़खड़ा दें, वह मेरी आयतों और जिस चीज़ से डराया जाए उसे मज़ाक़ में उड़ाते हैं।" (56)

इंसान बड़ा झगड़ालू है (आयत 54 से 56) : इंसानों के लिए हमने अपनी किताब में हर बात का बयान

ख़ूब ख़ूब खोलकर कर दिया है ताकि राहे हक़ से न बहकें, हिदायत की राह से न भटकें लेकिन बावजूद इस बयान इस फ़ुरक़ान के फिर भी सिवाय राह पाये लोगों के और तमाम के तमाम राहे नजात से हटे हुए हैं। मुस्नद अहमद में है कि एक रात को रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के पास उनके मकान में आए और फ़र्माया "तुम सोये हुए हो, नमाज़ में नहीं हो?" इस पर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं वह जब हमें उठाना चाहता है उठा बिठाता है आप यह सुनकर बग़ैर कुछ कहे वापिस लौट गए लेकिन अपने ज़ानू पर हाथ मारते हुए यह फ़र्माते हुए जा रहे थे कि "इंसान तमाम चीज़ों से ज़्यादा झगड़ालू है।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब तह़रीज़ुन्नबी (ﷺ) अला क़ियामिल्लैलि वन्नवाफ़िल... 1127; सह़ीह़ मुस्लिम : 775; मुस्नदे अह़मद : 1/91; इब्ने ह़िब्बान : 2568)

लोग अ़ज़ाब देखने का मुतालबा और हक़ का इकांर करते हैं : अगले ज़माने के और उस वक़्त के काफ़िरों की सरकशी बयान हो रही है कि हक़ वाज़ेह़ हो चुकने के बाद भी उसकी ताबेदारी से रुकते हैं, चाहते हैं कि अल्लाह के अ़ज़ाबो को अपनी आँखों से देख लें। किसी ने तमन्ना की कि आसमान हम पर गिर पड़े, किसी ने कहा कि ला जो अ़ज़ाब ला सकते हो, ले आ। क़ुरैश ने यह भी कहा, ऐ अल्लाह! अगर यह ह़क़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हमें कर।

उन्होंने यह भी कहा था कि ऐ नबी (ﷺ)! हम तो तुझे मज्नून जानते हैं और अगर वाक़ेई में तू सच्चा नबी है तो हमारे सामने फ़रिश्ते क्यूँ नहीं लाता वग़ैरह वग़ैरह। पस अ़ज़ाबे इलाही के इंतिज़ार में रहते हैं और उसके मुआयना के दर पे रहते हैं। रसूलों का काम तो सिर्फ़ मोमिनों को ख़ुशख़बरियाँ देना और काफ़िरों को डरा देना है, काफ़िर लोग नाहक़ की हुज्जतें करके हक़ को अपनी जगह से फिसला देना चाहते हैं लेकिन उनकी यह चाहत कभी पूरी नहीं होने की। हक़ उनकी बातिल बातों से दबने का नहीं, यह मेरी आयतों और डरावे की बातों को ख़ाली मज़ाक़ ही समझ रहे हैं। और अपनी बेईमानी में बढ़ रहे हैं।

***

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ
يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ
الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ۝ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا
ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝

तर्जुमा : "उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जिसे उसके रब की आयतों से नसीहत की जाए वह फिर भी मुँह मोड़े रहे और जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेज रखा है उसे भूल जाए बेशक हमने उनके दिलों पर उसकी समझ से पर्दे डाल रखे हैं। और उनके कानों में गिरानी है भले तू उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाता रहे लेकिन यह कभी भी हिदायत नहीं पाने के। (57) तेरा परवरदिगार बहुत ही बख़्शिश वाला और मेहरबानी वाला है वह अगर इनके आमाल की सज़ा में पकड़े तो बेशक इन्हें जल्द ही अज़ाब करे। बल्कि इनके लिए एक वादा की घड़ी मुक़र्रर है जिससे वह सिरकने की जगह ही नहीं पाएँगे। (58) यह हैं वह बस्तियाँ जिन्हें हमने उनके मज़ालिम की बिना पर ग़ारत कर दिया, उनकी तबाही की भी हमने एक म्याद मुक़र्रर कर रखी थी।" (59)

बड़ा ज़ालिम कौन (आयत 57 से 59) : हक़ीक़त में उससे बढ़कर पापी कौन है? जिसके सामने उसके पालने पोसने वाले का कलाम पढ़ा जाए और वह उसकी तरफ़ ध्यान तक न दे, उससे मानूस न हो, बल्कि मुँह फेरकर इंकार कर जाए और जो बुरे आमाल और स्याहकारियाँ इससे पहले की हैं उन्हें भी भूल जाए। इस ढिटाई की सज़ा यह है कि दिलों पर पर्दे पड़ जाते हैं फिर क़ुरआन व बयान का समझना नसीब नहीं होता कानों में गिरानी हो जाती है भली बात की तरफ़ तवज्जह नहीं रहती, अब लाख दावते हिदायत दो लेकिन राह पानी मुश्किल व महाल है। ऐ नबी (ﷺ)! तेरा रब बड़ा ही मेहरबान बहुत आला रहमत वाला है अगर वह गुनहगारों की सज़ा जल्दी ही कर डाला करता तो ज़मीन पर कोई जानदार बाक़ी न बचता, वह लोगों के ज़ुल्म से दरगुज़र कर रहा है। लेकिन इससे यह न समझा जाए कि पकड़ेगा ही नहीं। याद रखो, वह सख़्त अज़ाबों वाला है, यह तो उसका हलम है पर्दापोशी है, म[illegible] है, ताकि गुमराही वाले राहे रास्त पर आ जाएँ, गुनाहों वाले तौबा कर लें और उसके दामने रहमत को थाम लें लेकिन जिसने इस हिल्म (क़द्रदानी) से फ़ायदा न उठाया और अपनी सरकशी पर जमा रहा तो उसकी पकड़ का दिन क़रीब है जो इतना सख़्त दिन होगा कि बच्चे बूढ़े हो जाएँगे, हमल गिर जाएँगे, उस दिन कोई पनाह की जगह न होगी कोई छुटकारे की सूरत न होगी। यह हैं तुमसे पहले की उम्मतें कि वह भी तुम्हारी तरह कुफ़्र व इंकार में पड़ गईं और आख़िरकार मिटा दी गईं, उनकी हलाकत का मुक़र्ररा वक़्त आ पहुँचा और वह तबाह व बर्बाद हो गईं, पस ऐ मुश्रिकों! तुम भी डरते रहो, तुम अशरफ़ुर्रुसुल नबी को सता रहे हो और उन्हें झुठला रहे हो, हालाँकि अगले कुफ़्फ़ार से तुम ताक़त कुव्वत में सामाने अस्बाब में बहुत कम हो, मेरे अज़ाबों से डरो, मेरी बातों से नसीहत पकड़ो।

***

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَىٰهُ لَآ أَبْرَحُ حَتَّىٰٓ أَبْلُغَ مَجْمَعَ ٱلْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا
بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَٱتَّخَذَ سَبِيلَهُۥ فِى ٱلْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ
لِفَتَىٰهُ ءَاتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِن سَفَرِنَا هَٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾ قَالَ أَرَءَيْتَ إِذْ أَوَيْنَآ إِلَى
ٱلصَّخْرَةِ فَإِنِّى نَسِيتُ ٱلْحُوتَ وَمَآ أَنسَىٰنِيهُ إِلَّا ٱلشَّيْطَٰنُ أَنْ أَذْكُرَهُۥ ۚ وَٱتَّخَذَ سَبِيلَهُۥ فِى
ٱلْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذَٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۚ فَٱرْتَدَّا عَلَىٰٓ ءَاثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا
مِّنْ عِبَادِنَآ ءَاتَيْنَٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَعَلَّمْنَٰهُ مِن لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

तर्जुमा : ''जबकि मूसा (عليه السلام) ने अपने नौजवान से कहा कि मैं तो चलता ही रहूँगा यहाँ तक कि दो दरियाओं के मिलने की जगह पहुँच जाऊँगा भले मुझे कई साल चलना पड़े। (60) जब वह दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ दोनों दरियाओं से मिलने की जगह थी वहाँ अपनी मछली भूल गए जिसने दरिया में सुरंग जैसा अपना रास्ता बना लिया। (61) जब यह दोनों वहाँ से आगे बढ़े तो मूसा (عليه السلام) ने अपने नौजवान से कहा कि ला हमारा नाश्ता दे, हमें तो अपने इस सफ़र से सख़्त तक्लीफ़ उठानी पड़ी। (62) उसने जवाब दिया कि क्या आपने देखा भी? जबकि हम पत्थर से टेक लगाकर आराम कर रहे थे वहीं मैं तो मछली भूल गया था, दरअस्ल शैतान ने ही मुझे भुला दिया कि मैं आपसे उसका ज़िक्र करूँ। उस मछली ने एक अनोखे तौर पर दरिया में अपना रास्ता बना लिया। (63) मूसा (عليه السلام) ने कहा, यही था जिसकी तलाश में हम थे चुनाँचे वहीं से अपने क़दमों के निशान ढूँढते हुए वापिस लौटे। (64) पस हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हमने अपने पास की ख़ास रहमत अता कर रखी थी। और उसे अपने पास से ख़ास इल्म सिखा रखा था।''(65)

हज़रत मूसा (عليه السلام) और ख़िज़्र (عليه السلام) का वाक़िया (आयत 60 से 65) : हज़रत मूसा (عليه السلام) से ज़िक्र किया गया कि अल्लाह का एक बन्दा दो दरिया मिलने की जगह है उसके पास वह इल्म है जो आपको हासिल नहीं। आपने उसी वक़्त उनसे मुलाक़ात करने की ठान ली अब अपने साथी से कहते हैं कि मैं तो वहाँ पहुँचे बग़ैर दम न लूँगा। मिलने की जगह हैं यह दो समुन्द्र एक तो बुहैरा फ़ारस मश्रिक़ी और दूसरा बुहैरा रूम मग़्रिबी है। यह जगह तन्जा के पास पश्चिम के शहरो के आख़िर में है, वल्लाहु आलम! तो फ़र्माते हैं कि भले मुझे बरसों तक चलना पड़े कोई हर्ज नहीं कहते हैं, कि क़ैस के लुग़त में बरस को हक़ब कहते हैं। (तब्री

:18/56) अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं हुक़ब से मुराद अस्सी (80) बरस हैं। (तब्री : 18/56) मुजाहिद (रह.) सत्तर बरस कहते हैं। (तब्री : 18/56) इब्ने अब्बास (रज़ि.) ज़माना बतलाते हैं।(तब्री : 18/56) हज़रत मूसा (عليه السلام) को हुक्म मिला था कि अपने साथ नमक चढ़ी हुई मछली को ले लो जहाँ वह गुम हो जाए वहीं हमारा वह बंदा मिलेगा यह दोनों मछली साथ लिये चले, मज्मअल बहरैन में पहुँच गए, वहाँ नहरे हयात थी, वहीं दोनों लेटे, उस नहर के पानी के छींटे मछली पर पड़े, मछली हिलने जुलने लग गई। आपके साथी हज़रत यूशअ (عليه السلام) की ज़िंबील में यह मछली रखी हुई थी और वह समुन्द्र के किनारे था, मछली ने समुन्द्र के अंदर कूद जाने के लिए जस्त लगायी और हज़रत यूशअ (عليه السلام) की आँख खुल गई, मछली उनके देखते हुए पानी में गई और पानी में सीधा सूरख़ होता चला गया पस जिस तरह ज़मीन में सूराख और सुरंग बन जाती है उसी तरह पानी में जहाँ से वह गई सूराख़ हो गया। इधर उधर पानी खड़ा हो गया और वह सूराख़ बिलकुल खुला हुआ रहा, पत्थर की तरह पानी में छेद हो गया। (तब्री : 18/58) जहाँ जिस पानी को लगती हुई वह मछली गई वहाँ का वह पानी पत्थर जैसा हो गया और पूरा सूराख़ बनता चला गया। मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) मरफ़ूअन लाए हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने इस बात का बयान करते हुए फ़र्माया कि "पानी इस तरह इब्तिदाए दुनिया से नहीं जमा, सिवाय उस मछली के चले जाने की जगह के आसपास के पानी के यह निशान मिस्ल सूराख़ ज़मीन के बराबर मूसा (عليه السلام) के वापिस पहुँचने तक बाक़ी ही रहे" उस निशान को देखते ही हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, इसी की तलाश में तो हम थे जब मछली को भूलकर यह दोनों आगे बढ़े यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक का काम दोनों साथियों की तरफ़ मंसूब हुआ है, भूलने वाले सिर्फ़ यूशअ (عليه السلام) थे जैसे फ़र्मान है (يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَ الْمَرْجَانُ ۝) (55/रहमान : 22) यानी इन दोनों समुन्द्रों में से मोती और मूँगे निकलते हैं हालाँकि दो क़ौलों में से एक यह है कि लूअ लूअ और मरजान सिर्फ़ खारी पानी में से निकलते हैं जब वहाँ से एक मरहला और तै कर गये तो हज़रत मूसा (عليه السلام) ने अपने साथी से नाश्ता मांगा और सफ़र की तक्लीफ़ भी बयान की। यह तक्लीफ़ मक़्सूद से आगे निकल आने के बाद हुई, इस पर आपके साथी को मछली का चला जाना याद आया और कहा जिस चट्टान के पास हम ठहरे थे उस वक़्त मैं मछली भूल गया और आपसे ज़िक्र करना भी शैतान ने भुला दिया। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत (अन अज़्कुरा लहू) फ़र्माते हैं कि उस मछली ने तो अजीबो ग़रीब तरीक़े से पानी में अपनी राह पकड़ी। उसी वक़्त हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, लो और सुनो! उसी जगह की तलाश में हम थे तो वह दोनों अपने उसी रास्ते पर अपने क़दमों के निशान खोजते हुए वापिस लौटे वहाँ हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हमने अपने पास की रहमत से और अपने पास का इल्म अता कर रखा था। यह हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) थे।

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत : सहीह बुख़ारी में है कि हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से कहा कि हज़रत नौफ़ का ख़याल है कि ख़िज़्र (عليه السلام) से मिलने वाले मूसा बनी इस्राईल के मूसा न थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, वह दुश्मने ख़ुदा झूठा है हमसे उबय बिन कअब (रज़ि.) ने फ़र्माया है, रसूलुल्लाह (ﷺ) से उन्होंने सुना कि "(हज़रत) मूसा (عليه السلام) खड़े होकर बनी इस्राईल को ख़ुत्बा दे रहे थे जो आपसे सवाल हुआ कि सबसे बड़ा आलिम कौन है? आपने जवाब दिया कि मैं तो चूँकि आपने उसके जवाब में यह न कहा कि अल्लाह जाने इसलिए रब को यह कलिमा नापसंद आया। उसी

वक़्त वही आई कि हाँ! मज्मअल बहरैन में हमारा एक बन्दा है जो तुझसे भी ज़्यादा आलिम है उस पर हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया फिर परवरदिगार! मैं उस तक कैसे पहुँच सकता हूँ? हुक्म हुआ कि अपने साथ एक मछली रख लो, उसे तोशादान में डाल लो जहाँ वह मछली खो जाए वहीं वह मिल जाएँगे तो आप अपने साथ अपने साथी यूशअ़ बिन नून (عليه السلام) को लेकर चले, पत्थर के पास पहुँचकर अपने सर उस पर रखकर दो घड़ी सो रहे, मछली उस तोशेदान में तड़पी और कूदकर उससे निकल गई, समुन्द्र में ऐसी गई जैसे कोई सुरंग लगाकर ज़मीन में उतर गया हो। पानी का चलना बहना अल्लाह तआला ने रोक दिया और ताक़ की तरह वह सूराख़ बाक़ी रह गया। हज़रत मूसा (عليه السلام) जब जागे तो आपके साथी यह ज़िक्र करना आपसे भूल गए, उसी वक़्त वहाँ से चल पड़े, दिन पूरा होने के बाद रात भर चलते रहे, सुबह हज़रत मूसा (عليه السلام) को थकान और भूख मालूम हुई, अल्लाह ने जहाँ जाने का हुक्म दिया था जब तक वहाँ से आगे न निकल गए, थकान का नाम तक न था। अब अपने साथी से खाना माँगा और तक्लीफ़ बयान की। उस वक़्त आपके साथी ने फ़र्माया कि पत्थर के पास जब हमने आराम किया था वहीं उसी वक़्त वह मछली तो मैं भूल गया और उसके ज़िक्र करने को भी शैतान ने भुला दिया और उस मछली ने तो समुन्द्र में अजीब तरह से रास्ता निकाल लिया। मछली के लिए सुरंग बन गई और उनके लिए हैरत का बाइस बन गया। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, उसी की तो तलाश थी।

चुनाँचे अपने क़दमों के निशान देखते हुए दोनों वापिस लौटे। उसी पत्थर के पास पहुँचे देखा कि एक साहब कपड़े में लिपटे हुए बैठे हैं। आपने सलाम किया, उसने कहा, ताज्जुब है आपकी सरज़मीन में यह सलाम कहाँ? आपने फ़र्माया, मैं मूसा हूँ। उन्होंने पूछा, क्या बनी इस्राईल के मूसा? आपने फ़र्माया हाँ! और मैं इसलिए आया हूँ कि आप मुझे वह सिखा दीजिए जो भलाई आपको अल्लाह की तरफ़ से सिखायी गई है। आपने फ़र्माया, मूसा (عليه السلام)! आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते, इसलिए कि मुझे जो इल्म है वह आपको नहीं और आपको जो इल्म है वह मुझे नहीं, अल्लाह तआला ने दोनों को अलग अलग इल्म अता कर रखा है। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, इंशाअल्लाह आप देखेंगे कि मैं सब्र करूँगा और आपके किसी फ़र्मान की नाफ़र्मानी न करूँगा। हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) ने फ़र्माया, अच्छा अगर तुम मेरा साथ चाहते हो तो मुझसे ख़ुद किसी बात का सवाल न करना यहाँ तक कि मैं ख़ुद तुम्हें उसकी बाबत ख़बरदार न कर दूँ। इतनी बातें करके दोनों साथ चले, दरिया के किनारे एक कश्ती थी उनसे अपने साथ ले जाने की बातचीत करने लगे। उन्होंने हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) को पहचान लिया और बग़ैर किराया लिए दोनों को सवार कर लिया। कुछ ही दूर चले होंगे जो हज़रत मूसा (عليه السلام) ने देखा कि ख़िज़्र (عليه السلام) चुपचाप कश्ती के तख़्ते कुल्हाड़े से तोड़ रहे हैं। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, यह क्या? इन लोगों ने तो हमारे साथ एहसान किया बग़ैर किराया लिए कश्ती में सवार किया और आपने उसके तख़्ते तोड़ने शुरु कर दिये, जिससे तमाम अहले कश्ती डूब जाएँ यह तो बड़ा ही नाख़ुशगवार काम करने लगे, उसी वक़्त ख़िज़्र (عليه السلام) ने फ़र्माया, देखो! मैंने तो तुमसे पहले ही कह दिया था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते। (हज़रत) मूसा (عليه السلام) मअज़िरत करने लगे कि ग़लती हो गयी, भूल से पूछ लिया, माफ़ी कर दीजिए और सख़्ती न कीजिए। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "वाक़ेई पहली ग़लती भूल से ही थी" फ़र्माते हैं कश्ती के एक तख़्ते पर एक चिड़िया आ बैठी और समुन्द्र में चोंच डालकर पानी पीकर उड़ गई,

उस वक़्त हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने हज़रत मूसा (ﷺ) से फ़र्माया, मेरे और तेरे इल्म ने अल्लाह के इल्म में से इतना ही कम किया है जितना पानी इस समुन्द्र में से उस चिड़िया की चोंच ने कम किया है। अब कश्ती किनारे लगी और किनारे पर दोनों चलने लगे जो हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) की नज़र चंद खेलते हुए बच्चों पर पड़ी उनमें से एक बच्चे का सर पकड़कर हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने उसकी गर्दन इस तरह मरोड़ी कि उसी वक़्त उसका दम निकल गया। हज़रत मूसा (ﷺ) घबरा गये और कहने लगे बग़ैर किसी क़त्ल के इस बच्चे को आपने नाहक़ मार डाला? आपने बड़ा ही मुंकर काम किया। हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने फ़र्माया, देखो! इसी को मैंने पहले ही से कह दिया था कि तुम्हारी हमारी निभ नहीं सकती। उस वक़्त हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने पहले से ज़्यादा सख़्ती की हज़रत मूसा(ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा! अब अगर मैं कोई सवाल करूँ तो बेशक आप मुझे अपने साथ न रखना, यक़ीनन अब आप मअज़ूर हो गए चुनाँचे फिर दोनों साथ चले एक बस्ती वालों के पास पहुँचे उनसे खाना मांगा लेकिन उन्होंने उनकी मेहमान नवाज़ी न की वहीं एक दीवार देखी जो झुक गई थी और गिरने के क़रीब थी उसी वक़्त हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने हाथ लगाकर उसे ठीक कर दिया। हज़रत मूसा (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़याल तो कीजिए हम यहाँ आए इन लोगों से खाना मांगा, इन्होंने न दिया, मेहमाननवाज़ी के ख़िलाफ़ किया, इनका यह काम था आप इनसे उज्रत ले सकते थे (हज़रत) ख़िज़्र (ﷺ) ने फ़र्माया, यह है मुझमें और तुममें जुदाई। अब मैं तुम्हें इन कामों की असलियत बता दूँगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "काश कि हज़रत मूसा (ﷺ) सब्र से काम लेते तो उन दोनों की और भी बहुत सी बातें हमारे सामने अल्लाह तआला बयान करता।" हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की क़िरअत में (وَكَانَ وَرَآءَهُمْ) (18/कहफ़ : 79) के बदले (वकाना अमामहुम) है और (सफ़ीनतिन) के बाद (सालिहतिन) का लफ़्ज़ भी है और (अम्मल गुलामि) के बाद (फ़काना काफ़िरन) के लफ़्ज़ भी हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह कहफ़ बाब क़ौलुहू (इज़ क़ाला मूसा लि फ़ताहू ला अब्रहु हत्ता अब्लुग़...) : 4725; सहीह मुस्लिम : 2380; अबूदाऊद : 4707; तिर्मिज़ी : 3149; इब्ने हिब्बान : 6220) और सनद से भी यह हदीस मरवी है इसमें है कि उस पत्थर के पास हज़रत मूसा (ﷺ) रुक गए वहीं एक चश्मा था जिसका नाम नहरे हयात था, उसका पानी जिस चीज़ को लग जाता वह ज़िन्दा हो जाती थी उसमे चिड़िया के पानी लेने के बाद ख़िज़्र (ﷺ) का यह क़ौल मंक़ूल है कि मेरा और तेरा तमाम मख़्लूक़ का इल्म अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में उतना ही है जितना इस चिड़िया की चोंच का पानी इस समुन्द्र के पानी के मुक़ाबले में...। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह कहफ़ बाब क़ौलुहू तआला (क़ाला अरअैता इज़ अवैना इलस्सख़रति...) : 4727)

सहीह बुख़ारी की एक और हदीस में है सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं (हज़रत) अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के घर में उनके पास था आपने फ़र्माया कि जिसको जो सवाल करना हो कर ले। मैंने कहा कि अल्लाह तआला मुझे आप पर फ़िदा करे, कूफ़े में एक वाइज़ हैं जिनका नाम नौफ़ है। फिर पूरी हदीस बयान की जैसाकि ऊपर गुज़री, उसमें है कि "हज़रत मूसा (ﷺ) के उस ख़ुत्बे से आँखें बह निकली थीं और दिल नर्म पड़ गए थे जब आप जाने लगे तो एक शख़्स आपके पास पहुँचा और उसने सवाल किया कि रूए ज़मीन पर आपसे ज़्यादा इल्म वाला भी कोई है? आपने फ़र्माया, नहीं! इस पर अल्लाह तआला ने आपको एताब किया क्योंकि उन्होंने अल्लाह की तरफ़ इल्म को नहीं लौटाया। उसमें है कि जब हज़रत मूसा (ﷺ) ने

निशान तलब किया तो इर्शाद हुआ कि एक मरी हुई मछली अपने साथ रखो जिस जगह उसमें रूह पड़ जाए वहीं पर आपकी उस शख़्स से मुलाक़ात होगी। चुनाँचे आपने मछली ली ज़िंबील (थैला) में रख ली और अपने साथी से कहा आपका सिर्फ़ इतना ही काम है कि जहाँ यह मछली आपके पास से चली जाए वहाँ आप मुझे ख़बर कर देना, उन्होंने कहा, यह तो बिलकुल आसान सी बात है, उनका नाम यूशअ बिन नून था(लि फ़ताहू) से मुराद यही है यह दोनों बुज़ुर्ग गीली जगह में एक पेड़ के नीचे थे। हज़रत मूसा (ﷺ) को नींद आ गई थी और हज़रत यूशअ (ﷺ) जाग रहे थे जो मछली कूद गई। उन्होंने ख़्याल किया कि जगाना तो ठीक नहीं जब आँख खुलेगी बता दूँगा, उसमें यह भी है कि पानी में जाने के वक़्त जो सूराख़ हो गया था'' इसे रावी हदीस अम्र ने अपने अंगूठे और उसके पास की दोनों उँगलियों का हल्क़ा करके दिखाया कि इस तरह का था जैसे पत्थर में होता है।'' वापसी पर हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) समुन्द्र के किनारे सब्ज़ गद्दी बिछाये मिले, एक चादर में लिपटे हुए थे, उसका एक सिरा तो दोनों पैरों के नीचे रखा हुआ था और दूसरा किनारा सर तले था। हज़रत मूसा (ﷺ) के सलाम पर आपने मुँह खोला, उसमें यह भी था कि हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने फ़र्माया कि आपके हाथ में तौरात मौजूद है, वही आसमान से आ रही है, क्या यह काफ़ी नहीं? और मेरा इल्म आपके लाइक़ भी नहीं, और न मैं आपके इल्म के क़ाबिल हूँ, इसमें है कि कश्ती का तख़्ता तोड़कर आपने एक तांत से बाँध दिया था। पहली बार का आपका सवाल तो भूले से ही था, दूसरी बार का बतौरे शर्त के था हाँ! तीसरी बार का सवाल क़सदन अलैहिदगी की वजह से था उसमें है कि लड़कों में एक लड़का था काफ़िर होशियार, उसे हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने लिटाकर छुरी से ज़िब्ह कर दिया।'' एक क़िरअत में (ज़ाकियतम् मुस्लिमतन) भी है। (वराअहुम) की क़िरअत (अमामहुम) भी है। उस ज़ालिम बादशाह का नाम उसमें हुदद बिन बुदद हैऔर जिस बच्चे को क़त्ल किया गया था उसका नाम हैसूर था। कहते हैं कि उस लड़के के बदले उनके यहाँ एक लड़की हुई। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल कहफ़ बाब (फ़लम्मा बलग़ा मज्मआ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा...) : 4726) एक रिवायत में है कि ''हज़रत मूसा (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे और फ़र्माया कि अल्लाह तआला को और उसके अम्र को मुझसे ज़्यादा कोई नहीं जानता...'' यह नोफ़ बिन कअब (रह.) की बीवी के लड़के थे उनका क़ौल था कि जिस मूसा (ﷺ) का इन आयतों में ज़िक्र है यह मूसा बिन मैशा थे।

और रिवायत में है कि ''हज़रत मूसा (ﷺ) ने जनाब बारी तआला से सवाल किया कि अल्लाह! अगर तेरे बन्दों में मुझसे बड़ा आलिम कोई हो तो मुझे आगाह फ़र्मा। उसमें है कि नमक चढ़ी हुई मछली आपने अपने साथ रखी थी। उसमें यह भी है कि हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम यहाँ क्यूँ आए? आपको तो अभी बनी इस्राईल में ही मशग़ूली है। इसमें है कि छुपी हुई बातें हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) को मालूम करायी जाती थीं तो आपने फ़र्माया कि तुम मेरे साथ ठहर नहीं सकते क्योंकि आप तो ज़ाहिर को देखकर फ़ैसला करेंगे और मुझे राज़ पर ख़बर होती है। चुनाँचे शर्त हो गई कि भले आप कैसी ही ख़िलाफ़ देखें लेकिन लब न हिलाएँ जब तक कि हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ख़ुद न बतलाएँ। कहते हैं, यह कश्ती तमाम कश्तियों से मज़बूत और उम्दा बेहतर और अच्छी थी, वह बच्चा एक बेमिस्ल बच्चा था, बड़ा हसीन बड़ा होशियार बड़ा ही तर्रार। हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने उसे पकड़कर पत्थर से उसका सर कुचल कर मार डाला। हज़रत मूसा (ﷺ) अल्लाह के डर से काँप गए कि नन्हा सा प्यारा सा बच्चा इस बेदर्दी से बग़ैर किसी वजह के हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने जान से मार डाला। दीवार गिरती हुई देखकर ठहर गए पहले तो उसे बाक़ायदा गिरा दिया और फिर आराम से चुनने

बैठे। हज़रत मूसा (अलैहि.) उक्ता गए कि बैठे बिठाए अच्छा धंधा ले बैठे।'' इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, उस दीवार के नीचे का ख़ज़ाना सिर्फ़ इल्म था।

और रिवायत में है कि ''जब हज़रत मूसा (अलैहि.) और आपकी क़ौम मिस्र पर ग़ालिब हो गई और यहाँ आकर वह आराम के साथ रहने सहने लगे तो हुक्म हुआ कि इन्हें अल्लाह के एहसानात याद दिलाओ। आप ख़ुत्बे के लिए खड़े हुए और अल्लाह के एहसानात बयान करने लगे कि अल्लाह तआला ने तुम्हें यह यह नेअमतें अता कीं। आले फ़िरऔन से उसने तुम्हें नजात दी, तुम्हारे दुश्मनों को ग़ारत और डुबो दिया फिर तुम्हें उनकी ज़मीन का मालिक बना दिया, तुम्हारे नबी से बातें कीं, उसे अपने लिए पसंद किया, उस पर अपनी मुहब्बत डाल दी, तुम्हारी तमाम हाजतें पूरी कीं, तुम्हारे नबी तमाम ज़मीन वालों से अफ़ज़ल हैं। उसने तुम्हें तौरात अता की। अल्ग़र्ज़ पूरे ज़ोरों से अल्लाह की बेशुमार और अनगिनत नेअमतें उन्हें याद दिलायीं। इस पर एक इस्राईली ने कहा कि फ़िल वाक़ेअ बात यही है ऐ अल्लाह के नबी! क्या ज़मीन पर आपसे ज़्यादा इल्म वाला भी कोई है? आपने बेसाख़ता फ़र्माया, नहीं है। उसी वक़्त जनाबे बारी ने हज़रत जिब्राईल (अलैहि.) को भेजा कि इनसे कहो, तुम्हें क्या मालूम कि मैं अपना इल्म कहाँ कहाँ रखता हूँ? बेशक समुन्द्र के किनारे पर एक शख़्स है जो तुझसे भी ज़्यादा इल्म रखता है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इससे मुराद हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) हैं। पस हज़रत मूसा (अलैहि.) ने अल्लाह तआला से सवाल किया कि उनको मैं देख लूँ। वह्यी हुई कि अच्छा समुन्द्र के किनारे जाओ, वहाँ एक मछली मिलेगी उसे ले लो। अपने साथी को सौंप दो फिर किनारे किनारे चल दो। जहाँ तू मछली को भूल जाए और वह तुझसे खो जाए वहीं तू मेरे उस नेक बन्दे को पाएगा। हज़रत मूसा (अलैहि.) जब चलते चलते थक गए तो अपने साथी से जो उनका ग़ुलाम था, मछली के बारे में सवाल किया। उसने जवाब दिया कि जिस पत्थर के पास हम ठहरे थे वहीं मैं मछली को भूल गया और तुझसे ज़िक्र करना शैतान ने बिलकुल भुला दिया। मैंने देखा कि मछली तो गोया सुरंग बनाती हुई दरिया में जा रही थी। हज़रत मूसा (अलैहि.) को यह सुनकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ। जब लौटकर वहाँ आये तो देखा कि मछली ने पानी में जाना शुरू किया है। ह ज़रत मूसा (अलैहि.) भी अपनी लकड़ी से पानी को चीरते हुए उसके पीछे हो लिए। मछली जहाँ से गुज़रती थी उसके दोनों तरफ़ का पानी पत्थर बन जाता था उससे भी अल्लाह के नबी सख़्त ताज्जुब में पड़ गए, अब मछली एक जज़ीरे में आपको ले गई, आख़िर तक।

इब्ने अ ब्बास (रज़ि.) और हुर्र बिन क़ैस (रह.) में इख़्तिलाफ़ था कि मूसा (अलैहि.) के यह साहब कौन थे? हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का फ़र्मान था कि यह ख़िज़्र (अलैहि.) थे। उसी वक़्त उनके पास से हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) गुज़रे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उन्हें बुलाकर अपना इख़्तिलाफ़ बयान किया। उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल.) से सुनी हुई हदीस बयान की जो तक़रीबन ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें साइल के सवाल के अल्फ़ाज़ यह हैं कि क्या आप उस शख़्स का होना भी जानते हैं जो आपसे ज़्यादा इल्म वाला हो?'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब मिन फ़ज़ाइलिल ख़िज़्र (अलैहि.) : 2380)

***

قَالَ لَهُ مُوسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ
تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ
شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰى
اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾

तर्जुमा : "उनसे मूसा (अ.) ने कहा कि मैं आपकी ताबेदारी करूँ? कि आप मुझे उस नेक इल्म को सिखा दें जो आपको सिखाया गया है। (66) उसने कहा आप मेरे साथ हर्गिज़ हर्गिज़ सब्र नहीं कर सकते। (67) और जिस चीज़ को आपने अपने इल्म में न लिया हो उस पर सब्र कर भी कैसे सकते हैं? (68) मूसा (عليه السلام) ने जवाब दिया कि इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएँगे और किसी बात में आपकी नाफ़र्मानी न करूँगा। (69) उसने कहा, अच्छा! अगर आप मेरे साथ ही चलने पर इसरार करते हैं तो याद रहे किसी चीज़ की निस्बत मुझसे कुछ न पूछना जब तक मैं ख़ुद उसकी निस्बत कोई ज़िक्र न सुनाऊँ।" (70)

हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) और मूसा (عليه السلام) में बातचीत (आयत 66 से 70) : यहाँ उस बातचीत का ज़िक्र हो रहा है जो हज़रत मूसा (عليه السلام) और हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) के बीच हुई थी। हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) उस इल्म के साथ ख़ास किये गए थे जो हज़रत मूसा (عليه السلام) को न था और हज़रत मूसा (عليه السلام) के पास वो इल्म था जिससे हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) बेख़बर थे। पस हज़रत मूसा (عليه السلام) अदब से और इसलिए कि हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) को मेहरबान कर लें उनसे सवाल करते हैं शागिर्द को इसी तरह अदब के साथ अपने उस्ताद से पूछना चाहिए। पूछते हैं अगर इजाज़त हो तो मैं आपके साथ रहूँ आपकी ख़िदमत करता रहूँ और आपसे इल्म हासिल करूँ जिससे मुझे नफ़ा हासिल हो और मेरे अमल नेक हो जाएँ। हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) इसके जवाब में कहते हैं कि तुम मेरा साथ नहीं निभा सकते मेरे काम आपको अपने इल्म के ख़िलाफ़ नज़र आएँगे, मेरा इल्म आपको नहीं और आपको जो इल्म है वह अल्लाह तआला ने मुझे नहीं सिखाया, पस मैं अपनी एक अलग ख़िदमत पर मुक़र्रर हूँ और आप अलग ख़िदमत पर। नामुम्किन है कि आप अपनी मालूमात के ख़िलाफ़ मेरे काम देखें और फिर सब्र कर सकें। और वाक़ेई में आप इस हाल में मअज़ूर भी हैं क्योंकि छुपी हुई हिक्मत और मस्लिहत आपको मालूम नहीं और मुझे अल्लाह तआला उन पर ख़बरदार कर देता है। इस पर हज़रत मूसा (عليه السلام) ने जवाब दिया कि आप जो कुछ करेंगे मैं उसे सब्र से बर्दाश्त करता रहूँ किसी बात में आपके ख़िलाफ़ न करूँगा फिर ख़िज़्र (عليه السلام) ने एक शर्त रखी कि अच्छा किसी चीज़ के बारे में आप मुझसे सवाल न करेंगे मैं जो कहूँ वह सुन लेंगे, आप अपनी तरफ़ से किसी सवाल की शुरुआत न करेंगे।

इब्ने जरीर में इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि हज़रत मूसा (ﷺ) ने अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन अज़्ज़ व जल्ल से सवाल किया कि तुझे अपने तमाम बन्दों से ज़्यादा प्यारा कौन है? जवाब मिला कि जो हर वक़्त मेरी याद में रहे और मुझे भुलाए नहीं। पूछा कि तमाम बन्दों में सबसे ज़्यादा अच्छा फ़ैसला करने वाला कौन है? फ़र्माया जो हक़ के साथ फ़ैसला करे और ख़्वाहिश के पीछे न पड़े। पूछा कि सबसे बड़ा आलिम कौन है? फ़र्माया, वह जो आलिम होकर इल्म की जुस्तजू में लगा रहे हर एक से सीखता रहे कि मुम्किन है कोई हिदायत का कलिमा मिल जाए और मुम्किन है कोई बात गुमराही से निकलने की हाथ लग जाए। हज़रत मूसा (ﷺ) ने पूछा कि क्या ज़मीन में तेरा कोई बन्दा मुझसे भी ज़्यादा आलिम है? फ़र्माया हाँ! पूछा वह कौन है? फ़र्माया, ख़िज़्र (ﷺ)! अर्ज़ किया मैं उन्हें कहाँ तलाश करूँ? फ़र्माया दरिया के किनारे पत्थर के पास जहाँ से मछली भाग खड़ी हो, पस हज़रत मूसा (ﷺ) उनकी तलाश में चले फिर वह हुआ जिसका ज़िक्र कुरआने करीम में मौजूद है। उसी पत्थर के पास दोनों की मुलाक़ात हुई।

इस रिवायत में यह भी है कि समुन्द्रों के मिलाप की जगह जहाँ से ज़्यादा पानी कहीं भी नहीं चिड़िया ने चोंच में पानी लिया था, आख़िर तक।

***

فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿۷۱﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿۷۲﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ﴿۷۳﴾

तर्जुमा : "फिर वह दोनों चले यहाँ तक कि एक कश्ती में सवार हुए, ख़िज़्र (ﷺ) ने उसके तख़्ते तोड़ दिए, मूसा (अ.) ने कहा, क्या आप इसे तोड़ रहे हैं फिर तो कश्ती वाले सब डूब जाएँगे तू बड़ी मुंकर चीज़ लाया। (71) ख़िज़्र (ﷺ) ने जवाब दिया कि मैंने तो पहले ही आपसे कहा कि आप मेरे साथ हर्गिज़ सब्र न कर सकेंगे। (72) मूसा (अ.) ने जवाब दिया कि मेरी भूल पर मुझे न पकड़ और मुझे अपने काम में तंगी में न डाल।" (73)

हज़रत ख़िज़्र (ﷺ) ने कश्ती तोड़ दी (आयत 71 से 73) : दोनों में जब शर्त तै हो गई तू सवाल न करना जब तक मैं ख़ुद ही उसकी हिक्मत तुझ पर ज़ाहिर न करूँ तो दोनों एक साथ चले पहले मुफ़स्सल रिवायतें गुज़र चुकी हैं कि कश्ती वालों ने उन्हें पहचानकर बग़ैर किराया लिए सवार कर लिया था जब कश्ती चली और बीच समुन्द्र में पहुँची तो ख़िज़्र (ﷺ) ने एक तख़्ता उसका उखेड़ डाला, फिर उसे ऊपर से ही जोड़ दिया। यह देखकर हज़रत मूसा (ﷺ) से सब्र न हो सका, शर्त को भूल गए और झट से कहने लगे कि यह क्या वाहियात बात है। (लि तुग़्रिक़ा) का लाम लामे आक़िबत है, लामे तअलील नहीं है। जैसे शायर के

इस क़ौल में (लिदू लिल मौति वब्नू लिल ख़राबि यानी हर पैदाशुदा जानदार का अंजाम मौत है और हर बनाई हुई इमारत का अंजाम उजड़ना है (इम्रन) के मअ़नी मुंकर और अ़जीब के हैं। यह सुनकर हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) ने उन्हें उनका वादा याद दिलाया कि तुमने अपनी शर्त के ख़िलाफ़ किया, मैं तो तुमसे पहले ही कह चुका था कि तुम्हें इन बातों का इल्म नहीं तुम ख़ामोश रहना मुझसे कुछ न पूछना, न सवाल करना, इन कामों की मस्लिहत और हिक्मत अल्लाह ने मुझे बता रखी है और तुमसे यह चीज़ें छुपी हुई हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने मअ़ज़िरत की कि इस भूल को माफ़ कर दो और मुझ पर सख़्ती न करो पहले जो लम्बी हदीस मुफ़स्सल वाक़िया की बयान हुई है उसमें है कि यह पहला सवाल फ़िल वाक़ेअ भूल से ही था।

***

فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰىٓ اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

तर्जुमा : "फिर दोनों चले यहाँ तक कि एक लड़के को पाया ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) ने उसे मार डाला, मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि क्या आपने एक पाक जान को बग़ैर किसी क़िसास (बदले) के मार डाला? बेशक आप तो बड़ी बुरी चीज़ लाये हैं।" (74)

हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) ने एक बच्चे को क़त्ल कर डाला (आयत 74) : फ़र्मान है इस वाक़िया के बाद दोनों साहब एक साथ चले एक बस्ती में चंद बच्चे खेलते हुए मिले, उनमें से एक बहुत ही तीतरा निहायत ख़ूबसूरत चालाक लड़का था उसे पकड़कर हज़रत ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम) ने उसका सर तोड़ दिया तो पत्थर से या हाथ ही से गर्दन मरोड़ी बच्चा उसी वक़्त मर गया। हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) काँप उठे और बड़े सख़्त लहजे में कहा, क्या वाहियात है छोटे बेगुनाह बच्चे को बग़ैर किसी शरई वजह के मार डालना यह कौनसी भलाई है? बेशक तुम निहायत मुंकर काम करते हो।

अल्हम्दु लिल्लाह! पन्द्रहवाँ पारा मुकम्मल हुआ।

***

قَالَ اَ لَمۡ اَقُلۡ لَّكَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ۝ قَالَ اِنۡ سَاَلۡتُكَ عَنۡ شَىۡءٍۢ
بَعۡدَهَا فَلَا تُصٰحِبۡنِىۡ‌ۚ قَدۡ بَلَغۡتَ مِنۡ لَّدُنِّىۡ عُذۡرًا ۝ فَانْطَلَقَا ‌ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهۡلَ
قَرۡيَةِ اۨسۡتَطۡعَمَاۤ اَهۡلَهَا فَاَبَوۡا اَنۡ يُّضَيِّفُوۡهُمَا فَوَجَدَا فِيۡهَا جِدَارًا يُّرِيۡدُ اَنۡ يَّنۡقَضَّ
فَاَقَامَهٗ‌ ؕ قَالَ لَوۡ شِئۡتَ لَـتَّخَذۡتَ عَلَيۡهِ اَجۡرًا ۝ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنِكَ‌ۚ
سَاُنَبِّئُكَ بِتَاۡوِيۡلِ مَا لَمۡ تَسۡتَطِعْ عَّلَيۡهِ صَبۡرًا ۝

तर्जुमा : "वह कहने लगे कि मैंने तुमसे नहीं कहा था? कि तुम मेरे साथ रहकर सब्र नहीं कर सकते। (75) मूसा (عليه السلام) ने जवाब दिया कि अगर अब इसके बाद मैं आपसे किसी चीज़ के बारे में सवाल करूँ तो बेशक आप मुझे अपने साथ न रखना यक़ीनन तुम मेरी तरफ़ से मअज़िरत को पहुँच चुके। (76) फिर दोनों चले एक गाँव वालों के पास आकर उनसे खाना मांगा, उन्होंने मेहमानदारी से साफ़ इंकार कर दिया दोनों ने वहाँ एक दीवार देखी जा गिरना ही चाहती थी उसने उसे ठीक ठाक और सही कर दिया। मूसा (عليه السلام) कहने लगे, अगर आप चाहते तो इस पर मजदूरी ले लेते। (77) वह कहने लगे बस यह जुदाई है मेरे और तेरे बीच अब मैं तुझे उन बातों की असलियत भी बता दूँगा जिन पर आपसे सब्र न हो सका।" (78)

हज़रत मूसा (अ.) की मअज़िरत (आयत 75 से 78) : हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) इस दूसरी बार और ज़्यादा ताकीद से हज़रत मूसा (عليه السلام) को उनकी मंज़ूर की हुई शर्त के ख़िलाफ़ करने पर तंबीह की। इसीलिए हज़रत मूसा (عليه السلام) ने भी इस बार और ही राह इख़्तियार की और फ़र्माने लगे कि अच्छा! इस बार और जाने दो। अब अगर मैं आप पर ऐतिराज़ करूँ तो मुझे आप अपने साथ न रहने देना। यक़ीनन आप बार बार मुझे मुतनब्बा करते रहे और अपनी तरफ़ से आपने कोई कमी नहीं की। अब अगर क़सूर करूँ तो सज़ा पाऊँ।

इब्ने जरीर में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) की आदते मुबारक थी कि जब कोई याद आ जाता और उसके लिए आप दुआ करते तो पहले अपने लिए करते। एक दिन कहने लगे "हम पर अल्लाह की रहमत और मूसा (عليه السلام) पर, काश कि वह अपने साथी के साथ और भी ठहरते और सब्र करते तो और भी बहुत सी ताज्जुबखेज़ बातें मालूम होतीं लेकिन उन्होंने तो यह कहकर छुट्टी ले ली कि अब अगर पूछूँ तो साथ टूट जाए मैं अब ज़्याद तक्लीफ़ में आपको डालना नहीं चाहता।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब मिन फ़ज़ाइलिल ख़िज़्र (عليه السلام) : 2380; अबूदाऊद : 3984; सुननुल कुब्रा : 11310; इब्ने हिब्बान : 989)

हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) का दीवार तअमीर करना : दूसरी बार के इस वाक़िये के बाद फिर दोनों साहब मिलकर चले। एक बसती में पहुँचे। मरवी है वह बस्ती ऐला थी। यहाँ के लोग बड़े ही कंजूस थे। (अहमद : 5/119; सहीह मुस्लिम : 2380) इंतिहा यह कि दो भूखे मुसाफ़िरों के माँगने पर भी उन्होंने खिलाने से भी साफ़ इंकार कर दिया। वहाँ देखते हैं कि एक दीवार गिरने वाली है जगह छोड़ चुकी है, झुक गई है। दीवार की तरफ़ इरादे की इस्नाद बतौरे इस्तआरा के है। उसे देखते ही यह कमर कसकर लग गए और देखते ही देखते उसे मज़बूत कर दिया और बिलकुल सही कर दिया।

पहले हदीस बयान हो चुकी है कि आपने अपने दोनों हाथों से उसे लौटा दिया, ख़म ठीक हो गया और दीवार दुरुस्त हो गई। उस वक़्त फिर कलीमुल्लाह बोल उठे कि सुब्हानल्लाह! इन लोगों ने हमें खाने तक को न पूछा बल्कि माँगने पर भाग गए अब जो तुमने इनकी यह मज़दूरी कर दी उस पर कुछ उज्रत क्यूँ न ली? जो बिलकुल हमारा हक़ था। उस वक़्त वह अल्लाह का बन्दा बोल उठा कि लो साहब! अब मुझमें और आप में हस्बे इक़रार ख़ुद जुदाई हो गई, क्योंकि बच्चे के क़त्ल पर आपने सवाल किया था उस वक़्त जब मैंने आपको उस ग़लती पर मुतनब्बा किया था तो आपने ख़ुद ही कहा था कि अब अगर किसी बात को पूछूँ तो मुझे अपने साथ से अलग कर देना, अब सुनो! जिन बातों पर आपने ताज्जुब से सवाल किया और सिहार न सके उनकी असली हिक्मत आप पर ज़ाहिर कर देता हूँ।

***

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَٰكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَأَرَدْنَا أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

तर्जुमा : "कश्ती तो चंद मिस्कीनों की थी जो दरिया में काम काज करते रहते थे मैंने उसमें कुछ तोड़ फोड़ करने का इरादा कर लिया क्योंकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर एक कश्ती को जबरन ज़ब्त कर लेता था।(79) और उस नौजवान के माँ बाप ईमान वाले थे हमें डर हुआ कि कहीं यह उन्हें अपनी सरकशी और कुफ़्र से आजिज़ परेशान न कर दे। (80) इसलिए हमने चाहा कि उन्हें उनका परवरदिगार उसके बदले से बेहतर पाकीज़गी वाला और उससे ज़्यादा मुहब्बत व प्यार करने वाला बच्चा इनायत करे।"(81)

कश्ती यतीम बच्चों की थी (आयत 79 से 81) : बात यह है कि अल्लाह तआला ने उन बातों के अंजाम से हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) को पहले से ख़बरदार कर चुका था और उन्हें जो हुक्म मिला था वह उन्होंने किया था। हज़रत मूसा (عليه السلام) को इस राज़ का इल्म न था इसलिए बज़ाहिर उसे ख़िलाफ़ समझकर उस पर

इंकार करते थे लिहाज़ा हज़रत ख़िज़्र (ؑ) ने अब असल मामला समझा दिया। फ़र्माया कश्ती को ऐबदार करने में तो यह मस्लिहत थी कि अगर सही सालिम होती तो आगे चलकर एक ज़ालिम बादशाह था जो हर एक छोटी कश्ती को ज़ुल्मन छीन लेता था। जब उसे वह टूटी फूटी देखेगा तो वह छोड़ देगा अगर यह ठीक ठाक और साबित होती तो सारी कश्ती ही इन मिस्कीनों के हाथ से छीन ली जाती और इनकी रोज़ी कमाने का यही एक ज़रिया था जो बिलकुल जाता रहता। मरवी है कि उस कश्ती के मालिक चंद यतीम बच्चे थे। इब्ने जुरैज कहते हैं कि उस बादशाह का नाम हुदद बिन बुदद था। बुख़ारी के हवाले से यह रिवायत पहले गुज़र चुकी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल कहफ़ बाब क़ौलुहू (फ़लम्मा बलग़ा मज्मआ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फ़त्तख़ज़ सबीलहू...) : 4726) तौरात में है कि यह ऐस बिन इस्हाक़ की नस्ल से था। तौरात में जिन बादशाहों का सरीह ज़िक्र है उनमें एक यह भी है, वल्लाहु आलम!

यह बच्चा काफ़िर और सरकश बनने वाला था : पहले बयान हो चुका है कि उस नौजवान का नाम जैसूर था। हदीस में है कि "उसकी जिबिल्लत में ही कुफ़्र था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब मअना कुल्लु मौलूदिन यूलदु अलल फ़ित्रति व हुक्मु मौता अत्फ़ालिल कुफ़्फ़ारि व अत्फ़ालिल मुस्लिमीन... : 2661; अबूदाऊद : 4705; तिर्मिज़ी : 3150) हज़रत ख़िज़्र (ؑ) फ़र्माते हैं कि बहुत मुम्किन था कि उस बच्चे की मुहब्बत उसके माँ बाप को भी कुफ़्र की तरफ़ माइल कर दे। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि उस बच्चे की पैदाइश से उसके माँ बाप बहुत ख़ुश थे और उसकी हलाकत से वह बहुत ग़मगीन हो गए हालाँकि उसकी ज़िन्दगी उनके लिए हलाकत थी। पस इंसान को चाहिए कि अल्लाह की क़ज़ा पर राज़ी रहे। रब अंजाम को जानता है और हम उससे ग़ाफ़िल हैं। मोमिन जो काम अपने लिए पसंद करता है उसकी अपनी पसंद से वह अच्छा है जो अल्लाह उसके लिए पसंद करता है। (तब्री : 18/86) सहीह हदीस में है कि "मोमिन के लिए जो अल्लाह के फ़ैसले होते हैं वह सरासर बेहतरी और उम्दगी ही वाले होते हैं।" (अहमद : 3/117; व सनदुहू हसन)

कुरआने करीम में है (وَ عَسٰٓی اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ) (2/बक़रह : 216) यानी बहुत मुम्किन है कि एक काम तुम अपने लिए बुरा और ज़रर वाला समझते हो और वही दरअसल तुम्हारे लिए भला और मुफ़ीद हो। हज़रत ख़िज़्र (ؑ) फ़र्माते हैं कि हमने चाहा कि अल्लाह उन्हें ऐसा बच्चा दे जो बहुत परहेज़गार हो और जिस पर माँ बाप को ज़्यादा प्यार हो या यह कि जो माँ बाप के साथ नेक सुलूक हो। पहले बयान हो चुका है कि उस लड़के के बदले अल्लाह ने उनके यहाँ एक लड़की दी। मरवी है कि उस बच्चे के क़त्ल के वक़्त उसकी वालिदा के हमल में एक मुसलमान लड़का था और वह हामिला थीं।

***

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۭ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

तर्जुमा : ''दीवार का क़िस्सा यह है कि उस शहर में दो यतीम बच्चे हैं जिनका ख़ज़ाना उनकी उस दीवार के नीचे दफ़न है, उनके बाप बड़े नेक शख़्स थे तो तेरे रब की चाहत थी कि यह दोनों यतीम अपनी जवानी की उम्र में आकर अपना यह ख़ज़ाना तेरे रब की मेहरबानी और रहमत से निकाल लें मैंने अपनी राय और इख़्तियार से कोई काम नहीं किया, यह थी असल हक़ीक़त की जिन पर आपसे सब्र न हो सका।'' (82)

दीवार दो यतीम बच्चों की थी (आयत 82): इस आयत से साबित हुआ कि बड़े शहर पर भी क़र्या का इत्लाक़ हो सकता है क्योंकि पहले (حَتّٰىٓ اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ) (18/कहफ़ : 77) फ़र्माया था और यहाँ (फ़िल मदीनति) फ़र्माया। इसी तरह मक्का को भी क़र्या कहा गया है। फ़र्मान है (وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً) (مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ) (47/मुहम्मद : 13) आयत में मक्का और ताइफ़ दोनों शहरों को क़र्या फ़र्माया गया है। चुनाचे इर्शाद है (وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰي رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 31) आयत मे बयान हो रहा है कि इस दीवार को दुरुस्त कर देने में मस्लिहते ख़ुदावन्दी यह थी कि यह उस शहर के दो यतीमों की थी। उसके नीचे उनका माल दफ़न था। (तब्री : 18/90) ठीक तफ़्सीर तो यही है गो यह भी मरवी है कि वह इल्मी ख़ज़ाना था। बल्कि एक मरफ़ूअ हदीस में है कि ''जिस ख़ज़ाने का ज़िक्र किताबुल्लाह में है यह ख़ालिस सोने की तख़्तियाँ थीं जिन पर लिखा हुआ था कि ''ताज्जुब है उस शख़्स पर जो तक़्दीर का क़ाइल होते हुए अपनी जान को मेहनत व मशक़्क़त में डाल रहा है और रंजो ग़म बर्दाश्त कर रहा है। ताज्जुब है जहन्नम के अज़ाबों का मानने वाला है फिर भी हँसी खेल में मशग़ूल है। ताज्जुब है कि मौत का यक़ीन रखते हुए भी ग़फ़्लत में पड़ा हुआ है।'' ''ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2229; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) यह इबारत उन तख़्तियों पर लिखी हुई थी लेकिन इसमें एक रावी बिश्र बिन मुंज़िर हैं, कहा गया है कि यह मसीसा के क़ाज़ी थे। इनकी हदीस में वहम है। सलफ़ से भी इस बारे में कुछ आसार मरवी है।

हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं यह सोने की तख़्ती थी जिसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बाद क़रीब क़रीब मुंदर्जा बाला नसीहतें और आख़िर में कलिमा तय्यिबा था। उमर मौला ग़फ़रा से भी तक़रीबन यही मरवी है। इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद (रह.) फ़र्माते हैं उसमें ढाई सतरें थीं पूरी तीन न थीं। मज़्कूर है कि यह दोनों यतीम बवजह अपने सातवें दादा की नेकियों के महफ़ूज़ रखे गए थे। जिन बुज़ुर्गों ने यह तफ़्सीर की है वह भी

पहली तफ़्सीर के ख़िलाफ़ नहीं क्योंकि उसमें भी है कि यह इल्मी बातें सोने की तख़्ती पर लिखी हुई थीं और ज़ाहिर है कि सोने की तख़्ती ख़ुद माल है और बहुत बड़ी रक़म की चीज़ है, वल्लाहु आलम!

इस आयत से यह भी साबित होता है कि इंसान की नेकियों की वजह से उसके बाल बच्चे भी दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की मेहरबान हासिल कर लेते हैं। जैसे कुरआन व हदीस में सराहतन मज़्कूर है। देखिए! आयत में उनकी सलाहियत कोई बयान नहीं हुई। हाँ! उनके वालिद की नेकबख़्ती और नेक अमली बयान हुई है और पहले गुज़र चुका है कि यह बाप जिसकी नेकी की वजह से उनकी हिफ़ाज़त हुई। यह उन बच्चों का सातवाँ दादा था, वल्लाहु आलम!

आयत में है तेरे रब ने चाहा यह इस्नाद अल्लाह की तरफ़ इसलिए की गई कि जवानी तक पहुँचाने पर सिवाय उसके और कोई क़ादिर नहीं। देखिए! बच्चे के बारे में और कश्ती के बारे में इरादे की निस्बत अपनी तरफ़ की गयी है (फ़अरदना) और (फ़अरत्तु) के लफ़्ज़ हैं, वल्लाहु आलम!

फिर फ़र्माते हैं कि दरअसल यह तीनों बातें जिन्हें तुमने ख़तरनाक समझा सरासर रहमत थीं। कश्ती वालों को भले क़द्रे नुक़्सान हुआ लेकिन उससे पूरी कश्ती बच गई। बच्चे के मरने की वजह से भले माँ बाप को रंज हुआ लेकिन हमेशा के रंज और अल्लाह के अज़ाब से बच गए और फिर नेक बदला हाथों हाथ मिल गया और यहाँ उस नेक शख़्स की औलाद का भला हुआ। यह काम मैंने अपनी ख़ुशी से नहीं किये बल्कि अल्लाह के हुक्म से किये हैं। इससे कुछ लोगों ने हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) की नबुव्वत पर इस्तिदलाल किया है और पूरी बहस पहले गुज़र चुकी है और लोग कहते हैं यह रसूल थे। एक क़ौल है यह फ़रिश्ता थे लेकिन अक्सर बुज़ुर्ग का फ़र्मान है कि यह एक अल्लाह के वली थे।

इमाम इब्ने कुतैबा (रह.) ने मआरिफ़ में लिखा है कि इनका नाम बुलिया बिन मल्कान बिन फ़ालिग़ बिन आमिर बिन शालिख़ बिन अरफ़हशद बिन साम बिन नूह था। इनकी कुन्नियत अबुल अब्बास है, लक़ब ख़िज़्र है। इमाम नववी (रह.) ने तहज़ीबुल अस्मा में लिखा है कि यह शहज़ादे थे। यह और इब्ने सलाह (रह.) तो क़ाइल हैं कि वह अब तक ज़िन्दा हैं और क़ियामत तक ज़िन्दा रहेंगे। भले कुछ हदीसों में भी यह ज़िक्र आया है लेकिन इनमें से एक भी सही नहीं है। सबसे ज़्यादा मशहूर हदीस इस बारे में वह है जिसमें है कि हुज़ूर (ﷺ) की तअज़ियत के लिए आप तशरीफ़ लाए थे। (यह रिवातय मनगढ़त है। देखिए ज़ईफ़तु लिल अल्बानी (11/642; ह : 5384) लेकिन इसकी सनद भी ज़ईफ़ है। अक्सर मुहद्दिसीन वग़ैरह इसके बरख़िलाफ़ हैं और वह हयाते ख़िज़्र के क़ाइल नहीं। इनकी एक दलील आयते कुरआनी (وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ) (21/अम्बिया : 34) यानी तुझसे पहले भी हमने किसी को हमेशगी की ज़िन्दगी नहीं दी और दलील हुज़ूर (ﷺ) का ग़ज़्वा बद्र में यह फ़र्माना है कि इलाही! अगर मेरी यह जमाअत हलाक हो गई तो ज़मीन में तेरी इबादत फिर न की जाएगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब अल्इम्दादु बिल मलाइकति फ़ी ग़ज़्वतिल बद्र व इबाहतिल ग़नाइम : 1763) एक दलील यह भी है कि अगर हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) ज़िन्दा होते तो हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में ज़रूर हाज़िर होते और इस्लाम क़बूल करते और आपके सहाबा किराम में

मिलते, क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) तमाम जिन्न व इंसान की तरफ़ अल्लाह तआला के रसूल बनाकर भेजे गए थे। आपने तो यहाँ तक फ़र्माया है कि "अगर मूसा (عليه السلام) और ईसा (عليه السلام) ज़िन्दा (ज़मीन पर) होते तो उन्हें भी सिवाय मेरी ताबेदारी के चारा न था।" (इस बाब में जो रिवायात वारिद हैं उनमें सिर्फ़ मूसा (عليه السلام) का ज़िक्र है ईसा (عليه السلام) का कोई ज़िक्र नहीं है। अहमद : 3/387; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यह रिवायत मुजालिद की वजह से ज़ईफ़ है। दारमी : 1/115; अस्सुन्ना : 5/2) आप अपनी वफ़ात से कुछ दिन पहले फ़र्माते हैं "आज जो ज़मीन पर हैं उनमें से एक भी आज से लेकर सौ (100) साल पर बाक़ी नहीं रहेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब समरुन फ़िल इल्म : 116; सहीह मुस्लिम : 2537; अबूदाऊद : 4348; तिर्मिज़ी : 2251; अहमद : 2/88; इब्ने हिब्बान : 2989) इनके अलावा और भी बहुत से दलाइल हैं। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) को ख़िज़्र इसलिए कहा गया कि वह सफ़ेद रंग सूखी घास पर बैठ गए थे यहाँ तक कि उसके नीचे से सब्ज़ा उग आया और मुम्किन है कि इससे मुराद यह हो कि आप ख़ुश्क ज़मीन पर बैठ गए थे और फिर वह लहलहाने लगी। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब हदीसुल ख़िज़्र (عليه السلام) मअ मूसा (عليه السلام) : 3402; तिर्मिज़ी : 3151; अहमद : 2/312; इब्ने हिब्बान : 6222)

अल्ग़र्ज़ हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) ने हज़रत मूसा (عليه السلام) के सामने जब यह गुत्थी सुलझा दी और उन कामों की असल हिक्मत बयान कर दी तो फ़र्माया कि यह थे वह राज़ जिनके आशकार करने के लिए आप जल्दी कर रहे थे चूँकि पहले मुशक़्क़त व शौक़ ज़्यादा थी इसलिए लफ़्ज़ (लम् तस्ततिअ) कहा और अब बयान कर देने के बाद वह बात न रही इसलिए लफ़्ज़ (लम् तस्तिअ) कहा। यही सिफ़त आयत (فَمَا اسْطَاعُوْا أَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَ مَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا) (18/कहफ़ : 97) में है यानी याजूज माजूज न उस दीवार पर चढ़ सके और न उसमें कोई सूराख़ कर सके। पस चढ़ने में तक्लीफ़ ब निस्बत सूराख़ करने के कम है इसलिए सक़ील का मुक़ाबला सक़ील से और ख़फ़ीफ़ का मुक़ाबला ख़फ़ीफ़ से किया गया और लफ़्ज़ी और मअनवी मुनासिबत क़ायम कर दी, वल्लाहु आलम! हज़रत मूसा (عليه السلام) के साथी का ज़िक्र क़िस्से के शुरू में तो था लेकिन फिर उन्हें इसलिए कि मक़्सूद सिर्फ़ हज़रत मूसा (عليه السلام) और ख़िज़्र (عليه السلام) का वाक़िया बयान करना था।

हदीसों में है कि आपके यह साथी हज़रत यूशअ बिन नून (عليه السلام) थे। यही हज़रत मूसा (عليه السلام) के बाद बनी इस्राईल के वाली बनाए गए थे। एक रिवायत में है कि "उन्होंने आबे हयात पी लिया था इसलिए उन्हें कश्ती में बिठाकर समुन्द्र के बीच छोड़ दिया। वह कश्ती यूँ ही हमेशा तक मोजों के तलातुम में रहेगी।" यह बिलकुल ज़ईफ़ है क्योंकि इस वाक़िया के रावियों में एक तो हसन बन अम्मारा है जो मतरूक है दूसरा उसका बाप है जो ग़ैर मअरूफ़ है। यह वाक़िया सनदन ठीक नहीं।

***

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝۸۳ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى

الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝۸۴

तर्जुमा : ''तुझसे ज़ुल क़रनैन का यह वाक़िया यह लोग पूछते हैं, तू कह दे कि मैं उनका थोड़ा सा हाल तुम्हें पढ़ सुनाता हूँ। (83) हमने उसे ज़मीन में कुव्वत अ़ता कर रखी थी और उसे हर चीज़ के सामान भी इनायत कर दिये थे।'' (84)

हज़रत ज़ुल क़रनैन का वाक़िया (आयत 83, 84) : पहले गुज़र चुका है कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने अहले किताब से कहलवाया था कि हमें कुछ ऐसी बातें बतलाओ जो हम मुहम्मद (ﷺ) से पूछें और आप (ﷺ) उनके जवाब न दे सकें तो उन्होंने सिखाया था कि एक तो उनसे उस शख़्स का वाक़िया पूछो जिसने रूए ज़मीन की सियाहत की थी। दूसरा सवाल उनसे उस नौजवान की निस्बत करो जो बिलकुल लापता हो गया था और तीसरा सवाल उनसे रूह की बाबत करो। उनके इन सवालों के जवाब में यह सूरत सूरह कहफ़ नाज़िल हुई। यह भी रिवायत है कि ''यहूदियों की एक जमाअत हुज़ूर (ﷺ) से ज़ुल क़रनैन का क़िस्सा पूछने को आई थी। तो आपने उन्हें देखते ही फ़र्माया कि ''तुम इसलिए आए हो।'' फिर आपने वह वाक़िया बयान किया। उसमें है कि वह एक रूमी नौजवान था उसी ने इस्कन्दरिया बनाया। उसे एक फ़रिश्ता आसमान तक चढ़ा ले गया था और दीवार तक ले गया था। उसने कुछ लोगों को देखा जिनके मुँह कुत्तों जैसे थे। (सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अ़बदुर्रहमान बिन ज़ियाद अल अफ़्रीक़ी ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 1/480; रक़म : 938) वग़ैरह लेकिन इसमें बहुत तूल है और नकारत है और ज़ुअफ़ है, इसका मरफ़ूअ होना साबित नहीं। दरअसल यह बनी इस्राईल की रिवायात हैं।

ज़ुल क़रनैन कौन हैं? तअ़ज्जुब है कि इमाम अबू ज़रआ राज़ी जैसे अ़ल्लामा ज़माँ ने इसे अपनी किताब दलाइलुन नबुव्वा में पूरी वारिद की है। फ़िल वाक़ेअ यह बयान उन जैसे बुज़ुर्ग से तो तअ़ज्जुबखेज़ चीज़ ही है इसमें जो है कि यह रूमी थे, यह भी ठीक नहीं इस्कन्दर सानी रूमी था वह फ़िलिप्स मक़्दूनी का लड़का है जिससे रूम की तारीख़ शुरू होती है और सिकन्दर अव्वल तो बक़ौले अज़्रक़ी वग़ैरह हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के ज़माने में था। उसने आपके साथ बैतुल्लाह शरीफ़ की बिना के बाद तवाफ़े बैतुल्लाह किया है, आप पर ईमान लाया था आपका ताबेदार बना था, उन ही के वज़ीर हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) थे और सिकन्दर सानी का वज़ीर अरिस्ता तालीस मशहूर फ़िलोसोफ़ी था, वल्लाहु आलम! उसने मुम्लकते रूम की तारीख़ लिखी, यह हज़रत मसीह से तक़रीबन तीन सौ साल पहले था और सिकन्दर अव्वल जिसका ज़िक्र कुरआने करीम में है, यह हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) के ज़माने में था, जैसे अज़्रक़ी वग़ैरह ने ज़िक्र किया है। जब हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने बैतुल्लाह शरीफ़ बनाया तो उसने आपके साथ तवाफ़ किया था और अल्लाह तआ़ला के नाम बहुत सी कुरबानियाँ की थीं। हमने बफ़ज़्लिही उनके बहुत से वाक़ियात अपनी किताब अल्बिदाया वन्निहाया में ज़िक्र कर दिये हैं।

ज़ुल क़रनैन की वजहे तस्मिया : वहब (रह.) कहते हैं यह बादशाह थे चूँकि इनके सर के दोनों तरफ़ तांबा रहता था इसलिए इन्हें ज़ुल क़रनैन कहा गया। यह भी वजह बतलाई गई है कि यह रूम और फ़ारस का दोनों का बादशाह था। कुछ का क़ौल है कि फ़िल वाक़ेअ उसके सर के दोनों तरफ़ कुछ सींग से थे।

हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि उस नाम की वजह यह है कि यह अल्लाह के नेक बन्दे थे, अपनी क़ौम को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाया, यह लोग मुख़ालिफ़ हो गए और उनके सर के एक जानिब इस क़द्र मारा कि यह शहीद हो गए, अल्लाह तआला ने दोबारा ज़िन्दा कर दिया क़ौम ने फिर सर के दूसरी तरफ़ इस क़द्र मारा जिससे यह फिर मर गए इसलिए इन्हें ज़ुल्क़रनैन कहा जाता है।

एक क़ौल यह भी है कि चूँकि यह मश्रिक़ से मग़्रिब तक सियाहत कर आए थे इसलिए उन्हें ज़ुल्क़रनैन कहा है हमने उसे बड़ी सल्तनत दे रखी थी। साथ ही कुव्वत, लश्कर आलाते हर्ब सब कुछ ही दे रखा था, मश्रिक़ से मग़्रिब तक उसकी सल्तनत थी अ़रब व अ़जम सब उसके मातहत थे। हर चीज़ का उसे इल्म दे रखा था। ज़मीन के अदना आ़ला निशानात बतला देते थे। (तब्री : 18/94) तमाम ज़ुबानें जानते थे जिस क़ौम से लड़ाई होती उसकी ज़ुबान बोल लेते थे एक मर्तबा हज़रत कअ़ब अहबार (रज़ि.) से हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) ने फ़र्माया था, क्या तुम कहते हो कि ज़ुल क़रनैन ने अपने घोड़े सुरय्या से बाँधे थे? उन्होंने जवाब दिया कि अगर आप यह फ़र्माते हैं तो सुनिए अल्लाह तआला ने फ़र्माया है हमने उसे हर चीज़ का सामान दिया था हक़ीक़त में इस बात में हक़ हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) के साथ है इसलिए भी कि हज़रत कअ़ब (रज़ि.) को जो कुछ कहीं लिखा मिलता था रिवायत कर दिया करते थे भले वह झूठ ही हो। इसीलिए आपने फ़र्माया कि कअ़ब का किज़्ब तो बारहा सामने आ चुका है यानी ख़ुद तो झूठ नहीं गढ़ते थे लेकिन जो रिवायत मिलती भले बेसनद हो बयान करने से न चूकते। और यह ज़ाहिर है कि बनी इस्राईल की रिवायात झूठ से ख़ुराफ़ात से तहरीफ़ से तब्दील से महफ़ूज़ न थीं। बात यह है कि हमें उन इस्राईली रिवायात की तरफ़ इल्तिफ़ात करने की भी क्या ज़रूरत? जबकि हमारे हाथों में अल्लाह की किताब और उसके पैग़म्बर (ﷺ) की सच्ची और सही हदीसें मौजूद हैं।

अफ़सोस इन ही इस्राईली रिवायात ने बहुत सी बुराई मुसलमानों में डाल दी और बड़ा फ़साद फैल गया। हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने इस इस्राईली रिवायात के सबूत में क़ुरआन की इस आयत का आख़िरी हिस्सा जो पेश किया है यह भी कुछ ठीक नहीं क्योंकि यह तो बिलकुल ज़ाहिर बात है कि किसी इंसान को अल्लाह तआला ने आसमानों पर और सुरय्या पर पहुँचने की ताक़त नहीं दी। देखिए बिल्क़ीस के हक़ में भी क़ुरआन ने यही अल्फ़ाज़ कहे हैं (وَ اُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ) (27/नम्ल : 23) वह हर चीज़ दी गई थी। इससे भी मुराद सिर्फ़ इसी क़द्र है कि बादशाहों के यहाँ उमूमन जो होता है वह सब उसके पास भी था। इसी तरह हज़रत ज़ुल क़रनैन को दे रखे थे, वल्लाहु आ़लम! हज़रत अ़ली (रज़ि.) से पूछा जाता है कि यह मश्रिक़ व मग़्रिब तक कैसे पहुँच गए? आपने फ़र्माया सुब्हानल्लाह! अल्लाह तआला ने बादलों को उनके लिए मुसख़्ख़र कर दिया था और तमाम अस्बाब उन्हें मुहय्या कर दिये थे और पूरी कुव्वत और ताक़त दे दी थी।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ
عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾
قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا مَنْ
اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : "वह एक राह के दर पे हो गया। (85) यहाँ तक कि सूरज डूबने की जगह पहुँच गया उसे एक दलदल के चश्मे में गुरूब होता हुआ पाया और उस चश्मे के पास एक क़ौम को भी पाया हमने फ़र्मा दिया कि ऐ ज़ुल क़रनैन या तो तू इन्हें तक्लीफ़ पहुँचाए या इनके बारे में तू कोई बेहतरीन रविश इख़्तियार करे। (86) जवाब दिया कि जो ज़ुल्म करेगा उसे तो हम भी अब सज़ा देंगे फिर वह अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया जाएगा और वह उसे फिर से सख़्ततर अ़ज़ाब देगा। (87) हाँ! जो ईमान लाये और नेक आमाल करे उसके लिए तो बदले में भलाई है और हम उसे अपने काम में भी आसानी ही कहेंगे।" (88)

ज़ुल्क़रनैन सूरज गुरूब होने की जगह पहुँचे (आयत 85 से 88) : ज़ुल क़रनैन एक राह लग गए ज़मीन की एक सिम्त यानी मग़रिबी जानिब कूच कर दिया। (तबरी : 18/95) जो निशानात ज़मीन पर थे उनके सहारे चल खड़े हुए जहाँ तक मग़रिबी रुख़ चल सकते थे चलते रहे यहाँ तक कि अब सूरज के गुरूब होने की जगह पहुँच गए। यह याद रहे कि इससे मुराद आसमान का वह हिस्सा नहीं जहाँ सूरज गुरूब होता है, क्योंकि वहाँ तक किसी का जाना नामुम्किन है। हाँ! उस रुख़ जहाँ तक ज़मीन पर जाना मुम्किन है हज़रत ज़ुल क़रनैन पहुँचे गए। और यह जो कुछ क़िस्से मशहूर हैं कि सूरज के गुरूब होने की जगह से भी आप तजावुज़ कर गए और सूरज मुद्दतों उनकी पसे पुश्त गुरूब होता रहा यह बेबुनियाद बातें हैं और उमूमन अहले किताब की ख़ुराफ़ात हैं और उनमें से भी बद् दीनों की गढ़ंत हैं और सिर्फ़ दरोग़ बे फ़रोग़ हैं।

सूरज कहाँ गुरूब होता है? अल्ग़र्ज़ जब इंतिहाए मग़रिब की सिम्त पहुँच गए तो यह मालूम हुआ कि गोया बह़रे मुहीत में सूरज डूब रहा है जो भी किसी समुन्द्र के किनारे खड़ा होकर सूरज गुरूब होते हुए देखेगा, बज़ाहिर यही मंज़र उसके सामने होगा कि गोया सूरज पानी में डूब रहा है। हालाँकि सूरज चौथे आसमान पर है और उससे अलग कभी नहीं होता (हमिअत) या तो मुश्तक़ है (हम्आत) से यानी चिकनी मिट्टी। आयते क़ुरआन (اِنِّىْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ) (15/हिज्र : 28) में इसका बयान गुज़र चुका है। यही मतलब इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुनकर हज़रत नाफ़ेअ (रह.) ने सुना कि हज़रत कअब (रज़ि.) फ़र्माते थे तुम हमसे ज़्यादा क़ुरआन के आलिम हो लेकिन मैं तो किताब में देखता हूँ कि वह स्याह रंग मिट्टी में ग़ायब हो जाता था, एक क़िराअत में (फ़ी अ़ैनिन हामिया) है यानी गर्म चश्मे में गुरूब होना पाया। यह दोनों क़िराअतें

मशहूर हैं और दोनों दुरुस्त हैं, ख़्वाह कोई सी क़िराअत पढ़े और उनके मअ़नी में भी कोई तफ़ावुत नहीं क्योंकि सूरज की नज़दीकी की वजह से पानी गर्म हो और वहाँ की मिट्टी की स्याह रंगत की वजह से उस पानी की कीचड़ उसी रंगत की हो। हुज़ूर (ﷺ) ने एक मर्तबा सूरज को ग़ुरूब होते देखकर फ़र्माया, ''अल्लाह की भड़कती हुई आग में अगर अल्लाह के हुक्म से इसकी सोज़िश कम न हो जाती तो यह तो ज़मीन की तमाम चीज़ों को झुलसा डालता।'' (अह़मद : 2/202; त़बरी : 16/12; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/131; इसकी सनद में मौला (ग़ुलाम) रावी मज्हूल है।) इसकी स़ेह़त में नज़र है (मरफ़ूअ़ होने में) बहुत मुम्किन है कि यह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) का अपना कलाम हो और उन दो थेलों की किताबों से लिया गया हो जो उन्हें यरमूक से मिले थे, वल्लाहु आ़लम!

इब्ने अबी ह़ातिम में है कि एक मर्तबा ह़ज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) ने सूरह कहफ़ की यही आयत तिलावत की तो आपने (अ़ैनिन ह़ामिया) पढ़ा इस पर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हम तो (ह़मिअतिन) पढ़ते हैं। ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) से पूछा, आप किस त़रह़ पढ़ते हैं? उन्होंने जवाब दिया जिस त़रह़ आपने पढ़ा। इस पर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, मेरे घर में क़ुरआने करीम नाज़िल हुआ। ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) ने ह़ज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने जवाब दिया कि इसे अ़रबियत वालों से पूछना चाहिए वही इसके पूरे आ़लिम हैं हाँ! तौरात में तो मैं यह पाता हूँ कि वह पानी और मिट्टी में यानी कीचड़ में छुप जाता है और मग़्रिब की त़रफ़ अपने हाथ से इशारा किया। यह सब क़िस्सा सुनकर इब्ने ह़ाज़िर ने कहा अगर मैं उस वक़्त होता तो आपकी ताईद में तबअ़ के वह दो शेअ़र पढ़ देता जिसमें उसने ज़ुल क़रनैन का ज़िक्र करते हुए कहा है कि वह मश्रिक़ व मग़्रिब तक पहुँचा क्योंकि अल्लाह करीम ने इसे हर क़िस्म के सामान मुहय्या किये थे। उसने देखा कि सूरज स्याह मिट्टी जैसे कीचड़ में ग़ुरूब होता नज़र आता है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने पूछा इस शेअ़र में तीन लफ़्ज़ हैं ख़ल्ब सात़ और हुर्मुद। इनके क्या मअ़नी हैं? कहा, मिट्टी कीचड़ और स्याह। उसी वक़्त ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने अपने ग़ुलाम से या किसी और शख़्स से फ़र्माया, यह जो कहते हैं लिख लो। एक मर्तबा ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सूरह कहफ़ की तिलावत ह़ज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने सुनी और जब आपने (ह़मिअतिन) पढ़ा तो कहा कि वल्लाह! जिस त़रह़ तौरात में है उसी त़रह़ पढ़ते हुए मैंने आप ही को सुना तौरात में भी यही है कि वह स्याह रंग कीचड़ में डूबता है वहीं एक शहर था जो बहुत बड़ा था उसके बारह हज़ार दरवाज़े थे अगर वहाँ शोरोग़ुल न हो तो क्या अ़जब कि उन लोगों को सूरज के ग़ुरूब होने की आवाज़ तक आए। वहाँ एक बहुत बड़ी उम्मत को आपने बसता हुआ पाया। अल्लाह तआ़ला ने उस बस्ती वालों पर भी उन्हें ग़ल्बा दिया, अब उनके इख़्तियार में दे दिया था कि यह उन पर जबर व ज़ुल्म करें या उनमें अ़दलो इंसाफ़ करें, इस पर ज़ुल्क़रनैन ने अपने अ़दलो ईमान का सबूत दिया और अ़र्ज़ किया कि जो अपने कुफ़्रो शिर्क पर अड़ा रहे उसे तो हम सज़ा देंगे, क़त्लो ग़ारत से या यह कि तांबे के बर्तन को गर्म आग करके उसमें डाल देंगे कि वहीं उसका मरण्डा हो जाए या यह कि सिपाहियों के हाथों उन्हें बदतरीन सज़ाएँ कराएँगे, वल्लाहु आ़लम! और फिर जब वह अपने रब की त़रफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्ततर और दर्दनाक अ़ज़ाब करेगा। इससे क़ियामत के दिन का भी सबूत होता है और जो ईमान लाए हमारी तौह़ीद की दावत क़बूल कर ले, अल्लाह के सिवा दूसरों की इ़बादत से दस्तबरदारी कर ले, उसे अल्लाह अपने यहाँ से बेहतरीन बदला देगा और ख़ुद हम भी उसकी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई करेंगे और भली बात कहेंगे।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ

مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

तर्जुमा :"फिर वह और राह के पीछे लगा। (89) यहाँ तक कि जब सूरज निकलने की जगह तक पहुँचा उसे एक ऐसी क़ौम पर निकलता पाया कि उनके लिए हमने उससे और कोई पर्दा और ओट नहीं बनाई। वाक़िया ऐसा ही है। (90) हमने उसके आसपास की कुल ख़बरों का एहाता कर रखा है।" (91)

ज़ुल क़रनैन सूरज उगने की जगह पहुँचे (आयत 89 से 91) : ज़ुल क़रनैन मग़्रिब से वापिस मश्रिक़ की तरफ़ चले रास्ते में जो क़ौमें मिलतीं अल्लाह की इबादत और उसकी तौहीद की उन्हें दावत देते। अगर वह क़बूल कर लेते तो बहुत अच्छा वरना उनसे लड़ाई होती और अल्लाह के फ़ज़्लो करम से वह हार जाती और आप उन्हें अपना मातहत करके वहाँ के माल व मवेशी और ख़ादिम वग़ैरह लेकर आगे को चलते। इस्राईली ख़बरों में है कि यह एक हज़ार छ सौ साल तक ज़िन्दा रहे और बराबर ज़मीन पर दीने रब्बानी की तब्लीग़ करते रहे, साथ ही बादशाहत भी फैलती रही। जब आप सूरज निकलने की जगह तक पहुँचे वहाँ देखा एक बस्ती आबाद है लेकिन वहाँ के लोग बिलकुल नीम वहशी जैसे हैं। न वह मकानात बनाते हैं न वहाँ कोई दरख़्त है सूरज की धूप से पनाह देने वाली कोई चीज़ वहाँ उन्हें नज़र न आई। उनके रंग लाल थे उनके क़द पस्त थे, आम ख़ूराक उनकी मछली थी।

सूरज कहाँ से निकलता है? हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं सूरज के निकलने के वक़्त वह पानी में चले जाया करते थे और गुरूब होने के बाद जानवरों की तरह इधर उधर हो जाया करते थे। क़तादा (रह.) का क़ौल है कि वहाँ तो कुछ उगता ही न था। सूरज के निकलने के वक़्त वह पानी में चले जाते और ज़वाल के बाद दूरदराज़ अपनी खेतियों वग़ैरह में मशग़ूल हो जाते। (तब्री : 18/100) सलमा (रह.) का क़ौल है कि उनके कान बड़े बड़े थे एक ओढ़ लेते एक बिछा लेते। क़तादा (रह.) कहते हैं यह वहशी हब्शी थे।

इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि वहाँ कभी कोई मकान या दीवार या एहाता न बना। सूरज के निकलने के वक़्त यह लोग पानी में घुस जाते वहाँ कोई पहाड़ भी नहीं था। पहले किसी वक़्त उनके पास एक लश्कर पहुँचा तो उन्होंने उनसे कहा कि देखो! सूरज निकलते वक़्त बाहर न ठहरना, उन्होंने कहा, नहीं! हम तो रात ही रात यहाँ से चले जाएँगे लेकिन यह तो बतलाओ कि यह हड्डियों के चमकीले ढेर कैसे हैं? उन्होंने कहा कि यहाँ पहले एक लश्कर आया था सूरज के निकलने के वक़्त वह यहीं ठहरा रहा, सब मर गए यह उनकी हड्डियाँ हैं, यह सुनते ही वह वहाँ से वापिस हो गए। फिर फ़र्माता है कि ज़ुल क़रनैन की उसके साथियों की कोई हरकत कोई गुफ़्तार और रफ़्तार हम पर पोशीदा न थी। भले उसका लाव लश्कर बहुत था और ज़मीन के हर हिस्से पर फैला हुआ था लेकिन हमारा इल्म ज़मीनो आसमान पर हावी है हमसे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है। (तब्री : 18/101)

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۝٩٢ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ
يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ۝٩٣ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ
فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝٩٤ قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ
خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝٩٥ اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا
سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ
قِطْرًا ۝٩٦

तर्जुमा : ''वह फिर एक सफ़र का सामान में लगा। (92) यहाँ तक कि जब दो दीवारों के बीच पहुँचा दोनों के अधर (अलावा) उसने एक ऐसी क़ौम पायी जो बात समझने के क़रीब भी न थी। (93) उन्होंने कहा कि ऐ ज़ुल्क़रनैन! याजूज माजूज इस मुल्क में बड़ा फ़साद मचाते हैं तो क्या हम आपके लिए कुछ सरमाया इकट्ठा कर दें? इस शर्त पर कि आप हममें और उनमें कोई दीवार बना दें। (94) उन्होंने जवाब दिया कि मेरे इख़्तियार में मेरे परवरदिगार ने जो कर रखा है वही बेहतर है तुम सिर्फ़ अपनी कुव्वत ताक़त से मेरी मदद करो मैं तुममें और उनमें मज़बूत दीवार बना देता हूँ। (95) मुझे लोहे की चादरें ला दो। यहाँ तक कि जब उन दोनों पहाड़ों के बीच यह दीवार बराबर कर दी तो हुक्म दिया कि आग तेज़ जलाओ यहाँ तक कि लोहे की उन चादरों को बिलकुल आग कर दिया तो फ़र्माया मेरे पास लाओ उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूँ।'' (96)

ज़ुलक़रनैन दो दीवारों के पास पहुँचे (आयत 92 से 96) : अपने मश्रिक़ी सफ़र को ख़त्म करके फिर ज़ुल क़रनैन वहीं शिमाल की तरफ़ एक राह चले देखा कि दो पहाड़ हैं जो मिले हुए हैं लेकिन उनके बीच घाटी है जहाँ से याजूज माजूज निकल कर तुर्कों पर तबाही डाला करते हैं, उन्हें क़त्ल करते हैं, खेत बाग़ात तबाह करते हैं, बाल बच्चों को भी हलाक करते हैं और सख़्त फ़साद मचाते हैं। याजूज माजूज भी इंसान हैं जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस से साबित है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल हज़रत आदम (عليه السلام) से कहेगा कि ऐ आदम (عليه السلام)! आप लब्बैक व सअदैक के साथ जवाब देंगे। हुक्म होगा आग का हिस्सा अलग कर। पूछेंगे कितना हिस्सा? हुक्म होगा हर हज़ार में से 999 दोज़ख़ में और एक जन्नत में। यही वह वक़्त होगा कि बच्चे बूढ़े हो जाएँगे और हर हामिला का हमल गिर जाएगा।'' फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ''तुम में दो उम्मतें हैं कि वह जिनमें हों उन्हें कसरत को पहुँचा देती हैं यानी याजूज माजूज।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब (इन्ना ज़लज़लतस्साअति शैउन अज़ीम) : 6530; सहीह मुस्लिम : 222; तिर्मिज़ी : 3169; अहमद : 3/32)

इमाम नववी (रह.) ने शरह सहीह मुस्लिम में एक अजीब बात लिखी है वह लिखते हैं कि हज़रत आदम (عليه السلام) के ख़ास पानी के चंद क़तरे जो मिट्टी में गिरे थे उन ही से याजूज माजूज पैदा किये गए हैं गोया वह हज़रत आदम और हज़रत हव्वा (عليه السلام) की नस्ल से नहीं बल्कि सिर्फ़ नस्ले आदम से हैं। लेकिन यह याद रहे कि यह क़ौल बिलकुल ही ग़रीब है, न उस पर अक़्ली दलील है, न नक़्ली और ऐसी बातें जो अहले किताब से पहुँचती हैं वह मानने के क़ाबिल नहीं होतीं बल्कि उनके यहाँ ऐसे के क़िस्से मिलावटी और बनावटी होते हैं, वल्लाहु आलम! मुस्नद अहमद में हदीस है कि हज़रत नूह (عليه السلام) के तीन लड़के थे साम हाम और याफ़िस। साम की नस्ल से कुल अरब हैं और हाम की नस्ल से कुल हब्शी हैं और याफ़िस की नस्ल से कुल तुर्क हैं। (अहमद : 5/11; तिर्मिज़ी किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिस्साफ़्फ़ात : 3231; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा रावी मुदल्लस है और सिमाअ की सराहत नहीं है। अल्मुअजमुल कबीर : 6871) कुछ उलमा का क़ौल है कि याजूज माजूज तुर्कों के उस जद्दे आला याफ़िस की ही औलाद हैं। उन्हें तुर्क इसलिए कहा गया है कि उन्हें बवजह उनके फ़साद और शरारत के इंसानों की और आबादी के पसे पुश्त पहाड़ों की आड़ में छोड़ दिया गया था।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने ज़ुल क़रनैन के सफ़र के बारे में और उस दीवार के बनाने के बारे में और याजूज माजूज के जिस्मों उनकी शक्लों उनके कानों वग़ैरह के बारे मे वहब बिन मुनब्बा से एक बहुत लम्बा चौड़ा वाक़िया अपनी तफ़्सीर में बयान किया है जो अजीबो ग़रीब होने के अलावा सेहत से दूर है। इब्ने अबी हातिम में भी ऐसे बहुत से वाक़ियात दर्ज हैं लेकिन सब ग़रीब और ग़ैर सहीह हैं। उन पहाड़ों के दर्रे में ज़ुल क़रनैन ने इंसानों की एक आबादी पायी जो बवजहे दुनिया के और लोगों से दूरी के और उनकी अपनी मख़्सूस ज़ुबान के औरों की बात भी तक़रीबन नहीं समझ सकते थे। उन लोगों ने ज़ुल क़रनैन की कुव्वत व ताक़त अक़्ल व हुनर को देखकर दरख़्वास्त की कि अगर आप रज़ामंद हों तो हम आपके लिए बहुत सा माल जमा कर दें और आप इन पहाड़ों के बीच की घाटी को किसी मज़बूत दीवार से बंद कर दें ताकि हम इन फ़सादियों की रोज़मर्रा की इन तकलीफ़ों से बच जाएँ। इसके जवाब में हज़रत ज़ुल्क़रनैन ने फ़र्माया, मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं, अल्लाह का दिया सब कुछ मेरे पास मौजूद है और वह तुम्हारे माल से बहुत बेहतर है। यही जवाब हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की तरफ़ से मलिका सबा के क़ासिदों को दिया गया था। ज़ुल्क़रनैन ने अपने इस जवाब के बाद फ़र्माया कि हाँ! तुम अपनी कुव्वत और ताक़त और काम काज से मेरा साथ दो तो मैं तुममें और उनमें एक मज़बूत दीवार खड़ी कर देता हूँ (ज़ुबर) जमा है (ज़ुब्रत) की। ज़ुल्क़रनैन फ़र्माते हैं कि लोहे के टुकड़े ईंटों की तरह के मेरे पास लाओ जब यह टुकड़े जमा हो गए तो आपने दीवार बनानी शुरू करा दी और वह लम्बाई चौड़ाई में इतनी हो गई कि तमाम जगह घिर गई और पहाड़ की चोटी के बराबर पहुँच गई। इसके लम्बाई चौड़ाई और मोटाई की नाप में बहुत से मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं।

ज़ुल्क़रनैन ने सीसा पिलाई हुई दीवार बनाई : जब यह दीवार बिलकुल बन गई तो हुक्म दिया कि अब इसके चारों तरफ़ आग भड़काओ जब वह लोहे की दीवार बिलकुल अंगारे जैसी लाल हो गयी तो हुक्म दिया कि अब पिघला हुआ तांबा लाओ और हर तरफ़ से इसके ऊपर बहा दो, चुनाँचे यह भी किया गया पस ठण्डी

होकर यह दीवार बहुत ही मज़बूत और पुख़्ता हो गई और देखने में ऐसी मालूम होने लगी जैसे कोई धारीदार चादर हो। इब्ने जरीर में है कि एक सहाबी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैंने वह दीवार देखी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, कैसी है?'' उसने कहा धारीदार चादर जैसी जिसमें लाल व काले धारियाँ हैं तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ठीक है'' लेकिन यह रिवायत मुर्सल है।

ख़लीफ़ा वासिक़ ने अपने ज़माने में अपने अमीरों को एक वाफ़िर (बड़ा) लश्कर और बहुत सा सामान देकर रवाना किया था कि वह उस दीवार की ख़बर लायें। यह लश्कर दो साल से ज़्यादा सफ़र में रहा और मुल्क दर मुल्क फिरता हुआ आख़िरकार उस दीवार तक पहुँचा देखा कि लोहे और तांबे की दीवार है उसमें एक बहुत बड़ा निहायत पुख़्ता अज़ीमुश्शान दरवाज़ा भी उसी का है जिस पर मनों वज़नी क़ुफ़्ल (ताला) लगे हुए हैं और जो माल मसाला दीवार का बचा हुआ है वहीं पर एक बुर्ज में रखा हुआ है जहाँ पहरा चौकी मुक़र्रर है। दीवार बेहद बुलंद है, कितनी ही कोशिश की जाए लेकिन उस पर चढ़ना नामुम्किन है, उससे मिला हुआ पहाड़ियों का सिलसिला दोनों तरफ़ बराबर चला गया है और भी बहुत से अजाइब व ग़राइब उमूर देखे जो उन्होंने वापिस आकर ख़लीफ़ा को बताये।

***

فَمَا اسْطَاعُوٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا

جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ

بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

तर्जुमा : ''पस न तो उनमें दीवार के ऊपर चढ़ने की ताक़त है और न उसमें कोई छेद कर सकते हैं। (97) कहा कि यह सिर्फ़ मेरे रब की मेहरबानी है। हाँ! जब मेरे रब का वादा आएगा तो उसे ज़मीनदोज़ कर देगा, बेशक मेरे रब का वादा सच्चा और हक़ है। (98) उस दिन हम इन्हें आपस में एक दूसरे में धंसते हुए छोड़ देंगे और सूर फूँक दिया जाएगा पस सबको इकट्ठा करके हम जमा कर लेंगे।'' (99)

याजूज माजूज और दीवार (आयत 97 से 99) : उस दीवार पर न तो चढ़ने की ताक़त याजूज माजूज को है न वह उसमें कोई सूराख़ कर सकते हैं कि वहाँ से निकल आएँ। चूँकि चढ़ना बनिस्बत तोड़ने के ज़्यादा आसान है इसलिए चढ़ने में (मस्ताऊ) का लफ़्ज़ लाए और तोड़ने में (मस्तताऊ) का लफ़्ज़ लाये। ग़र्ज़ न तो वह चढ़ कर आ सकते हैं, न सूराख़ करके। मुस्नद अहमद में हदीस है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हर रोज़ याजूज माजूज उस दीवार को खोदते हैं यहाँ तक कि क़रीब होता है कि सूरज की शुआएँ उनको नज़र आ जाएँ चूँकि दिन गुज़र जाता है इसलिए उनके सरदार का हुक्म होता है कि अब बस करो कल आकर तोड़ देंगे लकिन

जब वह दूसरे दिन आते हैं तो उसे पहले दिन से ज़्यादा मज़बूत पाते हैं, क़ियामत के क़रीब जब उनका निकालना अल्लाह तआला को मंज़ूर होगा तो यह खोदते हुए जब छिल्के जैसी कर देंगे तो उनका सरदार कहेगा अब छोड़ दो कल इंशाअल्लाह! इसे तोड़ डालेंगे। पस इंशाअल्लाह कह लेने की बरकत से दूसरे दिन जब वह आएँगे तो जैसी छोड़ गए थे वैसी ही पाएँगे फ़ौरन गिरा देंगे और बाहर निकल पड़ेंगे, तमाम पानी चाट जाएँगे लोग तंग आकर क़िलों में पनाह ले लेंगे। यह अपने तीर आसमानों की तरफ़ चलाएँगे और मिस्ल ख़ून आलूद तीरों के उनकी तरफ़ लौटाए जाएँगे तो यह कहेंगे, ज़मीन वाले सब दब गए, आसमान वालों पर भी हम ग़ालिब आ गये। अब इनकी गर्दनों मे गुठलियाँ निकलेंगे और सबके सब बहुक्मे रब्बानी उसी बीमारी से हलाक कर दिये जाएँगे, उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है कि ज़मीन के जानवरों की ख़ूराक उनके जिस्म व ख़ून होंगे जिससे वह ख़ूब मोटे ताज़े हो जाएँगे।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल कहफ़ : 3153; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 4080; अहमद : 2/510; हाकिम : 4/488) इब्ने माजा में भी यह रिवायत है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) भी इसे लाए हैं और फ़र्माया है यह रिवायत ग़रीब है सिवाय इस सनद के मशहूर नहीं। इसकी सनद बहुत क़वी है लेकिन इसका मतन नकारत से ख़ाली नहीं इसलिए कि आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ साफ़ हैं कि न वह चढ़ सकते हैं न वह सूराख़ कर सकते हैं क्योंकि दीवार निहायत मज़बूत बहुत पुख़्ता और सख़्त है।

कअब अहबार (रज़ि.) से मरवी है कि याजूज माजूज रोज़ाना उसे चाटते हैं और बिलकुल छिल्के जैसी कर देते हैं , फिर कहते हैं चलो कल तोड़ देंगे। दूसरे दिन आते हैं तो जैसी असल में थी वैसी ही पाते हैं। आख़िरी दिन वह बइल्हामे इलाही जाते वक़्त इंशाअल्लाह कहेंगे। दूसरे दिन जो आएँगे तो जैसी छोड़ गए थे वेसी ही पाएँगे और तोड़ डालेंगे। बहुत मुम्किन है कि उन ही कअब (रज़ि.) से हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने यह बात सुनी हो फिर बयान की हो और किसी रावी को वहम हो गया हो और उसने हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान समझकर उसे मरफ़ूअन बयान कर दिया हो, वल्लाहु आलम! यह जो हम कह रहे हैं इसकी ताईद उस हदीस से भी होती हे जो मुस्नद अहमद में है कि ''एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) नींद से बेदार हुए चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो रहा था और फ़र्माते जाते थे (ला इलाहा इल्लल्लाह) अरब की ख़राबी का वक़्त क़रीब आ गया आज याजूज माजूज की दीवार में इतना सूराख़ हो गया।'' फिर आप (ﷺ) ने अपनी उँगलियों से हल्क़ा बनाकर दिखाया। इस पर उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ेनब बिन्ते जहश (रज़ि.) ने सवल किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम भले लोगों की मौजूदगी में भी हलाक कर दिये जाएँगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हाँ! जब ख़बीस लोगों की ज़्यादती हो जाए।'' (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़िस्सतु याजूजा व माजूज : 3346; सहीह मुस्लिम : 2880; तिर्मिज़ी : 687; इब्ने माजा : 3953; अहमद : 6/428) यह हदीस बिलकुल सही है बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में है। हाँ! बुख़ारी में रावियों के ज़िक्र में हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) का ज़िक्र नहीं, मुस्लिम में है और भी इसकी सनद में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो बहुत ही कम पायी गई हैं।

मस्लन ज़ोहरी (रह.) की रिवायत उर्वा से हालाँकि यह दोनों बुज़ुर्ग ताबेई हैं और चार औरतों का आपस में एक दूसरे से रिवायत करना फिर चारों औरतें सहाबिया (रज़ि.) फिर उनमें भी दो हुज़ूर (ﷺ) की बीवियों की लड़कियाँ और दो आपकी बीवियाँ (रज़ि.)। बज़्ज़ार में यही रिवायत हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से भी मरवी है। (मुतर्जिम कहता है इस तकल्लुफ़ की और इन मरफ़ूअ हदीसों के बारे में इस क़ौल की ज़रूरत ही

क्या है? हम आयते क़ुरआन और इन सहीह मरफ़ूअ हदीसों के बीच बहुत आसानी से यह तत्बीक़ दे सकते हैं कि वह कोई ऐसा सूराख़ नहीं कर सकते जिसमें से निकल आएँ। पतली कर देना या हल्के के बराबर सूराख़ कर देना और बात है जो मक़सूद ज़ुल्क़रनैन का उस दीवार के बनाने से था वह बफ़ज़्लिही तआला हासिल है कि न वह ऊपर से उतर सकें न तोड़कर या सूराख़ करके निकल सकें और उसी की ख़बर आयत में है और उसके ख़िलाफ़ कोई हदीस नहीं, वल्लाहु आलम! मुतर्जिम

उस दीवार को बनाकर ज़ुल्क़रनैन इत्मिनान का सांस लेते हैं और अल्लाह का शुक्र करते हैं और फ़र्माते हैं कि लोगों! यह भी रब की रहमत है कि उसने इन शरीरों की शरारत से मख़्लूक़ को अब अमन दे दिया। हाँ! जब अल्लाह का वादा आ जाएगा तो उसका ढेर हो जाएगा और यह ज़मीन दोज़ हो जाएगी, मज़बूती कुछ काम न आएगी। ऊँटनी का कोहान जब उसकी पीठ से मिला हो तो अरब में उसे (नाक़त दक्काउ) कहते हैं।

क़ियामत के क़रीब यह दीवार चूरा चूरा हो जाएगी : क़ुरआन में और जगह है कि जब हज़रत मूसा (عليه السلام) के सामने पहाड़ पर रब ने तजल्ली की तो वह पहाड़ ज़मीनदोज़ हो गया। वहाँ भी लफ़्ज़ (जअलहू दक्का) पस क़ियामत के क़रीब यह दीवार चूरा चूरा हो जाएगी और उनके निकलने का रास्ता हो जाएगा। अल्लाह के वादे अटल हैं क़ियामत का आना यक़ीनी है। उस दीवार के टूटते ही यह लोग निकल पड़ेंगे और लोगों में घुसे जाएँगे, यगानों बेगानों की तमीज़ उठ जाएगी। यह वाक़िया दज्जाल के आ जाने के बाद क़ियामत के क़याम से पहले होगा, उसका पूरा बयान आयत (حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَ هُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝)(21/अम्बिया : 96) की तफ़्सीर में आएगा, इंशाअल्लाह!

जब सूर फूँका जाएगा : उसके बाद सूर फूँका जाएगा और सब जमा हो जाएँगे यह भी कहा गया है कि मुराद यह है कि क़ियामत के दिन इंसान जिन्न सब ख़लत मलत हो जाएँगे, बनी फ़ुज़ारा के एक शेख़ का बयान इब्ने जरीर में है कि जब जिन्न व इंसान आपस में गुत्थ जाएँगे उस वक़्त इब्लीस कहेगा कि मैं जाता हूँ, मालूम करता हूँ कि क्या बात है? मश्रिक़ की तरफ़ भागेगा लेकिन वहाँ फ़रिश्तों की जमाअतों को देखकर रुक जाएगा और लौटकर मग़्रिब को पहुँचेगा, वहाँ भी यही रंग देखकर दाएँ बाएँ भागेगा लेकिन चारों तरफ़ से फ़रिश्तों का घेराव देखकर ना उम्मीद होकर चीख़ व पुकार शुरू कर देगा, अचानक उसे एक छोटा सा रास्ता दिखाई देगा, अपनी सारी ज़ुर्रियात को लेकर उसमें चल पड़ेगा, आगे जाकर देखेगा कि दोज़ख़ भड़क रही है। एक दारोग़ा जहन्नम उससे कहेगा कि ऐ मूज़ी ख़बीस! क्या अल्लाह तआला ने तेरा दर्जा नहीं बढ़ाया था? क्या तू जन्नतियों में न था, यह कहेगा कि आज डाँट डपट क्यूँ कर रहो हो, आज तो छुटकारे का रास्ता बतलाओ। मैं इबादते रब्बानी के लिए तैयार हूँ अगर हुक्म हो तो इतनी और ऐसी इबादतें करूँ कि रूए ज़मीन पर किसी ने न की हो। दारोग़ा कहेगा, अल्लाह तआला तेरे लिए एक फ़रीज़ा मुक़र्रर करता है। वह ख़ुश होकर कहेगा, मैं उसके हुक्म की बजाआवरी के लिए पूरी मुस्तअदी से मौजूद हूँ। हुक्म होगा कि यही कि तुम सब जहन्नम में चले जाओ।

अब यह ख़बीस हक्का बक्का रह जाएगा, वहीं फ़रिश्ते अपने पर से उसे और उसकी ज़ुर्रियत को घसीटकर जहन्नम में डाल देंगे। जहन्नम उन्हें लेकर दबोचेगी और एक मर्तबा तो वह चिल्लाएगी कि तमाम फ़रिश्ते और तमाम रसूल व नबी (عليه السلام) घुटनो के बल अल्लाह के सामने आजिज़ी में गिर जाएँगे। तब्रानी में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''याजूज माजूज हज़रत आदम (عليه السلام) की नस्ल से हैं अगर वह छोड़ दिये जाएँ

तो दुनिया की मआश में फ़साद डाल दें एक एक अपने पीछे हज़ार हज़ार बल्कि ज़्यादा छोड़कर मरता है फिर उनके सिवा तीन उम्मतें और हैं तावील, तायिस और मुंसिक।'' (तयालिसी : 2282; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस व अन्अन) यह हदीस ग़रीब है बल्कि मुंकर और ज़ईफ़ है।

और नसाई में है कि ''उनकी बीवियाँ हैं, बच्चे हैं एक एक अपने पीछे हज़ार हज़ार बल्कि ज़्यादा छोड़कर मरता है।'' (सुननुल कुब्रा : 11334; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने अम्र बिन ओस बिन अबी ओस नामालूम है।) फिर फ़र्माया, सूर फूँक दिया जाएगा। हदीस में है कि ''वह एक क़र्न है जिसमें फूँक दिया जाएगा। (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब ज़िक्रुल बअस वस्सूर : 2742; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 2430; दारमी : 2/325; इब्ने हिब्बान : 2570; हाकिम : 2/436; अहमद : 2/162) फूँकने वाले हज़रत इस्राफ़ील (عليه السلام) होंगे।''(ज़ईफ़ देखिए सूरह अन्आम आयत 73 की तफ़्सीर) जैसे कि लम्बी हदीस बयान हो चुकी है। और भी बहुत सी हदीसों से इसका सबूत है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मैं कैसे चेन और आराम से बैठूँ? सूर वाला फ़रिश्ता सूर को मुँह से लगाये हुए पेशानी झुकाये हुए कान लगाए हुए मुंतज़िर बैठा है कि कब हुक्म हो और फूँक दूँ।'' लोगों ने पूछा हुज़ूर (ﷺ)! फिर हम क्या कहें? फ़र्माया (हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील, अलल्लाहि तवक्कल्ना) (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब मा जाअ फ़ी (शअने) सूर : 2431; वहुव ज़ईफ़ुन; अतिया औफ़ी रावी ज़ईफ़ है। सुननुल कुब्रा : 10462; अहमद : 6/25) फिर फ़र्माता है हम सबको हिसाब के लिए जमा करेंगे सबका हश्र हमारे सामने होगा। जैसे सूरह वाक़िया में है कि अगले पिछले सबके सब मुक़र्रर दिन के वक़्त पर इकट्ठे किये जाएँगे।(56/वाक़िया : 49, 50) और आयत में है (وَّ حَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۚ) (18/कहफ़ : 47) हम सबको जमा करेंगे एक भी तो बाक़ी न बचेगा।

***

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَىِٕذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضَا ۙ﴿۱۰۰﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَاۤءٍ عَنْ ذِكْرِيْ
وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ۙ﴿۱۰۱﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْۤ
اَوْلِيَاۤءَ ؕ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿۱۰۳﴾
اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾
اُولٰۤىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۤىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾ ذٰلِكَ جَزَاۤؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْۤا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿۱۰۶﴾

तर्जुमा : "उस दिन हम जहन्नम को भी काफ़िरों के सामने ला खड़ा कर देंगे। (100) जिनकी आखें मेरी याद से पर्दे में थीं और (अम्रे हक़) सुन भी नहीं सकते थे। (101) क्या काफ़िर यह ख़याल किये बैठे हैं कि मेरे सिवा वह मेरे गुलामों को अपना हिमायती बना लेंगे? सुनो! हमने तो इन कुफ़्फ़ार की मेहमानी के लिए जहन्नम को तैयार कर रखा है। (102) पूछ ले कि अगर तुम कहो तो मैं तुम्हें बता दूँ कि बाऐतिबार आमाल के सबसे ज़्यादा ख़सारे में कौन हैं? (103) वह हैं कि जिनकी दुनियावी ज़िन्दगी की तमामतर कोशिशें बेकार हो गईं और वह उसी गुमान में रहे कि वह बहुत अच्छे काम कर रहे हैं। (104) यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों से और उसकी मुलाक़ात से कुफ़्र किया तो उनके तमाम आमाल ग़ारत हो गये पस क़ियामत के दिन हम उनका कोई वज़न क़ायम न करेंगे। (105) हाल ये है कि उनका बदला जहन्नम है क्योंकि उन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ बनाया। (106)

कुफ़्फ़ार को पहले जहन्नम दिखाई जाएगी (आयत 100 से 106) : काफ़िर जहन्नम में जाए उससे पहले जहन्नम को और उसके अज़ाबों को देख लेंगे और यह यक़ीन करके कि वह उसी में दाख़िल किये जाएँगे, दाख़िल होने से पहले ही जलने कुढ़ने लगेंगे, ग़म व रंज डर ख़ौफ़ के मारे घुलने लगेंगे। सहीह मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि "जहन्नम को क़ियामत के दिन घसीटकर लाया जाएगा जिसकी सत्तर हज़ार लगामें होंगे, हर हर लगाम पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा : 2842) यह काफ़िर दुनिया की सारी ज़िन्दगी में अपनी आँखों और कानों को बेकार किये बैठे रहे, न हक़ को देखा न हक़ को सुना न माना न अमल किया। शैतान का साथ दिया और रहमान के ज़िक्र से ग़फ़लत बरती। अल्लाह के अहकाम और मुमानिअत को पसे पुश्त डाले रहे यही समझते रहे कि उनके झूठे मअबूद ही उन्हें सारे नफ़ा पहुँचाएँगे और कुल सख़्तियाँ दूर करेंगे, महज़ ग़लत ख़्याल है बल्कि वह तो उनकी इबादत के भी मुंकिर हो जाएँगे और उनका दुश्मन बन जाएँगे। उन काफ़िरों की मंज़िल तो जहन्नम ही है जो अभी से तैयार है।

आमाल के लिहाज़ से ज़्यादा घाटे में कौन हैं : हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से उनके साहबज़ादे मुस्अब (रज़ि.) ने सवाल किया कि क्या इस आयत से मुराद ख़ारजी हैं? आपने फ़र्माया, नहीं! बल्कि मुराद इससे यहूदो ईसाई हैं। यहूदियों ने हुज़ूर (ﷺ) को झुठलाया और ईसाईयों ने जन्नत को सच्चा न जाना और कहा कि वहाँ खाना पीना कुछ नहीं। हाँ! ख़ारजियों ने अल्लाह के वादे को उसकी मज़बूती के बाद तोड़ दिया। पस हज़रत सअद (रज़ि.) ख़ारजियों को फ़ासिक कहते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल कहफ़, बाब क़ौलुहू (कुल हल नुनब्बिउकुम बिल अख़सरीना आमाला) : 4728) हज़रत अली (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं इससे मुराद ख़ारजी हैं। (तब्री : 18/127) मतलब यह है कि जैसे यह आयत यहूदो नसारा वग़ैरह को शामिल है उसी तरह ख़ारजियों का हुक्म भी उसमें है क्योंकि आयत आम है जो भी अल्लाह की इबादत व इताअत उस तरीक़े से बजा लाए जो तरीक़ा अल्लाह को पसंद नहीं तो भले वह अपने आमाल से ख़ुश हो और समझ रहा हो कि मैंने आख़िरत का सामान बहुत ज़्यादा कर लिया है मेरे नेक आमाल अल्लाह

के पसंदीदा हैं और मुझे उन पर अज्रो सवाब ज़रूर मिलेगा लेकिन उसका यह गुमान ग़लत है, उसके आमाल क़बूल नहीं होने के बल्कि मर्दूद हैं और वह ग़लत गुमान शख़्स है। यह आयत मक्की है और ज़ाहिर है कि मक्का में यहूदो नसारा मुख़ातब न थे और ख़ारजियों का तो उस वक़्त तक वुजूद भी न था। पस उन बुज़ुर्गों का यही मतलब है कि आयत के आम अल्फ़ाज़ उन सबको और उन जैसे और सबको शामिल हैं।

जैसे सूरह ग़ाशिया में है कि क़ियामत के दिन बहुत से चेहरे ज़लीलो ख़्वार होंगे, जो दुनिया में बहुत मेहनत करने वाले बल्कि आमाल से थके हुए थे और सख़्त तक्लीफ़ें उठाये हुए थे। (88/ग़ाशिया : 2 से 4) आज वह बावजूद रियाज़त व इबादत के जहन्नम में दाख़िल होंगे और भड़कती हुई आग में डाल दिये जाएँगे और आयत में है (وَقَدِمْنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَٰهُ هَبَآءً مَّنثُورًا ﴿٢٣﴾) (25/फ़ुरक़ान : 23) इनके तमाम किये कराये आमाल को हमने आगे बढ़कर रद्दी और बेकार कर दिया। और आयत में है काफ़िरों के आमाल की मिसाल ऐसी ही है जैसे कोई प्यासा रेत के तोदे को दूर से पानी समझ रहा हो लेकिन जब पास आता है तो एक बूँद भी पानी की नहीं पाता। (24/नूर : 29) यह वह लोग हैं जो अपने तौर पर इबादत व रियाज़त तो करते रहे और दिल में भी समझते रहे कि हम बहुत कुछ नेकियाँ कर रहे हैं और वह मक़्बूल और अल्लाह की पसंदीदा हैं लेकिन चूँकि वह अल्लाह के ब तलाये हुए तरीक़ों के मुताबिक़ न थीं नबियों के फ़र्मान के मुताबिक़ न थीं, इसलिए बजाए मक़्बूल होने के मर्दूद हो गईं और वह बजाए महबूब होने के मग़ज़ूब हो गईं। इसलिए कि वह अल्लाह की आयतों को झुठलाते रहे, अल्लाह की वहदानियत और उसके रसूल की रिसालत के तमामतर सबूत उनके सामने थे लेकिन उन्होंने आँखें बन्द कर लीं और मानकर ही न दिया। उनका नेकी का पलड़ा बिलकुल ख़ाली रहेगा।

बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है "क़ियामत के दिन एक मोटा ताज़ा बड़ा भारी आदमी आएगा लेकिन अल्लाह के नज़दीक उसका वज़न एक मच्छर के पर के बराबर भी न होगा, फिर आपने फ़र्माया तुम अगर चाहो इस आयत की तिलावत कर लो (फ़ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना) (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल कहफ़ (ऊलाइकल्लज़ीना कफ़रू बि आयाति रब्बिहिम व लिक़ाइही फ़ हबितत आमालुहुम...) : 4729) इब्ने अबी हातिम की रिवायत में है "बहुत ज़्यादा खाने-पीने वाले मोटे ताज़े इंसान को क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने लाया जाएगा लेकिन उसका वज़न अनाज के एक दाने के बराबर भी न होगा।" फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़र्माई। (तब्री : 18/129) बज़्ज़ार में है एक क़ुरेशी काफ़िर अपने हुल्ले में इतराता हुआ हुज़ूर (ﷺ) के सामने से गुज़रा तो आप (ﷺ) ने हज़रत बुरैदा (रज़ि.) से फ़र्माया, "यह उनमें से है जिनका कोई वज़न क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के पास न होगा।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2956; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/125) मरफ़ूअ हदीस की तरह हज़रत कअब (रज़ि.) का क़ौल भी मरवी है यह बदला है उनके कुफ़्र का और अल्लाह की आयतों और उसके रसूलों को हंसी मज़ाक़ में उड़ाने का और उनके न मानने बल्कि उन्हें झुठलाने का।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝١٠٧ خَالِدِينَ
فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝١٠٨ قُل لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ
أَن تَنفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝١٠٩ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا
إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَمَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ
بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝١١٠

तर्जुमा : "जो लोग ईमान लाए और उन्होंने काम भी अच्छे किये यक़ीनन उनके लिए जन्नतुल फ़िरदौस के बाग़ात की मेहमानी है। (107) जहाँ वह हमेशा रहेंगे जिस जगह को बदलने का कभी भी उनका इरादा न होगा। (108) कह दे कि अगर मेरे परवरदिगार की बातों के लिखने के लिए समुन्द्र स्याही बन जाए तो वह भी मेरे रब की बातों के ख़त्म होने से पहले ही ख़त्म हो जाएगा भले हम उसी जैसा और भी उसकी मदद में लाएँ। (109) ऐलान कर दे कि मैं तो तुम जैसा ही एक इंसान हूँ, हाँ! मेरी जानिब वही की जाती है। कि सबका मअबूद सिर्फ़ एक ही मअबूद है, तो जिसे भी अपने परवरदिगार से मिलने की आरज़ू हो उसे चाहिए कि नेक आमाल करता रहे और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को भी शरीक न करे।" (110)

नेक लोगों की मेहमानी (आयत 107 से 110) : अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाले, उसके रसूलों को सच्चा मानने वाले, उनकी बातों पर अमल करने वाले बेहतरीन जन्नतों में होंगे। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "जब तुम अल्लाह से जन्नत माँगो तो जन्नतुल फ़िरदौस का मांगा करो यह सबसे आला सबसे उम्दा जन्नत है, इसी से और जन्नतों की नहरें बहती हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब दरजातुल मुजाहिदीना फ़ी सबीलिल्लाहि : 2790; अहमद : 2/335; इब्ने हिब्बान : 4611) यही उनकी मेहमान ख़ाना होगी यह यहाँ हमेशा के लिए रहेंगे न निकाले जाएँ, न निकलने की आरज़ू करें, न उससे बेहतर कोई और जगह न वह वहाँ के रहने से घबराए।" क्योंकि हर तरह के आला ऐशो इशरत मुहय्या हैं, एक पर एक रहमत मिल रही है रोज़ बरोज़ रग़बत व मुहब्बत उंस व उल्फ़त बढ़ती जा रही है इसलिए न तबीयत उकताती है न दिल भरता है बल्कि रोज़ शौक़ बढ़ता है और नई नेअमत मिलती है।

सात समुन्द्रों की स्याही भी रब की तअरीफ़ नहीं लिख सकती : हुक्म होता है कि अल्लाह की अज़्मत समझाने के लिए दुनिया में ऐलान कर दीजिए कि अगर रूए ज़मीन के समुन्द्रों को स्याही बना ले और फिर इलाही कलिमाते इलाही कुदरतों के इज़्हार अल्लाह की बातें, अल्लाह की हिक्मतें लिखनी शुरू की जाएँ तो

यह तमाम स्याही ख़त्म हो जाएगी लेकिन अल्लाह की तअ़रीफ़ें ख़त्म न होंगी। भले फिर ऐसे ही दरिया लाये जाए और फिर लाये जाएँ और फिर लाये जाएँ लेकिन नामुम्किन है कि अल्लाह की कुदरतें उसकी हिक्मतें उसकी दलीलें ख़त्म हो जाएँ। चुनाँचे अल्लाह तआला जल्ल शानुहू का फ़र्मान है (وَ لَوْ اَنَّ مَا فِی الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّ الْبَحْرُ یَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ) (31/लुक़मान : 27) यानी रूए ज़मीन के दरख़्तों की क़लमें बन जाएँ और तमाम समुन्द्रों की स्याहियाँ बन जाएँ फिर उनके बाद सात समुन्द्र और भी लाये जाएँ लेकिन नामुम्किन है कि कलिमाते इलाही पूरे लिख लिये जाएँ। अल्लाह की इ़ज़्ज़त और हिक्मत उसका ग़ल्बा और कुदरत वही जानता है तमाम इंसानों का इ़ल्म अल्लाह के इ़ल्म के मुक़ाबले में इतना भी नहीं जितना समुन्द्र के मुक़ाबले में बूँद। तमाम दरख़्तों की क़लमें घिस घिसकर ख़त्म हो जाएँ, तमाम समुन्द्रों की स्याहियाँ ख़त्म हो जाएँ लेकिन कलिमाते इलाही वैसे ही रह जाएँगे जैसे थे वह अनगिनत हैं, बेशुमार हैं।

कौन है जो अल्लाह की सही और पूरी क़द्रो इ़ज़्ज़त जान सके? कौन है जो उसकी पूरी सना व सिफ़त बजा ला सके? बेशक हमारा रब वैसा ही है जैसा वह ख़ुद फ़र्मा रहा है बेशक हम जो तअ़रीफ़ें उसकी करें वह उन सबसे सिवा है और उन सबसे बढ़ चढ़कर है। याद रखो जिस त़रह़ सारी ज़मीन के मुक़ाबले पर एक राई का दाना है उसी त़रह़ जन्नत की और आख़िरत की नेअ़मतों के मुक़ाबिल तमाम दुनिया की नेअ़मतें हैं।

तमाम पैग़म्बर इंसान थे : ह़ज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान (रज़ि.) का फ़र्मान है कि यह सबसे आख़िरी आयत है जो हुज़ूर (ﷺ) पर उतरी। हुक्म होता है कि आप लोगों से कहें कि मैं तुम जैसा ही एक इंसान हूँ तुम भी इंसान हो अगर मुझे झूठा जानते हो तो लाओ इस कुरआन जैसा एक कुरआन तुम भी बनाकर पेश कर दो। देखो मैं कोई ग़ैबदान तो नहीं तुमने मुझसे जुल्क़रनैन का वाक़िया पूछा, अस्ह़ाबे कहफ़ का क़िस्सा पूछा तो मैं ने उनके सही वाक़ियात तुम्हारे सामने बयान कर दिये जो नफ़्सुल अम्र के मुत़ाबिक़ हैं अगर मेरे पास अल्लाह की वह़ी न आती तो मैं इन गुज़िश्ता वाक़ियात को जिस त़रह वह पेश आये हैं तुम्हारे सामने किस त़रह़ बयान कर सकता? सुनो तमामतर वह़ी का ख़ुलास़ा यह है कि तुम मुवह्हिद बन जाओ, शिर्क छोड़ दो, मेरी दावत यही है जो भी तुममें से अल्लाह से मिलकर अज्रो सवाब लेना चाहता हो, उसे मुत़ाबिक़े शरीअ़त के अ़मल करने चाहिए और शिर्क से बिलकुल बचना चाहिए बग़ैर इन दोनों रुक्न के कोई अ़मल अल्लाह के यहाँ क़ाबिले क़बूल नहीं, ख़ुलूस़ हो और मुत़ाबिक़ते सुन्नत हो।

एक शख़्स़ ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा था कि बहुत से नेक कामों में बावजूद रज़ाए इलाही की तलाश के मेरा इरादा यह भी होता है कि लोग मेरी नेकी देखें तो मेरे लिए क्या हुक्म है? आप (ﷺ) ख़ामोश रहे और यह आयत उतरी। (त़ब्री : 23427; व इब्ने अबी ह़ातिम व सनदुहू ज़ईफ़ुन) यह ह़दीस मुर्सल है। ह़ज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़ि.) से एक शख़्स़ ने सवाल किया कि एक शख़्स़ नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, ख़ैरात, ह़ज्ज, ज़कात अदा करता है, अल्लाह की रज़ामंदी भी ढूँढता है और लोगों में नेक नामी और बड़ाई भी। आपने फ़र्माया, "उसकी सारी इ़बादत बेकार है। अल्लाह तआ़ला शिर्क से बेज़ार है जो उसकी इ़बादत में और निय्यत भी करे तो अल्लाह तआ़ला कह देता है कि यह सब उसी दूसरे को दे दो और मुझे उसकी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।" (त़ब्री : 18/136)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) का बयान है कि हम हुज़ूर (ﷺ) के पास बारी बारी आते रात गुज़ारते कभी आप (ﷺ) को कोई काम होता तो फ़र्मा देते। ऐसे लोग बहुत ज़्यादा होते थे एक रात हम आपस में कुछ बातें कर रहे थे जो रसूले मक़्बूल (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, ''यह क्या खुसर पुसर कर रहे हो'' हमने जवाब दिया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारी तौबा है हम मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे और दिल हमारे ख़ोफ़ज़दा थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मैं तुम्हें उससे भी ज़्यादा दहशतनाक बात बतलाऊँ? वह पोशीदा शिर्क है कि इंसान दूसरे इंसान को दिखाने के लिए नमाज़ पढ़े।''(इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अर्रिया वस्सुम्आ : 4204; वहुव हसन; अहमद : 3/30; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/315)

मुस्नद अहमद में है कि इब्ने ग़नम कहते हैं मैं और हज़रत अबूदर्दा (रज़ि.) जाबिया की मस्जिद में गए, वहाँ हमें हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) मिले, बायें हाथ से तो उन्होंने मेरा दाहिना हाथ थाम लिया और अपने दायें हाथ से हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) का बायाँ हाथ थाम लिया और इसी तरह हम तीनों वहाँ से बातें करते हुए निकले, आप कहने लगे, देखो! अगर तुम तीनों या तुममें से जो भी ज़िन्दा रहा तो मुम्किन है कि उस वक़्त को भी वह देख ले कि हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबान से क़ुरआन सीखा हुआ भला आदमी हलाल का हलाल और हराम को हराम समझने वाला और हर हुक्म को मुनासिब जगह रखने वाला आए और उसकी क़द्रो मंज़िलत लोगों में ऐसी हो जैसे मुर्दा गधे के सर की। अभी यह बातें हो रही थीं जो हज़रत शद्दाद बिन ओस और हज़रत ओफ़ बिन मालिक (रज़ि.) आ गये और बैठते ही हज़रत शद्दाद (रज़ि.) ने फ़र्माया, लोगों! मुझे तो तुम पर सबसे ज़्यादा इसका डर है जो मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना है यानी पोशीदा ख़्वाहिश और शिर्क का। इस पर हज़रत उबादा (रज़ि.) और हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला माफ़ करे हमसे हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया है कि इस बात से शैतान मायूस हो गया है क इस जज़ीरा अरब में उसकी इबादत की जाए हाँ! पोशीदा शह्वात तो यही ख़्वाहिश की चीज़ें औरतें वग़ैरह हैं। लेकिन यह शिर्क हमारी समझ में तो नहीं आया जिससे आप हमें डरा रहे हैं। हज़रत शद्दाद (रज़ि.) कहने लगे कि अच्छा! बतलाओ तो एक आदमी दूसरों को दिखाने के लिए नमाज़, रोज़ा, ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात करता है उसका हुक्म तुम्हारे नज़दीक क्या है? क्या उसने शिर्क किया? सबने जवाब दिया बेशक ऐसा शख़्स मुश्रिक है। आपने फ़र्माया मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि ''जो दुनिया जताने के लिए सदक़ा ख़ैरात करे वह भी मुश्रिक है।'' इस पर हज़रत ओफ़ (रज़ि.) ने कहा क्या यह नहीं हो सकता कि ऐसे आमाल में जो अल्लाह तआला के लिए हों अल्लाह तआला उसे क़बूल कर ले और जो दूसरे के लिए हो उसे रद्द कर दे। हज़रत शद्दाद (रज़ि.) ने जवाब दिया यह हर्गिज़ नहीं होगा मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि जनाब बारी तआला का इर्शाद है कि ''मैं सबसे बेहतर हिस्से वाला हूँ जो भी मेरे साथ किसी अमल में दूसरे को शरीक करे मैं अपना हिस्सा भी उसी दूसरे के सुपुर्द कर देता हूँ और निहायत बेपरवाही से जुज़ व कुल सब छोड़ देता हूँ।'' (अहमद : 4/125, 126 व सनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/221)

और रिवायत में है कि हज़रत शद्दाद बिन ओस (रज़ि.) एकदिन रोने लगे। हमने पूछा हज़रत आप क्यूँ रो रहे हो? फ़र्माने लगे एक हदीस याद आ गयी और उसने रुला दिया। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है,

''मुझे अपनी उम्मत पर सबसे ज़्यादा डर शिर्क और पोशीदा शहवत का है।'' मैंने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आपकी उम्मत आपके बाद शिर्क करेगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''सुनो! वह सूरज चाँद पत्थर बुत को न पूजेगी बल्कि अपने आमाल में रियाकारी (दिखावा) करेगी पोशीदा (छुपी) शहवत यह है कि सुबह रोज़े से है और कोई ख़्वाहिश सामने आयी, रोज़ा छोड़ दिया।'' (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अर्रिअया वस्सुम्आ : 4205; वहुवा ज़ईफ़ुन; आमिर बिन अब्दुल्लाह मज्हूल रावी है नीज़ रवाद बिन जर्राह का आख़िर उम्र में हाफ़्ज़ा ख़राब हो गया था। अहमद : 4/124)

रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''अल्लाह तआला का फ़र्मान है मैं तमाम शरीकों से बेहतर हूँ। मेरे साथ जो भी किसी को शरीक करे मैं अपना हिस्सा भी उसी को दे देता हूँ।'' (व सनदुहू ज़ईफ़ुन) और रिवायत में है कि ''जो शख़्स किसी अमल में मेरे साथ दूसरे को मिलाये मैं उससे बरी हूँ और उसका वो पूरा अमल उस ग़ैर के लिए है।'' (अहमद : 5/428; इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अर्रिया वस्सुम्आ : 4202; वहुव सहीहुन; तयालिसी : 2559; इब्ने हिब्बान : 395; इस मअनी की रिवायत सहीह मुस्लिम 2985 में मौजूद है।) और हदीस में है ''मुझे तुम्हारी निस्बत सबसे ज़्यादा डर छोटे शिर्क का है।'' लोगों ने पूछा, वह छोटा शिर्क क्या है? फ़र्माया ''रियाकारी क़ियामत के दिन रियाकारों को जवाब मिलेगा कि जाओ जिनके लिए आमाल किये थे उन ही के पास जज़ा मांगो देखो पाते भी हो?'' (अहमद : 5/428; शरहुस्सुन्ना : 4/201; वसनदुहू हसन) अबू सईद बिन अबी फ़ुज़ाला अंसारी सहाबी से रिवायत है फ़र्माते हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना कि ''जब अल्लाह तआला तमाम अगलों पिछलों को जमा करेगा जिस दिन के आने में कोई शक शुब्हा नहीं उस दिन एक पुकारने वाला पुकारेगा कि जिसने अपने जिस अमल में अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को मिलाया हो उसे चाहिए कि अपने उस अमल का बदला उस दूसरे से मांग ले क्योंकि अल्लाह तआला साझे से बहुत बेनियाज़ है।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल कहफ़ : 3154; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 4203; शुअबुल ईमान : 2817; अहमद : 3/466; इब्ने हिब्बान : 404) अबूबक्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है ''रियाकार को अज़ाब भी सबको दिखाकर होगा और नेक आमाल लोगों को सुनाने वाले को अज़ाब भी सबको सुनाकर होगा।'' (अहमद : 5/45; वहुवा सहीहुन बिश्शवाहिद; मुस्नदे बज़्ज़ार : 3691)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से भी रिवायत मरवी है। (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िर्रियाइ वस्सुम्आ : 2381; वहुव सहीहुन; अहमद : 3/40) इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया है ''अपने नेक आमाल उछालने वाले को अल्लाह ज़रूर रुस्वा करेगा। यह कि उसके अख़्लाक़ बिगड़ जाएँगे और वह लोगों की नज़रों में हक़ीर व ज़लील होगा।'' यह बयान करके हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) रोने लगे। (अहमद : 2/162; वहुवा सहीहुन; हिल्यतुल ओलिया : 4/123, 124; अल्मुअजमुल कबीर कमा फ़ी मज्मइज़्ज़वाइद : 10/222) हज़रत अनस (रज़ि.) रावी हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) ने फ़र्माया है ''क़ियामत के दिन इंसान के नेक आमाल के मुहर शुदा सहीफ़े अल्लाह के सामने पेश होंगे। जनाब बारी अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माएगा कि उसे फेंक दो, इसे क़बूल करो, इसे क़बूल करो, इसे फेंक दो। उस वक़्त

फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कि, ऐ अल्लाह! बारी तआला! जहाँ तक हमारा इल्म है हम तो इस शख़्स के आमाले नेक ही जानते हैं जवाब मिलेगा जिनको मैं फेंकवा रहा हूँ, यह वह आमाल हैं जिनमें सिर्फ़ मेरी ही रज़ामंदी मतलूब न थी बल्कि उनमें रियाकारी थी। आज मैं तो सिर्फ़ उन आमाल को क़बूल करूँगा जो सिर्फ़ मेरी रज़ा के लिए किये गए हों।'' (व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में हारिस बिन ग़स्सान मज्हूल रावी है। (अल्मीज़ान : 1/441; रक़म : 1641)

इर्शाद है कि जो दिखावे सुनावे के लिए खड़ा हुआ हो वह जब तक न बैठे अल्लाह के गुस्से और ग़ज़ब में ही रहता है। अबू यअला की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जो शख़्स लोगों को देखते हुए ठहर ठहरकर अच्छी तरह नमाज़ पढ़े और तंहाई में बुरी तरह जल्दी जल्दी बेदिली से अदा करे उसने अपने परवरदिगार अज़्ज़ व जल्ल की तोहीन की।'' (मुस्नदे अबी यअला : 5117; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्राहीम बिन मुस्लिम जहरी ज़ईफ़ रावी है। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 2/369; बैहक़ी : 2/290) पहले बयान हो चुका है कि इस आयत को हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) क़ुरआन की आख़िरी आयत बतलाते हैं लेकिन यह क़ौल इश्काल से ख़ाली नहीं क्योंकि सूरह कहफ़ पूरी की पूरी मक्का में नाज़िल हुई है और ज़ाहिर है कि इसके बाद मदीने में बराबर दस साल तक क़ुरआने करीम उतरता रहा। तो बज़ाहिर यह मालूम होता है कि हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) का मतलब यह हो कि यह आयत आख़िरी है यानी किसी दूसरी आयत से मंसूख़ नहीं होती उसमें जो हुक्म है वह आख़िर तक बदला नहीं गया उसके बाद कोई ऐसी आयत नहीं उतरी जो उसमें तब्दीली व तग़य्युर करे, वल्लाहु आलम! एक बहुत ही ग़रीब हदीस हाफ़िज़ अबूबक्र बज़्ज़ार (रह.) अपनी किताब में लाए हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है कि ''जो शख़्स आयत (मन काना यरजू...) को रात के आख़िर वक़्त पढ़ेगा अल्लाह तआला उसे उतना बड़ा नूर अता करेगा जो अदन से मक्का तक पहुँचे। (हाकिम : 2/371; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू क़ुरतुल असदी मज्हूलुल हाल है। अल्बज़्ज़ार : 3108)

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह कहफ़ की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

सूरह मरयम

سورۃ مریم

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह मरयम - 19

आयातः 98 मक्की सूरह, पैराग्राफः 6

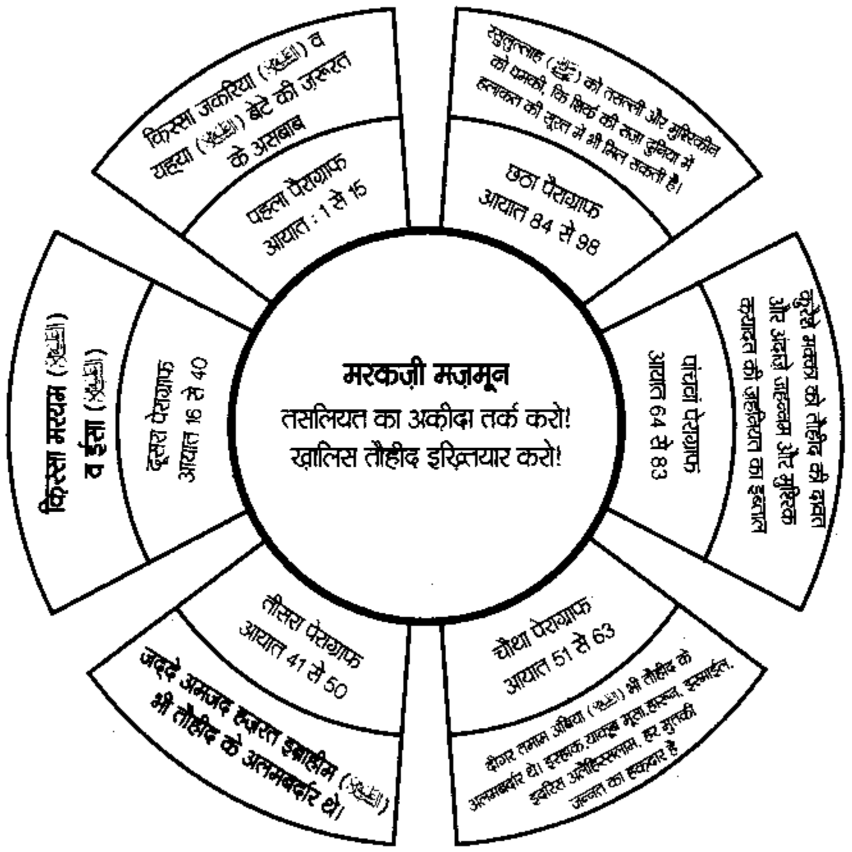

ज़मानए नुज़ूल :

सूरह (मरयम) एक मक्की सूरह है। हिजरते हब्शा (रजब 5 नबवी) से पहले नाज़िल हुई, जब मुसलमान ज़ुल्म व सितम का शिकार थे। हब्श के ईसाइयों में इस्लाम की दावत व तब्लीग़ के लिए सहाबा किराम (रज़ि.) की तरबियत ज़रूरी थी, चुनांचे अहले किताब से (मुजादला) करने के लिये ये सूरह नाज़िल की गई। नज्जाशी के दरबार में हज़रत जाफ़र (रज़ि.) बिन अबी तालिब ने इस सूरह की तिलावत की थी।

سورۃ مریم

तफ़्सीर सूरह मरयम

तआरुफ़े सूरत : इस सूरत के शुरू की आयतें हज़रत जअफ़र बिन अबू तालिब (रज़ि.) ने शाहे हब्श के दरबार में बादशाह के दरबारियों के सामने तिलावत की थीं। (मुस्नद अहमदः 1/202, 203; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अज़्ज़ुहरी अन्अन इब्ने हिशामः 1/357; हिल्यतुल ओलियाः 1/115; मुख़्तसरन दलाइलुन्नबुव्वा : 2/301)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

كٓهٰيٰعٓصٓ ① ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ② اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ③ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ④
وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ⑤
يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ⑥

तर्जुमा : "काफ़ हा या ऐन स़ॉद (1) यह है तेरे परवरदिगार की उस मेहरबानी का ज़िक्र जो उसने अपने बन्दे ज़करिय्या (عليه السلام) पर की थी। (2) जबकि उसने अपने रब से आहिस्ता आहिस्ता दुआ की थी। (3) कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी हड्डियाँ बोदी हो गई हैं और बुढ़ापे की वजह से मेरे सर से सफ़ेद बालों के शोले उठ रहे हैं लेकिन मैं कभी भी तुझसे दुआ करके महरूम नहीं रहा। (4) मुझे अपने मरने के बाद अपने क़राबतदारों का डर है मेरी बीवी भी बाँझ है, तो तू मुझे अपने पास से वारिस अता फ़र्मा। (5) जो मेरा भी वारिस हो और यअक़ूब (عليه السلام) के ख़ानदान का भी जानशीन हो और मेरे रब तू उसे मक़्बूल बन्दा बना ले।" (6)

हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) का ज़िक्र (आयत 1 से 6) : इस सूरत के शुरू में जो पाँच हुरूफ़ हैं उन्हें हुरूफ़े मुक़त्तआत कहा जाता है। इसका तफ़्सीली बयान हम सूरह बक़रह की तफ़्सीर में कर चुके हैं। अल्लाह के बन्दे हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) पर जो लुत्फ़े रब्बानी नाज़िल हुआ उसका वाक़िया बयान हो रहा है। एक क़िराअत में ज़करिय्या है। यह लफ़्ज़ मद से भी है और क़स्र से भी, दोनों क़िराअतें मशहूर हैं। आप (عليه السلام) बनू

इस्राईल के ज़बरदस्त पैग़म्बर थे। सहीह बुख़ारी में है कि आप बढ़ई का पेशा करके अपना पेट पालते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब मिन फ़ज़ाइले ज़करिय्या (अलैहि०) : 2379; इब्ने माजा : 1150; अहमद : 2/296; मुस्नदे अबी यअ़ला : 6426 सहीह बुख़ारी में यह रिवायत हमें नहीं मिल सकी।) रब से दुआ करते थे लेकिन इस वजह से कि लोगों के नज़दीक यह अनोखी दुआ थी कोई सुनता तो ख़्याल करता कि लो बुढ़ापे में औलाद की चाहत हुई है और यह वजह भी थी कि पोशीदा दुआ अल्लाह को ज़्यादा प्यारी होती है और क़बूलियत से ज़्यादा क़रीब होती है। अल्लाह तआला मुत्तक़ी दिल को बख़ूबी जानता है और आहिस्तगी की आवाज़ को पूरी तरह सुनता है। (तब्री : 18/142)

कुछ सलफ़ का क़ौल है कि जो शख़्स अपने वालों की पूरी नींद के वक़्त उठे और पोशीदगी से अल्लाह को पुकारे कि ऐ मेरे परवरदिगार! ऐ मेरे पालनहार! ऐ मेरे रब! अल्लाह तआला उसी वक़्त जवाब देता है कि लब्बैक! मैं मौजूद हूँ, तेरे पास मौजूद हूँ। दुआ में कहते हैं कि ऐ अल्लाह! मेरे क़वा कमज़ोर हो गए हैं मेरी हड्डियाँ खोखली हो चुकी हैं, मेरे सर के बाल सफ़ेद हो चुके हैं, यानी ज़ाहिरी और पोशीदगी की तमाम ताक़तें ख़त्म हो गई हैं, अंदरूनी और बेरूनी ज़ुअ़फ़ (कमज़ोरी) ने घेर लिया हैं मैं तेरे दरवाज़े से कभी ख़ाली हाथ नहीं गया। जब तुझ करीम से कुछ माँगा तूने अ़ता किया। (मवालिया) को कुसाई ने (मवालि) पढ़ा है। मुराद इससे अ़सबा (ख़ानदान) हैं। (तब्री : 18/144)

अमीरुल मोमिनीन उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से (ख़िफ़्तु) को (ख़फ़्फ़त) पढ़ना मरवी है यानी मेरे बाद मेरे वाले बहुत कम हैं। पहली क़िराअत पर मतलब यह है कि चूँकि मेरी औलाद नहीं और जो मेरे रिश्तेदार हैं उनसे मुझे डर है कि मुबादा यह कहीं मेरे बाद कोई बुरा तसर्रुफ़ कर दें तो तू मुझे औलाद इनायत कर जो मेरे बाद मेरी नबुव्वत संभाले। यह हर्गिज़ न समझा जाए कि आपको अपने माल इम्लाक के इधर उधर हो जाने का डर था। अम्बिया (अलैहि०) इससे बहुत पाक हैं, उनका मर्तबा इससे बहुत ज़्यादा है कि वह इसलिए औलाद माँगें कि अगर औलाद न हुई तो मेरा वरसा दूर के रिश्तेदारों में चला जाएगा।

दूसरे बज़ाहिर यह भी है कि हज़रत ज़करिय्या (अलैहि०) जो उ़म्र भर अपनी पूरी ताक़त बढ़ई का काम करके अपना पेट अपने हाथ के काम से पालते रहे उनके पास ऐसी कौनसी बड़ी रक़म थी कि जिसके वरसे के लिए इस क़द्र पसो पेश हो ताकि कहीं यह दौलत हाथ से निकल न जाए। अम्बिया (अलैहि०) तो यूँ भी सारी दुनिया से ज़्यादा माल से बेरग़बत और दुनिया के ज़ाहिद होते हैं। तीसरी वजह यह भी है कि बुख़ारी व मुस्लिम में कई सनदों से हदीस है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "हमारा वरसा नहीं बटता जो कुछ हम छोड़ें सब सदक़ा है।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस : 3904; सहीह मुस्लिम : 1785; अबूदाउद : 2963; तिर्मिज़ी : 1610; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2)

तिर्मिज़ी में सही सनद से मरवी है कि "हम जमाअ़ते अम्बिया हैं हमारा वरसा नहीं बटा करता।" (अहमद : 2/463; वहुव सहीहुन; मुस्लिम : 56/1760; वल बुख़ारी : 3094 इस रिवायत में (नह्नु) की जगह (अना) का लफ़्ज़ है।) पस साबित हुआ कि हज़रत ज़करिय्या (अलैहि०) का यह अ़र्ज़ करना कि मुझे बेटा

दे जो मेरा वारिस हो, इससे मतलब वरस-ए-नबुव्वत है न कि माली वरसा। इसीलिए आपने यह भी फ़र्माया कि वह मेरा और आले यअ़कूब का वारिस हो। जैसे फ़र्मान है (وَ وَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ) (27/नम्ल : 16) सुलेमान (ﷺ) दाऊद (ﷺ) के वारिस हुए यानी नबुव्वत के वारिस हुए न कि माल के वरना माल में और औलाद भी शरीक होती है तख़्सीस नहीं होती। चौथी वजह यह भी है और यह भी मअ़कूल वजह है कि औलाद का वारिस होना तो आ़म है सब में है तमाम मज़हबों में है। फिर कोई ज़रूरत न थी कि ह़ज़रत ज़करिय्या (ﷺ) अपनी दुआ में यह वजह बयान फ़र्माते।

इससे स़ाफ़ साबित है कि वह वरसा कोई ख़ास़ वरसा था और वह नबुव्वत का वारिस बनना था। पस इन तमाम वजहों से साबित है कि इससे मुराद नबुव्वत का वरसा है जैसे कि ह़दीस में है कि ''हम जमाअ़ते अम्बिया का वरसा नहीं बटता हम जो छोड़ जाएँ स़दक़ा है।'' (अह़मद : 2/463; वहुव स़ह़ीहुन) मुजाहिद (रह़.) कहते हैं मुराद इल्म का वरसा है। ह़ज़रत ज़करिय्या (ﷺ) औलादे यअ़कूब में थे। (त़ब्री : 18/146) अबू स़ालेह़ (रह़.) फ़र्माते हैं कि मुराद यह है कि वह भी अपने बड़ों की त़रह़ नबी बने। (त़ब्री : 18/146) ह़सन (रह़.) फ़र्माते हैं नबुव्वत और इल्म का वारिस बने। सुद्दी (रह़.) का क़ौल है मेरी और आले यअ़कूब की नबुव्वत का वारिस बने। ज़ेद बिन असलम (रह़.) भी यही फ़र्माते हैं। अबू स़ालेह़ (रह़.) का क़ौल यह भी है कि मेरे माल का और ख़ानदाने ह़ज़रत यअ़कूब (ﷺ) की नबुव्वत का वह वारिस बने।

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में ह़दीस है कि ''अल्लाह तआ़ला ज़करिय्या (ﷺ) पर रह़म करे भला उन्हें वारिसे माल से क्या ग़र्ज़ थी, अल्लाह तआ़ला लूत़ (ﷺ) पर रह़म करे वह किसी मज़बूत़ क़िले की तमन्ना करने लगे।'' (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है लेकिन (अल्लाह तआ़ला लूत़ (ﷺ) पर रह़म करे वह किसी मज़बूत़ क़िले की तमन्ना करने लगे) के अल्फ़ाज़ स़ह़ीह़ बुख़ारी 3372; स़ह़ीह़ मुस्लिम 151 में मौजूद हैं।) इब्ने जरीर में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''मेरे भाई ज़करिया पर अल्लाह का रह़म हो कहने लगे, ऐ अल्लाह! मुझे अपने पास से वली अ़त़ा फ़र्मा जो मेरा और आले यअ़कूब का वारिस बने।'' (त़ब्री : 10/146; यह रिवायत मुर्सल ज़ईफ़ है जबकि इसकी सनद में जाबिर बिन नूह़ ज़ईफ़ (अल्जरह़ वत्तअ़दील : 2/500; रक़म : 2056) और मुबारक बिन फ़ुज़ाला कमज़ोर रावी है। (अल्मीज़ान :3/431; रक़म : 7048) लेकिन यह सब ह़दीसें मुर्सल हैं जो स़ह़ीह़ ह़दीसों का मुआ़रज़ा (टकराव) नहीं कर सकतीं, वल्लाहु आ़लम! और ऐ अल्लाह! इसे अपना पसंदीदा ग़ुलाम बना ले और ऐसा दीनदार और दयानतदार बना कि तेरी मुह़ब्बत के अ़लावा तमाम मख़्लूक़ भी उससे मुह़ब्बत करे। उसका दीन और अख़्लाक़ हर एक पसंदीदगी और प्यार की नज़र से देखे।

***

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۞ قَالَ رَبِّ اَنّٰى

يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ⑧ قَالَ كَذٰلِكَ

قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ⑨

तर्जुमा : "ऐ ज़करिय्या! हम तुझे एक बच्चे की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसका नाम यह्या है हमने उससे पहले उसका हम नाम भी किसी को नहीं किया। (7) ज़करिय्या कहने लगे, मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा मेरी बीवी बाँझ और मैं ख़ुद बूढ़ापे के इंतिहाई ज़ुअफ़ को पहुँच चुका हूँ। (8) इर्शाद हुआ कि वादा इसी तरह हो चुका, तेरे रब ने फ़र्मा दिया है कि मुझ पर तो यह बिलकुल आसान है तू ख़ुद जबकि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ।" (9)

(आयत 7 से 9) : हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) की दुआ क़बूल होती है और फ़र्माया जाता है कि आप एक बच्चे की ख़ुशख़बरी सुन लें जिसका नाम यह्या (عليه السلام) है। जैसे और आयत में है (هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا) (3/आले इमरान : 38) वहीं ज़करिय्या (عليه السلام) ने अपने रब से दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे अपने पास से बेहतरीन औलाद अता फ़र्मा तू दुआओं का सुनने वाला है। फ़रिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी और वह उस वक़्त नमाज़ की जगह में नमाज़ में खड़े थे कि अल्लाह तआला आपको अपने एक कलिमे की बशारत देता है जो सरदार होगा और पाकबाज़ होगा और नबी होगा और पूरे नेककार आला दर्जे के भले लोगों में से होगा। यहाँ फ़र्माया कि इनसे पहले इस नाम का कोई और इंसान नहीं हुआ। (तब्री : 18/148) यह भी कहा गया है कि इससे मुशाबेह कोई और न होगा। यही मअनी (समिय्या) के आयत (هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا) (19/मरयम : 65) में हैं।

यह मअनी भी बयान किये गए हैं कि इससे पहले किसी बाँझ औरत से ऐसी औलाद नहीं हुई। ज़करिय्या के यहाँ कोई औलाद नहीं हुई थी। आपकी बीवी साहिबा भी शुरू उम्र से बेऔलाद थीं। हज़रत इब्राहीम और हज़रत सारा (عليه السلام) ने भी बच्चे के होने की बशारत सुनकर बेहद तअज्जुब किया था लेकिन उनके तअज्जुब की वजह उनका बेऔलाद होना और बाँझ होना न थी बल्कि बहुत फूस बुढ़ापे में औलाद का होना यह तअज्जुब की वजह थी और हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) के यहाँ तो इस पूरे बुढ़ापे तक कोई औलाद हुई ही न थी। इसीलिए हज़रत ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने फ़र्माया था कि मुझे इस फूस बुढ़ापे में तुम औलाद की ख़बर कैसे दे रहे हो? वरना इससे तेरह साल पहले आपके यहाँ हज़रत इस्माईल (عليه السلام) हुए थे। आपकी बीवी साहिबा ने भी इस ख़ुशख़बरी को सुनकर तअज्जुब से कहा था कि क्या इस बढ़े हुए बुढ़ापे में मेरे यहाँ औलाद होगी? साथ ही साथ मेरे मियाँ भी ग़ायत दर्जे के बूढ़े हैं यह तो सख़्ततर अजीब चीज़ है। यह सुनकर फ़रिश्तों ने कहा था कि क्या तुम्हें अम्रे इलाही से तअज्जुब है। ऐ इब्राहीम (عليه السلام) के घराने वालों! तुम पर अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकतें हैं। अल्लाह तअरीफ़ों वाला और बुज़ुर्गियों वाला है।

लड़के की ख़ुशख़बरी पर हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) का तअज्जुब : हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) अपनी दुआ की क़बूलियत और अपने यहाँ लड़का होने की बशारत सुनकर ख़ुशी और तअज्जुब से केफ़ियत पूछने लगे

कि बज़ाहिरे अस्बाब तो यह अम्र (काम) मुस्तअबद (काफी दूर) और नामुम्किन मालूम होता है दोनों जानिब से हालत महज़ नाउम्मीदी की है। बीवी बाँझ जिससे अब तक औलाद नहीं हुई। मैं बूढ़ा और बेहद बूढ़ा जिसकी हड्डियों में अब तो गूदा भी नहीं रहा। ख़ुश्क टहनी जैसा हो गया हूँ। घरवाली भी बुढ़िया फूस हो गई है। फिर हमारे यहाँ औलाद कैसे होगी? ग़र्ज़ रब्बुल आलमीन से तअज्जुब व ख़ुशी की वजह से कैफ़ियत पूछी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं तमाम सुन्नतों को जानता हूँ लेकिन मुझे यह मालूम नहीं हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) ज़ुहर व अस्र में पढ़ते थे या नहीं? और न यह मालूम है कि इस लफ़्ज़ को (अतिय्यन) पढ़ते थे या (असिय्यन)। (अहमद : 1/257, 258; अबूदाउद, किताबुस्सलात, बाब क़द्रल क़िराअत फ़िस्सलातिज़्ज़ुहर वल अस्र : 809; मुख़्तसरन व सनदुहू सहीहुन)

फ़रिश्ते ने जवाब दिया कि यह तो वादा हो चुका। इसी हालत में इसी बीवी से तुम्हारे यहाँ लड़का पैदा होगा। अल्लाह के ज़िम्मे यह काम मुश्किल नहीं, इससे ज़्यादा तअज्जुब वाला और इससे बड़ी क़ुदरत वाला काम तो तुम ख़ुद देख चुके हो और वह ख़ुद तुम्हारा वजूद है जो कुछ न था और अल्लाह तआला ने बना दिया। पस जो तुम्हारी पैदाइश पर क़ादिर था वह तुम्हारे यहाँ औलाद देने पर भी क़ादिर है। जैसे फ़र्मान है (هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا) (76/दहर : 1) यानी यक़ीनन इंसान पर उसके ज़माने का ऐसा वक़्त भी गुज़रा है जिसमें वह कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था।

***

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ

عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝

तर्जुमा : "कहने लगे, मेरे परवरदिगार! मेरे लिए कोई अलामत मुक़र्रर कर दे इर्शाद हुआ कि तेरे लिए अलामत यह है कि बावजूद भला चंगा होने के तू तीन रातों तक किसी शख़्स से बोलचाल न कर सकेगा।(10) अब ज़करिय्या (عليه السلام) अपने हुजरे से निकलकर अपनी क़ौम के पास आकर उन्हें इशारा करते हैं कि तुम सुबह शाम अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करो।"(11)

हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) का निशानी तलब करना (आयत 10, 11) : हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) अपने मज़ीद इत्मिनान और तशफ़्फ़ी क़ल्ब (दिल) के लिए अल्लाह से दुआ करते हैं कि इस बात पर कोई निशान ज़ाहिर कर। जैसे कि ख़लीलुल्लाह (अ.) ने मुर्दों के जी उठने के देखने की तमन्ना इसीलिए ज़ाहिर की थी तो इर्शाद हुआ कि तू गूँगा न होगा बीमार न होगा लेकिन तेरी ज़ुबान लोगों से बातें न कर सकेगी। तीन दिन रात तक यही हालत रहेगी। (तब्री : 18/152)

यही हुआ भी कि तस्बीह इस्तिग़फ़ार हम्दो सना वग़ैरह पर तो ज़ुबान चलती थी लेकिन लोगों से बात न

कर सकते थे। (तब्री : 18/152) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि (सविय्यन) के मअ़नी पे दर पे के हैं। यानी लगातार बराबर तीन रात दिन तुम्हारी ज़बान दुनियावी बातों से रुकी रहेगी। पहला क़ौल भी आप ही से मरवी है और जुम्हूर की तफ़्सीर भी यही है और यही ज़्यादा सहीह है। चुनाँचे सूरह आले इमरान में इसका बयान भी गुज़र चुका है कि अलामत तलब करने पर फ़र्मान हुआ कि तीन दिन तक तुम सिर्फ़ इशारों किनायों से लोगों से बातें कर सकते हो। (3/आले इमरान : 41) हाँ! अपने रब की याद बकसरसत करो और सुबह व शाम उसकी पाकीज़गी बयान किया करो। पस उन तीन दिन रात में आप किसी इंसान से कोई बात नहीं कर सकते थे। हाँ! इशारों से अपना मतलब समझा दिया करते थे। लेकिन यह नहीं कि आप गूँगे हो गए हों अब आप अपने हुज्रे से जहाँ जाकर तंहाई में अपने यहाँ औलाद होने की दुआ की थी बाहर आए और जो नेअ़मत रब ने आप पर इन्आम की थी और जिस तस्बीह व ज़िक्र का आपको हुक्म हुआ था वही क़ौम को भी हुक्म हुआ। लेकिन चूँकि बोल न सकते थे इसलिए उन्हें इशारों से समझाया ज़मीन पर लिखकर उन्हें समझा दिया। (तब्री : 18/153)

***

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾ وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾

तर्जुमा : "ऐ यहया (علیہ السلام)! मेरी किताब को कुव्वत के साथ मज़बूती से थाम ले और हमने इसे लड़कपन ही से दानाई अ़ता कर दी। (12) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी भी वह परहेज़गार शख़्स था। (13) और अपने माँ बाप से नेक सुलूक करने वाला था वह गर्दनकश और गुनहगार न था। (14) उस पर सलाम है जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरे और जिस दिन वह ज़िन्दा करके उठाया जाएगा।" (15)

हज़रत यहया (علیہ السلام) की ख़ूबियाँ (आयत 12 से 15) : बमुताबिक़ बशारते रब्बानी हज़रत ज़करिय्या (علیہ السلام) के यहाँ हज़रत यहया (علیہ السلام) पैदा हुए। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें तौरात सिखा दी जो उनमें पढ़ी जाती थी और जिसके अह़काम नेक लोग और अम्बिया दूसरों को बतलाते थे। उस वक़्त उनकी उम्र बचपन की ही थी। इसीलिए अपनी उस अनोखी नेअ़मत का भी ज़िक्र किया कि बच्चा भी दिया और उसे आसमानी किताब का आ़लिम भी बचपन ही से कर दिया और हुक्म दे दिया कि ह़िर्स इज्तिहाद कोशिश और कुव्वत के साथ किताबुल्लाह सीख ले। साथ ही हमने उसे उसी कम उम्री में फ़हम व इल्म कुव्वत व अ़ज़्म दानाई और ह़िल्म अ़ता फ़र्माया। नेकियों की तरफ़ बचपन से ही झुक गए और कोशिश व ख़ुलूस के साथ अल्लाह की इबादत और मख़्लूक़ की ख़िदमत में लग गए। बच्चे आप (علیہ السلام) से खेलने को कहते थे मगर यह जवाब पाते थे कि

हम खेल के लिए नहीं पैदा किये गए।

हज़रत यह्या (अलैहि.) का वुजूद भी हज़रत ज़करिय्या (अलैहि.) के लिए हमारी रहमत का करिश्मा था। जिस पर सिवाय हमारे और कोई क़ादिर नहीं। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि वल्लाह! मैं नहीं जानता कि "हनान" का मतलब क्या है। लुग़त में मुहब्बत व शफ़क़त रहमत वग़ैरह के मअ़नी में यह आता है बज़ाहिर यह मतलब मालूम होता है कि हमने इसे छुटपने से ही हुक्म दिया और इसे शफ़क़त व मुहब्बत और पाकीज़गी अ़ता की। मुस्नद अहमद में है कि "एक शख़्स जहन्नम में एक हज़ार साल तक या हन्नान या मन्नान पुकारता रहेगा।" (अहमद : 3/230; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4210; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/384; इसकी सनद में अबू ज़िलाल क़स्लमी ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 4/316; रक़म : 9280) पस हर मेल कुचेल से हर गुनाह और मअ़सियत से आप बचे हुए थे सिर्फ़ नेक आमाल आपकी उम्र का ख़ुलासा था। आप गुनाहों से और अल्लाह की नाफ़र्मानियों से यक्सू थे। साथ ही माँ बाप के फ़र्मांबरदारी इताअ़तगुज़ार और उनके साथ नेक सुलूक करने वाले थे। कभी किसी बात में माँ बाप की मुख़ालिफ़त नहीं की। कभी उनके फ़र्मान से बाहर नहीं हुए। कभी उनकी रोक के बाद किसी काम को नहीं किया। कोई सरकशी कोई नाफ़र्मानी की ख़ू (आदत) आप में न थी।

घबराहट के तीन औक़ात : उन ओसाफ़े जमीला और ख़साइले हमीदा के बदले तीनों हालतों में आपको अल्लाह की तरफ़ से अम्नो अमान और सलामती मिली। यानी पैदाइश वाले दिन, मौत वाले दिन और दोबारा ज़िन्दा उठाये जाने वाले दिन। यही तीनों जगहें घबराहट की और अंजान होती हैं। माँ के पेट से निकलते ही एक नई दुनिया देखता है जो उसकी आज तक की दुनिया से अज़ीमुश्शान और बिलकुल अलग होती है मौत वाले दिन उस मख़्लूक़ से वास्ता पड़ता है जिससे ज़िन्दगी में कभी भी वास्ता न पड़ा, न उन्हें कभी देखा। महशर वाले दिन भी अ़ला हाज़ल क़ियास अपने तईं एक बहुत बड़े मज्मअ़े में जो बिलकुल नई चीज़ है देखकर हैरतज़दा हो जाता है। पस इन तीनों वक़्तों में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हज़रत यह्या (अलैहि.) को सलामती मिली।

एक मुर्सल हदीस में है कि हुज़ूर (सल्ल.) ने फ़र्माया, "तमाम लोग क़ियामत के दिन कुछ न कुछ गुनाह लेकर जाएँगे, सिवाय हज़रत यह्या (अलैहि.) के।" हज़रत क़तादा (रह.) कहते हैं कि आपने गुनाह तो क्या क़सदे गुनाह भी कभी नहीं किया। (अहमद : 1/254; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2544; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/209; इसकी सनद में अ़ली बिन ज़ेद बिन जिदआ़न सुउल हिफ़्ज़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/37; अल्मीज़ान : 3/127) यह हदीस मरफ़ूअ़न और दो सनदों से मरवी है लेकिन वह दोनों सनदें भी ज़ईफ़ हैं, वल्लाहु आ़लम! हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत यह्या और हज़रत ईसा (अलैहि.) की मुलाक़ात हुई तो हज़रत ईसा (अलैहि.) हज़रत यह्या (अलैहि.) से कहने लगे आप मेरे लिए इस्तिग़फ़ार कीजिए आप मुझसे बेहतर हैं। हज़रत यह्या (अलैहि.) ने जवाब दिया कि आप मुझसे बेहतर हैं। हज़रत ईसा (अलैहि.) ने फ़र्माया मैंने तो आप ही अपने ऊपर सलाम कहा और आप पर ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने सलाम कहा। अब उन दोनों अल्लाह के नबियों की फ़ज़ीलत ज़ाहिर है।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ
حِجَابًا ۗ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ
مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ
اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ
عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

तर्जुमा : "इस किताब में मरयम का भी वाक़िया बयान कर जबकि वह अपने घर के लोगों से अलग होकर एक मश्रिक़ी (पूरबी) मकान में आई। (16) और उन लोगों की तरफ़ से पर्दा कर लिया। फिर हमने उसके पास अपनी रूह को भेजा और वह उसके सामने आदमी बनकर ज़ाहिर हुआ। (17) यह कहने लगीं मैं तुझसे अल्लाह की पनाह चाहती हूँ अगर तू कुछ भी रब तरस है। (18) उसने जवाब दिया कि मैं तो अल्लाह का भेजा हुआ क़ासिद हूँ तुझे एक पाकीज़ा लड़का देने आया हूँ। (19) कहने लगीं भला मेरे यहाँ बच्चा कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी इंसान का हाथ तक नहीं लगा और न मैं बदकार हूँ। (20) उसने कहा बात तो यही है लेकिन तेरे परवरदिगार का इर्शाद है कि वह मुझ पर बहुत ही आसान है हम तो इसे लोगों के लिए एक निशानी बना देंगे और अपनी ख़ास रहमत। यह तो एक तैशुदा बात है।" (21)

हज़रत मरयम (عليها السلام) का ज़िक्र (आयत 16 से 21) : ऊपर हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) का ज़िक्र हुआ था और यह बयान फ़र्माया गया था कि वह अपने पूरे बुढ़ापे तक बेऔलाद रहे उनकी बीवी को कोई औलाद न हुई थी। बल्कि औलाद की सलाहियत ही न थी। जिस पर अल्लाह तआला ने इस उम्र में उनके यहाँ अपनी क़ुदरत से औलाद अता की। हज़रत यहया (عليه السلام) हुए जो नेककार और वफ़ाशआर थे। उसके बाद उससे भी बढ़कर अपनी क़ुदरत का नज़ारा पेश करता है। हज़रत मरयम (عليها السلام) का वाक़िया बयान करता है कि वह कुँवारी थीं, किसी मर्द का हाथ तक उन्हें न लगा था और बेमर्द के अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अपनी क़ुदरते कामिला से उन्हें औलाद दी। हज़रत ईसा (عليه السلام) जैसा फ़रज़न्द उन्हें दिया जो अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा पैग़म्बर और रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह थे। पस चूँकि इन दो क़िस्सों में पूरी मुनासिबत है इसीलिए यहाँ भी और सूरह आले इमरान में भी और सूरह अम्बिया में भी इन दोनों को मुत्तसिल बयान किया ताकि बन्दे अल्लाह तआला की बेमिसाल क़ुदरत और अज़ीमुश्शान सल्तनत का मुआयना कर सके। हज़रत मरयम (عليها السلام) इमरान (अ.) की बेटी थीं, हज़रत दाऊद (عليه السلام) की नस्ल से थी। बनू इस्राईल में यह घराना तय्यिब व ताहिर था। सूरह आले इमरान में आप (عليها السلام) की पैदाइश वग़ैरह का मुफ़स्सल बयान गुज़र चुका है।

उस ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ आपकी वालिदा साहिबा ने आपको बैतुल मक़्दिस की मस्जिदे कुदुस की ख़िदमत के लिए दुनियावी कामों से आज़ाद कर दिया था। अल्लाह तआला ने यह नज़्र क़बूल कर ली और हज़रत मरयम (عليها السلام) की नशोनुमा बेहतरीन तौर से की। और आप अल्लाह तआला की इबादतों में रियाज़तों में और नेकियों में मशग़ूल हो गईं। आपकी इबादत और रियाज़त जुहद व तक़्वा ज़ुबान ज़द अवाम हो गया था। आप अपने ख़ालू हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) की परवरिश व तर्बियत में थीं जो उस वक़्त के बनी इस्राईली नबी थे। तमाम बनी इस्राईल दीनी उमूर में उन ही के ताबेअ फ़र्मान थे। हज़रत ज़करिय्या पर हज़रत मरयम(अ.) की बहुत सी करामतें ज़ाहिर हुईं, ख़ुसूसन यह कि जब कभी आप उनके इबादतख़ाने में जाते नई क़िस्म के बे मौसम के फल वहाँ मौजूद पाते। पूछते कि मरयम! यह कहाँ से आए हैं? जवाब मिलता कि अल्लाह तआला के पास से वह ऐसा क़ादिर है कि जिसे चाहे बेहिसाब रोज़ियाँ अता करता है।

अब अल्लाह तआला का इरादा हुआ कि हज़रत मरयम (عليها السلام) के बतन (पेट) से हज़रत ईसा (عليه السلام) को पैदा करे जो मिन्जुम्ला पाँच ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों के एक हैं। आप मस्जिदे कुदुस की मश्रिक़ी जानिब गईं या तो बवजह कपड़े लाने के या किसी और सबब से। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अहले किताब पर बैतुल्लाह की तरफ़ मुतवज्जा होना और हज्ज करना फ़र्ज़ किया गया था। लेकिन चूँकि मरयम सिद्दीक़ा (عليها السلام) बैतुल मक़्दिस से पूरब की तरफ़ गई थीं जैसे फ़र्माने इलाही है इस वजह से उन लोगों ने पूरब रुख़ होकर नमाज़ें शुरु कर दीं। हज़रत ईसा (عليه السلام) की विलादतगाह (पैदा होने की जगह) को उन्होंने अज़्ख़ुद क़िब्ला बना लिया। (तब्री : 18/162) मरवी है कि जिस जगह आप गई थीं वह जगह यहाँ से दूर और सुनसान जगह थी। कहते हैं कि वहाँ आपका खेत था जिसे पानी देने के लिए आप जाया करती थीं। यह भी कहा गया है कि वहीं हुज्रा बना लिया था कि लोगों से अलग थलग इबादते इलाही में फ़राग़त के साथ मशग़ूल रहें, वल्लाहु आलम!

जिब्रईल (عليه السلام) इंसानी शक्ल में आये : जब यह लोगों से दूर हो गईं और उनमें और आपमें पर्दा हो गया अल्लाह तआला ने आपके पास अपने अमीन फ़रिश्ते हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) को भेजा। वह पूरी इंसानी शक्ल में आप पर ज़ाहिर हुए। यहाँ रूह से मुराद यही बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। (तब्री : 18/163) जैसे आयते क़ुरआन (نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ) (26/शुअरा : 193) में है। उबय बिन कअब (रज़ि.) कहते हैं कि रोज़े अज़ल में जबकि इब्ने आदम की तमाम रूहों से अल्लाह तआला की उलूहियत का इक़रार लिया गया था उन रूहों में हज़रत ईसा (عليه السلام) की रूह भी थी। उसी रूह को बसूरते इंसान अल्लाह तआला की तरफ़ भेजा गया था। उसी रूह ने आपसे बातें कीं और आपके जिस्म में हुलूल कर गई। लेकिन यह क़ौल अलावा ग़रीब होने के बिलकुल मुंकर है बहुत मुम्किन है कि यह बनी इस्राईली क़ौल हो। आपने जब उस तंहाई के मकान में एक ग़ैर शख़्स को देखा तो यह समझकर कि कहीं बुरा आदमी न हो उसे अल्लाह तआला का डर दिलाया कि अगर तू परहेज़गार है तो अल्लाह से डर, मैं अल्लाह तआला की पनाह चाहती हूँ। इतना पता तो आपको उनके बशर होने से चल गया था कि यह कोई भला इंसान है और यह जानती थीं कि नेक शख़्स को अल्लाह तआला का ज़रा सा डर और ख़ौफ़ काफ़ी है। फ़रिश्ते ने आपका ख़ौफ़ व हरास, डर और घबराहट दूर करने के लिए साफ़ कह दिया कि और कोई गुमान न करो मैं तो अल्लाह का भेजा हुआ फ़रिश्ता हूँ।

कहते हैं कि अल्लाह का नाम सुनकर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) काँप उठे और अपनी असल सूरत में आ गये और कह दिया कि मैं अल्लाह का क़ासिद हूँ इसलिए अल्लाह तआला ने मुझे भेजा है कि वह तुझे एक पाक नफ़्स फ़रज़न्द देना चाहता है। (लिअहब) की दूसरी क़िराअत (यहब) है अबू अम्र बिन अला जो एक मशहूर मअरूफ़ क़ारी हैं उनकी यही क़िराअत है दोनों क़िराअतों की तौजीह और मतलब बिलकुल साफ़ है और दोनों में इस्तिल्ज़ाम भी है। यह सुनकर मरयम सिद्दीक़ा (عليها السلام) को और तअज्जुब हुआ कि सुब्हानल्लाह! मुझे बच्चा कैसे होगा? मेरा तो निकाह भी न हुआ और बुराई का मुझे तसव्वुर तक नहीं हुआ। मेरे जिस्म पर किसी इंसान का कभी हाथ नहीं लगा। मैं बदकार नहीं, फिर मेरे यहाँ औलाद कैसी (बग़िय्यन) से मुराद ज़िनाकार है।

जैसे हदीस में भी यह लफ़्ज़ इसी मअनी में है कि (महरुल बग़िय्यी) ज़ानिया की ख़र्ची हराम है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब समनुल कल्ब : 2237; सहीह मुस्लिम : 1567; अबूदाउद : 3481; तिर्मिज़ी : 1276; इब्ने माजा : 2159; अहमद : 4/119; इब्ने हिब्बान : 5157) फ़रिश्ते ने आपके तअज्जुब को यह फ़र्माकर टाला कि यह सब सच है लेकिन अल्लाह इस पर क़ादिर है कि बग़ैर शौहर के और बग़ैर किसी और बात के भी औलाद दे दे और वह जो चाहे हो जाता है। अल्लाह तआला इस बच्चे को और उस वाक़िया को अपने बन्दों की तज़्कीर (नसीहत) का सबब बना देगा। यह अल्लाह तआला की कुदरत की एक निशानी होगी ताकि लोग जान ले कि वह ख़ालिक़ हर तरह की पैदाइश पर क़ादिर है। आदम (عليه السلام) को बग़ैर माँ बाप के पैदा किया हव्वा (عليها السلام) को सिर्फ़ मर्द से बग़ैर औरत के पैदा किया। बाक़ी तमाम इंसानों को मर्द व औरत से पैदा किया, सिवाय हज़रत ईसा (عليه السلام) के कि वह बग़ैर मर्द के सिर्फ़ औरत से पैदा किये गए।

पस तक़सीम की यह चार ही सूरतें हो सकती थीं जो सब पूरी कर दी गईं और अपनी कमाले क़ुदरत और अज़ीम सल्तनत की मिसाल क़ायम कर दी। फ़िल वाक़ेअ न उसके सिवा कोई मअबूद न परवरदिगार। और यह बच्चा अल्लाह की रहमत बनेगा, रब का पैग़म्बर होगा। अल्लाह तआला की इबादत की दावत उसकी मख़्लूक़ को देगा। जैसे और आयत में है कि फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरयम! अल्लाह तआला तुझे अपने एक कलिमे की ख़ुशख़बरी देता है जिसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा जो दुनिया और आख़िरत में आबरूदार होगा और होगा भी अल्लाह का मुक़र्रब। वह गहवारे (बचपने) में ही बोलने लगेगा और अधेड़ उम्र में भी और होगा भी सालेह लोगों में से यानी बचपन और बुढ़ापे में अल्लाह के दीन की दावत देगा। (3/आले इमरान : 45, 46)

मरवी है कि हज़रत मरयम (عليها السلام) ने फ़र्माया कि ख़ल्वत और तंहाई के मौक़े पर मुझसे हज़रत ईसा (عليه السلام) बोलते थे और मज्मअ़े में अल्लाह की तस्बीह बयान करते थे। यह हाल उस वक़्त का है जबकि आप मेरे पेट में थे। फिर फ़र्माता है कि यह काम अल्लाह के इल्म में मुक़द्दर और मुक़र्रर हो चुका है वह अपनी क़ुदरत से यह काम पूरा करके ही रहेगा। बहुत मुम्किन है कि यह क़ौल भी हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) का हो। और यह भी हो सकता है कि यह फ़र्माने इलाही हुज़ूर (ﷺ) से हो और मुराद इससे रूह का फूँक देना हो। जैसे फ़र्मान है कि इमरान की बेटी मरयम (عليها السلام) बाइस्मत ख़ातून थीं। हमने उसमें रूह फूँकी थी। (66/तहरीम : 12) और आयत में है वह बाइस्मत औरत जिसमें हमने अपनी रूह फूँक दी। (21/अम्बिया : 11) पस इस जुम्ले का मतलब यह है कि यह तो होकर ही रहेगा अल्लाह तआला इसका इरादा कर चुका है, वल्लाहु आलम!

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾ فَأَجَآءَهَا الْمَخَاضُ إِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾

तर्जुमा : "पस वह ह़मल से हो गईं और उसी वजह से वह यक्सू होकर एक दूर की जगह चली गईं। (22) फिर दर्दे ज़ेह (बच्चा पैदा होने का दर्द) उसे एक खजूर के तने के नीचे ले आया। और बेसाख़्ता ज़ुबान से निकल गया कि काश! मैं इससे पहले ही मर गई होती और लोगों की याद से भूली बिसरी हो जाती।" (23)

हज़रत मरयम (عليها السلام) खजूर के तने के पास चली गईं (आयत 22, 23) : मरवी है कि जब आप फ़र्माने इलाही सुन चुकीं और उसके आगे गर्दन झुका दी तो हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने उनके कुर्ते के गिरेबान में फूँक मारी। जिससे उन्हें बहुक्मे इलाही ह़मल ठहर गया। अब तो सख़्त घबरायीं और यह ख़्याल कलेजा मसोसने लगा कि मैं लोगों को क्या मुँह दिखाऊँगी? लाख अपनी बराअत पेश करूँ लेकिन इस अनोखी बात को कौन मानेगा? उसी घबराहट में आप थीं किसी से यह वाक़िया बयान नहीं किया था। हाँ! जब आप अपनी ख़ाला हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) की बीवी के पास गईं तो वह आपसे मुआनक़ा करके कहने लगीं, बच्ची अल्लाह की क़ुदरत से और तुम्हारे ख़ालू की दुआ से मैं इस उम्र में ह़ामिला हो गई हूँ। आपने फ़र्माया, ख़ालाजान! मेरे साथ यह वाक़िया गुज़रा और मैं भी अपने तईं इसी ह़ालत में पाती हूँ चूँकि यह घराना नबी का घराना था वह क़ुदरते इलाही पर और सदाक़ते मरयम (عليها السلام) पर ईमान लाईं। अब से यह ह़ालत थी कि जब कभी यह दोनों पाक औरतें मुलाक़ात करतीं तो ख़ाला साह़िबा यह महसूस करतीं कि गोया उनका बच्चा भांजी के बच्चे के सामने झुकता है और उसकी इज़्ज़त करता है। (ह़ाकिम : 2/593; ह़ : 4156; व सनदुहू ह़सन वहुव मिनल इस्राईलियात।) उनके मज़हब में यह जाइज़ भी था। इसी वजह से हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के भाईयों ने और आपके वालिद ने आपको सज्दा किया था और अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हज़रत आदम (عليه السلام) के सामने सज्दा करने का हुक्म दिया था। लेकिन हमारी शरीअत में यह तअज़ीम अल्लाह तआला के लिए ख़ास हो गई और किसी दूसरे को सज्दा करना ह़राम हो गया क्यों कि यह तअज़ीमे इलाही के ख़िलाफ़ है, उसकी जलालत के शायाने शान नहीं।

इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत ईसा और हज़रत यह्या (عليهما السلام) ख़ालाज़ाद भाई थे, यह दोनों ख़ालाज़ाद भाई नहीं थे बल्कि मामा भांजे थे दोनों एक ही वक़्त ह़मल में थीं। हज़रत यह्या (عليه السلام) की वालिदा अक्सर हज़रत मरयम (عليها السلام) से फ़र्माती थीं कि मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि मेरा बच्चा तेरे बच्चे के सामने सज्दा करता है। इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते हैं इससे हज़रत ईसा (عليه السلام) की फ़ज़ीलत साबित होती है क्योंकि अल्लाह तआला ने आपके हाथों अपने हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा किया और मादरज़ाद अंधों और कोढ़ियों को भला चंगा कर दिया। जुम्हूर का क़ौल तो यह है कि आप नौ महीने तक ह़मल में रहे। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं

आठ माह तक। इसीलिए आठ माह के ह़मल का बच्चा उ़मूमन ज़िन्दा नहीं रहता। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, ह़मल के साथ ही बच्चा हो गया। यह क़ौल ग़रीब है मुम्किन है कि आपने आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ से यह समझा हो। क्योंकि ह़मल का अलग होने का और दर्देज़ेह का ज़िक्र इन आयतों में 'फ़' के साथ है और 'फ़' तअ़क़ीब के लिए आती है लेकिन तअ़क़ीब हर चीज़ की उसके ऐतिबार से होती है जैसे आ़म इंसानों की पैदाइश का ह़ाल आयते क़ुरआन (وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ) (23/मोमिनून : 12) में हुआ है कि हमने इंसान को बजती हुई मिट्टी से पैदा किया फिर उसे बसूरते नुत्फ़ा रह़म में ठहराया फिर नुत्फ़े की फुटकी बनाई फिर उस फुटकी को लोथड़ा बनाया फिर उस लोथड़े में हड्डियाँ पैदा कीं। यहाँ भी दो जगह 'फ़' है और है भी तअ़क़ीब के लिए। लेकिन ह़दीस से साबित है कि दोनों ह़ालतों में चालीस दिन का फ़ासला होता है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति स़लवातुल्लाहि अलयहिम : 3208; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2643)

क़ुरआने करीम की और आयत में है (اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً) (22/ह़ज्ज : 63) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआ़ला आसमान से बारिश बरसाता है? पस ज़मीन सरसब्ज़ हो जाती है। ज़ाहिर है कि पानी बरसने के बहुत बाद सब्ज़ा उगता है। ह़ालाँकि 'फ़' यहाँ भी है पस तअ़क़ीब हर चीज़ की उस चीज़ के ऐतिबार से होती है। सीधी सी बात तो यह है कि मिस्ल आ़दत औ़रतों के अपने ह़मल का ज़माना पूरा गुज़ारा। मस्जिद में ही मस्जिद के ख़ादिम एक स़ाह़ब और थे जिनका नाम यूसुफ़ नज्जार था उन्होंने जब ह़ज़रत मरयम (عليها السلام) का यह ह़ाल देखा तो दिल में कुछ शक सा पैदा हो गया लेकिन ह़ज़रत मरयम (عليها السلام) के ज़ुहद व इत्क़ा इबादत व रियाज़त रब तर्सी और ह़क़बीनी को ख़्याल करते हुए उन्होंने यह बुराई दिल से दूर करनी चाही। लेकिन ज्यों ज्यों दिन गुज़रते गए ह़मल का इज़्हार होता गया। अब तो ख़ामोश न रह सके एक दिन बाअदब कहने लगे कि मरयम! मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ नाराज़ न होना। भला बग़ैर बीज के किसी दरख़्त का होना बग़ैर दाने के खेत का होना बग़ैर बाप के बच्चे का होना मुम्किन भी है? आप उनके मत़लब को समझ गईं और जवाब दिया कि यह सब मुम्किन है। सबसे पहले जो दरख़्त अल्लाह तआ़ला ने उगाया वह बग़ैर बीज के था। सबसे पहले जो खेती अल्लाह तआ़ला ने उगाई वह बग़ैर दाने के थी। सबसे पहले अल्लाह ने आदम (عليه السلام) को पैदा किया वह बिन बाप के थे बल्कि बिन माँ के भी। उनकी तो समझ में आ गया और ह़ज़रत मरयम (عليها السلام) को और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत को न झुठला सके। अब ह़ज़रत सिद्दीक़ा (عليها السلام) ने जब देखा कि क़ौम के लोग उन पर तोहमत लगा रहे हैं तो आप उन सबको छोड़ छाड़कर दूर दराज़ चली गईं।

इमाम मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ (रह़.) फ़र्माते हैं जब ह़मल के ह़ालात ज़ाहिर हो गए तो क़ौम ने फब्तियाँ फेंकनी, आवाज़ कसने और बातें बनानी शुरू कर दीं और ह़ज़रत यूसुफ़ नज्जार जैसे स़ालेह़ शख़्स़ पर यह तोहमत लगाई तो आप उन सबसे किनाराकश हो गईं। न कोई उन्हें देखे न आप किसी को देखें जब दर्दे ज़ेह उठा तो आप एक खजूर के दरख़्त की जड़ में आ बैठीं, कहते हैं कि यह ख़ल्वत खाना बैतुल मक़्दिस की मश्रिक़ी जानिब का हुज्रा था। (त़ब्री : 18/161) यह भी क़ौल है कि शाम और मिस्र के बीच जब आप पहुँच चुकी थीं उस वक़्त बच्चा होने के दर्द लगे। (त़ब्री : 18/170) और क़ौल है कि बैतुल मक़्दिस से आप आठ मील

चली गई थीं। उस बस्ती का नाम बैतुल्लहम था। (तब्री : 18/170) पहले मेअराज के वाक़िये के बयान में एक हदीस गुज़री है जिसमें है कि हज़रत ईसा (عليه السلام) की पैदाइश की जगह भी बैतुल्लहम था। (नसाई, किताबुस्सलात, बाब फ़र्ज़ुस्सलात... : 451; व सनदुहू हसन) वल्लाहु आलम! मशहूर बात भी यही है और ईसाईयों का तो इस पर इत्तिफ़ाक़ है और इस हदीस में भी है अगर यह सही हो। उस वक़्त आप मौत की तमन्ना करने लगीं। क्योंकि दीन के फ़ित्ने के वक़्त यह तमन्ना भी जाइज़ है जानती थीं कि कोई उन्हें सच्चा न कहेगा। उनके बयानकर्दा वाक़िया को हर शख़्स मनगढ़त समझेगा दुनिया आपको परेशान कर देगी और इबादत व इत्मिनान में ख़लल पड़ेगा। हर शख़्स बुराई से याद करेगा और लोगों पर बुरा असर पड़ेगा। तो कहने लगीं काश कि मैं इस हालत से पहले ही उठा ली जाती। (तब्री : 18/172) बल्कि काश कि मैं पैदा ही न की जाती। इस क़द्र शर्म व हया दामनगीर हुई कि आपने उस तक्लीफ़ पर मौत को तर्जीह दी और तमन्ना की काश! कि मैं खोयी हुई और याद से उतरी हुई चीज़ हो जाती कि न कोई याद करे, न ढूँढे, न ज़िक्र करे। हदीसों में मौत माँगने की मुमानिअत वारिद है। हमने इन रिवायतों को आयत (تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا) (12/यूसुफ़ : 101) की तफ़्सीर में बयान कर दिया है।

***

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّىْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِىْ وَاشْرَبِىْ وَقَرِّىْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِىْٓ اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾

तर्जुमा : "इतने में उसे नीचे से ही आवाज़ दी कि आज़ुर्दा ख़ातिर न हो तेरे रब ने तेरे पैर तले एक चश्मा जारी कर दिया है। (24) और उस खजूर के दरख़्त के तने को अपनी तरफ़ हिलाओ तो यह तेरे सामने तरोताज़ा पक्की खजूरें गिरा देगा। (25) अब चैन से खा पी और आँखें ठण्डी रख अगर तुझे कोई इंसान नज़र पड़ जाए तो कह देना कि मैंने रब रहमान के नाम का रोज़ा मान रखा है मैं आज किसी शख़्स से बात न करूँगी।" (26)

हज़रत मरयम (عليها السلام) के लिए इन्आमाते इलाही (आयत 24 से 26) : (मिन तहतिहा) की दूसरी क़िराअत (मिन तहतहा) भी है। यह ख़िताब करने वाले हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) थे। (तब्री : 18/173) हज़रत ईसा (عليه السلام) का तो पहला काम वही था जो आपने अपनी वालिदा की बराअत व पाकदामनी में लोगों के सामने किया था। उस वादी के नीचे के किनारे से उस घबराहट और परेशानी के आलम में हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने यह तशफ़्फ़ी दी थी। यह क़ौल भी कहा गया है कि यह बात हज़रत ईसा (عليه السلام) ने ही कही थी। आवाज़ आई कि ग़मगीन न हो तेरे क़दमों तले तेरे रब ने साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मीठा पानी का चश्मा जारी कर दिया है

यह पानी तुम पी लो। (तब्री : 18/175) एक क़ौल यह है कि उस चश्मे से मुराद ख़ुद हज़रत ईसा (عليه السلام) हैं। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर है। चुनाँचे उस पानी के ज़िक्र के बाद ही खाने का ज़िक्र है कि खजूर के उस दरख़्त को हिलाओ उसमें से तरोताज़ा खजूरें झड़ेंगी, वह खाओ। कहते हैं यह दरख़्त सूखा पड़ा हुआ था और यह क़ौल भी है कि फलदार था। बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि उस वक़्त वह दरख़्त खजूरों से खाली था लेकिन आपके हिलाते ही उसमें से क़ुदरते बारी तआला से खजूरें झड़ने लगीं। खाना पीना सब कुछ मौजूद हो गया और इजाज़त भी दे दी। फ़र्माया खा पी और दिल को मसरूर रख।

हज़रत अम्र बिन मैमून (रह.) का फ़र्मान है कि निफ़ास वाली औरतों के लिए तर खजूरों और ख़ुश्क खजूरों से बेहतर और कोई चीज़ नहीं। (तब्री : 18/179) एक हदीस में है कि "खजूर के दरख़्त का इकराम करो। यह उसी मिट्टी से पैदा हुआ है जिससे आदम (अ.) पैदा हुए थे। उसके सिवा और कोई दरख़्त नर मादा मिलकर नहीं फलता। औरतों की विलादत के वक़्त तर खजूरें खिलाओ, न मिलें तो ख़ुश्क ही सही। कोई दरख़्त उससे बढ़कर अल्लाह के नज़दीक मर्तबे वाला नहीं। इसीलिए उसके नीचे हज़रत मरयम (عليها السلام) को उतारा।" (मुस्नदे अबी यअ्ला : 455; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन मुन्क़तअ; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/89; अल्मौज़ूआत : 1/184) यह हदीस बिलकुल मुन्कर है (तुसाक़ित) की दूसरी क़िराअत (तस्साक़त) और तस्क़त भी है। मतलब तमाम क़िराअतों का एक ही है। फिर इर्शाद हुआ कि किसी से बात न करना, इशारे से समझा देना कि मैं आज रोज़े से हूँ। या तो मुराद यह है कि उनके रोज़े में बातचीत मना थी या यह कि मैंने बोलने से ही रोज़ा रखा है। (तब्री : 18/182)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के पास दो शख़्स आए एक ने सलाम किया दूसरे ने न किया। आपने पूछा इसकी क्या वजह है? लोगों ने कहा इसने क़सम खाई है कि आज यह किसी से बात न करेगा। आपने फ़र्माया, इसे तोड़ दे सलाम कलाम शुरू कर, यह तो सिर्फ़ हज़रत मरयम (عليها السلام) के लिए ही था, क्योंकि अल्लाह तआला को आपकी सदाक़त व करामत साबित करनी मंज़ूर थी इसलिए उसे उज़्र बना दिया था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद (रह.) कहते हैं जब हज़रत ईसा (عليه السلام) ने अपनी वालिदा से कहा कि आप घबराएँ नहीं तो आपने कहा, मैं कैसे न घबराऊँ, शौहर वाली मैं नहीं, किसी की मिल्कियत की लौण्डी बाँदी मैं नहीं, मुझे दुनिया न कहेगी कि यह बच्चा कैसे हुआ? मैं लोगों के सामने क्या जवाब दे सकूँगी? कौनसा उज़्र पेश कर सकूँगी हाय! काश कि मैं इससे पहले ही मर गई होती, काश कि मैं नसिय्यम् मन्सिय्या हो गई होती। उस वक़्त हज़रत ईसा (عليه السلام) ने कहा, अम्मा! आपको किसी से बोलने की ज़रूरत नहीं, मैं ख़ुद उन सबसे निमट लूँगा। आप तो उन्हें सिर्फ़ यह समझा देना कि आज आपने चुप रहने की नज़्र मानी है।

***

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا یٰمَرْیَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَیْـًٔا فَرِیًّا ﴿۲۷﴾ یٰۤاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِیًّا ﴿۲۸﴾ فَاَشَارَتْ اِلَیْهِ ؕ قَالُوْا كَیْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِی الْمَهْدِ صَبِیًّا ﴿۲۹﴾ قَالَ اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ ؕ اٰتٰىنِیَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِیْ نَبِیًّا ﴿۳۰﴾ وَّجَعَلَنِیْ مُبٰرَكًا اَیْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَاَوْصٰنِیْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَیًّا ﴿۳۱﴾ وَبَرًّۢا بِوَالِدَتِیْ ؗ وَلَمْ یَجْعَلْنِیْ جَبَّارًا شَقِیًّا ﴿۳۲﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَیَّ یَوْمَ وُلِدْتُّ وَیَوْمَ اَمُوْتُ وَیَوْمَ اُبْعَثُ حَیًّا ﴿۳۳﴾

तर्जुमा : "अब हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को लिये हुए वह अपनी क़ौम के पास आईं, सब कहने लगे मरयम तूने बड़ी बुरी हरकत की। (27) ऐ हारून (अलैहिस्सलाम) की बहन! न तो तेरा बाप बुरा आदमी था और न तेरी माँ बदकार थी। (28) मरयम (अलैहस्सलाम) ने अपने बच्चे की तरफ़ इशारा किया। सब कहने लगे कि लो! भला हम गोद के बच्चे से बातें कैसे करें? (29) बच्चा बोल उठा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब अता की और मुझे अपना पैग़म्बर बनाया है। (30) और उसने मुझे बाबरकत किया है जहाँ भी मैं हूँ और उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया है जब तक भी मैं ज़िन्दा हूँ। (31) और उसने मुझे अपनी वालिदा की ख़िदमत गुज़ार बनाया है। और मुझे सरकश और बदबख़्त नहीं किया। (32) और मुझ पर मेरी पैदाइश के दिन और मेरी मौत के दिन और जिस दिन कि मैं दोबारा ज़िन्दा खड़ा किया जाऊँगा सलाम ही सलाम है।" (33)

मरयम (अलैहस्सलाम) ईसा (अलैहिस्सलाम) को लेकर आती हैं (आयत 27 से 33) : हज़रत मरयम (अलैहस्सलाम) ने अल्लाह तआला के इस हुक्म को भी तस्लीम कर लिया। और अपने बच्चे को गोद में लिये हुए लोगों के पास आईं। देखते ही हर एक उँगली उठाने लगा और हर मुँह से निकल गया कि मरयम! तूने तो बड़ा ही बुरा काम किया। (तब्री : 18/185) नोफ़ बक्काली (रह.) कहते हैं कि लोग हज़रत मरयम (अलैहस्सलाम) की जुस्तजू में निकले थे लेकिन अल्लाह तआला की शान कहीं उन्हें खोज ही न मिला। रास्ते में एक चरवाहा मिला। उससे पूछा कि ऐसी ऐसी औरत को तूने कहीं इस जंगल में देखा है? उसने कहा, नहीं! लेकिन मैंने रात को एक अजीब बात यह देखी कि मेरी यह तमाम गायें उस वादी की तरफ़ सज्दे में गिर गईं। मैंने इससे पहले कभी ऐसा वाक़िया देखा नहीं और मैंने अपनी आँखों से देखा है कि उस तरफ़ एक नूर (रोशनी) नज़र आ रहा था। वह उसकी

निशानदेही पर जा रहे थे जो सामने से हज़रत ईसा (عليه السلام) की वालिदा बच्चे को लिये हुए आती दिखाई दे गईं। उन्हें देखकर आप वहीं अपने बच्चे को गोद में लिये हुए बैठ गईं। उन सभी ने आपको घेर लिया और बातें बनाने लगे। उनका यह कहना कि ऐ हारून की बहन! इससे मुराद यह है कि आप हज़रत हारून (عليه السلام) की नस्ल से थीं। (तब्री : 18/187) या आपके घराने में हारून नामी एक सालेह शख़्स थे और उसी की सी इबादत व रियाज़त हज़रत मरयम सिद्दीक़ा (عليها السلام) की थी। इसलिए उन्हें हारून की बहन कहा गया। कोई कहता है हारून नामी एक बदकार शख़्स था इसलिए लोगों ने तअ़न की राह से उन्हें उसकी बहन कहा।

हारून (عليه السلام) की बहन क्यूँ कहा : इन सब क़ौल से बढ़कर ग़रीब क़ौल एक यह भी है कि आप हज़रत हारून व मूसा (عليه السلام) की वही सगी बहन हैं जिन्हें हज़रत मूसा (عليه السلام) की वालिदा ने जब हज़रत मूसा (عليه السلام) को पेटी में डालकर दरिया में छोड़ा था तो उनसे कहा था कि तुम इस तरह उसके पीछे पीछे किनारे किनारे जाओ कि किसी को ख़्याल भी न गुज़रे। यह क़ौल तो बिलकुल ग़लत मालूम होता हे इसलिए कि क़ुरआन से साबित है कि हज़रत ईसा (عليه السلام) बनी इस्राईल के आख़िरी नबी थे। आपके बाद सिर्फ़ ख़त्मुल अम्बिया, हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ही नबी हुए हैं चुनाँचे सहीह बुख़ारी में है कि आप फ़र्माते हैं कि ''ईसा बिन मरयम (عليه السلام) से सबसे ज्यादा क़रीब मैं हूँ इसलिए कि मुझ में और उनके बीच में कोई नबी नहीं गुज़रा।'' (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वज़्कुरु फ़िल किताबि मरयम इज़न तबज़त मिन अहलिहा...) : 3442; सहीह मुस्लिम : 2365; अहमद : 2/463; इब्ने हिब्बान : 6195) पस अगर मुहम्मद बिन कअ़ब (रह) का यह क़ौल कि आप हज़रत हारून (عليه السلام) की सगी बहन थीं ठीक हो तो यह मानना पड़ेगा कि आप हज़रत सुलेमान (عليه السلام) और हज़रत दाऊद (عليه السلام) से भी पहले थे क्योंकि क़ुरआन मजीद में मौजूद है कि हज़रत दाऊद (عليه السلام) हज़रत मूसा (عليه السلام) के बाद हुए हैं। मुलाहिज़ा हो आयत (اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى) (2/बक़रह : 246) इन आयतों में हज़रत दाऊद (عليه السلام) का वाक़िया और आपका जालूत को क़त्ल करना बयान हुआ है। और लफ़्ज़ मौजूद हैं कि यह मूसा (عليه السلام) का वाक़िया है। उन्हें ग़लती लगी है उसकी वजह तौरात की वह इबारत है जिसमें है कि जब हज़रत मूसा (عليه السلام) बनी इस्राईल के साथ दरिया से पार हो गए और फ़िरओन अपने लश्कर के साथ डूब मरा उस वक़्त मरयम बिन्ते इमरान (عليها السلام) ने जो मूसा और हारून (عليه السلام) की बहन थीं दुफ़ पर अल्लाह तआला के शुक्र के तराने बुलंद किये, आपके साथ और औरतें भी थीं। इस इबारत से क़ुर्ज़ी (रह.) ने समझ लिया कि यही हज़रत ईसा (عليه السلام) की वालिदा हैं हालाँकि यह महज़ ग़लत है। मुम्किन है कि हज़रत मूसा(عليه السلام) की बहन का नाम भी मरयम हो। लेकिन यह कि यही मरयम हज़रत ईसा عليه السلام की वालिदा थीं इसका कोई सबूत नहीं बल्कि यह महज़ नामुम्किन है। हो सकता है कि दोनों का नाम एक हो एक नाम पर दूसरे नाम रखे जाते हैं। बनी इस्राईल में तो आदत थी कि वह अपने नबियों वलियों के नाम पर अपने नाम रखते थे।

मुस्नद अहमद में मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) से मरवी है कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नजरान भेजा। वहाँ मुझसे कुछ नसरानियों ने पूछा कि तुम (या उख़्ता हारून) पढ़ते हो हालाँकि मूसा (عليه السلام) तो ईसा (عليه السلام) से बहुत पहले गुज़रे हैं। मुझसे तो कोई जवाब न बन पड़ा। जब मैं मदीना वापिस आया और हुज़ूर

(ﷺ) से यह ज़िक्र किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''तुमने उन्हें उसी वक़्त क्यूँ न जवाब दिया कि वह लोग अपने नबियों और नेक लोगों के नाम पर अपने और अपनी औलादों के नाम बराबर रखा करते थे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल आदाब, बाब अन्नही अनित्तुकन्ना बिअबिल क़ासिम... : 2135; तिर्मिज़ी : 3155; सुननुल कुब्रा : 11315; अहमद : 4/252) सहीह मुस्लिम में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह ग़रीब बतलाते है। एक मर्तबा हज़रत कअब (रह.) ने कहा था कि यह हारून मूसा (عليه السلام) के भाई हारून नहीं। इस पर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (رضي الله عنها) ने इंकार किया तो आपने कहा कि अगर तुमने रसूलुल्लाह से कुछ सुना हो तो हमें मंज़ूर है वरना तारीख़ी तौर पर तो उनाके बीच छः सौ साल का फ़ासिला है। यह सुनकर हज़रत आइशा (रज़ि.) ख़ामोश हो गईं। इस तारीख़ में हमें क़द्रे ताम्मुल है। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत मरयम (عليها السلام) का घराना ऊपर से ही नेक सालेह और दीनदार था और यह दीनदारी बराबर गोया विरासतन चली आ रही थी। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं और कुछ घराने उसके ख़िलाफ़ भी होते हैं कि ऊपर से नीचे तक सब बद ही बद। यह हारून बड़े बुज़ुर्ग आदमी थे इस वजह से बनी इस्राईल में हारून नाम रखने का आम तौर पर चलन हो गया था। यहाँ तक मज़्कूर है कि जिस दिन हज़रत हारून (عليه السلام) का जनाज़ा निकला है तो आपके जनाज़े में इसी हारून नाम के चालीस हज़ार आदमी थे।

हज़रत ईसा (عليه السلام) ने माँ की गोद में बोलकर गवाही दी : अल्ग़र्ज़ वह लोग मलामत करने लगे कि तुमसे यह बुराई कैसे सरज़द हो गई तुम तो नेक कोख की बच्ची हो। माँ बाप दोनों सालेह, सारा घराना पाक फिर तुमने यह क्या हरकत की? क़ौम की यह कड़वी कसीली बातें सुनकर आपने हस्बे फ़र्मान अपने बच्चे की तरफ़ इशारा किया कि इससे पूछ लो। उन लोगों को ताव पर ताव आया कि देखो! कैसा ढिठाई का जवाब देती है गोया हमें पागल बना रही है। भला गोद के बच्चे से हम क्या पूछेंगे और वह हमें क्या बताएगा? इतने में बिन बुलवाए आप बोल उठे कि लोगों! मैं अल्लाह तआला का एक गुलाम हूँ। सबसे पहला कलाम हज़रत ईसा (عليه السلام) का यही है अल्लाह तआला की तअज़ीम बयान की और अपनी गुलामी और बंदगी का ऐलान किया। अल्लाह तआला की ज़ात को औलाद से पाक बतलाया बल्कि साबित कर दिया क्योंकि औलाद गुलाम नहीं होती। फिर अपनी नबुव्वत का इज़्हार किया कि मुझे उसने किताब दी है और मुझे अपना नबी बनाया है। उसमें अपनी वालिदा की बराअत बयान की बल्कि दलील भी दे दी कि मैं तो अल्लाह तआला का पैग़म्बर हूँ। रब ने मुझे अपनी किताब भी इनायत की है। कहते हैं कि जब लोग आपकी वालिदा माजिदा से बातें बना रहे थे आप उस वक़्त दूध पी रहे थे जिसे छोड़कर बाएँ करवट से होकर उनकी तरफ़ तवज्जह करके यह जवाब दिया। कहते हैं कि इस क़ौल के वक़्त आपकी उँगली उठी हुई थी और हाथ मूँढे तक ऊँचा था। इक्रिमा (रह.) तो फ़र्माते हैं मुझे किताब दी इसका मतलब यह है कि देने का इरादा कर चुका है यह पूरा होकर रहेगा। हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं उसी वक़्त आपको याद थी सब सीखे हुए ही पैदा हुए थे। लेकिन इस क़ौल की सनद ठीक नहीं। मैं जहाँ भी हूँ, लोगों को भलाई सिखाने वाला उन्हें नफ़ा पहुँचाने वाला हूँ। (तब्री : 18/191) एक आलिम अपने से बड़े आलिम से मिले और पूछे कि मुझे अपने किस अमल के ऐलान की इजाज़त है? फ़र्माया भली बात कहने और बुरी बात से रोकने की इसलिए कि यही असल दीन है और यही अल्लाह के नबियों का वरसा है। यही

काम उनके सुपुर्द होता रहा। पस इज्माई मसला है कि हज़रत ईसा (ﷺ) की इस आम बरकत से मुराद भलाई का हुक्म और बुराई से रोकना है। जहाँ बैठते उठते आते जाते यह काम बराबर जारी रहता। (तब्री : 18/191) कभी अल्लाह की बातें पहुँचाने से न रुकते। फ़र्माते हैं मुझे हुक्म मिला है कि ज़िन्दगी भर तक नमाज़ व ज़कात का पाबन्द रहूँ। यही हुक्म हमारे नबी (ﷺ) को मिला। इर्शाद है (وَ اعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ) (15/हिज्र : 99) मरते दम तक अपने रब की इबादत में लगा रह। पस हज़रत ईसा (ﷺ) ने भी फ़र्माया कि उसने मुझ पर यह दोनों काम मेरी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक लिख दिये हैं।

(इससे तक़्दीर का सबूत और मुंकिरीने तक़्दीर की तर्दीद भी हो जाती है) रब की इताअत के इस हुक्म के साथ ही मुझे अपनी वालिदा की ख़िदमत गुज़ारी का भी हुक्म मिला है। उमूमन कुरआन में यह दोनों चीज़ें एक साथ बयान होती हैं। जैसे आयत (وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا) (17/इस्राईल:23) और आयत (اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ) (31/लुक़्मान : 14) में। उसने मुझे गर्दन कश नहीं बनाया कि मैं उसकी इबादत से या वालिदा की इताअत से सरकशी और तकब्बुर करूँ और बदबख़्त बन जाऊँ। कहते हैं कि जब्बार व शक़ी वह है जो गुस्से में आकर ख़ूँ रेज़ी करे। फ़र्माते हैं माँ बाप का नाफ़र्मान वही होता है जो बदबख़्त और गर्दनकश (किलर) हो। बदख़ुल्क़ वही होता है जो अकड़ने वाला और बनने वाला हो।

मज़्कूर है कि एक मर्तबा आपके मोजिज़ों को देखकर एक औरत तअज्जुब से कहने लगी, मुबारक है वह पेट जिसमें तूने परवरिश पाई और मुबारक है वह सीना जिसने तुझे दूध पिलाया। आपने जवाब दिया मुबारक है वह जिसने किताबुल्लाह की तिलावत की फिर ताबेदारी की और सरकश और बदबख़्त न बना। फिर फ़र्माते हैं मेरी पैदाइश की मौत के बाद दोबारा जी उठने के दिन में मुझ पर सलामती है। इससे भी आपकी उबूदियत और मिन्जुम्ला मख़्लूक़ के एक मख़्लूक़े अल्लाह होना साबित हो रहा है कि आप मिस्ल इंसानों के अदम से वजूद में आए फिर मौत का मज़ा भी चखेंगे फिर क़ियामत के दिन दोबारा उठेंगे भी। लेकिन हाँ! यह तीनों मौक़े ख़ूब सख़्त और कठिन हैं। आप पर आसान और सहल होंगे न कोई घबराहट होगी, न परेशानी बल्कि अम्नो चैन और सरासर सलामती, सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि।

***

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ
وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा :"यह है सही वाक़िया ईसा बिन मरयम (ﷺ) का यही है वह हक़ बात जिसमें लोग शक व शुब्हा में मुब्तला हैं। (34) औलाद अल्लाह तआ़ला के लायक़ ही नहीं वह तो बिलकुल पाक ज़ात है वह तो जब किसी काम के सरअंजाम का इरादा करता है तो उसे कह देता है कि हो जा वह उसी वक़्त हो जाता है। (35) मेरा और तुम सबका परवरदिगार सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है तुम सब उसी की इबादत किया करो यही सीधी राह है। (36) फिर यह फ़िर्क़े आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे पस काफ़िरों के लिए वैल (बर्बादी) है उस बड़े दिन के आ जाने से।" (37)

हज़रत ईसा (ﷺ) का असल वाक़िया (आयत 34 से 37) : अल्लाह तआ़ला अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से फ़र्माता है कि हज़रत ईसा (ﷺ) के वाक़िया में जिन लोगों का इख़्तिलाफ़ था उनमें जो बात सही थी वह इतनी ही थी जितनी हमने बयान कर दी। क़ौल की दूसरी क़िराअत क़ाल भी है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िराअत में (क़ालल हक़्क़) है। (तब्री : 18/194) क़ौल का रफ़अ ज़्यादा ज़ाहिर है। जैसे (اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ) (3/आले इमरान : 60) में यह बयान करके कि हज़रत ईसा (ﷺ) अल्लाह तआ़ला के नबी थे और उसके बन्दे फिर अपने नफ़्स की पाकीज़गी बयान करता है कि अल्लाह तआ़ला की शान से गिरी हुई बात है कि उसकी औलाद हो। यह जाहिल ज़ालिम जो अफ़वाहें उड़ा रहे हैं इनसे अल्लाह तआ़ला पाक और दूर है। वह जिस काम को करना चाहता है उसे सामाने अस्बाब की ज़रूरत नहीं पड़ती। फ़र्मा देता है कि हो जा उसी वक़्त वह काम हो जाता है इधर हुक्म हुआ उधर चीज़ तैयार मौजूद है। जैसे फ़र्मान है (اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ) (3/आले इमरान : 59) यानी हज़रत ईसा (ﷺ) की मिसाल रब तआ़ला के नज़दीक मिस्ल आदम के है कि उसे मिट्टी से बनाकर फ़र्माया कि हो जा उसी वक़्त वह हो गये, यह बिलकुल सच है और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान, तुझे इसमें किसी क़िस्म का शक न करना चाहिए हज़रत ईसा (ﷺ) ने अपनी क़ौम से यह भी फ़र्माया कि मेरा और तुम सबका रब अल्लाह तआ़ला ही है। तुम सब उसी की इबादत करते रहो। सीधी राह जिसे मैं अल्लाह तआ़ला की जानिब से लेकर आया हूँ, यही है उसकी ताबेदारी करने वाला हिदायत पर है और उसका ख़िलाफ़ करने वाला गुमराही पर है। यह फ़र्मान भी आपका माँ की गोद से ही था।

हज़रत ईसा (ﷺ) के अपने बयान और हुक्म के ख़िलाफ़ बाद वालों ने लबकुशाई की और उनके बारे में मुख़्तलिफ़ पार्टियों की शक्ल में यह लोग बट गए चुनाँचे यहूद ने कहा कि हज़रत ईसा (ﷺ) नऊज़ुबिल्लाह वलदुज़्ज़िना हैं, अल्लाह तआ़ला की लअ़नतें उन पर हों कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला के एक बेहतरीन रसूल पर बदतरीन तोहमत रखी और कहा कि उनका यह कलाम वग़ैरह सब जादू के करिश्मे थे। इसी तरह ईसाई बहक गए, कहने लगे कि यह तो ख़ुद अल्लाह तआ़ला है यह कलाम अल्लाह तआला का ही है। किसी ने कहा यह अल्लाह का लड़का है, किसी ने कहा कि तीन मअ़बूदों में से एक है। हाँ! एक जमाअ़त ने वाक़िया के मुताबिक़ कहा कि आप अल्लाह तआ़ला के बन्दे और उसके रसूल हैं। यह क़ौल सही है। अहले इस्लाम का अक़ीदा हज़रत ईसा (ﷺ) की निस्बत यही है और यही तअ़लीम बारी तआ़ला की है।

कहते हैं कि बनी इस्राईल का मज्मआ जमा हुआ और अपने में से उन्होंने चार हज़ार आदमी छाँटे। हर क़ौम ने अपना अपना एक आलिम पेश किया यह वाक़िया हज़रत ईसा (अ.) के आसमान पर उठ जाने के बाद का है। यह लोग आपस में मुख़्तलिफ़ हुए। एक तो कहने लगा कि यह ख़ुद अल्लाह था। जब तक उसने चाहा ज़मीन पर रहा जिसे चाहा जलाया जिसे चाहा मारा फिर आसमान पर चला गया। इस गिरोह को यअक़ूबिया कहते हैं। लेकिन और तीनों ने उसे झुठलाया और कहा तूने झूठ कहा! अब दो ने तीसरे से कहा, अच्छा बता तेरा क्या ख़्याल है? उसने कहा वह अल्लाह के बेटे थे। उस जमाअत का नाम नस्तूरिया पड़ा। दो जो रह गए उन्होंने कहा तूने भी ग़लत कहा। फिर उन दो में से एक ने कहा कि तुम कहो! उसने कहा मैं तो यह अक़ीदा रखता हूँ कि वह तीन में से एक हैं। एक तो अल्लाह जो मअबूद है। दूसरे यही मअबूद हैं तीसरे इनकी वालिदा जो मअबूद हैं, यह इस्राईलिया गिरोह हुआ और यही नसरानियों के बादशाह थे, अलैहिम लअ़ाइनुल्लाह! चौथे ने कहा तुम सब झूठे हो हज़रत ईसा (عليه السلام) अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल थे अल्लाह ही का कलिमा था और उसके पास की भेजी हुई रूह। यह लोग मुसलमान कहलाए और यही सच्चे थे। उनमें से जिसके ताबेअ जो थे वह उसी के क़ौल पर हो गए और आपस में ख़ूब जूत उछला। चूँकि सच्चे इस्लाम वाले हर ज़माने में तादाद में कम होते हैं उन पर यह मल्ऊन छा गए उन्हें दबा दिया उन्हें मारना पीटना और क़त्ल करना शुरू कर दिया।

ईसाईयों ने दीने ईसा को बदल दिया : अक्सर मुअर्रिख़ीन का बयान है कि कुस्तुन्तीन बादशाह ने तीन बार ईसाइयों को जमा किया। आख़िरी बार इज्तिमाअ में उनके दो हज़ार एक सौ सत्तर उलमा जमा हुए थे लेकिन यह सब आपस में हज़रत ईसा (عليه السلام) के बारे में अलग अलग ख़याल थे। सौ (100) कुछ कहते थे तो सत्तर (70) और ही कुछ कहते थे। पचास कुछ और ही कह रहे थे साठ का अक़ीदा कुछ और ही था। हर एक का ख़्याल दूसरे से टकरा रहा था। सबसे बड़ी जमाअत तीन सौ साठ की थी। बादशाह ने उस तरफ़ कसरत देखकर कसरत का साथ दिया। मस्लिहते मुल्की उसी में थी कि उस कसीर गिरोह की तरफ़दारी की जाए। पस उसकी पॉलिसी ने उसी तरफ़ मुतवज्जा कर दिया और उसने बाक़ी सब लोगों को निकलवा दिया और उनके लिए अमानते कुब्रा की रस्म ईजाद की जो दरअसल सबसे ज़्यादा घटिया ख़यानत है। अब मसाइले शरइया की किताबें उन उलमा से लिखवाईं और बहुत सी रुसूमाते मुल्की और ज़रूरियाते शहरी को शरई सूरत में उनमें दाख़िल कर दिया। बहुत सी नई नई बातें ईजाद कीं और असली दीने मसीह की सूरत को मिटा दिया और एक मज्मूआ मुरत्तब कराया और उसे लोगों में क़ानूनन राइज कर दिया और उस वक़्त से दीने मसीह यही समझा जाने लगा। जब उस पर उन सबको रज़ामंद कर लिया तो अब चारों तरफ़ कनीसे गिरजे और इबादतख़ाने बनवाने और वहाँ उन उलमा को बिठाने और उनके ज़रिये से उस अपनी नयी पैदा की गई मसीहियत को फैलाने की कोशिश मे लग गया। शाम में जज़ीरा में रूम में तक़रीबन बारह हज़ार ऐसे मकानात उसके ज़माने में तअमीर कराये गए। उसकी माँ हीलाना ने जिस जगह सूली गढ़ी हुई थी वहाँ एक कुब्बा बनवा दिया और उसकी बाक़ायदा पूजा शुरू हो गयी और सबने यक़ीन कर लिया कि हज़रत ईसा (عليه السلام) सूली पर चढ़ गए। हालाँकि उनका यह क़ौल भी ग़लत है अल्लाह तआला ने अपने इस मुअज़्ज़ज़ बन्दे को अपनी जानिब आसमान पर उठा लिया है यह है ईसाई मज़हब इख़्तिलाफ़ की हल्की सी मिसाल।

ऐसे लोग जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधें उसकी औलादें और शरीक व साझी साबित करें भले वह दुनिया में मोहलत पा लें लेकिन उस अ़ज़ीमुश्शान दिन उनकी हलाकत उन्हें हर तरफ़ से घेर लेगी और बर्बाद हो जाएँगे। अल्लाह तआला अपने नाफ़र्मानों को जल्दी अ़ज़ाब न करे लेकिन बिलकुल छोड़ता भी नहीं।

बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है ''अल्लाह तआला ज़ालिम को ढील देता है लेकिन जब उसकी पकड़ नाज़िल होती है तो फिर कोई पनाह की जगह बाक़ी नहीं रहती।'' यह फ़र्माकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आयते कुरआन (وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ) (11/हूद : 102) तिलावत फ़र्माई यानी तेरे रब की पकड़ का त़रीक़ा ऐसा ही है। जब वह किसी ज़ुल्म से आलूद बस्ती को पकड़ता है यक़ीन मानो कि उसकी पकड़ निहायत अलमनाक और बहुत सख़्त है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हूद बाब क़ौलुहू (व कज़ालिका अख़ज़ रब्बुका इज़ा अख़ज़ल क़ुरा वहिया ज़ालिमह...) : 4686; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2583; तिर्मिज़ी : 3110; इब्ने माजा : 4018; इब्ने ह़िब्बान : 5175; बैहक़ी : 6/94)

बुख़ारी व मुस्लिम की और ह़दीस में है कि ''नापसंदीदा बातों को सुनकर स़ब्र करने वाला अल्लाह तआला से ज़्यादा कोई नहीं। लोग उसकी औलाद बताते हैं और वह उन्हें रोज़ियाँ दे रहा है और आ़फ़ियत भी।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब अस़्स़ब्रु फ़िल अज़ा : 6099; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2804; अल्अस्माउ वस़्सिफ़ातु लिल बैहक़ी : 1064) ख़ुद कुरआन फ़र्माता है (وَ كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَ هِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَ اِلَىَّ الْمَصِيْرُ) (22/ह़ज्ज : 48) बहुत सी बस्तियों वाले वह हैं जिनके ज़ालिम होने के बावजूद मैंने उन्हें ढील दी फिर पकड़ लिया। आख़िर लौटना तो मेरी ही जानिब है। और आयत में है कि ज़ालिम लोग अपने आ़माल से अल्लाह तआला को ग़ाफ़िल न समझें। उन्हें जो मोहलत है वह उस दिन तक है जिस दिन आँखें ऊपर को चढ़ जाएँगी।' (15/इब्राहीम : 42)

यही फ़र्मान यहाँ भी है कि इन पर उस बहुत बड़े दिन की ह़ाज़िरी निहायत सख़्त दुश्वार होगी। स़ह़ीह़ ह़दीस में है ''जो शख़्स़ इस बात की गवाही दे कि अल्लाह एक ही है वह मअ़बूदे बरह़क़ है, उसके सिवा लायक़े इबादत कोई नहीं और यह कि मुह़म्मद (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और यह कि ह़ज़रत ईसा (عليه السلام) अल्लाह तआला के बन्दे और उसके पैग़म्बर हैं और उसका कलिमा हैं जिसे ह़ज़रत मरयम (عليها السلام) की त़रफ़ डाला था और उसके पास की भेजी हुई रूह़ हैं और यह कि जन्नत ह़क़ है और दोज़ख़ ह़क़ है उसके ख़्वाह कैसे ही आ़माल हों अल्लाह तआला उसे ज़रूर जन्नत में पहुँचाएगा।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुहू तआला (या अहलल किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम) : 3435; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 28; अह़मद : 5/313)

***

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : ''क्या ख़ूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे सामने हाज़िर होंगे लेकिन आज तो यह ज़ालिम लोग सरीह गुमराही में पड़े हुए हैं। (38) तू इन्हें उस रंजो अफ़सोस के दिन का डर सुना दे जबकि काम अंजाम को पहुँचा दिया जाएगा। और यह लोग ग़फ़्लत और बेईमानी में ही रह जाएँगे। (39) ख़ुद ज़मीन के और तमाम ज़मीन वालों के वारिस हम ही होंगे और सब लोग हमारी तरफ़ लौटाकर लाए जाएँगे।'' (40)

ज़ालिम क़ियामत के दिन सब कुछ देख लेंगे (आयत 38 से 40) : इर्शाद है कि भले आज दुनिया में यह कुफ़्फ़ार आँखें बंद किये हुए और कानों में काक लगाये हुए हैं लेकिन क़ियामत के दिन इनकी आँखें ख़ूब रोशन हो जाएँगी और कान भी ख़ूब खुल जाएँगे जैसे फ़र्मानि बारी तआला है (وَ لَوْ تَرٰى إِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَ سَمِعْنَا) (32/सज्दा : 12) काश कि तू देखता जब यह गुनहगार अपने रब के सामने शर्मसार सर झुकाये खड़े हुए कह रहे होंगे कि ऐ अल्लाह! हमने देखा सुना, आख़िर तक।

पस उस दिन न देखना काम आये, न सुनना, न हसरत व अफ़सोस करना न वावेला करना। अगर यह लोग अपनी आँखों और अपने कानों से दुनिया में काम लेकर अल्लाह के दीन को मान लेते तो आज उन्हें हसरत व अफ़सोस न करना पड़ता। उस दिन आँखें खोलेंगे और आज अंधे बहरे बने फिरते हैं, न हिदायत को तलब करते हैं न देखते हैं न भली बातें सुनते हैं, न मानते हैं। मख़्लूक़ को उस हसरत वाले दिन से ख़बरदार कर दीजिए जबकि तमाम काम फ़ैसल कर दिये जाएँगे। जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में भेज दिये जाएँगे। इस हसरत नदामत के दिन से यह आज ग़ाफ़िल हो रहे हैं बल्कि ईमान व यक़ीन भी नहीं रखते। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जन्नतियों के जन्नत में और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में चले जाने के बाद मौत को एक भेड़ की सूरत में लाया जाएगा और जन्नत व जहन्नम के बीच खड़ा किया जाएगा। फिर अहले जन्नत से पूछा जाएगा कि इसे जानते हो? वह देखकर कहेंगे कि हाँ! यह मौत है। दोज़ख़ियों से भी यही सवाल किया जाएगा और वह भी यही जवाब देंगे, अब हुक्म होगा और मौत को ज़िब्ह कर दिया जाएगा और निदा कर दी जाएगी कि ऐ अहले जन्नत! तुम्हारे लिए हमेशगी है, मौत नहीं और अहले जहन्नम! तुम्हारे लिए भी हमेशगी है और मौत नहीं।'' फिर हुज़ूर (ﷺ) ने यही आयत (व अंज़िरहुम...) तिलावत की और आप (ﷺ) ने इशारा किया और फ़र्माया ''अहले दुनिया ग़फ़्लते दुनिया में हैं।'' (अहमद : 3/9; सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह मरयम,

बाब क़ौलुहू अज़्ज़ व जल्ल (व अंज़िरहुम यौमल हसरति) : 4730; सहीह मुस्लिम : 2849; मुस्नदे अबी यअला : 1075) इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने एक लम्बा वाक़िया बयान करते हुए फ़र्माया कि हर शख़्स अपने दोज़ख़ और जन्नत के घर को देख रहा होगा वह दिन ही हसरत व अफ़सोस का है जहन्नमी अपने जन्नती घर को देख रहा होगा और उससे कहा जाता होगा कि अगर तुम नेक अमल करते तो तुम्हें यह जगह मिलती वह हसरत व अफ़सोस करने लगेंगे। इधर जन्नतियों को उनका जहन्नम का ठिकाना दिखाकर कहा जाएगा कि अगर अल्लाह तआला का एहसान तुम पर न होता तो तुम यहाँ होते। (तबरी : 8/344) और रिवायत में है कि मौत को ज़िब्ह करके जब हमेशगी की आवाज़ लगा दी जाएगी उस वक़्त जन्नती तो इस क़द्र ख़ुश होंगे कि अगर अल्लाह तआला न बचाये तो मारे ख़ुशी के मर जाएँ और जहन्नमी इस क़द्र रंजीदा होकर चीखेंगे कि अगर मौत होती तो हलाक हो जाएँ। पस इस आयत का यही मतलब है यह वक़्ते हसरत भी होगा और काम के ख़ात्मे का वक़्त भी यही होगा। पस यौमुल हसरत भी क़ियामत के नामों में से एक नाम है।

चुनाँचे और आयत में है (اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِىْ جَنْۢبِ اللّٰهِ) (39/ज़ुमर : 56) फिर बतलाया कि ख़ालिक़ मालिक मुतसर्रिफ अल्लाह तआला ही है सब उसी की मिल्कियत है और सब कुछ फ़ानी है बाक़ी सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआला जल्ल शानुहू ही है। कोई मिल्कियत और तसर्रुफ़ का सच्चा दावेदार सिवाय उसके नहीं, तमाम ख़ल्क़ का वारिस हाकिम वही है उसकी ज़ात ज़ुल्म से पाक है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने अब्दुल हमीद बिन अब्दुर्रहमान (रह.) को कूफ़े में ख़त लिखा जिसमें लिखा, हम्दो सलात के बाद अल्लाह तआला ने रोज़े अव्वल से ही सारी मख़्लूक़ पर फ़ना लिख दी है। सबको उसकी तरफ़ लौटना है। उसने अपनी नाज़िलकर्दा इस सच्ची किताब में जिसे अपने इल्म से महफ़ूज़ किये हुए है और जिसकी निगहबानी अपने फ़रिश्तों से करा रहा है, लिख दिया है कि ज़मीन का और उसके ऊपर जो हैं उनका वारिस वही है और उसी की तरफ़ सब लौटाये जाएँगे।

***

وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ
مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِىْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّىْ قَدْ جَآءَنِىْ مِنَ الْعِلْمِ مَا
لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِىْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّىْۤ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ
لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾

तर्जुमा :''इस किताब में इब्राहीम (अ.) का क़िस्सा बयान कर। बेशक वह बड़ी रास्ती वाले पैग़म्बर थे। (41) जबकि उसने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान! आप इनकी पूजा पाठ क्यूँ कर रहे हैं जो न सुनें, न देखें? न आपको कुछ भी फ़ायदा पहुँचा सकें। (42) मेरे मेहरबान वालिद! आप देखिए मेरे पास वह इल्म आया है जो आपके पास आया ही नहीं तो आप मेरी ही मानिये मैं बिलकुल सीधी राह की तरफ़ आपकी रहबरी करूँगा। (43) मेरे अब्बाजान! आप शैतान की पूजा से बाज़ आ जाएँ शैतान तो रहमो करम वाले अल्लाह तआला का बड़ा ही नाफ़र्मान है। (44) अब्बाजान! मुझे डर लगा हुआ है कि कहीं आप पर कोई अल्लाह का अज़ाब न आ पड़े कि आप शैतान के साथी बन जाएँ।'' (45)

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की अपने वालिद से बातचीत (आयत 41 से 45) : मुश्रिकीने मक्का जो बुतपरस्त हैं और अपने आपको ख़लीलुल्लाह का ताबेदार ख़्याल करते हैं, उनके सामने ऐ नबी (ﷺ)! ख़ुद हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का वाक़िया बयान कीजिए। उस सच्चे नबी ने अपने बाप की भी परवाह न की और उसके सामने भी हक़ को वाज़ेह कर दिया और उसे बुतपरस्ती से रोका। साफ़ कहा कि क्यूँ इन बुतों की पूजापाठ कर रहे हो जो न नफ़ा पहुँचा सकें न नुक़्सान। फ़र्माया कि मैं बेशक आपका बच्चा हूँ। लेकिन अल्लाह का इल्म जो मेरे पास है आपके पास नहीं आप मेरी इत्तिबाअ कीजिए मैं आपको राहे रास्त दिखाऊँगा बुराइयों से बचाकर भलाईयों में पहुँचा दूँगा। अब्बा जी! यह बुतपरस्ती तो शैतान की ताबेदारी है वही उसकी राह समझाता है और वही उससे ख़ुश होता है। जैसे सूरह यासीन में है (اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ) (36/यासीन : 60) अल्लाह तआला कहेगा कि ऐ इंसानों! क्या मैंने तुमसे अहद नहीं लिया था कि शैतान की इबादत न करना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। और आयत में है (اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا) (4/निसाअ : 117) यह लोग तो औरतों को पुकारते हैं और अल्लाह तआला को छोड़ते हैं। दरअसल यह सरकश शैतान के पुकारने वाले हैं।

आपने फ़र्माया शैतान अल्लाह तआला का नाफ़र्मान है, मुख़ालिफ़ है, उसकी फ़र्मांबरदारी से तकब्बुर करने वाला है, इसी वजह से लअनत किया हुआ है अगर तूने भी उसकी इताअत की तो वह अपनी हालत पर तुझे भी पहुँचा देगा। अब्बाजान! आपके इस शिर्क व इस्यान की वजह से मुझे तो डर है कि कहीं आप पर अल्लाह तआला का कोई अज़ाब न आ जाए और आप शैतान के दोस्त और उसके साथी न बन जाएँ और अल्लाह की मदद और उसका साथ आपसे छूट न जाए। देखो! शैतान ख़ुद बेकस बेबस है, उसकी ताबेदारी आपको बुरी जगह पहुँचा देगी। जैसे फ़र्माने बारी है (تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ) (16/नहल : 63) यानी यह यक़ीनी और क़समिया बात है कि तुझसे पहले की उम्मतों की तरफ़ भी हमने रसूल भेजे लेकिन शैतान ने उनके बुरे अमलों को उन्हें अच्छे करके दिखलाए और वही उनका साथी बन गया लेकिन काम कुछ न आया और क़ियामत के दिन अज़ाबे अलीम में फंस गए।

***

قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ﴿۴۶﴾
قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا ﴿۴۷﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّیْ ۖ عَسٰۤی اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ شَقِیًّا ﴿۴۸﴾

तर्जुमा : ''उसने जवाब दिया कि ऐ इब्राहीम! क्या तुम हमारे मअबूदों से रूगर्दानी कर रहे हो सुन अगर तू बाज़ न आया तो तुझे पत्थरों से मार डालूँगा जा एक लम्बी मुद्दत तक मुझसे अलग रह। (46) कहा अच्छा तुम पर सलाम हो। मैं तो अपने परवरदिगार से तुम्हारी बख़िशश की दुआ करता रहूँगा। वह मुझ पर हद दर्जे मेहरबान है। (47) मैं तो तुम्हें भी और जिन जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो उन्हें भी सबको छोड़ रहा हूँ सिर्फ़ अपने रब को ही पुकारता रहूँगा मुझे यक़ीन है कि मैं अपने परवरदिगार से दुआ माँगने में महरूम न रहूँगा।'' (48)

वालिद का बेवक़ूफ़ाना जवाब (आयत 46 से 48) : हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के इस तरह समझाने पर उनके वालिद ने जो जिहालत का जवाब दिया वह बयान हो रहा है कि उसने कहा, इबाहीम (عليه السلام)! तू मेरे मअ़बूदों से बेज़ार है उनकी इबादत से तुझे इंकार है, अच्छा सुन रख अगर तू अपनी इस हरकत से बाज़ न आया और उन्हें बुरा कहता रहा और उनकी ऐबजूई और उन्हें गालियाँ देने से न रुका तो मैं तुझे पत्थरों से मार दूँगा। मुझे तू तक्लीफ़ न दे, न मुझसे कुछ कह। यही बेहतर है कि तू सलामती के साथ मुझसे अलग हो जाए, वरना मैं तुझे सख़्त सज़ा दूँगा। मुझसे तो तू अब हमेशा के लिए गया गुज़रा। हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने फ़र्माया, अच्छा! ख़ुश रहो, मेरी तरफ़ से आपको कोई तक्लीफ़ न पहुँचेगी। क्योंकि आप मेरे वालिद हैं। बल्कि अल्लाह तआ़ला से दुआ करूँगा कि वह आपको नेक तौफ़ीक़ दे और आपके गुनाह बख़्श दे। मोमिनों का यही शेवा होता है कि वह जाहिलों से भिड़ते नहीं। जैसे कि कुरआन में है (وَ اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا) (25/फ़ुरक़ान : 63) फिर फ़र्माया कि मेरा रब मेरे साथ बहुत मेहरबान है उसी की मेहरबानी है कि मुझे ईमान व इख़्लास की हिदायत की। मुझे उससे अपनी दुआ की क़बूलियत की उम्मीद है। उसी वादे के मुताबिक़ आप उनके लिए बख़िशश तलब करते रहे। शाम की हिज्रत के बाद भी मस्जिदे हराम बनाने के बाद भी आपके यहाँ औलाद हो जाने के बाद भी आप कहते रहे कि ऐ अल्लाह! मुझे मेरे माँ बाप को और तमाम ईमान वालों को हिसाब क़ायम होने के दिन बख़्श दे। आख़िर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वही आई कि मुश्रिकों के लिए इस्तिग़फ़ार न करो। आप ही की इक़्तिदा में पहले पहले मुसलमान भी इब्तिदाए इस्लाम के ज़माने में अपने क़राबतदार मुश्रिकों के लिए तलबे बख़िशश की दुआएँ करते रहे। आख़िर आयत नाज़िल हुई कि बेशक इब्राहीम (عليه السلام) क़ाबिले इत्तिबाअ़ हैं लेकिन इस बात में उनका फ़ेअ़ल इस क़ाबिल नहीं।

और आयत में फ़र्माया (مَا كَانَ لِلنَّبِیِّ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ یَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِیْنَ) (9/तौबा : 113)

यानी नबी को और ईमान वालों को मुश्रिकों के लिए इस्तिग़फ़ार न करना चाहिए। और फ़र्माया कि इब्राहीम (عليه السلام) का यह इस्तिग़फ़ार सिर्फ़ इस बिना पर था कि आप अपने वालिद से उसका वादा कर चुके थे लेकिन जब आप पर वाज़ेह हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो आप उससे रुक गए। इब्राहीम तो बड़े ही रब दोस्त और हिल्म वाले थे। फिर फ़र्माते हैं कि मैं तुम सबसे और तुम्हारे इन तमाम मअ़बूदों से अलग हूँ। मैं सिर्फ़ रब वाहिद का आ़बिद हूँ, उसकी इबादत में किसी को शरीक नहीं करता। मैं फ़क़त उसी से दुआएँ और इल्तिजाएँ करता हूँ और मुझे यक़ीन है कि मैं अपनी दुआओं में महरूम न रहूँगा। वाक़िया भी यही है। यहाँ पर लफ़्ज़े अ़सा यक़ीन के मअ़नों में है इसलिए कि आप हुज़ूर (ﷺ) के बाद सय्यदुल अम्बिया हैं।

***

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

तर्जुमा : "जब इब्राहीम उन सबको और अल्लाह तआ़ला के सिवा उनके सब मअ़बूदों को छोड़ चुके तो हमने उन्हें इस्हाक़ व यअ़क़ूब अ़ता किये और दोनों को नबी बनाया। (49) और उन सबको हमने अपनी बहुत सी रहमतें अ़ता कीं और हमने उनके ज़िक्रे जमील को बुलंद दर्जे का कर दिया।" (50)

इब्राहीम (عليه السلام) को इस्हाक़ और यअ़क़ूब (عليه السلام) अ़ता हुए (आयत 49, 50) : ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) माँ बाप को रिश्ते कुंबे को क़ौम व मुल्क को दीने इलाही पर क़ुर्बान कर चुके, सबसे यक्सू हो गए। अपनी बराअत और अलग होने का ऐलान कर दिया तो अल्लाह ने उनकी नस्ल जारी कर दी। आपके यहाँ हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) पैदा हुए और हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) के यहाँ हज़रत यअ़क़ूब (عليه السلام) हुए। जैसे फ़र्मान है (وَ يَعْقُوْبَ نَافِلَةً) (21/अम्बिया : 72) और आयत में है (وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ) (11/हूद : 71) यानी इस्हाक़ (عليه السلام) के पीछे यअ़क़ूब (عليه السلام)। पस हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) हज़रत यअ़क़ूब (عليه السلام) के वालिद थे। जैसे सूरह बक़रह की आयत (اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ) (2/बक़रह : 133) में साफ़ लफ़्ज़ हैं कि हज़रत यअ़क़ूब (عليه السلام) ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त अपने बच्चों से पूछा कि तुम सब मेरे बाद किसकी इबादत करोगे? उन्होंने जवाब दिया कि उसी अल्लाह की जिसकी इबादत आप करते रहे और आपके वालिद इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ (عليه السلام)।

पस यहाँ मतलब यह है कि हमने उसकी नस्ल जारी रखी, बेटा दिया बेटे के यहाँ बेटा दिया और दोनों को नबी बनाकर आपकी आँखें ठण्डी कीं। यह ज़ाहिर है कि हज़रत यअ़क़ूब (عليه السلام) के बाद आपके फ़रज़न्द हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) भी नबी बनाये गए थे। उनका ज़िक्र यहाँ नहीं किया। इसलिए कि हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) की नबुव्वत के वक़्त ख़लीलुर्रहमान ज़िन्दा न थे। यह दोनों नबुव्वतें यानी हज़रत इस्हाक़ व यअ़क़ूब (عليه السلام) की नबुव्वत आपकी ज़िन्दगी में आपके सामने थी। इसलिए इस एहसान का ज़िक्र बयान किया, रसूलुल्लाह

(ﷺ) से जब सवाल हुआ कि सबसे बेहतर शख़्स कौन है? तो आपने फ़र्माया, ''यूसुफ़ नबियुल्लाह इब्ने यअ़क़ूब नबियुल्लाह इब्ने इस्हाक़ नबियुल्लाह इब्ने इब्राहीम नबियुल्लाह व ख़लीलुल्लाह।'' (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (लक़द काना फ़ी यूसुफ़ व इख़्वतिही आयातिल लिस्साइलीन. ...) : 3383; सहीह मुस्लिम : 2378; अहमद : 2/257; तयालिसी : 71; मुस्नदे हुमैदी : 1045; इब्ने हिब्बान : 92) और हदीस में है कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (عليه السلام) हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (लक़द काना फ़ी यूसुफ़ व इख़्वतिही आयातिल लिस्साइलीन. ...) : 3390; अहमद : 2/96; शरहस्सुन्ना : 3547) हमने उन्हें अपनी बहुत सारी रहमतें दीं और उनका ज़िक्रे ख़ैर और सना-ए-जमील को दुनिया में उनके बाद बुलंदी के साथ बाक़ी रखा। यहाँ तक कि हर मज़हब वाले उनके गुण गाते हैं। फ़सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहिम अज्मईन।

***

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰىٓ ۙ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

तर्जुमा : ''इस क़ुरआन में मूसा (عليه السلام) का ज़िक्र भी कर जो चुना हुआ और रसूल और नबी थे। (51) हमने उसे तूर पहाड़ की दायीं जानिब से आवाज़ की और राज़गोई करते हुए हमने उसे क़रीब कर लिया। (52) और अपनी ख़ास मेहरबानी से उसके भाई को नबी बनाकर अता फ़र्माया।'' (53)

हज़रत मूसा (عليه السلام) का ज़िक्र (आयत 51 से 53) : अपने ख़लील का बयान करने के बाद अपने कलीम (عليه السلام) का बयान करता है (मुख़्लसन) की दूसरी क़िराअत (मुख़्लिसन) भी है यानी वह बा इख़्लास इबादत करने वाला था। मरवी है कि हवारियों ने हज़रत ईसा (عليه السلام) से पूछा कि ऐ रूहुल्लाह! हमें बतलाइए कि मुख़्लिस शख़्स कौन है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जो सिर्फ़अल्लाह तआला के लिए अमल करे उसे इस बात की चाहत न हो कि लोग मेरी तारीफ़ करें।'' दूसरी क़िराअत में (मुख़्लसन) है यानी अल्लाह के चुनिन्दा और बरगुज़ीदा बन्दे हज़रत मूसा (عليه السلام) थे। जैसे फ़र्मान है (اِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ) (7/आराफ़ : 144) आप (ﷺ) अल्लाह के नबी और रसूल थे। पाँच बड़े बड़े जलीलुल क़द्र ऊलुल अ़ज़्म रसूलों में से एक आप हैं यानी नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद, सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहिम व अला साइरिल अम्बियाइ अज्मईन। हमने उन्हें मुबारक पहाड़ तूर की दायें जानिब से आवाज़ दी और सरगोशी करते हुए अपने क़रीब कर लिया। यह वाक़िया उस वक़्त का है जब आप (عليه السلام) आग की तलाश में तूर की तरफ़ यहाँ आग देखकर बढ़े थे।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं इस क़द्र करीब हो गए कि क़लम की आवाज़ सुनने लगे। (हाकिम : 2/373) मुराद इससे तौरात लिखने की क़लम है। सुद्दी (रह.) कहते हैं आसमान में गये और कलामे बारी तआला से मुशर्रफ़ हुए। कहते है इन ही बातों में यह फ़र्मान भी है कि ऐ मूसा (ؑ)! जबकि मैं तेरे दिल को शुक्रगुज़ार और तेरी ज़ुबान को अपना ज़िक्र करने वाली बना दूँ और तुझे ऐसी बीवी दूँ जो नेकी के कामों में तेरी मदद करे तो समझ ले कि मैंने तुझसे कोई भलाई नहीं उठा रखी। और जिसे मैं यह चीज़ें न दूँ समझ ले कि उसे कोई भलाई नहीं मिली। उन पर एक मेहरबानी हमने यह भी की कि उनके भाई हारून को नबी बनाकर उनकी मदद के लिए उनके साथ कर दिया। जैसे कि आपकी चाहत और दुआ थी। फ़र्माया था (وَ اَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ) (28/क़सस : 34) और आयत में है فَاَرْسِلْ - (قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى) (20/ताहा : 36) मूसा (ؑ) तेरा सवाल हमने पूरा कर दिया। आपकी दुआ के लफ़्ज़ यह भी वारिद हैं (فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ) (26/शुअरा : 13) हारून (ؑ) को भी रसूल बना, आख़िर तक। कहते हैं कि उससे ज़्यादा बेहतर दुआ और उससे बढ़कर सिफ़ारिश किसी ने किसी की दुनिया में नहीं की। हज़रत हारून (ؑ) हज़रत मूसा (ؑ) से बड़े थे, सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैहिमा।

***

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

तर्जुमा : "इस किताब में इस्माईल (ؑ) का ज़िक्र भी बयान कर वह बड़ा ही वादे का सच्चा था और था भी रसूल और नबी। (54) वह अपने घर वालों को बराबर नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता रहता था और था भी अपने परवरदिगार की बारगाह में पसंदीदा और मक़्बूल।" (55)

हज़रत इस्माईल (ؑ) वादे के पक्के थे (आयत 54, 55) : हज़रत इस्माईल बिन इब्राहीम (ؑ) का ज़िक्रे ख़ैर बयान हो रहा है। आप सारे हिजाज़ के बाप हैं। जो नज़्र अल्लाह तआला के नाम की मानते थे जो इबादत करने का इरादा करते थे पूरी ही करते थे हर हक़ अदा करते थे। हर वादे की वफ़ा करते थे। एक शख़्स से वादा किया कि मैं फुलाँ जगह आपको मिलूँगा वहाँ आप आ जाना हस्बे वादा हज़रत इस्माईल (ؑ) वहाँ गए लेकिन वह शख़्स नहीं आया था। आप उसके इंतिज़ार में वहीं ठहरे रहे यहाँ तक कि एक दिन रात पूरा गुज़र गया। अब उस शख़्स को याद आया। उसने आकर देखा कि आप वहीं इंतिज़ार में हैं। पूछा कि क्या आप कल से यहीं हैं? आपने फ़र्माया, जब वादा हो चुका था तो फिर मैं आपके आए बग़ैर कैसे हट सकता था। उसने मअज़िरत की कि मैं बिलकुल भूल गया था। सुफ़्यान सौरी (रह.) कहते हैं यहीं इंतिज़ार में ही आपको एक साल पूरा गुज़र चुका था।

इब्ने शोज़िब (रह.) कहते हैं कि वहीं मकान कर लिया था। अब्दुल्लाह बिन अबुल हम्सा (रज़ि.)

कहते हैं कि "हुज़ूर (ﷺ) की नबुव्वत से पहले मैंने आपसे कुछ तिजारती लेन देन किया था मैं चला गया और यह कह गया कि आप यहीं ठहरिये मैं अभी वापिस आता हूँ। फिर मुझे ख़्याल ही न रहा, वह दिन गुज़रा वह रात गुज़री दूसरा दिन भी गुज़र गया, तीसरे दिन मुझे ख़्याल आया तो देखा आप वहीं तशरीफ़ फ़र्मा हैं। आपने फ़र्माया, तुमने मुझे मशक़्क़त में डाल दिया। मैं आज तीन दिन से यहीं ठहरा तुम्हारा इंतिज़ार करता रहा।" (अबूदाउद, किताबुल अदब, बाब फ़िल इद्दह : 4996; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अ़ब्दुल करीम बिन अ़ब्दुल्लाह अक़ीली मज्हूल रावी है (अत्तक़रीब : 1/515; रक़म : 1281)

यह भी कहा गया है कि यह उस वादे का ज़िक्र है जो आपने बवक़्ते ज़िब्ह किया था कि अब्बाजान! आप मुझे सब्र करने वाला पाएँगे। चुनाँचे फ़िल वाक़ेअ आपने वादे की वफ़ा की और सब्रो सिहार से काम लिया। वादे की वफ़ा नेक काम है और वादाख़िलाफ़ी बहुत बुरी चीज़ है। कुरआने करीम फ़र्माता है ईमानवालों! वह बातें ज़ुबान से क्यूँ निकालते हो जिन पर ख़ुद अ़मल नहीं करते, अल्लाह तआ़ला के नज़दीक यह बात निहायत ही ग़ज़बनाकी की है कि तुम वह कहो जो ख़ुद न करो। (61/सफ़्फ़ : 2, 3) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं बातों में झूठ, वादाख़िलाफ़ी, अमानत में ख़यानत। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अ़लामातुल मुनाफ़िक़ीन : 33; सहीह मुस्लिम : 59) उन आफ़तों से मोमिन अलग थलग होते हैं।" यही वादे की सच्चाई हज़रत इस्माईल (عليه السلام) में थी और यही पाक सिफ़त हज़रत मुहम्मद (ﷺ) में थी। कभी किसी से वादे के ख़िलाफ़ नहीं करते थे।

आपने एक मर्तबा अबुल आ़स बिन रबीअ (रज़ि.) की तअ़रीफ़ करते हुए फ़र्माया कि "उसने मुझसे जो बात की सच्ची की और जो वादा किया उसने मुझसे परा किया।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़र्ज़ुल ख़ुमुस, बाब मा ज़िक्रु मिन दर्शिन्नबी (ﷺ) व असाहू व सैफ़हू वक़दहहू व ख़ातमहू...) : 3110; सहीह मुस्लिम : 2449) हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने तख़्ते ख़िलाफ़ते नबवी पर क़दम रखते ही ऐलान कर दिया कि जिससे नबी करीम (ﷺ) ने जो वादा किया हो मैं उसको पूरा करने के लिए तैयार हूँ और हुज़ूर (ﷺ) पर जिसका क़र्ज़ हो मैं उसकी अदायगी के लिए मौजूद हूँ। चुनाँचे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वादा किया था कि "अगर बहरैन का माल आया तो मैं तुझे तीन लपें भरकर दूँगा।" हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के पास जब बहरैन का माल आया तो आपने हज़रत जाबिर (रज़ि.) को बुलवाकर फ़र्माया, लो लप भर लो। आपकी लप में पाँच सौ दिरहम आए। हुक्म दिया कि तीन लपों के पन्द्रह सौ दिरहम ले लो। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़िस्सतु उ़मान वल बहरैन : 4383; सहीह मुस्लिम : 2314) फिर हज़रत इस्माईल (عليه السلام) का रसूल व नबी होना बयान किया। हालाँकि हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) का सिर्फ़ नबी होना बयान किया गया है। इससे आपकी फ़ज़ीलत अपने भाई पर साबित होती है। चुनाँचे मुस्लिम शरीफ़ में है कि "औलादे इब्राहीम में से अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्माईल (عليه السلام) को पसंद किया।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब फ़ज़्लुन नसबिन्नबी (ﷺ) व तस्लीमुल हिज्र अ़लैहि क़ब्लन्नबुव्वा : 2276; तिर्मिज़ी : 3605; अहमद : 4/107; मुस्नदे अबी यअ़ला : 7485; दलाइलुन्नबुव्वा : 1/166) फिर आपकी मज़ीद तअ़रीफ़ बयान हो रही है कि आप अल्लाह तआ़ला की इताअ़त पर साबिर थे और अपने घराने को भी यही हुक्म फ़र्माते रहते थे। यही फ़र्मान अल्लाह तआ़ला का हुज़ूर (ﷺ) को है।

(وَ أْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَ اصْطَبِرْ عَلَيْهَا) (20/ताहा : 132) अपने अहलो अयाल को नमाज़ का हुक्म करता रह और ख़ुद भी उस पर मज़बूती से आमिल रह। और आयत में है (يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا أَنْفُسَكُمْ وَ أَهْلِيْكُمْ نَارًا) (66/तहरीम : 6) ऐ ईमान वालों! आपको और अपनी अहलो अयाल को उस आग से बचा लो जिसका ईंधन इंसान हैं और पत्थर जहाँ अज़ाब करने वाले फ़रिश्ते रहम से ख़ाली ज़ोरावर और बड़े सख़्त हैं। नामुम्किन है कि अल्लाह तआला के हुक्म का वह ख़िलाफ़ करें। बल्कि जो उनसे कहा गया उसी की ताबेदारी में मशग़ूल हैं। पस मुसलमानों को हुक्मे इलाही हो रहा है कि अपने घरबार को अल्लाह तआला की बातों की हिदायत करते रहें, गुनाहों से रोकते रहें, यूँ ही बेतअलीम न छोड़ें कि वह जहन्नम का लुक़्मा बन जाएँ।

रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "उस मर्द पर अल्लाह तआला का रहम हो जो रात तहज्जुद पढ़ने के लिए अपने बिस्तर से उठता है फिर अपनी बीवी को उठाता है। और अगर वह नहीं उठती तो उसके मुँह पर पानी छिड़ककर उसे नींद से जगाता है। उस औरत पर भी अल्लाह की रहमत हो जो रात को तहज्जुद पढ़ने के लिए उठती है फिर अपने मियाँ को जगाती है और वह न जागे तो उसके चेहरे पर पानी का छींटा डालती है।" (अबूदाउद, किताबुल वित्र, बाब अल्हस्सु अला क़ियामिल्लैलि : 1450; वहुव हसन; नसाई : 1611; इब्ने माजा : 1336; अहमद : 2/250; इब्ने हिब्बान : 2567; हाकिम : 1/309) आप (ﷺ) का फ़र्मान है कि "जब इंसान रात को जागे और अपनी बीवी को भी जगाये और दोनों दो रकअत भी नमाज़ की अदा कर लें तो अल्लाह तआला के यहाँ अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्दों औरतों में दोनों के नाम लिख लिये जाते हैं।" (अबूदाउद, किताबुत्तत्व्वअ, बाब क़ियामुल्लैल : 1309; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान और अअमश मुदल्लस रावी हैं और सिमाअ की तसरीह नहीं है। इब्ने माजा : 1335; सुननुल कुबरा : 1310; इब्ने हिब्बान : 2568; बैहक़ी : 2/501; हाकिम : 1/316)

***

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِدْرِيْسَ إِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

तर्जुमा : "इस किताब में हज़रत इदरीस (عليه السلام) का भी ज़िक्र कर वह भी नेक किरदार पैग़म्बर थे। (56) हमने उसे बुलंद मकान पर उठा लिया।" (57)

हज़रत इदरीस (عليه السلام) के बुलंद मर्तबे का ज़िक्र (आयत 56, 57) : हज़रत इदरीस (عليه السلام) का बयान हो रहा है कि आप सच्चे नबी थे। अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे थे। आपको हमने बुलंद मकान पर उठा लिया। सहीह हदीस के हवाले से पहले गुज़र चुका है कि चौथे आसमान में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत इदरीस (عليه السلام) से मुलाक़ात की। इस आयत की तफ़्सीर में हज़रत इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने एक अजीबो ग़रीब वाक़िया वारिद किया है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने हज़रत कअब (रह.) से सवाल किया कि इस आयत का मतलब क्या है? आपने फ़र्माया कि हज़रत इदरीस (عليه السلام) के पास वह्य आयी कि कुल औलादे आदम के आमाल के बराबर सिर्फ़ तेरे नेक आमाल में अपनी तरफ़ हर रोज़ चढ़ाता हूँ। उस पर आपको ख़्याल आया कि

आप अ़मल में और सब्क़त करें। जब आपके पास आपका दोस्त फ़रिश्ता आया तो आपने उससे ज़िक्र किया कि मेरे पास यूँ वही आई है, अब तुम मलकुल मौत से कहो कि वह मेरी मौत में ताख़ीर करें तो मैं नेक आमाल में और बढ़ जाऊँ। उस फ़रिश्ते ने आपको अपने परों पर बिठाकर आसमान पर चढ़ा दिया। जब चौथे आसमान पर आप पहुँचे तो मलकुल मौत को देखा। फ़रिश्ते ने आपसे हज़रत इदरीस (عليه السلام) की बाबत सिफ़ारिश की तो मलकुल मौत ने फ़र्माया, वह कहाँ हैं? उसने कहा, यह हैं मेरे बाज़ू पर बैठे हुए आपने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! मुझे अभी हुक्म हुआ कि इदरीस की रूह चौथे आसमान पर क़ब्ज़ करूँ। मैं फ़िक्रमंद था कि वह ज़मीन पर और मुझे यहाँ इस आसमान पर उसकी रूह के क़ब्ज़ करने का हुक्म हो रहा है। चुनाँचे उसी वक़्त उनकी रूह क़ब्ज़ कर ली गयी। यह हैं इस आयत के मतलब।

लेकिन यह याद रहे कि कअ़ब (रह.) का यह बयान इस्राईलियात में से हैं और उसके कुछ हिस्से में नकारत है, वल्लाहु आलम! यही रिवायत और सनद से है उसमें यह भी है कि आपने बज़रिये उस फ़रिश्ते से पुछवाया था कि मेरी उम्र कितनी बाक़ी है? और रिवायत में है कि फ़रिश्ते के इस सवाल पर मलकुल मौत ने जवाब दिया कि मैं देख लूँ। देखकर फ़र्माया सिर्फ़ एक आँख झपकने के बराबर। अब जो फ़रिश्ता अपने पर तले देखता है तो हज़रत इदरीस (عليه السلام) की रूह परवाज़ कर चुकी थी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि आप दर्ज़ी थे। सूई के एक एक टांके पर सुब्हानल्लाह कहते। शाम को उनसे ज़्यादा नेक अ़मल आसमान पर किसी के न चढ़ते। मुजाहिद (रह.) तो कहते हैं कि हज़रत इदरीस (عليه السلام) आसमानों पर चढ़ा लिए गये आप मरे नहीं हैं बल्कि हज़रत ईसा (عليه السلام) की तरह बेमौत उठा लिये गए हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बरिवायत औ़फ़ी मरवी है कि छठे आसमान पर उठा लिये गए और वहीं इंतिक़ाल कर गए। हसन वग़ैरह कहते हैं बुलंद मकान से मुराद जन्नत है।

***

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ مِن ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِن ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَٰنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ۩ ﴿٥٨﴾ السجدة

तर्जुमा : "यही हैं वह अम्बिया (عليهم السلام) जिन पर अल्लाह तआ़ला ने फ़ज़्लो करम किया जो औलादे आदम में से हैं और उन लोगों की नस्ल से हैं जिन्हें हमने नूह (عليه السلام) के साथ कश्ती में चढ़ा लिया था और औलादे इब्राहीम व यअ़क़ूब (عليه السلام) से और हमारी तरफ़ से सीधी राह वाले और हमारे पसंदीदा लोगों में से। इनके सामने जब रहमान की आयतों की तिलावत की जाती थी, यह सज्दा करते और रोते गिड़गिड़ाते गिर पड़ते थे।" (58)

अम्बिया (عليهم السلام) पर अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल का तज़्किरा (आयत 58) : फ़र्माने बारी तआ़ला है

कि यह है जमाअते अम्बिया जिनका ज़िक्र इस सूरह में है या पहले गुज़रा है या बाद में आएगा। यह लोग अल्लाह तआला के इन्आम याफ़्ता लोग हैं। पस यहाँ शख़्सियत से जिंस की तरफ़ इस्तिराद है। यह हैं औलादे आदम से यानी हज़रत इदरीस (عليه السلام) और औलाद से उनके जो हज़रत नूह (عليه السلام) के साथ कश्ती में सवार कर दिये गए थे। इससे मुराद हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) हैं और ज़ुर्रियते इब्राहीम से मुराद हज़रत इस्हाक़, हज़रत यअक़ूब, हज़रत इस्माईल (عليه السلام) हैं। और ज़ुर्रियते इस्राईल से मुराद हज़रत मूसा (عليه السلام) हज़रत हारून, हज़रत ज़करिय्या, हज़रत यह्या और हज़रत ईसा (عليه السلام) हैं। यही क़ौल है हज़रत सुद्दी (रह.) और इब्ने जरीर का। इसीलिए उनके नसब जुदागाना बयान किये गए।

अम्बिया (عليه السلام) की नस्ल : भले औलादे आदम में सब हैं मगर उनमें कुछ वह भी हैं जो उन बुज़ुर्गों की नस्ल से नहीं जो हज़रत नूह (عليه السلام) के साथी थे। क्योंकि हज़रत इदरीस (عليه السلام) तो हज़रत नूह (عليه السلام) के दादा थे। मैं कहता हूँ बज़ाहिर यही ठीक है कि हज़रत नूह (عليه السلام) के ऊपर के नसब में अल्लाह तआला के पैग़म्बर हज़रत इदरीस (عليه السلام) हैं। हाँ! कुछ लोगों का ख़्याल है कि हज़रत इदरीस (عليه السلام) भी बनी इस्राईल के नबी हैं, यह कहते हैं कि मेअराज वाली हदीस में हज़रत इदरीस (عليه السلام) का भी हुज़ूर (ﷺ) से यह कहना मरवी है कि मरहबा हो नबी सालेह और भाई सालेह को मरहबा हो। तो भाई सालेह कहा न कि सालेह वलद जैसे कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत आदम (عليه السلام) ने कहा था। मरवी है कि हज़रत इदरीस (عليه السلام) हज़रत नूह (عليه السلام) से पहले के हैं। आपने अपनी क़ौम से फ़र्माया था कि ला इलाहा इल्लल्लाहु के क़ाइल और मुअतक़िद बन जाओ फिर जो चाहो करो। लेकिन उन्होंने इसका इंकार किया। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने उन सबको हलाक कर दिया। हमने इस आयत को जिंसे अम्बिया के लिए क़रार दिया है।

इसकी दलील सूरह अन्आम की वह आयतें हैं जिनमें हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़, हज़रत यअक़ूब, हज़रत नूह, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलेमान, हज़रत यूसुफ़, हज़रत मूसा, हज़रत हारून, हज़रत ज़करिय्या, हज़रत यह्या, हज़रत ईसा, हज़रत इलियास, हज़रत इस्माईल, हज़रत यसअ, हज़रत यूनुस (عليه السلام) वग़ैरह का ज़िक्र और तारीफ़ करने के बाद फ़र्माया (أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ) (6/अन्आम : 90) यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने हिदायत दी, तू भी उनकी हिदायत की इक़्तिदा कर। और यह भी फ़र्माया है कि नबियों में से कुछ के वाक़ियात हमने बयान कर दिये हैं और कुछ के वाक़ियात तुम तक पहुँचे ही नहीं।

सहीह बुख़ारी में है कि हज़रत मुजाहिद (रह.) ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सवाल किया कि क्या सूरह साद में सज्दा है? आपने फ़र्माया, हाँ! फिर इसी आयत की तिलावत की और फ़र्माया कि तुम्हारे नबी को उनकी इक़्तिदा का हुक्म किया गया है और हज़रत दाऊद (عليه السلام) भी मुक़्तदा नबियों में से हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह साद : 4807) फ़र्मान है कि उन पैग़म्बरों के सामने जब कलामुल्लाह शरीफ़ की आयतें तिलावत की जाती थीं तो उसके दलाइल व बराहीन को सुनकर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ अल्लाह तआला का शुक्रो-एहसान मानते हुए रोते गिड़गिड़ाते हुए सज्दे में गिर पड़ते थे। इसीलिए इस आयत पर सज्दा करने का हुक्म उलमा का मुत्तफ़क़ अलैहि मसला है ताकि उन पैग़म्बरों की इक़्तिदा और इत्तिबाअ हो जाए। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने सूरह मरयम की तिलावत की और जब इस आयत पर पहुँचे तो सज्दा किया। फिर फ़र्माया सज्दा तो किया लेकिन वह रोना कहाँ से लाएँ? (इब्ने अबी हातिम, इब्ने जरीर)

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : ''फिर उनके बाद ऐसे ना ख़ल्फ़ पैदा हुए कि उन्होंने नमाज़ ज़ाया कर दी और नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए तो उनका नुक़्सान उनके आगे आएगा। (59) सिवाय उनके जो तौबा कर लें और ईमान लाएँ और नेक अमल करें, ऐसे लोग जन्नत में जाएँगे और उनकी ज़रा सी भी हक़तल्फ़ी न की जाएगी।'' (60)

नाअहल जानशीन (आयत 59, 60) : नेक लोगों का ख़ुसूसन अम्बिया (عليهم السلام) का ज़िक्र किया जो अल्लाह की हदों के मुहाफ़िज़ नेक आमाल के नमूने बदियों से बचते थे। अब बुरे लोगों का ज़िक्र हो रहा है कि उनके बाद के ज़माने वाले ऐसे हुए कि वह नमाज़ों तक से बेपरवाह बन गए। और जब नमाज़ जैसे फ़रीज़े की अहमियत को भुला बैठे तो ज़ाहिर है कि और वाजिबात की वह क्या परवाह करेंगे? क्योंकि नमाज़ तो दीन की बुनियाद है और तमाम आमाल से अफ़ज़ल व बेहतर है। यह लोग नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए। दुनिया की ज़िन्दगी पर इत्मिनान से रीझ गए। उन्हें क़ियामत के दिन सख़्त घाटा होगा, बड़े घाटे में रहेंगे। नमाज़ के ज़ाया करने से मुराद या तो उसे बिलकुल ही छोड़ देना है। इसीलिए इमाम अहमद (रह.) और बहुत से सलफ़ व ख़ल्फ़ का मज़हब है कि नमाज़ का छोड़ने वाला काफ़िर है। यही एक क़ौल इमाम शाफ़ेई (रह.) का भी है।

क्योंकि हदीस में है कि बन्दे के और शिर्क के बीच नमाज़ का छोड़ना है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानु इत्लाक़े इस्मिल कुफ़्र अला मन तरकस्सलात : 82; अबूदाऊद : 2620; तिर्मिज़ी : 2618; इब्ने माजा : 1078; अहमद : 3/370) दूसरी हदीस में है कि हममें और उनमें फ़र्क़ नमाज़ का है जिसने नमाज़ छोड़ दी वह काफ़िर हो गया। (तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ी तरकिस्सलात : 2621; व सनदुहू सहीहुन; नसाई : 464; इब्ने माजा : 1079) इस मसला को बस्त से बयान करने की यह जगह नहीं। या नमाज़ के तर्क से मुराद नमाज़ के वक़्तों की सहीह तौर पर पाबंदी न करना है, क्योंकि नमाज़ छोड़ना तो कुफ़्र है। (तब्री : 18/215) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से पूछा गया कि क़ुरआने करीम में नमाज़ का ज़िक्र बहुत ज़्यादा है कहीं नमाज़ों में सुस्ती करने वालों के अज़ाब का बयान है कहीं नमाज़ की मुदावमत का फ़र्मान है, कहीं मुहाफ़िज़त का। आपने फ़र्माया, इनसे मुराद वक़्तों में सुस्ती न करना और वक़्तों की पाबंदी करना है। लोगों ने कहा, हम तो समझते थे कि इससे मुराद नमाज़ों का छोड़ देना और न छोड़ना है। आपने फ़र्माया यह तो कुफ़्र है। (तब्री : 18/216) हज़रत मसरूक़ (रह.) फ़र्माते हैं पाँचों नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाला ग़ाफ़िलों में नहीं लिखा जाता। उनका ज़ाया करना अपने आपको हलाक करना है और इनका ज़ाया करना इनके वक़्तों की पाबन्दी न करना है। (तब्री : 18/216) ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया कि इससे मुराद सिरे से नमाज़ छोड़ देना नहीं बल्कि नमाज़ के वक़्त को ज़ाया कर देना है। (तब्री : 18/216) हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं

यह बदतरीन लोग क़ियामत के क़रीब आएँगे जबकि इस उम्मत के नेक लोग बाक़ी न रहेंगे। उस वक़्त यह लोग जानवरों की तरह कूदते फाँदते फिरेंगे।

अता बिन अबू रिबाह (रह.) भी यही फ़र्माते हैं कि यह लोग आख़िरी ज़माने में होंगे। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं यह इस उम्मत के लोग होंगे जो चोपायों और गधों की तरह रास्तों में ही उछल कूद करेंगे और अल्लाह तआला से जो आसमान में है बिलकुल न डरेंगे ओर न लोगों से शर्माएँगे। इब्ने अबी हातिम की हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''यह नाख़ल्फ़ लोग साठ साल के बाद होंगे जो नमाज़ों को ज़ाया कर देंगे और शहवतरानियों में लग जाएँगे और क़ियामत के दिन ख़मियाज़ा भुगतेंगे। फिर उनके बाद वह नालाइक़ लोग आएँगे जो क़ुरआन की तिलावत तो करेंगे लेकिन उनके हलक़ से नीचे न उतरेगा। याद रखो क़ारी तीन क़िस्म के होते हैं, मोमिन मुनाफ़िक़ और फ़ाजिर (झूठा)

रावी हदीस हज़रत वलीद से जब उनके शागिर्दों ने इसकी तफ़्सील पूछी तो आपने फ़र्माया, ईमान वाले तो इसकी तस्दीक़ करेंगे निफ़ाक़ वाले इस पर अक़ीदा न रखेंगे और फ़ाजिर इससे अपनी शिकम परवरी करेगा। (अहमद : 3/38, 39; व सनदुहू हसन) इब्ने अबी हातिम की एक ग़रीब हदीस में है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) अस्हाबे सुफ़्फ़ा के लिए जब कुछ ख़ैरात भिजवातीं तो कह देतीं कि बरबरी मर्द व औरत को न देना क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि यही वह नाख़ल्फ़ हैं जिनका ज़िक्र इस आयत में है। (हाकिम : 2/244; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसका रावी मालिक नामालूम व मज्हूल है। इसके अलावा सनद में इंक़िताअ भी है।) मुहम्मद बिन कअब क़ुरज़ी का फ़र्मान है कि मुराद इससे मग़्रिब के बादशाह हैं जो बदतरीन बादशाह हैं।

हज़रत कअब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला की क़सम! मैं मुनाफ़िक़ों के वस्फ़ क़ुरआने करीम में पाता हूँ यह नशे पीने वाले नमाज़ें छोड़ने वाले शतरंज चौसर वग़ैरह खेलने वाले इशा की नमाज़ों के वक़्त सो जाने वाले खाने पीने में मुबालग़ा और तकल्लुफ़ करके पेटू बनकर खाने वाले जमाअतों को छोड़ने वाले। हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं मस्जिदें उन लोगों से ख़ाली नज़र आती हैं और बैठकें बारौनक़ बनी हुई हैं।

अबू अशहब अतारदी (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत दाऊद (عليه السلام) पर वही आयी कि अपने साथियों को होशियार कर दे कि वह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों से बाज़ रहें जिनके दिल ख़्वाहिशों के फेर में रहते हैं मैं उनकी अक़्लों पर पर्दे डाल देता हूँ। जब कोई बन्दा शहवत में अंधा हो जाता है तो सबसे हल्की सज़ा मैं उसे यह देता हूँ कि अपनी इताअत से उसे महरूम कर देता हूँ। मुस्नद अहमद में है कि ''मुझे अपनी उम्मत पर दो चीज़ों का बहुत ही डर है। एक तो यह कि लोग झूठ के और बनाव के और शहवत के पीछे पड़ जाएँगे और नमाज़ों को छोड़ बैठेंगे, दूसरे यह कि मुनाफ़िक़ लोग दुनिया के दिखावे को क़ुरआन के आमिल बनकर सच्चे मोमिनों से लड़ेंगे झगड़ेंगे।'' (अहमद : 4/156; व सनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/187) (ग़य्यन) के मअनी ख़ुसरान और नुक़्सान और बुराई के हैं। (तब्री : 18/218) इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि (ग़य्युन) जहन्नम की एक वादी का नाम है जो बहुत गहरी है और निहायत सख़्त अज़ाबों वाली, उसमें ख़ून पीप भरा हुआ है। (तब्री : 18/218) इब्ने जरीर में है लुक़्मान बिन आमिर फ़र्माते हैं मैं हज़रत अबू उमामा

सुद्दी बिन अ़ज्लान बाहिली (रज़ि.) के पास गया और उनसे इल्तिमास की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी हुई ह़दीस मुझे सुनाइए। आपने फ़र्माया, सुनो! हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया है कि "अगर दस ओक़िया के वज़न का कोई पत्थर जहन्नम के किनारे से जहन्नम में फेंका जाए तो वह पचास साल तक तो जहन्नम की तह में नहीं पहुँच सकता। फिर वह ग़य्युन और असाम में पहुँचेगा। ग़य्युन और असाम जहन्नम के नीचे के दो कूएँ हैं जहाँ जहन्नमियों का लहू पीप जमा होता है। (ग़य) का ज़िक्र आयत (फ़सौफ़ा यल्क़ौना ग़य्यन) में है और असाम का ज़िक्र आयत (यल्क़ा असामन) में है।" (त़ब्रानी : 7731; वसनदुहू ज़ईफ़ुन)

इस ह़दीस को फ़र्माने रसूल से रिवायत करना मुन्कर है और यह ह़दीस सनद की रू से भी ग़रीब है फिर फ़र्माता है कि हाँ! जो इन कामों से तौबा कर ले यानी नमाज़ों की सुस्ती और ख़्वाहिशे नफ़्सानी की पैरवी छोड़ दे अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़बूल कर लेगा उसकी आ़क़िबत सँवार देगा उसे जहन्नम से बचाकर जन्नत में पहुँचाएगा। तौबा अपने से पहले के तमाम गुनाहों को माफ़ करा देती है। और ह़दीस में है कि तौबा करने वाला ऐसा है जैसे बेगुनाह। (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िक्रुत्तौबा : 4250; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू उ़बेदह का अपने वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सिमाअ़ नहीं है। अल्मुअ़जमुल कबीर : 10281; ह़िल्यतुल औलिया : 4/210) यह लोग जो नेकियाँ करें उनके अज्र उन्हें मिलेंगे। किसी एक नेकी का सवाब कम न होगा। तौबा से पहले के गुनाहों पर कोई पकड़ न होगी। यह है करम उस करीम का और यह है ह़िल्म उस ह़लीम का कि तौबा के बाद उस गुनाह को बिलकुल मिटा देता है नापैद कर देता है। सूरह फ़ुरक़ान में गुनाहों का ज़िक्र फ़र्माकर उनकी सज़ाओं का बयान करके फिर इस्तिस्ना किया और फ़र्माया कि अल्लाह ग़फ़ूरुर्रह़ीम है।

***

جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا
يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ۭ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ
نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

तर्जुमा : "हमेशगी वाली जन्नतों में जिनका ग़ायबाना वादा रब मेहरबान ने अपने बन्दों से किया है बेशक उसका वादा आने वाला ही है। (61) वह लोग वहाँ कोई लग़्वियात (बेकार की बातें) न सुनेंगे सिर्फ़ सलाम ही सलाम सुनेंगे उनके लिए वहाँ सुबह़ शाम उनका रिज़्क़ होगा। (62) यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बन्दों से उन्हें बनाते हैं जो मुत्तक़ी हों।" (63)

मोमिन जन्नतों के वारिस होंगे (आयत 61 से 63) : जिन जन्नतों में गुनाहों से तौबा करने वाले दाख़िल होंगे, यह जन्नतें हमेशगी वाली होंगी जिनका ग़ायबाना वादा इनसे इनका रब कर चुका है। उन जन्नतों को

उन्होंने देखा नहीं। लेकिन ताहम देखने से भी ज़्यादा इन्हें उन पर ईमान व यक़ीन है। बात भी यही है कि अल्लाह तआला के वादे अटल होते हैं वह हक़ाइक़ हैं जो सामने आकर ही रहेंगे। न अल्लाह तआला वादाख़िलाफ़ी करे न वादे को बदले। यह लोग वहाँ ज़रूर पहुँचाए जाएँगे और उसे ज़रूर पाएँगे (मअतिय्यन) के मअनी (अतिय्यन) के भी आते हैं और यह भी है कि जहाँ हम जाएँ वह हमारे पास आ ही गया जैसे कहते हैं कि मुझ पर पचास साल आए या मैं पचास साल को पहुँचा। मतलब दोनों जुम्लों का एक ही होता है, नामुम्किन है कि उन जन्नतों में कोई लग्व और नापसंदीदा कलाम उनके कानों में पड़े। सिर्फ़ मुबारक सलामत की धूम होगी चारों तरफ़ से और ख़ुसूसन फ़रिश्तों की पाकज़ुबानी यही मुबारक सदायें कान में गूँजती रहेंगी। जैसे सूरह वाक़िया में है (لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيمًا ۝ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝) (56/वाक़िया : 25, 26) वहाँ कोई बेहूदा और तबीयत के ख़िलाफ़ सुख़न (बात) न सुनेंगे सिवाय सलाम और सलामती के यह इस्तिस्ना मुंक़तअ है।

सुबह शाम पाक तय्यिब उम्दा ख़ुश ज़ायक़ा रोज़ियाँ बिला तकल्लुफ़ बेमशक़्क़त व ज़हमत चली आएँगी। लेकिन यह न समझा जाए कि जन्नत में भी दिन रात होंगे। नहीं बल्कि उन अनवार से उन वक़्तों को जन्नती पहचान लेंगे जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़र्रर हैं। चुनाँचे मुस्नदे अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "पहली जमाअत जो जन्नत में जाएगी उनके चेहरे चोदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन और नूरानी होंगे, न वहाँ उन्हें थूक आएगा, न नाक आएगी, न पेशाब पाख़ाना। उनके बरतन और फ़र्नीचर सोने के होंगे, उनका बख़ूर ख़ुश्बूदार होगा उनके पसीने मुश्क की ख़ुश्बू होंगे। हर एक जन्नती मर्द की दो बीवियाँ तो ऐसी होंगी कि उनके पिण्डे की सफ़ाई से उनकी पिण्डलियो की नली का गूदा तक बाहर से नज़र आए। उन सब जन्नतों में न तो किसी से अदावत होगी न बुग़्ज़ सब एक दिल होंगे। कोई इख़्तिलाफ़ आपस में न होगा। सुबह शाम अल्लाह तआला की तस्बीह में गुज़रेगी।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नत व इन्नहा मख़्लूक़ा : 3245; सहीह मुस्लिम : 2834; तिर्मिज़ी : 2537; अहमद : 2/316; इब्ने माजा : 7436) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "शहीद लोग इस वक़्त जन्नत की एक नहर के किनारे जन्नत के दरवाज़े के पास लाल रंग कुब्बों में हैं। सुबह शाम रोज़ी पहुँचाए जाते हैं।" (अहमद : 1/266; व सनदुहू हसन; तब्रानी : 10825; इब्ने हिब्बान : 4658; हाकिम : 2/74; व सह्हहू व वाफ़क़हुज़्ज़हबी; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/298)

पस सुबह शाम बाएतिबार दुनिया के है वहाँ रात नहीं बल्कि हर वक़्त नूर का समाँ है। पर्दे गिर जाने और दरवाज़े बंद हो जाने से अहले जन्नत वक़्ते शाम को और इसी तरह पर्दों के हट जाने और दरवाज़ों के खुल जाने से सुबह के वक़्त को जान लेंगे उन दरवाज़ों का खुलना बंद होना भी जन्नतियों के इशारों हुक्मों पर होगा। यह दरवाज़े भी इस क़द्र साफ़ शफ़्फ़ाफ़ काँच की तरह हैं बाहर की चीज़ें अंदर से नज़र आये। चूँकि दुनिया में दिन रात की आदत थी इसलिए जो वक़्त जब चाहेंगे पाएँगे। चूँकि अरब सुबह शाम ही खाना खाने के आदी थे इसलिए जन्नती रिज़्क़ का वक़्त भी यही बतलाया गया है वरना जन्नती जो चाहें जब चाहें मौजूद पाएँगे। चुनाँचे एक ग़रीब मुन्कर हदीस में है कि सुबह शाम का क्या ठेका है रिज़्क़ तो बेशुमार हर वक़्त मौजूद है। लेकिन अल्लाह तआला के दोस्तों के पास उन औक़ात में हूरें आएगी जिनमें अदना दर्जे की वह होंगी जो सिर्फ़

ज़ाफ़रान से पैदा की गई हैं। यह नेअमतों वाली जन्नतें उन्हें मिलेंगी जो ज़ाहिर बातिन अल्लाह तआला के फ़र्मांबरदार थे जो ग़ुस्सा पी जाने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले थे जिनकी सिफ़तें (قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾) (23/मोमिनून : 1) के शुरू में बयान हुई हैं और फ़र्माया गया है कि यही वारिसे फ़िरदौसे बरीं हैं जिनके लिए दवामी तौर पर जन्नतुल फ़िरदौस अल्लाह तआला ने लिख दी है। (ऐ अल्लाह! हमें भी तू अपनी रहमते कामिला से जन्नतुल फ़िरदौस में पहुँचा, आमीन।)

***

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿۶۴﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ۭ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿۶۵﴾

तर्जुमा : "हम बग़ैर तेरे रब के हुक्म के उतर नहीं सकते। हमारे आगे पीछे और उनके बीच की कुल चीज़ें उसी की मिल्कियत में है, तेरा परवरदिगार भूलने वाला नहीं। (64) आसमानों का ज़मीन का और जो कुछ इनके बीच है सबका रब वही है, तू उसी की बन्दगी किया कर और उसकी इबादत पर जम जा। क्या तेरे इल्म में उसका हमनाम हम पल्ला कोई और भी है।" (65)

फ़रिश्ते अल्लाह तआला के हुक्म के बग़ैर नहीं उतरते (आयत 64, 65) : सहीह बुख़ारी में है हुज़ूर (ﷺ) ने एक मर्तबा हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) से फ़र्माया, "आप जितना आते हैं उससे ज़्यादा क्यूँ नहीं आते?" उसके जवाब में यह आयत उतरी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह मरयम बाब क़ौलुहू (वमा नतनज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बिक, लहू मा बैना...) : 4731; तिर्मिज़ी : 3158) यह भी मरवी है कि एक बार हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) के आने में बहुत देर हो गई जिससे हुज़ूर (ﷺ) ग़मगीन हो गए। फिर आप यह आयत लेकर नाज़िल हुए। (तब्री : 18/222; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अतिया औफ़ी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 4/422; रक़म : 9688) रिवायत है कि बारह दिन या उससे कुछ कम तक नहीं आये थे। जब आए तो हुज़ूर (ﷺ) ने कहा, इतनी देर क्यूँ लगी? मुश्रिकीन तो कुछ और ही उड़ाने लगे थे। उस पर यह आयत उतरी। (तब्री : 18/223; इसकी सनद में अतिया ओफ़ी रावी है।) पस गोया यह आयत (वज़्ज़ुहा) की आयत जैसी है।

कहते हैं कि चालीस दिन तक मुलाक़ात न हुई थी। जब मुलाक़ात हुई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मेरा शौक़ तो बहुत ही बेचैन किये हुए था।" हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने फ़र्माया इससे किसी क़द्र ज़्यादा शौक़ ख़ुद मुझे आपकी मुलाक़ात का था लेकिन मैं अल्लाह तआला के हुक्म का मामूर और पाबन्द हूँ, वहाँ से जब भेजा जाऊँ तब ही आ सकता हूँ वरना नहीं। उसी वक़्त यह वह्यी नाज़िल हुई। (यह रिवायत मुर्सल है।) लेकिन

यह रिवायत ग़रीब है। इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने आने में देर लगाई। फिर जब आए तो हुज़ूर (ﷺ) ने रुक जाने की वजह पूछी। आपने जवाब दिया कि जब लोग नाख़ुन न कतरवाएँ उँगलियाँ और पोरियाँ न रखें, मूछें पस्त न कराएँ, मिस्वाक न करें तो हम कैसे आ सकते हैं? फिर आपने यह आयत तिलावत की। (यह रिवायत भी मुर्सल है।)

मुस्नद इमाम अहमद में है कि एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से फ़र्माया ''मज्लिस दुरुस्त और ठीक ठाक कर लो आज वह फ़रिश्ता आ रहा है जो आज से पहले ज़मीन पर कभी नहीं आया।'' (अहमद : 6/296; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/174; इसकी सनद में एक रावी मज्हूल है।) हमारे आगे पीछे की तमाम चीज़ें उसी अल्लह तआला की हैं। यानी दुनिया व आख़िरत और उसके बीच की यानी दोनों नफ़्ख़ों के बीच की चीज़ें भी उसी की तम्लीक की हैं। आने वाले उमूर आख़िरत और गुज़र चुके हुए उमूरे दुनिया और दुनिया आख़िरत के बीच के उमूर सब उसी के क़ब्ज़े में हैं। (तब्री : 18/224) तेरा रब भूलने वाला नहीं। उसने आपको अपनी याद से फ़रामोश नहीं किया, न उसकी यह सिफ़त है। जैसे फ़र्मान है (وَالضُّحٰى ۝ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝) (93/ज़ुहा : 1 से 3) क़सम है चाश्त के वक़्त की और रात की जबकि ढाँप ले न तो तेरा रब तुझसे दस्तबरदार है न नाख़ुश।

इब्ने अबी हातिम में है आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जो कुछ अल्लाह तआला ने अपनी किताब में हलाल कर दिया वह हलाल है और जो हराम कर दिया वह हराम है और जिससे ख़ामोश रहा वह आफ़ियत है तुम अल्लाह तआला की आफ़ियत को क़बूल कर लो अल्लाह तआला किसी चीज़ का भूलने वाला नहीं।'' फिर आपने यही जुम्ला तिलावत किया। (बज़्ज़ार : 123; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/55; हाकिम : 2/375; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) आसमान व ज़मीन और सारी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ मालिक मुदब्बिर मुतसर्रिफ़ वही है। कोई नहीं जो उसके किसी हुक्म को टाल सके। तू उसी की इबादतें किये चला जा और उसी पर जमा रह। उसका मसील शबीह हमनाम हम पल्ला कोई नहीं। वह बाबरकत है, वह बुलंदियों वाला है उसके नाम में तमाम ख़ूबियाँ हैं, जल्ला जलालुहू

***

وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ۝٦٦ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا
خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ۝٦٧ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ
حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝٦٨ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ۝٦٩ ثُمَّ
لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ۝٧٠

तर्जुमा : "इंसान कह रहा है कि जब मैं मर जाऊँगा तो क्या फिर ज़िन्दा किया जाऊँगा? (66) क्या यह इंसान इतना भी याद नहीं रखता कि हमने उसे उससे पहले पैदा किया हालाँकि वह कुछ भी न था। (67) तेरे परवरदिगार की क़सम! हम इन्हें और शैतानों को जमा करके ज़रूर ज़रूर जहन्नम के आसपास घुटनों के बल गिरे हुए हाज़िर कर देंगे। (68) हम फिर हर हर गिरोह से उन्हें अलग निकाल खड़ा करेंगे जो रब रहमान से बहुत अकड़े अकड़े फिरते थे।(69) हम इन्हें भी ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम के दाख़िले के पूरे सज़ावार हैं।" (70)

अल्लाह की क़सम महशर बपा होगा (आयत 66 से 70) : कुछ मुंकिरीने क़ियामत, क़ियामत का आना अपने नज़दीक महाल समझते थे और मौत के बाद का जीना उनके ख़्याल में नामुम्किन था, वह क़ियामत का और उस दिन की दूसरी और नये सिरे की ज़िन्दगी का हाल सुनकर सख़्त तअज्जुब करते थे जैसे कुरआन का फ़र्मान है (وَ اِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ) (13/रअद : 5) यानी अगर तुझे तअज्जुब है तो इनका यह क़ौल भी तअज्जुब से ख़ाली नहीं कि क्या हम जब मरकर मिट्टी हो जाएँगे फिर हम नई पैदाइश में पैदा किये जाएँगे? सूरह यासीन में फ़र्माया, क्या इंसान उसे नहीं देखता कि हमने उसे नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह हमसे साफ़ साफ़ झगड़े करने लगा और हम पर ही बातें बनाने लगा और अपनी पैदाइश को भुलाकर कहने लगा कि इन हड्डियों को जो सड़ गल गई हैं कौन ज़िन्दा करेगा? तू जवाब दे कि इन्हें वह ख़ालिके हक़ीक़ी ज़िन्दा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया था वह हर एक और हर तरह की पैदाइश से पूरा बाख़बर है। (36/यासीन : 77 से 79) यहाँ भी काफ़िरों के इसी ऐतिराज़ का ज़िक्र है कि हम मरकर फिर ज़िन्दा होकर कैसे खड़े हो सकते हैं? जवाबन फ़र्माया जा रहा है कि क्या उसे यह भी नहीं मालूम कि वह कुछ न था और हमने उसे पैदा कर दिया। शुरू पैदाइश के क़ाइल और दूसरी पैदाइश के मुंकिर जब कुछ न था तब तो अल्लाह तआला उसे कुछ कर देने पर क़ादिर था तो अब जबकि कुछ न कुछ ज़रूर हो गया क्या अल्लाह तआला क़ादिर नहीं कि उसे फिर से पैदा कर दे? पस पहली पैदाइश दूसरी पैदाइश पर दलील है। जिसने पहली बार पैदा किया वही एआदा करेगा और एआदा बनिस्बत इब्तिदा के हमेशा आसान हुआ करता है।

सहीह हदीस में है "अल्लाह तआला फ़र्माता है मुझे इब्ने आदम झुठला रहा है और उसे लायक़ न था। मुझे इब्ने आदम ईज़ा दे रहा है और उसे यह भी लायक़ न था, उसका मुझे झुठलाना तो यह है कि कहता है कि जिस तरह अल्लाह तआला ने मेरी इब्तिदा की एआदा न करेगा हालाँकि ज़ाहिर है कि इब्तिदाअन बनिस्बत एआदा के मुश्किल होती है और इसका मुझे ईज़ा देना यह है कि कहता है कि मेरी औलाद है हालाँकि मैं अहद हूँ, समद हूँ, न मेरे माँ बाप न औलाद न मेरी जिंस का कोई।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह (कुल हुवल्लाहू अहद) : 4974; अहमद : 2/393; इब्ने हिब्बान : 267) मुझे अपनी क़सम है कि मैं इन सबको जमा करूँगा और जिन जिन शैतानों की यह लोग मेरे सिवा इबादत करते थे उन्हें भी जमा करूँगा फिर इन्हें जहन्नम के सामने लाऊँगा जहाँ घुटनों गिर पड़ेंगे। जैसे फ़र्मान है (وَ تَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً) (45/जासिया : 28) हर उम्मत को तू देखेगा कि घुटनों के बल गिरी हुई होगी। (तब्री : 18/227)

एक क़ौल यह भी है कि क़ियाम की हालत में उनका हश्र होगा जब तमाम पहले आख़िर जमा हो जाएँगे तो हम उनमें से बड़े बड़े मुज्रिमों और सरकशों को अलग कर लेंगे उनके रईस व अमीर और बदियों और बुराइयों के फैलाने वाले उनके यह पेशवा उन्हें शिर्क व कुफ्र की तअलीम देने वाले उन्हें अल्लाह तआला के गुनाहों की तरफ़ माइल करने वाले अलग कर लिये जाएँगे। जैसे फ़र्मान (حَتّٰى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا) (7/आराफ़ : 38) जब वहाँ सब जमा हो जाएँगे तो पिछले अगलों की बाबत कहेंगे कि ऐ अल्लाह! इन ही लोगों ने हमें बहका रखा था तू इन्हें दुगुना अज़ाब कर, फिर ख़बर का ख़बर पर अत्फ़ डालकर फ़र्माता है कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि सबसे ज़्यादा अज़ाबों का और जहन्नम की आग का सज़ावार कौन कौन है। जैसे दूसरी आयत में है कि फ़र्माएगा (لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ)(7/आराफ़ : 38) हर एक के लिए दोहरा अज़ाब है लेकिन तुम इल्म से कोरे हो।

***

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

तर्जुमा : "तुममें से हर एक वहाँ ज़रूर वारिद होने वाला है, यह तेरे परवरदिगार के ज़िम्मे क़तई फ़ैसलशुदा हुक्म है। (71) फिर हम परहेज़गारों को तो बचा लेंगे और नाफ़र्मानों को उसी में घुटनों के बल गिरे हुए छोड़ देंगे।" (72)

हर कोई जहन्नम पर से गुज़रेगा (आयत 71, 72) : मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल की एक ग़रीब हदीस में है अबू सुमय्या फ़र्माते हैं जिस वुरूद का इस आयत में ज़िक्र है उस बारे में हममें इख़्तिलाफ़ हुआ, कोई कहता था मोमिन उसमें दाख़िल न होंगे कोई कहता था दाख़िल तो होंगे लेकिन फिर बसबब अपने तक़्वा के नजात पा जायेंगे। मैंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मिलकर इस बात को पूछा तो आपने फ़र्माया वारिद तो सब होंगे। और रिवायत में है कि दाख़िल तो सब होंगे हर एक नेक भी और हर एक बुरा भी लेकिन मोमिनों पर वह आग ठण्डी और सलामती वाली बन जाएगी। जैसे हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) पर थी यहाँ तक कि उस ठण्डक की शिकायत ख़ुद आग करने लगेगी। फिर उन मुत्तक़ी लोगों का वहाँ से छुटकारा हो जाएगा। (अहमद : 3/328, 329; वहुव हसन बिश्शवाहिद, अल्हाकिम : 4/587; ह : 8744; व सनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/55; शुअबुल ईमान : 1/336; इसकी सनद में अबू सुमय्या है जिसे ज़हबी ने मज्हूल कहा है। (अल्मीज़ान : 4/534; रक़म : 1027) ख़ालिद बिन मअदान फ़र्माते हैं कि जब जन्नती जन्नत में पहुँच जाएँगे, कहेंगे कि अल्लाह तआला ने तो फ़र्माया था कि हर एक जहन्नम पर वारिद होने वाला है और हमारा वुरूद तो हुआ ही नहीं तो उनसे कहा जाएगा कि तुम वहीं से गुज़रकर तो आ रहे हो लेकिन अल्लाह तआला ने उस वक़्त आग को ठण्डा कर दिया था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) एक बार अपनी बीवी साहिबा के घुटने पर सर रखकर लेटे हुए थे कि रोने लगे, आपकी बीवी साहिबा भी रोने लगीं तो आपने उनसे पूछा कि तुम क्यूँ रोयी? उन्होने जवाब दिया कि आपको रोता देखकर। आपने फ़र्माया मुझे तो आयत (व इम् मिन्कुम) याद आ गयी और रोना आ गया मुझे क्या मालूम कि मैं नजात पाऊँगा या नहीं। उस वक्त आप बीमार थे। हज़रत अबू मैसरा जब रात को अपने बिस्तरे पर सोने के लिए जाते तो रोने लगते और ज़ुबान से बेसाख़्ता निकल जाता कि काश! मैं पैदा ही न होता।

एक मर्तबा आपसे पूछा गया कि आख़िर इस रोने धोने की क्या वजह है? तो फ़र्माया यही आयत है। यह तो साबित है कि वहाँ जाना होगा और यह नहीं मालूम कि नजात भी होगी या नहीं? एक बुज़ुर्ग शख़्स ने अपने भाई से फ़र्माया कि आपको यह तो मालूम है कि हमें जहन्नम पर से गुज़रना है? उन्होंने जवाब दिया हाँ! यक़ीनन मालूम है। फिर पूछा क्या यह भी जानते हो कि वहाँ से पार हो जाओगे? उन्होंने फ़र्माया, इसका कोई इल्म नहीं। फिर हमारे लिए हँसी ख़ुशी कैसी? यह सुनकर जबसे लेकर मौत की घड़ी तक उनके होंठों पर हँसी नहीं आई। नाफ़ेअ बिन अज़रक़ हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का इस बारे में मुख़ालिफ़ था कि यहाँ वुरूद से मुराद दाख़िल होना है तो आपने दलील में आयते कुरआन (إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنتُمْ لَهَا وَارِدُونَ) (21/अम्बिया : 98) पेश करके फ़र्माया कि देखो! यहाँ वुरूद से मुराद दाख़िल होना है या नहीं? फिर आपने दूसरी आयत तिलावत की (يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ) (11/हूद : 98) और फ़र्माया बतलाओ फ़िरऔन अपनी क़ौम को जहन्नम में ले जाएगा या नहीं? पस अब ग़ौर कर ले कि हम उसमें दाख़िल तो ज़रूर होंगे अब निकलेंगे भी या नहीं? ग़ालिबन तुझे तो अल्लाह न निकालेगा। इसलिए कि तू उसका मुंकिर है। यह सुनकर नाफ़ेअ खिसयाना होकर हंस दिया। यह नाफ़ेअ ख़ारजी था उसकी कुन्नियत अबू राशिद थी। दूसरी रिवायत में है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उसे समझाते हुए आयत (وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا) (19/मरयम : 86) भी पढ़ी थी और यह भी फ़र्माया था कि पहले बुज़ुर्ग लोगों की एक दुआ यह भी थी कि (अल्लाहुम्मा अख़्रिज्नी मिनन्नारि सालिमन व अदख़िल्निल जन्नता ग़ाइमन) ऐ अल्लाह! मुझे जहन्नम से सहीह सालिम निकाल ले और जन्नत में हँसी ख़ुशी पहुँचा दे। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से अबूदाऊद तयालिसी में यह भी मरवी है कि उसके मुख़ातब कुफ़्फ़ार हैं। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं यह ज़ालिम लोग हैं, इसी तरह हम इस आयत को पढ़ते थे। यह भी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि नेक बुरे सब वारिद होंगे। देखो! फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लिए और गुनहगारों के लिए भी वुरूद का लफ़्ज़ दुख़ूल के मअनी में ख़ुद कुरआने करीम की दो आयतों में वारिद है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "वारिद तो सब होंगे फिर गुज़र अपने अपने आमाल के मुताबिक़ होगा।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरति मरयम : 3159; व सनदुहू हसन; अहमद : 1/435; दारमी : 2/329; हाकिम : 2/375)

पुलसिरात का ज़िक्र : हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि पुलसिरात से सबको गुज़रना होगा। यही आग के पास खड़ा होना है। अब कुछ तो बिजली की तरह गुज़र जाएँगे कुछ हवा की तरह, कुछ परिन्दों की तरह, कुछ तेज़ रफ़्तार घोड़ों की तरह, कुछ तेज़ रफ़्तार ऊँटों की तरह, कुछ तेज़ रफ़्तार वाले पैदल इंसान की

तरह, यहाँ तक कि सबसे आख़िर में जो मुसलमान उससे पार होगा यह वह होगा जिसके सिर्फ़ पैर के अंगूठे पर नूर होगा, गिरता पड़ता नजात पाएगा। पुलसिरात फिसलनी चीज़ है जिस पर बबूल जैसे और गोखर जैसे कांटे हैं दोनों तरफ़ फ़रिश्तों की सफ़ें होंगी। जिनके हाथों में जहन्नम के अंकस होंगे जिनसे पकड़ पकड़कर लोगों को जहन्नम में धकेल रहे होंगे, आख़िर तक। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह तलवार की धार से ज़्यादा तेज़ होगा। पहला गिरोह तो बिजली की तरह आन की आन में पार हो जाएगा। दूसरा गिरोह हवा की तरह जाएगा, तीसरा तेज़ रफ़्तार घोड़े की तरह। चौथा तेज़ रफ़्तार जानवर की तरह। फ़रिश्ते हर तरफ़ से दुआएँ कर रहे होंगे कि ऐ अल्लाह! सलामत रख इलाही बचा ले।'' (तब्री : 18/232)

बुख़ारी व मुस्लिम की बहुत सी मरफ़ूअ हदीसों में भी यह मज़्मून वारिद हुआ है। हज़रत कअब (रज़ि.) का बयान है कि ''जहन्नम अपनी पीठ पर तमाम लोगों को जमा लेगी जब सब नेक व बुरे जमा हो जाएँगे तो हुक्म बारी तआला होगा कि अपने वालों को तू पकड़ ले और जन्नतियों को छोड़ दे। अब जहन्नम सब बुरे लोगों को लुक़्मा बना लेगी। वह बुरे लागों को इस तरह जानती पहचानती है जिस तरह तुम अपनी औलाद को बल्कि उससे भी ज़्यादा। मोमिन साफ़ बच जाएँगे। सुनो! जहन्नम के दारोगों के क़द एक सौ साल की राह के हैं। उनमें से हर एक के पास गुर्ज़ हैं। एक मारते हैं तो सात लाख आदमियों का चूरा हो जाता है।'' मुस्नद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ''मुझे अपने रब की ज़ात पाक से उम्मीद है कि बद्र और हुदेबिया के जिहाद में जो ईमान वाले शरीक थे उनमें से एक भी दोज़ख़ में न जाएगा।'' यह सुनकर हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने कहा, यह कैसे? क़ुरआन तो कहता है कि तुममें से हर एक उस पर वारिद होने वाला है तो आपने उसके बाद की दूसरी आयत पढ़ दी कि मुत्तक़ी लोग उसमें से नजात पा जाएँगे और ज़ालिम उसी में रह जाएँगे। (अहमद : 6/285; इब्ने हिब्बान : 4800; व इब्ने माजा : 4281; वहुव हदीसुन सहीहुन; लहू शाहिद फ़ी सहीह मुस्लिम : 2496) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''जिसके तीन बच्चे फ़ौत हो गए हों उसे आग न छूऐगी मगर सिर्फ़ क़सम पूरी होने के तौर पर।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब फ़ज़्लु मम माता लहू वलदुन फ़हतसिब : 1251; सहीह मुस्लिम : 2632; तिर्मिज़ी : 1060; अहमद : 2/239; इब्ने हिब्बान : 2942) इससे मुराद यही आयत है। इब्ने जरीर में है कि एक सहाबी (रज़ि.) को बुख़ार चढ़ा हुआ था जिसकी एयादत के लिए रसूल मक़्बूल (ﷺ) हमारे साथ तशरीफ़ ले चले। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''जनाब बारी अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है कि यह बुख़ार भी एक आग है मैं अपने मोमिन बन्दों को उसमें इसलिए मुब्तला करता हूँ कि यह जहन्नम की आग का बदला हो जाए।'' (त ब्री : 18/233; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 2/598; रक़म : 5006) यह हदीस ग़रीब है।

हज़रत मुजाहिद (रह.) ने भी यही फ़र्माकर फिर इस आयत की तिलावत की है। मुस्नदे अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है ''जो शख़्स सूरह क़ुल हुवल्लाहु अहद दस मर्तबा पढ़ ले उसके लिए जन्नत में एक महल तअमीर होता है।'' हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, फिर तो हम बहुत से महल बना लेंगे। आपने जवाब दिया अल्लाह तआला के पास कोई कमी नहीं वह बेहतर से बेहतर और बहुत से बहुत देने वाला है और जो शख़्स अल्लाह तआला की राह में एक हज़ार आयतें पढ़ ले अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसे

नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेह लोगों में लिख लेगा फ़िल्वाक़ेअ उनका साथ बेहतरीन साथियों का साथ है और जो शख़्स किसी तन्ख़्वाह की वजह से नहीं बल्कि अल्लाह की ख़ुशी के लिए मुसलमान लश्करों की उनकी पुश्त की तरफ़ से हिफ़ाज़त करने के लिए पहरा दे वह अपनी आँख से भी जहन्नम की आग को न देखेगा मगर सिर्फ़ क़सम पूरी करने के लिए, क्यों कि अल्लाह तआला का फ़र्मान है तुममें से हर एक उस पर वारिद होने वाला है। अल्लाह तआला की राह में उसका ज़िक्र करना ख़र्च करने से भी सात सौ गुना ज़्यादा अज्र रखता है। और रिवायत में है सात हज़ार गुना।'' (अहमद : 3/437, 438; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में इब्ने लहीआ रावी मुख़्तलत है (अत्तक़रीब : 1/144; रक़म : 574) और सीउल हिफ़्ज़ है।) अबूदाऊद में है कि ''नमाज़ रोज़ा और ज़िक्रे इलाही अल्लाह तआला की राह के ख़र्च पर सात सौ गुना दर्जा रखते हैं।'' (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी तज़्ईफ़िज़्ज़िक्र फ़ी सबीलिल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल : 2498; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़िबान बिन फ़ाइद रावी ज़ईफ़ है।)

क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं मुराद इस आयत से गुज़रना है। अब्दुर्रहमान (रह.) कहते हैं मुसलमान तो पुलसिरात से गुज़र जाएँगे और मुश्रिक जहन्नम में गिर जाएँगे। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''उस दिन बहुत से मर्द औरत उस पर से फिसल पड़ेंगे। उसके दोनों किनारों पर फ़रिश्तों की सफ़बंदी होगी जो अल्लाह तआला से सलामती की दुआएँ कर रहे होंगे। (तब्री : 18/233) यह अल्लाह तआला की क़सम है जो पूरी होकर रहेगी। इसका फ़ैसला हो चुका है और अल्लाह तआला अपने ज़िम्मे लाज़िम कर चुका है। (तब्री : 18/237) पुलसिरात पर जाने के बाद परहेज़गार तो पार हो जाएँगे हाँ! काफ़िर गुनहगार अपने अपने आमाल के मुताबिक़ जहन्नम में झड़ झड़ जाएँगे। मोमिन भी अपने अपने आमाल के मुताबिक़ नजात पाएँगे जैसे अमल होंगे उतनी देर वहाँ लग जाएगी। फिर यह नजात पाने वाले अपने दूसरे मुसलमान भाईयों की सिफ़ारिश करेंगे मलाइका (फ़रिश्ते) सिफ़ारिश करेंगे और अम्बिया भी। फिर बहुत से लोग तो जहन्नम में से उस हालत में निकलेंगे कि आग उन्हें खा चुकी होगी मगर चेहरे की सज्दा की जगह बची हुई होगी। फिर अपने अपने बाक़ी ईमान के हिसाब से दोज़ख़ से निकाले जाएँगे। जिनके दिलों में बक़द्रे दीनार के ईमान होगा वह पहले निकलेंगे फिर उससे कम वाले फिर उससे कम वाले यहाँ तक कि राई के दाने के बराबर ईमान वाले। फिर उससे कम वाले फिर उससे भी कमी वाले। फिर वह जिसने अपनी पूरी उम्र में ला इलाहा इल्लल्लाह कह दिया हो, भले कुछ भी नेकी न की हो। फिर तो जहन्नम में वही रह जाएँगे जिन पर हमेशगी और दवाम लिखा जा चुका है। यह तमाम ख़ुलासा है उन हदीसों का जो सेहत के साथ आ चुकी हैं। पस पुलसिरात पर जाने के बाद नेक लोग पार हो जाएँगे और बुरे लोग कट कटकर जहन्नम में गिर पड़ेंगे।

***

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾

तर्जुमा : "जब उनके सामने हमारी रोशन आयतें तिलावत की जाती हैं तो काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं बताओ हम तुम दोनों जमाअतों में से किसका मर्तबा ज़्यादा है? और किसकी मज्लिस शानदार है? (73) हम तो इनसे पहले बहुत सी जमाअतों को ग़ारत कर चुके हैं जो साज़ो सामान और नाम व नमूद में इनसे बढ़ चढ़कर थीं।" (74)

कुफ़्फ़ार मोमिनों से मज़ाक़ करते हैं (आयत 73, 74) : अल्लाह तआला की साफ़ सरीह आयतों से परवरदिगार के दलील व बुरहान वाले कलाम से कुफ़्फ़ार को कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता। वह उनसे मुँह मोड़ लेते हैं, दीदे फेर लेते हैं ओर अपनी ज़ाहिरी शानो शौकत से उन्हें मरऊब करना चाहते हैं। कहते हैं बताओ किसके मकानात पुरतकल्लुफ़ हैं और किसकी बैठकें सजी हुई हैं? और आबाद और बारौनक़ हैं? पस हम जो कि माल व दौलत शानो शौकत इज़्ज़त व आबरू में इनसे बढ़े हुए हैं हम अल्लाह तआला के प्यारे हैं ? या यह जो कि छुपते फिरते हैं खाने पीने को नहीं पाते। कभी अरक़म बिन अबू अरक़म (रज़ि.) के घर में छुपते हैं और कभी इधर उधार भागते फिरते हैं। जैसे और आयत में है कि काफ़िरों ने कहा (لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ) (46/अहक़ाफ़ : 11) अगर यह दीन बेहतर होता तो इसे पहले हम मानते या यह?

हज़रत नूह (عليه السلام) की क़ौम ने भी यही कहा था कि (اَنُؤْمِنُ لَكَ وَ اتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ) (26/शुअरा : 111) तेरे मानने वाले तो सब ग़रीब मोहताज लोग हैं हम तेरे ताबेदार नहीं बन सकते।

और आयत में है कि इसी तरह इन्हें धोखा लग रहा है और कह उठते हैं कि क्या यही वह अल्लाह तआला के प्यारे बन्दे हैं जिन्हें अल्लाह ने हम पर फ़ज़ीलत दी है? (6/अन्आम : 53) फिर इनके इस मुग़ालते का जवाब दिया कि इनसे पहले इनसे भी ज़ाहिरदारी में बढ़े हुए और मालदारी में आगे निकले हुए लोग थे। लेकिन इनके बुरे अमलों की वजह से हमने उन्हें तहस नहस कर दिया। उनकी मज्लिसें, उनके मकानात, उनकी ताक़तें, उनकी मालदारियाँ उनके सिवा थीं। (तब्री : 18/239) शानो शौकत में टीपटाप में तकल्लुफ़ात में इमारत और शराफ़त में इनसे कहीं ज़्यादा थे। उनके तकब्बुर और इनाद की वजह से हमने उनका भुस उड़ा दिया, ग़ारत और बर्बाद कर दिया। फ़िरओनियों को देख लो उनके बाग़ात उनकी नहरें उनकी खेतियाँ उनके शानदार मकानात और आलीशान महल्लात अब तक मौजूद हैं और वह ग़ारत कर दिये गए, मछलियों का लुक़्मा बन गए। मक़ाम से मुराद मस्कन और नेअमतें हैं। नदिय्यन से मुराद मज्लिसें और बैठकें हैं। अरब में बैठकों और लोगों के जमा होने की जगहों को नादी और नदिय्य कहते हैं। (तब्री : 18/239) जैसे आयत (وَ تَاْتُوْنَ فِیْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ) (29/अन्कबूत : 29) में है। यही उन मुश्रिकीन का क़ौल था कि हम बएतिबार दुनिया के तुमसे बहुत बढ़े हुए हैं। लिबास में, मालो मताअ में, सूरत शक्ल में हम तुमसे अफ़ज़ल हैं।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰىٓ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا

الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ۖ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضْعَفُ جُندًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيدُ اللّٰهُ

الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾

तर्जुमा : ''कह दे कि जो गुमराही में होता है रब रहमान उसको ख़ूब लम्बा खींच ले जाता है। यहाँ तक कि वह उन चीज़ों को देख लें जिनका वादा दिये जाते हैं यानी अ़ज़ाब या क़ियामत को उस वक़्त इनको सही तौर पर मालूम हो जाएगा कि कौन बुरे मर्तबे वाला और किसका जत्था कमज़ोर है। (75) राहयाफ़्ता लोगों की हिदायत अल्लाह तआ़ला बढ़ाता रहता है बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तेरे रब के नज़दीक सवाब के लिहाज़ से और अंजाम के लिहाज़ से बहुत ही बेहतर हैं।'' (76)

गुमराह और हिदायत याफ़्ता लोग (75, 76) : इन काफ़िरों को जो तुम्हें नाहक़ पर और अपने तईं हक़ पर समझ रहे हैं और अपनी ख़ुशहाली और फ़ारिगुल बाली पर इत्मिनान किये हुए बैठे हैं, इनसे कह दीजिए कि गुमराहों की रस्सी दराज़ होती है उन्हें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ढील दी जाती है जब तक कि क़ियामत न आ जाए या उनकी मौत न आ जाए। उस वक़्त उन्हें पूरा पता चल जाएगा कि फ़िल वाक़ेअ़ बुरा शख़्स कौन था और किसके साथी कमज़ोर थे। दुनिया तो ढलती चढ़ती छांव है न ख़ुद इसका ऐतिबार न इसके सामाने अस्बाब का। यह तो अपनी सरकशी में बढ़ते ही रहेंगे। गोया इस आयत में मुश्रिकों से मुबाहिला है।

जैसे यहूदियों से सूरह जुम्आ में मुबाहिला की आयत है कि आओ हमारे मुक़ाबले में मौत की तमन्ना करो। (62/जुम्आ : 6) इसी तरह सूरह आले इमरान में मुबाहिले का ज़िक्र है कि जब तुम अपने ख़िलाफ़ दलीलें सुनकर भी ईसा (عليه السلام) के इब्नुल्लाह होने के मुद्दई हो तो आओ बाल बच्चों समेत मैदान में जाकर झूठे पर अल्लाह तआ़ला की लअ़नत पड़ने की दुआ करें। (3/आले इमरान : 61) पस न तो मुश्रिकीन मुक़ाबले पर आये, न यहूद की हिम्मत पड़ी, न ईसाई मर्दे मैदान बने।

जिस तरह गुमराहों की गुमराही बढ़ती रहती है उस तरह हिदायत वालों की हिदायत बढ़ती रहती है। जैसे फ़र्मान है कि जहाँ कोई सूरह उतरती है कि कुछ लोग कहने लगते हैं कि तुममें से किसे इसने ईमान में ज़्यादा कर दिया? आख़िर तक (9/तौबा : 124) बाक़ियातुस्सालिहात की पूरी तफ़्सीर इन ही लफ़्ज़ों की तशरीह में सूरह कहफ़ में गुज़र चुकी है। यहाँ फ़र्माता है कि यही पायदार नेकियाँ जज़ा और सवाब के लिहाज़ से और अंजाम और बदले के लिहाज़ से नेकों के लिए बेहतर है।

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि एक दिन हुज़ूर (ﷺ) एक ख़ुश्क दरख़्त तले बैठे हुए थे उसकी शाख़ पकड़कर हिलाई तो सूखे पत्ते झड़ने लगे। आपने फ़र्माया, देखो! इसी तरह इंसान के गुनाह (ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि) कहने से झड़ जाते हैं। ऐ अबू दर्दा (रज़ि.)! इनका विर्द

रख इससे पहले कि वह वक़्त आ जाये कि तू इन्हें न कह सके यही बाक़ियातुस्सालिहात हैं यही जन्नत के ख़ज़ाने हैं।'' इसको सुनकर हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) का यह हाल था कि इस हदीस को बयान करके फ़र्माते कि वल्लाह! मैं तो इन कलिमात को पढ़ता ही रहूँगा कभी इनसे ज़ुबान न रोकूँगा भले लोग मुझे दीवाना कहने लगें। (इब्ने माजा, किताबुल अदब, बाब फ़ज़्लुत्तस्बीह : 3813; मुख़्तसरन व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; इसकी सनद में अम्र बिन राशिद ज़ईफ़ रावी है।) इब्ने माजा में भी यह हदीस दूसरी सनद से है।

***

أَفَرَءَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٧﴾ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ
عِنْدَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَنَرِثُهُ
مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

तर्जुमा : ''क्या तूने उसे भी देखा है जिसने हमारी आयतों से कुफ़्र किया और कहा कि मुझे तो माल व औलाद ज़रूर ही दी जाएगी। (77) क्या वह ग़ैब को झाँक आया है या अल्लाह तआला से कोई वादा ले चुका है? (78) हर्गिज़ नहीं यह जो भी कह रहा है हम उसे ज़रूर लिख लेंगे और उसके लिए अज़ाब बढ़ाये चले जाएँगे। (79) यह जिन चीज़ों का कह रहा है उसे हम इसके बाद ले लेंगे और यह तो बिलकुल अकेला ही हमारे सामने हाज़िर होगा।'' (80)

आस बिन वाइल की सरकशी (आयत 77 से 80) : हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं लोहार था और मेरा क़र्ज़ आस बिन वाइल के ज़िम्मे कुछ था, मैं उससे तक़ाज़ा करने को गया तो उसने कहा मैं तो तेरा क़र्ज़ उस वक़्त तक अदा न करूँगा जब तक कि तू हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की ताबेदारी न छोड़ दे। मैंने कहा, मैं तो यह कुफ़्र उस वक़्त तक भी नहीं कर सकता कि तू मरकर दोबारा ज़िन्दा हो। उस काफ़िर ने कहा बस तो फिर यही रही जब मैं मरने के बाद ज़िन्दा होउँगा तो ज़रूर मुझे मेरा माल और मेरी औलाद भी मिलेगी वहीं तेरा क़र्ज़ भी अदा कर दूँगा तू आ जाना। इस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह मरयम बाब (अत्तलअल ग़ैबा अमित्तख़ज़ा इन्दर्रहमानि अहदा) : 4733; सहीह मुस्लिम : 2795; तिर्मिज़ी : 3162; अहमद : 5/111; इब्ने हिब्बान : 4885)

दूसरी रिवायत में है कि मैंने मक्के में उसकी तलवार बनाई थी, उसकी उज्रत मेरी उधार थी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह मरयम बाब (अत्तलअल ग़ैबा अमित्तख़ज़ा इन्दर्रहमानि अहदा) : 4733) फ़र्माता है कि, क्या इसे ग़ैब की ख़बर मिल गई? या इसने रब रहमान से कोई क़ौलो क़रार ले लिया? और रिवायत में है कि इस पर मेरे बहुत से दिरहम बतौरे क़र्ज़ के चढ़ गए थे। उसने मुझे जो जवाब दिया मैंने उसका तज़्किरा रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया। इस पर यह आयतें उतरीं।

और रिवायत में है कि कई एक मुसलमानों का क़र्ज़ उसके ज़िम्मे था। उनके तक़ाज़ों पर उसने कहा कि क्या तुम्हारे दीन में यह नहीं कि जन्नत में सोना चाँदी रेशम फल फूल वग़ैरह होंगे? हमने कहा, हाँ! है तो कहा बस तो यह चीज़ें मुझे भी ज़रूर मिलेंगी मैं वहीं तुम सबको दे दूँगा। पस यह आयतें (फ़र्दन) तक उतरीं। (वलदन) की दूसरी क़िराअत वाव के पेश से भी है। मअनी दोनों के एक ही हैं और यह भी कहा गया है कि ज़बर से तो मुफ़रद के मअनी में है और पेश से जमा के मअनी में है। क़ैस क़बीले की यही लुग़त है, वल्लाहु आलम!

उस मग़रूर को जवाब मिलता है कि क्या उसे ग़ैब पर ख़बर है? उसे आख़िरत के अपने अंजाम की ख़बर है? जो यह क़समें खा खाकर कह रहा है? या उसने अल्लाह तआला से कोई क़ौल व क़रार अहदो पैमान लिया है? या उसने अल्लाह तआला की तौहीद मान ली है? कि उसकी वजह से उसे जन्नत में दाख़िल किये जाने का यक़ीन हो, चुनाँचे आयत (अमित्तख़ज़ा इन्दर्रहमानि अहदा) में अल्लाह तआला की वहदानियत के कलिमे का क़ाइल हो जाना ही मुराद लिया गया है फिर उसके कलाम की ताकीद के साथ नफ़ी की जाती है और उसके ख़िलाफ मुअक्कद बयान हो रहा है कि उसका यह घमण्ड का कलिमा भी हमारे यहाँ लिखा जा चुका है, उसका कुफ़्र भी हम पर खुला है और आख़िरत में तो उसके लिए अज़ाब ही अज़ाब है जो हर वक़्त बढ़ता रहेगा, उसे माल व औलाद भी वहाँ मिलना तो दूर, बल्कि दुनिया का मालो मताअ और औलाद व कुंबा भी उससे छीन लिया जाएगा और तने तन्हा हमारे हुज़ूर पेश होगा। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की किराअत में (व नरिसुहू मा इन्दहू) है। इसकी जमा जत्था और इसके अमल हमारे क़ब्ज़े में हैं। यह तो ख़ाली हाथ सबकुछ छोड़ छाड़कर हमारे सामने पेश होगा।

***

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ
وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾
فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

तर्जुमा : ''उन्होंने अल्लाह तआला के सिवा दूसरे मअबूद बना रखे हैं कि वह उनके लिए बाइसे इज़्ज़त हों। (81) लेकिन ऐसा हर्गिज़ नहीं वह तो उनकी पूजा से मुंकिर हो जाएँगे और उल्टे इनके दुश्मन हो जाएँगे। (82) क्या तूने नहीं देखा कि हम काफ़िरों के पास शैतानों को भेजते हैं जो इन्हें ख़ूब ही उकसाते रहते हैं। (83) तू इनके बारे में जल्दी न कर हम तो ख़ुद ही इनके लिए मुद्दत शुमारी कर रहे हैं।'' (84)

क़ियामत के दिन झूठे मअ़बूद अपनी इबादत करने वालों से रिश्ता न होने की बात करेंगे (आयत 81 से 84) : काफ़िरों का ख़्याल है कि उनके अल्लाह के सिवा के और मअ़बूद उनके हामी मददगार होंगे, ग़लत ख़्याल है बल्कि महाल (असम्भव) है बल्कि मामला इसके बरअ़क्स और बिलकुल उल्टा है। उनकी पूरी मोहताजी के दिन यानी क़ियामत में यह साफ़ मुंकिर हो जाएँगे और अपने आ़बिदों के दुश्मन बनकर खड़े होंगे। जैसे फ़र्माया उससे बढ़कर बुरी राह पर और भटका हुआ कौन है जो अल्लाह तआ़ला को छोड़कर उन्हें पुकारता है जो क़ियामत तक जवाब न दे सकें, इनकी दुआ से बिलकुल ग़ाफ़िल हों और महशर के दिन इनके दुश्मन बन जाएँ और इनकी इबादत का बिलकुल इंकार कर जाएँ। (46/अहक़ाफ़ : 5, 6) (कल्ला) की दूसरी क़िराअत (कुल्लुन) भी है। ख़ुद यह कुफ़्फ़ार भी उस दिन अल्लाह तआ़ला के सिवा औरों की पूजा पाठ का इंकार कर जाएँगे। यह सब आ़बिदो मअ़बूद जहन्नमी होंगे। एक दूसरे के साथी होंगे। वह उस पर यह उस पर लअ़नत व फिटकार करेंगे। हर एक दूसरे पर डालेगा, एक दूसरे को बुरा कहेगा, सख़्ततर झगड़े पड़ेंगे, सारे ताल्लुक़ात कट जाएँगे, एक दूसरे के खुले दुश्मन हो जाएँगे, मदद तो कहाँ? मुरव्वत तक न होगी। मअ़बूद आ़बिदों के लिए और आ़बिद मअ़बूदों के लिए बलाए बेदर्मा हसरत बेपायाँ हो जाएँगे। (तब्री : 18/251) क्या तुझे नहीं मालूम कि इन काफ़िरों को हर वक़्त शयातीन नाफ़र्मानियों पर आमादा करते रहते हैं। (तब्री : 18/251) मुसलमानों के ख़िलाफ़ उक्साते रहते हैं। आरज़ूएँ बढ़ाते रहते हैं, तुग़ियान और सरकशी में आगे करते रहते हैं।

जैसे फ़र्मान है कि ज़िक्रे रहमान से मुँह मोड़ने वाले शैतान के हवाले हो जाते हैं। (43/ज़ुख़रुफ़ : 36) तू जल्दी न कर इनके लिए कोई बद् दुआ न कर। हमने ख़ुद अ़मदन इन्हें ढील दे रखी है। इन्हें बढ़ता रहने दे, आख़िर वक़्ते मुक़र्ररा पर दबोच लिये जाएँगे। अल्लाह तआ़ला इन ज़ालिमों की करतूतों से बेख़बर नहीं है। इन्हें तो कुछ यूँ ही सी ढील है जिसमें यह अपने गुनाहों में बढ़े चले जा रहे हैं। आख़िर सख़्त अ़ज़ाबों की तरफ़ बेबसी के साथ जा पड़ेंगे। तुम फ़ायदा हासिल कर लो लेकिन याद रखो कि तुम्हारा असली ठिकाना जहन्नम ही है। हम इनके साल महीने दिन और वक़्त गिन रहे हैं। इनके सांस भी हमने गिने हुए हैं। मुक़र्ररा वक़्त पूरा होते ही अ़ज़ाबों में फंस जाएँगे।

***

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا
يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

तर्जुमा : "जिस दिन हम परहेज़गारों को रब रहमान की तरफ़ बतौरे मेहमान के जमा करेंगे (85) और गुनहगारों को सख़्त प्यास की हालत में जहन्नम की तरफ़ हाँक ले जाएँगे। (86) किसी को सिफ़ारिश का इख़्तियार न होगा, सिवाय उनके जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कोई क़ौलो क़रार ले लिया है।" (87)

परहेज़गार अल्लाह तआ़ला के मेहमान होंगे (आयत 85 से 87) : जो लोग अल्लाह तआ़ला की बातों पर ईमान लाए पैग़म्बरों की तस्दीक़ की अल्लाह तआ़ला की फ़र्मांबरदारी की गुनाहों से बचे रहे, परवरदिगार का डर दिल में रखा, वह अल्लाह तआ़ला के यहाँ बतौरे मुअ़ज़्ज़ मेहमानों के जमा होंगे। नूरानी साँडनियों की सवारी पर आएँगे और अल्लाह तआ़ला के मेहमानख़ाने में इ़ज़्ज़त के साथ दाख़िल किये जाएँगे। उनके बरख़िलाफ़ नाख़ुदातरस गुनहगार रसूलों के दुश्मन, धक्के खा खाकर सिर के बल घसीटते हुए प्यास के मारे ज़ुबान निकाले हुए जबरन क़हरन जहन्नम के पास जमा किये जाएँगे। (त़ब्री : 18/251) अब बतलाओ कि कौन मर्तबे वाला और कौन अच्छे साथियों वाला है? मोमिन अपनी क़ब्र से मुँह उठाकर देखेगा कि उसके सामने एक ह़सीन ख़ूबसूरत शख़्स पाकीज़ा लिबास पहने ख़ुश्बू से महकता चमकता दमकता चेहरा लिये खड़ा है। पूछेगा तुम कौन हो? वह कहेगा कि आपने पहचाना नहीं, मैं तो आपके नेक आ़माल का मुजस्समा हूँ। आपके अ़मले नूरानी ह़सीन और महकते हुए थे। आईए! अब आपको मैं अपने कँधों पर चढ़ाकर इ़ज़्ज़त व इकराम के साथ मह़शर में ले चलूँगा क्योंकि दुनिया की ज़िन्दगी में मैं आप पर सवार रहा हूँ। पस मोमिन अल्लाह तआ़ला के पास सवारी पर सवार होकर जाएगा। उनकी सवारी के लिए नूरानी ऊँट भी मुहय्या होंगे। यह सब हँसी ख़ुशी आबरू इ़ज़्ज़त के साथ जन्नत में जाएँगे।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़र्माते हैं वफ़्द का यह दस्तूर ही नहीं कि वह पैदल आए, यह मुत्तक़ी ह़ज़रात ऐसी नूरानी ऊँटनियों पर सवार होंगे कि मख़्लूक़ की नज़रों में उनसे बेहतर कोई सवारी कभी नहीं आई। उनके पालान सोने के होंगे, यह जन्नत के दरवाज़ों तक उन ही सवारियों पर जाएँगे। उनकी नकीलें ज़बरजद की होंगी। (अह़मद : 1/155; ज़वाइद अ़ब्दुल्लाह व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अ़ब्दुर्रह़मान बिन इस्ह़ाक़ अबू शैबा वासत़ी है जिसे अह़मद बिन ह़ंबल ने मुन्करुल ह़दीस और यह़्या ने मतरूक कहा है। देखिए (अल्मीज़ान : 2/548; रक़म : 4812) एक मरफ़ूअ़ ह़दीस में है लेकिन ह़दीस बहुत ही ग़रीब है।

इब्ने अबी ह़ातिम की रिवायत में है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़र्माते हैं एक दिन हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे मैंने इस आयत की तिलावत की और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! वफ़्द तो सवारी पर सवार आया करता है। आपने फ़र्माया, ''क़सम उस अल्लाह तआ़ला की जिसके हाथ में मेरी जान है कि यह पारसा लोग क़ब्रों से उठाये जाएँगे और उसी वक़्त सफ़ेद रंग नूरानी परदार ऊँटनियाँ अपनी सवारी के लिए मौजूद पायेंगे जिन पर सोने के पालान होंगे। जिनके परों से नूर बुलंद हो रहा होगा। जो एक एक क़दम इतनी दूर रखेंगे जहाँ तक निगाहें काम करे। यह उन पर सवार होकर एक जन्नती दरख़्त के पास पहुँचेंगे जहाँ से दो नहरें जारी देखेंगे। एक का पानी पियेंगे जिससे उनके दिलों के मेल दूर हो जाएँगे। दूसरी में ग़ुस्ल करेंगे जिससे उनके जिस्म नूरानी हो जाएँगे और बाल जम जाएँगे। उसके बाद न कभी उनके बाल उल्झें न जिस्म मेले हों। उनके चेहरे चमक उठेंगे और यह जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेंगे। सुर्ख़ याक़ूत का ह़ल्क़ा सोने के दरवाज़े पर होगा जिसे यह खटखटाएँगे। निहायत सुरीली आवाज़ उससे निकलेगी और ह़ूरों को मालूम हो जाएगा कि उनके शौहर आ गए। ख़ाज़िने जन्नत आएँगे, दरवाज़ा खोलेंगे, जन्नती उनके नूरानी जिस्मों और शगुफ़्ता चेहरों को देखकर सज्दे में गिर पड़ना चाहेंगे लेकिन वह फ़ौरन कह उठेगा कि मैं तो आपका ताबेअ़ हूँ आपका हुक्म मानने वाला हूँ। अब उनके साथ चलेंगे। उनकी ह़ूरें ताब न ला सकेंगी और ख़ेमों से निकलकर उनसे लिपट जाएँगी और कहेंगी कि आप हमारे सरताज हैं हमारे मह़बूब हैं, मैं हमेशगी वाली हूँ जो मौत से दूर हूँ। मैं नेअ़मतों वाली

हूँ कि कभी मेरी नेअमतें ख़त्म न होंगी। मैं ख़ुश रहने वाली हूँ कि कभी न रूठूँगी। मैं यहीं रहने वाली हूँ कि कभी आपसे दूर न होउँगी। यह अंदर दाख़िल होंगे, देखेंगे कि सौ (100) सौ (100) गज़ बुलंद बालाख़ाने हैं, लूअ लूअ और मोतियों पर ज़र्द लाल सब्ज़ रंग की दीवारें सोने की हैं। हर दीवार एक दूसरे की हमशक्ल है, हर मकान में सत्तर तख़्त हैं। हर तख़्त पर सत्तर हूरें हैं। हर हूर पर सत्तर जोड़े हैं। ताहम उनका जिस्म झलक रहा है। उनके जिमाअ की मिक़्दार दुनिया की पूरी एक रात के बराबर होगी। साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी की ख़ालिस दूध की जो जानवरों के थन से नहीं निकला बेहतरीन ख़ुश ज़ायक़ा बेज़रर शराबे तुहूर की जिसे किसी इंसान ने नहीं निचोड़ा, उम्दा ख़ालिस शहद की जो मक्खियों के पेट से नहीं निकला, नहरें बह रही होंगी। फलदार दरख़्त मेवों से लदे हुए झूम रहे होंगे। चाहें खड़े खड़े मेवे तोड़ लें चाहें बैठे बैठे चाहें लेटे लेटे। सब्ज व सफ़ेद परिन्द उड़ रहे होंगे, जिसके गोश्त खाने को जी चाहा वह ख़ुद ब ख़ुद हाज़िर हो गया। जहाँ का गोश्त खाना चाहा खा लिया और फिर वह कुदरते इलाही से ज़िन्दा उड़ गया, चारों तरफ़ से फ़रिश्ते आ रहे हैं और सलाम कह रहे हैं और बशारतें सुना रहे हैं कि तुम पर सलामती हो। यही वह जन्नत है जिसकी तुम ख़ुशख़बरी दिये जाते रहे और आज उसके मालिक बना दिये गए हो। यह है बदला तुम्हारे नेक आमाल का जो तुम दुनिया में किया करते थे। उनकी हूरों में से अगर किसी का एक बाल भी ज़मीन पर ज़ाहिर कर दिया जाए तो सूरज की रोशनी फीकी पड़ जाए।'' (वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबू मुआज़ सुलेमान बिन अरक़म है इसे दारे कुत्नी ने मतरूक और अबू ज़रआ ने ज़ाहिबुल हदीस कहा है (अल्मीज़ान : 2/196; रक़म 3427) यह हदीस तो मरफ़ूअ बयान हुई है लेकिन तअज्जुब नहीं कि यह मौक़ूफ़ ही हो। जैसे कि हज़रत अली (रज़ि.) के अपने क़ौल से भी मरवी है, वल्लाहु आलम!

ठीक इसके खिलाफ़ गुनहगार लोग औंधे (सिर के बल) मुँह ज़ंजीरों में जकड़े हुए जानवरों की तरह धक्के मार मारकर जहन्नम की तरफ़ जमा किये जाएँगे। उस वक़्त प्यास के मारे उनकी हालत बुरी हो रही होगी। कोई उनकी सिफ़ारिश करने वाला उनके हक़ में एक भला लफ़्ज़ कहने वाला न होगा। मोमिन तो एक दूसरों की सिफ़ारिश करेंगे लेकिन यह बदनसीब उससे महरूम हैं। यह ख़ुद कहेंगे (فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ) (26/शुअरा : 100) हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं, न सच्चा दोस्त है, हाँ! जिन्होंने अल्लाह तआला से वादा लिया है। यह अलग मुंक़तअ है। मुराद उस अहद से अल्लाह तआला की तौहीद की गवाही और उस पर इस्तिक़ामत है। यानी सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत दूसरों की पूजा से बराअत, मदद की उससे उम्मीद, तमाम आरज़ूओं के पूरा होने की उसी से आस। (तब्री : 18/257)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं उन मुवह्हिदीन ने अल्लाह तआला का वादा हासिल कर लिया है, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि जिससे मेरा वादा है वह खड़ा हो जाए। लोगों ने कहा हज़रत! हमें भी वह बता दीजिए। आपने फ़र्माया यूँ कहो, (अल्लाहुम्मा फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि आलिमिल ग़ैबि वश्शहादति फ़इन्नी अअहदु इलैका फ़ी हाज़िहिल हयातिद्दुनिया इन्नका इन तकिल्नी इला अमलिय्युक़र्रिबुनी मिनश्शर्रि व युबाइदुनी मिनल ख़ैरि व इन्नी ला असिक़ु इल्ला बि रहमतिका फ़ज्अल्ली इन्दका अहदन तुअद्दीहि इला यौमिल क़ियामति इन्नका ला तुख़्लिफ़ुल मीआद।) (हाकिम : 2/377; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मसऊदी इख़्तलत) और रिवायत में उसके साथ यह भी है (ख़ाइफ़म् मुस्तजीरम् मुस्तग़्-फ़िर्राहिबन राग़िबन इलैका) (इब्ने अबी हातिम)

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ
وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ
اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ
اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

तर्जुमा : "उनका क़ौल तो यह है कि रब रहमान ने भी औलाद इख़्तियार की है। (88) यक़ीनन तुम बहुत बुरी और भारी चीज़ लाये हो। (89) क़रीब है कि इस क़ौल की वजह से आसमान फट जाएँ और ज़मीन शक़्क़ हो जाए और पहाड़ चूरा चूरा हो जाएँ। (90) कि तुम रब रहमान की औलाद साबित करने बैठे हो। (91) शाने रहमान के लायक़ नहीं कि वह औलाद रखे। (92) आसमान व ज़मीन में जो भी हैं सबके सब अल्लाह तआला के ग़ुलाम बनकर ही आने वाले हैं। (93) उन सबको उसने घेर रखा है और सबको पूरी तरह गिन भी रखा है। (94) यह सारे के सारे क़ियामत के दिन अकेले उसके पास हाज़िर होने वाले हैं।" (95)

ज़ाते इलाही पर बहुत बड़ा बोहतान (आयत 88 से 95) : इस मुबारक सूरत के शुरू में इस बात का सबूत गुज़र चुका है कि हज़रत ईसा (عليه السلام) अल्लाह तआला के बन्दे हैं। उन्हें अल्लाह तआला ने बाप के बग़ैर अपने हुक्म से हज़रत मरयम (عليها السلام) के बतन (पेट) से पैदा किया है। इसलिए यहाँ उन लोगों की नादानी बयान हो रही है जो आपको अल्लाह तआला का बेटा क़रार देते हैं जिससे अल्लाह तआला की ज़ात पाक है। उनके क़ौल को बयान करके फिर फ़र्माया यह बड़ी भारी बात है। (इद्दा) और (अद्दा) और (आद्दा) तीनों लुग़त हैं लेकिन मशहूर (इद्दा) है। इनकी यह बात इतनी बुरी है कि आसमान थरथराकर टूट जाए और ज़मीन झटके ले लेकर फट जाए। इसलिए कि ज़मीनो आसमान अल्लाह तआला की इज़्ज़त व अज़्मत जानती है। इनमें रब की तौहीद समायी हुई है, इन्हें मालूम है कि बदकार बेसमझ इंसानों ने अल्लाह तआला की ज़ात पर तोहमत बाँधी है, न उसकी जिंस का कोई, न उसके माँ बाप, न औलाद न उसका कोई शरीक, न उस जैसा कोई। मख़्लूक़ तमाम उसकी वहदानियत की शाहिद है। कायनात का एक एक ज़र्रा उसकी तौहीद पर दलालत करता है। अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने वालों के शिर्क से सारी मख़्लूक़ काँप उठती है। क़रीब होता है कि इंतिज़ामे कायनात दरहम बरहम हो जाए। शिर्क के साथ कोई नेकी काम नहीं आने वाली। क्या अजब है कि इसके ख़िलाफ़ तौहीद के साथ के गुनाह कुल के कुल अल्लाह तआला माफ़ कर दे।

जैसे कि हदीस में है "अपने मरने वालों को (ला इलाहा इल्लल्लाह) की शहादत की तल्क़ीन करो। मौत के वक़्त जिसने इसे कह लिया उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।" सहाबा ने कहा और हुज़ूर (ﷺ)!

जिसने ज़िन्दगी में कह लिया। ''उसके लिए और ज़्यादा वाजिब हो गई। क़सम अल्लाह की जिसके हाथ में मेरी जान है कि ज़मीनो आसमान और उनकी और उनके बीच की और उनके नीचे की तमाम चीज़ें तराज़ू के एक पलड़े में रख दी जाएँ और (ला इलाहा इल्लल्ला) की गवाही दूसरे पलड़े में रखी जाए तो वह उन सबसे वज़न में बढ़ जाए।'' (त़ब्री : 18/258) इसी की मज़ीद दलील वह ह़दीस है जिसमें तौह़ीद के एक छोटे से पर्चे का गुनाहों के बड़े बड़े रजिस्टर से वज़नी हो जाना आया है। (तिर्मिज़ी, किताबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ीमय्यंमूतु वहुव यश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु : 2639; व सनदुहू स़ह़ीहुन; इब्ने माजा : 4300; अह़मद : 2/213; ह़ाकिम : 1/6; इस रिवायत को इमाम ह़ाकिम और ज़हबी ने स़ह़ीहुल इस्नाद कहा है।) वल्लाहु आलम!

पस इनका यह कहना इतना बुरा है कि आसमान अल्लाह तआला की अ़ज़्मत की वजह से काँप उठें और ज़मीन बवजह ग़ज़ब के फट जाए और पहाड़ों का चूरा चूरा हो जाए। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं एक पहाड़ दूसरे पहाड़ से पूछता है कि क्या आज कोई ऐसा शख़्स भी तुझ पर चढ़ा जिसने अल्लाह तआला का ज़िक्र किया हो? वह ख़ुशी से जवाब देता है कि हाँ! पस पहाड़ भी बात़िल और झूठी बात को और भली बात को सुनते हैं और दूसरी बात नहीं सुनते। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। मरवी है कि ''अल्लाह तबारक व तआला ने जब ज़मीन को और इसके दरख़्तों को पैदा किया तो हर दरख़्त इब्ने आदम को फल फूल और नफ़ा देता था। मगर जब ज़मीन पर रहने वाले लोगों ने अल्लाह के लिए औलाद का लफ़्ज़ बोला तो ज़मीन हिल गई और दरख़्तों में काँटे पड़ गए।'' (

कअ़ब (रज़ि.) कहते हैं मलाइका ग़ज़बनाक हो गए और जहन्नम ज़ोर शोर से भड़क उठी। मुस्नदे अह़मद में फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि ''ईज़ा दहिन्दा बातों पर अल्लाह तआला से ज़्यादा स़ाबिर कोई नहीं लोग उसके साथ शरीक करते हैं उसकी औलादें मुक़र्रर करते हैं और वह उन्हें आफ़ियत दे रहा है रोज़ियाँ पहुँचा रहा है बुराइयाँ उनसे टालता रहता है।'' (अह़मद : 4/395; स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब अस़्स़ब्रु फ़िल अज़ा : 6099; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2804; सुननुल कुब्रा : 11445; मुस्नद ह़ुमैदी : 774; अल्मुअ़जमुल औसत़ : 3494; अल्अस्माउ वस़्स़िफ़ातु लिल बैहक़ी : 1064) पस उनकी इस बात से कि अल्लाह तआला की औलाद है, ज़मीन व आसमान और पहाड़ तक तंग हैं। अल्लाह तआला की अ़ज़्मत व शान के लायक़ नहीं कि उसके यहाँ औलाद हो, उसके लड़के लड़कियाँ हों। इसलिए कि तमाम मख़्लूक़ उसकी गुलामी में है। उसके जोड़ का या उस जैसा कोई और नहीं। ज़मीनो आसमान में जो हैं सब उसके ज़ेरे फ़र्मान और ह़ाज़िर बाश गुलाम हैं , वह सबका आक़ा सबका पालनहार सबकी ख़बर रखने वाला है। सबकी गिनती उसके पास है। सबको उसके इल्म ने घेर रखा है। सब उसकी क़ुदरत के एह़ात़े में हैं। हर मर्द औरत छोटे बड़े की उसे ख़बर है, शुरू से आख़िर तक सबका उसको इल्म है। उसका कोई मददगार नहीं , न शरीक व साझी है। हर एक बग़ैर दोस्त व मददगार उसके सामने क़ियामत के दिन पेश होने वाले हैं। सारी मख़्लूक़ के फ़ैसले उसके हाथ में हैं। वही वह़दुहू ला शरीका लहू सबकी चकूतियाँ करेगा जो चाहेगा करेगा। आ़दिल है ज़ालिम नहीं। किसी की ह़क़तल्फ़ी करना उसकी शान से दूर है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ
بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ
هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

तर्जुमा : "बेशक जो ईमान लाए हैं और जिन्होंने शाइस्ता (अच्छे) आमाल किये हैं उनके लिए अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा। (96) हमने इस कुरआन को तेरी ज़ुबान में बहुत ही आसान कर दिया है कि तू इसके ज़रिये से परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी दे और झगड़ालू लोगों को डरा दे। (97) हमने इनसे पहले बहुत सी जमाअतें तबाह कर दीं हैं क्या उनसे एक की भी आहट तू पाता है या उनकी आवाज़की भनक भी तेरे कान में पड़ती है।" (98)

अहले तौहीद को अल्लाह की मुहब्बत मिलेगी (आयत 96 से 98) : फ़र्मान है कि जिनके दिलों में तौहीद रची हुई है और जिनके आमाल में सुन्नत का नूर है ज़रूरी बात है कि हम अपने बन्दों के दिलों में उनकी मुहब्बत पैदा करें। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है कि "जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करने लगता है तो हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) को बुलाकर फ़र्माता है कि मैं फ़लाँ से मुहब्बत रखता हूँ तू भी उससे मुहब्बत रख। अल्लाह तआला का यह अमीन फ़रिश्ता भी उससे मुहबबत करने लगता है। फिर आसमानों में आवाज़ दी जाती है कि अल्लाह तआला फ़लाँ इंसान से मुहब्बत रखता है ऐ फ़रिश्तो! तुम भी उससे मुहब्बत रखो। चुनाँचे कुल आसमानों के फ़रिश्ते उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर उसकी मक़्बूलियत ज़मीन पर उतर आती है। और जब किसी बंदे से अल्लाह तआला नाराज़ होता है तो जिब्राईल (عليه السلام) से कहता है कि इससे मैं नाख़ुश हूँ तू भी इससे दुश्मनी रख। हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) भी उसके दुश्मन बन जाते हैं फिर आसमानों में आवाज़ कर देते हैं कि फ़लाँ शख़्स अल्लाह का दुश्मन है तुम सब उससे बेज़ार रहना। चुनाँचे आसमान वाले उससे बिगड़ बैठते हैं। फिर वह ग़ज़ब व नाराज़गी ज़मीन पर नाज़िल होती है। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति सलवातुल्लाहि अलैहिम : 3209; सहीह मुस्लिम : 2637; तिर्मिज़ी : 3161; अहमद : 2/267; इब्ने हिब्बान : 364)

मुस्नद अहमद में है कि जो बन्दा अपने मौला की मर्ज़ी का तालिब हो जाता है और उसकी ख़ुशी के कामों में मशग़ूल हो जाता है तो अल्लाह तआला जिब्राईल (عليه السلام) से कहता है कि मेरा फ़लाँ बन्दा मुझे ख़ुश करना चाहता है सुनो! मैं उससे ख़ुश हो गया, मैंने अपनी रहमतें उस पर नाज़िल करनी शुरू कर दीं। पस हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) आवाज़ देते हैं कि फ़लाँ पर अल्लाह की रहमत हो गई। फिर हामिलाने अर्श भी यही मुनादी करते हैं। फिर उनके पास वाले ग़र्ज़ सातों आसमानों में यह आवाज़ गूँज जाती है। फिर ज़मीन पर उसकी मक़्बूलियत उतरती है।" (अहमद : 5/279; व सनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/202; अल्मुअजमुल औसत : 1262) यह हदीस ग़रीब है ऐसी ही एक और हदीस भी मुस्नद अहमद में ग़राबत वाली है जिसमें यह भी है कि "मुहब्बत और शोहरत किसी की बुराई या भलाई के साथ यह आसमानों से अल्लाह तआला की

जानिब से उतरती है।" (अह़मद : 5/263; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; त़ब्रानी : 7551; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/671) इब्ने अबी ह़ातिम में इसी क़िस्म की ह़दीस के बाद ह़ुज़ूर (ﷺ) का इस आयते क़ुरआनी को पढ़ना भी मरवी है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति मरयम : 3161; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2637; बिदूनि ज़िक्रिल आयत)

पस मत़लब आयत का यह हुआ कि नेक अ़मल करने वाले ईमान वालों से अल्लाह तआ़ला ख़ुद मुह़ब्बत रखता है और ज़मीन पर भी उनकी मुह़ब्बत और मक़्बूलियत उतारी जाती है। मोमिन उनसे मुह़ब्बत करने लगते हैं। उनका ज़िक्रे ख़ैर होता है और उनकी मौत के बाद भी उनकी बेहतरीन शोहरत बाक़ी रहती है। हरम बिन ह़य्यान (रह़.) कहते हैं कि जो बन्दा सच्चे और ख़ुलूस दिल से अल्लाह की त़रफ़ झुकता है अल्लाह तआ़ला मोमिनों के दिलों को उसकी त़रफ़ झुका देता है। वह उससे मुह़ब्बत और प्यार करने लगते हैं। ह़ज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) का फ़र्मान है बन्दा जो भलाई बुराई करता है अल्लाह तआ़ला उसे उसी की चादर ओढ़ा देता है।

ह़ज़रत ह़सन बसरी (रह़.) फ़र्माते हैं कि एक शख़्स ने इरादा किया कि मैं अल्लाह तआ़ला की इ़बादत इस त़रह़ करूँगा कि तमाम लोगों में मेरी नेकी की शोहरत हो जाए। अब वह इ़बादत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ झुक पड़ा। जब देखो नमाज़ में मस्जिद में सबसे पहले आए और सबके बाद जाए। इसी त़रह़ सात माह उसे गुज़र गए लेकिन उसने जब भी सुना यही सुना कि लोग उसे रियाकार कहते हैं। उसने यह ह़ालत देखकर अब जी में अ़ह्द कर लिया कि मैं सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए ही अ़मल करूँगा। किसी अ़मल में तो न बढ़ा लेकिन ख़ुलूस के साथ आ़माल शुरू कर दिये। नतीजा यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में हर शख़्स की ज़ुबान से निकलने लगा अल्लाह तआ़ला फ़लाँ शख़्स पर रह़म करे अब तो वह वाक़ेई अल्लाह वाला बन गया है। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।

इब्ने जरीर में है कि यह आयत ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन ओ़फ़ (रज़ि.) की हिज्रत के बारे में नाज़िल हुई है। लेकिन यह क़ौल दुरुस्त नहीं इसलिए कि यह पूरी सूरह मक्की है। हिज्रत के बाद इस सूरह की किसी आयत का नाज़िल होना साबित नहीं। और जो असर इमाम स़ाह़ब ने वारिद किया है वह सनदन सही नहीं, वल्लाहु आ़लम!

हमने इस क़ुरआन को ऐ नबी तेरी ज़ुबान में यानी अ़रबी ज़ुबान में बिलकुल आसान नाज़िल किया है जो फ़स़ाह़त व बलाग़त वाली बेहतरीन ज़ुबान है ताकि तू उन्हें जो अल्लाह का डर रखते हों दिलों में ईमान और ज़ाहिर में नेक आ़माल रखते हैं अल्लाह तआ़ला की बशारतें सुना दे और जो ह़क़ से हटे हुए बात़िल पर मिटे हुए इस्तिक़ामत से दूर, ख़ुद बीनी में मख़्मूर, झगड़ालू, झूठे, अंधे, बहरे, फ़ासिक़, फ़ाजिर, ज़ालिम, गुनहगार, बदकिरदार हैं उन्हें अल्लाह तआ़ला की पकड़ और उसके अ़ज़ाबों से मुतनब्बा कर दे। जैसे क़ुरैश के कुफ़्फ़ार वग़ैरह बहुत सी उम्मतों को जिन्होंने अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र किया था नबियों का इंकार किया था, हमने हलाक कर दी हैं जिनमें से एक भी बाक़ी नहीं बचा। एक की आवाज़ भी दुनिया में न रही। रिक्ज़ा के लफ़्ज़ी मआ़नी हल्की और धीमी आवाज़ के हैं।

अल्ह़म्दु लिल्लाह! सूरह मरयम की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

सूरह ताहा

سورۃ طٰہٰ

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह ताहा - 20

आयातः 135 मक्की सूरह, पैराग्राफः 7

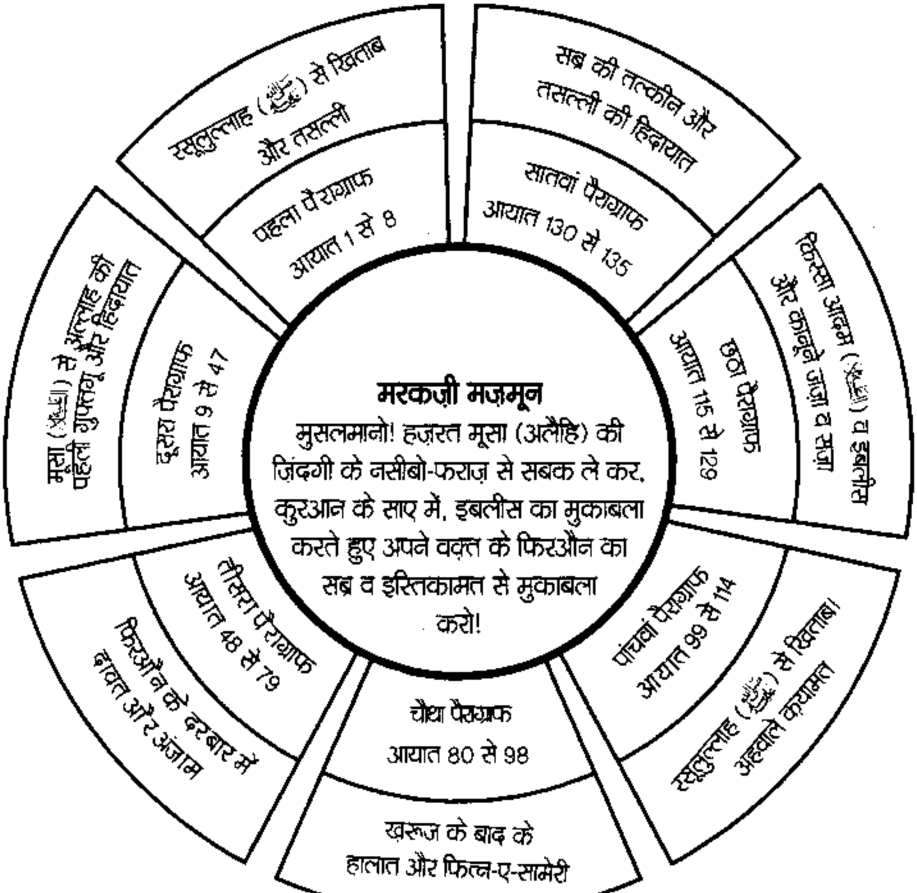

سورة طٰهٰ

तफ़्सीर सूरह ताहा

तआरुफ़े सूरत : इमामुल अइम्मा हज़रत मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन ख़ुज़ेमा (रह.) अपनी किताबुत्तौहीद में हदीस लाये हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि "अल्लाह तबारक व तआला ने हज़रत आदम (अलै.) की पैदाइश से एक हज़ार साल पहले सूरह ताहा और सूरह यासीन की तिलावत फ़र्माई जिसे सुनकर फ़रिश्ते कहने लगे वह उम्मत बहुत ही ख़ुशनसीब है जिस पर यह कलाम नाज़िल होगा वह ज़ुबानें यक़ीनन मुस्तहिक़े मुबारकबाद हैं जिनसे कलामे बारी तआला के यह अल्फ़ाज़ अदा होंगे।" (दारमी : 2/456; ह : 3417; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मौज़ूअ उमर बिन हफ़्स बिन ज़क्वान सख़्त मजरूह और उसका शागिर्द ज़ईफ़ है। इब्ने ख़ुज़ेमा फ़ित्तौहीद : 236; अल्मौज़ूआत लि इब्निल जौज़ी : 1/110) यह रिवायत ग़रीब है और इसमें नकारत भी है और इसके रावी इब्राहीम बिन मुहाजिर और उनके उस्ताद पर जरह भी है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

طٰهٰ ① مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ② اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ③ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ
الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ④ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ⑤ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ⑥ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ
وَاَخْفٰى ⑦ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ لَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ⑧

तर्जुमा : "ताहा। (1) हमने तुझ पर यह क़ुरआन इसलिए नहीं उतारा कि तू मुशक़्क़त में पड़ जाए। (2) बल्कि उसकी नसीहत के लिए जो अल्लाह तआला से डरता है। (3) इसका उतारना उसकी तरफ़ से है जिसने ज़मीन को और बुलंद आसमानों को पैदा किया है। (4) जो रहमान है जो अर्श पर क़ायम है। (5) जिसकी मिल्कियत आसमान व ज़मीन की और उन दोनों के बीच की और कुर्र-ए-ख़ाक के नीचे की हर एक चीज़ है। (6) अगर तू ऊँची बात कहे तो वह तो हर एक पोशीदगी को और पोशीदा से पोशीदा चीज़ को भी बख़ूबी जानता है। (7) वही अल्लाह तआला है जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं बेहतरीन नाम उसी के हैं।" (8)

अल्लाह तआला की सिफ़ाते आलिया (आयत 1 से 8) : सूरह बक़रह की तफ़्सीर के शुरू में सूरतों के पहले हुरूफ़े मुक़त्तआत की तफ़्सीर पूरी तरह बयान हो चुकी है जिसे दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं। गो यह भी मरवी है कि मुराद ताहा से 'ऐ शख़्स!' है। कहते हैं कि यह नब्ती कलिमा है। कोई कहता है मुअरब है। यह भी मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) नमाज़ में एक पैर ज़मीन पर टिकाते और दूसरा उठा लेते तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी यानी ताहा यानी ज़मीन पर दोनों पैर टिका दिया कर। हमने यह क़ुरआन तुझ पर इसलिए नहीं उतारा कि तुझे परेशानी व तक्लीफ़ में डाल दें, कहते हैं कि जब क़ुरआन पर अमल हुज़ूर और आपके सहाबा (रज़ि.) ने शुरू कर दिया तो मुश्रिकीन कहने लगे कि यह लोग तो अच्छी ख़ासी मुसीबत में पड़ गए। उस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी कि यह पाक क़ुरआन तुम्हें मशक़्क़त में डालने को नहीं उतरा बल्कि यह नेकों के लिए इब्रत है यह ख़ुदाई इल्म है जिसे यह मिला उसे बहुत बड़ी दौलत मिल गई। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "जिसके साथ अल्लाह तआला का इरादा भलाई का हो जाता है उसे दीन की समझ अता फ़र्माता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब (मय्युंरिदिल्लाहु बिही ख़ैरन युफ़क़्क़िहहू फ़िद्दीन) : 71; सहीह मुस्लिम : 1037)

हाफ़िज़ अबुल क़ासिम तब्रानी (रह.) एक मरफ़ूअ हदीस लाये हैं कि "क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला अपने बन्दों के फ़ैसले फ़र्माने के लिए अपनी कुर्सी पर बैठेगा तो उलमा से कहेग कि मैंने अपना इल्म और अपनी हिक्मत तुम्हें इसलिए अता की थी कि तुम्हारे गुनाहों को बख़्श दूँ और कुछ परवाह न करूँ कि तुमने क्या किया है? (तब्रानी : 1381; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; इसकी सनद में अला बिन मुस्लिमा अबू सालिम मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 3/105; रक़म : 5743) पहले लोग अल्लाह तआला की इबादत के वक़्त अपने आपको रस्सियों में लटका लिया करते थे। अल्लाह तआला ने यह मशक़्क़त अपने इस कलाम के ज़रिये आसान कर दी और फ़र्माया कि यह क़ुरआन तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता। जैसे फ़र्मान है जिस क़द्र आसानी से पढ़ा जाए पढ़ लिया करो। (73/मुज़म्मिल : 20) यह क़ुरआन शक़ावत और बदबख़्ती की चीज़ नहीं बल्कि रहमत व नूर व दलीले जन्नत है, यह क़ुरआन नेक लोगों के लिए जिनके दिलों में अल्लाह का डर है तज़्किरा वअ़ज़ व हिदायत व रहमत है। इसे सुनकर अल्लाह तआला के नेक अंजाम बंदे हलाल हराम से वाक़िफ़ हो जाते हैं और अपने दोनों जहानों को संवार लेते हैं, यह क़ुरआन तेरे रब का कलाम है उसकी तरफ़ से नाज़िलशुदा है, जो हर चीज़ का ख़ालिक़ मालिक, राज़िक़, क़ादिर है। जिसने ज़मीन नीची और कसीफ़ बनाई है और जिसने आसमान को ऊँचा और लतीफ़ बनाया है। तिर्मिज़ी वग़ैरह की सहीह हदीस में है कि "हर आसमान की मोटाई पाँच सौ साल की राह है और हर आसमान से दूसरे आसमान तक की दूरी भी पाँच सौ साल की है।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति हदीद : 3298; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हसन बसरी (रह.) मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ नहीं है।)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वाली हदीस इमाम इब्ने अबी हातिम ने इसी आयत की तफ़्सीर में वारिद की है। वह रहमान, अल्लाह अपने अर्श पर मुस्तवी है, इसकी पूरी तफ़्सीर सूरह आराफ़ में गुज़र चुकी है। यहाँ वारिद करने की ज़रूरत नहीं। सलामती भरा तरीक़ा यही है कि आयात व अहादीसे सिफ़ात को बतरीक़े सलफ़ सालेहीन इनके ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ के मुताबिक़ ही माना जाए। बग़ैर कैफ़ियत तल्बी के और बग़ैर तहरीफ़ व तश्बीह और तअ़तील व तम्सील के तमाम चीज़ें अल्लाह तआला की ही मिल्क हैं। उसी के क़ब्ज़े और इरादे

और चाहत तले हैं वही सबका ख़ालिक़, मालिक, इलाह और रब है। किसी को उसके साथ किसी तरह की शिर्कत नहीं। सातवीं ज़मीन के नीचे भी जो कुछ है सब उसी का है। कअब (रह.) कहते हैं इस ज़मीन के नीचे पानी है। पानी के नीचे फिर ज़मीन है। फिर उसके नीचे पानी, इसी तरह मुसलसल फिर उसके नीचे एक पत्थर है। उसके नीचे एक फ़रिश्ता है उसके नीचे एक मछली है जिसके दोनों बाज़ू अर्श तक हैं। उसके नीचे हवा ख़ोल और ज़ुल्मत (अंधेरा) है। यहीं तक इंसान का इल्म है, बाक़ी अल्लाह जाने।

हदीस में है "हर दो ज़मीनों के बीच पाँच सौ साल का फ़ासला है। सबसे ऊपर की ज़मीन मछली की पुश्त पर है जिसके दोनों बाज़ू आसमान से मिले हुए हैं। यह मछली एक पत्थर पर है वह पत्थर फ़रिश्ते के हाथ में है। दूसरी ज़मीन हवाओं का ख़ज़ाना है। तीसरी में जहन्नम के पत्थर हैं, चौथी में जहन्नम की गंधक है, पाँचवीं में जहन्नम के साँप हैं, छठी में जहन्नमी बिच्छू हैं, सातवीं में दोज़ख़ है, वहीं इब्लीस जकड़ा हुआ है, एक हाथ आगे है एक पीछे है। जब अल्लाह तआला चाहता है उसे छोड़ देता है।" (हाकिम : 4/594; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) यह हदीस बहुत ही ग़रीब है और इसका फ़र्मानि रसूल से होना भी ग़ौरतलब है।

मुस्नदे अबी यअला में है हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं हम ग़ज़्व-ए-तबूक से लौट रहे थे। गर्मी सख़्त कड़ाके की पड़ रही थी। दो दो चार चार आदमी मुंतशिर होकर चल रहे थे। मैं लश्कर के शुरू में था अचानक एक शख़्स आया और सलाम करके पूछने लगा तुममें से कौन मुहम्मद हैं? मैं उसके साथ लग गया। मेरे साथी आगे बढ़ गए। जब लश्कर के बीच का हिस्सा आया तो उसी में हुज़ूर (ﷺ) थे। मैंने उसे बतलाया कि यह हैं हुज़ूर (ﷺ) लाल रंग की ऊँटनी पर सवार हैं। सर पर बवजह धूप के कपड़ा डाले हुए हैं। वह आपकी सवारी के पास गया और नकेल थामकर अर्ज़ करने लगा कि आप ही मुहम्मद (ﷺ) हैं ? आपने जवाब दिया कि हाँ! उसने कहा, मैं चंद बातें आपसे पूछना चाहता हूँ, जिन्हें ज़मीन वालों से सिवाय एक दो आदमियों के और कोई नहीं जानता। आपने फ़र्माया तुम्हें जो कुछ पूछना हो, पूछ लो, उसने कहा, बतलाइए, अल्लाह के नबी सोते भी हैं ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "उनकी आँखें सो जाती हैं, लेकिन दिल जागता रहता है।" उसने कहा बजा इर्शाद हुआ अब यह फ़र्माइए कि क्या वजह है कि बच्चा कभी तो बाप की शबाहत पर होता है कभी माँ की? आपने फ़र्माया, "सुनो! मर्द का पानी सफ़ेद और ग़लीज़ है और औरत का पानी पतला है। जो पानी ग़ालिब आ गया उसी पर शबीह (शक्लो सूरत) जाती है।" उसने कहा, यह भी सही कहा। अच्छा यह भी फ़र्माइए कि बच्चे के कौनसे अअज़ा (हिस्से) मर्द के पानी से बनते हैं और कौनसे औरत के पानी से? फ़र्माया, "मर्द के पानी से हड्डियाँ रग और पुट्ठे और औरत के पानी से गोश्त ख़ून और बाल।" उसने कहा, यह भी सही जवाब मिला, अच्छा यह बतलाइए कि इस ज़मीन के नीचे क्या है? फ़र्माया, एक मख़्लूक़ है।" कहा उनके नीचे क्या है? फ़र्माया "ज़मीन"। कहा उसके नीचे क्या है? फ़र्माया "पानी।" कहा पानी के नीचे क्या है? फ़र्माया, "अंधेरा" कहा उसके नीचे? फ़र्माया, हवा। कहा हवा के नीचे? फ़र्माया, "गीली मिट्टी।" कहा उसके नीचे आपके आँसू निकल आए और इर्शाद फ़र्माया कि "मख़्लूक़ का इल्म तो यहीं तक पहुँचकर ख़त्म हो गया अब ख़ालिक़ को ही उसके आगे का इल्म है ऐ सवाल करने वाले इसकी बाबत तू जिससे सवाल कर रहा है वह तुझसे ज़्यादा जानने वाला नहीं।" उसने आपकी सदाक़त की गवाही दी। आपने फ़र्माया, "इसे पहचाना भी?" लोगों ने कहा अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) को ही पूरा इल्म है। आपने फ़र्माया "यह हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) थे।" (व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान है जिसे

यह्या बिन मुईन ने लैसा यस्वी शैअन कहा है (अल्मीज़ान : 3/375; रक़म : 6822) यह ह़दीस भी बहुत ही ग़रीब है और इसमें जो वाक़िया है बड़ा ही अ़जीब है।

इसके रावियों में क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रह़मान का तफ़र्रुद है जिन्हें यह्या बिन मुईन (रह़.) कहते हैं कि यह किसी चीज़ के बराबर नहीं। इमाम अबू ह़ातिम राज़ी भी इन्हें ज़ईफ़ कहते हैं। इमाम इब्ने अ़दी (रह़.) फ़र्माते हैं यह मअ़रूफ़ शख़्स नहीं और इस ह़दीस में ख़लत़ मलत़ कर दिया है। अल्लाह तआ़ला ही जानता है कि यह जान बूझकर ऐसा किया है या ऐसी ही किसी से ली है अल्लाह तआ़ला वह है जो ज़ाहिर व बातिन ऊँची नीची छोटी बड़ी सब कुछ जानता है।

जैसे फ़र्मान है कि ऐलान कर दे कि इस क़ुरआन को उसने नाज़िल किया है जो आसमान व ज़मीन की पोशीदगियों से वाक़िफ़ है, जो ग़फ़ूर व रह़ीम है। (25/फ़ुरक़ान : 6) इब्ने आदम ख़ुद जो छुपाये और जो उस पर ख़ुद पर भी छुपा हुआ हो अल्लाह तआ़ला के पास खुला हुआ है। इस अ़मल को उसके इल्म से भी पहले अल्लाह तआ़ला जानता है। (त़ब्री : 18/272; ह़ाकिम : 2/378; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) तमाम गुज़िश्ता मौजूदा और आइन्दा मख़्लूक़ का इल्म उसके पास ऐसा ही है जैसा एक शख़्स का इल्म। सबकी पैदाइश और मारकर ज़िन्दा करना भी उसके नज़दीक एक शख़्स की पैदाइश और उसकी मौत के बाद की दूसरी बार की ज़िन्दगी के मिस्ल है। तेरे दिल के ख़्यालात को और जो ख़्यालात नहीं आते उनको भी वह जानता है। तुझे ज़्यादा से ज़्यादा आज के पोशीदा आ़माल की ख़बर है और उसे तो तू कल क्या पोशीदा आ़माल करेगा उनका इल्म भी है। इरादे ही नहीं बल्कि वस्वसे भी उस पर ज़ाहिर हैं। किये हुए अ़मल और जो करेगा वह अ़मल सब उस पर ज़ाहिर हैं। वही मअ़बूदे बरह़क़ है। आ़ला सिफ़तें और बेहतरीन नाम उसी के हैं। सूरह आ़राफ़ की तफ़्सीर के आख़िर में अस्मा-ए-हुस्ना के बारे में ह़दीसें गुज़र चुकी हैं, फ़लिल्लाहिल ह़म्दु वल मिन्नतु।

***

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝٩ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ
اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝١٠ فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ۝١١ اِنِّيْٓ اَنَا
رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝١٢ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا
يُوْحٰى ۝١٣ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝١٤ اِنَّ السَّاعَةَ
اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ۝١٥ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ
بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝١٦

तर्जुमा : "तुझे मूसा (ؑ) का क़िस्सा भी मालूम है? (9) जबकि उसने आग देखकर अपने घरवालों से कहा कि तुम ज़रा सी देर ठहर जाओ। मुझे आग दिखाई दे रही है बहुत मुम्किन है कि मैं उसका कोई अंगारा तुम्हारे पास लाऊँ या आग के पास से रास्ते की ख़बर पाऊँ। (10) जब वहाँ पहुँचे तो आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा (ؑ)! (11) यक़ीनन मैं ही तेरा परवरदिगार हूँ तू अपनी जूतियाँ उतार दे क्योंकि तू पाक मैदान तुवा में है। (12) मैंने तुझे चुन लिया है अब जो वही की जाए उसे कान लगाकर सुन। (13) बेशक मैं ही अल्लाह हूँ लायक़े इबादत मेरे सिवा और कोई नहीं, तू मेरी ही इबादत करता रह और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर। (14) क़ियामत यक़ीनन आने वाली है जिसे मैं पोशीदा रखना चाहता हूँ ताकि हर शख़्स को वह बदला दिया जाए जो उसने कोशिश की हो। (15) अब उसके यक़ीन से तुझे कोई ऐसा शख़्स रोक न दे जो उस पर ईमान न रखता हो और अपनी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा हुआ हो वरना हलाक हो जाएगा।" (16)

हज़रत मूसा (ؑ) का वाक़िया (आयत 9 से 16) : यहाँ से हज़रत मूसा (ؑ) का क़िस्सा शुरू होता है। यह वाक़िया उस वक़्त का है जबकि आप उस मुद्दत को पूरा कर चुके थे जो आपके और आपके ख़ुसर (ससुर) साहिब के बीच तै हुई थी। और आप अपनी अहल (परिवार) को लेकर दस साल से ज़्यादा अर्से के बाद अपने वतन मिस्र की तरफ़ जा रहे थे। सर्दी की रात थी, रास्ता भूल गए थे, पहाड़ों की घाटियों के बीच थे, अंधेरा था, बादल छाये हुए थे। हर चंद चक़माक़ से आग निकालना चाहा लेकिन उससे बिलकुल आग न निकली। इधर उधर नज़रें दौड़ाईं तो दाएँ जानिब के पहाड़ पर कुछ आग दिखाई दी तो बीवी साहिबा से फ़र्माया, उस तरफ़ आग सी नज़र आ रही है मैं जाता हूँ कि वहाँ से कुछ अंगारे ले आऊँ ताकि तुम सेंक ताप कर लो और कुछ रोशनी भी हो जाए। और यह भी मुम्किन है कि वहाँ कोई आदमी मिल जाए जो रास्ता भी बतला दे। बहर सूरत रास्ता का पता या आग मिल ही जाएगी। (तब्री : 18/277)

हज़रत मूसा (ؑ) को नबुव्वत अता होती है : जब हज़रत मूसा (ؑ) आग के पास पहुँचे तो उस मुबारक मैदान के दाएँ जानिब के दरख़्तों की तरफ़ से आवाज़ आई कि ऐ मूसा (ؑ)! मैं तेरा रब हूँ तू जूतियाँ उतार दे। या तो इसलिए यह हुक्म हुआ कि आपकी जूतियाँ गधे के चमड़े की थीं। (हाकिम : 2/379; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हमीदुल अअरज सख़्त ज़ईफ़ है। इमाम ज़हबी ने इसे ज़ईफ़ क़रार दिया है।) या इसलिए कि तअज़ीम करानी मक़्सूद थी। (तब्री : 18/278) जैसे कि कअबे जाने के वक़्त लोग जूतियाँ उतारकर जाते हैं या इसलिए कि इस बाबरकत जगह पर पैर पड़ें। और भी वजहें बयान किये गए हैं। तुवा उस वादी का नाम था। (तब्री : 18/281) या यह मतलब कि अपने क़दम इस ज़मीन से मिला दो या यह मतलब कि यह ज़मीन कई कई बार पाक की गई है और इसमें बरकतें भर दी गई हैं और बार बार दोहराई गई हैं। लेकिन ज़्यादा सहीह पहला क़ौल ही है। जैसे और आयत में है (اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝) (79/नाज़िआत : 16) मैंने तुझे अपना बरगुज़ीदा कर लिया है। दुनिया में से तुझे चुन लिया है। अपनी रिसालत और अपने कलाम से तुझे मुमताज़ कर रहा हूँ। इस वक़्त के रूए ज़मीन के तमाम लोगों से तेरा मर्तबा बढ़ा रहा हूँ।

कहा गया है कि हज़रत मूसा (عليه السلام) से पूछा गया जानते भी हो कि मैंने तुझे और तमाम लोगों में से मुख़्तार और पसंदीदा करके तुझे शर्फ़े हमकलामी क्यूँ बख़्शा? आपने जवाब दिया ऐ अल्लाह! मुझे इसकी वजह मालूम नहीं। फ़र्माया गया इसलिए कि तेरी तरह और कोई मेरी तरफ़ झुका नहीं। अब तू मेरी वही को कान लगाकर ध्यान से सुन। मैं ही मअबूद हूँ, कोई और नहीं। यही पहला फ़रीज़ा है, तू सिर्फ़ मेरी ही इबादत किये चले जाना। किसी और की किसी क़िस्म की इबादत न करना। मेरी याद के लिए नमाज़ें क़ायम करना मेरी याद का यह बेहतरीन और अफ़ज़लतरीन तरीक़ा है। या यह मतलब कि जब मैं याद आऊँ नमाज़ पढ़ो। जैसे हदीस में है कि "तुममें से अगर किसी को नींद आ जाए या ग़फ़्लत हो जाए तो जब याद आ जाए नमाज़ पढ़ लो क्योंकि फ़र्माने इलाही है मेरी याद के वक़्त नमाज़ क़ायम करो।" (अहमद : 3/184; सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब क़ज़ाइस्सलातिल फ़ाइतति व इस्तिहबाबे तअजीले क़ज़ाइहा : 684; बितसर्रुफ़िन यसीर)

बुख़ारी व मुस्लिम में है "जो शख़्स सोते में या भूल में नमाज़ का वक़्त गुज़ार दे उसका कफ़्फ़ारा यही है कि याद आते ही नमाज़ पढ़ ले। उसके सिवा और कफ़्फ़ारा नहीं।" (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब मन नसिया सलातन फ़ल्युसल्लि इज़ा ज़करा... : 597; सहीह मुस्लिम : 684; अबूदाऊद : 442; तिर्मिज़ी : 178; इब्ने माजा : 696; अहमद : 3/243; इब्ने हिब्बान : 1555) क़ियामत यक़ीनन आने वाली है मुम्किन है मैं उसके वक़्त के सही इल्म को ज़ाहिर न करूँ। एक क़िरअत में (उख़्फ़ीहा) के बाद (मिन्नफ़्सि) के लफ़्ज़ भी हैं। क्योंकि अल्लाह तआला की ज़ात से कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं यानी इसका इल्म सिवाय अपने किसी को नहीं दूँगा। पस रूए ज़मीन पर कोई ऐसा नहीं हुआ जिसे क़ियामत के क़ायम होने का मुक़र्ररा वक़्त मालूम हो। यह वह चीज़ है कि अगर हो सके तो ख़ुद मैं अपने से भी इसे छुपा दूँ लेकिन रब से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं। चुनाँचे यह मलाइका से पोशीदा है। अम्बिया इससे बेइल्म हैं।

जैसे फ़र्मान है (قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ) (27/नम्ल : 65) ज़मीन आसमान वालों में से सिवाए रब वाहिद के कोई और ग़ैबदाँ नहीं। और आयत में है क़ियामत ज़मीन व आसमान पर भारी पड़ रही है। वह अचानक आ जाएगी। (7/आराफ़ : 187) यानी उसका इल्म किसी को नहीं। एक क़िरअत में (अख़्फ़ीहा) है रक़्क़ाअ फ़र्माते हैं मुझे हज़रत सईद बिन जुबेर ने इसी तरह पढ़ाया है इसके मअनी हैं (अज़्हरहा) उस दिन हर आमिल अपने अमल का बदला दिया जाएगा ख़्वाह ज़र्रा बराबर नेकी हो ख़्वाह बुराई हो। अपने करतूत का बदला उस दिन ज़रूर मिलना है। पस किसी को भी बेईमान लोग बहका न दें। क़ियामत के मुंकिर दुनिया के मफ़्तून मौला के नाफ़र्मान, ख़्वाहिश के गुलाम, किसी अल्लाह के बन्दे के पास इस पाक अक़ीदे में उसे ढुलमुल न कर पाएँ। अगर वह अपनी चाहत में कामयाब हो गए तो यह ग़ारत हुआ और नुक़्सान में पड़ा।

✲✲✲

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسٰى ﴿١٧﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِي
وَلِيَ فِيهَا مَاٰرِبُ أُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ أَلْقِهَا يٰمُوسٰى ﴿١٩﴾ فَأَلْقٰهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ
خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولٰى ﴿٢١﴾

तर्जुमा : ''ऐ मूसा (عليه السلام)! तेरे इस दाएँ हाथ में क्या है? (17) जवाब दिया कि यह मेरी लकड़ी है जिस पर मैं टेक लगाता हूँ और जिससे मैं अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और भी इसमें मुझे बहुत से फ़ायदे काम के हैं। (18) फ़र्माया, ऐ मूसा (عليه السلام)! इसे हाथ से नीचे डाल दे। (19) डालते ही वह तो साँप बनकर दौड़ने लगी। (20) फ़र्माया बेख़ोफ़ होकर पकड़ ले हम इसे उसी पहली सूरत में दोबारा ला देंगे।'' (21)

मूसा (अ.) के असा (लकड़ी) का ज़िक्र (आयत 17 से 21) : हज़रत मूसा (عليه السلام) के एक बहुत बड़े और साफ़ खुले मोजिज़े का ज़िक्र हो रहा है। जो बग़ैर अल्लाह तआला की क़ुदरत के नामुम्किन और जो ग़ैर नबी के हाथ पर भी नामुम्किन। तूर पहाड़ पर पूछा जा रहा है कि तेरे दाएँ हाथ में क्या है यह सवाल इसलिए कि हज़रत मूसा (عليه السلام) की घबराहट दूर हो जाए। यह भी कहा गया कि यह सवाल बतौरे तक़रीर के है यानी तेरे हाथ में लकड़ी ही है। यह जैसी कुछ है तुझे मालूम है अब यह जो हो जाएगी और वह देख लेना।

इस सवाल के जवाब में कलीमुल्लाह अर्ज़ करते हैं यह मेरी अपनी लकड़ी है जिस पर मैं टेक लगाता हूँ। यानी चलने में मुझे यह सहारा देती है। इससे मैं अपनी बकरियों का चारा दरख़्त से झाड़ लेता हूँ। ऐसी लकड़ियों में ज़रा बलदार लोहा लगा लिया करते हैं ताकि पत्ते फल आसानी से उतर आएँ और लकड़ी टूटे भी नहीं। (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/564) और भी बहुत से फ़वाइद इसमें हैं। उन फ़वाइद के बयान में कुछ लोगों ने यह भी कह दिया है कि यही लकड़ी रात के वक़्त रोशन चराग़ बन जाती थी। दिन को जब आप सो जाते तो यही लकड़ी आपकी बकरियों की रखवाली करती। जहाँ कहीं सायादार जगह न होती तो आप उसे गाड़ देते। यह ख़ेमे की तरह आप पर साया करती वग़ैरह वग़ैरह। लेकिन बज़ाहिर यह क़ौल बनी इस्राईल का अफ़साना मालूम होता है। वरना फिर आज इसे बसूरते साँप देखकर हज़रत मूसा (عليه السلام) इस क़द्र क्यूँ घबराते? वह तो उस लकड़ी के अजायबात देखते चले आए थे। फिर कुछ का क़ौल है कि दरअसल यह लकड़ी हज़रत आदम (عليه السلام) की थी। कोई कहता है यही लकड़ी क़ियामत के क़रीब दाब्बतुल अर्ज़ की सूरत में ज़ाहिर होगी। कहते हैं कि इसका नाम माशा था। अल्लाह तआला ही जाने इन क़ौल में कहाँ तक जान है? हज़रत मूसा (عليه السلام) को लकड़ी का लकड़ी होना जताकर उन्हें बख़ूबी बेदार और होशियार करके हुक्म मिला कि इसे ज़मीन पर डाल दो। ज़मीन पर पड़ते ही वह एक ज़बरदस्त अज्दहे की सूरत में फनफनाती हुई लगी इधर उधर चलने फिरने बल्कि दौड़ने भागने लगी। ऐसा ख़ौफ़नाक अज्दहा इससे पहले किसी ने देखा ही न था। उसकी तो यह हालत

थी कि एक दरख़्त सामने आ गया तो उसे हज़म कर गया। एक चट्टान पत्थर के रास्ते में आ गयी तो उसका लुक़्मा बना लिया। यह हाल देखते ही हज़रत मूसा (عليه السلام) उल्टे पैर भागे। आवाज़ दी कि मूसा (عليه السلام)! पकड़ ले। लेकिन हिम्मत न पड़ी। फिर फ़र्माया, मूसा (عليه السلام)! डर नहीं पकड़ ले। फिर भी झिझक बाक़ी रही। तीसरी मर्तबा फ़र्माया तू हमारे अम्न में है। अब हाथ बढ़ाकर पकड़ लिया। कहते हैं फ़र्माने इलाही के साथ ही आपने लकड़ी ज़मीन पर डाल दी फिर इधर उधर आपकी नज़र हो गयी। अब यह नज़र डाली बजाय लकड़ी के एक ख़ौफ़नाक अज़्दा दिखाई दिया। जो इस तरह चल फिर रहा है जैसे किसी की जुस्तजू हो। गाभिन ऊँटनी जैसे बड़े बड़े पत्थरोंको आसमान से बातें करते हुए ऊँचे ऊँचे दरख़्तों को एक लुक़्मे में ही पेट में पहुँचा रहा है। आँखें अंगारों की तरह चमक रही हैं। उस हेबतनाक ख़ूँख़ार अज़्दहे को देखकर हज़रत मूसा (عليه السلام) पीठ फेरकर ज़ोर से भागे।

फिर अल्लाह तआला की हमकलामी याद आ गई तो शर्माकर ठहर गए। वहीं आवाज़ आई कि मूसा लौटकर वहीं आ जाओ जहाँ थे। आप लौटे लेकिन निहायत ख़ौफ़ज़दा थे। तो हुक्म हुआ कि अपने दाहिने हाथ से इसे थाम ले कुछ भी ख़ौफ़ न कर। हम इसे इसकी उसी अगली सूरत में लौटा देंगे। उस वक़्त हज़रत मूसा (عليه السلام) सूफ़ का कम्बल ओढ़े हुए थे जिसे एक कांटे से अटका रखा था। आपने उसी कम्बल को अपने हाथ पर लपेटकर उस हैबतनाक अज्दहे को पकड़ना चाहा। फ़रिश्ते ने कहा, मूसा (عليه السلام)! अगर अल्लाह तआला इसे काटने का हुक्म दे दे तो क्या तेरा यह कम्बल बचा सकता है? आपने जवाब दिया हर्गिज़ नहीं! लेकिन यह हरकत मुझसे बसबब मेरे ज़ुअफ़ के सरज़द हो गयी। मैं ज़ईफ़ और कमज़ोर ही पैदा किया गया हूँ। अब दिलेरी के साथ कम्बल हटाकर हाथ बढ़ाकर उसके सर को थाम लिया। उसी वक़्त वह अज़्दहा फिर लकड़ी बन गया जैसे पहले था। उस वक़्त जबकि आप उस घाटी पर चढ़ रहे थे और आपके हाथ में यह लकड़ी थी जिस पर टेक लगाए हुए थे। उसी हाल में आपने पहले देखा था। उसी हालत में अब हाथ में बसूरत असा मौजूद था।

***

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنْ
آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾ اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾
وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾ وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ
أَهْلِي ﴿٢٩﴾ هَارُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾ اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي ﴿٣١﴾ وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾
وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾ إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : ''अपना हाथ अपनी बग़ल में डाल ले तो वह सफ़ेद चमकता हुआ होकर निकलेगा लेकिन बग़ैर किसी ऐब और रोग के यह है दूसरा मोजिज़ा। (22) यह इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियाँ दिखाना चाहते हैं। (23) तू फ़िरऔन की तरफ़ जा उसने बड़ी सरकशी मचा रखी है। (24) कहने लगे, ऐ मेरे रब! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे। (25) और मेरे काम को मुझ पर आसान कर दे। (26) और मेरी ज़ुबान की गिरह भी खोल दे। (27) ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझ सकें। (28) और मेरा वज़ीर मेरे कुंबे में से कर दे। (29) यानी मेरे भाई हारून को (30) तू उससे मेरी कमर कस दे। (31) और उसे मेरा शरीकेकार कर दे। (32) ताकि हम दोनों बकसरत तेरी तस्बीह बयान करें। (33) और बकसरत तेरी याद करें। (34) बेशक तू हमें ख़ूब देखने भालने वाला है।'' (35)

हज़रत मूसा (अलैहि०) के मोजिज़ात (आयत 22 से 35) : हज़रत मूसा (अलैहि०) को दूसरा मोजिज़ा दिया जाता है। हुक्म होता है कि अपना हाथ अपनी बग़ल में डालकर फिर उसे निकाल लो तो वह चाँद की तरह चमकता हुआ रोशन बनकर निकलेगा। यह नहीं कि बर्स की सफ़ेदी हो या कोई बीमारी और ऐब हो। (तब्री : 18/297) चुनाँचे हज़रत मूसा (अलैहि०) ने जब हाथ डालकर निकाला तो वह चराग़ की तरह रोशन निकला। जिससे आपका यह यक़ीन कि आप अल्लाह तआला से कलाम कर रहे हैं और बढ़ गया। (तब्री : 18/298) यह दोनों मोजिज़े यहीं इसीलिए मिले थे कि आप अल्लाह तआला की उन ज़बरदस्त निशानियों को देखकर यक़ीन कर लें। फिर हुक्म हुआ कि फ़िरऔन ने हमारी बग़ावत पर कमर कस ली है, उसके पास जाकर उसे समझाओ।

वहब (रह.) कहते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (अलैहि०) को क़रीब होने का हुक्म दिया यहाँ तक कि आप उस दरख़्त के तने से लगकर खड़े हो गए। दिल ठहर गया, ख़ौफ़ व ख़तर दूर हो गया, दोनों हाथ अपनी लकड़ी पर टिकाकर सर झुकाकर गर्दन नीचे करके अदब के साथ इर्शादे रब्बानी सुनने लगे। तो फ़र्माया गया कि मुल्के मिस्र के बादशाह फ़िरऔन की तरफ़ हमारा पैग़ाम लेकर जाओ। वहीं से तुम भागकर आए हो। उससे कहो कि वह हमारी इबादत करे, किसी को शरीक न बनाए, बनी इस्राईल के साथ सुलूको एहसान करे। उन्हें तक्लीफ़ व ईज़ा न दे, फ़िरऔन बड़ा बाग़ी हो गया है, दुनिया का मफ़्तून बनकर आख़िरत को फ़रामोश कर बैठा है और अपने पैदा करने वाले को भूल गया है। तू मेरी रिसालत लेकर उसके पास जा। मेरे कान और मेरी आँखें तेरे साथ हैं, मैं तुझे देखता भालता और तेरी बातें सुनता सुनाता रहूँगा। मेरी मदद तेरे पास होगी। मैंने अपनी तरफ़ से तुझे हुज्जतें अता कर दी हैं और तुझे क़वी और मज़बूत कर दिया है। तू अकेला ही मेरा पूरा लश्कर है। अपने एक कमज़ोर बन्दे की तरफ़ तुझे भेज रहा हूँ जो मेरी नेअमतें पाकर फूल गया है और मेरी पकड़ को भूल गया है। दुनिया में फंस गया और गुरूर तकब्बुर में धंस गया है। मेरी रुबूबियत से बेज़ार मेरी उलूहियत से बरसरे पैकार है। मुझसे आँखें फेर ली हैं। दीदे बदल लिये हैं। मेरी पकड़ से ग़ाफ़िल हो गया है, मेरे अज़ाबों से बेख़ौफ़ हो गया है। मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! अगर मैं इसे ढील देना न चाहता तो आसमान उस पर टूट पड़ते, ज़मीन उसे निगल जाती, दरिया उसे डुबो देते, लेकिन चूँकि वह मेरे मुक़ाबले से बेपरवाह। सच तो यह है कि बेपरवाही सिर्फ़ मेरी सिफ़त है। तू मेरी रिसालत अदा कर। उसे मेरी इबादत की हिदायत कर। उसे तौहीद व

इख़्लास की दावत दे। मेरी नेअ़मतें याद दिला। मेरे अ़ज़ाबों से धमका। मेरे ग़ज़ब से होशियार कर दे। जब मैं गुस्सा कर बैठता हूँ तो अम्न नहीं मिलता। उसे नर्मी से समझा ताकि न मानने का उ़ज़्र टूट जाए। मेरी बख़्शिश की मेरे रहमो करम की उसे ख़बर दे। कह दे कि अब भी अगर मेरी तरफ़ झुकेगा तो मैं तमाम बुरे अ़मलों को माफ़ कर दूँगा, मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब से बहुत ज़्यादा वसीअ़ है, ख़बरदार! उसका दुनियावी ठाठ देखकर रोब में न आ जाना। उसकी चोटी मेरे हाथ में है, उसकी जुबान चल नहीं सकती, उसके हाथ उठ नहीं सकते, उसकी आँख फड़क नहीं सकती, उसका सांस चल नहीं सकता, जब तक मेरी इजाज़त न हो, उसे समझा कि मेरी मान ले तो मैं भी मग़्फ़िरत से पेश आऊँगा। चार सौ साल उसे सरकशी करते मेरे बन्दों पर ज़ुल्म ढाते, मेरी इबादत से लोगों को रोकते गुज़र चुके हैं। ताहम न मैंने उस पर बारिश बंद की, न पैदावार रोकी, न बीमारी में डाला, न बूढ़ा किया, न मग़्लूब किया। अगर चाहता तो ज़ुल्म के साथ ही पकड़ लेता लेकिन मेरा हिल्म बहुत बढ़ा हुआ है, तू अपने भाई के साथ मिलकर उससे पूरी तरह जिहाद कर और मेरी मदद पर भरोसा रख। मैं अगर चाहूँ तो अपने लश्कर भेजकर उसका भेजा निकाल दूँ। लेकिन उस बोदे बंदे को दिखाना चाहता हूँ कि मेरी जमाअ़त का एक भी रूए ज़मीन की ताक़तों पर ग़ालिब आ सकता है। मदद मेरे इख़्तियार में है, दुनियावी जाहो जलाल की तू परवाह न करना बल्कि आँख भरकर भी न देखना। मैं अगर चाहूँ तो तुम्हें इतना दे दूँ कि फ़िरऔन की दौलत उसके पासंग में भी न आ सके। लेकिन मैं अपने बन्दों को इमूमन ग़रीब ही रखता हूँ ताकि उनकी आख़िरत सँवर जाए। यह इसलिए नहीं होता वह मेरे नज़दीक क़ाबिले इकराम नहीं बल्कि सिर्फ़ इसलिए होता है कि दोनों जहान की नेअ़मतें आने वाले जहान में जमा मिल जाएँ। मेरे नज़दीक बंद को कोई अ़मल इतनी वक़्अ़त वाला नहीं जितना ज़ुहद और दुनिया से दूरी। मैं अपने ख़ास बन्दों को सकीनत और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का लिबास पहना देता हूँ। उनके चेहरे सज्दों की चमक से रोशन हो जाते हैं। यही सच्चे औलिया अल्लाह होते हैं। इनके सामने हर एक को बाअदब रहना चाहिए। अपनी ज़ुबान और दिल को उनका ताबेअ़ रखना चाहिए। सुन ले मेरे दोस्तों से दुश्मनी रखने वाला गोया मुझे लड़ाई का ऐलान देता है। तो क्या मुझसे लड़ने का इरादा रखने वाला कभी सरसब्ज़ हो सकता है? मैंने क़हर की नज़र से उसे देखा और उसका तहस नहस हुआ। मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब नहीं आ सकते। मेरे मुख़ालिफ़ मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, मैं अपने दोस्तों की मदद ख़ुद करता हूँ, उन्हें दुश्मनों का शिकार नहीं होने देता, दुनिया आख़िरत में उन्हें सुर्ख़ुरू रखता हूँ और उनकी मदद करता हूँ।

हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अपना बचपन का ज़माना फ़िरऔन के घर में बल्कि उसकी गोदियों में गुज़ारा था। जवानी तक मुल्के मिस्र में उसी की बादशाहत में ठहरे रहे थे। फिर एक क़िब्ती बेइरादा आपके हाथ से मर गया था जिससे आप वहाँ से भाग निकले थे, तब से लेकर आज तक मिस्र की सूरत नहीं देखी थी। फ़िरऔन एक सख़्त दिल, बदख़ुल्क़, अख़ड़ मिज़ाज, आवारा इंसान था। गुरूर और तकब्बुर इतना बढ़ गया था कि कहता था कि मैं रब को जानता ही नहीं। अपनी रिआया (जनता) से कहता था कि तुम्हारा रब मैं ही हूँ, मुल्को माल में दौलत व मताअ़ में, लाव लश्कर और कर व फ़र (शानो शौकत) में कोई रूए ज़मीन पर उसके मुक़ाबले का न था। जब हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को उसे हिदायत करने का हुक्म हुआ तो आपने अल्लाह तआ़ला से दुआ की कि मेरा सीना खोल दे और मेरे काम में आसानी पैदा कर दे। अगर तू आप मेरा मददगार न बना तो यह सख़्त बार मेरे कँधे नहीं उठा सकते और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे। चूँकि आपके बचपन के ज़माने में आपके सामने खजूर और अंगारे रखे गए थे। आपने अंगारा लेकर मुँह में रख लिया था। इसलिए ज़ुबान में

लुकूनत आ गयी थी, तो दुआ की कि मेरी ज़ुबान की गिरह खुल जाए, हज़रत मूसा (عليه السلام) के उस अदब को देखिए कि बक़द्रे हाजत सवाल करते हैं, यह नहीं अर्ज़ किया कि मेरी ज़ुबान बिलकुल साफ़ हो जाए। बल्कि दुआ यह करते हैं कि गिरह खुल जाए ताकि लोग मेरी बात समझ लें। अम्बिया (عليهم السلام) अल्लाह तआला से सिर्फ़ हाजत रवाई के मुताबिक़ ही अर्ज़ करते हैं, आगे नहीं बढ़ते। चुनाँचे आपकी ज़ुबान में फिर भी कुछ कसर रह गई थी। जैसे कि फ़िरओन ने कहा था कि क्या मैं बेहतर हूँ या यह? जो फ़रोमाया (कम ज़र्फ़) है और साफ़ बोल भी नहीं सकता। हसन बसरी (रह.) कहते हैं एक गिरह खुलने की दुआ की थी जो पूरी हुई। अगर पूरी की दुआ होती तो वह भी पूरी होती। आपने सिर्फ़ उसी क़द्र दुआ की थी कि आपकी ज़ुबान ऐसी कर दी जाए कि लोग आपकी बात समझ लिया करें।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, डर था कि कहीं वह इल्ज़ामे क़त्ल रखकर क़त्ल न कर दें। उसकी दुआ की, जो क़बूल हुई। ज़ुबान में अटकाव था उसकी बाबत दुआ की कि इतनी साफ़ हो जाए कि लोग बात समझ लें। यह दुआ भी पूरी हुई, दुआ की कि हारून (عليه السلام) को भी नबी बना दिया जाए, यह भी पूरी हुई। हज़रत मुहम्मद बिन कअब (रज़ि.) के पास उनके एक रिश्तेदार आये और कहने लगे यह तो बड़ी कमी है कि तुम बोलने में ग़लत बोल जाते हो। आपने फ़र्माया, भतीजे! क्या मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती? कहा हाँ! समझ में तो आ जाती है। कहा बस यही काफ़ी है। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने भी अल्लाह तआला से यही और इतनी ही दुआ की थी। फिर और दुआ की कि मेरी ख़ारजी और ज़ाहिरी इम्दाद के लिए मेरा वज़ीर बना दे और हो भी वह मेरे कुंबे में से यानी मेरे भाई हारून (अ.) को नबुव्वत अता कर। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं उस वक़्त हज़रत हारून को हज़रत मूसा (عليه السلام) के साथ ही नबुव्वत अता की गई। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) उमरे के लिए जाते हुए किसी आराबी के यहाँ ठहरी थीं कि सुना एक शख़्स पूछता है कि दुनिया में किस भाई ने अपने भाई को सबसे ज़्यादा नफ़ा पहुँचाया है। इस सवाल पर सब ख़ामोश हो गए और कह दिया कि हमें नहीं मालूम। उसने कहा अल्लाह तआला की क़सम! मुझे इसका इल्म है, सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं मैंने अपने दिल में कहा कि देखो! यह शख़्स कितनी बेजा जसारत करता है। बग़ैर इंशाअल्लाह के क़सम खा रहा है। लोगों ने उससे पूछा कि बतलाओ उसने जवाब दिया हज़रत मूसा (عليه السلام) ने अपने भाई को अपनी दुआ से नबुव्वत दिलाई। मैं भी यह सुनकर दंग रह गई और दिल में कहने लगी कि बात तो सच कही। फ़िल वाक़ेअ उससे ज़्यादा कोई भाई अपने भाई को नफ़ा न पहुँचा सकता। अल्लाह तआला ने सच फ़र्माया कि मूसा अल्लाह तआला के पास बड़े आबरूदार थे उस दुआ की वजह बयान करते हैं कि मेरी कमर मज़बूत हो जाए। वह मेरी मुशाविरत में रहे। मेरे काम में उसे भी मेरा साथी बना दे ताकि हम तेरी तस्बीह अच्छी तरह बयान करें। हर वक़्त तेरी पाकीज़गी बयान करते रहें और बहुत ज़्यादा तुझे याद करें।

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं, बन्दा अल्लाह तआला का ज़्यादा ज़िक्र करने वाला उसी वक़्त होता है जबकि वह बैठते उठते और लेटते ज़िक्रुल्लाह में मशग़ूल रहे तू हमें देखता हुआ है। यह तेरा रहमो करम है कि तने हमें बरगुज़ीदा किया, हमें नबुव्वत अता की और हमें अपने दुश्मन फ़िरओन की तरफ़ अपना नबी बनाकर उसकी हिदायत के लिए मब्ऊस किया। तेरा शुक्र है और तेरे ही लिए तमाम तारीफ़ें सज़ावार हैं। तेरी इन नेअमतों पर हम तेरे शुक्रगुज़ार हैं।

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يٰمُوسٰى ۝٣٦ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرٰى ۝٣٧ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلٰى
أُمِّكَ مَا يُوحٰى ۝٣٨ أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ
يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِي ۝٣٩ إِذْ تَمْشِي
أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلٰى مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنٰكَ إِلٰى أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا
تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُونًا ۚ

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने फ़र्माया, मूसा (عليه السلام) तेरे तमाम सवालात पूरे कर दिये गए। (36) हमने तो तुझ पर एक बार और भी बड़ा एहसान किया है। (37) जबकि हमने तेरी माँ को वह इल्हाम किया जो किया जाता था। (38) कि तू इस बच्चे को संदूक़ में बंद करके दरिया में छोड़ दे तो दरिया इसे किनारे ला डालेगा और मेरा और ख़ुद उसका दुश्मन उसे ले लेगा। और मैंने अपनी तरफ़ की ख़ास मुहब्बत व मक़्बूलियत तुझ पर डाल दी। ताकि तेरी परवरिश मेरी आँखों के सामने की जाए। (39) जबकि तेरी बहन चल रही थी और कह रही थी कि अगर तुम कहो तो मैं उसे बता दूँ जो उसकी निगहबानी करे इस तदबीर से हमने तुझे फिर तेरी माँ के पास पहुँचाया कि उसकी आँखें ठण्डी रहें और वह ग़मगीन न हो। तूने एक शख़्स को मार डाला था उस पर भी हमने तुझे ग़म से बचा लिया ग़र्ज़ हमने तुझे अच्छी तरह आज़मा लिया।"

हज़रत मूसा (عليه السلام) के तफ़्सीली हालात (आयत 36 से 40) : हज़रत मूसा (عليه السلام) की तमाम दुआएँ क़बूल हुईं और फ़र्माया गया कि तुम्हारी दरख़्वास्त मंज़ूर है इस एहसान के साथ ही और एहसान का भी ज़िक्र किया गया कि हमने तुझ पर एक मर्तबा और भी बड़ा एहसान किया है फिर उस वाक़िया को मुख़्तसर तौर पर याद दिलाया कि हमने तेरे बचपन के वक़्त तेरी माँ की तरफ़ वही भेजी जिसका ज़िक्र अब तुमसे हो रहा है। तुम उस वक़्त दूध पीते बच्चे थे तुम्हारी वालिदा को फ़िरऔन और फ़िरऔनियों का खटका था क्योंकि उस साल वह बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल कर रहा था। इस डर के मारे वह हर वक़्त काँपती रहती थीं तो हमने वही की कि एक संदूक़ बना लो। दूध पिलाकर बच्चे को उसमें लिटाकर दरिया-ए-नील में उस संदूक़ को छोड़ दो। चुनाँचे वह यही करती रहीं। एक रस्सी उसमें बाँध रखी थी जिसका एक सिरा अपने मकान से बाँध लेती थीं। एक मर्तबा बाँध रही थीं जो रस्सी हाथ से छूट गयी और संदूक़ को पानी की लहरें बहा ले चलीं। अब तो कलेजा थामकर रह गईं। इस क़द्र ग़मज़दा हुईं कि सब्र नामुम्किन था। राज़ फ़ाशकर देतीं लेकिन हमने दिल मज़बूत कर दिया। संदूक़ बहता हुआ फ़िरऔन के महल के पास से गुज़रा। आले फ़िरऔन ने उसे उठा लिया कि

जिस ग़म से वह बचना चाहते थे जिस सदमे से वह महफ़ूज़ रहना चाहते थे, वह उनके सामने आ जाए। जिसकी ज़िन्दगी की शमा बुझाने के लिए वह बेगुनाह मासूमों को क़त्ले आम कर रहा था वह उन ही के तेल से उन ही के यहाँ रोशन हुआ और अल्लाह तआला के इरादे बेरोक पूरे हो जाएँ। उनका दुश्मन उन ही के हाथों पले, उन ही का खाये, उनके यहाँ तर्बियत पाये।

ख़ुद फ़िरऔन और उसकी बीवी मुहतरमा ने जब बच्चे को देखा, रग रग में मुहब्बत समा गई। लेकर परवरिश करने लगे, आँखों का तारा समझने लगे। शहज़ादों की तरह नाज़ो नेअमत से पलने लगे। शाही दरबार में रहने लगे, अल्लाह तआला ने अपनी मुहब्बत तुझ पर डाल दी, भले फ़िरऔन तेरा दुश्मन था लेकिन रब की बात कौन बदले? अल्लाह तआला के इरादे को कौन टाले? फ़िरऔन पर ही क्या मुंहसिर है जो देखता आपका वाला और शैदा बन जाता। यह इसलिए था कि तेरी परवरिश मेरी नज़रों के सामने हो। (तबरी : 18/303) शाही ख़ूराकें खा, इज़्ज़त व वक़अत के साथ रह, फ़िरऔन वालों ने संदूकचा उठा लिया, बच्चे को देखा, पालने का इरादा किया लेकिन आप किसी दाया का दूध पीते ही नहीं बल्कि मुँह में ही नहीं लेते। बहन जो संदूक़ को देखती भालती किनारे किनारे आ रही थी वह भी मौक़ा पर पहुँच गई, कहने लगीं कि अगर आप इसकी परवरिश की तमन्ना करते हैं और मअक़ूल उज्रत भी देते हैं तो मैं एक घराना बताऊँ जो इसे मुहब्बत से पाले और ख़ैरख़्वाहाना बर्ताव करे। सबने कहा, हम तैयार हैं। आप उन्हें लिये हुए अपनी वालिदा के पास पहुँचीं। जब बच्चा उनकी गोद में डाल दिया गया, आपने झूठ से मुँह लगा दूध पीना शुरू कर दिया जिससे फ़िरऔन के यहाँ बड़ी ख़ुशियाँ मनाई गईं और बहुत कुछ इन्आम व इकराम दिया गया। तंख़्वाह मुक़र्रर हो गयी। अपने ही बच्चे को दूध पिलाईं और तंख़्वाह और इन्आम भी और इज़्ज़त व इकराम भी पायीं। दुनिया भी मिले दीन भी बढ़े।

इसीलिए हदीस में आया है कि "जो शख़्स अपने काम को करे और नेक निय्यती से करे उसकी मिसाल उम्मे मूसा की मिसाल है कि अपने ही बच्चे को दूध पिलाए और उज्रत भी पा ले।" (इसकी तख़रीज सूरह क़सस आयत नम्बर 13 में आएगी।) पस यह भी हमारा करम है कि हमने तुझे तेरी माँ की गोद में वापिस कर दिया कि उसकी आँखें ठण्डी रहें और ग़म व रंज जाता रहे। फिर तुम्हारे हाथ से एक फ़िरऔनी क़िब्ती मार डाला गया तो भी हमने तुम्हें बचा लिया। फ़िरऔनियों ने तुम्हारे क़त्ल का इरादा कर लिया था। राज़ फ़ाश हो चुका था। तुम्हें यहाँ से नजात दी। तुम भाग खड़े हुए, मदयन के कूएँ पर जाकर तुमने दम लिया वहीं हमारे एक नेक बंदे ने तुम्हें बशारत सुनाई कि अब कोई डर नहीं, उन ज़ालिमों से तुमने नजात पा ली। तुझे हमने बतौर आज़माइश और भी बहुत से फ़ित्नों में डाला।

हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से उसकी बाबत सवाल किया तो आपने फ़र्माया अब तो दिन डूबने को है, वाक़ियात ज़्यादा हैं फिर सही। चुनाँचे मैंने दूसरी सुबह फिर सवाल किया तो आपने फ़र्माया, सुनो! फ़िरऔन के दरबार में एक दिन इस बात का ज़िक्र छिड़ा कि अल्लाह तआला का वादा हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (ﷺ) से यह था कि उनकी औलाद में अम्बिया और बादशाह होंगे चुनाँचे बनी इस्राईल उसे आज तक इंतिज़ार में हैं और उन्हें यक़ीन है कि मिस्र की

सल्तनत फिर उनमें जाएगी। पहले तो उनका ख़्याल था कि यह वादा हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) की बाबत था लेकिन उनकी वफ़ात तक जब वह वादा पूरा नहीं हुआ तो वह अब अक़ीदे रखते हैं कि अल्लाह तआ़ला उनमें अपने एक पैग़म्बर को भेजेगा जिनके हाथों उन्हें सल्तनत भी मिलेगी और उनकी क़ौमी व मज़हबी तरक़्क़ी होगी। यह बातें करके फ़िरऔनियों ने मज्लिसे मुशाविरत क़ायम की कि अब क्या किया जाए जिससे आइन्दा के इस ख़तरे से महफ़ूज़ रह सकें। आख़िर उस मज्लिस में यह क़रारदाद मंज़ूर हुई कि पुलिस का एक महकमा क़ायम किया जाए जो शहर का गश्त लगाता रहे और बनी इस्राईल में जो औलाद लड़का हो उसे उसी वक़्त दरबार में पेश किया जाए और ज़िब्ह कर दिया जाए। लेकिन जब एक मुद्दत गुज़र गयी तो उन्हें ख़्याल पैदा हुआ कि इस तरह तो बनी इस्राईल बिलकुल फ़ना हो जाएँगे और जो ज़लील ख़िदमतें उनसे ली जाती हैं जो बेगारें उनसे वसूल हो रही हैं सब मौक़ूफ़ हो जाएँगे। इसलिए अब तज्वीज़ हुआ कि एक साल उनके बच्चों को छोड़ दिया जाए और एक साल उनके लड़के क़त्ल कर दिये जाएँ इस तरह मौजूदा बनी इस्राईलियों की तादाद भी न बढ़ेगी और न इतनी कम हो जाएगी कि हमें अपनी ख़िदमत गुज़ारी के लिए भी न मिल सकें।

जितने बूढ़े दो साल में मरेंगे उतने बच्चे एक साल में पैदा हो जाएँगे। जिस साल क़त्ल मौक़ूफ़ था उस साल तो हज़रत हारून (अलैहि०) पैदा हुए और जिस साल क़त्ले आम बच्चों का जारी था उस साल हज़रत मूसा (अलैहि०) पैदा हुए। आपकी वालिदा की उस वक़्त की घबराहट और परेशानी का क्या पूछना? बेअंदाज़ा थी एक फ़ित्ना तो यह था, चुनाँचे यह ख़तरा उस वक़्त दूर हो गया जबकि अल्लाह तआ़ला की वह्नी उनके पास आयी कि डर ख़ौफ़ न कर हम इसे तेरी तरफ़ फिर लौटाएँगे और इसे अपना रसूल बनाएँगे। चुनाँचे बहुक्मे इलाही आपने अपने बच्चे को संदूक़ में बंद करके दरिया में बहा दिया। जब संदूक़ नज़रों से ओझल हो गया तो शैतान ने दिल में वस्वसे डालने शुरू किये कि अफ़सोस! इससे तो यही बेहतर था कि मेरे सामने ही इसे ज़िब्ह कर दिया जाता तो मैं उसे ख़ुद ही कफ़नाती दफ़नाती तो सही लेकिन अब तो मैंने आप इसे मछलियों का शिकार बनाया। यह संदूक़ यूँ ही बहता हुआ ख़ास फ़िरऔनी घाट से जा लगा। वहाँ उस वक़्त महल की लौण्डियाँ मौजूद थीं। उन्होंने उस संदूक़ को उठा लिया और इरादा किया कि खोलकर देखें लेकिन फिर डर गयीं कि ऐसा न हो कोई चोरी पड़े। यूँ ही मुक़फ़्फ़ल (तालाबंद) संदूक़ मलिका फ़िरऔन के पास पहुँचा दिया। वह बादशाह व बेगम के सामने खोला गया तो उसमें से चाँद की जैसी सूरत का एक छोटा सा मासूम बच्चा निकला जिसे देखते ही फ़िरऔन की बीवी साहिबा का दिल मुहब्बत के जोश से उछलने लगा।

उधर मूसा (अलैहि०) की माँ की हालत बहुत ख़राब हो गयी। सिवाए अपने उस प्यारे बच्चे के ख़्याल के दिल में और कोई तसव्वुर न था। इधर उन क़साइयों को जो हुकूमत की तरफ़ से बच्चों को क़त्ल के महकमे के मुलाज़िम थे मालूम हुआ तो वह अपनी छुरियाँ तेज़ किये हुए बढ़े और मलिका से तक़ाज़ा किया कि बच्चा उन्हें सौंप दें ताकि वह उसे ज़िब्ह कर डालें। ऐ इब्ने जुबैर! यह दूसरा फ़ित्ना था। आख़िर मलिका ने जवाब दिया कि ठहरो मैं ख़ुद बादशाह से मिलती हूँ और उस बच्चे को तलब करती हूँ। अगर वह मुझे दे दें तो ख़ैर वरना तुम्हें इख़्तियार है। चुनाँचे आप आईं और बादशाह से कहा कि यह बच्चा तो मेरी और आपकी आँखों की ठण्डक साबित होगा। उस ख़बीस ने कहा बस तुम ही इससे अपनी आँखें ठण्डी रखो, मेरी ठण्डक वह क्यूँ होने

लगा। मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) बहलफ़ (क़सम देकर) बयान करते हैं कि "अगर वह भी कह देता कि हाँ! बेशक वह मेरी आँखों की भी ठण्डक है तो अल्लाह तआला उसे भी ज़रूर राहे रास्त दिखा देता जैसाकि उसकी बीवी साहिबा हिदायत पा गईं। लेकिन उसने ख़ुद उससे महरूम रहना चाहा, अल्लाह तआला ने भी उसे महरूम ही कर दिया।"

अल्ग़र्ज़ फ़िरऔन को ज़्यों त्यों करके राज़ी करके उस बच्चे के पालने की इजाज़त लेकर आप आईं। अब महल की जितनी दाया थीं सबको जमा किया एक एक की गोद में बच्चा दिया गया लेकिन अल्लाह तआला ने सबका दूध आप (عليه السلام) पर हराम कर दिया। आपने किसी का दूध मुँह में न लिया। इससे मलिका घबरायीं कि यह तो बहुत ही बुरा हुआ। यह प्यारा बच्चा यूँ ही हलाक हो जाएगा। आख़िर सोचकर हुक्म दिया कि इन्हें बाहर ले जाओ इधर उधर तलाश करो और अगर किसी का दूध यह मासूम क़बूल कर ले तो उसे मिन्नत के साथ सौंप दो। बाहर बाज़ारों में मेला लग गया। हर शख़्स उस सआदत से मालामाल होना चाहता था लेकिन हज़रत मूसा (عليه السلام) ने किसी का दूध न पिया। आपकी वालिदा ने अपनी बड़ी साहबज़ादी आपकी बहन को बाहर भेज रखा था कि वह देखें क्या होता है वह उस मज्मअ़े में मौजूद थीं और तमाम वाक़ियात देख सुन रही थीं। जब यह लोग आजिज़ आ गए तो आपने फ़र्माया अगर तुम कहो तो मैं एक घराना ऐसा बतलाऊँ जो इसकी निगहबानी करे और हो भी इसका ख़ैरख़्वाह। यह कहना था कि लोगों को शक हुआ कि ज़रूर यह लड़की इस बच्चे को जानती है और इसके घर को भी पहचानती है, ऐ इब्ने जुबेर! यह था तीसरा फ़ित्ना। लेकिन अल्लाह तआला ने लड़की को समझ दे दी और उसने झट से कहा कि भला तुम इतना नहीं समझते, कौन बदनसीब ऐसा होगा जो इस बच्चे की ख़ैरख़्वाही या परवरिश में कमी करे जो बच्चा हमारी मलिका का प्यारा हो। कौन न चाहेगा कि यह हमारे यहाँ पले ताकि इन्आम व इकराम से उसका घर भर जाए, यह सुनकर सबकी समझ में आ गया, उसे छोड़ दिया और कहा बता तो कौनसी दाया इसके लिए तज्वीज़ करती है? उसने कहा, मैं अभी लायी। दौड़ी हुई गईं और वालिदा को यह ख़ुशख़बरी सुनाई। वालिदा साहिबा शौक़ व उम्मीद के साथ आईं, अपने प्यारे बच्चे को गोद में लिया, अपना दूध मुँह में दिया, बच्चे ने पेट भरकर पिया, उसी वक़्त शाही महल्लात में यह ख़ुशख़बरी पहुँचायी गई। मलिका का हुक्म हुआ कि फ़ौरन उस दाया को और बच्चे को मेरे पास लाओ, जब माँ बेटा पहुँचे तो अपने सामने दूध पिलवाया और यह देखकर कि बच्चा अच्छी तरह दूध पीता है बहुत ही ख़ुश हुईं और कहने लगीं कि दाई अम्मा! मुझे इस बच्चे से वह मुहब्बत है जो दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं। तुम यहीं महल में रहो और इस बच्चे की परवरिश करो।

लेकिन हज़रत मूसा (عليه السلام) की वालिदा साहिबा के सामने अल्लाह तआला का वादा था, उन्हें यक़ीने कामिल था, इसलिए आप ज़रा रुकीं और फ़र्माया कि यह तो नामुम्किन है कि मैं अपने घर को और अपने बच्चों को छोड़कर यहाँ रहूँ। अगर आप चाहती हैं तो यह बच्चा मेरे सुपुर्द कर दें मैं इसे अपने घर ले जाती हूँ इनकी परवरिश में कोई कोताही न करूँगी। मलिका साहिबा ने मजबूरन इस बात को भी मान लिया और आप उस दिन ख़ुशी ख़ुशी अपने बच्चे को लिये हुए घर आ गईं। उस बच्चे की वजह से उस महल्ले के बनी इस्राईल भी फ़िरऔन मज़ालिम से रिहाई पा गए जब ज़माना गुज़र गया तो बादशाह बेगम ने हुक्म भेजा कि किसी दिन

मेरे बच्चे को मेरे पास लाओ। एक दिन मुक़र्रर किया गया, तमाम अरकाने सल्तनत और दरबारियों को हुक्म हुआ कि आज मेरा बच्चा मेरे पास आएगा तुम सब क़दम क़दम पर उसका इस्तिक़्बाल करो और धूमधाम से नज़रें देते हुए इस मेरे महल सराये तक लाओ। चुनाँचे जब सवारी रवाना हुई वहाँ से महल सराये सुल्तानी तक बराबर तोह़फ़े तहाइफ़ नज़्रें और हदिये पेश होते रहे और बड़े ही इ़ज़्ज़त व इकराम के साथ आप यहाँ पहुँचे तो ख़ुद बेगम ने भी ख़ुशी ख़ुशी बहुत बड़ी रक़म पेश की और बड़ी ख़ुशी मनाई गई। फिर कहने लगी कि मैं तो इसे बादशाह के पास ले जाऊँगी वह भी इसे इन्आम व इकराम देंगे। ले गईं और बादशाह की गोद में लिटा दिया। ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) ने उसकी दाढ़ी पकड़कर ज़ोर से घसीटी। फ़िरऔन खटक गया और उसके दरबारियों ने कहना शुरू किया कि क्या अ़जब यही वह लड़का हो आप इसे फ़ौरन क़त्ल करा दीजिए।

ऐ इब्ने जुबैर! यह था चौथा फ़ित्ना। मलिका बेताब होकर बोल उठीं ऐ बादशाह! क्या इरादा कर रहे हो? आप इसे मुझे दे चुके हैं मैं इसे अपना बेटा बना चुकी हूँ। बादशाह ने कहा, यह सब ठीक है लेकिन देखो तो इसने तो आते ही दाढ़ी पकड़कर मुझे नीचा कर दिया गोया यही मेरा गिराने वाला और मुझे ताख़्तो ताराज करने वाला है। बेगम स़ाह़िबा ने फ़र्माया, बादशाह! बच्चों को इन चीज़ों की क्या तमीज़? सुनो! मैं एक फ़ैसलाकुन बात बतलाऊँ इसके सामने दो अंगारे आग के सुर्ख़ रख दो और मोती आबदार चमकते हुए रख दो। फिर देखो कि यह क्या उठाता है? अगर मोती उठा ले तो समझना कि इसमें अ़क़्ल है और अगर आग के अंगारे थाम ले तो समझ लेना कि अ़क़्ल नहीं। जब अ़क़्ल व तमीज़ नहीं और इसके दाढ़ी पकड़ लेने पर इतने लम्बे ख़्यालात करके इसकी जान के दुश्मन बन जाना कौनसी अ़क़्लमंदी की बात है? चुनाँचे यही किया गया। दोनों चीज़ें आपके पास रखी गईं। आपने दहकते हुए अँगारे उठा लिये उसी वक़्त वह छीन लिये कि ऐसा न हो कि हाथ जल जाए। अब फ़िरऔन का ग़ुस्सा ठण्डा हुआ और बदला हुआ रुख़ ठीक हो गया। ह़क़ तो यह है कि अल्लाह तआ़ला को जो काम करना मंज़ूर होता है उसके क़ुदरती अस्बाब मुहय्या कर देता है। ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) की दरबारे फ़िरऔन के ख़ास़ महल में फ़िरऔन की बीवी की गोद में ही परवरिश होती रही यहाँ तक कि आप अच्छी उ़म्र को पहुँच गये और बालिग़ हो गए।

अब तो फ़िरऔनियों के जो मज़ालिम इस्राईलियों पर हो रहे थे, उनमें भी कमी हो गई थी। सब अम्नो अमान से थे। एक दिन ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) कहीं जा रहे थे कि रास्ते में एक फ़िरऔनी और एक इस्राईली की लड़ाई हो रही थी। इस्राईली ने ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) से फ़रियाद की। आपको सख़्त ग़ुस्सा आया इसलिए कि उस वक़्त वह फ़िरऔनी उस बनी इस्राईली को दबोचे हुए था। आपने उसे एक मुक्का मारा अल्लाह तआ़ला की शान! मुक्का लगते ही वह मर गया। यह तो लोगों को उ़मूमन मालूम था कि ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) इस्राईलियों की त़रफ़दारी करते हैं। लेकिन लोग इसकी वजह अब तक यही समझते थे कि चूँकि आपने उन ही में दूध पिया है इसलिए उनके त़रफ़दार हैं। अस़ली राज़ का इ़ल्म तो स़िर्फ़ आपकी वालिदा को था। और मुम्किन है अल्लाह तआ़ला ने अपने कलीम को भी मालूम करा दिया हो। उसे मुर्दा देखते ही मूसा (عليه السلام) काँप उठे कि यह तो शैत़ानी ह़रकत है वह बहकाने वाला और खुला दुश्मन है।

फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगने लगे कि बारी तआ़ला! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तू

माफ़ कर। परवरदिगार ने भी आपकी उस ख़ता से दरगुज़र फ़र्मा लिया। वह तो ग़फ़ूरुर्रहीम है ही। चूँकि क़त्ल का मामला था आप फिर भी ख़ौफ़ज़दा ही रहे। ताक झाँक में रहे कि कहीं मामला खुल तो नहीं गया। उधर फ़िरऔन के पास शिकायत हुई कि एक क़िब्ती को किसी बनी इस्राईली ने मार डाला है। फ़िरऔन ने हुक्म जारी कर दिया कि वाक़िया की पूरी तहक़ीक़ करो। क़ातिल की तलाश करके पकड़ लाओ और गवाह भी पेश करो और जुर्म साबित हो जाने की सूरत में उसे भी क़त्ल कर दो। दरबारियों ने हर चंद तफ़्तीश की, लेकिन क़ातिल का कोई सुराग़ न मिला, इत्तिफ़ाक़ की बात है कि दूसरे ही दिन हज़रत मूसा (عليه السلام) फिर कहीं जा रहे थे कि देखा वही बनी इस्राईली शख़्स एक दूसरे फ़िरऔनी से झगड़ रहा है। मूसा (عليه السلام) को देखते ही वह दुहाई देने लगा। लेकिन उसने यह महसूस किया कि शायद मूसा (عليه السلام) अपने कल के जुर्म से नादिम हैं। हज़रत मूसा (عليه السلام) को भी उसका बार बार झगड़ना और फ़रियाद करना मालूम हुआ और कहा तुम तो बड़े लड़ाकू हो। यह फ़र्माकर उस फ़िरऔनी को पकड़ना चाहा लेकिन उस इस्राईली बुज़दिल ने समझा कि शायद आप चूँकि मुझ पर नाराज़ हैं मुझे ही पकड़ना चाहते हैं।

हालाँकि उसका यह सिर्फ़ बुज़दिलाना ख़्याल था, आप तो उसी फ़िरऔनी को पकड़ना चाहते थे और उसे बचाना चाहते थे। लेकिन ख़ौफ़ व हरास की हालत में बेसाख़्ता उसके मुँह से निकल गया कि मूसा! जैसे कि कल तूने एक आदमी को मार डाला था, क्या आज मुझे मार डालना चाहता है? यह सुनकर वह फ़िरऔनी उसे छोड़कर भागा दौड़ा गया और दरबारियों को उस वाक़िया की ख़बर दी। फ़िरऔन को भी क़िस्सा मालूम हो गया उसी वक़्त जल्लादों को हुक्म दिया कि मूसा (عليه السلام) को पकड़कर क़त्ल कर दो। यह लोग आम सड़क से आपकी जुस्तजू में चले, इधर एक बनी इस्राईली ने रास्ता काटकर नज़दीक के रास्ते से आकर मूसा (عليه السلام) को ख़बर कर दी। ऐ इब्ने जुबेर! यह है पाँचवाँ फ़ित्ना। हज़रत मूसा (عليه السلام) यह सुनते ही मुट्ठियाँ बंद करके मिस्र से भाग खड़े हुए, न कभी पैदल चले थे, न कभी किसी मुसीबत में फंसे थे, शहज़ादों की तरह लाड चाव में पले थे। न रास्ते की ख़बर थी न कभी किसी सफ़र का इत्तिफ़ाक़ पड़ा था। रब पर भरोसा करके यह दुआ करके कि ऐ अल्लाह! मुझे सीधी राह ले चलना, चल खड़े हुए।

यहाँ तक कि मदयन की हुदूद में पहुँचे। यहाँ देखा कि लोग अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं, वहीं दो लड़कियों को देखा कि अपने जानवरों को रोके खड़ी हैं, पूछा कि तुम इनके साथ अपने जानवरों को पानी क्यूँ नहीं पिला लेतीं? अलग खड़ी हुई इन्हें क्यूँ रोक रही हो? उन्होंने जवाब दिया कि उस भीड़ में हमारे बस की बात नहीं कि अपने जानवरों को पानी पिलाएँ। हम तो जब यह लोग पानी पिला चुकते हैं उनका बक़िया अपने जानवरों को पिला दिया करती हैं। आप फ़ौरन आगे बढ़े और उनके जानवरों को पानी पिला दिया। चूँकि बहुत जल्द पानी खींचा आप बहुत ताक़तवर आदमी थे सबसे पहले उनके जानवरों को सेर कर दिया। यह अपनी बकरियाँ लेकर अपने घर रवाना हुईं। और आप एक दरख़्त के साये तले बैठ गए और अल्लाह तआला से दुआ करने लगे कि परवरदिगार! मैं तेरी तमामतर मेहरबानियों का मोहताज हूँ यह दोनों लड़कियाँ जब अपने वालिद के पास पहुँचीं तो उन्होंने कहा, आज क्या बात है कि तुम वक़्त से पहले ही आ गईं और बकरियाँ भी ख़ूब आसूदा और शिकमसेर मालूम होती हैं।

तो उन बच्चियों ने सारा वाक़िया कह सुनाया। आपने हुक्म दिया कि तुममें से एक अभी चली जाए और उन्हें मेरे पास बुला लाए। वह आई और हज़रत मूसा (ﷺ) को अपने वालिद साहब के पास ले गईं। उन्होंने सरसरी मुलाक़ात के बाद वाक़िया पूछा तो आपने सारा वाक़िया कह सुनाया। उस पर वह फ़र्माने लगे अब कोई डर की बात नहीं। आप उन ज़ालिमों से छूट गए। हम लोग फ़िरऔन की रिआया नहीं, न हम पर उसका कोई दबाव है। उसी वक़्त एक लड़की ने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान! इन्होंने हमारा काम कर दिया है और यह हैं भी ताक़तवर और अमानतदार शख़्स, क्या अच्छा हो कि आप इन्हें अपने यहाँ मुक़र्रर कर लीजिए कि यह उज्रत पर हमारी बकरियाँ चरा लिया करें। बाप को ग़ैरत और ग़ज़ब आ गया और पूछा, बेटी! तुम्हें यह कैसे मालूम हो गया कि यह ताक़तवर और अमीन हैं? बच्ची ने जवाब दिया कि कुव्वत तो उस वक़्त मालूम हुई जब उन्होंने हमारी बकरियों के लिए पानी निकाला उतने बड़े डोल को अकेले ही खींचते थे और बड़ी फुर्ती और सुब्की से। अमानतदारी यूँ मालूम हुई कि मेरी आवाज़ सुनकर उन्होंने नज़र ऊँची की और जब यह मालूम हो गया कि मैं औरत हूँ फिर नीची गर्दन करके मेरी बातें सुनते रहे। वल्लाह! आपका पूरा पैग़ाम पहुँचाने तक उन्होंने नज़र ऊँची नहीं की फिर मुझसे फ़र्माया कि तुम मेरे पीछे रहो, मुझे दूर से रास्ता बता दिया करना। यह भी दलील है इनकी रब तर्सी और अमानतदारी की। बाप की ग़ैरत व हमिय्यत भी रह गई, बच्ची की तरफ़ से दिल साफ़ हो गया और हज़रत मूसा (ﷺ) की मुहब्बत दिल में समा गई।

अब हज़रत मूसा (ﷺ) से फ़र्माने लगे मेरा इरादा है कि अपनी इन दोनों लड़कियों में से एक लड़का का निकाह आपके साथ कर दूँ इस शर्त पर कि आप आठ साल मेरे यहाँ काम काज करते रहें। हाँ! अगर दस साल तक करें तो और भी अच्छा है। इंशाअल्लाह तआला! आप देख लेंगे कि मैं भला आदमी हूँ। चुनाँचे यह मामला तै हो गया और अल्लाह तआला के पैग़म्बर ने बजाए आठ साल के दस साल पूरे किये।

हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं पहले मुझे यह मालूम न था और एक ईसाई आलिम मुझसे पूछ बैठा था तो मैं उसे कोई जवाब न दे सका। फिर जब मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा और आपने जवाब दिया तो मैंने उससे ज़िक्र किया। उसने कहा, तुम्हारे उस्ताद बड़े आलिम हैं। मैंने कहा, हाँ! हैं ही। अब मूसा (ﷺ) उस मुद्दत को पूरा करके अपनी अहलिया साहिबा को लिये हुए यहाँ से चले। फिर वह वाक़ियात हुए जिनका ज़िक्र इन आयतों में है। आग देखी गई, अल्लाह तआला से कलाम किया, लकड़ी का अज़्दहा बनना, हाथ का नूरानी होना मुलाहिज़ा किया, नबुव्वत पाई, फ़िरऔन की तरफ़ भेजे गए तो क़त्ल के वाक़िये के बदले का अंदेशा ज़ाहिर किया। उससे इत्मिनान हासिल करके ज़ुबान की गिरह कुशाई की तलब की। उसको हासिल करके अपने भाई हारून (ﷺ) की हमदर्दी और शिर्कतेकार चाही। यह भी हासिल करके लकड़ी लिये हुए शाहे मिस्र की तरफ़ चले।

उधर हज़रत हारून (ﷺ) के पास वह्यी पहुँची कि अपने भाई की मुवाफ़िक़त करें और उनका साथ दें। दोनों भाई मिले और फ़िरऔन के दरबार में पहुँचे। ख़बर कराई बड़ी देर में इजाज़त मिली, अंदर जाकर फ़िरऔन पर ज़ाहिर किया कि हम अल्लाह तआला के रसूल बनकर तेरे पास आए हैं। अब जो सवाल व जवाब हुए हैं वह क़ुरआन में मौजूद हैं। फ़िरऔन ने कहा, अच्छा! तुम क्या चाहते हो? और वाक़िया क़त्ल याद

दिलाया। जिसका ज़िक्र हज़रत मूसा (ﷺ) ने बयान किया जो कुरआन में मौजूद है और कहा हमारा इरादा यह है कि तू ईमान लाए और हमारे साथ बनी इस्राईल को अपनी गुलामी से आज़ाद कर दे, उसने इंकार कर दिया और कहा कि अगर सच्चे हो तो कोई मोजिज़ा दिखलाओ। आपने उसी वक़्त अपनी लकड़ी ज़मीन पर डाल दी। वह ज़मीन पर पड़ते ही एक ज़बरदस्त ख़ौफ़नाक अज्दहा की सूरत में मुँह फाड़े कचलियाँ निकाले फ़िरऔन की तरफ़ लपका। मारे डर के फ़िरऔन तख़्त से कूद गया और भागता हुआ आजिज़ी से फ़रियाद करने लगा कि मूसा! रब के वास्ते इसे पकड़ ले। आपने हाथ लगाया वह उसी वक़्त असली सूरत में आ गई फिर आपने अपना हाथ अपने गिरेबान (बगल) में डालकर निकाला तो वह बग़ैर किसी मर्ज़ के दाग़ के चमकता हुआ निकला। जिसे देखकर वह हैरान हो गया। आपने फिर हाथ डालकर निकाला तो वह अपनी असली हालत में था। अब फ़िरऔन ने अपने दरबारियों की तरफ़ देखकर कहा कि तुमने देखा कि यह दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकालकर बाहर करें और तुम्हारे मुल्क पर क़ाबिज़ होकर तुम्हारे तरीक़े मिटा दें।

फिर हज़रत मूसा (ﷺ) से कहा कि हमें आपकी नबुव्वत मानने से भी इंकार है। और आपका कोई मुतालबा भी हम पूरा नहीं कर सकते। बल्कि हम अपने जादूगरों को तुम्हारे मुक़ाबले के लिए बुला रहे हैं जो तुम्हारे इस जादू पर ग़ालिब आ जाएँगे। चुनाँचे यह लोग अपनी कोशिशों में मशग़ूल हो गए। तमाम मुल्क से जादूगरों को बड़ी इज़्ज़त से बुलवाया। जब सब जमा हो गए तो उन्होंने पूछा कि इसका जादू किस क़िस्म का है? फ़िरऔन वालों ने कहा, लकड़ी का साँप बना देता है, उन्होंने कहा इसमें क्या है? हम लकड़ियों के रस्सियों के वह साँप बनाएँगे कि रूए ज़मीन पर उनका कोई मुक़ाबला न कर सके। लेकिन हमारे लिए इन्आम मुक़र्रर हो जाना चाहिए। फ़िरऔन ने उनसे क़ौलो क़रार किया कि इन्आम कैसा मैं तो तुम्हें अपना मुक़र्रब ख़ास और दरबारी बना लूँगा और तुम्हें निहाल कर दूँगा जो माँगोगे पाओगे। चुनाँचे उन्होंने ऐलान कर दिया कि ईद वाले दिन, दिन चढ़े फ़लाँ मैदान में मुक़ाबला होगा। मरवी है कि उनकी ईद आशूरा के दिन थी।

उस दिन तमाम लोग सुबह ही सुबह मैदान में पहुँच गए कि आज चलकर देखेंगे कि कौन ग़ालिब आता है। हम तो जादूगरों के कमाल के क़ाइल हैं वही ग़ालिब आएँगे और हम उन ही की मानेंगे। मज़ाक़ से इस बात को बदलकर कहते थे कि चलो उन ही दोनों जादूगरों के मुतीअ बन जाएँगे अगर वह ग़ालिब रहें। मैदान में आकर जादूगरों ने अल्लाह के नबियों से कहा कि लो! अब बताओ तुम पहले अपना जादू ज़ाहिर करते हो या हम ही शुरू करें? आपने फ़र्माया तुम ही शुरुआत करो ताकि तुम्हारे हौसले निकल जाएँ। अब उन्होंने अपनी लकड़ियाँ और रस्सियाँ मैदान में डालीं वह सब साँप और बलाएँ बनकर अल्लाह के नबियों की तरफ़ दौड़ीं जिससे डरकर आप पीछे हटने लगे। उसी वक़्त अल्लाह तआला की वही आई कि आप अपनी लकड़ी ज़मीन पर डाल दीजिए। आपने डाल दी और वह एक ख़ौफ़नाक भयानक अज़ीमुश्शान अज़्दहा बनकर उनकी तरफ़ दौड़ा, यह लकड़ियाँ रस्सियाँ सब गडमड हो गईं और वह उन सबको निगल गया। जादूगर समझ गए कि यह जादू नहीं। यह तो सचमुच अल्लाह तआला की तरफ़ का निशान है, जादू में यह बात कहाँ? चुनाँचे सबने अपने ईमान का ऐलान कर दिया कि हम मूसा (ﷺ) के रब पर ईमान लाए और इन दोनों भाईयों की नबुव्वत हमें क़बूल है। हम अपने गुज़िश्ता गुनाहों से तौबा करते हैं।

फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की कमर टूट गयी। रुस्वा हुए, मुँह काले पड़ गए, ज़िल्लत के साथ ख़ामोश हो गए ख़ून के घूँट पीकर चुप हो गए। इधर यह हो रहा था उधर फ़िरऔन की बीवी जिन्होंने मूसा (ﷺ) को अपने सगे बच्चे की तरह पाला था बेक़रार बैठी थीं और अल्लाह तआला से दुआएँ माँग रही थीं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने नबी को ग़ालिब करे। फ़िरऔनियों ने भी इस हाल को देखा था लेकिन उन्होंने ख़्याल किया कि अपने शौहर की तरफ़दारी में इनका यह हाल है। यहाँ से नाकाम वापिस जाने पर फ़िरऔन ने बेईमानी पर कमर बाँध ली। अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत मूसा (ﷺ) के हाथों बहुत से निशानात ज़ाहिर हुए। जब कभी कोई पकड़ आ जाती यह घबराकर बल्कि गिड़गिड़ाकर वादा करता कि अच्छा इस मुसीबत के हट जाने पर मैं बनी इस्राईल को तेरे साथ कर दूँगा लेकिन जब अज़ाब हट जाता फिर मुंकिर बनकर सरकशी पर आ जाता और कहता कि तेरा रब इसके सिवा कुछ और भी कर सकता है? चुनाँचे उन पर तूफ़ान आया, टिड्डियाँ आईं, जूएँ आईं, मेंढक आए, ख़ून आया और भी बहुत सी साफ़ साफ़ निशानियाँ देखीं। जहाँ आफ़त आई दौड़ा वादा किया जहाँ वह टल गई मुकर गया और अकड़ गया। अब अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल को लेकर यहाँ से निकल जाओ, आप रातों रात उन्हें लेकर रवाना हो गये।

सुबह फ़िरऔनियों ने देखा कि रात को सारे बनी इस्राईल चले गए हैं। फ़िरऔन से कहा, उसने सारे मुल्क में अहकाम भेजकर हर तरफ़ से फ़ौजें जमा कीं और बहुत बड़ी जमाअत के साथ उनका पीछा किया। रास्ते में दरिया पड़ता था, उसकी तरफ़ अल्लाह तआला की वही पहुँची कि तुझ पर जब मेरे बन्दे मूसा (ﷺ) की लकड़ी पड़े तो तू उन्हें रास्ता दे देना, तुझमें बारह रास्ते हो जाएँ कि बनी इस्राईल के बारह क़बीले अलग अलग अपनी राह लग जाएँ। फिर जब यह पार हो जाएँ और फ़िरऔनी आ जाएँ तो तू मिल जाना और उनमें से एक को भी डुबोये बग़ैर न छोड़ना। मूसा (ﷺ) जब दरिया पर पहुँचे देखा कि वह मोजें मार रहा है। पानी चढ़ा हुआ है, शोर उठ रहा है घबरा गये और लकड़ी मारना भूल गए। दरिया बेक़रार यूँ था कि कहीं ऐसा न हो कि उसके किसी हिस्से पर हज़रत मूसा (ﷺ) लकड़ी मार दें और उसे ख़बर न हो तो अल्लाह तआला के अज़ाब में अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी की वजह से फंस जाए। इतने में फ़िरऔन का लश्कर बनी इस्राईल के कल्ले पर जा पहुँचा। यह घबराये और कहने लगे लो! मूसा हम तो पकड़ लिये गए। अब आप वह कीजिए जो अल्लाह तआला का आपको हुक्म है। यक़ीनन न तो अल्लाह तआला झूठा है न आप।

आपने फ़र्माया, मुझसे तो यह कहा गया है कि जब तू दरिया पर पहुँचेगा वह तुझे बारह रास्ते दे देगा तू गुज़र जाना। उसी वक़्त याद आया कि लकड़ी मारने का हुक्म हुआ है। चुनाँचे लकड़ी मारी। इधर फ़िरऔनी लश्कर का पहला हिस्सा बनी इस्राईल के आख़िरी हिस्से के पास आ चुका था कि दरिया सूख गया और उसमें रास्ते नुमायाँ हो गए और आप अपनी क़ौम को लिये हुए उसमें बेख़तर उतर गए और आराम के साथ जाने लगे। जब यह निकल चुके, फ़िरऔनी फ़ौज उनके पीछे दरिया में उतरी। जब यह सारा लश्कर उसमें उतर गया तो फ़र्माने रब तआला के मुताबिक़ दरिया रवाँ हो गया और सबको एक साथ डुबा दिया। बनी इस्राईल इस वाक़िया को अपनी आँखों से देख रहे थे ताहम उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! हमें क्या ख़बर कि फ़िरऔन भी मरा या नहीं। आपने दुआ की और दरिया ने फ़िरऔन के बेजान लाश को किनारे पर फेंक दिया

जिसे देखकर उन्हें पूरा यक़ीन हो गया कि उनका दुश्मन अपने लाव लश्कर के साथ तबाह हो गया। अब यहाँ से आगे चले तो देखा कि एक क़ौम अपने बुतों की मुजावर बनकर बैठी है तो कहने लगे ऐ अल्लाह तआला के रसूल! हमारे लिए भी कोई मअ़बूद ऐसा ही मुक़र्रर कर दीजिए।

हज़रत मूसा (अ.) ने नाराज़ होकर कहा कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो, आख़िर तक। तुमने इतनी बड़ी इब्रतनाक निशानियाँ देखीं ऐसे अहम वाक़ियात सुने लेकिन अब तक न इब्रत है, न ग़ैरत! यहाँ से आगे बढ़कर एक मंज़िल पर आपने क़ियाम किया और यहाँ अपना ख़लीफ़ा अपने भाई हज़रत हारून (अ.) को बनाकर क़ौम से फ़र्माया कि मेरी वापसी तक इनकी फ़र्मांबरदारी करते रहना, मैं अपने रब के पास जा रहा हूँ। तीस दिन का वादा है, चुनाँचे क़ौम से अलग होकर वादे की जगह पहुँचकर तीस दिन रात के रोज़े पूरे करके अल्लाह तआला से बातें करने का ध्यान पैदा हुआ। लेकिन यह समझकर कि रोज़ों की वजह से मुँह से भभका निकल रहा होगा थोड़ी सी घास लेकर आपने चबा ली। अल्लाह तआला ने बावजूद जानने के पूछा कि ऐसा क्यूँ किया? आपने जवाब दिया सिर्फ़ इसलिए कि तुझसे बातें करते वक़्त मेरा मुँह ख़ुश्बूदार रहे। अल्लाह तआला ने फ़र्माया, क्या तुझे मालूम नहीं कि रोज़ेदार के मुँह की बू मुझे मुश्के अम्बर की ख़ुश्बू से ज़्यादा अच्छी लगती है। अब तू दस रोज़े और रख फिर मुझसे कलाम करना। आपने रोज़े रखना शुरू किये। क़ौम पर तीस दिन जब गुज़र गए और हस्बे वादा हज़रत मूसा (अ.) न लौटे तो वह ग़मगीन रहने लगे।

हज़रत हारून (अ.) ने उनमें ख़ुत्बा किया और फ़र्माया कि जब तुम मिस्र से चले थे तो क़िब्तियों की रक़में तुममें से कुछ पर उधार थीं। इसी तरह उनकी अमानतें भी तुम्हारे पास रह गई हैं। यह हम उन्हें वापिस तो करने के नहीं लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता कि वह हमारी मिल्कियत में रहें। इसलिए तुम एक गहरा गढ़ा खोदकर जो सामान बर्तन भाँड ज़ेवर सोना चाँदी वग़ैरह उनका तुम्हारे पास है सब उसमें डालो फिर आग लगा दो। चुनाँचे यही किया गया। उनके साथ सामेरी नामी एक शख़्स था। यह गाय बछड़े पूजने वालों में से था, बनी इस्राईल में से न था लेकिन बवजह पड़ौसी होने के और फ़िरऔन की क़ौम में से न होने के यह भी उनके साथ वहाँ से निकल आया था। उसने किसी निशान से कुछ मुट्ठी में उठा लिया। हज़रत हारून (अ.) ने फ़र्माया तू भी इसे डाल दे। उसने जवाब दिया कि यह तो इसके असर से है जो तुम्हें दरिया से पारकर ले गया, ख़ैर मैं इसे डाल देता हूँ लेकिन इस शर्त पर कि आप (अ.) अल्लाह से दुआ करें कि इससे वह बन जाए जो मैं चाहता हूँ। आप (अ.) ने दुआ की और उसने अपनी मुट्ठी में जो था उसे डाल दिया और कहा कि मैं चाहता हूँ इसका एक बछड़ा बन जाए। क़ुदरते इलाही से उस गढ़े में जो था वह एक बछड़े की सूरत में हो गया, जो अंदर से खोखला था। उसमें रूह न थी लेकिन हवा उसके पीछे के सूराख़ से जाकर मुँह से निकलती थी, उससे एक आवाज़ पैदा होती थी।

बनी इस्राईल ने पूछा, सामरी यह क्या है? उस बेईमान ने कहा, यही तुम्हारा और सबका रब है लेकिन मूसा (अ.) रास्ता भूल गए और दूसरी जगह रब की तलाश में चले गए। इस बात ने बनी इस्राईल के कई फ़िर्क़े कर दिए, एक फ़िर्क़े ने तो कहा हज़रत मूसा (अ.) के आने तक हम इसकी बाबत कोई बात तै नहीं कर सकते। मुम्किन है कि यही रब हो तो हम इसकी बेदअबी क्यूँ करें? और अगर यह रब नहीं है तो मूसा (अ.)

के आते ही हक़ीक़त खुल जाएगी। दूसरी जमाअत ने कहा, सिर्फ़ वाहियात है, यह शैतानी हरकत है, हम इस लग्वियात पर मुत्लक़न ईमान नहीं रखते। न यह हमारा रब, न हमारा इस पर ईमान। एक पाजी (बदमाश) फ़िर्क़े ने दिल से उसे मान लिया और सामेरी की बात पर ईमान लाए मगर बज़ाहिर उसकी बात को झूठला दिया। हारून (अ.) ने उसी वक़्त सबको जमा करके फ़र्माया कि लोगों! यह अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारी आज़माइश है तुम इस झगड़े में कहाँ फंस गए तुम्हारा रब तो रहमान है, तुम मेरी इत्तिबाअ करो और मेरा कहना मानो। उन्होंने कहा, आख़िर इसकी क्या वजह कि तीस दिन का वादा करके हज़रत मूसा (ﷺ) गए हैं और आज चालीस दिन होने को आए लेकिन अब तक लौटे नहीं, कुछ बेवक़ूफ़ों ने यहाँ तक कह डाला कि उनसे उनके रब ने वादाख़िलाफ़ी कर ली अब यह उसकी तलाश में होंगे। इधर दस रोज़े और पूरे होने के बाद हज़रत मूसा (ﷺ) को अल्लाह तआला से हमकलामी का शर्फ़ हासिल हुआ। आपको बतलाया गया कि आपके बाद आपकी क़ौम का इस वक़्त क्या हाल है। आप उसी वक़्त रंजो अफ़सोस और ग़म व ग़ुस्से के साथ वापिस हुए और यहाँ आकर क़ौम से बहुत कुछ कहा सुना। अपने भाई के सर के बाल पकड़कर घसीटने लगे। ग़ुस्से की ज़्यादती की वजह से तख़्तियाँ भी हाथ से फेंक दीं।

फिर असल हक़ीक़त मालूम हो जाने पर आपने अपने भाई से मअज़िरत की उनके लिए तौबा की और सामेरी की तरफ़ मुतवज्जा होकर फ़र्माने लगे कि तूने ऐसा क्यूँ किया? उसने जवाब दिया कि अल्लाह के भेजे हुए के पैर तले से मैंने एक मुट्ठी उठा ली यह लोग उसे न पहचान सके और मैं ने जान लिया था। मैंने वही मुट्ठी इस आग में डाल दी थी। मेरी राय में यही बात आई। आपने फ़र्माया, जा इसकी सज़ा दुनिया में तो यह है कि तू यही कहता रहे कि "हाथ लगाना नहीं"। फिर एक वादे का वक़्त है जिसका ख़िलाफ़ नामुम्किन है और तेरे देखते हुए हम तेरे इस मअबूद को जलाकर उसकी ख़ाक भी दरिया में बहा देंगे। चुनाँचे आपने यही किया। उस वक़्त बनी इस्राईल को यक़ीन आ गया कि वाक़ेई वह रब न था। अब वह बड़े शर्मिन्दा हुए और सिवाय उन मुसलमानों के जो हज़रत हारून (ﷺ) के हमअक़ीदा रहे थे बाक़ी के लोगों ने उज़्र मअज़िरत की और कहा, ए नबी! अल्लाह से दुआ कीजिए वह हमारे लिए तौबा का दरवाज़ा खोल दे जो वह कहेगा हम बजा लाएँगे ताकि हमारी यह ज़बरदस्त ख़ता माफ़ हो जाए।

आपने बनी इस्राईल के उस गिरोह से सत्तर आदमियों को छांटकर अलग किया और तौबा के लिए ले चले। वहाँ ज़मीन फट गई और आपके सब साथी उसमें उतार दिये गए। हज़रत मूसा (ﷺ) को फ़िक्र हुई कि मैं बनी इस्राईल को क्या मुँह दिखाऊँगा ? आपने गिरयावज़ारी शुरू की और दुआ की कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहता तो इससे पहले ही मुझे और इन सबको हलाक कर देता, हमारे बेवक़ूफ़ों के गुनाह के बदले तू हमें हलाक न कर। आप तो उनके ज़ाहिर को देख रहे थे और अल्लाह की नज़रें उनके बातिन पर थीं उनमें से ऐसे भी थे जो बज़ाहिर मुसलमान बने हुए थे लेकिन दरअसल दिली अक़ीदा उनका उस बछड़े के रब होने पर था। उन ही मुनाफ़िक़ीन की वजह से सबको ज़मीन में धंसा दिया गया था। अल्लाह के नबी की उस आहवज़ारी पर रहमते इलाही जोश में आई और जवाब मिला कि यूँ तो मेरी रहमत सब पर छाये हुए है लेकिन मैं इसे उनके नाम हिबा करूँगा जो मुत्तक़ी और परहेज़गार हों, ज़कात के अदा करने वाले हों, मेरी बातों पर ईमान लाएँ और मेरे उस रसूल व नबी की इत्तिबाअ करें जिसके औसाफ़ वह अपनी किताबों में लिखे पाते हैं यानी तौरात व इंजील में।

हज़रत कलीमुल्लाह (عليه السلام) ने अर्ज़ किया कि बारी तआला! मैंने अपनी क़ौम के लिए तौबा तलब की तूने जवाब दिया कि तू अपनी रहमत को उनके साथ कर देगा जो आगे आने वाले हैं। फिर अल्लाह! मुझे भी तू अपने उसी रहमत वाले नबी की उम्मत में पैदा करता। रब्बुल आलमीन ने फ़र्माया, सुनो! उनकी तौबा उस वक़्त क़बूल होगी कि यह लोग आपस में एक दूसरे को क़त्ल करना शुरू कर दें। न बाप बेटे को देखे, न बेटा बाप को छोड़े। आपस में गुत्थ जाएँ और एक दूसरे को क़त्ल करना शुरू कर दें। चुनाँचे बनी इस्राईल ने यही किया और जो मुनाफ़िक़ लोग थे उन्होंने भी सच्चे दिल से तौबा की। अल्लाह तआला ने उनकी तौबा क़बूल कर ली, जो बच गए थे वह भी बख़्शे गए जो क़त्ल हुए वह भी बख़्श दिये गए। हज़रत मूसा (عليه السلام) अब यहाँ से बैतुल मक़्दिस की तरफ़ चले तौरात की तख़्तियाँ अपने साथ लीं और उन्हें अहकामे इलाही सुनाए जो उन पर बहुत भारी पड़े और उन्होंने साफ़ इंकार कर दिया। चुनाँचे एक पहाड़ उनके सरों पर मुअल्लक़ खड़ा कर दिया गया। वह मिस्ले सायबान के सरों पर था और हर दम डर था कि अब गिरा। उन्होंने अब इक़रार किया और तौरात ले ली। पहाड़ हट गया उस पाक ज़मीन पर पहुँचे जहाँ कलीमुल्लाह उन्हें ले जाना चाहते थे देखा कि वहाँ एक बड़ी ताक़तवर ज़बरदस्त क़ौम का क़ब्ज़ा है।

तो हज़रत मूसा (عليه السلام) के सामने निहायत नामर्दी से कहा कि यहाँ तो बड़ी ज़ोरावर क़ौम है, हममें इनके मुक़ाबले की ताक़त नहीं। यह निकल जाएँ तो हम इस शहर में दाख़िल हो सकते हैं। यह तो यूँ ही नामर्दी और बुज़दिली ज़ाहिर करते रहे, उधर अल्लाह तआला ने उन सरकशों में से दो शख़्सों को हिदायत दे दी। वह शहर से निकलकर हज़रत मूसा (عليه السلام) की क़ौम में आ मिले और उन्हें समझाने लगे कि तुम इनके जिस्मों और तादाद से डरो नहीं। यह लोग बहादुर नहीं, इनके दिल गुर्दे कमज़ोर हैं, तुम आगे बढ़ो, इनके शहर के दरवाज़े में गए और उनके हाथ पैर ढीले हुए यक़ीनन तुम इन पर ग़ालिब आ जाओगे और यह भी कहा गया है यह दोनों शख़्स जिन्होंने बनी इस्राईल को समझाया और उन्हें दिलेर बनाया ख़ुद बनी इस्राईल में से ही थे, वल्लाहु आलम! लेकिन उनके समझाने बुझाने अल्लाह के हुक्म हो जाने और हज़रत मूसा (عليه السلام) के वादे ने भी उन पर कोई असर न किया बल्कि उन्होंने साफ़ कोरा जवाब दे दिया कि जब तक यह लोग शहर में हैं हम तो यहाँ से सिरकने के भी नहीं, मूसा (अ.) तो आप अपने रब को अपने साथ लेकर चला जाए और उनसे लड़ भिड़ ले हम यहाँ बैठे हुए हैं। अब तो हज़रत मूसा (عليه السلام) से सब्र न हो सका। आपके चेहरे पर उन बुज़दिलों और नाक़द्रों के हक़ में बद्दुआ निकल गई और आपने उनका नाम फ़ासिक़ रख दिया। अल्लाह तआला की तरफ़ से भी उनका यही नाम मुक़र्रर हो गया और उन्हें उसी मैदान में क़ुदरती तौर पर क़ैद कर दिया गया।

चालीस साल उन्हें यहीं गुज़र गए, कहीं क़रार न था, उसी बयाबान में परेशानी के साथ भटकते फिरते थे। उसी मैदाने क़ैद में उन पर बादल का साया कर दिया गया और मन्ना सल्वा उतार दिया गया। कपड़े न फटते थे न मेले होते थे। एक चार गोशा पत्थर रखा हुआ था जिस पर हज़रत मूसा (عليه السلام) ने लकड़ी मारी तो उसमें से बारह चश्मे जारी हो गए। हर तरफ़ से तीन तीन, यह लोग चलते थे, चलते चलते आगे बढ़ जाते, थककर मुक़ाम कर देते। सुबह उठते तो देखते कि वह पत्थर वहीं है जहाँ कल था, हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इस हदीस को मरफ़ूअ बयान किया है, हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने जब यह रिवायत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुनी

तो फ़र्माया कि इसमें जो है कि उस फ़िरओनी ने हज़रत मूसा (अलैहि.) के अगले दिन के क़त्ल की ख़बर रसानी की थी, यह बात समझ में नहीं आती। क्योंकि क़िब्ती के क़त्ल के वक़्त सिवाय उस बनी इस्राईली के जो क़िब्ती से लड़ रहा था, वहाँ कोई और न था।

इस पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बहुत बिगड़े और हज़रत मुआविया (रज़ि.) का हाथ थामकर हज़रत सअ़द बिन मालिक (रज़ि.) के पास ले गए और उनसे कहा, आपको याद है कि एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने हमसे उस शख़्स का हाल बयान फ़र्माया था जिसने हज़रत मूसा (अलैहि.) के क़त्ल के राज़ को खोला था? बताओ वह बनी इस्राईली शख़्स था या फ़िरओनी? हज़रत सअ़द (रज़ि.) ने फ़र्माया, बनी इस्राईली से उस फ़िरओनी ने सुना, फिर उसी ने जाकर हुकूमत से कहा और ख़ुद उसका गवाह बना। (सुननुल कुब्रा : 11326; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2618; व सनदुहू हसन वहुवा मिनल इस्राइलियात) यही रिवायत और किताबों में है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के अपने कलाम से बहुत थोड़ा सा हिस्सा मरफ़ूअ बयान किया है। बहुत मुम्किन है कि आपने बनी इस्राईल में से किसी से यह रिवायत ली हो। क्योंकि उनसे रिवायतें लेना मुबाह है। या तो आपने हज़रत कअ़ब अहबार (रज़ि.) से ही यह रिवायत सुनी होगी और मुम्किन है किसी और से सुनी हो, वल्लाहु आलम! मैंने अपने उस्ताद व शैख़ हाफ़िज़ अबुल हज्जाज मिज़्ज़ी (रह.) से भी यही सुना है।

***

فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿٤١﴾

اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿٤٢﴾ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : ''फिर तू कई साल तक मदयन के लोगों में ठहरा रहा फिर तक़्दीरे इलाही के मुताबिक़ ऐ मूसा (अलैहि.)! तू आया। (40) और मैंने तुझे ख़ास अपनी ज़ात के लिए पसंद कर लिया। (41) अब तू अपने भाई के साथ मेरी निशानियाँ लेकर जा, ख़बरदार! मेरे ज़िक्र में सुस्ती न करना। (42) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ उसने बड़ी सरकशी की है। (43) उसे नर्मी से समझाओ कि समझ ले या डर जाए।'' (44)

हज़रत मूसा (अलैहि.) मदयन में (आयत 40 से 44) : हज़रत मूसा (अलैहि.) से जनाब बारी अ़ज़्ज़ व जल्ल फ़र्मा रहा है कि तुम फ़िरऔन से भागकर मदयन पहुँचे, यहाँ ससुराल मिल गया और शर्त के मुताबिक़ उनकी बकरियाँ बरसों तक चराते रहे फिर अल्लाह तआला के अंदाज़े और उसके मुक़र्ररा वक़्त पर तुम उसके पास पहुँचे। उस रब की कोई चाहत नहीं छूटती, कोई फ़र्मान नहीं टूटता। उसके वादे के मुताबिक़ उसके मुक़र्ररा वक़्त

पर तुम्हारा उसके पास पहुँचना लाज़मी अम्र था। यह भी मतलब है कि तुम अपनी क़द्रो मंज़िलत को पहुँचे, यानी रिसालत व नबुव्वत मिली। मैंने तुम्हें अपना बरगुज़ीदा पैग़म्बर बना लिया। सहीह बुख़ारी में है "हज़रत आदम और हज़रत मूसा (ﷺ) की मुलाक़ात हुई तो हज़रत मूसा (ﷺ) ने कहा कि आपने लोगों को परेशानी में डाल दिया, उन्हें जन्नत से निकाल दिया। हज़रत आदम (ﷺ) ने फ़र्माया आपको अल्लाह तआला ने अपनी रिसालत से मुम्ताज़ किया और अपने लिए पसंद किया और तौरात अता की। क्या उसमें आपने यह नहीं पढ़ा कि मेरी पैदाइश से पहले यह सब मुक़द्दर हो चुका था? कहा, हाँ! अल्ग़र्ज़ हज़रत आदम (ﷺ) हज़रत मूसा (ﷺ) पर दलील में ग़ालिब आ गए।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह ताहा (वस्तनअतुका लि नफ़्सी) : 4736; सहीह मुस्लिम : 2652) मेरी दी हुई दलीलें और मोजिज़े लेकर तू और तेरा भाई दोनों फ़िरओन के पास जाओ, मेरी याद में ग़फ़्लत न करना, थककर बैठ न जाना। चुनाँचे फ़िरओन के सामने दोनों ज़िक्रुल्लाह में लगे रहते ताकि अल्लाह की मदद उनका साथ दे उन्हें क़वी और मज़बूत बना दे और फ़िरओन की शौकत टाल दे।

चुनाँचे हदीस में भी है कि "मेरा पूरा और सच्चा बन्दा वह है जो पूरी उम्र याद करता रहे।" (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात : 3580; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में उफ़ेर बिन मअदान ज़ईफ़ और अबू दौस मज्हूलुल हाल रावी है (अल्जरह वत्तअदील : 7/37) फ़िरओन के पास तुम मेरा पैग़ाम लेकर पहुँचो उसने बहुत सर उठा रखा है अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियों पर दिलेर हो गया है, बहुत फूल गया है और अपने ख़ालिक़ मालिक को भूल गया है उससे बातचीत नर्मी से करना। देखो! फ़िरओन किस क़द्र बुरा है, हज़रत मूसा (ﷺ) किस क़द्र भले हैं लेकिन हुक्म यह हो रहा है कि नर्मी से समझाना। हज़रत यज़ीद रक़्क़ाशी (रह.) इस आयत को पढ़कर फ़र्माते हैं (या मय्यंतहब्बबु इला मय्युआदीहि फ़कैफ़ा मय्यंतवल्लाहू व युनादीहि) यानी ऐ वो अल्लाह तआला! जो दुश्मनों से भी मुहब्बत और नर्मी करता है। तेरा कैसा कुछ बर्ताव होगा उसके साथ जो तुझसे मुहब्बत करता हो और तुझे पुकारा करता हो। हज़रत वहब (रह.) फ़र्माते हैं कि नर्म बातचीत करने से मुराद यह है कि उससे कहना मेरे ग़ज़ब व ग़ुस्से से मेरी मग़्फ़िरत व रहमत बहुत बढ़ी हुई है।

तब्लीग़ नर्म लहजा से करो : इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं नर्म बात कहने से मुराद अल्लाह तआला की वहदानियत की तरफ़ दअवत देना है कि वह ला इलाहा इल्लल्लाहु का क़ाइल हो जाए। हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं उससे कहना कि तेरा रब है तुझे मरकर अल्लाह तआला के वादे पर पहुँचना है जहाँ जन्नत व दोज़ख़ दोनों हैं। हज़रत सुफ़्यान सौरी (रह.) फ़र्माते हैं इसे मेरे दरवाज़े पर ला खड़ा करो। अल्ग़र्ज़ तुम उससे नर्मी और आराम से बातचीत करना ताकि उसके दिल में तुम्हारी बातें बैठ जाएँ। जैसे फ़र्माने बारी तआला है (اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ) (16/नहल : 125) यानी अपने रब की राह की दावत उन्हें हिक्मत और अच्छे वअज़ से दे और उन्हें बेहतरीन तरीक़े से समझा बुझा दे ताकि वह समझ ले और अपनी ज़लालत हलाकत से हट जाए या अपने रब तआला से डरने लगे और उसकी इताअत व इबादत की तरफ़ मुतवज्जा हो जाए। जैसे फ़र्मान है (لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا) (25/फ़ुरक़ान : 62) यह नसीहत उसके लिए है जो इब्रत हासिल कर ले या शुक्रगुज़ार बन जाए। पस इब्रत हासिल करने से

मुराद बुराइयों से और ख़ौफ़ की चीज़ से हट जाना और डर से मुराद इताअत की तरफ़ माइल हो जाना।

हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं उसकी हलाकत की दुआ न करना, जब तक कि उसके तमाम उज़्र ख़त्म न हो जाएँ। ज़ेद बिन अम्र बिन नुफ़ैल के या उमय्या बिन अबी सुल्त के शेअरों में है कि ऐ अल्लाह! तू वो है जिसने अपने फ़ज़्लो करम से मूसा (عليه السلام) को यह कहकर बाग़ी फ़िरऔन की तरफ़ भेजा कि उससे पूछो तो कि क्या इस आसमान को बेसतून के तूने थाम रखा है? और तूने ही इसे बनाया है? और क्या तूने ही इसके बीच रोशन सूरज को चढ़ाया है? जो अंधेरे को उजाले से बदल देता है। इधर सुबह के वक़्त वह निकला उधर दुनिया से ज़ुल्मत दूर हुई। भला बतला तो मिट्टी में से दाने निकालने वाला कौन है? फिर उसमें बालियाँ पैदा करने वाला कौन है? क्या इन तमाम निशानियों से भी तू अल्लाह तआला को नहीं पहचान सकता?

***

قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۭ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ۭ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾

तर्जुमा : ''दोनों ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें तो डर है कि कहीं फ़िरऔन हम पर कोई ज़्यादती न करे, या अपनी सरकशी में बढ़ न जाए। (45) जवाब मिला कि तुम मुत्लक़न न डरो, मैं अब तुम्हारे साथ हूँ, सुनता देखता रहूँगा। (46) तुम उसके पास जाकर कहो कि हम तेरे परवरदिगार के पैग़म्बर हैं, तू हमारे साथ बनी इस्राईल को भेज दे उनकी सज़ाएँ मौक़ूफ़ कर हम तो तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशान लेकर आए हैं दरअसल सलामती उसी के लिए है जो हिदायत का पाबन्द हो जाए। (47) हमारी तरफ़ वही की गई है कि जो झुठलाए और रूगर्दानी करे उसी के लिए अज़ाब हैं।''(48)

अल्लाह के सिवा किसी से न डरो (आयत 45 से 48) : अल्लाह तआला के उन दोनों पैग़म्बरों ने अल्लाह तआला की पनाह तलब करते हुए अपनी कमज़ोरी की शिकायत रब के सामने पेश की कि हमें डर है कि फ़िरऔन कहीं हम पर कोई ज़ुल्म न करे और बदसुलूकी से पेश न आए, हमारी आवाज़ को दबाने के लिए जल्दी से हमें किसी मुसीबत में मुब्तला न कर दे और हमारे साथ नाइंसाफ़ी से पेश न आये। अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी तशफ़्फ़ी कर दी गई। इर्शाद हुआ कि उसका कुछ डर न रखो, मैं ख़ुद तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारी

और उसकी बातचीत सुनता रहूँगा और तुम्हारा हाल देखता रहूँगा। कोई बात मुझ पर छुपी हुई नहीं रह सकती। उसकी चोटी मेरे हाथ में है वह बग़ैर मेरी इजाज़त के सांस भी तो नहीं ले सकता। मेरे क़ब्ज़े से कभी बाहर नहीं निकल सकता। मेरी हिफ़ाज़त व नुसरत ताईद व मदद तुम्हारे साथ है।

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं हज़रत मूसा (عليه السلام) ने जनाब बारी तआला में दुआ की कि मुझे वह दुआ तअलीम की जाए जो मैं फ़िरऔन के पास जाते हुए पढ़ लिया करूँ तो अल्लाह तआला ने यह दुआ सिखायी (हय्या शर्रुन हय्या) जिसके मअनी अरबी में (अल्हय्यु कब्ला कुल्लि शैइव्वंल हय्यु बअ़दा कुल्लि शैइन) यानी मैं ही हूँ सबसे पहले ज़िन्दा और सबसे बाद भी ज़िन्दा। फिर उन्हें बतलाया गया कि यह फ़िरऔन को क्या कहें? इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, यह गए और दरवाज़े पर जाकर इजाज़त तलब की, बड़ी देर के बाद इजाज़त मिली। मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) फ़र्माते हैं कि दोनों पैग़म्बर दो साल तक रोज़ाना सुबह शाम फ़िरऔन के यहाँ जाते रहे। दरबानों से कहते रहे कि हम दोनों पैग़म्बरों के आने की ख़बर बादशाह से करो लेकिन फ़िरऔन के डर के मारे किसी ने ख़बर न की। दो साल के बाद एक दिन उसके एक बेतकल्लुफ़ दोस्त ने जो बादशाह से हँसी दिल्लगी भी कर लिया करता था कहा कि आपके दरवाज़े पर एक शख़्स खड़ा है और एक अजीब मज़े की बात कह रहा है। वह कहता है कि आपके सिवा उसका कोई और रब है और उसके रब ने उसे आपकी तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा है। उसने कहा, क्या मेरे दरवाज़े पर वह है? उसने कहा, हाँ! हुक्म दिया कि अंदर बुला लो। चुनाँचे आदमी गया और दोनों पैग़म्बर दरबार में आए। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, मैं रब्बुल आलमीन का रसूल हूँ, फ़िरऔन ने आपको पहचान लिया कि यह तो मूसा है।

सुद्दी (रह.) का बयान है कि आप मिस्र में अपने ही घर में ठहरे थे। माँ ने और भाई ने पहले तो आपको पहचाना नहीं। घर में जो पका था वह मेहमान समझकर उनके पास ला रखा, उसके बाद पहचाना सलाम किया। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला का मुझे हुक्म हुआ है कि मैं बादशाह को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाऊँ और तुम्हारी निस्बत फ़र्मान हुआ है कि तुम मेरी ताईद करो। हज़रत हारून (عليه السلام) ने फिर फ़र्माया, बिस्मिल्लाह कीजिए। रात को दोनों साहब बादशाह के यहाँ गए। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने अपनी लकड़ी से दरवाज़ा खटखटाया। फ़िरऔन आग बबूला हो गया कि इतना बड़ा दिलेर आदमी कौन आ गया? जो यूँ बेसाख़्ता दरबार के आदाब के ख़िलाफ़ अपनी लकड़ी से मुझे होशियार कर रहा है? दरबारियों ने कहा, हज़रत कुछ नहीं यूँ ही एक दीवाना आदमी है कहता फिरता है कि मैं रसूल हूँ। फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि उसे मेरे सामने पेश करो। चुनाँचे हज़रत हारून (عليه السلام) को लिये हुए आप उसके पास गए और उससे फ़र्माया कि हम अल्लाह तआला के रसूल हैं तू हमारे साथ बनी इस्राईल को भेज दे। उन्हें सज़ाएँ न कर। हम रब्बुल आलमीन की तरफ़ से अपनी रिसालत की दलीलें और मोजिज़े लेकर आए हैं अगर तू हमारी बात मान ले तो तुझ पर अल्लाह तआला की तरफ़ से सलामती नाज़िल होगी।

रसूले करीम (ﷺ) ने भी जो ख़त शाहे रूम हिरक़्ल के नाम लिखा था उसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमा-निर्रहीम के बाद यह मज़्मून था कि यह "ख़त मुहम्मद रसूले करीम (ﷺ) की तरफ़ से शाहे रूम हिरक़्ल के नाम है जो हिदायत की पैरवी करे उस पर सलाम हो। उसके बाद यह कि तुम इस्लाम क़बूल कर लो तो सलामत रहोगे, अल्लाह तआला दोहरा अज्र इनायत करेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउलु वही, बाब कैफ़ा कान •

बदअल वही इला रसूलिल्लाहि : 7; सहीह मुस्लिम : 1773) मुसैलिमा कज़्ज़ाब ने सादिक़ मस्दूक़ ख़त्मुल मुर्सलीन (ﷺ) को एक ख़त लिखा था जिसमें तहरीर थी कि यह ख़त अल्लाह के रसूल मुसैलिमा की जानिब से अल्लाह के रसूल मुहम्मद के नाम है। आप पर सलाम हों। मैंने आपको शरीकेकार कर लिया है। शहरी आपके लिए और देहाती मेरे लिए यह कुरैशी तो बड़े ही ज़ालिम लोग हैं। इसके जवाब में हुज़ूर (ﷺ) ने उसे लिखा कि "यह ख़त मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से मुसैलिमा कज़्ज़ाब के नाम है, सलाम हो उन पर जो हिदायत की ताबेदारी करें। सुन ले ज़मीन अल्लाह तआला की मिल्कियत है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे इसका वारिस बना दे। अंजाम के लिहाज़ से भले लोग वह हैं जिनके दिल अल्लाह के डर से भरे हों।" (तब्क़ात : 1/259; तारीख़ुल इस्लाम लिज़्ज़हबी) अल्ग़र्ज़ पैग़म्बरे इलाही कलीमुल्लाह हज़रत मूसा (عليه السلام) ने भी फ़िरऔन से यही कहा कि सलामती उन पर है जो हिदायत के पैरोकार हों, फिर फ़र्माया कि हमें बज़रिये वही इलाही यह बात मालूम करायी गई है कि अज़ाब के लायक़ सिर्फ़ वही लोग हैं जो अल्लाह तआला के कलाम को झुठलाएँ और अल्लाह तआला की बातों के मानने से इंकार कर जाएँ। जैसे इर्शाद है

(فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۝ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ۝)(79/नाज़िआत : 37 से 39)

जो शख़्स सरकशी करे और दुनिया की ज़िन्दगी पर रीझकर उसी को पसंद करे उसका आख़िरी ठिकाना जहन्नम ही है और आयतों में है कि मैं तुम्हें शोले मारने वाली आग जहन्नम से डरा रहा हूँ जिसमें सिर्फ़ वह बदबख़्त दाख़िल होंगे जो झुठलाएँगे और मुँह मोड़ लें। (92/लैल : 14 से 16) और आयतों में है कि उसने न तो मान कर दिया न नमाज़ अदा की बल्कि इनसे मुंकिर रहा और काम फ़र्मान के ख़िलाफ़ किये। (75/क़ियामा : 31, 32)

***

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝٤٩ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ۝٥٠ قَالَ
فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝٥١ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ۝٥٢
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۭ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝٥٣ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّاُولِي النُّهٰى ۝٥٤ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝٥٥ وَلَقَدْ
اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝٥٦

तर्जुमा : "फ़िरऔन ने पूछा कि ऐ मूसा! तुम दोनों का रब कौन है? (49) जवाब दिया कि हमारा रब वह है जिसने हर एक को उसकी ख़ास सूरत शक्ल इनायत की फिर राह समझा दी। (50) उसने कहा, अच्छा! यह तो बताओ अगले ज़माने वालों का हाल क्या होना है? (51) जवाब दिया कि उनका इल्म मेरे रब के यहाँ उस किताब में मौजूद है। न तो मेरा रब ग़लती करे न भूले। (52) उसी ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया है और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते चला दिए हैं और आसमान से पानी भी वही बरसाता है। फिर उस बरसात की वजह से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की पैदावार भी हम ही पैदा करते हैं। (53) तुम ख़ुद खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ कुछ शक नहीं कि इसमें अक़्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं। (54) इसी ज़मीन में से हमने तुम्हें पैदा किया और इसी में वापिस लौटाएँगे और इसी से फिर दोबारा तुम सबको निकालकर खड़ा करेंगे। (55) हमने इसे अपनी सब निशानियाँ दिखा दीं लेकिन फिर भी उसने झुठलाया और इंकार कर दिया।" (56)

तमाम सूरतें अल्लाह तआला ने बनाई है (आयत 49 से 56) : चूँकि यह नाहंजार यानी फ़िरऔने मिस्र वजूदे बारी तआला का मुंकिर था पैग़ामे तआला कलीमुल्लाह की ज़ुबानी सुनकर वजूदे ख़ालिक़ के इंकार के तौर पर सवाल करने लगा कि तुम्हारा भेजने वाला और तुम्हारा रब कौन है? मैं तो उसे नहीं जानता, न उसे मानता हूँ बल्कि मेरी दानिस्त में तो तुम सबका रब मेरे सिवा और कोई नहीं। अल्लाह तआला के सच्चे रसूल ने जवाब दिया कि हमारा रब वह है जिसने हर शख़्स को उसका जोड़ा अता किया है। (तबरी : 18/316) इंसान को बसूरतें इंसान गधे को उसकी सूरत पर, बकरी को एक अलग सूरत पर पैदा किया है। हर एक को उसकी ख़ास सूरत में बनाया है। हर एक की पैदाइश निराली शान से दुरुस्त कर दी है। इंसानी पैदाइश का तरीक़ा अलग है, चौपाये अलग सूरत में हैं, दरिन्दे अलग सूरत में हैं। हर एक के जोड़े की हैयते तर्कीबी अलग है। खाना पीना खाने पीने की चीज़ें जोड़े सब अलग अलग और मुम्ताज़ व मख़्सूस हैं। हर एक का अंदाज़ा मुक़र्रर करके फिर उनकी तर्कीब उसे बतला दी है।

हर चीज़ का इल्म अल्लाह को है : अमल अजल रिज़्क़ मुक़द्दर और मुक़र्रर करके उसी पर लगा दिया है। निज़ाम के साथ सारी मख़्लूक़ का कारख़ाना चल रहा है कोई इससे इधर उधर नहीं हो सकता। ख़ल्क़ का ख़ालिक़ तक़्दीरों का मुक़र्रर करने वाला अपने इरादे पर मख़्लूक़ की पैदाइश करने वाला ही हमारा रब है। यह सब सुनकर उस बेसमझ ने पूछा कि अच्छा फिर उनका क्या हाल होना है जो हमसे पहले थे और अल्लाह तआला की इबादत के इंकारी थे? इस सवाल को उसने अहमियत के साथ किया लेकिन मूसा (ﷺ) ने ऐसा जवाब दिया कि आजिज़ हो गया। फ़र्माया उन सबका इल्म मेरे रब को है। लौहे महफ़ूज़ में उनके आमाल लिखे हुए हैं। जज़ा सज़ा का दिन मुक़र्रर है, न वह ग़लती करे कि कोई छोटा बड़ा उसकी पकड़ से छूट जाए न वह भूले कि मुज्रिम उसकी गिरफ़्त से रह जाएँ। उसका इल्म तमाम चीज़ों को अपने में घेरे हुए है उसकी ज़ात भूल चूक से पाक है। न उसके इल्म से कोई चीज़ बाहर न इल्म के बाद भूल जाने का उसका वस्फ़, वह कमी इल्म के नुक़्सान से वह भूल के नुक़्सान से पाक है।

सब नेअमतें अल्लाह तआला अता करता है : मूसा (عليه السلام) फ़िरऔन के सवाल के जवाब में औसाफ़े बारी तआला बयान करते हुए फ़र्माते हैं कि उसी अल्लाह तआला ने ज़मीन के लोगों के लिए फ़र्श बनाया है। (महदन) की दूसरी क़िरअत (मिहादन) है। ज़मीन को अल्लाह तआला ने बतौरे फ़र्श के बना दी है कि तुम इस पर क़रार किये हुए हो। इसी पर सोते बैठते रहते सहते हो। उसने ज़मीन में तुम्हारे चलने फिरने और सफ़र करने के लिए रास्ते बना दिये हैं ताकि तुम रास्ता भूलो नहीं और अपनी मंज़िल पर आसानी से पहुँच जाओ। वही आसमान से बारिश बरसाता है और उसकी वजह से ज़मीन हर क़िस्म की पैदावार उगाती है। खेतियाँ बाग़ात मेवे क़िस्म क़िस्म के ज़ायक़ेदार कि तुम ख़ुद खा लो और अपने जानवरों को चारा भी दो। तुम्हारा खाना और मेवे तुम्हारे जानवरों का चारा ख़ुश्क और तर सब उसी से अल्लाह तआला पैदा करता है। जिनकी अक़्लें सहीह सालिम हैं उनके लिए तो क़ुदरत की यह तमाम निशानियाँ दलील हैं, अल्लाह तआला की उलूहियत और उसकी वह्दानियत और उसके वुजूद पर उसी ज़मीन से हमने तुम्हें पैदा किया है, तुम्हारी शुरुआत इसी से है इसलिए कि तुम्हारे बाप आदम (عليه السلام) की पैदाइश इसी से हुई है। इसी में तुम्हें फिर लौटना है। मरकर इसी में दफ़न होना है। इसी से फिर क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे।

हमारी पुकार पर हमारी तारीफ़ें करते हुए उठोगे और यक़ीन कर लोगे कि तुम बहुत ही थोड़ी देर रहे। (17/बनी इस्राईल : 52) जैसे और आयत में है कि इसी ज़मीन पर तुम्हारी ज़िन्दगी गुज़रेगी। मरकर भी इसी में जाओगे फिर इसी में से निकाले जाओगे। (7/आराफ़ : 25) सुनन की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मय्यित के दफ़न के बाद उसकी क़ब्र पर मिट्टी डालते हुए पहली बार फ़र्माया (मिन्हा ख़लक़्नाकुम) दूसरी लप डालते हुए फ़र्माया (व फ़ीहा नुईदुकुम) तीसरी बार फ़र्माया (व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा)'' (अहमद : 5/254; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 2/379; बैहक़ी : 3/9; इसमें लपों से मिट्टी डालने का ज़िक्र नहीं। इसकी सनद में उबेदुल्लाह बिन ज़ुहर अफ़्रीक़ी (तहज़ीबुल कमाल : 5/34; रक़म : 4222) और अली बिन यज़ीद (अल्मीज़ान : 3/161; रक़म : 5966) ज़ईफ़ रावी है।) अल्ग़र्ज़ फ़िरऔन के सामने दलीलें आ चुकीं, उसने मोजिज़े और निशान देख लिए लेकिन सबका इंकार किया और झुठलाता रहा। कुफ़्र सरकशी और ज़िद्द और तकब्बुर से बाज़ न आया। जैसे फ़र्मान है (وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا) (27/नम्ल : 14) यानी बावजूद कि उनके दिलों में यक़ीन पैदा हो चुका था लेकिन ताहम अज़्राहे ज़ुल्मो ज़्यादती इंकार से बाज़ न आए।

***

قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝٥٧ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ

فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝٥٨ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝٥٩

तर्जुमा : ''कहने लगा ऐ मूसा! क्या तू इसीलिए आया है कि हमें अपने जादू के ज़ोर से हमारे मुल्क से बाहर निकाल दे? (57) तो हम भी तेरे मुक़ाबले में इसी जैसा जादू ज़रूर लाएँगे तो तू हमारे और अपने बीच एक वादे की जगह मुक़र्रर कर ले कि न हम उसका ख़िलाफ़ करें न तू, साफ़ मैदान में मुक़ाबला हो। (58) जवाब दिया कि वादा ज़ीनत और जश्न के दिन का है। लोग दिन चढ़े ही जमा हो जाएँ।'' (59)

फ़िरऔन ने मोजिज़ात को जादू कहा (आयत 57 से 59) : हज़रत मूसा (عليه السلام) का मोजिज़ा लकड़ी का साँप बन जाना, हाथ का रोशन हो जाना वग़ैरह देखकर फ़िरऔन ने कहा, यह तो जादू है और तू जादू के ज़ोर से हमारा मुल्क हमसे छीनना चाहता है तो तू मग़रूर न हो जा। हम भी इस जादू में तेरा मुक़ाबला कर सकते हैं। दिन और जगह मुक़र्रर हो जाए और मुक़ाबला हो जाए। हम भी उस दिन उस जगह आ जाएँ और तू भी, ऐसा न हो कि कोई न आए। खुले मैदान में सबके सामने हार जीत खुल जाए। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, मुझे मंज़ूर है और मेरे ख़्याल से तो इसके लिए तुम्हारी ईद का दिन मुनासिब है। क्यों कि फ़ुर्सत का दिन होता है सब आ जाएँगे और देखकर हक़ और बातिल में तमीज़ कर लेंगे। मोजिज़े और जादू का फ़र्क़ सब पर ज़ाहिर हो जाएगा। वक़्त दिन चढ़े का रखना चाहिए ताकि जो कुछ मैदान में आए सब आसानी से देख सकें।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं उनकी ज़ीनत और ईद का दिन आशूरे का दिन था। यह याद रहे कि अम्बिया (عليهم السلام) ऐसे मौक़ों पर कभी पीछे नहीं रहते। ऐसा काम करते हैं जिससे हक़ साफ़ वाज़ेह हो जाए और हर एक पर खुल जाए। इसीलिए आपने उनकी ईद का दिन मुक़र्रर किया और वक़्त दिन चढ़े का बतलाया और साफ़ हमवार मैदान मुक़र्रर किया कि जहाँ से हर एक देख सके और जो बातें हों वह भी सुन सकें। (तब्री : 18/323) वहब बिन मुनब्बा (रह.) फ़र्माते हैं कि फ़िरऔन ने मोहलत चाही। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने इंकार किया। इस पर वह़ी उतरी कि मुद्दत मुक़र्रर कर लो। फ़िरऔन ने 40 दिन की मोहलत मांगी जो मंज़ूर की गयी।

***

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ
وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ
بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ
الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

तर्जुमा : ''पस फ़िरऔन लौट गया और उसने अपने दाव घात जमा किये, फिर आ गया। (60) मूसा (अ.) ने उनसे कहा था कि तुम्हारी शामत आ चुकी अल्लाह तआला पर झूठ इफ़्तिरा न बाँधो कि वह तुम्हें अज़ाबों से मलियामेट कर दे याद रखो जिसने तोहमत बाँधी वह कभी कामयाब न होगा। (61) पस यह लोग अपने आपस के मश्वरों में मुख़्तलिफ़ राय हो गए और छुपकर चुपके चुपके मश्वरा करने लगे।(62) कहने लगे हैं तो यह दोनों जादूगर और इनका पुख़्ता इरादा है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क (देश) से निकाल दे और तुम्हारे बेहतरीन मज़हब (दीन) को बर्बाद करें। (63) तो तुम भी अपनी कोई तदबीर उठा न रखो फिर सफ़बन्दी करके आ जाओ। जो आज ग़ालिब आ गया वही बाज़ी ले गया।'' (64)

फ़िरऔन ने जादूगर बुलाकर मुक़ाबला करने की कोशिश की (आयत 60 से 64) : जबकि मुक़ाबला की म्याद मुक़र्रर हो गई दिन वक़्त और जगह भी ठहर गई तो फ़िरऔन ने इधर उधर से जादूगरों को जमा करना शुरू किया। उस ज़माने में जादू का बहुत चलन था और बड़े बड़े जादूगर मौजूद थे। फ़िरऔन ने आम तौर से हुक्म जारी कर दिया था कि तमाम होशियार जादूगरों को मेरे पास भेज दो, वक़्त तक तमाम जादूगर जमा हो गए। फ़िरऔन ने उसी मैदान में अपना तख़्त निकलवाया, उस पर बैठा। तमाम उमरा, वुज़रा, अपनी अपनी जगहों पर बैठ गए। रिआया (जनता) सब जमा हो गयी। जादूगरों की सफ़ें परा बाँधे तख़्त के आगे खड़ी हो गईं फ़िरऔन ने उनकी कमर टोंकनी शुरू की और कहा, देखो! आज अपना वह हुनर दिखाओ कि दुनिया में यादगार बन जाए। जादूगरों ने कहा, अगर हम बाज़ी जीत गये तो हमें कुछ इन्आम भी मिलेगा? कहा, क्यूँ नहीं! मैं तो तुम्हें अपना ख़ास दरबारी बना लूँगा, इधर से कलीमुल्लाह हज़रत मूसा (عليه السلام) ने उन्हें तब्लीग़ शुरू की कि देखो! अल्लाह पर झूठ न बाँधो, वरना शामते आमाल बर्बाद कर देगी। लोगों की आँखों में ख़ाक न झोंको दरहक़ीक़त कुछ न हो और तुम अपने जादू से बहुत कुछ दिखा दो, अल्लाह तआला के सिवा कोई ख़ालिक़ नहीं जो फ़िल वाक़ेअ किसी चीज़ को पैदा कर सके, याद रखो ऐसे झूठे बोहतानी लोग फ़लाह (कामयाब) नहीं होते। यह सुनकर उनमें आपस में चे मी गोइयाँ शुरू हो गईं। कुछ तो समझ गए और कहने लगे, यह कलाम जादूगरों का नहीं, वह तो सचमुच अल्लाह के रसूल हैं।

कुछ ने कहा नहीं! बल्कि यह जादूगर हैं, मुक़ाबला करो। यह बातें बहुत ही एहतियात और पोशीदगी से की गईं। (इन हाज़ानि) की दूसरी क़िरअत (इन्ना हाज़ैनि) भी है। मतलब और मअनी दोनों क़िरअतों का एक ही है। अब बाआवाज़ बलंद कहने लगे कि यह दोनों भाई स्याने और पहुँचे हुए जादूगर हैं। इस वक़्त तक तो तुम्हारी हवा बँधी हुई है। बादशाह के क़ुर्ब नसीब है। मालो दौलत क़दमों तले लौट रहा है। लेकिन आज अगर यह बाज़ी ले गए तो ज़ाहिर है कि रियासत उन ही की हो जाएगी तुम्हें मुल्क से निकाल देंगे, अवाम उनके मातहत हो जाएँगी। उनका ज़ोर बंध जाएगा। बादशाहत छीन लेंगे और साथ ही तुम्हारे मज़हब को मलियामेट कर देंगे। बादशाहत ऐशो इशरत सब चीज़ें तुमसे छिन जाएँगी। शराफ़त अक़्लमंदी रियासत सब उनके क़ब्ज़े में आ जाएगी। तुम यूँ ही भुट्टे भुनते रह जाओगे, तुम्हारे शरीफ़ लोग ज़लील हो जाएँगे। अमीर फ़क़ीर हो जाएँगे, सारी रौनक़ ओर बहार जाती रहेगी। बनी इस्राईल जो तुम्हारे लौण्डी गुलाम बने हुए हैं यह सब उनके साथ हो जाएँगे और तुम्हारी हुकूमत चूरा चूरा हो जाएगी। तुम सब इत्तिफ़ाक़ कर लो। इनके मुक़ाबले में सफ़बंदी करके अपना कोई फ़न बाक़ी न रखो। जी खोलकर होशियारी और अक़्लमंदी से अपने जादू के ज़ोर से इसे दबा दो। एक ही बार हर उस्ताद अपनी कारीगरी दिखा दे ताकि मैदान हमारे जादू से भर जाए। देखो अगर वह जीत गया तो यह रियासत उसी की हो जाएगी और अगर हम ग़ालिब आ गए तो तुम सुन चुके हो कि बादशाह हमें अपना मुक़र्रब और दरबारे ख़ास के अराकीन बना देगा।

***

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ
وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا
تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۗ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۗ
وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾

तर्जुमा : "कहने लगे कि मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जाएँ। (65) जवाब दिया कि नहीं! तुम ही पहले डालो, अब तो मूसा (عليه السلام) को यह ख़याल गुज़रने लगा कि इनकी रस्सियाँ और लकड़ियाँ बवजह इनके जादू के दौड़ भाग रही हैं। (66) तो मूसा (عليه السلام) अपने दिल ही दिल में डरने लगे। (67) हमने फ़र्माया, डरो नहीं यक़ीनन तू ही ग़ालिब और राह पर रहेगा। (68) तेरे दाएँ हाथ में जो है उसे डाल दे कि उनकी तमाम कारीगरी को वह निगल जाए। उन्होंने जो कुछ बनाया है यह सिर्फ़ जादूगरों के करतब हैं। और जादूगर कहीं भी जाए, कामयाब नहीं होता। (69) अब तो तमाम जादूगर सज्दे में गिर पड़े और पुकार उठे कि हम तो हारून और मूसा (عليه السلام) के परवरदिगार पर ईमान ला चुके।" (70)

जादूगरों पर हज़रत मूसा (عليه السلام) की बरतरी (आयत 65 से 70) : जादूगरों ने मूसा (عليه السلام) से कहा कि अब बतलाओ तुम अपना वार पहले करते हो या हम पहल करें? उसके जवाब में मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, तुम ही पहले अपने दिल की भड़ास निकाल लो ताकि दुनिया देख ले कि तुमने क्या किया और फिर अल्लाह ने तुम्हारे किये को किस तरह मिटा दिया। उसी वक़्त उन्होंने अपनी लकड़ियाँ और रस्सियाँ मैदान में डाल दीं। कुछ ऐसा मालूम होने लगा कि गोया वह साँप बनकर चल फिर रही हैं और मैदान में दूर दूर भाग रही हैं। कहने लगे फ़िरऔन के इक़बाल से ग़ालिब हम ही रहेंगे। लोगों की आँखों पर जादू करके उन्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया और जादू के ज़बरदस्त करतब दिखा दिये। थे भी यह लोग बहुत ज़्यादा। उनकी फेंकी हुई रस्सियों और लाठियों से अब सारे का सारा मैदान साँपों से भर गया। वह आपस में गुदबुद करके ऊपर तले होने लगे। इस मंज़र ने हज़रत मूसा (عليه السلام) को ख़ौफ़ज़दा कर दिया कि कहीं ऐसा न हो लोग उनके करतब के क़ाइल हो जाएँ और उस बातिल में फंस जाएँ, उसी वक़्त जनाब बारी तआला ने वही नाज़िल की कि अपने दाहिने हाथ की लकड़ी को मैदान में डाल दो, हरासाँ न बनो। आपने हुक्म बरदारी की। अल्लाह तआला के हुक्म से यह लकड़ी एक ज़बरदस्त बेमिसाल अज्दहा बन गई जिसके पैर भी थे और सिर भी था, कुचलियाँ और दाँत भी थे। उसने सबके देखते सारे मैदान को साफ़ कर दिया। उसमें जादूगरों के जितने करतब थे सबको हड़प कर लिया। अब सब पर हक़ वाज़ेह हो गया। मोजिज़े और जादू में तमीज़ हो गई। हक़ व बातिल में पहचान हो गयी। सबने जान लिया कि जादूगरों की बनावट में असलियत कुछ भी न थी। फ़िल वाक़ेअ जादूगर कोई चाल चलें लेकिन उसमें ग़ालिब नहीं आ सकते। इब्ने अबी हातिम में हदीस है, तिर्मिज़ी में भी मौक़ूफ़न और मरफ़ूअन मरवी है कि ''जादूगरों को जहाँ पकड़ो मार डालो।'' (इस मअनी की रिवायत उन जगहों पर मौजूद है। तिर्मिज़ी, किताबुल हुदूद, बाब मा जाअ फ़ी हद्दिस्साहिर : 1460; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दारे क़ुत्नी : 3/114; हाकिम : 4/360; बैहक़ी : 8/136; मुस्नदुल फ़िरदौस : 2708; इसकी सनद में इस्माईल बिन मुस्लिम मक्की ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/74; रक़म : 552) फिर आपने यही जुम्ला तिलावत फ़र्माया। यानी जहाँ पाया जाए, अमन न दिया जाए जादूगरों ने जब यह देखा उन्हें यक़ीन हो गया कि यह काम इंसानी ताक़त में नहीं। वह जादू के फ़न से माहिर थे एक नज़र में पहचान गए कि वाक़ई यह उस अल्लाह का काम है जिसके फ़र्मान अटल हैं। जो कुछ वह चाहे उसके हुक्म से हो जाता है। उसके इरादे से मुराद जुदा नहीं। उसका इतना कामिल यक़ीन उन्हें हो गया कि उसी वक़्त उसी मैदान में सबके सामने बादशाह की मौजूदगी में वह अल्लाह के सामने सज्दे में गिर गये और पुकार उठे कि हम रब्बुल आलमीन पर यानी हारून और मूसा (عليهما السلام) के रब पर ईमान लाते हैं। सुब्हानल्लाह! सुबह के वक़्त काफ़िर और जादूगर थे। और शाम को पाकबाज़ मोमिन और राहे बारी तआला के शहीद थे। कहते हैं कि उनकी तादाद अस्सी हज़ार की थी या सत्तर हज़ार की या कुछ ऊपर तीस हज़ार की उन्नीस हज़ार की या पन्द्रह हज़ार की। यह भी मरवी है कि यह सत्तर थे। सुबह जादूगर शाम को शहीद। (तब्री : 18/340) मरवी है कि ''जब यह सज्दे में गिरे हैं अल्लाह तआला ने उन्हें जन्नत दिखा दी और उन्होंने अपनी मंज़िलें अपनी आँखों से देख लीं।'' (तब्री : 18/343)

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ
اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِىْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَاۤ
اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿۷۱﴾ قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِىْ فَطَرَنَا
فَاقْضِ مَاۤ اَنْتَ قَاضٍ ۚ اِنَّمَا تَقْضِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۷۲﴾ اِنَّاۤ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا
خَطٰيٰنَا وَمَاۤ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿۷۳﴾

तर्जुमा : ''फ़िरओन कहने लगा कि क्या मेरी इजाज़त से पहले ही तुम उस पर ईमान ला चुके? यक़ीनन यही तुम्हारा वह बड़ा बुज़ुर्ग है जिसने तुम सबको जादू सिखाया है सुन लो! मैं तो तुम्हारे हाथ पैर उल्टे सीधे कटवाकर तुम सबको खजूर के तनों में सूली पर लटकवा दूँगा और तुम्हें पूरी तरह मालूम हो जाएगा कि हममें से किसकी मार ज़्यादा सख़्त और देरपा है। (71) उन्होंने जवाब दिया कि नामुम्किन है कि हम तुझे तर्जीह दें उन दलीलों पर जो हमारे सामने आ चुकीं और उस अल्लाह पर जिसने हमें पैदा किया है। अब तो तू जो कुछ करना चाहे कर गुज़र, तू जो कुछ भी हुक्म चला सकता है वह इसी दुनिया की ज़िन्दगी में ही है। (72) हम इस लालच से अपने परवरदिगार पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएँ माफ़ कर दे और जो कुछ तूने हमसे ज़बरदस्ती करवाया है वह तो जादू है अल्लाह ही बेहतर और बहुत बाक़ी रहने वाला है।'' (73)

जादूगर ईमान ले आये (आयत 71 से 73) : शाने रब्बानी देखिए, चाहिए तो यह था कि फ़िरओन अब राहे रास्त पर आ जाता जिनको उसने मुक़ाबले के लिए बुलवाया था वह आम मज्मआ में हारे। उन्होंने अपनी हार मान ली, अपने करतूत को जादू और हज़रत मूसा (عليه السلام) के मोजिज़े को अल्लाह की तरफ़ से अता किया हुआ मोजिज़ा क़बूल कर लिया। ख़ुद वह ईमान लाए जो मुक़ाबले के लिए बुलवाये गए थे। मज्मआ आम में सबके सामने बेझिझक उन्होंने दीने बरहक़ को क़बूल कर लिया लेकिन यह अपनी शैतानियत में और बढ़ गया और लगा अपनी कुव्वत और ताक़त दिखाने। लेकिन भला हक़ वाले माद्दी ताक़तों को समझते ही क्या हैं? पहले तो जादूगरों के उस मुस्लिम गिरोह से कहने लगा कि मेरी इजाज़त से पहले तुम इस पर ईमान क्यूँ लाए? फिर ऐसा बोहतान बाँधा कि जिसका झूठ होना बिलकुल वाज़ेह है कि मूसा (عليه السلام) तो तुम्हारे उस्ताद हैं। इन्हीं से तुमने जादू सीखा है तुम सब आपस में एक ही हो। मश्वरा करके हमें ताराज करने के लिए तुमने पहले इन्हें भेजा फिर इसके मुक़ाबले में ख़ुद आए और अपने अंदरूनी समझौते के मुताबिक़ सामने हार गये और इसे जीता दिया और फिर इसका दीन क़बूल कर लिया ताकि तुम्हारी देखा देखी मेरी रिआया भी इस

चक्कर में फंस जाए। मगर तुम्हें अपनी इस साज़ बाज़ का अंजाम अभी मालूम हो जाएगा। मैं उल्टी सीधी तरफ़ से तुम्हारे हाथ पैर काटकर तुमको खजूर के तनों पर सूली पर चढ़ा दूँगा और इस बुरी तरह से तुम्हारी जान लूँगा कि दूसरों के लिए इब्रत हो। उसी बादशाह ने सबसे पहले यह सज़ा दी है। तुम जो अपने आपको हिदायत पर और मुझे और मेरी क़ौम को गुमराही पर समझते हो इसका हाल अभी तुम्हें मालूम हो जाएगा कि दाइमी अज़ाब किस पर आता है? इस धमकी का अल्लाह के उन वलियों पर उल्टा असर हुआ। वह अपने ईमान में कामिल बन गए और निहायत दिलैरी से जवाब दिया कि इस हिदायत व यक़ीन के मुक़ाबले में जो हमें अब अल्लाह तआला की तरफ़ से हासिल हो चुकी है हम तेरा मज़हब किसी तरह क़बूल करने के नहीं। न तुझे हम अपने सच्चे ख़ालिक़ मालिक के सामने कोई चीज़ समझते हैं। और यह भी मुम्किन है कि यह जुम्ला क़सम हो यानी उस अल्लाह की क़सम! जिसने हमें पहली बार पैदा किया है कि हम इन वाज़ेह दलीलों पर तेरी गुमराही को तर्जीह न देंगे। ख़्वाह तू हमारे साथ कुछ भी कर ले। मुस्तहिक़े इबादत वह है जिसने हमें बनाया न कि तू जो ख़ुद उसी का बनाया हुआ है। तुझे जो करना हो उसमें कमी न कर। तू तो हमें उसी वक़्त तक सज़ाएँ दे सकता है जब तक हम इस दुनिया की ज़िन्दगी की क़ैद में हैं। हमें यक़ीन है कि इसके बाद हमेशा की राहत और ग़ैर फ़ानी ख़ुशी व मसर्रत नसीब होगी। हम अपने रब पर ईमान लाए हैं हमें उम्मीद है कि वह हमारे अगले क़सूरों से दरगुज़र करेगा। बिल ख़ुसूस यह क़सूर जो हमसे अल्लाह के सच्चे नबी के मुक़ाबले पर जादूबाज़ी करने का सरज़द हुआ है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं फ़िरऔन ने बनी इस्राईल के चालीस बच्चे लेकर उन्हें जादूगरों के सुपुर्द कर दिया था कि इन्हें जादू की पूरी तालीम (शिक्षा) दो। अब यह लड़के यह मक़ौला कह रहे हैं कि तूने हमसे जबरन जादूगरी की ख़िदमत ली। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद का क़ौल भी यही है। (तब्री : 18/341) फिर फ़र्माया हमारे लिए बनिस्बत तेरे अल्लाह बहुत बेहतर है और दाइमी सवाब देने वाला है, न हमें तेरी सज़ाओं से डर न तेरे इन्आम की लालच। अल्लाह की ज़ात ही इस लायक़ है कि उसकी इबादत व इताअत की जाए। उसी के अज़ाब दाइमी हैं और सख़्त ख़तरनाक हैं अगर उसकी नाफ़र्मानी की जाए। पस फ़िरऔन ने भी उनके साथ यह किया कि सबके हाथ पैर उल्टी सीधी तरफ़ से काटकर सूली पर चढ़ा दिया। वह जमाअत जो सूरज निकलने के वक़्त काफ़िर थी सूरज डूबने से पहले मोमिन और शहीद थी, रहमतुल्लाहि अलैहिम अज्मईन।

***

إِنَّهُ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ ۖ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾ وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا
قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ﴿٧٥﴾ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّىٰ ﴿٧٦﴾

तर्जुमा : ''बात यही है कि जो भी गुनहगार बनकर अल्लाह के यहाँ जाएगा उसके लिए जहन्नम है जहाँ न मौत होगी और न ज़िन्दगी। (74) और जो भी उसके पास ईमान वाला होकर जाएगा और उसने आमाल भी नेक किये होंगे उसके लिए बुलंद व बाला दर्जे हैं। (75) हमेशगी वाली जन्नतें जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जहाँ वह हमेशा हमेश रहेंगे। यही इन्आम है हर उस शख़्स का जो पाक है।'' (76)

जहन्नम में मौत न आएगीः (आयत 74 से 76) : बज़ाहिर मालूम होता है कि जादूगरों ने ईमान क़बूल करके फ़िरऔन को जो नसीहतें कीं उन ही में यह आयतें भी हैं। उसे अल्लाह के अज़ाबों से डरा रहे हैं और अल्लाह की नेअमतों का लालच दे रहे हैं कि गुनहगारों का ठिकाना जहन्नम है जहाँ मौत तो कभी आने वाली नहीं लेकिन ज़िन्दगी भी बड़ी ही मशक़्क़त वाली मौत से बदतर होगी। जैसे फ़र्मान है (لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا) (35/फ़ातिर : 36) यानी न तो मौत ही आएगी, न अज़ाब हल्के होंगे काफ़िरों को हम इसी तरह सज़ा देते हैं। और आयतों में है (وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى) (87/ आला : 11)यानी अल्लाह तआला की नसीहतों से बेफ़ैज़ वही रहेगा जो अज़्ली बदबख़्त हो जो आख़िरकार बड़ी सख़्त आग में गिरेगा जहाँ न तो मौत आए न चैन की ज़िन्दगी नसीब हो। और आयत में है कि जहन्नम में फिसलते हुए कहेंगे कि ऐ दारोग़ा जहन्नम! तुम दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें मौत ही दे दे। लेकिन वह जवाब देगा कि न तुम मरने वाले हो, न निकलने वाले। (43/ज़ुख़रुफ़ : 77) मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''अस़ली जहन्नमी तो जहन्नम में पड़े रहेंगे, न वहाँ उन्हें मौत आए, न आराम की ज़िन्दगी मिले। हाँ! ऐसे लोग भी होंगे जिन्हें उनके गुनाहों की पादाश में दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा, जहाँ वह जलकर कोयला हो जाएँगे,जान निकल जाएगी, फिर सिफ़ारिश की इजाज़त के बाद उनका चूरा निकाला जाएगा और जन्नत की नहरों के किनारों पर बिखेर दिया जाएगा और जन्नतियों से कहा जाएगा कि इन पर पानी डालो। तो जिस तरह़ तुमने नहर के किनारे के खेत के दानों को उगते हुए देखा है उसी तरह़ वह उगेंगे, यह सुनकर एक शख़्स कहने लगा, हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने मिसाल तो ऐसी दी है गोया आप कुछ ज़माना जंगल में गुज़ार चुके हैं।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब इस्बातुश्शफ़ाअति व इख़राजुल मुवह्हिदीन मिनन्नारि : 185; अहमद : 3/11; इब्ने माजा : 4309; इब्ने हिब्बान : 184)

अमले स़ालेह़ करने वाले के लिए जन्नत : और ह़दीस में है कि ख़ुत्बे में इस आयत की तिलावत के बाद आपने यह फ़र्माया था और जो अल्लाह तआला से क़ियामत के दिन ईमान और नेक अमल के साथ जा मिला

उसे ऊँचे बालाख़ानों वाली जन्नत मिलेगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जन्नत के सौ दर्जे हैं, हर दर्जा में इतना ही फ़ासला है जितना ज़मीनो आसमान में। सबसे ऊपर जन्नतुल फ़िरदौस है उसी से चारों नहरें जारी होती हैं। उसकी छत रहमान का अ़र्श है। तुम अल्लाह से जब जन्नत माँगो तो जन्नतुल फ़िरदौस की दुआ किया करो।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति दरजातिल जन्ना : 2531; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 5/316; हाकिम : 1/80) इब्ने अबी हातिम में है कि कहा जाता था कि जन्नत के सौ दर्जे हैं, हर दर्जे के फिर सौ दर्जे हैं। दो दर्जों में इतनी दूरी है जितनी आसमान व ज़मीन में। उनमें याक़ूत व मोती हैं और ज़ेवर भी। हर जन्नत में अमीर है जिसकी फ़ज़ीलत और सरदारी के दूसरे क़ाइल हैं।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि "आला इल्लिय्यीन वाले ऐसे दिखाई देते हैं जैसे तुम लोग आसमान के सितारों को देखते हो। लोगों ने कहा, फिर यह बुलंद दर्जे तो नबियों के लिए ख़ास होंगे? फ़र्माया, सुनो! उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि यह वह लोग होंगे जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए नबियों को सच्चा जाना।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति व अन्नहा मख़्लूक़ा : 3256; सहीह मुस्लिम : 2831; अहमद : 5/340; इब्ने हिब्बान : 7393) सुनन की हदीस में यह भी है कि "अबूबक्र व उ़मर उन ही में से हैं और कितने ही अच्छे मर्तबे वाले हैं।" (अबूदाऊद, किताबुल हुरूफ़ वल क़िराअत : 3987; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अ़तिया औफ़ी ज़ईफ़ रावी है। तिर्मिज़ी : 3658; इब्ने माजा : 96; अहमद : 3/27; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1130) यह जन्नतें हमेशगी की इक़ामत की हैं। जहाँ यह हमेशा अबदल आबाद रहेंगे, जो लोग अपने नफ़्स पाक रखें, गुनाहों से ख़बासत से गंदगी से, शिर्को कुफ़्र से दूर रहें, अल्लाह वाहिद की इबादत करते रहें, रसूलों की इताअ़त में ज़िन्दगी गुज़ार दें उनके लिए यही क़ाबिले रश्क मक़ामात और क़ाबिले सद मुबारकबाद इन्आम हैं, रज़क़नल्लाहु इय्याहा।

***

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰىٓ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾

तर्जुमा : "हमने मूसा (अ.) की तरफ़ वही नाज़िल की कि तू रातों रात मेरे बन्दों को ले चल और उनके लिए दरिया में ख़ुश्क रास्ता बना ले फिर न तुझे किसी के आ पकड़ने का ख़तरा न डर। (77) फ़िरऔन ने अपने लश्करों समेत उनका पीछा किया फिर तो दरिया ने उन सबको जैसा कुछ छुपा लेना चाहिए था छुपा लिया। (78) फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराही में डाल दिया और सीधा रास्ता न दिखाया।" (79)

हज़रत मूसा (عليه السلام) का क़ौम को लेकर रात को निकलना (आयत 77 से 79) : चूँकि हज़रत मूसा (عليه السلام) के उस फ़र्मान को भी फ़िरऔन ने टाल दिया था कि वह बनी इस्राईल को अपनी गुलामी से आज़ाद करके उन्हें हज़रत मूसा (عليه السلام) के सुपुर्द कर दे। इसलिए जनाब बारी तआला ने आपको हुक्म किया कि आप रातों रात उनकी बेख़बरी में तमाम बनी इस्राईल को चुपचाप लेकर यहाँ से चले जाएँ। जैसे कि इसका तफ़्सीली बयान कुरआने करीम में और बहुत सी जगह पर हुआ है। चुनाँचे हस्बे इर्शाद आपने बनी इस्राईल को अपने साथ लेकर यहाँ से हिज्रत की। सुबह जब फ़िरऔनी जागे और सारे शहर में एक बनी इस्राईल को न देखा, फ़िरऔन को ख़बर दी, वह मारे गुस्से के चक्कर खा गया और हर तरफ़ ऐलान कर दिये कि लश्कर जमा हो जाएँ और दाँत पीस पीसकर कहने लगा कि उस मुट्ठी भर जमाअत ने हमारी नाक में दम कर रखा है। आज उन सबको तहे तेग़ कर दूँगा। सूरज निकलते ही लश्कर आ मौजूद हुआ। उसी वक़्त ख़ुद सारे लश्कर को लेकर उनका पीछा करने के लिए रवाना हो गया। बनी इस्राईल दरिया के किनारे पहुँचे ही थे जो फ़िरऔनी लश्कर उन्हें दिखाई दे गया। घबराकर अपने नबी (عليه السلام) से कहने लगे कि लो हज़रत! अब क्या होगा। सामने दरिया है पीछे फ़िरऔनी लश्कर। आपने जवाब दिया कि घबराने की कोई बात नहीं, मेरी मदद पर ख़ुद मेरा रब है वह अभी मुझे राह दिखा देगा। उसी वक़्त वही रब्बानी हुई कि ऐ मूसा (عليه السلام)! दरिया पर अपनी लकड़ी मारो, वह हटकर तुम्हें रास्ते दे देगा। चुनाँचे आपने यह कहकर लकड़ी मारी कि ऐ दरिया! अल्लाह के हुक्म से तू हट जा। उसी वक़्त उसका पानी पत्थर की तरह इधर उधर जम गया और बीच में रास्ते दिखने लगे। इधर उधर पानी मिस्ल बड़े बड़े पहाड़ों के खड़ा हो गया और तेज़ और ख़ुश्क हवाओं के झोंकों ने रास्तों को बिलकुल सूखी ज़मीन के रास्तों की तरह कर दिया। न तो फ़िरऔन की पकड़ का डर रहा, न दरिया में डूब जाने का ख़तरा रहा. फ़िरऔन और उसके लश्करी यह हाल देख रहे थे। फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि उन ही रास्तों से तुम भी पार जाओ। चुनाँचे ख़ुद तमाम लश्कर के साथ उन ही राहों में उतर पड़ा। उनके उतरते ही पानी को बहने का हुक्म हो गया और चश्मे ज़दन में तमाम फ़िरऔनी डुबा दिये गए। दरिया की मौजों ने उन्हें छुपा लिया। यहाँ जो फ़र्माया कि उन्हें उस चीज़ ने ढाँप लिया जिसने ढाँप लिया यह इसलिए कि यह मशहूर मअरूफ़ है नाम लेने की ज़रूरत नहीं यानी दरिया की मौजों ने।

इसी जैसी आयत (وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوٰى ۝ فَغَشّٰهَا مَا غَشّٰى ۝) (53/नज्म : 53) है यानी क़ौमे लूत की बस्तियों को भी उसी ने दे पटका था। फिर उन पर जो तबाही आई, सो आई। अरब के अश्आर में भी ऐसी मिसालें मौजूद हैं अलग़र्ज़ फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को बहका दिया और राहे रास्त उन्हें न दिखाई। जिस तरह दुनिया में उन्हें उसने आगे बढ़कर दरिया बुर्द कर दिया उसी तरह आगे होकर क़ियामत के दिन उन्हें जहन्नम में जा झोंकेगा जो बदतरीन जगह है। (11/हूद : 98)

***

يٰبَنِىٓ إِسْرَآءِيلَ قَدْ أَنجَيْنٰكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا
عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوا مِن طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبِى ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِى فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾ وَإِنِّى لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَءَامَنَ
وَعَمِلَ صٰلِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾

तर्जुमा : "ऐ बनी इस्राईल! देखो हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी और तुमसे कोहे तूर की दाहिनी तरफ़ का वादा किया और तुम पर मन्ना सल्वा उतारे। (80) तुम हमारी दी हुई पाकीज़ा रोज़ी खाओ और उसमें हद से आगे न बढ़ो, न तुम पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा और जिस पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल हो जाए वह यक़ीनन तबाह हुआ। (81) हाँ! बेशक मैं उन्हें बख़्शने देने वाला हूँ तो तौबा करें ईमान लाएँ नेक अमल करें और राहे रास्त पर भी रहें।" (82)

जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब उतरे वह तबाह हुआ (आयत 80 से 82) : अल्लाह तबारक व तआला ने बनी इस्राईल पर जो बड़े बड़े एहसान किये थे उन्हें याद दिला रहा है। उनमें से एक तो यह है कि उन्हें उनके दुश्मनों से नजात दी और इतना ही नहीं बल्कि उनके दुश्मनों को उनके देखते हुए दरिया में डुबो दिया। एक भी उनमें से बाक़ी न बचा। जैसे फ़र्मान है (أَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ) (2/बक़रह : 50) यानी हमने तुम्हारे देखते हुए फ़िरऔनियों को डुबा दिया। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि "मदीने के यहूदियों का आशूरा के दिन को रोज़ा रखते हुए देखकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे उसकी वजह पूछी। उन्होंने जवाब दिया कि इसी दिन अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (عليه السلام) को फ़िरऔन पर कामयाब किया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर तो हमें बनिस्बत तुम्हारे उनसे ज़्यादा क़ुर्ब है। चुनाँचे आपने मुसलमानों को उस दिन के रोज़े रखने का हुक्म दिया।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह ताहा बाब (व लक़द औहैना इला मूसा अन असरि बि इबादी फ़ज़्रिब लहुम...) : 4737; सहीह मुस्लिम : 1130; अबूदाउद : 2444; अहमद : 1/291; इब्ने हिब्बान : 3625) फिर अल्लाह तआला ने अपने कलीम को कोहे तूर की दाएँ जानिब का वादा किया। आप वहाँ गए और पीछे से बनी इस्राईल ने गाय की पूजा शुरू कर दी। जिसका बयान अभी आगे आएगा, इंशाअल्लाह तआला!

इसी तरह एक एहसान उन पर यह किया कि मन्ना सल्वा खाने को दिया। उसका पूरा बयान सूरह बक़रह वग़ैरह की तफ़्सीर में गुज़र चुका है। मन्न एक मीठी चीज़ थी जो उनके लिए आसमान से उतरती थी और सल्वा एक क़िस्म के परिन्द थे जो बहुक्मे इलाही उनके सामने आ जाते थे। यह बक़द्र एक दिन की ख़ूराक के उन्हें ले लेते थे, हमारी यह दी हुई रोज़ी खाओ इसमें हद से न गुज़र जाओ। हराम चीज़ या हराम ज़रिये से इसे

न तलब करो वरना मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा। और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरे यक़ीन मानो कि वह बदबख़्त हो गया। (तब्री : 18/347) हज़रत शफ़ी बिन मानेअ (رحمه الله) फ़र्माते हैं कि जहन्नम में एक ऊँची जगह बनी हुई है जहाँ से काफ़िर को जहन्नम में गिराया जाता है तो ज़ंजीरों की जगह तक चालीस साल में पहुँचता है। यही मतलब इस आयत का है कि वह गढे में गिर पड़ा हाँ! जो भी अपने गुनाहों से मेरे सामने तौबा करे मैं उसकी तौबा क़बूल करता हूँ।

देखो! बनी इस्राईल में से जिन्होंने बछड़े की पूजा की थी उनकी तौबा के बाद अल्लाह तआला ने उन्हें भी बख़्श दिया। ग़र्ज़ जिस कुफ़्रो शिर्क गुनाह मआसियत पर कोई हो फिर वह उसे बख़ौफ़े रब्बानी छोड़ दे। अल्लाह तआला उसे माफ़ कर देता है। हाँ! दिल में ईमान हो और आमाले सालिहा भी करता हो और हो भी राहे रास्त पर, शकी (बदअमल) न हो, सुन्नते रसूल (ﷺ) और जमाअते सहाबा (रज़ि.) की रविश पर हो उसमें सवाब जानता हो। यहाँ पर सुम्म का लफ़्ज़ ख़बर की ख़बर पर तर्तीब करने के लिए आया है। जैसे फ़र्मान है (ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا) (90/बलद : 17)

***

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ
لِتَرْضٰى﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ مُوْسٰٓى
اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۬ اَفَطَالَ
عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾
قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا
فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ
وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾ اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۬ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا
نَفْعًا ﴿٨٩﴾

तर्जुमा : "मूसा (عليه السلام)! तुझे अपनी क़ौम से ग़ाफ़िल करके कौनसी चीज़ जल्दी ले आई? (83) कहा कि वह लोग भी मेरे पीछे ही पीछे हैं और मैंने ऐ रब! तेरी तरफ़ जल्दी इसलिए की कि तू ख़ुश हो जा। (84) फ़र्माया हमने तेरी क़ौम को तेरे पीछे आज़माइश में डाल दिया और उन्हें सामेरी ने बहका दिया है। (85) पस मूसा (عليه السلام) सख़्त नाराज़ होकर अफ़सोसनाकी के साथ वापिस लौटे और कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम वालों! क्या तुमसे तुम्हारे परवरदिगार ने नेक वादा नहीं किया था? क्या इसकी मुद्दत तुम्हें लम्बी मालूम हुई? बल्कि तुम्हारा इरादा ही यह है कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार का ग़ज़ब नाज़िल हो? कि तुमने मेरे वादे का ख़िलाफ़ किया। (86) उन्होंने जवाब दिया कि हमने अपने इख़्तियार से आपके साथ वादे का ख़िलाफ़ नहीं किया बल्कि हम पर जो ज़ेवरात क़ौम के लादे गये थे उन्हें हमने डाल दिया और इसी तरह सामेरी ने भी डाल दिये। (87) फिर उसने लोगों के लिए एक बछड़ा निकाल खड़ा किया यानी बछड़े का बुत जिसकी गाय की सी आवाज़ भी थी फिर कहने लगे कि यही तुम्हारा मअबूद है और मूसा (عليه السلام) का भी लेकिन मूसा (عليه السلام) भूल गया है। (88) क्या यह गुमराह लोग यह भी नहीं देखते कि वह तो उनकी बात का जवाब भी नहीं दे सकता और न उनके किसी बुरे भले का इख़्तियार रखता है।" (89)

क़ौमे मूसा की आज़माइश (आयत 83 से 89) : हज़रत मूसा (عليه السلام) जब दरिया पार करके निकल गए तो एक जगह पहुँचे, जहाँ के लोग अपने बुतों के मुजावर बनकर बैठे हुए थे। तो बनी इस्राईल कहने लगे, मूसा (عليه السلام)! हमारे लिए भी इनकी तरह कोई मअबूद मुक़र्रर कर दीजिए। आपने फ़र्माया तुम बड़े जाहिल लोग हो यह तो बर्बाद शुदा लोग हैं और उनकी इबादत भी बातिल है। फिर अल्लाह तआला ने आपको तीस रोज़ों का हुक्म दिया। फिर दस बढ़ा दिये गए पूरे चालीस हो गए। लगातार रोज़े से रहते थे। अब आप जल्दी से तूर पहाड़ की तरफ़ चले। बनी इस्राईल पर अपने भाई हारून (عليه السلام) को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया। वहाँ जब पहुँचे तो जनाब बारी तआला ने उस जल्दी की वजह पूछी। आपने जवाब दिया कि वह भी तूर के क़रीब ही हैं आ रहे हैं। मैंने जल्दी की है कि तेरी रज़ामंदी हासिल कर लूँ और उसमें बढ़ जाऊँ। अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि तेरे चले आने के बाद तेरी क़ौम में नया फ़ित्ना बरपा हुआ और उन्होंने गाय की पूजा शुरू कर दी है। उस बछड़े को सामेरी ने बनाया और उन्हें उसकी इबादत में लगा दिया है। इस्राईली किताबों में है कि सामेरी का नाम भी हारून था। हज़रत मूसा (عليه السلام) को अता करने के लिए तौरात की तख़्तियाँ लिख ली गई थीं। जैसे फ़र्मान है, (وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ) (7/आराफ़ : 145) यानी हमने उसके लिए तख़्तियों में हर बारे का तज़्किरा और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी थी और कह दिया कि इसे मज़बूती से थाम लो और अपनी क़ौम से भी कहो कि इस पर उम्दगी से अमल करें। मैं तुम्हें अन्क़रीब फ़ासिक़ों का अंजाम दिखा दूँगा। हज़रत मूसा (عليه السلام) को जब अपनी क़ौम के मुश्रिकाना हरकत का इल्म हुआ तो सख़्त रंजो ग़म व गुस्से में भरे हुए वहाँ से वापिस क़ौम की तरफ़ चले कि देखो! इन लोगों ने अल्लाह तआला के इन इन्आमात के बावजूद ऐसे सख़्त अहमक़ाना और मुश्रिकाना हरकत का इर्तिकाब किया। ग़म व अन्दोह, रंज व

गुस्सा आपको बहुत आया। वापिस आते ही कहने लगे कि देखो! अल्लाह तआला ने तुमसे तमाम नेक वादे किये थे। तुम्हारे साथ बड़े बड़े नेक सलूक व इन्आम किये। लेकिन ज़रा से वक़्फ़े में तुम अल्लाह की नेअमतों को भुला बैठे। बल्कि तुमने वह हरकत की जिससे अल्लाह तआला का ग़ज़ब तुम पर उतर पड़ा। तुमने मुझसे जो वादा किया था, उसका मुत्लक़ लिहाज़ न रखा। (तब्री : 18/350) अब बनी इस्राईल मअज़िरत करने लगे कि हमने यह काम अपने इख़्तियार से नहीं किया। बात यह है कि जो ज़ेवरात फ़िरऔनियों के हमारे पास मुस्तआर लिए हुए थे हमने बेहतर यही समझा कि उन्हें फेंक दें। चुनाँचे हमने सबके सब बतौरे परहेज़गारी के फेंक दिये।

एक रिवायत में है कि ख़ुद हज़रत हारून (ﷺ) ने एक गढ़ा खोदकर उसमें आग जलाकर उनसे फ़र्माया कि वह ज़ेवर सब इसमें डाल दो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि हज़रत हारून (ﷺ) का इरादा यह था कि सब ज़ेवर एक जगह हो जाएँ और पिघलकर डला बन जाए। फिर जब मूसा (अ.) आ जाएँ जैसा वह कहें किया जाए। सामेरी ने उसमें वह मुट्ठी डाल दी जो उसने अल्लाह तआला के क़ासिद के निशान से भरी थी और हज़रत हारून (ﷺ) से कहा कि आप अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि वह मेरी ख़्वाहिश क़बूल करे। आपको क्या ख़बर थी आपने दुआ की। उसने ख़्वाहिश यह की कि उसका बछड़ा बन जाए जिसमें से बछड़े की सी आवाज़ भी निकले। चुनाँचे वह बन गया और बनी इस्राईल के फ़ित्ने की वजह बना। पस फ़र्मान है कि इसी तरह सामेरी ने भी डाल दिया। (तब्री : 18/355) हज़रत हारून (ﷺ) एक मर्तबा सामेरी के पास से गुज़रे। वह उस बछड़े को ठीक ठाक कर रहा था। आपने पूछा, क्या कर रहे हो? उसने कहा, वह चीज़ बना रहा हूँ जो नुक़्सान दे और नफ़ा न दे। आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! ख़ुद इसे ऐसा ही कर दे और आप वहाँ से तशरीफ़ ले गए। सामेरी की दुआ से यह बछड़ा बना और आवाज़ निकालने लगा।

बनी इस्राईल बहकावे में आ गए और उसकी पूजा शुरू कर दी। उसकी आवाज़ पर यह उसके सामने सज्दे में गिर पड़ते और दूसरी आवाज़ पर सज्दे से सर उठाते। यह गिरोह दूसरे मुसलमानों को भी बहकाने लगा कि दरअसल अल्लाह यही है मूसा भूलकर और कहीं उसकी तलाश में चल दिए हैं वह यह कहना भूल गए कि तुम्हारा रब यही है। यह लोग मुजावर बनकर उसके आसपास बैठ गए। उनके दिलों में उसकी मुहब्बत रच गई। यह मअनी भी हो सकते हैं कि सामेरी अपने सच्चे अल्लाह को और अपने पाक दीने इस्लाम को भूल बैठा। उनकी बेवक़ूफ़ी देखिए कि यह इतना नहीं देखते कि वह बछड़ा तो सिर्फ़ बेजान चीज़ है।

उनको किसी बात का न तो जवाब दे, न सुने। न दुनिया आख़िरत की किसी बात का उसे इख़्तियार न कोई नफ़ा नुक़्सान उसके हाथ में। आवाज़ जो निकलती थी उसकी वजह भी सिर्फ़ यह थी कि पीछे के सूराख़ में हवा गुज़रकर मुँह के रास्ते से निकलती थी। उसी की आवाज़ आती थी। उस बछड़े का नाम उन्होंने बहमूत रख छोड़ा था। उनकी दूसरी हिमाक़त देखिए कि छोटे गुनाह से बचने के लिए बड़ा गुनाह कर लिया। फ़िरऔनियों की अमानतों से आज़ाद होने के लिए शिर्क शुरू कर दिया। यह तो वही मिसाल हुई कि किसी इराक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से पूछा कि कपड़े पर अगर मच्छर का ख़ून लग जाए तो नमाज़ हो जाएगी या नहीं? आपने फ़र्माया, इन इराक़ियों को देखो, रसूल (ﷺ) की बेटी फ़ातिमा (रज़ि.) के लख़्ते जिगर हुसैन (रज़ि.) को क़त्ल कर दें और मच्छर के ख़ून के मसले पूछते फिरें।

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ
وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ
يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ
لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَلَمْ
تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾

तर्जुमा : ''हारून (عليه السلام) ने इससे पहले ही उनसे कह दिया था कि ऐ मेरी क़ौम वालों! इस बछड़े से तो सिर्फ़ तुम्हारी आज़माइश की गई है तुम्हारा हक़ीक़ी रब तो अल्लाह रहमान ही है। पस तुम सब मेरी ताबेदारी करो और मेरी बात मानते चले जाओ। (90) उन्होंने जवाब दिया कि मूसा (عليه السلام) की वापसी तक तो हम इसी के मुजावर बने रहेंगे। (91) मूसा (عليه السلام) कहने लगे, ऐ हारून! इन्हें गुमराह होता हुआ देखते हुए तुझे किस चीज़ ने रोका था? (92) कि तू मेरे पीछे पीछे आ जाता क्या तू भी मेरे फ़र्मान का नाफ़र्मान बन बैठा? (93) हारून (عليه السلام) कहने लगे कि ऐ मेरे माँ ज़ाद भाई! मेरी दाढ़ी और सर न पकड़, मुझे तो सिर्फ़ यह ख़याल दामनगीर हुआ कि कहीं आप यह न फ़र्माएँ कि तूने बनी इस्राईल को फ़िर्क़े में डाल दिया और मेरी बात का ख़याल न किया।'' (94)

झूठे मअबूदों की पूजा एक फ़ित्ना (आयत 90 से 94) : हज़रत मूसा (عليه السلام) आएँ इससे पहले हज़रत हारून (عليه السلام) ने उन्हें हर तरह से समझाया कि देखो! फ़ित्ने में न पड़ो। रब रहमान के सिवा और के सामने न झुको। वह हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक है। सबका अंदाज़ा मुक़र्रर करने वाला वही है। वही अ़र्शे मजीद का मालिक है, वही जो चाहे कर गुज़रने वाला है। तुम मेरी ताबेदारी और हुक्म बरदारी करते रहो। जो मैं कहूँ वह बजा लाओ। जिससे रोकूँ रुक जाओ। लेकिन उन सरकशों ने जवाब दिया कि मूसा (عليه السلام) की सुनकर तो ख़ैर हम मान लेंगे। तब तक तो हम इसकी पूजा छोड़ते नहीं। चुनाँचे लड़ने और मरने मारने के वास्ते तैयार हो गए।

हज़रत मूसा (عليه السلام) की हारून (عليه السلام) पर नाराज़ी : हज़रत मूसा (عليه السلام) सख़्त गुस्से और पूरे ग़म में लौटे थे तख़्तियाँ ज़मीन पर डाल दीं और अपने भाई हारून (عليه السلام) की तरफ़ बढ़े और उनके सिर के बाल थामकर अपनी तरफ़ घसीटने लगे। इसका तफ़्सीली बयान सूरह आराफ़ में गुज़र चुका है और वहीं वह हदीस भी बयान हो चुकी है कि सुनना देखने के मुताबिक़ नहीं। आपने अपने भाई और अपने जानशीन को मलामत करनी शुरू की कि इस बुतपरस्ती के शुरू होते ही तूने मुझे क्यूँ न ख़बर की? क्या जो कुछ मैं तुझे कह गया था

तू भी उसका मुख़ालिफ़ बन बैठा? मैं तो साफ़ कह गया था कि मेरी क़ौम में मेरी जानशीनी कर इस्लाह के दर पे रह और मुफ़्सिदों की न मान।

हज़रत हारून (عليه السلام) ने जवाब देते हुए कहा कि ऐ मेरी माँज़ाद भाई यह सिर्फ़ इसलिए कि हज़रत मूसा (عليه السلام) को ज़्यादा रहम व मुहब्बत आए वरना बाप अलग अलग न थे बाप भी एक ही थे दोनों सगे भाई थे। आप उज़्र पेश करते हैं कि जी में तो मेरे भी आयी थी कि आपके पास आकर आपको इसकी ख़बर दूँ लेकिन फिर ख़्याल आया कि इन्हें अकेला छोड़ना मुनासिब नहीं, कहीं आप मुझ पर न बिगड़ बैठें कि इन्हें अकेला क्यूँ छोड़ दिया? औलादे याकूब में यह जुदाई क्यूँ डाल दी? और जो मैं कह गया था उसकी निगहबानी क्यूँ न की? बात यह है कि हज़रत हारून (عليه السلام) में जहाँ इताअत का पूरा माद्दा था वहाँ हज़रत मूसा (عليه السلام) की इज़्ज़त भी बहुत करते थे और उनका बहुत ही लिहाज़ रखते थे। (तब्री : 18/359)

***

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ
اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ
اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ
عَلَيْهِ عَاكِفًا ۚ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾ اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

तर्जुमा : "मूसा (عليه السلام) ने पूछा सामेरी तेरा क्या हाल है? (95) उसने जवाब दिया कि मुझे वह चीज़ दिखाई दी जो इन्हें दिखाई नहीं दी तो मैंने अल्लाह के भेजे हुए के नक़्शे क़दम से एक मुट्ठी भर ली उसे उसमें डाल दिया। मेरे दिल ने ही यह बात मेरे लिए बना दी। (96) कहा अच्छा जा दुनिया की ज़िन्दगी में तेरी यही सज़ा है कि तू कहता रहे कि हाथ न लगाना और एक और भी वादा तेरे साथ है जो तेरे बारे में कभी भी ख़िलाफ़ न किया जाएगा और अब तू अपने उस अल्लाह को भी देख लेना जिसका तू ऐतिकाफ़ किये हुए था कि हम उसे जलाकर दरिया में रेज़ा रेज़ा उड़ा देंगे। (97) असल बात यही है कि तुम सबका मअबूदे बरहक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है उसके सिवा कोई पूजा के क़ाबिल नहीं, उसका इल्म तमाम चीज़ों पर हावी है।" (98)

सामेरी से हज़रत मूसा (अ.) की बातचीत और बद्दुआ (आयत 95 से 98) : हज़रत मूसा (अ.) ने सामेरी से पूछा कि तूने यह फ़ित्ना क्यूँ उठाया, यह शख़्स बाजर्मा का रहने वाला था। उसकी क़ौम गाय की पूजा करती थी। उसके दिल में भी गाय की मुहब्बत घर किये हुए थी। उसने बनी इस्राईल के साथ अपने ईमान का इज़्हार किया था। उसका नाम मूसा बिन ज़फ़र था। एक रिवायत में है कि यह किरमानी था। एक रिवायत में है कि उसकी बस्ती का नाम सामुरा था। (तब्री : 18/363) उसने जवाब दिया कि जब फ़िरऔन की हलाकत के लिए जिब्रईल (अ.) आए तो मैंने उनके घोड़े के टाप तले की थोड़ी सी मिट्टी उठा ली।

अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक मशहूर बात यही है कि हज़रत अली (र.) से मरवी है कि जब हज़रत जिब्रईल (अ.) आए और मूसा (अ.) को लेकर चढ़ने लगे तो सामेरी ने देख लिया। उसने जल्दी से उनके घोड़े के टाप तले की मिट्टी उठा ली। हज़रत मूसा (अ.) को जिब्रईल (अ.) आसमान तक ले गए अल्लाह तआला ने तौरात लिखी, हज़रत मूसा (अ.) क़लम की तहरीर की आवाज़ सुन रहे थे। लेकिन जब आपको आपकी क़ौम की मुसीबत मालूम हुई तो नीचे उतर आए और उस बछड़े को जला दिया। लेकिन इस असर की सनद ग़रीब है। उसी ख़ाक की चुटकी या मुट्ठी को उसने बनी इस्राईल के जमाकर्दा ज़ेवरों के जलने के वक़्त उनमें डाल दी जो ख़ूबसूरत बछड़ा बन गए। और चूँकि बीच में खुला था, वहाँ से हवा घुसती थी और उससे आवाज़ निकलती थी। हज़रत जिब्रईल (अ.) को देखते ही उसके दिल में ख़्याल गुज़रा था कि मैं इसके घोड़े के टापों तले की मिट्टी उठा लूँ। मैं जो चाहूँगा वह उसी मिट्टी के डालने से बन जाएगा। उसकी उँगलियाँ उसी वक़्त सूख गई थीं। जब बनी इस्राईल ने देखा कि उनके पास फ़िरऔनियों के ज़ेवरात रह गए और फ़िरऔनी हलाक हो गए और यह अब उनको वापिस नहीं दे सकते तो ग़मज़दा होने लगे।

सामेरी ने कहा, देखो! इसकी वजह से तुम पर मुसीबत नाज़िल हुई हैं इसे जमा करके आग लगा दो। जब वह जमा हो गये और आग से पिघल गए तो उसके जी में आई कि वह ख़ाक उस पर डाल दे और उसे बछड़े की शक्ल में बना ले। चुनाँचे यही हुआ और उसने कह दिया कि तुम्हारा और मूसा का रब यही है। यही वह जवाब दे रहा है कि मैंने उसे डाल दिया और मेरे दिल ने यही तर्कीब मुझे अच्छी तरह समझा दी। कलीमुल्लाह (अ.) ने फ़र्माया, तूने न लेने की चीज़ को हाथ लगाया तेरी सज़ा दुनिया में यही है कि अब न तो तू किसी को हाथ लगा सके, न कोई और तुझे हाथ लगा सके, बाक़ी सज़ा तेरी क़ियामत को होगी जिससे छुटकारा नामुम्किन है। उनके बक़ाया अब तक यही कहते हैं कि न छूना।

अब तू अपने झूठे मअबूद का हश्र भी देख ले जिसकी इबादत पर औंधा पड़ा हुआ था कि हम इसे जलाकर राख कर देंगे। चुनाँचे वह सोने का बछड़ा इस तरह जल गया जैसे ख़ून और गोश्त वाला बछड़ा जले। फिर उसकी राख तेज़ हवा में दरिया में ज़र्रा ज़र्रा करके उड़ा दी। मरवी है कि उसने बनी इस्राईल की औरतों के ज़ेवर जहाँ तक उसके बस में थे लिए उनका बछड़ा बनाया जिसे हज़रत मूसा (अ.) ने फूँक दिया और दरिया में उसकी ख़ाक बहा दी। जिसने भी उसका पानी पिया उसका चेहरा पीला पड़ गया। उससे सारे गोशाला परस्त मालूम हो गए। अब उन्होंने तौबा की और हज़रत मूसा (अ.) से पूछा कि हमारी तौबा कैसे क़बूल होगी?

हुक्म हुआ कि एक दूसरों को क़त्ल करो। (हाकिम : 2/379, 380 व सनदुहू ज़ईफ़ुन) इसक पूरा बयान पहले गुज़र चुका है। फिर आपने फ़र्माया तुम्हारा मअ़बूद यह नहीं। मुस्तहिक़े इबादत तो सिर्फ़ अल्लाह तआला है बाक़ी तमाम जहान उसका मोहताज है और उसके मा-तहत है वह हर चीज़ का आलिम है। उसके इल्म ने तमाम मख़्लूक़ का एहाता कर रखा है। हर चीज़ की गिनती उसे मालूम है, एक ज़र्रा भी उसके इल्म से बाहर नहीं, हर पत्ते का और हर दाने का उसे इल्म है बल्कि उसके पास की किताब में वह लिखा हुआ मौजूद है। ज़मीन के तमाम जानदारों को रोज़ियाँ वही पहुँचाता है। सबकी जगह उसे मालूम है। सबकुछ खुली और वाज़ेह किताब में लिखा हुआ है। अल्लाह का इल्म मुहीते कुल और सब पर हावी है। इस मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं।

***

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۗ وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

तर्जुमा : ''इसी तरह हम तेरे सामने पहले की हो चुकी हुई वारदातें बयान कर रहे हैं यक़ीनन हम तो तुझे अपने पास से नसीहत अ़ता फ़र्मा चुके हैं।(99) इससे जो चेहरा फेर लेगा वह यक़ीनन क़ियामत के दिन अपना भारी बोझ लादे हुए होगा। (100) जिसमें हमेशा ही रहेगा उनके लिए क़ियामत के दिन बड़ा बुरा बोझ है।'' (101)

क़ियामत के दिन अपना अपना बोझ उठाना होगा (आयत 99 से 101) : फ़र्मान है कि जैसे हज़रत मूसा (عليه السلام) का क़िस्सा असली रंग में आपके सामने बयान हो रहा है ऐसे ही और भी गुज़रे हालात आपके सामने हम हू ब हू बयान कर रहे हैं। हमने तो आपको क़ुरआने अ़ज़ीम दे रखा है जिसके पास भी बातिल नहीं फटक सकता। क्योंकि हम हिक्मत व हम्द वाले हैं। (41/फ़ुस्सिलत : 42) किसी नबी को कोई किताब इससे ज़्यादा कमाल वाली और इससे ज़्यादा जामेअ़ और इससे ज़्यादा बाबरकत नहीं मिली। हर तरह सबसे आला किताब यही कलामुल्लाह है। जिसमें गुज़िश्ता की ख़बरें, आने वाले उमूर और हर काम के तरीक़े मज़्कूर हैं, इसे न मानने वाला इससे चेहरा फेरने वाला, इसके अहकाम से भागने वाला इसके सिवा किसी और में हिदायत तलाश करने वाला गुमराह है और जहन्नम की तरफ़ जाने वाला है। क़ियामत को वह अपना बोझ ख़ुद उठाएगा और उसमें दब जाएगा। उसके साथ जो भी कुफ़्र करे वह जहन्नमी है। किताबी हो या ग़ैर किताबी, अ़ज्मी हो या अ़रबी, उसका इंकार करने वाला जहन्नमी है। जैसे फ़र्मान है कि मैं तुम्हें भी होशियार करने वाला हूँ और जिसे भी यह पहुँचे। (6/अन्आम : 19) पस उसका मानने वाला हिदायत वाला और उसका मुख़ालिफ़ ज़लालत व शक़ावत वाला जो यहाँ बर्बाद हुआ और वहाँ दोज़ख़ी बना। उस अ़ज़ाब से न तो उसे कभी छुटकारा मिलेगा न बच सके, बुरा बोझ है जो उस पर उस दिन होगा।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

तर्जुमा : ''जिस दिन सूर फूँक दिया जाएगा और गुनहगारों को हम उस दिन नीली पीली आँखों के करके घेर लाएँगे। (102) आपस में चुपके चुपके कह रहे होंगे कि हम तो सिर्फ़ दस दिन ही रहे। (103) जो कुछ वह कह रहे हैं उसकी हक़ीक़त को हम ही जानते हैं, उनमें सबसे ज़्यादा अच्छी राह वाला कह रहा होगा कि तुम तो सिर्फ़ एक ही दिन रहे।'' (104)

जब सूर फूँका जाएगा (आयत 102 से 104) : रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल होता है कि सूर क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''वह एक क़र्न है जो फूँका जाएगा।'' (अबूदाउद, किताबुस्सुन्ना, बाब ज़िक्रुल बअ़स वस्सूर : 4742; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 3244; इब्ने हिब्बान : 7312; हाकिम : 2/436; अहमद : 2/162) और हदीस में है कि ''उसका दायरा बक़द्रे आसमानों और ज़मीनों के है।'' हज़रत इस्राफ़ील (عليه السلام) उसे फूँकेंगे। (इसका हुक्म सूरतुल कहफ़ में आयत नम्बर 99 के तहत गुज़र चुका है।) और रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मैं कैसे आराम करूँ हालाँकि सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते ने सूर का लुक़्मा बना लिया है, पेशानी झुका दी है और इंतिज़ार में है कि कब हुक्म दिया जाए।'' लोगों ने कहा, फिर हुज़ूर (ﷺ) हम क्या पढ़ें? फ़र्माया, कहो (हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकीलु अलल्लाहि तवक्कल्ना) (इसकी तख़रीज भी सूरतुल कहफ़ आयत नम्बर 99 में गुज़र चुकी है।) उस वक़्त तमाम लोगों का हश्र होगा। मारे डर और घबराहट के गुनहगारों की आँखें केरी हो रही होंगी। एक दूसरे से पोशीदा पोशीदा कह रहे होंगे कि दुनिया में तो हम बहुत ही कम रहे और ज़्यादा से ज़्यादा शायद दस दिन वहाँ गुज़रे होंगे, हम उनकी उस राज़दारी की बातचीत को भी बख़ूबी जानते हैं जबकि उनमें का बड़ा आक़िल और कामिल इंसान कहेगा कि मियाँ! दस भी कहाँ के? हम तो सिर्फ़ एक दिन ही दुनिया में रहे।

ग़र्ज़ कुफ़्फ़ार को दुनिया की ज़िन्दगी एक सपने की तरह मालूम होगी। उस वक़्त वह क़समें खा खाकर कहेंगे कि सिर्फ़ एक साअ़त ही दुनिया में हम तो ठहरे होंगे। चुनाँचे और आयत में है (اَوَ لَمْ نُعَمِّرْكُمْ) (35/फ़ातिर : 37) हमने तुम्हें इब्रत हासिल करने के क़ाबिल उम्र भी दी थी। फिर होशियार करने वाले भी तुम्हारे पास आ चुके थे। और आयतों में है कि इस सवाल पर कि तुम कितना अ़र्सा ज़मीन पर गुज़ार आए? उनका जवाब है कि एक दिन बल्कि उससे भी कम। (23/मोमिनून : 113) फ़िल वाक़ेअ़ दुनिया है भी आख़िरत के मुक़ाबले में एसी ही। लेकिन अगर इसी बात को पहले से समझ लेते तो इसे फ़ानी दुनिया को उस बाक़ी आख़िरत पर इस थोड़ी को बहुत पर पसंद न करते बल्कि आख़िरत का सामान इस दुनिया में करते।

***

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

तर्जुमा : ''तुझसे पहाड़ों की निस्बत सवाल करते हैं सो तू कह दे कि इन्हें मेरा रब चूरा चूरा करके उड़ा देगा। (105) और ज़मीन को बिलकुल हमवार साफ़ मैदान कर छोड़ेगा। (106) जिसमें तू न कहीं मोड़ देखेगा न ऊँच नीच। (107) जिस दिन पुकारने वाले के पीछे चलेंगे जिसमें कोई कजी न होगी। अल्लाह रहमान के सामने तमाम आवाज़ें झुक जाएँगी सिवाय खुसर फुसर के तुझे कुछ भी सुनाई न देगा।'' (108)

पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे (आयत 105 से 108) : लोगों ने पूछा कि क़ियामत के दिन यह पहाड़ बाक़ी रहेंगे या नहीं? उनका सवाल नक़्ल करके जवाब दिया जाता है कि यह हट जाएँगे और मिट जाएँगे, चलते फिरते नज़र आएँगे और आख़िर रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे ज़मीन साफ़ चटयल हमवार मैदान की सूरत में हो जाएँगी। क़ाअन के मअनी हमवार साफ़ मैदान (सफ़्सफ़न) इसी की ताकीद है। और सफ़सफ़ के मअनी बग़ैर रूइदगी की ज़मीन के भी हैं। लेकिन पहले मअनी ज़्यादा अच्छे हैं और दूसरे मअनी मुरादी और लाज़मी हैं, न उसमें कोई वादी रहेगी, न टीला, न ऊँचान रहेगी, न नीचाई। (तब्री : 18/372) इन दहशतनाक उमूर के साथ ही एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा। जिसकी आवाज़ पर सारी मख़्लूक़ लग जाएगी। दौड़ती हुई हस्बे फ़र्मान एक तरफ़ चली जा रही होगी। न इधर न उधर होगी, न टेढ़ी बाँकी चलेगी। काश! कि यही रविश दुनिया में रखते और अल्लाह तआला के अह्काम की बजाआवरी में मशग़ूल रहते। लेकिन आज की यह रविश बिलकुल बेकार है।

उस दिन तो ख़ूब देखते सुनते बन जाएँगे और आवाज़ के साथ हुक्मबरदारी करेंगे। अंधेरी जगह हश्र होगा। आसमान लपेट लिया जाएगा। सितारे झड़ जाएँगे। सूरज चाँद मिट जाएँगे, आवाज़ देने वाले की आवाज़ पर सब चल खड़े होंगे। उस एक मैदान में सारी मख़्लूक़ जमा होगी। मगर उस ग़ज़ब का सन्नाटा होगा कि दाबे रब्बानी की वजह से एक आवाज़ न उठेगी। बिलकुल सुकून और सुकूत होगा सिर्फ़ पैरों की चाप होगी और कानाफूसी। (तब्री :18/374) चलकर जा रहे होंगे तो पैरों की चाप तो ला महाला होनी ही है। और बइजाज़ते बारी तआला कभी कभी किसी किसी हाल में बोलेंगे भी लेकिन चलना भी बाअदब और बोलना भी बाअदब। जैसे इर्शाद है (يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ) (11/हूद : 105) यानी जिस दिन वह मेरे सामने हाज़िर होंगे किसी की मजाल न होगी कि बग़ैर मेरी इजाज़त के ज़ुबान खोले। कुछ नेक होंगे और कुछ बुरे होंगे।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ
خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا
هَضْمًا ﴿١١٢﴾

तर्जुमा : ''उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आएगी मगर जिसे रहमान हुक्म दे और उसकी बात को पसंद करे। (109) जो कुछ उनके आगे पीछे है उसे अल्लाह तआला ही जानता है मख़्लूक़ का इल्म उस पर हावी नहीं हो सकता। (110) तमाम चेहरे उस ज़िन्दा और ख़बर रखने वाले अल्लाह तआला के सामने कमाल आजिज़ी से झुके हुए हैं, यक़ीनन वह बर्बाद हुआ जिसने ज़ुल्म लाद लिया। (111) और जो नेक आमाल करे और हो भी ईमानदार, न उसे बेइंसाफ़ी का खटका होगा, न हक़तल्फ़ी का।'' (112)

क़ियामत के दिन सिफ़ारिश का बयान (आयत 109 से 112) : क़ियामत के दिन किसी की मजाल न होगी कि दूसरे के लिए सिफ़ारिश करे जिसे अल्लाह तआला इजाज़त दे न आसमान के फ़रिश्ते बेइजाज़त किसी की सिफ़ारिश कर सकें न और कोई बुज़ुर्ग बन्दा। सबको ख़ुद ख़ौफ़ लगा होगा। बग़ैर इजाज़त किसी की सिफ़ारिश न होगी। फ़रिश्ते और रूह सफ़ बनाकर खड़े होंगे। बग़ैर इजाज़ते इलाही कोई लब न खोल सकेगा। ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) भी अर्श तले अल्लाह तआला के सामने सज्दे में गिर पड़ेंगे। अल्लाह तआला की ख़ूब हम्दो सना करेंगे। देर तक सज्दे में पड़े रहेंगे। फिर अल्लाह तआला कहेगा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अपना सर उठाओ, कहो तुम्हारी बात सुनी जाएगी, सिफ़ारिश करो क़बूल की जाएगी। फिर हद मुक़र्रर होगी, आप उनकी सिफ़ारिश करके जन्नत में ले जाएँगे। फिर लौटेंगे फिर यही होगा। चार मर्तबा यही होगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नार : 6565; सहीह मुस्लिम : 193) सल्वातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि व अला साइरिल अम्बिया। और हदीस में है ''हुक्म होगा कि जहन्नम से उन लोगों को भी निकाल लाओ जिनके दिल में एक मिस्क़ाल (राईके दाने के बराबर) ईमान हो। पस बहुत से लोगों को निकाल लाएँगे। फिर कहेगा जिसके दिल में आधा मिस्क़ाल ईमान हो, उसे भी निकाल लाओ। जिसके दिल में बक़द्रे एक ज़र्रा के ईमान हो उसे भी निकाल लाओ। जिसके दिल में उससे भी कम उससे भी कम उससे भी कम ईमान हो उसे भी जहन्नम से आज़ाद करो, आख़िर तक।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वुजूहुंय्यौमइज़िन् नाज़िरा, इला रब्बिहा नाज़िरा) : 7439; सहीह मुस्लिम : 183) उसने तमाम मख़्लूक़ का अपने इल्म में एहाता कर रखा है।

मख़्लूक़ उसके इ ल्म का एहाता कर ही नहीं सकती। जैसे फ़र्मान है उसके इल्म में से सिर्फ़ वही मालूम कर सकते हैं जो वह चाहे। तमाम मख़्लूक़ के चेहरे आजिज़ी पस्ती व ज़िल्लत व नर्मी के साथ उसके सामने पस्त हैं। इसलिए कि वह मौत व फ़ौत से पाक है। हमेशा से है और हमेशा ही रहने वाला है न वह सोये न ऊँघे। ख़ुद अपने आप क़ायम रहने वाला और हर चीज़ को अपनी तदबीर से क़ायम करने वाला है। सबकी देखभाल हिफ़ाज़त और संभाल वही करता है वह तमाम कमालात रखता है और सारी मख़्लूक़ उसकी मोहताज है। बग़ैर रब की मर्ज़ी के न पैदा हो सके, न बाक़ी रह सके। जिसने यहाँ ज़ुल्म किये होंगे वह वहाँ बर्बाद होगा। क्योंकि हर हक़दार को अल्लाह तआला उस दिन उसका हक़ दिलवाएगा। यहाँ तक कि बग़ैर सींग वाली बकरी को सींग वाली बकरी से भी बदला दिलवाया जाएगा। हदीसे क़ुदसी में है कि "अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल कहेगा, मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! किसी ज़ालिम के ज़ुल्म को अपने सामने से न गुज़रने दूँगा।" (मुस्नदे शामिय्यीन : 1/206) सहीह हदीस में है "लोगों ज़ुल्म से बचो, ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरियाँ बनकर आएगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2578) और सबसे बढ़कर नुक़सान याफ़्ता होगा। जो अल्लाह तआला से शिर्क करता हुआ मिला, वह तबाह व बर्बाद हुआ इसलिए कि शिर्क ज़ुल्मे अज़ीम है।" ज़ालिमों का बदला बयान करके मुत्तक़ियों का सवाब बयान हो रहा है कि न उनकी बुराइयाँ बढ़ाई जाएँ, न उनकी नेकिया घटाई जाएँ। (तबरी : 18/379) गुनाह की ज़्यादती और नेकी की कमी से वह बे खटके हैं।

***

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ
ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ
وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾

तर्जुमा : "इसी तरह हमने तुझ पर अरबी क़ुरआन नाज़िल किया है और तरह तरह से इसमें डर का बयान सुनाया है ताकि लोग परहेज़गार बन जाएँ या उनके दिल में यह सोच समझ तो पैदा करे। (113) पस अल्लाह तआला आली शान वाला सच्चा और हक़ीक़ी बादशाह है। तू क़ुरआन पढ़ने में जल्दी न किया कर इससे पहले कि तेरी तरफ़ जो वही की जाती है वह पूरी की जाए। हाँ! यह दुआ करता रह कि परवरदिगार! मेरा इल्म बढ़ाता रह।" (114)

क़ुरआन बरहक़ और अल्लाह तआला की वही है (आयत 113, 114) : चूँकि क़ियामत का दिन आना ही है और उस दिन नेक व बुरे आमाल का बदला मिलना ही है लोगों को होशियार करने के लिए हमने बशारत वाला और धमकाने वाला अपना पाक कलाम अरबी साफ़ ज़ुबान में उतारा ताकि हर शख़्स समझ सके

और इसमें तरह तरह से डरावे सुनाए ताकि लोग बुराइयों से बचें, भलाइयों के हासिल करने में लग जाएँ। या उनके दिलों में फ़िक्र व नसीहत व पंद पैदा हो। इताअत की तरफ़ झुक जाएँ, नेक कामों की कोशिश में लग जाएँ, पस पाक और बरतर है वह अल्लाह तआला जो हक़ीक़ी शहनशाह है। दोनों जहाँ का तंहा मालिक है। वह ख़ुद हक़ है उसका वादा हक़ है उसकी वईद हक़ है। उसके रसूल हक़ हैं, जन्नत दोज़ख़ हक़ है, उसके सब फ़र्मान और उसकी तरफ़ से जो हो सरासर अदल व हक़ है। उसकी ज़ात उससे पाक है कि आगाह किये बग़ैर किसी को सज़ा दे। वह सबके उज़्र काट देता है किसी से शुब्हा को बाक़ी नहीं रखता, हक़ को खोल देता है। फिर सरकशों को अदल के साथ सज़ा देता है। जब हमारी वही उतर रही हो उस वक़्त तुम हमारे कलाम को पढ़ने में जल्दी न करो पहले पूरी तरह सुन लिया करो।

जैसे सूरह क़ियामा में फ़र्माया (لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ) (75/क़ियामा : 16) यानी जल्दी करके भूल जाने के डर से वही उतरते हुए साथ ही साथ उसे न पढ़ने लगो। इसका आपके सीने में जमा करना और आपकी ज़ुबान से तिलावत कराना हमारे ज़िम्मे है। जब हम इसे पढ़ें तो आप उस पढ़ने के ताबेअ हो जाएँ। फिर इसका समझा देना भी हमारे ज़िम्मे है। हदीस में है कि "पहले आप (ﷺ) हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) के साथ साथ पढ़ते थे। जिसमें आपको दिक़्क़त होती थी। जब यह आयत उतरी आप (عليه السلام) उस मुशक़्क़त से छूट गए। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वही, बाब कैफ़ा काना बदअल वही इला रसूलिल्लाहि : 5; सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात : 448) और इत्मिनान हो गया कि वही इलाही जितनी नाज़िल होगी मुझे याद हो जाया करेगी, एक हर्फ़ भी न भूलूँगा क्योंकि अल्लाह तआला का वादा हो चुका।" यही फ़र्मान यहाँ है कि फ़रिश्ते की क़िरअत आराम से सुनो, जब वह पढ़ चुके फिर तुम पढ़ो और मुझसे अपने इल्म की ज़्यादती की दुआ किया करो। चुनाँचे आपने दुआ की, अल्लाह तआला ने क़बूल की और इंतिक़ाल तक इल्म में बढ़ते ही रहे। (ﷺ) हदीस में है कि वही बराबर पे दर पे आती रही। यहाँ तक कि जिस दिन आप (ﷺ) फ़ौत होने को थे उस दिन भी बकसरत वही उतरी। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब कैफ़ा नुज़ुलुल वही व अव्वलु मा नुज़िला : 4982; सहीह मुस्लिम : 3016) इब्ने माजा की हदीस में है कि हुज़ूर (स) की यह दुआ मंक़ूल है (अल्लाहुम् मन्फ़अनी बिमा अल्लम्तनी व अल्लिम्नी मा यंफ़उनी व ज़िदनी इल्मन वल हम्दु लिल्लाहि अला कुल्लि हालिन) तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है और आख़िर में यह अल्फ़ाज़ ज़्यादा हैं (व अऊज़ुबिल्लाहि मिन हालि अहलिन्नार) (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब (सबक़ल मुफ़रिदून...) : 3599; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मूसा बिन उबैदह और मुहम्मद बिन साबित दोनों रावी ज़ईफ़ हैं।)

***

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَىٰٓ ءَادَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُۥ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ
ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ أَبَىٰ ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يَٰٓـَٔادَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ
فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ ٱلْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰٓ ﴿١١٧﴾ إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ﴿١١٨﴾ وَأَنَّكَ لَا
تَظْمَؤُا۟ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ ٱلشَّيْطَٰنُ قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ
ٱلْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ﴿١٢٠﴾ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا
مِن وَرَقِ ٱلْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰٓ ءَادَمُ رَبَّهُۥ فَغَوَىٰ ﴿١٢١﴾ ثُمَّ ٱجْتَبَٰهُ رَبُّهُۥ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿١٢٢﴾

तर्जुमा : ''हमने आदम (عليه السلام) को पहले ही ताकीदी हुक्म दे दिया था लेकिन वह भूल गया हमने उसका कोई क़सद नहीं पाया। (115) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा बाकी सबने सज्दा किया, उसने साफ़ इंकार कर दिया। (116) तो हमने कह दिया कि ऐ आदम! यह तेरा और तेरी बीवी का दुश्मन है ख़्याल रखना ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे कि तू मशक़्क़त में पड़ जाए। (117) यहाँ तो तुझे यह आराम है कि न तो तू भूखा हो, न नंगा। (118) और न तो तू यहाँ प्यासा हो, न धूप से तक्लीफ़ उठा। (119) लेकिन शैतान ने उसे वस्वसे में डाल दिया, कहने लगा कि क्या मैं तुझे हमेशा की ज़िन्दगी का दरख़्त और वह बादशाहत बतलाऊँ कि जो कभी पुरानी न हो। (120) चुनाँचे उन दोनों ने उस दरख़्त से कुछ खा लिया तो उन पर अपने पर्दे की चीज़ें खुल गईं अब जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे, आदम ने अपने रब की नाफ़र्मानी की तो बहक गया। (121) फिर उसे उसके रब ने नवाज़ा, उसकी तरफ़ तवज्जा की और उसकी रहनुमाई की।'' (122)

इंसान ख़ता (ग़लतियों) का पुतला है (आयत 115 से 122) : हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, इंसान को इंसान इसलिए कहा जाता है कि इसे जो हुक्म सबसे पहले फ़र्माया गया यह उसे भूल गया। (तब्री : 18/383) मुजाहिद और हसन (रहि.) फ़र्माते हैं कि इस हुक्म को हज़रत आदम (عليه السلام) ने छोड़ दिया। (तब्री : 18/383) फिर हज़रत आदम (عليه السلام) की शराफ़त व बुज़ुर्गी का बयान हो रहा है। सूरह बक़रह, सूरह आराफ़, सूरह हिज्र, और सूरह कहफ़ में शैतान के सज्दा न करने वाले वाक़िया की पूरी तफ़्सीर हो चुकी है और सूरह साद में भी इसका बयान आएगा, इंशाअल्लाह तआला। इन तमाम सूरतों में हज़रत आदम (عليه السلام) की पैदाइश का फिर उनकी बुज़ुर्गी के इज़्हार के लिए फ़रिश्तों को उन्हें सज्दा करने के हुक्म का और इब्लीस की

मख़्फ़ी अ़दावत के इज़्हार का बयान हुआ है। उसने तकब्बुर किया और हुक्मे इलाही का इंकार कर दिया। उस वक़्त हज़रत आदम (عليه السلام) को समझा दिया कि देख यह तेरा और तेरी बीवी हज़रत हव्वा (عليها السلام) का दुश्मन है इसके बहकावे में न आ जाना, वरना महरूम होकर जन्नत से निकाल दिये जाओगे और सख़्त मशक़्क़त में पड़ जाओगे। रोज़ी की तलाश में मेहनत सर पड़ जाएगी, यहाँ तो बेमेहनत व मशक़्क़त रोज़ी पहुँच रही है। यहाँ तो नामुम्किन है कि भूखे रहो। नामुम्किन है कि नंगे रहो, इस अंदरूनी और बैरूनी तक्लीफ़ से बचे हुए हो। फिर यहाँ न प्यास की गर्मी अंदरूनी तौर से सताये न धूप की तेज़ी की गर्मी बैरूनी तौर पर परेशान करे। अगर शैतान के बहकावे में आ गए तो यह राहतें छीन ली जाएँगी और उनके मुक़ाबिल की तक्लीफ़ें सामने आ जाएँगी लेकिन शैतान ने अपने जाल में उन्हें फांस लिया और मक्कारी से उन्हें अपनी बातों में ले लिया। क़समें खा खाकर उन्हें अपनी ख़ैरख़्वाही का यक़ीन दिला दिया। पहले ही से अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उनसे फ़र्मा दिया था कि जन्नत के तमाम मेवे खाना लेकिन उस दरख़्त के क़रीब भी न जाना। मगर शैतान ने उन्हें इस क़द्र फ़ुसलाया कि आख़िरकार यह उस दरख़्त में से खा बैठे। उसने धोखे करते हुए उनसे कहा कि जो इस दरख़्त को खा लेता है वह हमेशा यहीं रहता है। सादिक़ मस्दूक़ हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जन्नत में एक दरख़्त है जिसके साये तले सवार सौ साल तक चला जाएगा लेकिन वह ख़त्म न होगा उसका नाम शजरतुल ख़ुल्द है।" (अहमद : 2/455; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबुज़्ज़ह्हाक मज्हूलुल हाल रावी है।)

दोनों ने दरख़्त में से कुछ खाया ही था जो लिबास उतर गया और बदन के हिस्से ज़ाहिर हो गए। इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम (عليه السلام) को गंदुमी रंग का लम्बे क़द व क़ामत वाला ज़्यादा बालों वाला बनाया था। खजूर के दरख़्त जितना क़द था। मम्नूअ दरख़्त को खाते ही लिबास छिन गया। अपने सतर को देखते ही मारे शर्म के इधर उधर छुपने लगे, एक दरख़्त में बाल उलझ गए, जल्दी से छुड़ाने की कोशिश कर ही रहे थे जो अल्लाह तआ़ला ने आवाज़ दी कि ऐ आदम (عليه السلام)! क्या मुझसे भाग रहा है? कलामे रहमान सुनकर अदब से अ़र्ज़ किया कि ऐ परवरदिगार! मारे शर्मिन्दगी के सर छुपाता हूँ। अच्छा! यह तो फ़र्मा दे कि तौबा और रुजूअ के बाद भी जन्नत में पहुँच सकता हूँ? जवाब मिला कि हाँ! (इब्ने अबी हातिम : 1/99; तब्री : 12/354; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यह रिवायत मुन्क़तअ़ है हसन का उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं और अ़ली बिन आ़सिम वासती मुतकल्लम फ़ीह रावी है। (अल्मीज़ान : 3/135; रक़म) यही मअ़नी हैं अल्लाह तआ़ला के इस फ़र्मान के कि आदम (عليه السلام) ने अपने रब से चंद कलिमात ले लिये जिसकी बिना पर अल्लाह तआ़ला ने उसे फिर से अपनी मेहरबानी में ले लिया।" यह रिवायत मुंक़तअ़ है और इसके मरफ़ूअ होने में भी कलाम है। जब हज़रत आदम (عليه السلام) और हज़रत हव्वा (عليها السلام) से लिबास छिन गया तो अब जन्नत के दरख़्तों के पत्ते अपने जिस्म पर चिपकाने लगे।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अंजीर के पत्तों से अपने आपको छुपाने लगे। अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानी की वजह से राहे रास्त से हट गए। लेकिन आख़िरकार अल्लाह तआ़ला ने फिर उनकी रहनुमाई की। तौबा क़बूल की और अपने ख़ास बन्दों में शामिल कर लिया। सहीह बुख़ारी वग़ैरह में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "हज़रत मूसा और हज़रत आदम (عليهما السلام) में बातचीत हुई। हज़रत मूसा (عليه السلام) फ़र्माने लगे आपने अपने गुनाह की वजह से तमाम इंसानों को जन्नत से निकलवा दिया और उन्हें मशक़्क़त में डाल दिया। हज़रत आदम

(ﷺ) ने जवाब दिया, ऐ मूसा (ﷺ)! आपको अल्लाह तआला ने अपनी रिसालत से और अपने कलाम से मुमताज़ फ़र्माया। आप मुझे उस बात पर इल्ज़ाम देते हैं जिसे अल्लाह तआला ने मेरी पैदाइश से पहले ही मुक़द्दर और मुक़र्रर कर ली थी। पस हज़रत आदम (ﷺ) ने उस बातचीत में हज़रत मूसा (ﷺ) को लाजवाब कर दिया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह ताहा, बाब (फ़ला युख़्रिजन्नकुमा मिनल जन्नति फ़तश्क़ा) : 4738; सहीह मुस्लिम : 2652; अबूदाउद : 701; इब्ने माजा : 80; अहमद : 2/248; इब्ने हिब्बान : 6180)

और रिवायत में हज़रत मूसा (ﷺ) का यह भी फ़र्मान है कि ''आपको अल्लाह तआला ने अपने हाथ से पैदा किया था और आप में आपकी रूह उसने फूँकी थी और आपके सामने अपने फ़रिश्तों को सज्दा कराया था और आपको अपनी जन्नत में बसाया था। हज़रत आदम (ﷺ) के उस जवाब में यह भी मरवी है कि अल्लाह तआला ने आपको वह तख़्तियाँ दीं जिनमें हर चीज़ का बयान था और सरगोशी करते हुए आपको अपने क़रीब कर लिया। बतलाओ अल्लाह तआला ने तौरात कब लिखी थी? जवाब दिया चालीस साल पहले। पूछा क्या उसमें यह लिखा हुआ था कि आदम (ﷺ) ने अपने रब की नाफ़र्मानी की और राह भूल गया। कहा हाँ! फ़र्माया फिर तुम मुझे इस अम्र का इल्ज़ाम क्यूँ देते हो? जो मेरी तक़्दीर में अल्लाह तआला ने मेरी पैदाइश से भी चालीस साल पहले लिख दिया था।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब हिजाजे आदम व मूसा (ﷺ) : 2652)

***

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ
هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا
وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ
كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنسَىٰ ﴿١٢٦﴾

तर्जुमा : ''फ़र्माया तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन हो अब तुम्हारे पास जब कभी मेरी तरफ़ से हिदायत पहुँचे तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करे, न तो वह बहकेगा, न तक्लीफ़ में पड़ेगा। (123) हाँ! जो मेरी याद से रूगर्दानी करे उसकी ज़िन्दगी तंगी में रहेगी और हम उसे क़ियामत के दिन अंधा करके उठाएँगे। (124) वह कहेगा कि ऐ अल्लाह! मुझे तूने अंधा बनाकर क्यूँ उठाया? हालाँकि मैं तो देखता भालता था। (125) जवाब मिलेगा कि इसी तरह होना चाहिए था तूने मेरी आई हुई आयतों से ग़फ़्लत बरती। आज तेरी भी मुत्लक़न ख़बर न ली जाए।'' (126)

हज़रत आदम व हव्वा (عليهما السلام) को जन्नत से निकाला गया (आयत 123 से 126) : हज़रत आदम व हव्वा (عليهما السلام) और इब्लीस लईन से उसी वक़्त फ़र्मा दिया गया कि तुम सब जन्नत से निकल जाओ। सूरह बक़रह में उसकी पूरी तफ़्सीर गुज़र चुकी है। तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन हो यानी औलादे आदम और औलादे इब्लीस। तुम्हारे पास मेरे रसूल और मेरी किताबें आएँगी। मेरी बताई हुई राह की पैरवी करने वाले न तो दुनिया में रुस्वा होंगे न आख़िरत में ज़लील होंगे हाँ! हुक्मों के मुख़ालिफ़ मेरे रसूलों की राह के तारिक और राहों के सालिक (चलने वाले) दुनिया में भी तंग रहेंगे, इत्मिनान और कुशादा दिली मयस्सर न होगी। अपनी गुमराही की वजह से तंगियों में ही रहेंगे। भले बज़ाहिर खाने पीने पहनने ओढ़ने रहने सहने की फ़राख़ी हो लेकिन दिल में यक़ीन व हिदायत न होने की वजह से हमेशा शक व शुब्हा और तंगी और क़िल्लत में ही मुब्तला रहेंगे। बदनसीब रहमते इलाही से महरूम ख़ैर से ख़ाली क्योंकि अल्लाह तआला पर ईमान नहीं। उसके वादों का यक़ीन नहीं। मरने के बाद नेअमतों में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह तआला के साथ बदगुमान हैं। गई हुई चीज़ को आने वाली नहीं समझते। ख़बीस रोज़ियाँ हैं। गंदे अमल हैं। क़ब्र तंग व तारीक है। वहाँ इस तरह दबोचा जाएगा कि दाएँ पसलियाँ बाएँ में और बाएँ तरफ़ की दाएँ तरफ़ में घुस जाएँगी। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मोमिन की क़ब्र हरा भरा सब्ज़ बाग़ीचा है। सत्तर हाथ कुशादा है। ऐसा मालूम होता है गोया चाँद उसमें हैं ख़ूब नूर और रोशनी फैल रही है जैसे चौदहवीं रात का चाँद चढ़ा हुआ हो। इस आयत का शाने नुज़ूल मालूम है कि मेरे ज़िक्र से मुँह फेरने वालों की मईशत तंग है उससे मुराद काफ़िर की क़ब्र में उस पर अज़ाब है। अल्लाह की क़सम! इस पर निन्मान्वे अज्दहे मुक़र्रर किये जाते हैं। हर एक के साथ सात सर होते हैं जो उसे क़ियामत तक डसते रहते हैं।'' (इब्ने हिब्बान : 3122) इस हदीस का मरफ़ूअ होना बिलकुल मुंकर है।

एक उम्दा सनद से भी मरवी है कि इससे मुराद अज़ाबे क़ब्र है। (हाकिम : 2/381; वसनदुहू हसन) यह क़ियामत के दिन अंधा बनाकर उठाया जाएगा सिवाए जहन्नम के कोई चीज़ उसे नज़र न आएगी। नाबीना होगा और मैदाने हश्र की तरफ़ चला जाएगा और जहन्नम के सामने खड़ा कर दिया जाएगा जैसे फ़र्मान है (وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ) (17/बनी इस्राईल : 97) यानी हम इन्हें क़ियामत के दिन औंधे मुँह अंधे गूँगे बहरे बनाकर हश्र में ले जाएँगे। उनका असली ठिकाना दोज़ख़ है, यह कहेंगे कि मैं तो दुनिया में आँखों वाला ख़ूब देखता भालता था फिर मुझे अंधा क्यूँ कर दिया गया? जवाब मिलेगा कि यह बदला है अल्लाह की आयतों से मुँह मोड़ लेने का और ऐसा हो जाने का गोया ख़बर ही नहीं। पस आज हम भी तेरे साथ ऐसा मामला करेंगे कि जैसे तू हमारी याद से उतर गया।

जैसे फ़र्मान है (فَالْيَوْمَ نَنْسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا) (7/आराफ़ : 51) आज हम इन्हें ठीक उसी तरह भुला देंगे जैसे इन्होंने आज के दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था। पस यह बराबर का और अमल की तरह का बदला है। क़ुरआन पर ईमान रखते हुए उसके अहकाम के आमिल होते हुए किसी शख़्स से अगर उसके अल्फ़ाज़ हिफ़्ज़ से निकल जाएँ तो वह इस वईद में दाख़िल नहीं उसके लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''वह क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से जुज़ामी होने की हालत में मुलाक़ात करेगा।'' (अहमद : 5/285; अबूदाउद, किताबुल वित्र, बाब अत्तशदीदु फ़ीमन हफ़िज़ल क़ुरआन सुम्म नसियहू : 1474; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ और ईसा बिन फ़ाइद मज्हूल रावी है। अल्बज़्ज़ार : 1642)

وَ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝۱۲۷
اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝۱۲۸ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ۝۱۲۹
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ
وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ۝۱۳۰

तर्जुमा : ''हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं हर उस शख़्स को जो हद से गुज़र जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब निहायत ही सख़्त और बहुत देर पा है। (127) क्या इनकी रहबरी इस बात ने भी नहीं की कि हमने इनसे पहले बहुत सी बस्तियाँ हलाक कर दी हैं जिनके रहने सहने की जगह यह चल फिर रहे हैं। यक़ीनन इसमें अ़क़्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं। (128) अगर तेरे रब की बात पहले ही से मुक़र्ररशुदा और वक़्त तय न होता तो अभी ही अ़ज़ाब आ चिमटता। (129) पस इनकी बातों पर सब्र कर और अपने परवरदिगार की तस्बीह़ और तअ़रीफ़ बयान करता रह, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले रात के मुख़्तलिफ़ वक़्तों में भी और दिन के हिस्सों में भी तस्बीह़ करता रह बहुत मुम्किन है कि तू राज़ी हो जाए।'' (130)

आख़िरत के अ़ज़ाब बहुत सख़्त है (आयत 127 से 130) : जो हुदूदे रब्बानी की परवाह न करें अल्लाह तआ़ला की आयतों को झुठलाएँ उन्हें हम इसी त़रह़ दुनिया और आख़िरत में मुब्तला करते हैं। ख़ुसूसन आख़िरत का अ़ज़ाब तो बहुत ही भारी है और वहाँ कोई न होगा जो बचा सके। दुनिया के अ़ज़ाब न तो सख़्ती में उसके मुक़ाबले के हैं न मुद्दत में वह हमेशा और निहायत अलमनाक हैं। मुलाइना करने वालों को समझाते हुए रसूले मक़्बूल (ﷺ) ने यही फ़र्माया था कि ''दुनिया की सज़ा आख़िरत के अ़ज़ाबों के मुक़ाबले में बहुत ही हल्की और नाचीज़ है।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम किताबुल्लिआन : 1493)

पहली क़ौमों का ज़िक्र : जो लोग तुझे नहीं मान रहे और तेरी शरीअ़त का इंकार कर रहे हैं क्या वह इस बात से भी इब्रत ह़ासिल नहीं करते कि इनसे पहले जिन्होंने यह ढंग निकाले थे हमने उन्हें तबाह व बर्बाद कर दिया। आज उनकी एक आँख झपकती हुई और एक साँस चलता हुआ और एक ज़ुबान बोलती हुई बाक़ी नहीं बची। उनके बुलंद व बाला, पुख़्ता और ख़ूबसूरत कुशादा और ज़ीनतदार महल वीरान खण्डर पड़े हुए हैं जहाँ से उनका आना जाना रहता है। अगर यह अ़क़्लमंद होते तो यह सामाने इब्रत उनके लिए बहुत कुछ था। क्या यह

ज़मीन में चल फिरकर क़ुदरत की इन निशानियों पर दिल से ग़ौर फ़िक्र नहीं करते? क्या कानों से उनके दर्दनाक अफ़साने सुनकर इब्रत हासिल नहीं करते? क्या इनकी उजड़ी हुई बस्तियाँ देखकर भी आँखें नहीं खोलते? यह आँखों के ही अंधे नहीं बल्कि दिल के भी अंधे हैं। (22/हज्ज : 46) सूरह अलिफ़ लाम मीम अस्सज्दा में भी मुंदर्जा बाला आयत जैसी आयत है। अल्लाह तआला यह बात मुक़र्रर कर चुका है कि जब तक बन्दों पर अपनी हुज्जत ख़त्म न कर दे उन्हें अज़ाब नहीं करता। उनकेलिए उसने एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है। उसी वक़्त उनको उनके आमाल की सज़ा मिलेगी। अगर यह बात न होती तो इधर गुनाह करते पकड़ लिये जाते, तू इनके झुठलाने पर सब्र कर। इनकी बेहूदा बातों पर सिहार कर तसल्ली रख यह मेरे क़ब्ज़े से बाहर नहीं। सूरज निकलने से पहले से मुराद तो नमाज़े फ़ज्र है और सूरज डूबने से पहले अस्र की नमाज़ मुराद है।

सुबह व शाम के अज़्कार व दुआएँ : बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "हम एक मर्तबा रसूले मक़्बूल (ﷺ) के पास बैठे हुए थे। आप (ﷺ) ने चौदहवीं रात के चाँद को देखकर फ़र्माया कि "तुम अन्क़रीब अपने रब को इसी तरह देखोगे जिस तरह उस चाँद को बग़ैर मुज़ाहिमत और तक्लीफ़ के देख रहे हो। पस अगर तुमसे हो सके तो सूरज निकलने से पहले की और सूरज ग़ुरूब होने से पहले की नमाज़ की पूरी तरह हिफ़ाज़त करो।" फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की। (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब फ़ज़्लु सलातिल अस्र : 554; सहीह मुस्लिम : 633; अबूदाऊद : 4729; तिर्मिज़ी : 2551; इब्ने माजा : 177; अहमद : 4/360; इब्ने हिब्बान : 7442) मुस्नदे अहमद की हदीस में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "इन दोनों वक़्तों का नमाज़ पढ़ने वाला आग में न जाएगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब फ़ज़्ले सलातिस् सुबह वल अस्रि....) : 634; अबूदाउद : 427; अहमद : 4/136; इब्ने हिब्बान : 1740) मुस्नद और सुनन में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "सबसे अदना दर्जे का जन्नती वह है जो दो हज़ार बरस की राह तक अपनी ही अपनी मिल्कियत देखेगा। सबसे दूर की चीज़ भी उसके लिए ऐसी ही होगी जैसे सबसे नज़दीक की और सबसे आला मंज़िल वाले तो दिन में दो-दो बार दीदारे इलाही करेंगे। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल क़ियामा : 3330; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अहमद : 2/13; मुस्नदे अबी यअ़ला : 5712; इसकी सनद में सुवैर बिन अबी फ़ाख़्ता ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़्रीब : 1/121; रक़म : 54) फिर फ़र्माता है कि रात के वक़्तों में भी तहज्जुद पढ़ा कर। कुछ कहते हैं इससे मुराद मग़्रिब व इशा की नमाज़ है। और दिन के वक़्तों में भी अल्लाह की पाकीज़गी बयान किया कर ताकि अल्लाह के अज्रो सवाब से तू ख़ुश हो जा। जैसे फ़र्मान है कि अन्क़रीब तेरा अल्लाह तुझे वह देगा कि तू ख़ुश हो जाए। (93/ज़ुहा : 5)

सहीह हदीस में है कि "अल्लाह तआला कहेगा ऐ जन्नतियों! वह कहेंगे, लब्बैक रब्बना व सअ़दैक। अल्लाह तआला कहेगा कि क्या तुम ख़ुश हो गए? वह कहेंगे कि ऐ अल्लाह! हम बहुत ही ख़ुश हैं। तूने हमें वह नेअ़मतें अ़ता फ़र्मा रखी हैं जो अपनी मख़्लूक़ में से किसी को नहीं दीं। फिर क्या वजह है कि हम राज़ी न हों। जनाब बारी अरहमुर्राहिमीन कहेगा लो! मैं तुमको इन सबसे अफ़ज़ल चीज़ देता हूँ। पूछेंगे बारे इलाह! इससे अफ़ज़ल चीज़ क्या है? फ़र्माएगा मैं तुमको अपनी रज़ामंदी देता हूँ कि अब किसी वक़्त भी मैं तुमसे नाख़ुश न होऊँगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नार : 6549; सहीह मुस्लिम : 2829;

तिर्मिज़ी : 255; अहमद : 3/88) और हदीस में है कि जन्नतियों से कहा जाएगा कि ''अल्लाह तआला ने तुमसे जो वादा किया था वह उसे पूरा करने वाला है, कहेंगे कि अल्लाह तआला के सब वादे पूरे हुए, हमारे चेहरे रोशन हैं, हमारी नेकियों का पलड़ा भारी रहा। हमें दोज़ख़ से बचा लिया गया। जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। अब कौनसी चीज़ बाक़ी है? उसी वक़्त पर्दे उठ जाएँगे और अल्लाह का दीदार होगा। अल्लाह तआला की क़सम! उससे बेहतर और कोई नेअमत न होगी, यही ज़्यादती है।''(सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब इस्बातु रूयतिल मोमिनीन फ़िल आख़िरति रब्बहुम सुब्हानहू व तआला : 181; इब्ने माजा : 187)

***

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيۡنَيۡكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعۡنَا بِهِۦٓ أَزۡوَٰجًا مِّنۡهُمۡ زَهۡرَةَ ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا لِنَفۡتِنَهُمۡ فِيهِۚ وَرِزۡقُ رَبِّكَ خَيۡرٌ وَأَبۡقَىٰ ﴿١٣١﴾ وَأۡمُرۡ أَهۡلَكَ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱصۡطَبِرۡ عَلَيۡهَاۖ لَا نَسۡـَٔلُكَ رِزۡقًاۖ نَّحۡنُ نَرۡزُقُكَۗ وَٱلۡعَٰقِبَةُ لِلتَّقۡوَىٰ ﴿١٣٢﴾

तर्जुमा : ''अपनी नज़रें हर्गिज़ उन चीज़ों की तरफ़ न दौड़ाना जो हमने इनमें से मुख़्तलिफ़ लोगों को आराइशे दुनिया दे रखी है ताकि इन्हें उसमें आज़मा लें। तेरे रब का दिया हुआ ही बहुत बेहतर और बहुत बाक़ी रहने वाला है। (131) अपने घराने के लोगों पर नमाज़ की ताकीद रख और ख़ुद भी उस पर जमा रह, हम तुझसे रोज़ी नहीं माँगते बल्कि हम ख़ुद तुझे रोज़ी देते हैं, आख़िर में बोलबाला परहेज़गारी ही का है।'' (132)

दुनिया का लालच न करो (आयत 131, 132) : इन कुफ़्फ़ार की दुनियावी ज़ीनत और इनकी टीपटाप को तू हसरत भरी निगाहों से न देख। यह तो ज़रा सी देर की चीज़ें हैं। यह सिर्फ़ इनकी आज़माइश के लिए इन्हें यहाँ मिली हैं कि देखें! शुक्र व तवाज़ोअ करते हैं या नाशुक्री और तकब्बुर करते हैं? हक़ीक़तन शुक्रगुज़ारों की कमी है। इनके मालदारों को जो कुछ मिला है उससे तुझे तो बहुत ही बेहतर नेअमत मिली है। हमने तुझे सात आयतें दी हैं जो दोहरायी जाती हैं। और कुरआने अज़ीम अता कर रखा है। पस अपनी नज़रें इनके दुनियावी साज़ो सामान की तरफ़ न डाल। (15/हिज्र : 87, 88) इसी तरह ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! आपके लिए अल्लाह के पास जो मेहमानदारी है उसकी न तो कोई इंतिहा है न इस वक़्त कोई उसके बयान की ताक़त रखता है। तुझे तेरा परवरदिगार इस क़द्र देगा कि तू राज़ी रज़ामंद हो जाएगा। (93/जुहा : 5) अल्लाह का दीन बेहतर और बाक़ी है। हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) से ईलाअ किया था और एक बालाख़ाने में मुक़ीम थे। हज़रत उमर (रज़ि.) जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि आप (ﷺ) एक खुरदरे बोरिये पर लेटे हुए हैं। चमड़े का एक टुकड़ा एक तरफ़ रखा हुआ था और कुछ मशकें लटक रही थीं। यह बेसरोसामानी की हालत देखकर आपकी आँखों से आँसू बहने लगे। हुज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि क्यूँ रो रहे हो? जवाब दिया कि हुज़ूर (ﷺ)! यह क़ैसर और किसरा किस क़द्र ऐशो इशरत में हैं और आप बावजूद सारी

मख़्लूक़ में से अल्लाह के बरगुज़ीदा होने के किस हालत में हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "ऐ ख़त्ताब के बेटे! क्या अब तक तुम शक में हो? इन लोगों की अच्छाइयों ने दुनिया में ही जल्दी कर ली है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाब अल्ग़ुरफ़तु वल्उल्यतु वल मुशर्रफ़तु...) : 2468; सहीह मुस्लिम : 1479) पस रसूलुल्लाह (ﷺ) बावजूद कुदरत और दस्तरस के दुनिया से निहायत ही बेरग़बत थे। जो हाथ लगता उसे अल्लाह की राह में दे देते और अपने लिए एक पैसा भी न उठा रखते।

इब्ने अबी हातिम में हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान मरवी है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मुझे तो तुम पर सबसे ज़्यादा डर उस वक़्त का है कि दुनिया तुम्हारे क़दमों में अपना तमाम साज़ो सामान डाल देगी, अपनी बरकतें तुम पर उलट देगी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब मा युहज़रु मिन ज़हरतिदुनिया : 6427; सहीह मुस्लिम : 1052) अल्ग़र्ज़ कुफ़्फ़ार को ज़ीनते ज़िन्दगी दुनिया सिर्फ़ उनकी आज़माइश के लिए दी जाती है अपने घराने के लोगों को नमाज़ की ताकीद करो कि वह अज़ाबे अल्लाह से बच जाएँ। ख़ुद भी पाबंदी के साथ उसकी अदायगी करो। अपने आपको और अपनी अहलो-अयाल को जहन्नम से बचा लो। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) की आदते मुबारका थी कि रात को जब तहज्जुद के लिए उठते तो अपने घरवालों को भी जगाते और इस आयत की तिलावत करते। हम तुझसे रिज़्क़ के तालिब नहीं। नमाज़ की पाबंदी कर लो रब ऐसी जगह से रोज़ी पहुँचाएगा जो ख़्वाबो ख़्याल में भी न हो, अल्लाह परहेज़गारों के लिए छुटकारा कर देता है और बेशानो गुमान ज ह से रोज़ी पहुँचाता है। तमाम जिन्नात और इंसान सिर्फ़ इबादते इलाही के लिए ही पैदा किये गए हैं। रज़्ज़ाक़ और ज़बरदस्त कुव्वतों का मालिक अल्लाह तआला ही है। फ़र्माता है, हम ख़ुद तमाम मख़्लूक़ के रोज़ी रसाँ हैं। हम तुम्हें तलब की तक्लीफ़ नहीं देते। हज़रत हिशाम (रह.) के वालिद साहब जब अमीर उमरा के मकानों पर जाते और उनका ठाठ देखते तो वापिस अपने मकान पर आकर इसी आयत की तिलावत करते और कहते, मेरे कुंबे वालों नमाज़ की हिफ़ाज़त करो, नमाज़ की पाबन्दी करो, अल्लाह तआला तुम पर रहम करेगा।

घरवालों को नमाज़ की ताकीद करना : इब्ने अबी हातिम में है कि जब हुज़ूर (ﷺ) को कोई तंगी होती तो अपने घर के सब लोगों को फ़र्माते "ऐ मेरे घरवालों! नमाज़ें पढ़ो, नमाज़ें क़ायम रखो। तमाम अम्बिया (عليهم السلام) का यही तरीक़ा रहा है कि अपनी हर घबराहट और हर काम के वक़्त नमाज़ शुरू कर देते।" (इब्ने अबी हातिम, यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) तिर्मिज़ी इब्ने माजा वग़ैरह की क़ुदसी हदीस में है कि 'अल्लाह तआला फ़र्माता है ऐ इब्ने आदम! मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरा सीना अमीरी और बेपरवाही से भर दूँगा। तेरी फ़क़ीरी और हाजत को दूर कर दूँगा। और अगर तूने यह न किया तो मैं तेरा दिल अश्ग़ाल से भर दूँगा और तेरी फ़क़ीरी बंद ही न करूँगा।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब अहादीसु इब्तलैना बिज़र्राइ व मन कानतिल आख़िरतु हम्मा...) : 2466; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 4107; अहमद : 2/358; इब्ने हिब्बान : 393) इब्ने माजा में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जिसने अपनी तमाम ग़ौरो फ़िक्र और क़स्दो ख़्याल को इकट्ठा करके आख़िरत का ख़्याल बाँध लिया और उसी में मशग़ूल हो गया, अल्लाह उसे दुनिया की तमाम परेशानियों से महफ़ूज़ कर लेगा। और जिसने दुनिया की फ़िक्रें पाल लीं यहाँ के ग़म मोल ले लिए अल्लाह तआला को उसकी मुत्लक़न परवाह न रहेगी, ख़्वाह किसी हैरानी में हलाक हो जाए।" (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्लाहुम्मा बिदुनिया : 4106; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; निहसल बिन सईद मतरूक रावी है।) और रिवायत में है कि "दुनिया के ग़मों में ही उसकी फ़िक्रों में ही गुत्थ जाने वाले

के तमाम कामों में अल्लाह तआला परेशानियाँ डाल देगा और उसकी फ़क़ीरी उसकी आँखों के सामने कर देगा और दुनिया उतनी ही मिलेगी जितनी मुक़द्दर में है। और जो अपने दिल का मर्कज़ आख़िरत को बना लेगा अपनी निय्यत वही रखेगा अल्लाह तआला उसे हर काम का इत्मिनान नसीब फ़र्मा देगा उसके दिल को सैर और शीर बना देगा और दुनिया उसके क़दमों की ठोकरों में आया करेगी।'' (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्लाहुम्मा बिद्दुनिया : 4105; व सनदुहू सहीहुन; इब्ने हिब्बान : 680; अल्मुअजमुल औसत : 7267; शुअबुल ईमान : 1736) फिर फ़र्माया दुनिया आख़िरत में नेक अंजाम परहेज़गार लोग ही हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मैंने आज रात ख़्वाब में देखा कि गोया हम उक़्बा बिन राफ़ेअ के घर में हैं। वहाँ हमारे सामने इब्ने ताब के बाग़ की तर खजूरें पेश की गई हैं, मैंने उसकी तअबीर यह ली है कि दुनिया में भी अंजाम के लिहाज़ से हमारा ही पलड़ा भारी रहेगा और बुलंदी और ऊँचाई हमको ही मिलेगी और हमारा दीन पाक साफ़ तय्यिब व ताहिर कामिल व मुकम्मल है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुर्रुअया, बाब रुअयन्नबी (ﷺ) : 2270; अबूदाउद : 5025; अहमद : 3/286; मुस्नदे अबी यअला : 3528)

***

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوْ اَنَّاۤ
اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ
مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ
الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾

तर्जुमा : ''कहते हैं कि यह नबी हमारे पास अपने परवरदिगार की तरफ़ से कोई मोजिज़ा क्यूँ नहीं लाता? क्या इनके पास अगली किताबों की वाज़ेह दलील नहीं पहुँची? (133) अगर हम इससे पहले ही इन्हें अज़ाब से हलाक कर देते तो यक़ीनन यह कह उठते कि ऐ हमारे रब! तूने हमारे पास अपना रसूल क्यूँ न भेजा? कि हम तेरी आयतों की ताबेदारी करते उससे पहले कि हम ज़लील व रुस्वा होते। (134) कह दे कि हर एक अंजाम के इंतिज़ार में है पस तुम भी इंतिज़ार में रहो। अभी अभी क़त्अन जान लोगे कि राहे रास्त वाले कौन हैं? और कौन राहयाफ़्ता हैं?'' (135)

कुफ़्फ़ार, पैग़म्बर (ﷺ) से मोजिज़ा मांगते हैं (आयत 133 से 135) : कुफ़्फ़ार यह भी कहा करते थे कि आख़िर क्या वजह है कि यह नबी अपनी सच्चाई का कोई मोजिज़ा हमें नहीं दिखाता? जवाब मिलता है कि यह है कुरआने करीम जो अगली किताबों की ख़बर के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने अपने इस नबी उम्मी पर उतारा है जो न लिखना जानता है न पढ़ना। (ﷺ) देख लो इसमें अगले लोगों के हालात हैं और बिलकुल उन किताबों के मुताबिक़ जो अल्लाह तआला की तरफ़ से इससे पहले नाज़िलशुदा हैं। कुरआन इन सबका

निगहबान है। चूँकि अगली किताबें कमी बेशी से पाक नहीं रहीं इसलिए क़ुरआन उतरा है कि उनकी सेहत ग़ैर सेहत को मुमताज़ कर दे। सूरह अन्कबूत में काफ़िरों के इस ऐतिराज़ के जवाब में फ़र्माया (قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ) (29/अन्कबूत : 50) यानी कह दे कि अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन हर क़िस्म के मोजिज़ात के ज़ाहिर कर देने पर क़ादिर है। मैं तो सिर्फ़ तंबीह करने वाला रसूल हूँ। मेरे क़ब्ज़े में कोई मोजिज़ा नहीं। लेकिन क्या इन्हें यह मोजिज़ा काफ़ी नहीं कि हमने तुझ पर किताब नाज़िल की है जो इनके सामने बराबर तिलावत की जा रही है। जिसमें हर यक़ीन करने वाले के लिए रहमत व व इब्रत है।

सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "हर नबी को ऐसे मोजिज़े मिले कि उन्हें देखकर लोग उनकी नबुव्वत पर ईमान ले आए लेकिन मुझे जीता जागता ज़िन्दा और हमेशा रहने वाला मोजिज़ा दिया गया है। यानी अल्लाह की यह किताब क़ुरआन मजीद जो बज़रिये वह्यी के मुझ पर उतरी है। पस मुझे उम्मीद है कि क़ियामत के दिन तमाम नबियों के ताबेदारों से मेरे ताबेदार ज़्यादा होंगे।" (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब कैफ़ा नुज़ुलुल वह्यी व अव्वलु मा नुज़िला : 4981; सहीह मुस्लिम : 152) यह याद रहे कि यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) का सबसे बड़ा मोजिज़ा बयान हुआ है। इससे यह मतलब नहीं कि आप (ﷺ) के मोजिज़े और थे ही नहीं। इसके अलावा आप (ﷺ) के हाथों से इस क़द्र मोजिज़ात सरज़द हुए हैं जो गिनती में नहीं आ सकते, लेकिन उन तमाम बेशुमार मोजिज़ों से बढ़ चढ़कर आप (ﷺ) का सबसे आला मोजिज़ा यह क़ुरआने करीम है अगर इस मुहतरम ख़त्मुल मुर्सलीन आख़िरी पैग़म्बर (ﷺ) को भेजने से पहले ही हम इन न मानने वालों को अपने अज़ाब से हलाक कर देते तो इनका यह उज़्र बाक़ी रह जाता कि अगर हमारे सामने कोई पैग़म्बर आता कोई वह्यी आती तो हम ज़रूर उस पर ईमान लाते और उसकी ताबेदारी और हुक्मबरदारी में लग जाते और इस ज़िल्लत और रुस्वाई से बच जाते। इसलिए हमने इनका यह उज़्र भी काट दिया। रसूल भेज दिया किताब नाज़िल कर दी, इन्हें ईमान नसीब न हुआ। अज़ाबों के मुस्तहिक़ बन गए और उज़्र भी दूर हो गए। हम ख़ूब जानते हैं कि एक क्या हज़ारों आयतें और निशानात देखकर भी इन्हें ईमान नसीब न होगा। हाँ! जब अज़ाबों को अपनी आँखों देख लेंगे उस वक़्त ईमान लाएँगे लेकिन वह महज़ बेकार होगा।

जैसे फ़र्मान है हमने यह पाक और बेहतर किताब नाज़िल की है जो बाबरकत है तुम इसे मान लो और इसकी हुक्मबरदारी करो तो तुम पर रहम किया जाएगा। (6/अन्आम : 155) यही मज़्मून आयत (وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ) (35/फ़ातिर : 42) में है कि कहते हैं कि रसूल की आमद पर हम मोमिन बन जाएँगे मोजिज़ा देखकर ईमान क़बूल कर लेंगे। लेकिन हम इनकी मक्कारी से वाक़िफ़ हैं। यह तमाम आयतें देखकर भी ईमान न लाएँगे। फिर इर्शाद होता है कि ऐ नबी (ﷺ)! इन काफ़िरों से कह दीजिए कि इधर तुम उधर हम इंतिज़ार में हैं। अभी हाल खुल जाएगा कि सीधे रास्ते पर कौन है? हक़ की तरफ़ कौन चल रहा है? अज़ाबों को देखते ही आँखें खुल जाएँगी। उस वक़्त मालूम हो जाएगा कि कौन गुमराही में मुब्तला था। घबराओ नहीं! अभी अभी जान लोगे कि कज़्ज़ाब शरीर कौन था? यक़ीनन मुसलमान राहे रास्त पर हैं और ग़ैर मुस्लिम इससे हटे हुए हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह! सौलहवें पारे के साथ ही सूरह ताहा की तफ़सीर भी मुकम्मल हुई।

सूरह अंबिया

سورة الانبياء

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

सूरह अंबिया - 21

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

आयात: 112 मक्की सूरह, पैराग्राफ: 8

तारीख़े नबूवत और कारे नबूवत

किस्स-ए-इब्राहीम (अ.) (50 से 71), इस्हाक (अ.) व युसूफ (अ.) और कारे रिसालत (72-73), किस्सा लूत (अ.) (74-75),किस्सा नूह (अ.) (76-77), किस्सा सुलेमान (अ.) व दाऊद (अ.) (83-84), इस्माईल (अ.) इदरीस (अ.) व जुलकिफ़्ल (अ.) (85-86), जुन्नुन युनूस(अ.) (87-88), जकरिया (अ.) व यहया (अ.) (89-90), मरियम (अ.) व ईसा (अ.) (91), रसूलों की दावते तौहीद (92-93), रसूलुल्लाह (सल्ल.) (107)

ज़मानए नुज़ूल :

सूरह (अंबिया) ग़ालिबन 9 या 10 नबवी में, मक्कतुल मुकर्रमा में सूरह (अलमूमिनून) के साथ नाज़िल हुई जब रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर तरह तरह के इल्ज़ामात आइद किए जा रहे थे कि ये शाइर हैं, (मुफतरी) हैं रसूल नहीं, महज़ बशर है वग़ैरह-वग़ैरह। इन हालात में तारीख़े अंबिया और मन्सबे नबूवत के बारे में तालीम ज़रूरी थी। ये वही दौर था, जब अहले तौहीद और अहले शिर्क के दर्मियान सख़्त कशमकश बरपा थी, चुनांचे आख़री आयत में अल्लाह तआला से फैसला तलब किया गया है।

سورۃ الانبیاء

तफ़्सीर सूरह अम्बिया

तआरुफ़े सूरत : सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरवी है कि "सूरह बनी इस्राईल, सूरह कहफ़, सूरह मरयम, सूरह ताहा और सूरह अम्बिया एताक़े अव्वल से हैं और यही तुलादी हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अम्बिया : 4739)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

اِقۡتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمۡ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ مُّعۡرِضُوۡنَ ۚ ① مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ ذِكۡرٍ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ
مُّحۡدَثٍ اِلَّا اسۡتَمَعُوۡهُ وَهُمۡ يَلۡعَبُوۡنَ ② لَاهِيَةً قُلُوۡبُهُمۡ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجۡوَى ۖ الَّذِيۡنَ
ظَلَمُوۡا ۖ هَلۡ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ ۚ اَفَتَاۡتُوۡنَ السِّحۡرَ وَاَنۡتُمۡ تُبۡصِرُوۡنَ ③ قٰلَ رَبِّىۡ يَعۡلَمُ
الۡقَوۡلَ فِى السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ④ بَلۡ قَالُوۡۤا اَضۡغَاثُ اَحۡلَامٍۭ بَلِ
افۡتَرٰٮهُ بَلۡ هُوَ شَاعِرٌ ۖ فَلۡيَاۡتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرۡسِلَ الۡاَوَّلُوۡنَ ⑤ مَاۤ اٰمَنَتۡ قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ
قَرۡيَةٍ اَهۡلَكۡنٰهَا ۚ اَفَهُمۡ يُؤۡمِنُوۡنَ ⑥

तर्जुमा : "लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ लगा फिर भी वह बेख़बरी में मुँह फेरे हुए हैं। (1) उनके पास उनके रब की तरफ़ से जो भी नई नई नसीहत आती है उसे वह खेलकूद में ही सुनते हैं। (2) उनके दिल बिलकुल ग़ाफ़िल होते हैं, इन ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशियाँ कीं कि वह तुम ही जैसा इंसान है फिर क्या वजह है जो तुम आँखों देखे जादू में आ जाते हो। (3) पैग़म्बर (ﷺ) ने कहा मेरा परवरदिगार हर उस बात को जो ज़मीनो आसमान में है बख़ूबी जानता है वह बहुत ही सुनने वाला और पूरा दाना है। (4) इतना ही नहीं बल्कि यह तो कहते हैं कि यह कुरआन परागंदा ख़्यालात का मजमूआ है बल्कि इसने ख़ुद से गढ़ लिया है बल्कि यह शायर है, वरना हमारे सामने यह कोई ऐसा मोजिज़ा लाए जैसे कि अगले पैग़म्बर देकर भेजे गए थे। (5) इनसे पहले जितनी बस्तियाँ हमने उजाड़ दीं सब ईमान से ख़ाली थीं तो क्या अब यह ईमान लाएँगे?" (6)

क़ियामत क़रीब आ गई है (आयत 1 से 6) : अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल लोगों को तंबीह कर रहा है कि क़ियामत क़रीब आ गई है फिर भी लोगों की ग़फ़लत में कमी नहीं आई, न वह उसके लिए तैयारी कर रहे हैं, जो उन्हें काम आए बल्कि दुनिया में फंसे हुए हैं और ऐसे मशग़ूल और मुन्हमिक़ हो रहे हैं कि क़ियामत से बिलकुल ग़ाफ़िल हो गए हैं, जैसे और आयत में है (أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ) (16/नह्ल : 1) अम्रे रब्बानी आ गया अब क्यूँ जल्दी मचा रहे हो? दूसरी आयत में फ़र्माया गया है (اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ) (54/क़मर : 1, 2) क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया, आख़िर तक।

अबू नवास शायर का एक शेअर ठीक इसी मअनी का है,

अन्नासु फ़ी ग़फ़लातिहिम व रुहल मनिय्यति तुत्हनू

मौत की चक्की ज़ोर ज़ोर से चल रही है और लोग ग़फ़्लतों में पड़े हुए हैं। हज़रत आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) के यहाँ एक साहब मेहमान बन के आए, उन्होंने बड़े इकराम व एहतिराम से उन्हें अपने यहाँ ठहराया और उनके बारे में रसूले करीम (ﷺ) से भी सिफ़ारिश की। एक दिन यह बुज़ुर्ग मेहमान उनके पास आए और कहने लगे, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे फ़लाँ वादी अता फ़र्मा दी है, मैं चाहता हूँ कि उस बेहतरीन ज़मीन का एक टुकड़ा मैं आपके नाम कर दूँ कि आपको भी फ़ारिगुल बाली रहे और आपके बाद आपके बाल बच्चे भी आसूदगी से गुज़र करें। हज़रत आमिर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि भाई! मुझे इसकी ज़रूरत नहीं आज एक सूरत नाज़िल हुई है कि हमें तो दुनिया कड़वी मालूम होने लगी है फिर आपने यही (इक़्तरब लिन्नासि) की तिलावत फ़र्माई। (इस रिवायत में मूसा बिन उबेदा और अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद बिन असलम दोनों ज़ईफ़ रावी हैं। (मीज़ानुल एअतिदाल : 2/256; रक़म : 3636; 2/564; रक़म : 4868)

उसके बाद कुफ़्फ़ारे कुरैश और उन ही जैसे और काफ़िरों की बाबत फ़र्माता है कि यह लोग कलामे इलाही और वह्यी इलाही की तरफ़ कान ही नहीं लगाते। यह ताज़ा और नया आया हुआ ज़िक्र दिल लगाकर सुनते ही नहीं, इस कान से सुनते हैं उस कान निकाल देते हैं। दिल हँसी खेल में मशग़ूल हैं। बुख़ारी की हदीस में है

कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं तुम्हें अहले किताब की किताबों की बातों के पूछने की क्या ज़रूरत है? उन्होंने तो अल्लाह की किताबों में फेरबदल कर लिया, तहरीफ़ और तब्दील कर ली, कमी ज़्यादती कर ली और तुम्हारे पास तो अल्लाह की अभी की उतारी हुई ख़ालिस किताब मौजूद है जिसमें कोई मिलावट नहीं होने पाई। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (कुल यौम हुव फ़ी शान) : 7522) यह लोग किताबुल्लाह से बेपरवाही कर रहे हैं अपने दिलों को उसके असर से ख़ाली रखना चाहते हैं बल्कि यह ज़ालिम औरों को भी बहकाते हैं कि अपने जैसे एक इंसान की मातहती तो हम नहीं कर सकते फिर तअज्जुब है कि तुम कैसे लोग हो कि देखते भालते जादू को मान रहे हो। यह नामुम्किन है कि हम जैसे आदमी को अल्लाह तआला रिसालत और वही के साथ मुख़्तस कर दे फिर ताज्जुब है कि बावजूद इल्म के उसके जादू में आ जाते हैं। उन बदकिरदारों के जवाब में जनाब बारी तआला इर्शाद फ़र्माता है कि यह बोहतान बाँधते हैं इनसे कहिए जो अल्लाह तआला आसमान व ज़मीन की तमाम बातें जानता है जिस पर कोई बात छुपी हुई नहीं उसने इस पाक कलाम कुरआने करीम को नाज़िल किया है इसमें अगली पिछली तमाम ख़बरों का मौजूद होना ही दलील है इस बात की कि इसका उतारने वाला आलिमुल ग़ैब (छुपी बातों का जानने वाला) है वह तुम्हारी सब बातों का सुनने वाला और तुम्हारे तमाम हालात का इल्म रखने वाला है पस तुम्हें उसका डर रखना चाहिए।

फिर कुफ़्फ़ार की ज़िद नासमझी और कट हुज्जती बयान कर रहा है जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह ख़ुद हैरान हैं किसी बात पर जम नहीं सकते, कभी कलामे इलाही को जादू कहते हैं तो कभी शायरी कहते हैं और कभी परागन्दा और बेमअनी बातें कहते हैं और कभी हुज़ूर (ﷺ) को अज़्ख़ुद गढ़ लिया हुआ कहने लगते हैं। ख़्याल करो कि अपने किसी क़ौल पर भरोसा न रखने वाला जो ज़ुबान पर आये बक देने वाला भी मुस्तक़िल मिज़ाज कहलाने का मुस्तहिक़ है? कभी कहते हैं अच्छा अगर यह सच्चा नबी है तो हज़रत सालेह (عليه السلام) की तरह कोई ऊँटनी ले आता, या हज़रत मूसा (عليه السلام) की तरह का कोई मोजिज़ा दिखाता या ईसा (عليه السلام) का कोई मोजिज़ा ज़ाहिर करता। बेशक अल्लाह तआला उन चीज़ों पर क़ादिर तो ज़रूर है लेकिन अगर ज़ाहिर हुईं और फिर भी यह अपने कुफ़्र से न हटे तो आदते इलाही की तरह अज़ाबे इलाही में पकड़ लिये जाएँगे और पीसकर रख दिये जाएँगे। उमूमन अगले लोगों ने यही कहा और ईमान नसीब न हुआ और ग़ारत कर दिये गए, इसी तरह यह भी ऐसे मोजिज़े तलब कर रहे हैं अगर ज़ाहिर हुए तो ईमान न लाएँगे और तबाह हो जाएँगे।

जैसे फ़र्मान है (إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ) (10/यूनुस : 96) जिन पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है वह भले तमाम मोजिज़े देख लें ईमान नहीं लाने वाले, हाँ! अज़ाबे अलीम के मुआयना के बाद तो फ़ौरन तस्लीम कर लेंगे लेकिन फिर वह सिर्फ़ बेकार है बात भी यही है कि इन्हें ईमान लाना ही न था वरना हुज़ूर (ﷺ) के बेशुमार मोजिज़ात रोज़मर्रा इनकी नज़रों के सामने थे बल्कि आप (ﷺ) के यह मोजिज़े दीगर अम्बिया से बहुत ज़्यादा ज़ाहिर और खुले हुए थे।

इब्ने अबी हातिम की एक बहुत ग़रीब रिवायत में है कि सहाबा किराम (रज़ि.) का एक मज्मआ मस्जिद में था हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तिलावते कुरआन कर रहे थे, इतने में अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ आया अपनी गद्दी बिछाकर अपना तकिया लगाकर वजाहत (धाक) से बैठ गया, था भी गोरा

चिट्टा, बढ़ बढ़कर फ़साहत के साथ बातें बनाने वाला कहने लगा, अबूबक्र (रज़ि.)! तुम हुज़ूर (ﷺ) से कहो कि आप कोई मोजिज़ा हमें दिखाएँ। जैसे कि आपसे पहले के अम्बिया निशानात लाए थे, मस्लन मूसा (عليه السلام) तख़्तियाँ लाए, दाऊद (عليه السلام) ज़बूर लाए, सालेह (عليه السلام) ऊँटनी लाए, ईसा (عليه السلام) इंजील लाए और आसमानी दस्तरख़्वान। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) यह सुनकर रोने लगे, उतने में हुज़ूर (ﷺ) घर से निकले तो आपने दूसरे सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया कि हुज़ूर (ﷺ) की तअज़ीम के लिए खड़े हो जाओ और उस मुनाफ़िक़ की फ़र्माइश दरबारे रिसालत में पहुँचाओ। आपने इर्शाद फ़र्माया, ''सुनो! मेरे लिए खड़े न हो जाया करो, सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए खड़े हुआ करो।'' सहाबा (रज़ि.) ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! हमें इस मुनाफ़िक़ से बड़ी ईज़ा पहुँचती है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अभी अभी जिब्रईल (عليه السلام) मेरे पास आए थे और मुझसे फ़र्माया कि बाहर जाओ और लोगों के सामने अपने उन फ़ज़ाइल का इज़्हार करो और उन नेअमतों का बयान करो जो रब ने आपको अता की हैं, मैं सारी दुनिया की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया हूँ, मुझे हुक्म हुआ है कि मैं जिन्नात को भी पैग़ामे रब्बानी पहुँचा दूँ, मुझे मेरे रब ने अपनी पाक किताब इनायत फ़र्माई है हालाँकि मैं महज़ बेपढ़ा हूँ मेरे तमाम अगले पिछले गुनाह माफ़ कर दिये हैं मेरा नाम अज़ान में रखा है, मेरी मदद फ़रिश्तों से कराई गई है, मुझे इम्दाद व नुसरत अता फ़र्माई है, रौब मेरा मेरे आगे आगे कर दिया है ,मुझे हौज़े कौसर अता किया है जो क़ियामत के दिन तमाम हौज़ों से बड़ा होगा, मुझे अल्लाह तआला ने मक़ामे महमूद का वादा दिया है उस वक़्त जबकि सब लोग हैरान व परेशान सर झुकाए हुए होंगे, मुझे अल्लाह तआला ने उस पहले गिरोह में किया है जो लोगों से निकलेगा। मेरी सिफ़ारिश से मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार शख़्स बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जाएँगे, मुझे ग़ल्बा और सल्तनत अता फ़र्माई है मुझे जन्नते नईम का वह बुलंद व बाला आला बालाख़ाना मिलेगा कि उससे आला मंज़िल किसी की न होगी। मेरे ऊपर सिर्फ़ वो फ़रिश्ते होंगे जो अल्लाह तआला के अर्श को उठाए हुए होंगे मेरी उम्मत के लिए ग़नीमतों के माल हलाल किये गए हालाँकि मुझसे पहले वह किसी के लिए हलाल न थे।'' (यह रिवायत इब्ने लहीआ के इख़्तिलात की वजह से ज़ईफ़ है और इसकी सनद मुत्तसिल भी नहीं है।)

***

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ

⑦وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ⑧ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ

فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ⑨

तर्जुमा : "तुझसे पहले भी जितने पैग़म्बर हमने भेजे सभी मर्द थे जिनकी तरफ़ हम वही उतारते थे पस तुम अहले किताब से पूछ लो अगर ख़ुद तुम्हें इल्म न हो तो। (7) हमने उन्हें ऐसे जस्से न बनाए थे कि वह खाना न खाएँ और न वह हमेशा रहने वाले थे। (8) फिर हमने उनसे किये हुए सब वादे सच्चे किये उन्हें और जिन जिनको हमने चाहा नजात अता फ़र्माई और हद से निकल जाने वालों को ग़ारत कर दिया।" (9)

तमाम रसूल मर्द और बशर (इंसान) थे (आ. 7 से 9) : चूँकि मुश्रिकीन इसके मुंकिर थे कि इंसानों में से कोई इंसान अल्लाह का रसूल हो इसलिए अल्लाह तआला उनके इस अक़ीदे की तर्दीद करता है फ़र्माता है तुझसे पहले जितने रसूल आए सब इंसान थे उनमें एक भी फ़रिश्ता न था जैसे दूसरी आयत में है (وَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰی) (12/यूसुफ़ : 109) यानी तुझसे पहले हमने जितने रसूल भेजे और उनकी तरफ़ वही नाज़िल की सब शहरों के रहने वाले ही थे। और आयत में है (قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ) (46/अह्क़ाफ़ : 9) यानी कह दे कि मैं कोई नया और अनोखा और सबसे पहला रसूल तो हूँ नहीं, उन काफ़िरों से पहले के कुफ़्फ़ार ने भी नबियों के न मानने का यही बहाना बनाया था जिसे कुरआन ने बयान किया कि उन्होंने कहा था (اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا) (64/तग़ाबुन : 6) क्या एक इंसान हमारा रहबर होगा? अल्लाह तआला इस आयत में फ़र्माता है कि अच्छा! तुम अहले इल्म से यानी यहूदियों और ईसाइयों से और दूसरे गिरोह से पूछ लो कि उनके पास इंसान ही रसूल बनाकर भेजे गए या फ़रिश्ते? यह भी अल्लाह तआला का एह्सान है कि इंसानों के पास उन ही जैसे इंसानों को रसूल बनाकर भेजता है ताकि लोग उनके पास बैठ उठ सकें, उनकी तालीम हासिल कर सकें और उनकी बातें समझ सकें। वह अगले पैग़म्बर सबके सब ऐसे जस्से न थे जो खाने पीने की हाजत न रखते हों बल्कि वह खाने पीने के मोह्ताज थे। जैसे फ़र्मान है (وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ يَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ) (25/फ़ुरक़ान : 20)यानी तुझसे पहले जितने रसूल हमने भेजे वह सब खाना खाया करते थे और बाज़ारों में आना जाना भी करते थे यानी वह सब इंसान थे इंसानों की तरह खाते पीते थे और काम काज व्यापार तिजारत के लिए बाज़ारों में भी आना जाना करते थे। पस यह बात उनकी पैग़म्बरी के मनाफ़ी नहीं जैसे मुश्रिकीन का क़ौल था (مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَ يَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ) (25/फ़ुरक़ान : 7) यानी यह रसूल कैसा है जो खाता पीता है और बाज़ारों में आता जाता है इसके पास कोई फ़रिश्ता क्यूँ नहीं उतरता कि वह भी उसके दीन की तब्लीग़ करता, अच्छा यह नहीं तो इसे किसी ख़ज़ाने का मालिक क्यूँ नहीं कर दिया जाता, इसे कोई बाग़ ही दे दिया जाता जिससे यह फ़राग़त खा पी तो लेता, आख़िर तक। इसी तरह अगले पैग़म्बर भी दुनिया में न रहे आए और गए जैसे फ़र्मान है (وَ مَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ) (21/अम्बिया : 34) यानी तुझसे पहले भी हमने किसी इंसान के लिए हमेशगी नहीं की। उनके पास अल्बत्ता वही इलाही आती रही, फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म अह्काम पहुँचा दिया करता था। फिर रब का जो वादा उनसे था वह सच्चा होकर रहा यानी उनके मुख़ालिफ़ीन अपने ज़ुल्म की वजह से तबाह हो गए और वह नजात पा गए उनके ताबेदार भी कामयाब हो गए और हद से गुज़र जाने वालों को यानी नबियों के झुठलाने वालों को अल्लाह ने हलाक कर दिया।

لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ
ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّاۤ اَحَسُّوْا بَاْسَنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٢
لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْۤا اِلٰى مَاۤ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْئَلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ
اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝١٤ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝١٥

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने तुम्हारी जानिब किताब नाज़िल की है जिसमें तुम्हारे लिए नसीहत है क्या फिर भी तुम अक़्लमंदी नहीं दिखाते? (10) और बहुत सी बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं जो सितमगार थीं और उनके बाद हमने और जमाअतें पैदा कर दीं। (11) जब उन्होंने हमारे अज़ाब का एहसास कर लिया तो लगे उससे भागने। (12) भाग दौड़ न करो और जहाँ तुम्हें आसूदगी दी गई थी वहीं वापिस लौटो और अपने मकानात की तरफ़ जाओ ताकि तुमसे सवाल तो कर लिया जाए। (13) कहने लगे हाय ख़राबी हमारी बेशक थे तो हम सितमगार। (14) फिर तो उनका यही क़ौल रहा यहाँ तक कि हमने उन्हें जड़ से कटे हुए और बिछे पड़े हुए कर दिया।'' (15)

क़ुरआन नसीहत है (आयत 10 से 15) : अल्लाह तआला अपने कलामे पाक की फ़ज़ीलत बयान करते हुए इसकी क़द्रो मंज़िलत पर रग़बत दिलाने के लिए फ़र्माता है कि हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी है जिसमें तुम्हारी बुज़ुर्गी है। (तबरी : 21/611) तुम्हारा दीन तुम्हारी शरीअत और तुम्हारी बातें हैं फिर ताज्जुब है कि तुम इस अहम नेअमत की क़द्र नहीं करते और इतनी बड़ी शराफ़त वाली किताब से ग़फ़्लत बरत रहे हो। जैसे और आयत में है (وَ اِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَ لِقَوْمِكَ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 44) तेरे लिए और तेरी क़ौम के लिए नसीहत है और तुम इसके बारे में अभी अभी सवाल किये जाओगे। फिर फ़र्माता है कि हमने बहुत सी बस्तियों के ज़ालिमों का चूरा कर दिया है और आयत में है हमने नूह (عليه السلام) के बाद भी बहुत सी बस्तियाँ हलाक कर दीं। (17/बनी इस्राईल : 17)

और आयत में है कितनी एक बस्तियाँ हैं जो पहले बहुत उरूज पर और इंतिहाई रौनक़ पर थीं लेकिन फिर वहाँ के लोगों के ज़ुल्म की वजह से हमने उनका चूरा कर दिया। (22/हज्ज : 45) भुस उड़ा दिया, आबादी वीरानी से और रौनक़ सुनसानी से बदल गई, उनकी हलाकत के बाद और लोगों को उनका जानशीन बना दिया, एक क़ौम के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी यूँ ही आती रहीं। जब उन लोगों ने अज़ाबों को आता देख लिया यक़ीन हो गया कि अल्लाह के नबी के फ़र्मान के मुताबिक़ अल्लाह के अज़ाब में वह आ गए तो उस वक़्त घबराकर भागने का रास्ता तलाशने लगे और लगे इधर उधर दौड़ धूप करने। अब भागो दौड़ो नहीं,

बल्कि अपने महल्लात में और अपने ऐशो-इशरत के सामानों में फिर आ जाओ ताकि तुमसे सवाल व जवाब तो हो जाए कि तुमने अल्लाह की नेअ़मतों का शुक्र अदा भी किया या नहीं? यह फ़र्मान बतौरे डाँट डपट के और उन्हें ज़लील व हक़ीर करने के होगा। उस वक़्त यह अपने गुनाहों का इक़रार करेंगे, साफ़ कहेंगे कि बेशक हम ज़ालिम थे लेकिन उस वक़्त का इक़रार बिलकुल बेनफ़ा होगा। फिर तो यह इक़रारी ही रहेंगे यहाँ तक कि उनका नास हो जाए और उनकी आवाज़ दबा दी जाए और यह मसल दिये जाएँ, उनका चलना फिरना, आना जाना, बोलना चालना, सब यक क़लम बंद हो जाए।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿۱۶﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ
مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۷﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ
وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿۲۰﴾

तर्जुमा : "हमने आसमान व ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों को कुछ हँसी खेल करने के लिए नहीं बनाया। (16) अगर हम यूँ ही खेल तमाशे का इरादा करते तो हम इसे अपने पास से ही बना लेते लेकिन हम करने वाले ही नहीं। (17) बल्कि हम सच को झूठ पर फेंक मारते हैं सच झूठ का सर तोड़ देता है और वह उसी वक़्त नाबूद हो जाता है तुम जो बातें बनाते हो वह तुम्हारे लिए ख़राबी की वजह हैं। (18) आसमानों और ज़मीन में जो है उसी रब का है। जो उसके पास हैं वह उसकी इबादत से न सरकशी करते हैं, न थकते हैं। (19) दिन रात तस्बीह बयान करते रहे हैं और ज़रा सी भी काहिली (सुस्ती) नहीं करते।" (20)

आसमान की पैदाइश अल्लाह तआ़ला की अजीब क़ुदरत है (आयत 16 से 20) : आसमान व ज़मीन को अल्लाह तआ़ला ने अ़दल के साथ पैदा किया है ताकि बुरों को सज़ा और नेकों को जज़ा दे उसने उन्हें बेकार और खेल तमाशे के तौर पर पैदा नहीं किया। और आयत में इस मज़्मून के साथ ही बयान है कि यह गुमान तो कुफ़्फ़ार का है जिनके लिए जहन्नम की आग तैयार है। (38/साद : 27) दूसरी आयत के एक मअ़नी तो यह हैं कि अगर हम खेल तमाशा ही चाहते तो उसे बना लेते एक मअ़नी यह हैं कि अगर हम औरत करना चाहते। (लहवन) के मअ़नी अहले यमन के नज़दीक बीवी के भी आते हैं यानी अगर हम बीवी बनाना चाहते तो हूरुन ईन में से जो हमारे पास हैं किसी को बना लेते। एक मअ़नी यह भी हैं कि हम अगर औलाद चाहते। लेकिन यह दोनों मअ़नी आपस में लाज़िम मल्ज़ूम हैं, बीवी के साथ ही औलाद है। जैसे फ़र्मान है (لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا) (39/ज़ुमर : 4) यानी अगर अल्लाह को यही मंज़ूर होता कि उसकी औलाद हो तो

अपनी मख़्लूक़ में से किसी आला दर्जे की मख़्लूक़ को यह मंसब अ़ता फ़र्माता लेकिन वह इस बात से पाक और बहुत दूर है उसकी तौहीद और ग़ल्बा के ख़िलाफ़ है कि उसकी औलाद हो। पस वह मुत्लक़ औलाद से पाक है, न ईसा (عليه السلام) उसका बेटा है न उ़ज़ेर (عليه السلام) न फ़रिश्ते उसकी लड़कियाँ हैं। उन ईसाइयों, यहूदियों और कुफ़्फ़ारे मक्का की उस लग़्वियात और तोहमत से रब वाह़िद क़ह्हार पाक है और बुलंद है।

(इन कुन्ना फ़ाइलीन) में इन को नाफ़िया कहा गया है यानी हम यह करने वाले ही न थे। (त़ब्री : 18/420) बल्कि मुजाहिद (रह़.) का क़ौल है कि कुरआन मजीद में हर जगह इन नफ़ी के लिए ही है। (अद्दुर्रुल मंसूर : 5/620) हम ह़क़ को वाज़ेह़ करते हैं उसे खोलकर बयान करते हैं जिससे बात़िल दब जाता है टूटकर चूरा हो जाता है और फ़ौरन हट जाता है वह है भी इसी लायक़ वह ठहर नहीं सकता, न जम सकता है न देर तक क़ायम रह सकता है अल्लाह के लिए जो लोग औलादें ठहरा रहे हैं उनके इस वाही क़ौल की वजह से उनके लिए वैल (बर्बादी) है उन्हें पूरी ख़राबी है।

फ़रिश्ते अल्लाह के बन्दे हैं : फिर इर्शाद फ़र्माता है कि जिन फ़रिश्तों को तुम अल्लाह की लड़कियाँ कहते हो उनका ह़ाल सुनो, और अल्लाह की उलूहियत की अ़ज़्मत देखो, आसमान व ज़मीन की हर चीज़ उसकी मिल्कियत में है, फ़रिश्ते उसकी इ़बादत में मशग़ूल हैं, नामुम्किन है कि किसी वक़्त सरकशी करें, न ह़ज़रत मसीह़ (عليه السلام) को अल्लाह का बन्दा होने से शर्म, न फ़रिश्तों को अल्लाह की इ़बादत से आ़र, न उनमें से कोई तकब्बुर करे, या इ़बादत से जी चुराए और जो कोई ऐसा करे तो एक वक़्त आ रहा है कि वह अल्लाह के सामने मैदाने मह़्शर में सबके साथ होगा और अपना किया भरेगा। यह बुज़ुर्ग फ़रिश्ते उसकी इ़बादत से थकते भी नहीं, घबराते भी नहीं, सुस्ती और काहिली उनके पास भी नहीं फटकती। दिन रात अल्लाह की फ़र्मांबरदारी में, उसकी इ़बादत में, उसकी तस्बीह़ व इत़ाअ़त में लगे हुए हैं, निय्यत और अ़मल दोनों मौजूद हैं अल्लाह की कोई नाफ़र्मानी नहीं करते, न किसी फ़र्मान की तामील से रुकते हैं।

इब्ने अबी ह़ातिम में है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) सह़ाबा (रज़ि.) के मज्मअ़े में थे कि फ़र्माया, ''लोगों! जो मैं सुनता हूँ क्या तुम भी सुनते हो?'' सबने जवाब दिया कि ह़ज़रत! हम तो कुछ भी नहीं सुन रहे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मैं आसमानों की चरचराहट सुन रहा हूँ और ह़क़ तो यह है कि उसे चरचराना ही चाहिए इसलिए कि उसमें एक बालिश्त भर जगह ऐसी नहीं जहाँ किसी न किसी फ़रिश्ते का सर सज्दे में न हो।'' (मुश्किलुल आसार : 2/43; मुअजमुल कबीर : 1/3122; यह रिवायत सईद बिन अबी उ़रूबा और क़तादा दोनों की तदलीस की वजह से ज़ईफ़ है।)

अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन नौफ़िल (रह़.) फ़र्माते हैं मैं ह़ज़रत कअ़ब अह़बार (रह़.) के पास बैठा हुआ था उस वक़्त मैं छोटी उ़म्र का था, मैंने उनसे इस आयत का मत़लब पूछा कि बोलना चालना अल्लाह का पैग़ाम लेकर जाना, अ़मल करना, यह भी उन्हें तस्बीह़ से नहीं रोकता? मेरे इस सवाल पर चौकन्ने होकर आपने फ़र्माया, यह बच्चा कौन है? लोगों ने कहा, बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब में से है, आपने मेरी पेशानी चूमी और फ़र्माया, प्यारे बच्चे! तस्बीह़ उन फ़रिश्तों के लिए ऐसी ही है जैसे हमारे लिए साँस लेना, देखो! चलते फिरते, बोलते चालते, तुम्हारा साँस बराबर आता जाता रहता है इसी त़रफ़ फ़रिश्तों की तस्बीह़ हर वक़्त जारी रहती है।

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝٢١ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٢٢ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ۝٢٣

तर्जुमा : "उन लोगों ने जिन्हें मअ़बूद बना रखा है क्या वह मुर्दों को ज़मीन से ज़िन्दा कर देते हैं? (21) अगर आसमान व ज़मीन में सिवाय अल्लाह तआ़ला के और भी मअ़बूद होते तो यह दोनों दरहम बरहम हो जाते, अल्लाह तआ़ला अ़र्श का रब हर उस वस्फ़ से पाक है जो यह मुश्रिक बयान करते हैं। (22) कोई नहीं जो उससे पूछताछ कर सके और उसके सिवा कोई नहीं जिससे बाज़पुर्स न की जाती हो।" (23)

अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं है (आयत 21 से 23) : शिर्क की तर्दीद हो रही है कि जिन जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूज रहे हो उनमें एक भी ऐसा नहीं जो मुर्दों को ज़िन्दा कर सके। किसी में या सबमें मिलकर भी यह क़ुदरत नहीं, फिर इन्हें उस क़ुदरत वाले के बराबर मानना या उनकी भी इबादत करना किस क़द्र नाइंसाफ़ी है। फिर फ़र्माता है कि सुनो! अगर यह मान लिया जाए कि फ़िल वाक़ेअ़ बहुत से अल्लाह हैं तो लाज़िम है कि ज़मीनो आसमान तबाह व बर्बाद हो जाएँ। जैसे फ़र्मान है (مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ)(23/मोमिनून : 91) अल्लाह की औलाद नहीं, न उसके साथ और कोई मअ़बूद है अगर ऐसा होता तो हर मअ़बूद अपनी अपनी मख़्लूक़ात को लिये फिरता और हर एक दूसरे पर ग़ालिब आने की कोशिश करता, अल्लाह तआ़ला उनके बयान कर्दा औसाफ़ (विशेषताओं) से मुबर्रा और मुनज़्ज़ा है।

यहाँ फ़र्माया अल्लाह तआ़ला मालिके अ़र्श इनके कहे हुए रद्दी औसाफ़ से यानी लड़के लड़कियों से पाक है इसी तरह शरीक और साझी से मिस्ल और साथी से भी बुलंद व बाला है। इनकी यह सब तोहमतें हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला की ज़ात बरतर है उसकी शान तो यह है कि वह अ़लल इत्लाक़ शहनशाहे हक़ीक़ी है, उस पर कोई हाकिम नहीं, सब उसके ग़ल्बे और क़हर तले हैं, न तो उसके हुक्म का कोई पीछा कर सके, न उसके फ़र्मान को कोई टाल सके। उसकी किब्रियाई और अ़ज़्मत, जलाल और हुकूमत, इल्म और हिक्मत, लुत्फ़ और हिक्मत बेपायाँ है किसी की उसके आगे दम मारने की मजाल नहीं सब पस्त और आ़जिज़ हैं लाचार और बेबस हैं, कोई नहीं जो चूँ करे कोई नहीं जो उसके सामने बोल सके, कोई नहीं जिसे चूँ चरा का इख़्तियार हो। जो उससे पूछ सके कि यह काम क्यूँ किया, ऐसा क्यूँ हुआ? वह चूँकि तमाम ख़ल्क़ का ख़ालिक़ है सबका मालिक है, उसे इख़्तियार है जिससे जो चाहे सवाल करे हर एक के आ़माल की बाज़पुर्स करेगा, जैसे फ़र्मान है (فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ)(15/हिज्र : 92) तेरे रब की क़सम! हम इन सबसे सवाल करेंगे, हर उस काम से जो उन्होंने किया वही है कि जो उसकी पनाह में आ गया सब शर से बच गया और कोई नहीं जो उसके मुज्रिम को पनाह दे सके।

أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''क्या इन लोगों ने अल्लाह के सिवा और मअ़बूद बना रखे हैं, इनसे कह दीजिए कि लाओ अपनी दलील पेश करो, यह है मेरे साथ वालों की दलील और मुझसे अगलों की दलील, बात यह है कि इनमें के अक्सर लोग हक़ को नहीं जानते, इसी वजह से मुँह मोड़े हुए हैं। (24) तुझसे पहले भी जो रसूल हमने भेजा उसकी तरफ़ भी वही नाज़िल की कि मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं, पस तुम सब मेरी ही इबादत करो।'' (25)

मअ़बूदाने बातिला (झूठे मअबूदों) की हक़ीक़त (आयत 24, 25) : उन लोगों ने अल्लाह के सिवा जिन जिनको मअ़बूद बना रखा है उनकी इबादत पर उनके पास कोई दलील नहीं और हम जिस अल्लाह की इबादत कर रहे हैं उसमें सच्चे हैं हमारे हाथों में आलातर दलील कलामे इलाही मौजूद है और इससे पहले की तमाम आसमानी किताबें भी इसी की दलील हैं बाआवाज़े बुलंद गवाही देती हैं जो तौहीद की मुवाफ़िक़त में और काफ़िरों की ख़ुदपरस्ती के ख़िलाफ़ में है जो किताब जिस पैग़म्बर पर उतरी उसमें यह बयान मौजूद रहा कि अल्लाह के सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं लेकिन अकसर मुश्रिक हक़ से ग़ाफ़िल हैं और अल्लाह की बातों से मुंकिर हैं तमाम रसूलों को तौहीदे इलाही की ही तल्क़ीन होती रही। फ़र्मान है (وَ سْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 45) तुझसे पहले जो अम्बिया गुज़रे हैं, तू ख़ुद पूछ ले कि हमने उनके लिए अपने सिवा और कोई मअ़बूद मुक़र्रर किया था कि वह उसकी इबादत करते हों?

और आयत में है कि (وَ لَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ) (16/नहल : 36) हमने हर उम्मत में अपना पैग़म्बर भेजा जिसने लोगों में ऐलान किया कि तुम सब एक अल्लाह ही की इबादत करो और उसके सिवा हर एक की इबादत से अलग रहो। पस अम्बिया (عليهم السلام) की गवाही भी यही है और ख़ुद फ़ितरते इलाही भी इसी की शाहिद है और मुश्रिकीन की कोई दलील नहीं उनकी सारी हुज्जतें बेकार हैं और उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब हैं।

***

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ
بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى
وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ
جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : "मुश्रिक लोग कहते हैं कि अल्लाह की औलाद है ग़लत है, अल्लाह पाक है बल्कि वह उसके ज़ीइज़्ज़त बन्दे हैं। (26) किसी बात में अल्लाह पर पेश दस्ती नहीं करते बल्कि उसके फ़र्मान कारबंद हैं। (27) वह उनके आगे पीछे के तमाम उमूर से वाक़िफ़ है वह किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उनके जिनसे अल्लाह ख़ुश हो वह तो ख़ुद हैबते बारी तआला से लरज़ा व तरसाँ हैं। (28) उनमें से अगर कोई भी कह दे कि अल्लाह के सिवा मैं लायक़े इबादत हूँ तो हम उसे दोज़ख़ की सज़ा दें, हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं।" (29)

कुफ़्फ़ारे मक्का की बोहतानबाज़ी (आयत 26 से 29) : कुफ़्फ़ारे मक्का का ख़याल था कि फ़रिश्ते अल्लाह की लड़कियाँ हैं उनके इस ख़याल की तर्दीद करते हुए अल्लाह पाक फ़र्माता है कि यह बिलकुल ग़लत है, फ़रिश्ते अल्लाह तआला के बुज़ुर्ग बन्दे हैं, बड़े बड़ाइयों वाले हैं और ज़ी इज़्ज़त हैं। क़ौलन और फ़ेअलन हर वक़्त इताअते इलाही में मशग़ूल रहते हैं, न तो किसी अम्र में उससे आगे बढ़ें न किसी बात में उसके फ़र्मान के ख़िलाफ़ करें बल्कि जो वह कहे दौड़कर उसकी बजाआवरी करते हैं, अल्लाह के इल्म में घिरे हुए हैं उस पर कोई बात छुपी हुई नहीं, आगे पीछे दाएँ बाएँ का उसे इल्म है ज़र्रे ज़र्रे से वह दाना हैं यह पाक फ़रिश्ते भी इतनी मजाल नहीं रखते कि अल्लाह के किसी मुज्रिम की अल्लाह के सामने उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सिफ़ारिश के लिए होंठ हिलाए। जैसे फ़र्मान है (مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ) (2/बक़रह : 255) वह कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी की सिफ़ारिश उसके पास ले जा सके।

और आयत में है (وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ) (34/सबा : 23) यानी उसके पास किसी की सिफ़ारिश बिना उसकी इजाज़त के चल नहीं सकती। इसी मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें क़ुरआने करीम में मौजूद हैं। फ़रिश्ते और अल्लाह के क़रीबी बन्दे कुल के कुल ख़शिय्यते इलाही से हैबते इलाही से लरज़ाँ व तरसाँ रहा करते हैं, उनमें से जो भी रब होने का दावा करे हम उसे जहन्नम में झोंक देंगे, ज़ालिमों से हम ज़रूर इंतिक़ाम ले लिया करते हैं। यह बात बतौरे शर्त के है और शर्त के लिए यह ज़रूरी नहीं कि इसका वक़ूअ भी हो यानी यह ज़रूरी नहीं कि ख़ास बंदगाने इलाही में से कोई ऐसा नापाक दावा करे और ऐसी सख़्त सज़ा भुगते। इसी तरह की आयत (قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 81) और (لَئِنْ اَشْرَكْتَ) (39/ज़ुमर : 65) है पस न तो रहमान की औलाद न नबी करीम (ﷺ) का शिर्क करना मुम्किन।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ
الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٠ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۠
وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝٣١ وَجَعَلْنَا السَّمَاۗءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ښ وَّهُمْ
عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ۝٣٢ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ فِيْ
فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝٣٣

तर्जुमा : "क्या काफ़िर लोगों ने यह नहीं देखा कि आसमान व ज़मीन मुँह बंद मिले जुले थे फिर हमने उन्हें खोलकर जुदा किया और हर ज़िन्दा चीज़ को हमने पानी से पैदा किया, क्या यह लोग फिर भी यक़ीन नहीं करते। (30) और हमने ज़मीन में पहाड़ बना दिये ताकि वह मख़्लूक़ को हिला न सके और हमने उसमें कुशादा राहें बना दीं ताकि वह हिदायत हासिल कर सकें। (31) आसमान को महफ़ूज़ छत भी हमने ही बनाया है लेकिन लोग उसकी क़ुदरत के नमूनों पर ध्यान ही नहीं धरते। (32) वही अल्लाह है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को पैदा किया है उनमें से हर एक अपने अपने आसमान में तैरते फिरते हैं।" (33)

अल्लाह तआला की क़ुदरत का तज़्किरा (आयत 30 से 33) : अल्लाह इस बात को बयान फ़र्माता है कि उसकी क़ुदरत पूरी है और उसकी ताक़त ज़बरदस्त है। फ़र्माता है कि जो काफ़िर अल्लाह के सिवा औरों की पूजा पाठ करता है क्या उन्हें इतना भी इल्म नहीं कि तमाम मख़्लूक़ का पैदा करने वाला अल्लाह ही है और सब चीज़ का निगहबान भी वही है। फिर उसके साथ दूसरों की इबादत तुम क्यूँ करते हो। इब्तिदाअन ज़मीन व आसमान मिले जुले एक दूसरे से पेवस्त तह ब तह थे, अल्लाह तआला ने इन्हें अलग अलग किया, ज़मीनों को नीचे आसमानों को ऊपर फ़ासले से और हिक्मत से क़ायम किया। सात ज़मीनें पैदा कीं और सात ही आसमान बनाए, ज़मीन और पहले आसमान के बीच जोफ़ और ख़ुला रखा आसमान से पानी बरसाया और ज़मीन से पैदावार उगाई, हर ज़िन्दा चीज़ पानी से पैदा की। क्या यह तमाम चीज़ें जिनमें से हर एक सानेअ की ख़ुदमुख़्तारी क़ुदरत और वहदत पर दलालत करती है अपने सामने मौजूद पाते हुए भी यह लोग अल्लाह की अज़्मत के क़ाइल होकर शिर्क को नहीं छोड़ते?

फ़फ़ी कुल्लि शैइल्लहू आयतुन तदुल्लु अला अन्नहू वाहिदुन

यानी हर चीज़ में अल्लाह की रुबूबियत और उसकी वह्दानियत का निशान मौजूद है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सवाल हुआ कि पहले रात थी या दिन तो आपने फ़र्माया कि पहले ज़मीनो आसमान मिले

जुले तह ब तह थे तो ज़ाहिर है कि उनमें अंधेरा होगा और अंधेरे का नाम ही रात है तो सवाल करो और जो वह जवाब दें मुझसे भी कहो। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, ज़मीन व आसमान सब एक साथ थे, न बारिश बरसती थी। न पैदावार उगती थी, जब अल्लाह तआला ने ज़ी रूह मख़लूक़ पैदा की तो आसमान को फाड़कर उसमें से पानी बरसाया और ज़मीन को चीरकर उसमें पैदावार उगाई। जब साइल ने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से यह जवाब बयान किया तो आप बहुत ख़ुश हुए और फ़र्माने लगे, आज मुझे और भी यक़ीन हो गया कि कुरआन के इल्म में हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) बहुत ही बढ़े हुए हैं, मेरे जी में कभी ख़्याल आता था कि ऐसा तो नहीं इब्ने अब्बास (रज़ि.) की जुर्अत बढ़ गई हो लेकिन आज वह वस्वसा दिल से जाता रहा। आसमान को फाड़कर सात आसमान बनाए ज़मीन के मज्मूऐ को चीरकर सात ज़मीनें बनाईं।

मुजाहिद (रह.) की तफ़्सीर में यह भी है कि यह मिले हुए थे यानी पहले सातों आमान एक साथ थे और इसी तरह तरह सातों ज़मीनें भी मिली हुई थीं फिर जुदा जुदा कर दी गईं। हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) की तफ़्सीर है कि यह दोनों पहले एक ही थे फिर अलग अलग कर दिये गए, ज़मीन व आसमान के बीच ख़ुला रख दिया गया पानी को तमाम जानदारों की अस़ल बना दी। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) से कहा, हुज़ूर (ﷺ)! जब मैं आपको देखता हूँ मेरा जी ख़ुश हो जाता है और मेरी आँखें ठण्डी होती हैं आप हमें तमाम चीज़ों की अस़लियत से ख़बरदार कर दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अबू हुरैरा (रज़ि.) तमाम चीज़ें पानी से पैदा की गई हैं।'' और रिवायत में है कि फिर मैंने कहा, या रसूलुल्लाह (ﷺ)! मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिससे मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''लोगों को सलाम किया करो और खाना खिलाया करो और सिलारहमी करते रहो और रात को जब लोग सोये हुए हों तुम तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो ताकि सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ।'' (अहमद : 2/295; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 4/160; मज्मउज़्ज़वाइद : 5/16; इब्ने हिब्बान : 642; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस अन्अन) ज़मीन को जनाब बारी अज़्ज़ व जल्ल ने पहाड़ों की मेख़ों से मज़बूत कर दिया ताकि वह हिल डुलकर लोगों को परेशान न करे मख़लूक़ को ज़लज़ले में न डाले। ज़मीन की तीन चौथाइयाँ तो पानी में हैं और सिर्फ़ एक चौथाई हिस्सा सूरज और हवा के लिए खुला हुआ है। ताकि लोग आसमान को और उसके अजायबात को ख़ुद अपनी आँखों से देख सकें फिर ज़मीन में अल्लाह तआला ने अपनी रहमते कामिला से राहें बना दीं कि लोग बाआसानी अपने सफ़र तै कर सकें और दूर दराज़ मुल्कों में भी पहुँच सकें।

शाने रब्बानी देखिए उस हिस्से और उस टुकड़े के बीच बुलंद पहाड़ी हाइल है यहाँ से वहाँ पहुँचना बज़ाहिर सख़्त दुश्वार मालूम होता है लेकिन क़ुदरते रब्बानी ख़ुद इस पहाड़ में रास्ता बना देती है कि यहाँ के लोग वहाँ और वहाँ के लोग यहाँ पहुँच जाएँ और अपने काम काज पूरे कर लें। आसमान को ज़मीन पर मिस्ल कुब्बे के बना दिया जैसे फ़र्मान है कि हमने आसमान को अपने हाथों से बनाया और हम वुस्अत और कुशादगी वाले हैं। (51/ज़ारियात : 47) फ़र्माता है क़सम है आसमान की और उसकी बनावट की। (91/शम्स : 91) इर्शाद है क्या इन्होंने नहीं देखा कि हमने इनके सरों पर आमसान को किस कैफ़ियत का बनाया है और किस तरह ज़ीनत दे रखी है और लुत्फ़ यह है कि इतने बड़े आसमान में कोई सूराख़ तक नहीं। (50/क़ाफ़ : 6) बिना

कहते हैं कुब्बे और ख़ेमे के खड़ा करने को। जैसे रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''इस्लाम की बुनियादें पाँच हैं। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब दुआउकुम ईमानुकुम : 8; सह़ीह़ मुस्लिम : 16; इब्ने ह़िब्बान : 1/374; तिर्मिज़ी : 2606; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/47; बैहक़ी : 1/358; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 5/173) जैसे पाँच सुतून पर कोई कुब्बा या ख़ेमा खड़ा हुआ हो।'' फिर आसमान जो मिस्ले छत के है, यह है भी मह़फ़ूज़ बुलंद पहरे चौकी वाला कि कहीं से उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचता, बुलंद व बाला ऊँचा और साफ़ है। जैसे ह़दीस में है कि किसी शख़्स ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया कि यह आसमान क्या है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''रुकी हुई मौज है।'' (इब्ने अबी ह़ातिम, व सनदुहू ह़सन; अल्अज़्मतु लि अबी शैख़ : 539; अल्अह़ादीसुल मुख़्तारा : 10/118; ह़ : 117) यह रिवायत सनदन ग़रीब है।

लेकिन लोग अल्लाह की इन ज़बरदस्त निशानियों से भी बेपरवाह हैं जैसे फ़र्मान है आसमान व ज़मीन की बहुत सी निशानियाँ हैं जो लोगों की नज़रों तले हैं लेकिन फिर भी वह उनसे मुँह फेरे हुए हैं। (12/यूसुफ़ : 105) कोई ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते कभी नहीं सोचते कि कितना फैला हुआ कितना बुलंद, किस क़द्र अज़ीमुश्शान यह आसमान हमारे सरों पर बग़ैर खम्बों के अल्लाह तआला ने क़ायम कर रखा है फिर इसमें किस ख़ूबसूरती से सितारों का जड़ाव हो रहा है उनमें भी कोई ठहरा हुआ है कोई चलता फिरता है फिर सूरज की चाल मुक़र्रर है उसकी मौजूदगी दिन है उसका न नज़र आना रात है पूरे आसमान का चक्कर सिर्फ़ एक दिन रात में पूरा कर लेता है, उसकी चाल को उसकी तेज़ी को सिवाय अल्लाह के कोई नहीं जानता। यूँ अटकलें और अंदाज़े करना और बात है।

बनी इस्राईल के आ़बिदों में से एक ने अपनी तीस साल की मुद्दते इबादत पूरी कर ली मगर जिस तरह और आ़बिदों पर तीस साल की इबादत के बाद अब्र का साया हो जाया करता था, उस पर न हुआ तो उसने अपनी वालिदा से यह ह़ाल बयान किया। उसने कहा, बेटे तुमने अपनी इस इबादत के ज़माने में कोई गुनाह कर लिया होगा, उसने कहा, अम्मा! एक भी नहीं। कहा फिर तुमने किसी गुनाह का पूरा क़सद किया होगा। जवाब दिया कि ऐसा भी मुत्लक़न नहीं हुआ। माँ ने कहा, बहुत मुम्किन है कि तुमने आसमान की तरफ़ नज़र की हो और ग़ौरो तदब्बुर के बग़ैर ही हटा ली हो। आ़बिद ने जवाब दिया, ऐसा तो बराबर होता रहा। फ़र्माया, बस यही सबब है, फिर अपनी कुदरते कामिला की कुछ निशानियाँ बयान करता है कि रात और इसके अंधेरे को देखो, दिन और इसकी रोशनी पर नज़र डालो। फिर एक के बाद दूसरे का पे दर पे इंतिज़ाम और एहतिमाम के साथ आ जाना देखो! एक का कम होना दूसरे का बढ़ना अलग है, फ़लक अलग है चाल अलग है, अंदाज़ा और है हर एक अपने अपने फ़लक में गोया तैरता फिरता है। (त़ब्री : 18/520) और हुक्मे इलाही की बजाआवरी में मशग़ूल है जैसे फ़र्मान है वही सुबह़ का रोशन करने वाला है वही रात को पुरसुकून बनाने वाला है वही सूरज चाँद का अंदाज़ा मुक़र्रर करने वाला है वही इ़ज़्ज़त वाला और इ़ल्म वाला है। (6/अन्आम : 96)

***

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاۡئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿۳۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۵﴾

तर्जुमा : "तुझसे पहले किसी इंसान को भी हमने दवाम और हमेशगी नहीं दी, क्या अगर तू मर गया तो वह हमेशा के लिए रह जाएँगे। (34) हर जानदार मौत का मज़ा चखने वाला है हम बतरीक़े इम्तिहान तुममें से हर एक को बुराई भलाई में मुब्तला करते हैं तुम सब हमारी ही तरफ़ लौटाए जाओगे।" (35)

मौत अटल हक़ीक़त है (आयत 34, 35) : जितने लोग हुए सबको ही मौत एक रोज़ फ़ौत करने वाली है, तमाम रूए ज़मीन के लोग मौत से मिलने वाले हैं हाँ! रब की जलाल व इकराम वाली ज़ात हमेशगी और दवाम वाली है। इसी आयत से उलमा ने इस्तिदलाल किया है कि हज़रत ख़िज़्र (عليه السلام) मर गए। यह ग़लत है कि वह अब तक ज़िन्दा हों, क्योंकि वह इंसान ही थे, वली हो, या नबी हों, या रसूल हों, थे तो इंसान ही। उन कुफ़्फ़ार की यह आरज़ू कितनी नापाक है कि तुम मर जाओ तो क्या यह हमेशा रहने वाले हैं? ऐसा तो सिर्फ़ नामुम्किन है दुनिया में तो चल चलाओ लग रहा है किसी को सिवाय ज़ाते बारी के हमेशगी नहीं कोई आगे है कोई पीछे। फिर फ़र्माया मौत का ज़ायक़ा हर एक को चखना पड़ेगा। हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) फ़र्माया करते थे कि लोग मेरी मौत के आरज़ूमंद हैं तो क्या इस बारे में मैं ही अकेला हूँ। यह वह ज़ायक़ा नहीं जो किसी को छोड़ दे। फिर फ़र्माता है भलाई बुराई से सुख दुख से मिठास कड़वास से कुशादगी तंगी से हम अपने बन्दों को आज़मा लेते हैं ताकि शुक्रगुज़ार और नाशुक्रा साबिर और नाउम्मीद खुल जाए। सेहत व बीमारी, तवन्गरी, फ़क़ीरी, सख़्ती व नर्मी, हलाल व हराम, हिदायत व गुमराही, इताअत मअ़सियत सब आज़माइशें हैं, इसमें भले बुरे खुल जाते हैं, तुम्हारा सबका लौटना हमारी ही तरफ़ है उस वक़्त जो जैसा था खुल जाएगा, बुरों को सज़ा नेकों को जज़ा मिलेगी। (तब्री : 18/440)

***

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۶﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۳۷﴾

तर्जुमा : "यह मुंकिर तुझे जब भी देखते हैं मज़ाक़ बनाने लगते हैं कि क्या यही वह है जो तुम्हारे मअबूदों का ज़िक्र बुराई से किया करता है और वह ख़ुद ही रहमान की याद के बिलकुल ही मुंकिर हैं। (36) इंसान की जिबिल्लत में जल्दबाज़ी रखी गयी है, मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ अभी अभी दिखाउँगा तुम मुझसे जल्दी का मुतालबा न करो।" (37)

कुफ़्फ़ार का मज़ाक़ (आयत 36, 37) : अबू जहल वग़ैरह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हुज़ूर (ﷺ) को देखते ही हंसी मज़ाक़ शुरू कर देते और आप (ﷺ) की शान में बेअदबी करने लगते, कहने लगते कि लो मियाँ! देख लो यही हैं जो हमारे मअ़बूदों को बुरा कहते हैं, तुम्हारे बुज़ुर्गों को बेवक़ूफ़ बताते हैं। एक तो इनकी यह सरकशी है दूसरे यह कि ख़ुद ज़िक्रे रहमान के इंकारी हैं, अल्लाह तआला के मुंकिर रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुंकिर। और आयत में उनके इसी कुफ़्र का बयान करके फ़र्माया गया है (إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا) (25/फ़ुरक़ान : 42) यानी हम तो अपने दीन पर जमे रहे वरना इसने तो हमें हमारे मअ़बूदों से बरगश्ता करने में कोई कमी छोड़ी ही न थी। ख़ैर इन्हें अ़ज़ाब के देख लेने से मालूम हो जाएगा कि गुमराह कौन था। इंसान बड़ा ही जल्दबाज़ है। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला ने तमाम चीज़ों की पैदाइश के बाद हज़रत आदम (عليه السلام) को पैदा करना शुरू किया, शाम के क़रीब जब उनमें रूह फूँकी गई सर आँख और ज़ुबान में जब रूह आ गई तो कहने लगे, इलाही! मग़रिब से पहले ही मेरी पैदाइश मुकम्मल हो जाए।

हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''तमाम दिनों में बेहतर व अफ़ज़ल दिन जुम्अ़े का दिन है इसी में हज़रत आदम (عليه السلام) पैदा किये गए इसी में दाख़िले जन्नत हुए, इसी में वहाँ से उतारे गए, इसी में क़ियामत क़ायम होगी, इसी दिन में एक साअ़त है कि उस वक़्त जो बंदा नमाज़ में हो और अल्लाह तआला से जो कुछ मांगे, अल्लाह उसे अ़ता करता है।'' आप (ﷺ) ने अपनी उँगलियों से इशारा करके बतलाया कि वह साअ़त बहुत थोड़ी सी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुझे मालूम है कि वह साअ़त कौनसी है वह जुम्अ़े के दिन की आख़िरी साअ़त है उसी वक़्त अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (عليه السلام) को पैदा किया। (अबूदाउद, किताबुल जुम्अ़ा, बाब फ़ज़्ले यौमुल जुम्अ़ति वल्लैलतिल जुम्अ़ा : 1046; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 491; अहमद : 2/486; हाकिम : 1/278; इब्ने हिब्बान : 2772; नसाई : 1431; सहीह मुस्लिम : 854 मुख़्तसरन) पहली आयत में काफ़िरों की बदबख़्ती का ज़िक्र करके उसके बाद ही इंसानी उ़ज्लत का जिक्र इस हिक्मत से है कि गोया काफ़िरों की सरकशी सुनते ही मुसलमान का इंतिक़ामी जज़्बा भड़क उठता है और वह जल्द बदला लेना चाहता है इसलिए कि इंसानी जिबिल्लत में ही जल्दबाज़ी है लेकिन आदते रब्बानी यह है कि वह ज़ालिमों को ढील देता है। फिर जब पकड़ता है तो छोड़ता नहीं। इसीलिए फ़र्माया कि तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाने वाला ही हूँ कि आसियों पर किस तरह सख़्ती होती है। मेरे नबी का मज़ाक़ बनाने वालों की किस तरह खाल उधड़ती है तुम अभी ही देख लोगे जल्दी न मचाओ देर है अंधेर नहीं मोहलत है भूल नहीं।

***

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا
يَكُفُّونَ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَأْتِيهِمْ
بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ

مِّنۡ قَبۡلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيۡنَ سَخِرُوۡا مِنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۴۱﴾ قُلۡ مَنۡ يَّكۡلَؤُكُمۡ
بِالَّيۡلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحۡمٰنِ‌ؕ بَلۡ هُمۡ عَنۡ ذِكۡرِ رَبِّهِمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۴۲﴾ اَمۡ لَهُمۡ اٰلِهَةٌ
تَمۡنَعُهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِنَا‌ؕ لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ نَصۡرَ اَنۡفُسِهِمۡ وَلَا هُمۡ مِّنَّا يُصۡحَبُوۡنَ ﴿۴۳﴾

तर्जुमा : ''कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो बता दो कि यह वादा कब है। (38) काश कि यह काफ़िर जानते कि उस वक़्त न तो यह काफ़िर आग को अपने चेहरों से हटा सकेंगे और न अपनी कमरों से और न उनकी मदद की जाएगी। (39) हाँ! हाँ! वादे की घड़ी उनके पास अचानक आ जाएगी और उन्हें हक्का बक्का कर देगी न तो यह लोग उसे टाल सकेंगे और न ज़रा सी भी मोहलत दिए जाएँगे। (40) तुझसे पहले के रसूलों के साथ भी हँसी मज़ाक़ किया गया पस हँसी करने वालों पर ही वह चीज़ उलट पड़ी जिसकी हँसी कर रहे थे। (41) पूछ तू कि अल्लाह के सिवा दिन रात तुम्हारी हिफ़ाज़त कौन करता है बात यह है कि यह लोग अपने रब के ज़िक्र से टाल मटोल करने वाले हैं। (42) क्या हमारे सिवा इनके और मअबूद हैं जो इन्हें मुसीबतों से बचा लें कोई भी ख़ुद अपनी मदद की ताक़त भी नहीं रखता और न कोई हमारी तरफ़ से रफ़ाक़त किया जाता है।'' (43)

क़ियामत सबको आजिज़ कर देगी (आयत 38 से 43) : अज़ाबे बारी तआला को क़ियामत के आने को यह लोग चूँकि महाल जानते थे इसलिए जुर्अत से कहते थे कि बतलाओ तो सही तुम्हारे यह डरावे कब पूरे होंगे? उन्हें जवाब दिया जाता है कि तुम अगर समझदार होते और उस दिन की होलनाकियों से आगाह होते तो जल्दी न मचाते उस वक़्त अल्लाह का अज़ाब ऊपर तले से ओढ़ना बिछौना बने हुए होंगे, ताक़त न होगी कि आगे पीछे से रब का अज़ाब हटा सको। गंधक का लिबास होगा जिसमें आग लगी हुई होगी और खड़े जल रहे होंगे, हर तरफ़ से जहन्नम घेरे हुए होगी कोई न होगा जो मदद को उठे जहन्नम अचानक दबोच लेगी उस वक़्त हक्के बक्के रह जाओगे, मब्हूत और बेहोश हो जाओगे, हैरान परेशान हो जाओगे, कोई हीला न मिलेगा, उसे दूर करो, उससे बच जाओ और न एक साअत की ढ़ील और मोहलत मिलेगी।

पहले लोग भी रसूलों से मज़ाक़ करते रहे : अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर (ﷺ) को तसल्ली देते हुए फ़र्माता है कि तुम्हें जो सताया जा रहा है मज़ाक़ बनाया जाता है और झूठा कहा जाता है उस पर परेशान न होना काफ़िरों की यह आदत पुरानी है अगले नबियों के साथ भी उन्होंने यही किया जिसकी वजह से आख़िरकार अज़ाबों में फंस गए। जैसे फ़र्मान है (وَ لَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا) (6/अन्आम : 34) तुझसे पहले के अम्बिया भी झुठलाए गए और उन्होंने अपने झुठलाए जाने पर सब्र किया, यहाँ तक कि उनके पास हमारी मदद आ गई। अल्लाह की बातों का बदलने वाला कोई नहीं, हमारे पास रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं फिर

अपनी नेअ़मतें बयान करता है कि वह तुम सबकी ह़िफ़ाज़त दिन रात अपनी आँखों से कर रहा है जो न कभी थकें, न सोयें (मिनर्रह़मान) के मअ़नी रह़मान के बदले यानी रह़मान के सिवा, अ़रबी शायरों में भी मिन बदल के मअ़नी में है।

इसी एक एह़सान पर क्या मौक़ूफ़ है यह कुफ़्फ़ार तो अल्लाह के हर हर एह़सान की नाशुक्री करते बल्कि उसकी नेअ़मतों के मुंकिर और उनसे मुँह फेरने वाले हैं। फिर बत़ौरे इंकार के डाँट डपट के साथ फ़र्माता है कि क्या इनके मअ़बूद जो अल्लाह तआ़ला के सिवा हैं इन्हें अपनी ह़िफ़ाज़त में रखते हैं यानी वह ऐसा नहीं कर सकते उनका यह गुमान सिर्फ़ ग़लत़ है बल्कि इनके मअ़बूदाने बात़िल ख़ुद अपनी मदद व ह़िफ़ाज़त नहीं कर सकते बल्कि वह हमसे बच भी नहीं सकते हमारी जानिब से कोई ख़बर उनके हाथों में नहीं। एक मअ़नी इस जुम्ले के यह भी हैं कि न तो वह किसी को बचा सकें न ख़ुद बच सकें।

***

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ
نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْىِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ
الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ
اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۗ وَ
اِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾

तर्जुमा : "बल्कि हमने इन्हें और इनके बाप दादों को फ़ायदों पर फ़ायदे दिये यहाँ तक कि इनकी मुद्दते उ़म्र गुज़र गई, क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं अब क्या वही ग़ालिब हैं। (44) कह दे कि मैं तो तुम्हें अल्लाह की वह़ी के साथ आगाह कर रहा हूँ बहरे लोग बात नहीं सुनते, जबकि उन्हें आगाह किया जाए। (45) अगर उन्हें तेरे रब के किसी अ़ज़ाब की भाप भी लग जाए तो पुकार उठते हैं हाय! हमारी ख़राबी यक़ीनन हम गुनहगार थे। (46) हम दरम्यान में ला रखेंगे अ़दल की तराज़ू को क़ियामत के दिन फिर किसी पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा एक राई के दाने के बराबर जो अ़मल होगा हम उसे ला ह़ाज़िर करेंगे और हम काफ़ी हैं ह़िसाब करने वाले।" (47)

कुफ़्फ़ार और अल्लाह तआला की कुछ निशानियाँ (आयत 44 से 47) : काफ़िरों के कीने की और अपनी गुमराही पर जम जाने की वजह बयान हो रही है कि उन्हें खाने पीने को मिलता लम्बी लम्बी उम्रें मिलीं। उन्होंने समझ लिया कि हमारे करतूत अल्लाह को पसंद हैं। उसके बाद उन्हें नसीहत करता है कि यह क्या वह यह नहीं देखते कि हमने काफ़िरों की बस्तियाँ की बस्तियाँ बवजह उनके कुफ़्र के मलियामेट कर दीं। इस जुम्ले के और भी बहुत से मअनी किये गए हैं जो सूरह रअद में हम बयान कर आए हैं लेकिन ज़्यादा ठीक मअनी यही हैं। जैसे फ़र्माया (وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى) (46/अह़क़ाफ़ : 27) हमने तुम्हारे आसपास की बस्तियाँ हलाक कीं और अपनी निशानियाँ हेर फेर करके तुम्हें दिखा दीं ताकि लोग अपनी बुराइयों से बाज़ आ जाएँ। ह़सन बसरी (रह़.) ने इसके एक मअनी यह भी बयान किये हैं कि हम कुफ़्र पर इस्लाम को ग़ालिब करते चले आए हैं। (त़बरी : 1/494) क्या तुम इससे इब्रत ह़ासिल नहीं करते कि किस त़रह़ अल्लाह तआला अपने दोस्तों को अपने दुश्मनों पर ग़ालिब कर रहा है और किस त़रह़ झुठलाने वाली अगली उम्मतों को उसने मलियामेट कर दिया और मोमिन बन्दों को नजात दे दी क्या अब भी यह लोग अपने आपको ग़ालिब ही समझ रहे हैं? नहीं! नहीं! बल्कि यह मग़लूब हैं ज़लील हैं रज़ील हैं नुक़्सान में हैं, बर्बादी के मातह़त हैं मैं तो अल्लाह की त़रफ़ का मुबल्लिग़ हूँ, जिन जिन अ़ज़ाबों से तुम्हें ख़बरदार कर रहा हूँ यह अपनी त़रफ़ से नहीं है बल्कि अल्लाह का कहा हुआ है, हाँ! जिनकी आँखें अल्लाह ने बंद कर दी हैं जिनके दिलो दिमाग़ बंद कर दिये हैं उन्हें यह अल्लाह की बातें सूदमंद नहीं पड़ती। बहरों को आगाह करना बेकार है, क्योंकि वह तो सुनते ही नहीं। उन गुनहगारों पर एक अदना सा भी अ़ज़ाब आ जाए तो वावीला करने लगते हैं और इस वक़्त बेसाख़्ता अपने क़ुसूर का इक़रार कर लेते हैं। क़ियामत के दिन अ़दल की तराज़ू क़ायम की जाएगी। यह तराज़ू एक ही होगी लेकिन चूँकि जो आ़माल उसमें तौले जाएँगे वह बहुत से होंगे, इस ऐतिबार से लफ़्ज़े जमा लाए। उस दिन किसी पर किसी त़रह़ का ज़रा सा भी ज़ुल्म न होगा इसलिए कि ह़िसाब लेने वाला ख़ुद अल्लाह है जो अकेला ही तमाम मख़्लूक़ के ह़िसाब के लिए काफ़ी है। हर छोटे से छोटा अ़मल भी वहाँ मौजूद हो जाएगा।

और आयत में फ़र्माया, तेरा रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा। फ़र्मान है (اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ) (4/निसाअ : 40) अल्लाह तआला एक राई के दाने के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता नेकी को बढ़ाता है और उसका अज्र अपने पास से बहुत बड़ा इनायत फ़र्माता है। ह़ज़रत लुक़्मान (عليه السلام) ने अपनी वसिय्यतों में अपने बेटे से फ़र्माया था बच्चे! एक राई के दाने के बराबर भी जो अ़मल हो ख़्वाह वह पत्थर में हो या आसमानों में हो या ज़मीन में हो, अल्लाह उसे लाएगा, वह बड़ा ही बारीक बीन और बाख़बर है। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "दो कलिमे हैं जो ज़ुबान पर हल्के और मीज़ान में वज़नदार हैं अल्लाह को बहुत प्यारे हैं (सुब्ह़ानल्लाहि वबि ह़म्दिही सुब्ह़ानल्लाहिल अ़ज़ीम) (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तौह़ीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व नज़अ़ल मवाज़ीनल क़िस्त़ा लि यौमिल क़ियामा) : 7563; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2694; तिर्मिज़ी : 3467; इब्ने माजा : 3806; अह़मद : 2/232; इब्ने ह़िब्बान : 831)

फ़ज़ाइले ज़िक्रे ला इलाहा इल्लल्लाह : मुस्नद अह़मद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मेरी उम्मत

के एक शख़्स को क़ियामत के दिन अल्लाह तआला तमाम अहले महशर के सामने अपने पास बुलाएगा और उसके गुनाहों के एक कम एक सौ दफ़्तर उसके सामने खोले जाएगे जहाँ तक निगाह काम करे, वहाँ तक का एक एक दफ़्तर (रजिस्टर) होगा फिर उससे जनाबे बारी पूछेगा कि क्या तुझे अपने किये हुए इन गुनाहों में से किसी का इंकार है? मेरी तरफ़ से जो मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते तेरे आमाल लिखने पर मुक़र्रर थे उन्होंने तुझ पर कोई ज़ुल्म तो नहीं किया? जवाब देगा कि ऐ अल्लाह! न इंकार की गुंजाइश है, न यह कह सकता हूँ कि ज़ुल्मन लिखा गया, अल्लाह तआला कहेगा अच्छा! तेरे पास कोई उज़्र है या कोई नेकी है? वह घबराया हुआ होगा, कहेगा कोई नहीं परवरदिगारे आलम कहेगा, क्यूँ नहीं बेशक तेरी एक नेकी हमारे पास है और आज तुझ पर कोई ज़ुल्म न होगा, अब एक छोटा सा पर्चा निकाला जाएगा जिसमें (अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि) लिखा हुआ होगा। अल्लाह तआला कहेगा, उसे पेश कर दो वह कहेगा, ऐ अल्लाह! यह पर्चा इन दफ़्तरों के मुक़ाबले में क्या करेगा? जनाबे बारी तआला फ़र्माएगा तुझ पर ज़ुल्म न किया जाएगा। अब तमाम के तमाम दफ़्तर तराज़ू के एक पलड़े में रखे जाएँगे और वह पर्चा दूसरे पलड़े में रखा जाएगा तो उस पर्चा का वज़न उन तमाम दफ़्तरों से बढ़ जाएगा। यह झुक जाएगा और वह ऊँचे हो जाँगे और रब रहमान व रहीम के नाम से कोई वज़नी चीज़ न होगी।'' (अहमद : 2/313; तिर्मिज़ी : किताबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ीमंय्यमूतु वहुवा अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह : 2639; व सनदुहू सहीहुन; इब्ने माजा : 4300; हाकिम : 1/6; इब्ने हिब्बान : 225) मुस्नद अहमद में है कि ''क़ियामत के दिन जब तराज़ूएँ रखी जाएगी पस एक शख़्स को लाया जाएगा और एक पलड़े में रखा जाएगा और जो कुछ उस पर शुमार किया गया है वह भी रखा जाएगा तो वह पलड़ा झुक जाएगा और उसे जहन्नम की तरफ़ भेज दिया जाएगा। अभी उसने पीठ फेरी ही होगी जो अल्लाह तआला की तरफ़ से एक आवाज़ देने वाला फ़रिश्ता आवाज़ देगा और कहेगा कि जल्दी न करो, एक चीज़ इसकी बाक़ी रह गई है। फिर एक पर्चा निकाला जाएगा जिसमें (ला इलाहा इल्लल्लाह) होगा वह उस शख़्स के साथ तराज़ू के पलड़े में रखा जाएगा और यह पलड़ा नेकी का झुक जाएगा।'' (अहमद : 2/221, 222; तिर्मिज़ी : 2639; वहुवा हदीसुन सहीहुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 6/280)

मुस्नद अहमद में है कि एक सहाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठकर कहने लगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे गुलाम हैं जो मुझे झुठलाते भी हैं मेरी ख़यानत भी करते हैं मेरी नाफ़र्मानी भी करते हैं और मैं भी उन्हें मारता पीटता हूँ और बुरा भला भी कहता हूँ। अब कहिए मेरा उनका क्या हाल होगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''उनकी ख़यानत नाफ़र्मानी झुठलाना वग़ैरह जमा किया जाएगा और तेरा मारना पीटना बुरा कहना भी अगर तेरी सज़ा उनकी ख़ताओं के बराबर हुई तो तू छूट जाएगा, न अज़ाब न सवाब हाँ! अगर तेरी सज़ा कम रही तो तुझे अल्लाह का फ़ज़्लो करम मिलेगा और अगर तेरी सज़ा उन करतूतों से बढ़ गई तो तुझसे उस बढ़ी हुई सज़ा का बदला लिया जाएगा।'' यह सुनकर वह सहाबी रोने लगे और चीख़ना शुरू कर दिया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''इसे क्या हो गया? क्या इसने क़ुरआन करीम में यह नहीं पढ़ा (व नज़उल मवाज़ीनल क़िस्त) आख़िर तक।'' यह सुनकर उस सहाबी ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इन मामलात को सुनकर तो मेरा जी चाहता है कि मैं अपने तमाम गुलामों को आज़ाद कर दूँ आप गवाह रहिए कि यह सब राहे लिल्लाह आज़ाद हैं। (अहमद : 2/280; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल अम्बिया : 3165; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने शिहाब ज़ोहरी मुदल्लस है और सिमाअ की सराहत नहीं है।)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۚ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ
مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

तर्जुमा : ''यह बिलकुल सच है कि हमने मूसा व हारून (ﷺ) को फ़ैसले करने वाली नूरानी और परहेज़गारों के लिए वअज़ व नसीहत वाली किताब अता की है। (48) जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं और क़ियामत का खटका रखने वाले हैं। (49) और यह नसीहत व बरकत वाला क़ुरआन भी हमने नाज़िल फ़र्माया है क्या फिर भी तुम इसके मुंकिर हो।'' (50)

तौरात की फ़ज़ीलत (आयत 48 से 50) : हम पहले भी इस बात को बता चुके हैं कि हज़रत मूसा और हज़रत हारून (ﷺ) का ज़िक्र अक्सर मिला जुला आता है और इसी तरह तौरात और क़ुरआन का ज़िक्र भी उमूमन एक साथ ही होता है। फ़ुरक़ान से मुराद किताब (तब्री : 18/453) यानी तौरात है जो हक़ व बातिल, हराम व हलाल में फ़र्क़ करने वाली थी। (तब्री : 18/453) इसी से जनाब मूसा (ﷺ) को मदद मिली। कुल की कुल आसमानी किताबें हक़ व बातिल, हिदायत व गुमराही, भलाई बुराई, हलाल हराम में जुदाई करने वाली होती हैं उनसे दिलों में नूरानियत, आमाल में हक़्क़ानियत, अल्लाह का डर व ख़शिय्यत और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हासिल होता है, इसीलिए फ़र्माया कि अल्लाह से डरने वालों के लिए यह किताबुल्लाह नसीहत व पंद और नूर व रोशनी है। फिर उन मुत्तक़ियों का वस्फ़ भी बयान हो रहा है कि वह अपने अल्लाह से ग़ायबाना डरते रहते हैं जैसे जन्नतियों के औसाफ़ बयान करते हुए फ़र्माया (مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَ جَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ) (50/क़ाफ़ : 33) जो रहमान से बिन देखे डरते हैं और झुकने वाला दिल रखते हैं। और आयत में है जो लोग अपने रब का ग़ायबाना डर रखते हैं उनके लिए मग़फ़िरत है और बहुत बड़ा अज्र है। (67/मुल्क : 12)

उन मुत्तक़ियों का दूसरा वस्फ़ यह है कि यह क़ियामत का खटका रखते हैं उसकी होलनाकियों से लरज़ाँ व तरसाँ रहते हैं। फिर फ़र्माता है कि इस क़ुरआने अज़ीम को भी हमने ही नाज़िल किया है जिसके आस पास भी बातिल नहीं आ सकता जो हिक्मतों और तारीफ़ों वाले अल्लाह की तरफ़ से उतरा है। अफ़सोस! क्या इस क़द्र वज़ाहत व हक़्क़ानियत सदाक़त व नूरानियत वाला क़ुरआन भी इस क़ाबिल है कि तुम इसके मुंकिर बने हो।

***

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا
هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ
كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾
قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने इब्राहीम (عليه السلام) को छुटपने में ही उनकी राहयाबी दे रखी थी और हम उसके अहवाल से बख़ूबी वाक़िफ़ थे। (51) जबकि उसने अपने वालिद से और अपनी क़ौम से कहा कि यह मूर्तियाँ जिनके तुम मुजाविर बने बैठे हो हैं क्या? (52) सबने जवाब दिया कि हमने अपने बाप दादों को इन ही की इबादत करते हुए पाया है। (53) आपने फ़र्माया फिर तो तुम ख़ुद और तुम्हारे बाप दादा सभी सब यक़ीनन खुली गुमराही में मुब्तला रहे। (54) कहने लगे कि क्या आप हमारे पास सचमुच हक़ लाए हैं या यूँ ही खुली बाज़ी कर रहे हैं? (55) आपने फ़र्माया, नहीं! नहीं! दरहक़ीक़त तुम सबका परवरदिगार तो वह है जो आसमान व ज़मीन का मालिक है जिसने इन्हें पैदा किया है। मैं तो इसी बात का गवाह और क़ाइल हूँ।'' (56)

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) बचपन से ही हिदायत याफ़्ता थे (आयत 51 से 56) : फ़र्मान है कि ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) को अल्लाह तआला ने उनके बचपन ही से हिदायत अता की थी उन्हें अपनी दलीलें इल्हाम की थीं और भलाई सुझाई थी जैसे और आयत में है (وَ تِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ) (6/अन्आम : 83) यह हैं हमारी ज़बरदस्त दलीलें जो हमने इब्राहीम (عليه السلام) को दी थीं ताकि वह अपनी क़ौम को क़ाइल कर सकें। यह जो क़िस्से मशहूर हैं कि हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के दूध पीने के ज़माने में ही उन्हें उनकी वालिदा ने एक ग़ार में रखा था जहाँ से मुद्दतों बाद वह बाहर निकले और अल्लाह तआला की मख़्लूक़ात पर ख़ुसूसन चाँद तारों वग़ैरह पर नज़र डालकर अल्लाह को पहचाना यह सब बनी इस्राईल के अफ़साने हैं।

क़ाइदा यह है कि उनमें से जो वाक़िया उसके मुताबिक़ हो जो हक़ हमारे हाथों में है यानी किताब व सुन्नत वह तो सच्चा है और क़ाबिले क़बूल है इसलिए कि वह सेहत के मुताबिक़ है और जो ख़िलाफ़ हो वह मर्दूद है और जिसकी निस्बत हमारी शरीअत ख़ामोश हो मुवाफ़िक़त व मुख़ालिफ़त कुछ न हो भले इसका रिवायत करना बक़ौल अक्सर मुफ़स्सिरीन जाइज़ है लेकिन न तो हम इसे सच्चा कह सकते हैं न ग़लत।

हाँ! यह ज़ाहिर है कि वह वाक़ियात हमारे लिए कुछ सनद नहीं, न उनमें हमारा कोई दीनी नफ़ा है अगर

ऐसा होता तो हमारी जामेअ नाफ़ेअ कामिल शामिल शरीअत इसके बयान में कोताही न करती, हमारा अपना मस्लक तो इस तफ़्सीर में यह रहा है कि हम ऐसी बनी इस्राईली रिवायतों को वारिद नहीं करते क्योंकि इसमें सिवाए वक़्त बर्बाद करने के कोई नफ़ा नहीं, हाँ! नुक़्सान का एहतिमाल ज़्यादा है क्योंकि हमें यक़ीन है कि बनी इस्राईल में रिवायत की जाँच पड़ताल का माद्दा ही न था, वह सच झूठ में तमीज़ करना जानते ही न थे उनमें झूठ सरायत कर गया था जैसे कि हमारे हुफ़्फ़ाज़ अइम्मा ने तशरीह की है। ग़र्ज़ यह है कि आयत में इस अम्र का बयान है कि हमने इससे पहले हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को हिदायत बख़्शी थी और हम जानते थे कि वह इसके लायक़ है। बचपने में ही आपने अपनी क़ौम की ग़ैरुल्लाह परस्ती को नापसंद किया और निहायत जुर्अत से उसका सख़्त इंकार किया और क़ौम से कहा कि इन बुतों के आसपास ठठ लगाकर क्या बैठते हो।

हज़रत अली (रज़ि.) राह से गुज़र रहे थे जो देखा कि शतरंजबाज़ लोग बाज़ी खेल रहे हैं आपने यही आयत तिलावत करके फ़र्माया कि तुममें से कोई अपने हाथ में जलता हुआ अंगारा ले ले यह इस शतरंज के मुहरों के लेने से अच्छा है।

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की उस खुली दलील का जवाब उनके पास क्या था जो देते कहने लगे कि यह तो पुरानी रविश है बाप दादों से चली आती है। आपने फ़र्माया, वाह! यह भी कोई दलील हुई? हमारा ऐतिराज़ जो तुम पर है वही तुम्हारे अगलों पर है एक गुमराही में तुम्हारे बड़े मुब्तला हों और तुम भी उसमें मुब्तला हो जाओ तो वह कोई भलाई बनने से रही मैं कहता हूँ तुम और तुम्हारे बाप दादे सभी राहे हक़ से भटक गए हो और खुली गुमराही में डूबे हुए हो। अब तो उनके कान खड़े हो गए क्योंकि उन्होंने अपने अक़्लमंदों की तौहीन देखी, अपने बाप दादों की निस्बत न सुनने के कलिमात सुने अपने मअबूदों की हक़ारत होती हुई देखी तो घबरा गए और कहने लगे, इब्राहीम! क्या वाक़ेई तुम ठीक कह रहे हो या मज़ाक़ बना रहे हो, हमने तो ऐसी बात भी नहीं सुनी। आपको तब्लीग़े हक़ का मौक़ा मिला और साफ़ ऐलान किया कि रब तो सिर्फ़ ख़ालिक़े आसमान व ज़मीन ही है। तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ मालिक वही है, तुम्हारे यह मअबूद किसी अदना सी चीज़ के भी न ख़ालिक़ हैं न मालिक, फिर मअबूद व मस्जूद कैसे हो गए। मेरी गवाही है कि ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह ही लायक़े इबादत है, न उसके सिवा कोई रब, न मअबूद।

***

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿۵۷﴾ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ
لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿۵۸﴾ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۹﴾ قَالُوْا
سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَشْهَدُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿۶۲﴾ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ
هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿۶۳﴾

तर्जुमा : ''अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे इन मअ़बूदों का इलाज तुम्हारे पीठ फेरकर जा चुकने के बाद ज़रूर करूँगा। (57) फिर तो उन सबके टुकड़े टुकड़े कर दिए हाँ! सिर्फ़ बड़े बुत को छोड़ दिया यह भी इसलिए कि वह सब उसकी तरफ़ ही लौटें। (58) कहने लगे कि हमारे ख़ुदाओं के साथ यह किसने किया? ऐसा शख़्स तो यक़ीनन ज़ालिमों में से है। (59) बोले हमने एक नौजवान को उनका तज़्किरा करते हुए तो सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है। (60) सबने कहा अच्छा इसे मज्मअ़े में लोगों की नज़रों के सामने लाओ ताकि सब देखें। (61) कहने लगे, ऐ इब्राहीम (عليه السلام)! क्या तूने ही हमारे ख़ुदाओं के साथ यह हरकत की है। (62) आपने जवाब दिया बल्कि इस काम को उनके इस बड़े ने किया है तुम अपने इन ख़ुदाओं से ही पूछ लो अगर यह बोलते चालते हों।'' (63)

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) बुत तोड़ते हैं (आयत 57 से 63) : ऊपर ज़िक्र गुज़रा कि ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने अपनी क़ौम को बुतपरस्ती से रोका और जज़्ब-ए-तौहीद में आकर आपने क़सम खा ली कि मैं तुम्हारे इन बुतों का ज़रूर कुछ न कुछ इलाज करूँगा। उसे भी क़ौम के कुछ अफ़राद ने सुना। उनकी ईद का दिन जो मुक़र्रर था हज़रत ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने फ़र्माया कि जब तुम अपनी रुसूमे ईद अदा करने के लिए बाहर जाओगे मैं तुम्हारे बुतों को ठीक कर दूँगा। ईद के एक आध दिन पहले आपके वालिद ने आपसे कहा कि प्यारे बेटे! तुम हमारे साथ हमारी ईद में चलो ताकि तुम्हें हमारे दीन की अच्छाई और रौनक़ मालूम हो जाए। चुनाँचे यह आपको लेकर चला कुछ दूर जाने के बाद हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) गिर पड़े और फ़र्माने लगे, अब्बा! मैं बीमार हूँ, बाप आपको छोड़कर मरासिमे कुफ़्र बजा लाने के लिए आगे बढ़ गया और जो लोग रास्ते से गुज़रते आपसे पूछते क्या बात है रास्ते में कैसे बैठे हो?

जवाब देते कि मैं बीमार हूँ जब आम लोग निकल गए और बुढ़े लोग रह गए तो आपने फ़र्माया तुम सबके चले जाने के बाद आज मैं तुम्हारे ख़ुदाओं की मरम्मत कर दूँगा। आपने जो फ़र्माया कि मैं बीमार हूँ तो वाक़ेई आप उस दिन के अगले दिन क़द्रे अ़लील भी थे। जबकि वह लोग चले गए तो मैदान ख़ाली पाकर आपने अपना इरादा पूरा किया और बड़े बुत को छोड़कर तमाम बुतों का चूरा चूरा कर दिया। जैसे और आयतों में इसका तफ़्सीली बयान मौजूद है कि अपने हाथ से उन बुतों के टुकड़े टुकड़े कर दिये। उस बड़े बुत को बाक़ी रखने में हिक्मत व मस्लिहत यह थी कि अव्वलन उन लोगों के ज़हन में ख़्याल जाए कि शायद इस बड़े ख़ुदा ने इन छोटे ख़ुदाओं को ग़ारत कर दिया होगा। क्योंकि इसे ग़ैरत मालूम हुई होगी कि मुझे बड़े के होते हुए यह छोटे ख़ुदाई के लायक़ कैसे हो गए चुनाँचे इस ख़्याल की पुख़्तगी को उनके ज़हनों में क़ायम करने के लिए आपने कुल्हाड़ा भी उसकी गर्दन पर रख दिया था जैसे की मरवी है।

जब मुश्रिकीन अपने मेले से वापिस आए तो देखा कि उनके सारे ख़ुदा मुँह के बल औंधे गिरे हुए हैं और अपनी हालत से वह बतला रहे हैं कि वह महज़ बेजान बेनफ़ा व नुक़्सान ज़लील व हक़ीर चीज़ हैं और गोया अपनी इस हालत से अपने पुजारियों की बेवक़ूफ़ी पर वह मुहर लगा रहे थे लेकिन उन बेवक़ूफ़ों पर उल्टा

असर हुआ, कहने लगे यह कौन ज़ालिम शख़्स था जिसने हमारे मअबूदों की ऐसी एहानत की?

उस वक़्त जिन लोगों ने हज़रत इब्राहीम (ﷺ) का वह कलाम सुना था, उन्हें ख़्याल आ गया और कहने लगे वह नौजवान जिसका नाम इब्राहीम है उसे हमने अपने इन ख़ुदाओं की मज़म्मत करते हुए सुना है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस आयत को पढ़ते और फ़र्माते जो नबी आया जवान, जो आलिम जवान, अल्लाह की शान देखिए जो मक़्सद हज़रत ख़लीलुल्लाह(ﷺ) का था वह अब पूरा हो रहा है। क़ौम के यह लोग मश्वरा करते हैं कि आओ सबको जमा करो और उसे बुलाओ और फिर इसकी सज़ा करो। हज़रत इब्राहीम (ﷺ) यही चाहते थे कि कोई ऐसा मज्मआ हो और मैं उसमें उनकी ग़लती उन पर वाज़ेह करूँ और उनमें तौहीद की तब्लीग़ करूँ और उन्हें बतलाऊँ कि यह कैसे ज़ालिम व जाहिल हैं, उनकी इबादत करते हैं जो नफ़ा नुक़्सान के मालिक नहीं बल्कि अपनी जान का भी इख़्तियार नहीं रखते। चुनाँचे मज्मआ हुआ सब छोटे बड़े आ गए। हज़रत इब्राहीम (ﷺ) भी मुल्ज़िम की हैसियत से मौजूद हुए और आपसे सवाल हुआ कि हमारे ख़ुदाओं के साथ यह बेतुकी हरकत तुमने की है? इस पर आपने उन्हें क़ाइल मअक़ूल करने के लिए फ़र्माया कि यह काम तो इनके इस बड़े बुत ने किया है और उसकी तरफ़ इशारा किया, जिसे आपने तोड़ा न था फिर फ़र्माया कि मुझसे क्या पूछते हो? अपने इन ख़ुदाओं से ही क्यूँ न पूछते कि तुम्हारे टुकड़े टुकड़े उड़ाने वाला कौन है? इससे मक़्सूद ख़लीलुल्लाह (ﷺ) का यह था कि यह लोग ख़ुद ब ख़ुद ही समझ लें कि यह पत्थर क्या बोलेंगे और जब वह इतने आजिज़ हैं तो यह लायक़े इबादत कैसे ठहर सकते हैं? चुनाँचे यह मक़्सद भी आपका बफ़ज़्ले इलाही पूरा हुआ और यह दूसरी चोट भी काम कर गयी।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि "ख़लीलुल्लाह (ﷺ) ने तीन झूठ बोले हैं दो तो अल्लाह की राह में एक तो उनका यह फ़र्माना कि उन बुतों को इनके बड़े ने तोड़ा है और दूसरा यह फ़र्माना कि बीमार हूँ और एक मर्तबा आप हज़रत सारा (ﷺ) के साथ सफ़र में थे इत्तिफ़ाक़ से एक ज़ालिम बाशाह की हुदूद से आप गुज़र रहे थे आपने वहाँ मंज़िल की थी किसी ने बादशाह को ख़बर दी कि एक मुसाफ़िर के साथ बेहतरीन औरत है और वह इस वक़्त हमारी सल्तनत में है। बादशाह ने झट से सिपाही भेजा कि वह हज़रत सारा को ले आए, उसने पूछा कि तुम्हारे साथ यह कौन है? हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी बहन है उसने कहा, बादशाह के दरबार में भेजो। आप हज़रत सारा (ﷺ) के पास गए और फ़र्माया, सुनो! उस ज़ालिम ने तुम्हें बुलवाया है और मैं तुम्हें अपनी बहन बता चुका हूँ अगर तुमसे पूछा जाए तो यही कहना। इसलिए कि दीन के एतिबार से तुम मेरी बहन हो, रूए ज़मीन पर मेरे और तुम्हारे सिवा कोई मुसलमान नहीं। यह कहकर आप चले आए। हज़रत सारा (ﷺ) उधर चलीं आप नमाज़ में खड़े हो गए। जब हज़रत सारा को उस ज़ालिम ने देखा और उनकी तरफ़ लपका उसी वक़्त अल्लाह के अज़ाब ने उसे पकड़ लिया और हाथ पैर ऐंठ गए, घबराकर आजिज़ी से कहने लगा, ऐ नेक औरत! अल्लाह से दुआ कर कि वह मुझे छोड़ दे, मैं वादा करता हूँ कि तुझे हाथ न लगाऊँगा। आपने दुआ की उसी वक़्त वह अच्छा हो गया लेकिन अच्छा होते ही उसने फिर वही हरकत की और आपको पकड़ना चाहा, वहीं फिर अज़ाबे इलाही आ पहुँचा और यह पहली दफ़ा से भी ज़्यादा सख़्त पकड़ लिया गया, फिर आजिज़ी करने लगा, ग़र्ज़ तीन बार लगातार यही हुआ। तीसरी बार छूटते ही

उसने अपने क़रीब के मुलाज़िम को आवाज़ दी और कहा तू मेरे पास किसी इंसान औरत को नहीं लाया बल्कि शैतान को लाया है। जा! इसे निकाल और हाजरा को इसके साथ कर दे। उसी वक़्त आप वहाँ से निकाल दी गईं और हज़रत हाजरा (ﷺ) को आपके हवाले कर दिया गया। हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने उनकी आहट पाते ही नमाज़ से फ़राग़त हासिल की और पूछा. कहो क्या गुज़री? आपने फ़र्माया, अल्लाह ने उस काफ़िर के मकर को उसी पर लौटा दिया और हाजरा मेरी ख़िदमत के लिए आ गईं।'' हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) इस हदीस को बयान करके फ़र्माते हैं कि यह हैं तुम्हारी अम्माँ ऐ आसमानी पानी के लड़कों। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीमा ख़लीला) : 3358; सहीह मुस्लिम : 3371; अबूदाऊद : 2212; अहमद : 2/403; इब्ने हिब्बान : 5737; बैहक़ी : 7/326)

***

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٦٤ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ
عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَاۗءِ يَنْطِقُوْنَ ۝٦٥ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا
وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝٦٦ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٧ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ
وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝٦٨ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝٦٩
وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۝٧٠

तर्जुमा : ''पस ये लोग अपने दिलों में तो मान गए और कहने लगे, वाक़ेई ज़ालिम तो तुम ही हो। (64) फिर सर डालकर कुछ सोच साच कर बावजूद क़ाइल हो जाने के कहने लगे, कि यह तो तुझे भी मालूम है कि यह बोलने चालने वाले नहीं। (65) ख़लीलुल्लाह (ﷺ) ने उसी वक़्त फ़र्माया अफ़सोस! क्या तुम उनकी इबादत करते हो जो न तुम्हें कुछ भी नफ़ा पहुँचा सकें, न नुक़्सान। (66) तुफ़ है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, क्या तुम्हें इतनी भी अक़्ल नहीं। (67) कहने लगे कि इसे जला दो और अपने ख़ुदाओं की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना ही है तो। (68) हमने फ़र्मा दिया कि ऐ आग! तू ठण्डी हो जा और इब्राहीम (ﷺ) के लिए सलामती और आराम की चीज़ बन जा। (69) भले उन्होंने इब्राहीम (ﷺ) का बुरा चाहा लेकिन हमने उन्हें ही नुक़्सान पाने वाला कर दिया।'' (70)

जो नफ़ा नुक़्सान का मालिक नहीं वह मअबूद नहीं (आयत 64 से 70) : बयान हो रहा है कि ख़लीलुल्लाह (ﷺ) की बातें सुनकर उन्हें ख़्याल तो पैदा हो गया। अपने आपको अपनी बेवक़ूफ़ी पर

मलामत करने लगे, सख़्त नदामत उठाई और आपस में कहने लगे कि हमने बड़ी ग़लती की अपने ख़ुदाओं के पास किसी को हिफ़ाज़त के लिए न छोड़ा और चल दिए। फिर ग़ौरो फ़िक्र करके बात बनाई कि आप जो हमसे कहते हैं कि इनसे हम पूछ लें कि तुम्हें किसने तोड़ा है तो क्या आपको मालूम नहीं कि यह बुत बेज़ुबान हैं। आजिज़ी हैरत और इंतिहाई लाजवाबी की हालत में उन्हें इस बात का इक़रार करना पड़ा। अब हज़रत इब्राहीम (ﷺ) को ख़ासा मौक़ा मिल गया और आप फ़ौरन फ़र्माने लगे कि बेज़ुबान बेनफ़ा, बेज़रर चीज़ की इबादत कैसी। तुम क्यूँ इस क़द्र बेसमझ हो रहे हो? तुफ़ है तुम पर और तुम्हारे इन झूठे मअबूदों पर, आह! किस क़द्र ज़ुल्मो जिहालत है कि ऐसी चीज़ों की पूजा की जाए और रब वाहिद को छोड़ दिया जाए। यही थीं वह दलीलें जिनका ज़िक्र पहले हुआ था कि हमने इब्राहीम (ﷺ) को वह दलीलें सिखा दीं जिनसे क़ौम हक़ीक़त तक पहुँच जाए।

हज़रत इब्राहीम (ﷺ) पर आग का ठण्डा होना : यह क़ायदा है कि जब इंसान दलील से मजबूर हो जाता है तो या तो नेकी उसे घसीट लेती है या बदी ग़ालिब आ जाती है यहाँ उन लोगों को उनकी बदबख़्ती ने घेर लिया और दलील से आजिज़ आकर क़ाइल मअक़ूल होकर लगे अपने दबाव का मुज़ाहिरा करने। आपस में मश्वरा किया कि इब्राहीम (ﷺ) को आग में डालकर उसकी जान ले लो ताकि हमारे इन ख़ुदाओं की इज़्ज़त रह जाए। इस बात पर सबने इत्तिफ़ाक़ कर लिया और लकड़ियाँ जमा करनी शुरू कर दीं यहाँ तक कि बीमार औरतें भी नज़्रें मानती थीं तो यही कि अगर उन्हें शिफ़ा हो जाए तो इब्राहीम (ﷺ) को जलाने को लकड़ियाँ लाएँगी। ज़मीन में एक बहुत बड़ा और बहुत गहरा खड्डा खोदा, लकड़ियों से उसे पूरा भर दिया और अंबार खड़ा करके उसमें आग लगाई, रूए ज़मीन पर कभी इतनी बड़ी आग देखी नहीं गई जब आग के शोले आसमान से बातें करने लगे उसके पास जाना मुहाल हो गया तो अब घबराए कि ख़लीलुल्लाह (ﷺ)! को आग में डालें कैसे ? आख़िर एक कुर्दी फ़ारसी आराबी के मश्वरे से जिसका नाम हैज़न था एक मिन्जनीक़ तैयार करायी गई कि उसमें बिठाकर झुलाकर फेंक दो। मरवी है कि "उस शख़्स को अल्लाह तआला ने उसी वक़्त ज़मीन में धंसा दिया और क़ियामत तक वह अंदर धंसता जाता रहेगा।" (तब्री : 18/465) जब आपको आग में डाला गया आपने फ़र्माया, "हस्बियल्लाहु व निअमल वकील" हुज़ूर (ﷺ) और आपके सहाबा (रज़ि.) के पास भी जब यह ख़बर पहुँची कि तमाम अरब लश्करे जर्रार लेकर आपके मुक़ाबले के लिए आ रहा है तो आप (ﷺ) ने भी यही पढ़ा था। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह आले इमरान बाब क़ौलुहू (अल्लज़ीना क़ाला लहुमुन्नासु इन्नन्नासा...) : 4563)

यह भी मरवी है कि जब आपको आग में डालने लगे तो आपने फ़र्माया, इलाही! तू आसमानों में अकेला मअबूद है और तौहीद के साथ तेरा आबिद ज़मीन पर सिर्फ़ मैं ही हूँ। (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2349; व सनदुहू हसन; व अख़्रजल अल्बानी फ़ज़अअ फ़हू फ़िल ज़ईफ़ति : 1216; हिल्यतुल औलिया : 1/19) मरवी है कि जब काफ़िर आपको बाँधने लगे तो आपने फ़र्माया, इलाही! तेरे सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं, तेरी ज़ात पाक है तमाम हम्दो सना तेरे ही लिए सज़ावार है, सारे मुल्कों का तू अकेला ही मालिक है कोई भी तेरा शरीक और साझी नहीं।" हज़रत शुऐब जुबाई (रह.) फ़र्माते हैं कि उस वक़्त आपकी उम्र सिर्फ़ सौलह साल की थी, वल्लाहु आलम! कुछ सलफ़ से मंक़ूल है कि उसी वक़्त हज़रत जिब्राईल (ﷺ) आपके सामने आसमान व ज़मीन के बीच ज़ाहिर हुए और फ़र्माया, क्या आपको कोई हाजत है आपने जवाब दिया तुमसे तो

कोई हाजत नहीं अल्बत्ता अल्लाह तआला से हाजत है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि बारिश का दारोग़ा फ़रिश्ता कान लगाए हुए तैयार था कि कब अल्लाह का हुक्म हो और मैं इस आग पर बारिश बरसाकर इसे ठण्डा कर दूँ लेकिन बराहे रास्त हुक्मे रब्बानी आग ही को पहुँचा कि मेरे ख़लील पर तू सलामती और ठण्डक बन जा। फ़र्माते हैं कि इस हुक्म के साथ ही रूए ज़मीन की आग ठण्डी हो गई। (तब्री : 18/466) हज़रत कअब अह्बार (रह.) फ़र्माते हैं कि उस दिन दुनिया भर में आग से कोई फ़ायदा न उठा सका और हज़रत इब्राहीम (अलै.) की रस्सियाँ तो आग ने जला दीं लेकिन आपके एक रोंगटे को भी आग नहीं लगी। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं आग को हुक्म हुआ कि वह ख़लीलुल्लाह (अलै.) को कोई नुक़्सान न पहुँचाए।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि अगर आग को सिर्फ़ ठण्डा होने का हुक्म होता तो फिर ठण्डक भी आपको नुक़्सान पहुँचाती। (तब्री : 18/465) इसलिए साथ ही फ़र्मा दिया गया कि ठण्डक के साथ ही सलामती बन जा। ज़ह्हाक (रह.) फ़र्माते हैं कि बहुत बड़ा खड्डा बहुत ही गहरा खोदा गया था और उसे आग से भर दिया था हर तरफ़ आग के शोले निकल रहे थे, उसमें ख़लीलुल्लाह (अलै.) को डाल दिया लेकिन आग ने आपको छुआ तक नहीं, यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने उसे बिलकुल ठण्डी कर दी। मज़्कूर है कि उस वक़्त जिब्रईल (अलै.) आपके साथ थे आपके मुँह से पसीना पोंछ रहे थे बस उसके सिवा आपको आग ने कोई तक्लीफ़ न दी।

सुद्दी (रह.) कहते हैं साये का फ़रिश्ता उस वक़्त आपके साथ था। मरवी है कि आप उसमें चालीस या पचास दिन रहे। फ़र्माया करते थे कि मुझे उस ज़माने में जो राहत व सुरूर हासिल था वैसा उससे निकलने के बाद हासिल नहीं हुआ। क्या अच्छा होता कि मेरी सारी ज़िन्दगी उसी में गुज़रती। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) के वालिद ने सबसे अच्छा कलिमा जो कहा है वह यह है कि जब हज़रत इब्राहीम (अलै.) आग से ज़िन्दा सही सालिम निकले उस वक़्त आपको पेशानी से पसीना पौंछते हुए देखकर आपके वालिद ने कहा, इब्राहीम! तेरा रब बहुत ही बुज़ुर्ग और बड़ा है। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं उस दिन जो जानवर निकला वह आग को बुझाने की कोशिश कर रहा था सिवाय गिरगिट के। (तब्री : 18/467) हज़रत ज़ोहरी (रह.) फ़र्माते हैं रसलुल्लाह (ﷺ) ने गिरगिट के मार डालने का हुक्म फ़र्माया है और उसे फ़ासिक़ कहा है। (तब्री : 18/467) हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में एक नेज़ा देखकर एक औरत ने सवाल किया कि यह क्यूँ रख छोड़ा है? आपने फ़र्माया, गिरगिटों को मार डालने के लिए। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम (अलै.) आग में डाले गए उस वक़्त तमाम जानवर उस आग को बुझा रहे थे सिवाय गिरगिट के यह और फूँक मार रहा था।" पस आप (ﷺ) ने उसके मार डालने का हुक्म फ़र्माया है। (इब्ने माजा, किताबुस्सैदि, बाब क़त्लल वज़ग़ : 3231; व सनदुहू हसन) फिर फ़र्माता है कि उनका मकर हमने उन पर उलट दिया काफ़िरों ने अल्लाह के नबी को नीचा दिखाना चाहा अल्लाह ने उन्हें नीचा दिखा दिया। हज़रत अतिया औफ़ी (रह.) का बयान है कि हज़रत इब्राहीम (अलै.) का आग में जलाए जाने का तमाशा देखने के लिए उन काफ़िरों का बादशाह भी आया था उधर ख़लीलुल्लाह (अलै.) को आग में डाला जाता है इधर आग की एक चिंगारी उड़ती है और इस काफ़िर बादशाह के अंगूठे पर आ पड़ती है और वहीं खड़े खड़े सबके सामने इस तरह उसे जला देती है जैसे रूई जल जाए।

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝٧١ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ وَيَعْقُوْبَ

نَافِلَةً ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝٧٢ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ

الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۝٧٣ وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا

وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ

فٰسِقِيْنَ ۝٧٤ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٧٥

तर्जुमा : "हम इब्राहीम (عليه السلام) और लूत (عليه السلام) को बचाकर उस ज़मीन की तरफ़ ले चले जिसमें हमने तमाम जहान वालों के लिए बरकत रखी थी। (71) और हमने उसे इस्हाक़ अता फ़र्माया और यअक़ूब (عليه السلام) और ज़्यादा दिया और हर एक को हमने नेकोकार किया। (72) और हमने उन्हें पेशवा दिया कि हमारे हुक्म से लोगों की रहबरी करें और हमने उनकी तरफ़ नेक कामों के करने और नमाज़ों के क़ायम रखने और ज़कात देने की वही की और वह सबके सब हमारे इबादतगुज़ार बंदे थे। (73) हमने लूत (عليه السلام) को भी हिक्मत व इल्म दिया और उसे उस बस्ती से नजात दी जहाँ के लोग गंदे कामों में मुब्तला थे और थे भी बदतरीन गुनहगार। (74) और हमने लूत (عليه السلام) को अपनी मेहरबानियों में दाख़िल कर लिया बेशक वह नेक लोगों में से था।" (75)

मुल्के शाम और मक्का मुकर्रमा (आयत 71 से 75) : अल्लाह तआला बयान करता है कि उसने अपने ख़लील को काफ़िरों से बचाकर शाम के मुक़द्दस मुल्क में पहुँचा दिया। उबय बिन कअब (रज़ि.) फ़र्माते हैं तमाम मीठा पानी शाम के सख़रा के नीचे से निकलता है। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं आपको इराक़ की सरज़मीन से अल्लाह तआला ने नजात दी और शाम के मुल्क में पहुँचाया, शाम ही नबियों का हिज्रत कदा रहा। ज़मीन में से जो घटता है वह शाम में बढ़ता है और शाम की कमी फ़िलिस्तीन में ज़्यादती होती है। शाम ही महशर की सरज़मीन है यहीं हज़रत ईसा (عليه السلام) उतरेंगे यहीं दज्जाल क़त्ल किया जाएगा। बक़ौल कअब (रज़ि.) आप हर्रान की तरफ़ गए थे यहाँ आकर आपको मालूम हुआ कि यहाँ के बादशाह की लड़की अपनी क़ौम के दीन से बेज़ार है और उससे नफ़रत रखती है बल्कि उनके ऊपर तानाज़नी करती है तो आपने उनसे इस इक़रार पर निकाह कर लिया कि वह आपके साथ हिज्रत करके यहाँ से निकल चले, उन ही का नाम हज़रत सारा (عليها السلام)। यह रिवायत ग़रीब है और मशहूर यह है कि हज़रत सारा (عليها السلام) आपके चचा की साहबज़ादी थीं और आपके साथ हिज्रत करके चली आई थीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि यह हिज्रत मक्का में ख़त्म हुई।

मक्का ही की निस्बत जनाब बारी तआला फ़र्माता है कि यह अल्लाह का पहला घर है जो बरकत व हिदायत वाला है। (3/आले इमरान : 96) जिसमें अलावा और बहुत सी निशानियों के मक़ामे इब्राहीम भी है उसमें आ जाने वाला अम्नो सलामती में आ जाता है। फिर फ़र्माता है कि हमने उसे इस्हाक़ (ﷺ) दिया और याक़ूब (ﷺ) का अतिया भी किया यानी लड़का और पोता जैसे फ़र्मान है (فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ) (11/हूद : 71) चूँकि ख़लीलुल्लाह (ﷺ) के सवाल में एक लड़के ही की तलब थी दुआ की थी कि (रब्बि हब्लि मिनस्सालेहीन) अल्लाह तआला ने यह दुआ भी क़बूल की और लड़के के यहाँ भी लड़का दिया जो सवाल से ज़ाइद था और सबको नेक बनाया। उन सबको दुनिया का मुक़्तदा और पेशवा बना दिया कि बहुक्मे इलाही अल्लाह की मख़्लूक़ को राहे इलाही की दावत देते रहे। उनकी तरफ़ हमने नेक कामों की वह्यी की। इस आम बात पर अत्फ़ डालकर फिर ख़ास बातें यानी नमाज़ और ज़कात का बयान फ़र्माया और इर्शाद हुआ कि वह अलावा उन नेक कामों के हुक्म के ख़ुद भी उन नेकियों पर आमिल थे। (37/साफ़्फ़ात : 100) फिर हज़रत लूत (ﷺ) का ज़िक्र शुरू होता है लूत बिन हारान बिन आज़र। आप हज़रत इब्राहीम (ﷺ) पर ईमान लाए थे और आपकी ताबेदारी में आप ही के साथ हिज्रत की थी जैसे कलामुल्लाह में है (فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ) (29/अन्कबूत : 26) आप पर ईमान लाए और फ़र्माया कि मैं अपने रब की तरफ़ हिज्रत करने वाला हूँ। पस अल्लाह तआला ने इन्हें हिक्मत व इल्म अता किया और वह्यी नाज़िल की और नबियों के पाक ज़ुम्रे में दाख़िल किया और सदूम और उसके पास की बस्तियों की तरफ़ आपको भेजा। उन्होंने न माना और मुख़ालिफ़त पर कमर बाँध ली जिसके बाइस अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हुए और फ़ना कर दिये गए जिनकी बर्बादी के वाक़ियात अल्लाह तआला की किताबे अज़ीज़ में कई जगह बयान हुए हैं। यहाँ फ़र्माया कि हमने उन्हें बदतरीन काम करने वाले फ़ासिक़ों की बस्ती से नजात दे दी और चूँकि वह आला नेक नबी थे हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल कर लिया।

***

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾

तर्जुमा : "नूह (ﷺ) के उस वक़्त को याद कीजिए जबकि उन्होंने उससे पहले दुआ की हमने उसकी दुआ क़बूल की और उसे और उसके घरवालों को बड़ी बेचैनी से नजात दी। (76) और जो लोग हमारी आयतों को झुठला रहे थे उन पर हमने उसकी मदद की यक़ीनन वह बुरे लोग थे पस हमने उन सबको डुबा दिया।" (77)

हज़रत नूह (ﷺ) की दुआ (आयत 76, 77) : नबी नूह (ﷺ) को उनकी क़ौम ने सताया, तक्लीफ़ें दीं तो आपने अल्लाह को पुकारा कि बारी तआला! मैं आजिज़ आ गया हूँ तू मेरी मदद फ़र्मा, ज़मीन पर इन

काफ़िरों में से किसी एक को भी बाक़ी न रख, वरना यह तेरे बन्दों को बहकाएँगे और इनकी औलादें भी ऐसी ही फ़ाजिर काफ़िर होंगी। अल्लाह तआला ने अपने नबी की दुआ क़बूल की और आपको और मोमिनों को नजात दी और आपके अहल को भी सिवाए उनके जिनके नाम बर्बाद होने वालों में आ गए थे आप पर ईमान लाने वालों की बहुत ही कम मिक़्दार थी। क़ौम की सख़्ती ईज़ादेही और तक्लीफ़ से रब्बे आलम ने अपने नबी को बचा लिया, साढ़े नौ सौ साल तक आप उनमें रहे और उन्हें दीने इस्लाम की तरफ़ बुलाते रहे मगर सिवाए चंद लोगों के और सब अपने शिर्क व कुफ़्र से न हटे बल्कि आपको सख़्त तक्लीफ़ें दीं और एक दसरे को आपकी ईज़ादेही पर भड़काते रहे हमने उनकी मदद की और इज़्ज़त आबरू के साथ कुफ़्फ़ार की ईज़ारसानियों से छुटकारा दिया और उन बुरे लोगों को ठिकाने पर लगा दिया और नूह (عليه السلام) की दुआ के मुताबिक़ रूए ज़मीन पर एक भी काफ़िर न बचा, सब डुबो दिये गए।

***

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ
شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ
يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ
بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ
الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾ وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ
وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾

तर्जुमा : ''दाऊद और सुलेमान (عليه السلام) को याद कीजिए जबकि वह खेत के मामले में फ़ैसला कर रहे थे कि कुछ लोगों की बकरियाँ उसमें चर चुग गई थीं उनके फ़ैसले में हम मौजूद थे। (78) हमने उसका सही फ़ैसला सुलेमान (عليه السلام) को समझा दिया, हाँ! हर एक को हमने हिक्मत व इल्म दे रखा था और दाऊद (عليه السلام) के ताबेअ हमने पहाड़ कर दिये थे जो तस्बीह करते थे और परिन्द भी। हम करने वाले ही थे। (79) और हमने उसे तुम्हारे लिए लिबास बनाने की कारीगरी सिखाई ताकि लड़ाई के ज़रर से तुम्हारा बचाव हो, क्या अब तुम शुक्रगुज़ार बनोगे? (80) हमने तेज़ तुंद हवाओं को सुलेमान (عليه السلام) के ताबेअ कर दिया जो उसके फ़र्मान के मुताबिक़ उस ज़मीन की तरफ़ चलती थीं जहाँ हमने बरकत दे रखी थी और हम हर चीज़ से बाख़बर और दाना हैं। (81) इसी तरह से बहुत से शयातीन भी हमने उसके ताबेअ किये थे जो उसके फ़र्मान से ग़ोते लगाते थे और उसके सिवा भी बहुत से काम करते थे उनके निगहबान हम ही थे।'' (82)

हज़रत दाऊद और सुलेमान (ﷺ) का एक फ़ैसला (आयत 78 से 82) : इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह खेती अंगूर की थी जिसके ख़ोशे लटक रहे थे। (तब्री : 18/475) (नफ़शत) के मअ़नी हैं रात के वक़्त जानवरों को चरने के और दिन के वक़्त चरने को अ़रबी में हमल कहते हैं। (तब्री : 18/477) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं उस बाग़ को बकरियों ने बिगाड़ दिया। हज़रत दाऊद (ﷺ) ने यह फ़ैसला किया कि बाग़ के नुक़्सान के बदले यह बकरियाँ बाग़ वाले को दे दी जाएँ। हज़रत सुलेमान (ﷺ) ने यह फ़ैसला सुनकर अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! इसके सिवा और भी फ़ैसले की कोई सूरत है? आपने फ़र्माया, वह क्या है? जवाब दिया कि बकरियाँ बाग़ वाले के हवाले कर दी जाएँ वह उनसे फ़ायदा उठाता रहे और बाग़ बकरी वाले को दे दिया जाए यह उसमें अंगूर की बेलों की ख़िदमत करे यहाँ तक कि बेलें ठीक ठाक हो जाएँ और अंगूर लगें और फिर उसी हालत पर आ जाएँ जिस पर पहले थीं, तो बाग़ वाले को यह उसका बाग़ सौंप दे और बाग़ वाला उसे उसकी बकरियाँ सौंप दे। यही मतलब इस आयत का है कि हमने उस झगड़े का सही फ़ैसला हज़रत सुलेमान (ﷺ) को समझा दिया।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं हज़रत दाऊद (ﷺ) का यह फ़ैसला सुनकर बकरियों वाला अपना सा मुँह लेकर सिर्फ़ कुत्तों को अपने साथ लिये हुए वापिस जा रहा था हज़रत सुलेमान (ﷺ) ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या हुआ? उन्होंने ख़बर दी तो आपने फ़र्माया अगर मैं इस जगह होता तो यह फ़ैसला न देता बल्कि कुछ और फ़ैसला करता। हज़रत दाऊद (ﷺ) को जब यह बात पहुँची तो आपने हज़रत सुलेमान (ﷺ) को बुलवाया और पूछा कि बेटे! तुम क्या फ़ैसला करते? आपने वही ऊपर वाला फ़ैसला सुनाया। हज़रत मसरूक़ (रह.) फ़र्माते हैं उन बकरियों ने ख़ोशे और पत्ते सब खा लिए थे तो हज़रत दाऊद (ﷺ) के फ़ैसले के ख़िलाफ़ हज़रत सुलेमान (ﷺ) ने फ़ैसला दिया कि उन लोगों की बकरियाँ बाग़ वालों को दे दी जाएँ और यह बाग़ उन्हें सौंप दिया जाए जब तक बाग़ अपनी असली हालत पर आ जाए तब तक बकरियों के बच्चे और उनका दूध और उनका कुल नफ़ा बाग़ वालों का। फिर हर एक को उनकी चीज़ वापिस कर दी जाए। क़ाज़ी शुरैह (रह.) के पास भी एक ऐसा ही झगड़ा आया था तो आपने यह फ़ैसला किया कि अगर दिन को बकरियों ने नुक़्सान पहुँचाया है तो कोई मुआवज़ा नहीं और अगर रात में नुक़्सान पहुँचाया है तो बकरियों वाले ज़ामिन हैं फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़र्माई।

मुस्नदे अहमद में हदीस है कि हज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) की ऊँटनी किसी बाग़ में चली गई और वहाँ बाग़ का बड़ा नुक़्सान किया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यह फ़ैसला दिया कि "बाग़ वालों पर दिन के वक़्त की हिफ़ाज़त है और जो नुक़्सान जानवरों से रात को हो उसका जुर्माना जानवरों पर है।" (अहमद : 5/435; अबूदाऊद, किताबुल बुयूअ़, बाब अल्मवाशी तुफ़्सिदु ज़रआ क़ौमिन : 3569; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने शिहाब ज़ोहरी मुदल्लस हैं और तसरीह़ बिस्सिमाअ़ नहीं है। इब्ने माजा : 2332; इब्नुल जारूद : 796; हाकिम : 2/47; बैहक़ी : 8/242) इस हदीस में इल्लतें निकाली गई हैं। और हमने किताबुल अहकाम में अल्लाह के फ़ज़्ल से इसकी पूरी तफ़्सील बयान कर दी हैं मरवी है कि हज़रत अयास बिन मुआविया (रह.) से जबकि क़ाज़ी बनने की दरख़्वास्त की गई तो वह हज़रत हसन (रज़ि.) के पास आए और रो दिये। पूछा गया

कि ऐ अबू सईद! आप क्यूँ रोते हैं ? फ़र्माया, मुझे यह रिवायत पहुँची है कि "अगर क़ाज़ी ने इज्तिहाद किया फिर भी ग़लती की वह जहन्नमी है और जो ख़्वाहिशे नफ़्स की तरफ़ झुक गया वह भी जहन्नमी है। हाँ! जिसने इज्तिहाद किया और सेह्हत पर पहुँच गया वह जन्नत में पहुँचा।" ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) यह सुनकर कहने लगे, सुनो! अल्लाह तआला ने ह़ज़रत दाऊद और ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की फ़ैसले का ज़िक्र किया है ज़ाहिर है कि अम्बिया (عليهم السلام) ह़कम होते हैं उनकेक़ौल से उन लोगों की बातें रद्द हो सकती हैं अल्लाह तआला ने ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की तारीफ़ तो बयान की है लेकिन ह़ज़रत दाऊद (عليه السلام) की मज़म्मत बयान नहीं की। फिर कहने लगे, सुनो! तीन बातों का अ़हद अल्लाह तआला ने क़ाज़ियों से लिया है एक तो यह कि वह अह़कामे शरई दुनियावी नफ़ा की वजह से बदल न दें, दूसरे यह कि अपने दिली इरादों और ख़्वाहिशों के पीछे न पड़ जाएँ, तीसरे यह कि अल्लाह के सिवा किसी से न डरें, फिर आपने यह आयत पढ़ी (يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ) (38/स़ाद : 26) यानी ऐ दाऊद (عليه السلام)! हमने तुझे ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाया है, तू लोगों में ह़क़ के साथ फ़ैसले करता रह, ख़्वाहिश के पीछे न पड़ कि राहे इलाही से बहक जाए। और जगह इर्शाद है (فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ) (5/माइदा : 44) लोगों से न डर, मुझ ही से डरते रहा करो। और फ़र्मान है (وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا) (5/माइदा : 44) मेरी आयतों को मामूली नफ़ा की ख़ातिर बेच न दिया करो। मैं कहता हूँ अम्बिया (عليهم السلام) की मअ़सूमियत में और उनकी मिन जानिब अल्लाह हर वक़्त ताईद होते रहने में तो किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं है और स़ह़ीह़ बुख़ारी की ह़दीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "जब ह़ाकिम इज्तिहाद और कोशिश करे फिर सेह्हत तक भी पहुँच जाए तो उसे दोहरा अज्र मिलता है और जब पूरी कोशिश के बाद भी ग़लती हो जाए तो उसे एक अज्र मिलता है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ऐतिस़ाम, बाब अज्रुल ह़ाकिम इज़ा इज्तहदा फ़अस़ाबा अव अख़्ता : 7352; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1716; अबूदाऊद : 3574; अह़मद : 4/98; इब्ने माजा : 2314; इब्ने ह़िब्बान : 5061) यह ह़दीस स़ाफ़ बतला रही है कि ह़ज़रत अयास (रह़.) को जो वहम हुआ था कि बावजूद पूरी मेह़नत करने के भी ख़त़ा कर जाए तो दोज़ख़ी है, वल्लाहु आलम!

सुनन की और ह़दीस में है "क़ाज़ी तीन क़िस्म के हैं, एक जन्नती, दो दोज़ख़ी। जिसने ह़क़ को मालूम कर लिया और उसी से फ़ैसला किया, वह जन्नती और जिसने जिहालत के साथ फ़ैसला किया वह जहन्नमी और जिसने ह़क़ को जानते हुए उसके ख़िलाफ़ फ़ैसला किया वह भी जहन्नमी।" (अबूदाऊद, किताबुल क़ज़ा, युख़्ता : 3573; व सनदुहू ज़ईफ़ुन: ख़ल्फ़ बिन ख़लीफ़ा रावी का ह़ाफ़्ज़ा ख़राब हो गया था। तिर्मिज़ी : 1322; इब्ने माजा : 2315; शुअ़बुल ईमान : 7531; ह़ाकिम : 4/90) क़ुरआने करीम के बयानकर्दा इस वाक़िये के क़रीब ही वह क़िस्सा है जो मुस्नदे अह़मद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "दो औरतें थीं जिनके साथ उनके दो बच्चे भी थे भेड़िया आकर एक बच्चे को उठा ले गया, अब हर एक दूसरी से कहने लगी कि तेरा बच्चा गया और जो है वह मेरा बच्चा है। आख़िर यह क़िस्सा ह़ज़रत दाऊद (عليه السلام) के सामने पेश हुआ, आपने बड़ी औरत के ह़क़ में फ़ैसला सुना दिया कि यह बच्चा तेरा है। यह यहाँ से निकलीं, रास्ते में ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) थे आपने दोनों को बुलाया और फ़र्माया, छुरी लाओ, मैं इस लड़के के दो टुकड़े करके आधा आधा

इन दोनों को दे देता हूँ उस पर बड़ी तो ख़ामोश हो गई लेकिन छोटी ने हाय वावेला शुरू कर दी कि अल्लाह आप पर रहम करे आप ऐसा न कीजिए यह लड़का इसी बड़ी का है, बच्चा इसी को दे दीजिए। हज़रत सुलेमान (عليه السلام) उस मामले को समझ गए और लड़का छोटी औरत को दिला दिया।'' (अहमद : 2/322; सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व वहब्ना लि दाऊदा सुलेमाना नअमल अब्द...) : 3427; सहीह मुस्लिम : 1720; इब्ने हिब्बान : 5066)

इमाम नसाई (रह.) ने इस पर बाब बाँधा है कि हाकिम को जाइज़ है कि अपना फ़ैसला दिल में रखकर हक़ीक़त को मालूम करने के लिए उसके ख़िलाफ़ कुछ कहे। ऐसा ही एक वाक़िया इब्ने असाकिर में है कि एक ख़ूबसूरत औरत से एक रईस ने मिलना चाहा, लेकिन औरत ने न माना, इसी तरह तीन और शख़्सों ने भी उससे बदकारी का इरादा किया लेकिन वह बाज़ रही, उस पर वह रईस लोग कुढ़ गए और आपस में इत्तिफ़ाक़ करके हज़रत दाऊद (عليه السلام) की अदालत में जाकर सबने गवाही दी कि वह औरत अपने कुत्ते से ऐसा काम कराती है। चारों के एक जैसे बयान पर हुक्म हो गया कि उस औरत को रजम (पत्थरों से मारकर हलाक कर देना) किया जाए। उसी शाम को हज़रत सुलेमान (عليه السلام) अपने हमउम्र लड़कों के साथ बैठकर आप हाकिम बने और चार लड़के उन लोगों की तरह आपके पास उस मुक़द्दमे को लाए और एक औरत की निस्बत यही कहा, हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने हुक्म दिया कि उन चारों को अलग अलग कर दो, फिर एक को अपने पास बुलाया और उससे पूछा कि उस कुत्ते का रंग कैसा था? उसने कहा, काला। फिर दूसरे को अकेले में बुलाया, उससे भी यही सवाल किया, उसने कहा, लाल! तीसरे ने कहा, ख़ाकी! चौथे ने कहा, सफ़ेद। आपने उसी वक़्त फ़ैसला दिया कि औरत पर यह निरी तोहमत है और चारों को क़त्ल कर दिया जाए। हज़रत दाऊद (عليه السلام) के पास भी यह वाक़िया बयान किया गया आपने उसी वक़्त फ़िल फ़ोर उन चारों अमीरों को बुलाया और इसी तरह अलग अलग उनसे उस कुत्ते का रंग पूछा। यह गड़बड़ा गए, किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा, आपको उनका झूठ मालूम हो गया और हुक्म फ़र्माया कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। फिर बयान हो रहा है कि हज़रत दाउद (عليه السلام) को वह नूरानी गला अता किया गया था और आप ऐसी ख़ुशआवाज़ी और ख़ुलूस के साथ ज़बूर पढ़ते थे कि परिन्द भी अपनी परवाज़ छोड़कर थम जाते थे और अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करने लगते थे इसी तरह पहाड़ भी। एक रिवायत में है कि ''रात के वक़्त हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) तिलावते क़ुरआने करीम कर रहे थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) उनकी मीठी रसीली और ख़ुलूस भरी आवाज़ सुनकर ठहर गए और देर तक सुनते रहे, फिर कहने लगे यह तो आले दाऊदी की आवाज़ों की शीरीनी दिये गए हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब हुसनस्सौति बिल क़िराअति लिल क़ुरआन : 5048; सहीह मुस्लिम : 793; अहमद : 5/349) हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) को जब यह मालूम हुआ तो कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर मुझे मालूम होता कि हुज़ूर (ﷺ) मेरी क़िराअत सुन रहे हैं तो मैं और अच्छी तरह पढ़ता।'' (हाकिम : 3/466; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/171)

हज़रत अबू उस्मान नहदी (रह.) फ़र्माते हैं मैंने तो किसी बेहतर से बेहतर बाजे की आवाज़ में भी वह मज़ा नहीं पाया जो हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) की आवाज़ में था। पस इतनी ख़ुश आवाज़ी को हुज़ूर (ﷺ) ने

हज़रत दाऊद (ﷺ) की ख़ुशआवाज़ी का एक हिस्सा क़रार दिया अब समझ लीजिए कि ख़ुद दाऊद (ﷺ) की आवाज़ कैसी होगी। फिर अपना एक और एहसान बतलाता है कि हज़रत दाऊद (ﷺ) को ज़िरहें बनानी हमने सिखा दी थीं। आपके ज़माने से पहले बग़ैर कुण्डों और बग़ैर हल्क़ों के ज़िरह बनती थी। कुण्डेदार और हल्क़ों वाली ज़िरहें आपने ही बनाईं। (तब्री : 18/480) जैसे और आयत में है कि हमने हज़रत दाऊद (ﷺ) के लिए लोहे को नर्म कर दिया कि वह बेहतरीन ज़िरहें तैयार करें और ठीक अंदाज़े से उनमें हल्क़े बनाएँ यह ज़िरहें मैदाने जंग में काम आती थीं पस यह नेअमत वह थी जिस पर लोगों को अल्लाह की शुक्रगुज़ारी करनी चाहिए।

हज़रत सुलेमान (ﷺ) के ताबेअ चीज़ें : हमने ज़ोरावर हवा को हज़रत सुलेमान (ﷺ) के ताबेअ कर दिया था जो उन्हें उनके फ़र्मान के मुताबिक़ बरकत वाली ज़मीन यानी मुल्के शाम में पहुँचा देती थी, हमें हर चीज़ का इल्म है। आप अपने तख़्त के साथ अपने लाव लश्कर के साथ और सामान अस्बाब के साथ बैठ जाते थे, फिर जहाँ जाना चाहते हवा आपको आपके फ़र्मान के मुताबिक़ घड़ी भर में वहाँ पहुँचा देती, तख़्त के ऊपर से परिन्द पर खोलकर साया डालते। जैसे फ़र्मान है (فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ) (38/साद : 36) यानी हमने हवा को उनका ताबेअ कर दिया कि जहाँ पहुँचना चाहते उनके हुक्म के मुताबिक़ उसी तरफ़ नर्मी के साथ ले चलती, सुबह से शाम में महीने महीने भर का सफ़र तै कर लेती। हज़रत सईद बिन जुबेर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि छः हज़ार कुर्सी लगाई जाती आपसे क़रीब मोमिन इंसान बैठते, उनके पीछे मोमिन जिन्न होते, फिर आपके हुक्म से सब पर परिन्द साया करते, फिर हुक्म करते तो हवा आपको ले चलती। (हाकिम : 2/589; अन इब्ने अब्बास (रज़ि.) व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्अअमश मुदल्लस अन्अन इसमें (छः सौ कुर्सी) का ज़िक्र है।)

अब्दुल्लाह बिन उबेद बिन उमैर (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत सुलेमान (ﷺ) हवा को हुक्म देते वह मिस्ल बड़े तौदे के जमा हो जाती गोया पहाड़ है फिर उसके सबसे बुलंद मकान पर फ़र्श फ़रोश करने का हुक्म देते फिर परदार घोड़े पर सवार होकर अपने फ़र्श पर चढ़ जाते फिर हवा को हुक्म देते वह आपको बुलंदी पर ले जाती आप उस वक़्त सर नीचा कर लेते, दाएँ बाएँ बिलकुल न देखते, उसमें आपकी तवाज़ोअ और अल्लाह की शुक्रगुज़ारी मक़्सूद होती थी क्यों कि आपको अपनी फ़रोतनी का इल्म था, फिर जहाँ आप हुक्म देते वहीं हवा आपको उतार देती, इसी तरह सरकश जिन्नात भी अल्लाह तआला ने आपके क़ब्ज़े में कर दिये थे जो समुन्द्रों में ग़ोते लगाकर मोती और जवाहिर वग़ैरह निकाल लाया करते थे और भी बहुत से काम काज करते थे, जैसे फ़र्मान है (وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ غَوَّاصٍ) (38/साद : 37) हमने सरकश जिन्नों को उनका मातहत कर दिया था जो मेअमार थे जो ग़ोताख़ोर और उनके अलावा और शयातीन भी उनके मातहत थे जो ज़ंजीरों में बँधे हुए रहते थे और हम ही सुलेमान (ﷺ) के मुहाफ़िज़ व निगहबान थे कोई शैतान उन्हें नुक़्सान न पहुँचा सकता था बल्कि सबके सब उनके मातहत फ़र्मांबरदार और ताबेअ थे, कोई उनके क़रीब भी न फटक सकता था, आपकी हुक्मरानी उन पर चलती थी, जिसे चाहते क़ैद कर लेते, जिसे चाहते आज़ाद कर देते, इसी को फ़र्माया और जिन्नात थे जो जकड़े रहा करते थे।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

तर्जुमा : "अय्यूब (عليه السلام) की उस हालत को याद कीजिए जबकि उसने अपने परवरदिगार को पुकारा कि मुझे यह बीमारी लग गई है और तू तमाम रह़म करने वालों से ज़्यादा रह़म करने वाला है। (83) तो हमने उसकी सुन ली और जो दुख उन्हें था उसे दूर कर दिया और उसके अहलो अ़याल अ़ता किये बल्कि उनके साथ वैसे ही और अपनी ख़ास़ मेहरबानी से ताकि सच्चे बन्दों के लिए सबबे नस़ीह़त हो।" (84)

ह़ज़रत अय्यूब (عليه السلام) की बीमारी, स़ब्र और दुआए स़ेह़त (आयत 83, 84) : ह़ज़रत अय्यूब (عليه السلام) की तक्लीफ़ों का बयान हो रहा है जो माली, जिस्मानी और औलादी थीं। उनके बहुत से क़िस्म क़िस्म के जानवर थे, खेतियाँ बाग़ात वग़ैरह थे, औलादें, बीवियाँ, लौण्डी, ग़ुलाम, जायदाद और मालो मताअ़ सभी कुछ अल्लाह का दिया मौजूद था। अब जो रब की त़रफ़ से आज़माइश आई तो एक सिरे से सबकुछ फ़ना होता गया, यहाँ तक कि जिस्म में जुज़ाम (एक बीमारी) फूट पड़ा और ज़ुबान के सिवा सारे जिस्म का कोई ह़िस्सा उस बीमारी से मह़फ़ूज़ न रहा यहां तक कि आसपास वाले घिन खाने लगे, शहर के एक उजड़े कोने में आपको सकूनत इख़्तियार करनी पड़ी, सिवाए आपकी एक बीवी स़ाह़िबा के और कोई आपके पास न रहा, उस मुसीबत के वक़्त सबने किनारा कर लिया, यही एक थीं जो उनकी ख़िदमत करती थीं, साथ ही मेह़नत मज़दूरी करके पेट पालने को भी लाया करती थीं।

हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि "सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिह़ान नबियों का होता है फिर स़ालेह़ (नेक) लोगों का फिर उनसे नीचे के दर्जे वालों का फिर उनसे कम दर्जे वालों का।" (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िस्सब्रि अ़लल बलाइ : 2398; वहुव ह़सन; इब्ने माजा : 4023, 4024; अह़मद : 1/172; ह़ाकिम : 1/41; मुख़्तार : 1056) और रिवायत में है कि "हर शख़्स़ का इम्तिह़ान उसके दीन के अंदाज़ से होता है अगर वह अपने दीन में मज़बूत है तो इम्तिह़ान भी सख़्ततर होता है।" (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िस्सब्रि अ़लल बलाइ : 2398; वहुव ह़सन; इब्ने माजा : 4023, 4024; अह़मद : 1/172; ह़ाकिम : 1/41; मुख़्तार : 1056) ह़ज़रत अय्यूब (عليه السلام) बड़े ही स़ाबिर थे यहाँ तक कि स़ब्रे अय्यूब लोगों की ज़बान पर है।

यज़ीद बिन मैसरा (रह़.) फ़र्माते हैं जब आपकी आज़माइश शुरू हुई अहलो अ़याल मर गए, माल फ़ना हो गया, कोई चीज़ हाथ तले बाक़ी न रही, आप अल्लाह के ज़िक्र में और बढ़ गए, कहने लगे ऐ तमाम पालने वालों के पालने वाले! तूने मुझ पर बड़े बड़े एह़सान किये, माल दिया औलादें दीं, उस वक़्त मेरा दिल बहुत मशग़ूल था, अब तूने सब कुछ लेकर मेरे दिल को इन फ़िक्रों से पाक कर दिया, अब मेरे दिल में और

तुझमें कोई आड़ न रही, अगर मेरा दुश्मन इब्लीस तेरी इस मेहरबानी को जान लेता तो वह मेरा बहुत ही ह़सद करता। इब्लीस लईन इस क़ौल से और उस वक़्त की ह़म्द से जल भुनकर रह गया। आपकी दुआओं में यह भी दुआ थी कि ऐ अल्लाह! तूने जब मुझे तवन्गर और औलाद और अहलो अयाल वाला बना रखा था, तू ख़ूब जानता है कि उस वक़्त मैंने न कभी ग़ुरूर व तकब्बुर किया, न कभी किसी पर ज़ुल्मो-सितम किया, मेरे परवरदिगार! तुझ पर रोशन है कि मेरा नर्म व गर्म बिस्तर तैयार होता और मैं रातों को तेरी इबादतों में गुज़ारता और अपने नफ़्स को इस तरह डाँट देता कि तू इसलिए पैदा नहीं किया गया। तेरी रज़ामंदी की तलब में मैं अपनी राह़त व आराम को छोड़ दिया करता था। (इब्ने अबी ह़ातिम) इस आयत की तफ़्सीर में इब्ने जरीर और इब्ने अबी ह़ातिम में एक बहुत लम्बा क़िस्सा है जिसे बहुत से पिछले मुफ़स्सिरीन ने भी ज़िक्र किया है लेकिन उसमें ग़राबत है और उसके लम्बे होने की वजह से हमने उसे छोड़ दिया है। मुद्दतों तक आप बलाओं में मुब्तला रहे।

ह़ज़रत ह़सन और क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं सात साल और कई माह आप मुब्तला रहे। बनी इस्राईल के कूड़े करकट फेंकने की जगह आपको डाल दिया गया था, बदन में कीड़े पड़ गए थे, फिर अल्लाह ने आप पर रह़मो करम किया, तमाम बलाओं से नजात दी, अज्र दिया और तारीफ़ें कीं। वहब बिन मुनब्बा (रह़.) का बयान है कि पूरे तीन साला आप उस तक्लीफ़ में रहे। सारा गोश्त झड़ गया था सिर्फ़ हड्डियाँ और चमड़ा रह गया था आप राख में पड़े रहते थे, सिर्फ़ एक आपकी बीवी साह़िबा थीं जो आपके पास थीं। जब ज़्यादा ज़माना गुज़र गया तो एक दिन वो कहने लगीं, ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! आप अल्लाह से दुआ क्यूँ नहीं करते कि वह इस मुसीबत को हम पर से हटा दे। आप कहने लगे, बीवी साह़िबा! सुनो! सत्तर साल तक अल्लाह तआला ने मुझे सेह़त व आफ़ियत में रखा तो अगर सत्तर साल तक मैं इस ह़ालत में रहूँ और सब्र करूँ तो यह भी बहुत कम है। इस पर बीवी साह़िबा काँप उठीं अब आप शहर में जातीं तेरा मेरा काम काज करतीं और जो मिलता वह ले आतीं और आपको खिलातीं पिलातीं। आपके दो दोस्त और दिली ख़ैरख़्वाह थे, उन्हें फ़लस्तीन में जाकर शैतान ने ख़बर दी कि तुम्हारा दोस्त सख़्त मुसीबत में मुब्तला हैं तुम जाओ उनकी ख़बरगीरी करो और अपने यहाँ की कुछ शराब अपने साथ ले जाओ, वह पिला देना, उससे उन्हें शिफ़ा हो जाएगी। चुनाँचे यह दोनों आए ह़ज़रत अय्यूब (ﷺ) की ह़ालत देखते ही उनके आँसू निकल आए, बिलबिलाकर रोने लगे। आपने पूछा, तुम कौन हो? उन्होंने याद दिलाया तो आप ख़ुश हुए, उन्हें सलाम कहा। वह कहने लगे ऐ जनाब! आप शायद कुछ छुपाते होंगे और ज़ाहिर उसके ख़िलाफ़ करते होंगे। आपने अपनी नज़रें आसमान की तरफ़ उठाकर फ़र्माया, अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं क्या छुपाता था और क्या ज़ाहिर करता था। मेरे रब ने मुझे इसमें मुब्तला किया है ताकि वह देखे कि मैं सब्र करता हूँ या बेसब्री। वह कहने लगे, अच्छा! हम आपके वास्ते दवा लाए हैं आप उसे पी लीजिए शिफ़ा हो जाएगी, शराब है हम अपने यहाँ से लाए हैं। यह सुनते ही आप सख़्त गुस्सा हुए और कहने लगे, तुम्हें शैतान ख़बीस यहाँ लाया है तुमसे बातचीत करना, तुम्हारा खाना पीना मुझ पर ह़राम है। यह दोनों आपके पास से चले गए। एक मर्तबा का ज़िक्र है कि आपकी बीवी साह़िबा ने एक घरवालों की रोटियाँ पकाईं, उनका एक बच्चा सोया हुआ था तो उन्होंने उस बच्चे के हिस्से की रोटी उन्हें दे दी, यह लेकर ह़ज़रत अय्यूब (ﷺ) के पास आईं, आपने कहा, यह आज कहाँ से लाईं, उन्होंने सारा वाक़िया बयान कर दिया।

आपने फ़र्माया, अभी अभी वापिस जाओ मुम्किन है कि बच्चा जाग गया हो और इसी टिकिया की ज़िद करता हो और रो रोकर सारे घर को परेशान कर रहा हो। आप रोटी वापिस लेकर चलीं उनकी डेवढ़ी में एक बकरी बँधी हुई थी, इस ज़ोर से आपको टक्कर मारी, आपकी ज़ुबान से निकल गया, देखो! अय्यूब (ﷺ) ऐसे ग़लत ख़्याल वाले हैं। फिर ऊपर गईं तो देखा वाक़ेई बच्चा जागा हुआ है और टिकिया के लिए मचल रहा है और घर भर का नाक में दम कर रखा है, यह देखकर बेसाख़्ता ज़ुबान से निकला, अल्लाह अय्यूब (ﷺ) पर रहम करे, अच्छे मौक़े पर पहुँची, टिकिया दे दी और वापिस लौटीं रास्ते में शैतान तबीब (डॉक्टर/हकीम) की शक्ल में मिला और कहने लगा कि तेरे शौहर सख़्त तक्लीफ़ में हैं, मर्ज़ पर मुद्दतें गुज़र गईं तुम उन्हें समझाओ फ़लाँ क़बीले के बुत के नाम पर एक मक्खी मार दें, शिफ़ा हो जाएगी, फिर तौबा कर लेना। जब आप हज़रत अय्यूब (ﷺ) के पास पहुँचीं तो उनसे यह कहा, आपने फ़र्माया, शैतान ख़बीस का जादू तुझ पर चल गया है, मैं अगर सेहतयाब हो गया तो तुझे सौ कोड़े मारूँगा। एक दिन आप हस्बे मामूल रोज़ी की तलाश में निकलीं, घर घर फिर आईं लेकिन कहीं काम न मिला, मायूस हो गईं, शाम को पलटने के वक़्त हज़रत अय्यूब (ﷺ) की भूख का ख़्याल आया तो आपने अपने बालों की एक लट काटकर एक अमीर लड़की को बेच दी, उसने आपको बहुत कुछ खाने पीने के सामान दे दिये जिसे लेकर आप आईं। हज़रत अय्यूब (ﷺ) ने पूछा, यह आज इतना सारा और इतना अच्छा खाना कैसे मिल गया? फ़र्माया एक अमीर घर का काम कर दिया था, यह सुनकर आपने खाना खा लिया। दूसरे दिन भी इत्तिफ़ाक़ से ऐसा ही हुआ और आपने अपने बालों की दूसरी लट काटकर बेच दी और खाना ले आईं, आज भी यही खाना देखकर आपने फ़र्माया, वल्लाह! मैं हर्गिज़ न खाऊँगा जब तक कि तू मुझे यह न बतला दे कि ये कैसे लाई? अब आपने अपना दुपट्टा सिर से हटा दिया, देखा कि सिर के बाल सब कट चुके हैं उस वक़्त घबराहट और बैचैनी हुई और अल्लाह से दुआ की कि मुझे ज़रर पहुँचा है और तू सबसे ज़्यादा रहीम है। हज़रत नौफ़ (रह.) कहते हैं कि जो शैतान हज़रत अय्यूब (ﷺ) के पीछे पड़ा हुआ था उसका नाम मब्सूत था। हज़रत अय्यूब (ﷺ) की बीवी साहिबा उमूमन आप से अर्ज़ किया करती थीं कि अल्लाह से दुआ करो लेकिन आप न करते थे यहाँ तक कि एक दिन बनी इस्राईल के कुछ लोग आपके पास से निकले और आपको देखकर कहने लगे, इस शख़्स को यह तक्लीफ़ ज़रूर किसी न किसी गुनाह की वजह से है। उस वक़्त बेसाख़्ता आपकी ज़ुबान से यह दुआ निकल गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबेद बिन उमेर (रह.) फ़र्माते हैं कि हज़रत अय्यूब (ﷺ) के दो भाई थे एक दिन वह मिलने के लिए आए लेकिन जिस्म की बदबू की वजह से क़रीब न आ सके। दूर ही से खड़े होकर एक दूसरे से कहने लगे कि अगर इस शख़्स में भलाई होती तो अल्लाह तआला इसे इस मुसीबत में न डालता। इस बात ने हज़रत अय्यूब (ﷺ) को वह सदमा पहुँचाया जो आज तक आपको किसी चीज़ से न हुआ था, उस वक़्त आप कहने लगे कि ऐ अल्लाह! कोई रात मुझ पर ऐसी नहीं गुज़री कि कोई भूखा शख़्स मेरी नज़र में हो और मैंने पेट भर लिया हो। परवरदिगार! मैं अपनी इस बात में तेरे नज़दीक सच्चा हूँ तू मेरी तस्दीक़ फ़र्मा, उसी वक़्त आसमान से आपकी तस्दीक़ की गई और वह दोनों शख़्स सुन रहे थे। फिर फ़र्माया, परवरदिगार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि मेरे पास एक से ज़ाइद कपड़े हों और मैंने किसी नंगे को न दिये हों अगर मैं इसमें सच्चा हूँ तो तू मेरी तस्दीक़ आसमान से कर। इस पर भी आपकी तस्दीक़ उनके सुनते हुए की गई। फिर यह दुआ करते हुए सज्दे में गिर पड़े

कि ऐ अल्लाह! मैं तो अब सज्दे से सिर न उठाऊँगा जब तक कि तू मुझसे इन तमाम मुसीबतों को न हटा लें जो मुझ पर डाली गईं। चुनाँचे यह दुआ क़बूल हुई और आप सिर उठाएँ उससे पहले वह तमाम तक्लीफ़ें और बीमारियाँ आपसे दूर हो गईं जो आप पर उतरीं थीं।

इब्ने अबी हातिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "हज़रत अय्यूब (عليه السلام) अठारह साल तक बलाओं में घिरे रहे, फिर उनके दोस्तों के आने का और बदगुमानी करने का ज़िक्र है जिसके जवाब में आपने फ़र्माया कि मेरी तो यह हालत थी कि रास्ते चलते दो शख़्सों को झगड़ता देखता और उनमें से किसी को क़सम खाते सुन लेता तो घर आकर उसकी तरफ़ से कफ़्फ़ारा अदा कर देता कि ऐसा न हो कि उसने अल्लाह का नाम बेहक़ लिया हो, आप अपनी बीमारी में इस क़द्र निढाल हो गए थे कि आपकी बीवी साहिबा आपका हाथ पकड़कर पेशाब के लिए ले जाया करती थीं। एक मर्तबा आपको हाजत थी आपने आवाज़ दी लेकिन उन्हें आने में देर लगी, आपको सख़्त तक्लीफ़ हुई उसी वक़्त आसमान से निदा आई, ऐ अय्यूब! अपनी ऐड़ी ज़मीन पर मारो, उसी पानी को पी भी लो और नहा भी लो।" (हाकिम : 2/581, 582; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़ोहरी अन्अन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 2357; मुस्नदे अबी यअ़ला : 3617; इब्ने हिब्बान : 2898; हिल्यतुल औलिया : 3/374) इस हदीस का मरफ़ूअ होना बिलकुल ग़रीब है।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आपके लिए जन्नती लिबास नाज़िल कर दिया जिसे पहनकर आप यक्सू होकर बैठ गए, जब आपकी बीवी आईं और आपको न पहचान सकीं तो आपसे पूछने लगीं कि ऐ अल्लाह के बन्दे! यहाँ एक बीमार व बेकस व बेबस शख़्स थे, तुम्हें मालूम है कि उनको क्या हुआ? कहीं उन्हें भेड़िये न खा गए हों, या कुत्ते न ले गए हों। तब आपने फ़र्माया, नहीं! नहीं! वह बीमार शख़्स मैं ही हूँ। बीवी साहिबा कहने लगीं ऐ शख़्स! तू दुखिया औरत से मज़ाक़ कर रहा है और मुझे बेवक़ूफ़ बना रहा है। आपने फ़र्माया नहीं! नहीं! मुझे अल्लाह ने शिफ़ा दे दी और यह रंग रूप भी। आपका माल आपको वापिस लौटा दिया गया और आपकी औलाद वही आपको वापिस मिली और उनके साथ ही वैसी ही और भी। वह्यी में यह ख़ुशख़बरी भी आपको सुना दी गई थी और फ़र्माया गया कि कुर्बानी करो और इस्तिग़फ़ार करो, तेरे घरवालों ने तेरे बारे में मेरी नाफ़र्मानी कर ली थी।

और रिवायत में है कि "जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अय्यूब (عليه السلام) को आफ़ियत दी, आसमान से सोने की टिड्डियाँ उन पर बरसने लगीं जिन्हें लेकर आपने अपने कपड़े में जमा करना शुरू कर दिया तो आवाज़ दी गई कि ऐ अय्यूब (عليه السلام)! क्या तू अब तक आसूदा नहीं हुआ? आपने जवाब दिया कि मेरे परवरदिगार! तेरी रहमत से आसूदा कौन हो सकता है।" (हाकिम : 2/582; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा अन्अन; इसकी असल सहीह बुख़ारी में मौजूद है। देखिए (279) फिर फ़र्माता है हमने उसे उसके अहल अता किये। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) तो फ़र्माते हैं वही लोग वापिस किये गए। (तब्री : 18/506) आपकी बीवी का नाम रहमत था। यह क़ौल अगर आयत से समझा गया है तो यह भी दूर अज़्कार अम्र है और अगर अहले किताब से लिया गया तो वह तस्दीक़ तक्ज़ीब के क़ाबिल चीज़ नहीं। इब्ने असाकिर ने इनका नाम अपनी तारीख़ में लुय्या बतलाया है। यह मैशा बिन यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम की बेटी हैं।

एक क़ौल यह भी है कि हज़रत लुय्या हज़रत यअ़क़ूब (عليه السلام) की बेटी और हज़रत अय्यूब (عليه السلام) की बीवी हैं जो सनिय्या की ज़मीन में आपके साथ थीं। मरवी है कि "आपसे फ़र्माया गया कि तेरे अहल सब जन्नत में हैं तू कहे तो मैं उन सबको यहाँ दुनिया में ला दूँ और कहे तो वहीं रहने दूँ और दुनिया में उनका बदला दूँ, आपने दूसरी बात पसंद की। पस आख़िरत का अज्र और दुनिया का बदला दोनों आपको मिला।" यह सब कुछ हमारी रहमतों का ज़हूर था और हमारे सच्चे बन्दों के लिए नसीहत व इब्रत थी आप अहले बिलाद के पेशवा थे। यह तमाम इसलिए हुईं कि मुसीबतों में फंसे हुए लोग अपने लिए आपकी ज़ात में इब्रत देखें, बेसब्री से नाशुक्री न करने लगें और लोग उन्हें अल्लाह के बुरे बन्दे न समझें। हज़रत अय्यूब (عليه السلام) सब्र का पहाड़ साबित क़दमी का नमूना थे, अल्लाह के मुक़द्दरात पर, उसके इम्तिहान पर इंसान को सब्र व सिहार करनी चाहिए, न जाने कुदरत पोशीदा पोशीदा अपनी क्या क्या हिक्मतें दिखा रही है।

***

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۶﴾

तर्जुमा : "और इस्माईल (عليه السلام) और इदरीस (عليه السلام) और ज़ल किफ़्ल (عليه السلام) यह सब साबिर लोगों में थे। (85) हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल कर लिया, यह लोग सब नेक थे।"(86)

हज़रत इस्माईल (عليه السلام) और इदरीस (عليه السلام) और ज़ल किफ़्ल (عليه السلام) का ज़िक्र (आयत 85, 86) : हज़रत इस्माईल (عليه السلام) हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के फ़रज़न्द थे। सूरह मरयम में उनका वाक़िया बयान हो चुका है हज़रत इदरीस (عليه السلام) का भी ज़िक्र गुज़र चुका है। ज़ुल किफ़्ल बज़ाहिर तो नबी ही मालूम होते हैं क्योंकि नबियों के ज़िक्र में उनका नाम आया है और लोग कहते हैं, यह नबी न थे। बल्कि एक सालेह शख़्स थे अपने ज़माने के बादशाह थे बड़े ही आदिल और बामुरव्वत। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसमें तवक़्क़ुफ़ करते हैं। (तब्री : 18/507) वल्लाहु आलम!

मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं यह एक नेक बुज़ुर्ग थे जिन्होंने अपने ज़माने के नबी से अहदो पैमान किये और उन पर क़ायम रहे। क़ौम में अदलो इंसाफ़ किया करते थे। मरवी है कि हज़रत यसअ़ (عليه السلام) बहुत बूढ़े हो गए तो इरादा किया कि मैं अपनी ज़िन्दगी में ही अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूँ और देख लूँ कि वह कैसे अमल करता है। लोगों को जमा किया और कहा कि तीन बातें जो शख़्स मंज़ूर करे मैं उसे ख़िलाफ़त सौंपता हूँ, दिन भर रोज़े से रहे, रात भर क़ियाम करे और कभी भी ग़ुस्से न हो, कोई और तो खड़ा न हुआ एक शख़्स जिसे लोग बहुत हल्के दर्जे का समझते थे खड़ा हुआ और कहने लगा, मैं इस शर्त को पूरा करूँगा। आपने पूछा, यानी तू दिनों को रोज़े से रहेगा और रातों को तहज्जुद पढ़ता रहेगा और किसी पर ग़ुस्सा न करेगा? उसने कहा, हाँ! यसअ़ (عليه السلام) ने फ़र्माया, अच्छा अब कल सही। दूसरे दिन भी आपने इसी तरह मज्लिसे आम में सवाल

किया लेकिन उस शख़्स के सिवा कोई और खड़ा न हुआ, चुनाँचे उन ही को ख़लीफ़ा बना दिया गया। अब शैतान ने छोटे छोटे शयातीन को उस बुज़ुर्ग के बहकाने के लिए भेजना शुरू किया मगर किसी की कुछ न चली, इब्लीस ख़ुद चला दोपहर को क़ैलूले के लिए आप लेटे हुए थे, जो ख़बीस ने कुंडियाँ पीटनी शुरू कर दीं। आपने पूछा कि, तू कौन है? उसने कहना शुरू किया कि मैं एक मज़्लूम हूँ, फ़रियादी हूँ, मेरी क़ौम मुझे सता रही है, मेरे साथ उसने यह किया, यह किया उसने जो लम्बा क़िस्सा सुनाना शुरू किया तो किसी तरह ख़त्म ही नहीं करता, नींद का सारा वक़्त उसी में चला गया और हज़रत ज़ुल किफ़्ल दिन रात में बस सिर्फ़ उसी वक़्त ज़रा सी देर के लिए सोते थे। आपने फ़र्माया, अच्छा! शाम को आना मैं तुम्हारा इंसाफ़ करूँगा। अब शाम को आप जब फ़ैसले करने लगे, हर तरफ़ उसे देखते हैं लेकिन उसका कहीं पता नहीं, यहाँ तक कि ख़ुद जाकर इधर उधर भी तलाश किया, मगर उसे न पाया, दूसरी सुबह को भी वह न आया फिर जहाँ आप दोपहर को दो घड़ी आराम करने के इरादे से लेटे तो यह ख़बीस आ गया और दरवाज़े ठोंकने लगा, आपने खुलवा दिया और कहने लगे, मैंने तो तुमसे शाम को आने को कहा था, मैं इंतिज़ार करता रहा लेकिन तुम न आए। वह कहने लगा हज़रत! क्या बतलाऊँ जब मैंने आपकी तरफ़ आने का इरादा किया तो वह कहने लगे तुम न जाओ, हम तुम्हारा हक़ अदा कर देते हैं। मैं रुक गया फिर उन्होंने अब इंकार कर दिया और अब भी कुछ लम्बे चौड़े वाक़ियात बयान करने शुरू कर दिये और आज की नींद भी खोई। अब शाम को फिर इंतिज़ार किया, लेकिन न उसे आना था, न आया। तीसरे दिन आपने आदमी मुक़र्रर किया कि, देखो! कोई दरवाज़े पर न आने पाये, मारे नींद के मेरी हालत ग़ैर हो रही है। आप अभी लेटे ही थे जो वह मर्दूद फिर आ गया, चौकीदार ने उसे रोका, यह एक ताक़ से अंदर घुस गया और अंदर से दरवाज़ा खटखटाना शुरू किया। आपने उठकर पहरेदार से कहा कि, देखो मैंने तुम्हें हिदायत कर दी थी फिर भी दरवाज़े पर किसी को आने दिया, उसने कहा, मेरी तरफ़ से कोई नहीं आया, अब ग़ौर से आपने देखा तो दरवाज़े को बंद पाया और उस शख़्स को अंदर मौजूद पाया, आप पहचान गए कि यह शैतान है उस वक़्त शैतान ने कहा, ऐ अल्लाह के वली! मैं तुझसे हारा, न तो तूने रात का क़याम छोड़ा, न तू इस नौकर पर ऐसे मौक़े पर गुस्सा हुआ। पस अल्लाह ने उनका नाम ज़ल किफ़्ल रखा, इसलिए कि जिन बातों की उन्होंने किफ़ालत ली थी, उन्हें पूरा कर दिखाया। (इब्ने अबी हातिम) इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी कुछ तफ़्सीर के साथ यह क़िस्सा मरवी है उसमें है कि बनी इस्राईल के एक क़ाज़ी ने बवक़्ते मौत कहा था कि मेरे बाद मेरा ओहदा कौन संभालता है? उसने कहा, मैं। चुनाँचे उनका नाम ज़ल किफ़्ल हुआ। उसमें है कि शैतान जब उनके आराम के वक़्त आया, पहरे वालों ने रोका, उसने इस क़द्र शोर मचाया कि आप जाग गए, दूसरे दिन भी यही किया, तीसरे दिन भी यही किया, अब आप उसके साथ चलने के लिए आमादा हो गए कि मैं तेरे साथ चलकर तेरा हक़ दिलवाता हूँ लेकिन रास्ते में से वह अपना हाथ छुड़ाकर भाग खड़ा हुआ। हज़रत अशअरी (रज़ि.) ने मिम्बर पर फ़र्माया कि, ज़ल किफ़्ल नबी न थे, बनी इस्राईल के एक नेक शख़्स थे, जो हर रोज़ सौ नमाज़ें पढ़ा करते थे, उसके बाद उन्होंने उसकी सी इबादतों का ज़िम्मा उठाया इसलिए उन्हें ज़ल किफ़्ल कहा गया। एक मुन्क़तअ रिवायत में हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) से भी यह मंक़ूल है। एक ग़रीब हदीस मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल में है इसमें किफ़्ल का एक वाक़िया बयान है ज़ल किफ़्ल नहीं कहा गया है, मुम्किन है कि यह कोई और साहब हों। वाक़िया इस हदीस में यह है कि किफ़्ल नामी एक शख़्स था जो

किसी गुनाह से बचता न था, एक मर्तबा उसने एक औरत को साठ दीनार देकर बदकारी के लिए मना लिया, जब अपना इरादा पूरा करने के लिए तैयार हुआ तो वह औरत रोने और काँपने लगी, उसने कहा, मैंने तुझ पर कोई ज़बरदस्ती तो नहीं की, फिर रोने और काँपने की क्या वजह है? उसने कहा, मैंने ऐसी कोई नाफ़र्मानी आज तक अल्लाह तआला की नहीं की, इस वक़्त मेरी मोहताजी ने मुझे यह बुरा दिन दिखाया है। किफ़्ल ने कहा, तू एक गुनाह पर इस क़द्र परेशान है हालाँकि इससे पहले तूने कभी ऐसा नहीं किया। उसी वक़्त उसे छोड़कर उससे अलग हो गये और कहने लगा, जा यह दीनार मैंने तुझे बख़्शे, क़सम अल्लाह की आज से मैं किसी क़िस्म की अल्लाह की नाफ़र्मानी न करूँगा। शाने रब्बानी उसी रात उसका इंतिक़ाल होता है सुबह लोग देखते हैं कि उसके दरवाज़े पर क़ुदरती हुरूफ़ से लिखा हुआ था कि अल्लाह ने किफ़्ल को बख़्श दिया। (अहमद : 2/23; तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब फ़ीही अरबअतुन अहादीस : 2496; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अअमश मुदल्लस रावी है और रिवायत 'अन' के साथ है। हाकिम : 4/252; (अत्तक़रीब : 1/290; रक़म : 112) (अत्तक़रीब : 1/331; रक़म : 500)

***

وَذَا النُّوْنِ إِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : "मछली वाले हज़रत यूनुस (عليه السلام) को याद करो जबकि वह ग़ुस्से से चल दिया और ख़्याल किया कि हम उसे तंग न पकड़ेंगे फिर तो अंधेरियों के अंदर से पुकार उठे कि ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों में हो गया। (87) तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे ग़म से नजात दे दी, हम ईमान वालों को इसी तरह बचा लिया करते हैं।" (88)

हज़रत यूनुस (عليه السلام) का ज़िक्र (आयत 87, 88) : यह वाक़िया यहाँ भी मज़्कूर है और सूरह साफ़्फ़ात में भी है और सूरह नून में भी है। यह पैग़म्बर हज़रत यूनुस बिन मत्ता (عليه السلام) थे, उन्हें मूसल के इलाक़े की बस्ती नैनवा की तरफ़ नबी बनाकर अल्लाह तआला ने भेजा था। आपने अल्लाह की राह की दावत दी लेकिन क़ौम ईमान न लाई, आप वहाँ से नाराज़ होकर चल दिए और उन लोगों से कहने लगे कि तीन दिन में तुम पर अल्लाह का अज़ाब आ जाएगा, जब उन्हें इस बात की तहक़ीक़ हो गई और उन्होंने जान लिया कि अम्बिया (عليهم السلام) झूठे नहीं होते तो यह सबके सब छोटे-बड़े अपने जानवरों और मवेशियों के साथ जंगल में निकल खड़े हुए, बच्चों को माओं से जुदा कर दिया और बिलक बिलककर निहायत गिरयावज़ारी से जनाब बारी में फ़रियाद शुरू कर दी। इधर उनका रोना धोना उधर जानवरों की भयानक आवाज़ें, ग़र्ज़ अल्लाह की रहमत

मुतवज्जा हो गई, अज़ाब उठा लिया गया। जैसे फ़र्मान है (فَلَوْ لَا كَانَتْ) (10/यूनुस : 98) यानी अज़ाबों की तहक़ीक़ के बाद के ईमान ने किसी को नफ़ा नहीं दिया सिवाय क़ौमे यूनुस के कि उनके ईमान की वजह से हमने उन पर से अज़ाब हटा लिए और दुनिया की रुस्वाई से उन्हें बचा लिया और मौत तक की मोहलत दे दी। हज़रत यूनुस (عليه السلام) यहाँ से चलकर एक कश्ती में सवार हुए, आगे जाकर तूफ़ान के आसार नमूदार हुए, क़रीब था कि कश्ती डूब जाए मश्वरा यह हुआ कि किसी आदमी को दरिया में डाल देना चाहिए। कि वज़न कम हो जाए, कुरआ हज़रत यूनुस (عليه السلام) के नाम का निकला लेकिन किसी ने आपको दरिया में डालना पसंद न किया, दोबारा कुरआ अंदाज़ी हुई आप ही का नाम निकला, तीसरी बार फिर कुरआ डाला, इस बार भी आप ही का नाम निकला, चुनाँचे ख़ुद कुरआन में है (فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ) (37/साफ़्फ़ात : 141) अब के हज़रत यूनुस (عليه السلام) ख़ुद खड़े हो गए कपड़े उतारकर दरिया में कूद पड़े बहरे अख़्ज़र से बहुक्मे अल्लाह एक मछली पानी काटती हुई आई और आपको लुक़्मा कर गई लेकिन बहुक्मे इलाही न आपकी हड्डी तोड़ी, न जिस्म को कुछ नुक़्सान पहुँचाया, आप उसके लिए ग़िज़ा न थे बल्कि उसका पेट आपके लिए क़ैदख़ाना था, इसी वजह से आपकी निस्बत मछली की तरफ़ की गई। अरबी में मछली को नून कहते हैं, आपका ग़ज़ब व गुस्सा आपकी क़ौम पर था। (तब्री : 18/511) ख़्याल यह था कि अल्लाह आपको तंग न पकड़ेगा। पस यहाँ (नक़्दिर) के यही मअनी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) मुजाहिद, ज़ह्हाक (रहि.) वग़ैरह ने किये हैं। (तब्री : 18/514) इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को पसंद करते हैं और इसकी ताईद आयत (وَ مَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ) (65/तलाक़ : 7) से भी होती है।

हज़रत अतिया औफ़ी (रह.) ने यह मअनी किये हैं कि हम इस पर मुक़द्दर न करेंगे (क़दर) और (क़द्र) दोनों लफ़्ज़ एक मअनी में बोले जाते हैं, इसकी सनद में अरबी के शेअर के अलावा आयत (فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلَىٰ اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ) (54/क़मर : 12) भी पेश की जा सकती है। उन अंधेरियों में फँसकर अब यूनुस (عليه السلام) ने अपने रब को पुकारा। समुन्द्र के तले का अंधेरा फिर मछली के पेट का अंधेरा, फिर रात का अंधेरा, यह अंधेरे सब जमा थे। (हाकिम : 2/383; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ अन्अन) आपने समुन्द्र की तह की कंकरियों की तस्बीह सुनी और ख़ुद भी तस्बीह करनी शुरू की। आप मछली के पेट में गए, पहले तो समझे कि मैं मर गया फिर पैर को हिलाया तो वह हिला, यक़ीन हुआ कि मैं ज़िन्दा हूँ वहीं सज्दे में गिर पड़े और कहने लगे, बारे इलाही! मैंने तेरे लिए इस जगह को मस्जिद बनाया जिसे इससे पहले किसी ने सज्दे की जगह न बनाई होगी। (तब्री : 18/518; हाकिम : 2/585; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुनैद बिन दाऊद रावी ज़ईफ़ है।) हसन बसरी (रह .) फ़र्माते हैं चालीस दिन आप मछली के पेट में रहे।

इब्ने जरीर में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस (عليه السلام) को क़ैद का इरादा किया तो मछली को हुक्म दिया कि आपको निगल ले लेकिन इस तरह कि न हड्डी टूटे, न जिस्म पर खरोच आए। जब आप समुन्द्र की तह में पहुँचे तो वहाँ तस्बीह सुनकर हैरान रह गए, वही आई कि यह समुन्द्र के जानवरों की तस्बीह है। चुनाँचे आपने भी अल्लाह की तस्बीह शुरू कर दी। उसे सुनकर फ़रिश्तों ने कहा, ऐ अल्लाह! यह आवाज़ तो बहुत दूर की और बहुत कमज़ोर है, किसकी है हम तो नहीं पहचान सके।

जवाब मिला कि यह मेरे बन्दे यूनुस (अलैहि०) की आवाज़ है उसने मेरी नाफ़र्मानी की, मैंने उसे मछली के पेट के क़ैदख़ाने में डाल दिया है। उन्होंने कहा, परवरदिगार! उनके नेक आमाल तो दिन रात के हर वक़्त चढ़ते ही रहते थे।'' अल्लाह तआला ने उनकी सिफ़ारिश क़बूल की। और मछली को हुक्म दिया कि वह आपको किनारे पर उगल दे। (तब्री : 18/518; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसमें इब्ने इस्हाक़ का उस्ताद नामालूम है जिसकी वजह से यह रिवायत ज़ईफ़ है। मज्मउज़्ज़वाइद : 7/101) तफ़्सीर इब्ने कसीर के एक नुस्ख़े में यह रिवायत भी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''किसी को लायक़ नहीं कि वह अपने आपको यूनुस बिन मत्ता (अलैहि०) से अफ़ज़ल कहे, अल्लाह के उस बन्दे ने अंधेरियों में अपने रब की तस्बीह बयान की है।'' (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 31854; मौक़ूफ़न अला अली (रज़ि.) व सनदुहू हसन; सब्बिह लिल्लाहि फ़िज़्ज़ुलुमति के अलावा यह रिवायत सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व हल अताका हदीसु मूसा) : 3395; वग़ैरह में मौजूद है।) ऊपर जो रिवायत गुज़री उसकी वही एक सनद है।

इब्ने अबी हातिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब हज़रत यूनुस (अलैहि०) ने यह दुआ की तो यह कलिमात अर्श के आसपास घूमने लगे। फ़रिश्ते कहने लगे, बहुत दूरदराज़ की यह आवाज़ है लेकिन कान उससे पहले आशना ज़रूर हैं आवाज़ बहुत कमज़ोर है। जनाब बारी ने फ़र्माया, क्या तुमने पहचाना नहीं? उन्होंने कहा, नहीं! फ़र्माया, यह मेरे बन्दे यूनुस (अलैहि०) की आवाज़ है। फ़रिश्तो ने कहा, वही यूनुस जिसके पाक अमल क़बूलशुदा हर दिन तेरी तरफ़ चढ़ते थे और जिनकी दुआएँ तेरे पास मक़्बूल थीं, ऐ अल्लाह! जैसे वह आराम के वक़्त नेकियाँ करते थे तू इस मुसीबत के वक़्त उस पर रहम फ़र्मा। उसी वक़्त अल्लाह तआला ने मछली को हुक्म दिया कि वह आपको बग़ैर किसी तक्लीफ़ के किनारे पर उगल दे।'' (इब्ने अबी हातिम व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में यज़ीद रक़्क़ाशी ज़ईफ़ है। देखिए (अत्तक़रीब : 2/361; रक़म : 220) फिर फ़र्माता है कि हमने उनकी दुआ क़बूल कर ली और ग़म से नजात दे दी उन अंधेरियों से निकाल दिया, इसी तरह हम ईमान वालों को नजात दिया करते हैं, वह मुसीबतों में घिरकर हमें पुकारते हैं और हम उनकी दस्तगीरी फ़र्माकर तमाम मुश्किलें आसान कर देते हैं। ख़ुसूसन जो लोग इस दुआए यूनुसी को पढ़ें। जिसकी सय्यदुल अम्बिया रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तर्ग़ीब दिलाई है।

मुस्नदे अहमद व तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं मस्जिद में गया, हज़रत उस्मान (रज़ि.) वहाँ मौजूद थे, मैंने सलाम किया आपने मुझे बग़ौर देखा और मेरे सलाम का जवाब न दिया, मैंने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से आकर शिकायत की आपने हज़रत उस्मान (रज़ि.) को बुलवाया, उनसे वाक़िया को बयान किया कि आपने एक मुसलमान भाई के सलाम का जवाब क्यूँ न दिया? आपने फ़र्माया न यह आए, न इन्होंने सलाम किया, न मैंने उन्हें जवाब दिया। इस पर मैंने क़सम खाई तो आपने भी मेरे मुक़ाबले में क़सम खा ली, फिर कुछ ख़्याल करके हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने तौबा इस्तिग़फ़ार किया और फ़र्माया, ठीक है कि आप निकले थे लेकिन मैं उस वक़्त अपने दिल से वह बात कह रहा था जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी, अल्लाह की क़सम! जब मुझे वह याद आती है मेरी आँखों पर ही नहीं बल्कि मेरे दिल पर भी पर्दा पड़ जाता है। हज़रत सअद (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं आपको

उसकी ख़बर देता हूँ, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमारे सामने पहली दुआ का ज़िक्र किया ही था कि जो एक आराबी आ गया और आप (ﷺ) को अपनी बातों में लगा लिया, बहुत वक़्त गुज़र गया, अब हुज़ूर (ﷺ) वहाँ से उठे और मकान की तरफ़ जाने लगे, मैं भी आप (ﷺ) के पीछे हो लिया, जब आप (ﷺ) घर के क़रीब पहुँच गए, मुझे डर हुआ कि कहीं आप (ﷺ) अंदर न चले जाएँ और मैं रह जाऊँ तो मैंने ज़ोर ज़ोर से ज़मीन पर पैर मार मारकर चलना शुरू किया, मेरी जूतियों की आहट सुनकर आप (ﷺ) ने मेरी तरफ़ देखा और फ़र्माया, कौन अबू इस्हाक़? मैंने कहा, जी हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं ही हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "क्या बात है?" मैंने कहा हुज़ूर (ﷺ)! आपने अव्वल दुआ का ज़िक्र किया फिर वह आराबी आ गया और आपको बातों में लगा लिया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! हाँ! वह दुआ हज़रत ज़ुन्नून (عليه السلام) की थी जो उन्होंने मछली के पेट में की थी (ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन) सुनो! जो भी मुसलमान जिस किसी मामले में जब कभी अपने रब से यह दुआ करे अल्लाह तआला उसे ज़रूर क़बूल करता है।" (अहमद : 1/170; तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब फ़ी दअवति ज़ुन्नून... : 3505; व सनदुहू सहीहुन; मुस्नदे अबी यअला : 772; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 10492; हाकिम : 1/505; मुख़्तसरन) इब्ने अबी हातिम में है "जो भी हज़रत यूनुस (عليه السلام) की उस दुआ के साथ दुआ करे उसकी दुआ ज़रूर क़बूल की जाएगी।" (हाकिम : 2/382; व सनदुहू सहीहुन; मुस्नदे अबी यअला : 707) अबू सईद (रह.) फ़र्माते हैं इसी आयत में इसके बाद ही फ़र्मान है हम इसी तरह मोमिनों को नजात देते हैं। इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "अल्लाह का वह नाम जिससे वह पुकारा जाए तो क़बूल कर लेगा और जो माँगा जाए वह अता करेगा वह हज़रत यूनुस बिन मत्ता (عليه السلام) की दुआ में है।" हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह हज़रत यूनुस (عليه السلام) के लिए ही ख़ास थी या तमाम मुसलमानों के लिए आम है। फ़र्माया, "उनके लिए ख़ास और तमाम मुसलमानों के लिए आम जो भी यह दुआ करे, क्या तूने क़ुरआन में नहीं पढ़ा कि हमने उसकी दुआ क़बूल की, उसे ग़म से छुड़ाया और इसी तरह हम मोमिनों को छुड़ाते हैं। पस जो भी इस दुआ को करे उससे अल्लाह का क़बूलियत का वादा हो चुका है।" (तब्री : 18/519; हाकिम : 1/506; इस रिवायत में अली बिन ज़ेद ज़ईफ़ रावी हैं।) इब्ने अबी हातिम में है कि कसीर बिन मअबद फ़र्माते हैं मैंने इमाम बसरी (रह.) से पूछा कि अबू सईद! अल्लाह तआला का वह इस्मे आज़म कि जब उसके साथ उससे दुआ की जाए अल्लाह तआला क़बूल कर ले और जब उसके साथ उससे माँगा जाए तो अता फ़र्माए, वह क्या है? आपने जवाब दिया कि बिरदारज़ादे! क्या तुमने क़ुरआने करीम में अल्लाह का यह फ़र्मान नहीं पढ़ा? फिर आपने यही दो आयतें तिलावत कीं और फ़र्माया, भतीजे! यही अल्लाह का वह इस्मे आज़म है कि जब उसके साथ दुआ की जाए क़बूल करता है और जब उसके साथ उससे माँगा जाए वह अता फ़र्माता है।"

***

وَزَكَرِيَّآ إِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ
وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا
رَغَبًا وَّرَهَبًا ۭ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾ وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ
رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾

तर्जुमा : "और ज़करिय्या (عليه السلام) के क़िस्से को याद कर जब उसने अपने रब से दुआ की कि ऐ मेरे रब! मुझे तंहा न छोड़, तू सबसे बेहतर वारिस है।" (89) हमने उसकी दुआ को क़बूल करके उसे यहया (عليه السلام) अता किया और उनकी बीवी को उनके लिए भला चंगा कर दिया, यह बुज़ुर्ग लोग नेकियों की तरफ़ दौड़ा करते थे और हमें लालच तमअ और डर ख़ौफ़ से पुकारते रहते थे और हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। (90) और वह पाकदामन बीबी जिसने अपनी अस्मत की हिफ़ाज़त की हमने आप उनमें अपने पास की रूह फूँक दी और ख़ुद उन्हें और उनके लड़के को तमाम जहान के लिए निशाने क़ुदरत कर दिया।" (91)

हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) का वाक़िया (आयत 89 से 91) : अल्लाह तआला हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) का क़िस्सा बयान करता है कि उन्होंने दुआ की कि मुझे औलाद हो जो मेरे बाद नबी बने। सूरह मरयम और सूरह आले इमरान में यह वाक़िया तफ़्सील से है। आपने यह दुआ लोगों से छुपकर की थी। मुझे तंहा न छोड़ यानी बेऔलाद। दुआ के बाद अल्लाह तआला की तारीफ़ की जैसे कि उस दुआ के लायक़ थी। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ क़बूल की और आपकी बीवी साहिबा को जिन्हें बुढ़ापे तक कोई औलाद नहीं हुई थी, औलाद के क़ाबिल बना दिया। (तब्री : 18/520) कुछ लोग कहते हैं उनकी तूल ज़ुबानी बंद कर दी, कुछ कहते हैं उनके अख़्लाक़ की कमी पूरी कर दी लेकिन अल्फ़ाज़े क़ुरआन के क़रीब पहला मअनी ही है। यह सब बुज़ुर्ग नेकियों की तरफ़ और अल्लाह की फ़र्मांबरदारी की तरफ़ भागदौड़ करने वाले थे। (तब्री : 2/16) और लालच और डर से अल्लाह से दुआएँ करने वाले थे और सच्चे मोमिन, रब की बातें मानने वाले, अल्लाह का ख़ौफ़ रखने वाले, तवाज़ोअ इंकिसारी और आजिज़ी करने वाले, अल्लाह के सामने अपनी फ़रौतनी ज़ाहिर करने वाले थे। (तब्री : 2/16)

मरवी है कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने अपने एक ख़ुत्बे में फ़र्माया, लोगों! मैं तुम्हें अल्लाह तआला से डरते रहने की और उसकी पूरी सना व सिफ़त बयान करते रहने की और लालच और ख़ौफ़ से दुआएँ माँगने की और दुआओं में ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ करने की वसिय्यत करता हूँ। देखो! अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) के घराने की यही फ़ज़ीलत बयान की है, फिर आपने यह आयत तिलावत की। (हाकिम : 2/383; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़हबी (रह.) ने इस रिवायत को अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ के ज़ुअफ़ की वजह से ज़ईफ़ क़रार दिया है।)

हज़रत मरयम (عليها السلام) का ज़िक्रे ख़ैर : हज़रत मरयम और हज़रत ईसा (عليه السلام) का क़िस्सा बयान हो रहा है। क़ुरआने करीम में उमूमन हज़रत ज़करिय्या और हज़रत यह्या (عليه السلام) के क़िस्से के साथ ही इनका क़िस्सा बयान होता रहा है इसलिए कि इन लोगों में पूरा रब्त है। हज़रत ज़करिय्या (عليه السلام) पूरे बुढ़ापे के आलम में आपकी बीवी साहिबा जवानी से गुज़री हुई और पूरी उम्र की बेऔलाद थीं, उनके यहाँ औलाद अता फ़र्माई, इस क़ुदरत को दिखाकर सिर्फ़ औरत को बग़ैर शौहर के औलाद अता फ़र्माना, यह और क़ुदरत का कमाल ज़ाहिर करता है। सूरह आले इमरान और सूरह मरयम में भी यही तर्तीब है। मुराद अस्मत वाली औरत से हज़रत मरयम (عليها السلام) हैं। जैसे फ़र्मान है (وَ مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا) (66/तहरीम : 12) यानी इमरान की लड़की मरयम (عليها السلام) जो पाकदामन थीं, उन्हें और उनके लड़के हज़रत ईसा (عليه السلام) को अपनी बेनज़ीर क़ुदरत का निशान बनाया कि मख़्लूक़ को अल्लाह की हर तरह की क़ुदरत और उसकी पैदाइश पर वसीअ इख़्तियारात और तसर्रुफ़, अपने इरादे से चीज़ों को बनाना मालूम हो जाए। ईसा (عليه السلام) क़ुदरते इलाही की एक अलामत थे जिन्नात के लिए भी और इंसानों के लिए भी।

***

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ
اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ
كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ
وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ
اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾

तर्जुमा : ''यह है तुम सबका दीन एक ही दीन और मैं तुम सबका परवरदिगार हूँ पस तुम मेरी इबादत करो। (92) लोगों ने ख़ुद अपने दीन में फ़िर्क़ा बंदियाँ कर लीं सबके सब हमारी ही तरफ़ लौटने वाले हैं। (93) जो भी नेक अमल करे और हो भी वह मोमिन तो उसकी कोशिश की बेक़द्री नहीं, हम तो उसके लिखने वाले हैं। (94) जिस बस्ती को हमने हलाक कर दिया, उस पर ज़रूरी है कि वहाँ के लोग फिरकर नहीं आने के। (95) यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जाएँ और वह हर बुलंदी से दौड़े आएँ। (96) और सच्चा वादा क़रीब आ लगे, उस वक़्त काफ़िरों की निगाहें अचानक ऊपर की तरफ़ ही सिल जाएँ, हाय अफ़सोस! हम इस हाल से ग़ाफ़िल थे बल्कि फ़िल वाक़ेअ हम क़सूरवार थे।'' (97)

उम्मत एक, रब एक (आयत 92 से 97) : फ़र्मान है कि तुम सबका दीन एक ही है, करने न करने के अहकाम तुम सबमें यक्साँ हैं (हाज़िही) इस्म है (इन्ना) का और (उम्मतुकुम) ख़बर है और (उम्मतंव्वाहिदतन) हाल है यानी यह शरीअत जो बयान हुई तुम सबकी मुत्तफ़क़ अलैह शरीअत है जिसका असली मक़सद अल्लाह की तौहीद है जैसे आयत (يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ) से (فَاتَّقُوْنِ) (23/मोमिनून : 51, 52) तक है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''हम अम्बिया (عليهم السلام) की जमाअत ऐसे हैं जैसे एक बाप के फ़रज़न्द कि दीन सबका एक है यानी अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू की इबादत, भले अहकामे शरअ अलग अलग हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वज़्कुर फ़िल किताबि मरयम...) : 3443; सहीह मुस्लिम : 2365) फ़र्माने क़ुरआन है (وَ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنْهَاجًا) (5/माइदा : 48) हर एक की राह और तरीक़ा है। फिर लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया कुछ अपने नबियों पर ईमान लाए और कुछ न लाए। क़ियामत के दिन सबका लौटना हमारी तरफ़ है हर एक को उसके आमाल का बदला दिया जाएगा, नेकों को नेक बदला और बुरों को बुरी सज़ा, जिसके दिल में ईमान हो और जिसके आमाल नेक हों उसके आमाल बेकार न जाएँगे। जैसे फ़र्मान है (اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا) (18/कहफ़ : 30) नेक काम करने वालों का अज्र हम ज़ाया नहीं करते, ऐसे आमाल की क़द्रदानी करते हैं एक ज़र्रे के बराबर हम ज़ुल्म रवा नहीं रखते, तमाम आमाल लिख लेते हैं कोई चीज़ छोड़ते नहीं।

याजूज माजूज का तज़्किरा : हलाकशुदा लोगों का दुनिया की तरफ़ फिर पलटना असम्भव है। यह भी मतलब हो सकता है कि उनकी तौबा मक़्बूल नहीं लेकिन पहला क़ौल औला है। याजूज माजूज नस्ले आदम से हैं बल्कि वह हज़रत नूह (عليه السلام) के लड़के याफ़िस की औलाद में से हैं जिनकी नस्ल से तुर्क हैं यह भी उन ही का एक गिरोह है, यह ज़ुल्क़रनैन की बनाई हुई दीवार के बाहर ही छोड़ दिये गए थे। आपने दीवार बनाकर फ़र्माया था कि यह मेरे रब की रहमत है अल्लाह के वादे के वक़्त इसका चूरा चूरा हो जाएगा, मेरे रब का वादा हक़ है। आख़िर तक (18/कहफ़ : 98) याजूज माजूज क़ियामत के क़रीब क़ियामत के वक़्त वहाँ से निकल आएँगे और ज़मीन में फ़साद मचा देंगे। हर ऊँची जगह को अरबी में हदब कहते हैं। उनके निकलने के वक़्त उनकी यही हालत होगी तो उस ख़बर को इस तरह सुन जैसे सुनने वाला अपनी आँखों से देख रहा है और वाक़ेअ में अल्लाह तआला से ज़्यादा सच्चा ख़बर किसकी होगी, जो ग़ैब और हाज़िर जानने वाला। हो चुकी हुई और होने वाली बातों से आगाह है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने लड़कों को उछलते कूदते, खेलते दौड़ते एक दूसरे की चडिया लेते हुए देखकर फ़र्माया कि इसी तरह याजूज माजूज आएँगे। (तब्री : 18/528)

बहुत सी अहादीस में उनके निकलने का ज़िक्र है मुस्नदे अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''याजूज माजूज खोले जाएँगे और वह लोगों के पास पहुँचेंगे जैसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है (वहुम मिन कुल्लि हदबिंय्यन्सिलून) वह छा जाएँगे और मुसलमान अपने शहरों और क़िलों में सिमट आएँगे और अपने जानवरों को भी वहीं ले लेंगे और अपना पानी उन्हें पिलाते रहेंगे, याजूज माजूज जिस नहर से गुज़रेंगे, उसका पानी सफ़ाचट कर जाएँगे यहाँ तक कि उसमें ख़ाक़ उड़ने लगेगी उनमें दूसरी जमाअत जब वहाँ पहुँचेगी तो वह कहेगी शायद उसमें किसी ज़माने में पानी होगा। जब यह देखेंगी कि अब ज़मीन पर कोई न रहा और वाक़ेअ में सिवाए उन मुसलमानों के जो अपने शहरों और क़िलों में पनाह ले लेंगे कोई और वहाँ होगा भी नहीं

तो यह कहेंगे कि अब ज़मीन वालों से तो हम फ़ारिग़ हो गए आओ आसमान वालों की ख़बर लें चुनाँचे उनमें का एक शरीर अपना नेज़ा घुमाकर आसमान की तरफ़ फेंकेगा क़ुदरते इलाही से वह ख़ून आलूदा होकर उनके पास गिरेगा, यह भी एक क़ुदरती आज़माइश होगी अब उनकी गर्दनों में गुठली हो जाएगी और उसी वबा में यह सारे के सारे एक दम मर जाएँगे एक भी बाक़ी न रहेगा, सारा शोरोगुल ख़त्म हो जाएगा। मुसलमान कहेंगे कोई है जो अपनी जान हम मुसलमानों के लिए हथेली पर रखकर शहर के बाहर जाए और उन दुश्मनों को देखे कि किस हाल में हैं? चुनाँचे एक साहब उसके लिए तैयार हो जाएँगे और अपने आपको क़त्लशुदा समझकर अल्लाह की राह में मुसलमानों की ख़िदमत के लिए निकल खड़े होंगे देखेंगे कि सबका ढेर लग रहा है, सारे हलाक शुदा पड़े हुए हैं यह उसी वक़्त निदा करेगा कि मुसलमानों! ख़ुश हो जाओ अल्लाह ने ख़ुद तुम्हारे दुश्मनों को ग़ारत कर दिया, यह ढेर पड़ा हुआ है। अब मुसलमान बाहर आएँगे और अपने मवेशियों को भी लाएँगे, उनके लिए चारा सिवाय उनके गोश्त के और कुछ न होगा, यह उनका गोश्त खा खाकर ख़ूब मोटे ताज़े हो जाएँगे।'' (अहमद : 3/770; इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब फ़ित्नतिद्दज्जालु व ख़ुरूजे ईसा बिन मरयम (عليه السلام) : 4079; व सनदुहू हसन; मुस्नदे अबी यअला : 1351; हाकिम : 4/489; इब्ने हिब्बान : 683)

मुस्नदे अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) ने एक दिन सुबह ही सुबह दज्जाल का ज़िक्र किया, इस तरह कि हम समझे शायद वह उन दरख़्तों की आड़ में है और अब निकलना ही चाहते हैं। आप (ﷺ) फ़र्माने लगे, ''मुझे दज्जाल से ज़्यादा ख़ौफ़ तुम पर और चीज़ का है अगर दज्जाल मेरी मौजूदगी में निकला तो मैं उससे निपट लूँगा वरना तुममें से हर शख़्स उससे बचे, मैं तुम्हें अल्लाह की अमान में दे रहा हूँ। वह जवान उम्र उलझे हुए बालों वाला कानी और उभरी हुई आँख वाला है, वह शाम और इराक़ के बीच से निकलेगा और दाएँ बाएँ घूमेगा। ऐ बन्दगाने इलाही! तुम साबितक़दम रहना।'' हमने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह कितना ठहरेगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''चालीस दिन एक दिन मिस्ल एक बरस के एक दिन मिस्ल एक महीने के एक दिन मिस्ल एक जुम्आ के और बाक़ी दिन मामूली दिनों जैसे।'' हमने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जो दिन साल के बराबर होगा उसमें हमें यही पाँच नमाज़ें काफ़ी होंगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''नहीं! तुम अपने अंदाज़े से वक़्त पर नमाज़ पढ़ते रहा करना।'' हमने पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''चालीस दिन एक दिन मिस्ल एक साल के एक दिन मिस्ल एक महीना के एक दिन मिस्ल एक जुम्आ के और बाक़ी दिन मामूली दिनों जैसे।'' हमने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! जो दिन साल के बराबर होगा उसमें हमें यही पाँच नमाज़ें काफ़ी होंगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''नहीं! तुम अपने अंदाज़े से वक़्त पर नमाज़ पढ़ते रहा करना।'' हमने पूछा कि उसकी रफ़्तार कैसी होगी? फ़र्माया, ''जैसे बादल कि हवा उन्हें इधर से उधर भगाये लिए जाती हो, एक क़बीले के पास जाएगा उन्हें अपनी तरफ़ बुलाएगा, वह उसकी मान लेंगे, आसमान को हुक्म देगा कि उन पर बारिश बरसाये ज़मीन से कहेगा कि उनके लिए पैदावार उगाए, उनके जानवर उनके पास मोटे ताज़े भरे पेट लौटेंगे, एक क़बीले के पास जाकर अपने आपको मनवाना चाहेगा वह इंकार कर देंगे, यह वहाँ से निकलेगा तो उनके तमाम माल उसके पीछे लग जाएँगे, वह बिलकुल ख़ाली हाथ रह जाएँगे, वह ग़ैरआबाद जंगलों में जाएगा और ज़मीन से कहेगा, अपने ख़ज़ाने उगल दे, वह उगल देगी और सारे ख़ज़ाने उसके पीछे ऐसे चलेंगे जैसे शहद की मक्खियाँ अपने सरदार के पीछे। यह भी दिखाएगा कि एक शख़्स को तलवार से ठीक दो टुकड़े करा देगा और इधर उधर दूर दराज़ फेंकवा देगा फिर उसका नाम लेकर आवाज़ देगा तो वह ज़िन्दा चलता

फिरता उसके पास आ जाएगा। यह उसी हाल में होगा जो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल हज़रत मसीह बिन मरयम (عليه السلام) को उतार देगा, आप (عليه السلام) दमिश्क़ की मश्रिक़ी तरफ़ सफ़ेद मिनारे के पास उतरेंगे, अपने दोनों हाथ दो फ़रिश्तों के परों पर रखे हुए होंगे, आप उसका पीछा करेंगे और मश्रिक़ी बाबे लुद के पास उसे क़त्ल कर देंगे फिर हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) की तरफ़ अल्लाह की वह्ही आएगी कि मैं अपने ऐसे बन्दों को भेजता हूँ जिनसे लड़ने की तुममें ताब व ताक़त नहीं, मेरे बन्दों को तूर की तरफ़ समेट ले जा। फिर जनाब बारी याजूज माजूज को भेजेगा जैसे फ़र्माया (वहुम मिन कुल्लि हदबिंय्यन्सिलून) उनसे तंग आकर हज़रत ईसा (عليه السلام) और आपके साथी जनाब बारी में दुआ करेंगे तो अल्लाह तआला उन पर गुठली की बीमारी भेजेगा जो उनकी गर्दन में निकलेगी और सारे के सारे ऊपर तले एक साथ ही मर जाएँगे, तब ईसा (عليه السلام) मोमिनों के साथ आएँगे, देखेंगे कि तमाम ज़मीन उनकी लाशों से पटी पड़ी है और उनकी बदबू से खड़ा नहीं हुआ जाता।

आप फिर अल्लाह तआला से दुआ करेंगे तो अल्लाह तआला बुख़्ती ऊँटों की गर्दनों जैसे परिन्द भेजेगा जो उन्हें उठाकर अल्लाह जाने कहाँ फेंक आएँगे। कअ़ब (रह.) कहते हैं मुहैल में यानी सूरज के उगने की जगह में फेंक आएगे। फिर चालीस दिन तक तमाम ज़मीन पर लगातार मुसलसल बारिश बरसेगी, ज़मीन धुल धुलाकर हथेली की तरह साफ़ हो जाएगी फिर अल्लाह के हुक्म से अपनी बरकतें उगा देगी। उस दिन एक जमाअ़त की जमाअ़त एक अनार से पेट भर लेगी और उसके छिल्के तले साया हासिल करेगी। एक ऊँटनी का दूध लोगों की एक जमाअ़त को एक गाय का दूध एक क़बीले को और एक बकरी का दूध एक घराने को काफ़ी होगा। फिर एक पाकीज़ा हवा चलेगा जो मुसलमानों की बग़लों तले से निकल जाएगी और उनकी रूह क़ब्ज़ हो जाएगी फिर रूए ज़मीन पर बदतरीन शरीर लोग बाक़ी रह जाएँगे जो गधों की तरह कूदते होंगे, उन्हीं पर क़ियामत क़ायम होगी।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब ज़िक्रुद्दज्जाल : 2937; अहमद : 4/181; तिर्मिज़ी : 2240; इब्ने माजा : 4075; अबूदाउद : 4321; मुख़्तसरन) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन कहते हैं।

मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) को एक बिच्छू ने काट खाया था तो आप (ﷺ) अपनी उँगली पर पट्टी बाँधे हुए ख़ुत्बे के लिए खड़े हुए और फ़र्माया, ''तुम कहते हो अब दुश्मन नहीं हैं लेकिन तुम तो दुश्मनों से जिहाद करते ही रहोगे, यहाँ तक कि याजूज माजूज आ जाएँ वह चौड़े चेहरे वाले छोटी आँखों वाले उनके चेहरे तह ब तह ढालू जैसे होंगे।'' (अहमद : 5/271; ह : 22331; व सनदुहू हसन; ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हर्मलह सदूक़ वस्सक़हुल इमाम मुस्लिम व इब्ने हिब्बान; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 6/8)

यह रिवायत सूरह आराफ़ की तफ़्सीर के आख़िर में बयान कर दी गई है। मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''मेअराज वाली रात में हज़रत इब्राहीम, मूसा और हज़रत ईसा (عليه السلام) से क़ियामत के दिन का मुज़ाकिरा शुरू हुआ, हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने उसके इल्म से इंकार कर दिया, इसी तरह हज़रत मूसा (عليه السلام) ने भी। हाँ! हज़रत ईसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, इसके वाक़ेअ होने के वक़्त को तो सिवाय अल्लाह के कोई नहीं जानता, हाँ! मुझसे मेरे अल्लाह ने यह तो फ़र्माया है कि दज्जाल निकलने वाला है मेरे साथ दो टहनियाँ होंगी, वह मुझे देखते ही सीसे की तरह पिघलने लगेगा, यहाँ तक कि अल्लाह उसे हलाक कर दे जबकि वह मुझे देखे, यहाँ तक कि पत्थर और दरख़्त भी पुकार उठेंगे कि ऐ मुस्लिम! यह है मेरे साये काफ़िर आ और इसे क़त्ल कर, पस अल्लाह उन्हें हलाक करेगा और लोग अपने शहरों और वतनों की तरफ़ लौट

जाएँगे। उस वक़्त याजूज माजूज निकलेंगे जो हर ऊँचाई से फुदकते हुए आएँगे जो पाएँगे तबाह कर देंगे पानी जितना पाएँगे पी जाएँगे लोग फिर तंग आकर अपने वतनों में महसूर होकर बैठ जाएँगे। शिकायत करेंगे तो मैं फिर अल्लाह से दुआ करूँगा, अल्लाह तआला उन्हें ग़ारत कर देगा, सारी ज़मीन पर उनकी बदबू फैल जाएगी, फिर बारिश बरसेगी और पानी का रेला उनके सड़े हुए जिस्मों को बहाकर दरिया बुर्द कर देगा, मेरे रब ने मुझसे फ़र्मा दिया है कि जब यह सब कुछ ज़ाहिर हो जाएगा, फिर तो क़ियामत का होना ऐसा ही है जैसे पूरे दिनों हमल वाली औरत का वज़अे हमल होना कि घरवालों को फ़िक्र होती है कि सुबह बच्चा हो या शाम को हो, दिन को हो या रात को हो।'' (अहमद : 1/375; इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब फ़ितनतिद्दज्जालि व ख़ुरूजे ईसा बिन मरयम(अ.) : 4081; व सनदुहू सहीहुन; हाकिम : 4/488)

इसकी तस्दीक़ कलामुल्लाह की इस आयत में मौजूद है। इस बारे में हदीसें बकसरत हैं और आसारे सलफ़ भी बहुत हैं।

मज़ीद अलामाते क़ियामत का ज़िक्र : कअब (रज़ि.) का क़ौल है कि याजूज माजूज के निकलने के वक्त वह दीवार को खोदेंगे यहाँ तक कि उनकी कुदालों की आवाज़ आसपास वाले भी सुनेंगे, रात हो जाएगी, उनमें से एक कहेगा कि अब सुबह आते ही इसे तोड़ डालेंगे और निकल खड़े होंगे, सुबह यह आएँगे तो जैसी कल थी वैसे ही आज भी पाएँगे। अल्ग़र्ज़ यूँ ही होता रहेगा, यहाँ तक कि उनका निकालना जब मंज़ूर होगा तो एक शख़्स की ज़ुबान से निकलेगा कि हम कल इंशाअल्लाह! इसे तोड़ देंगे, अब जो आएँगे तो जैसी छोड़ गए थे वैसी पाएँगे तो खोदकर तोड़ देंगे और बाहर निकल आएँगे, उनका पहला गिरोह बहीरा के पास से निकलेगा, सारा पानी पी जाएगा, दूसरा आएगा तो कीचड़ भी चाट जाएगा। तीसरा आएगा तो कहेगा, शायद यहाँ किसी वक़्त पानी था ही नहीं। लोग उनसे भाग भागकर इधर उधर छुप जाएँगे, जब उन्हें कोई भी नज़र न पड़ेगा तो यह अपने तीर आसमान की तरफ़ फेंकेंगे वहाँ से वह ख़ून से भरे हुए उनकी तरफ़ वापिस आएँगे तो यह फ़ख़्र से कहेंगे कि हम ज़मीन वालों पर और आसमान वालों पर ग़ालिब आ गए। हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) उन पर बद्दुआ करेंगे कि ऐ अल्लाह! हममें इनके मुक़ाबले की ताक़त नहीं और ज़मीन पर चलना फिरना भी ज़रूरी है तू हमें जिस तरीक़े से भी चाहे इनसे नजात दे, तो अल्लाह तआला उनको ताऊन में मुब्तला करेगा, गुठलियाँ निकल आएँगी और सारे के सारे मर जाएँगे, फिर एक क़िस्म के परिन्द आएँगे जो अपनी चोंच में उन्हें लेकर समुन्द्र में फेंक आएँगे फिर अल्लाह तआला नहरे हयात जारी कर देगा जो ज़मीन को धोकर पाक साफ़ कर देगी और ज़मीन अपनी बरकतें निकाल देगी एक अनार एक घराने को काफ़ी होगा अचानक एक शख़्स आएगा और आवाज़ देगा कि ज़ुल सुवैक़्तीन निकल आया है। हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) सात आठ सौ लश्करियों का गिरोह भेजेंगे, यह अभी रास्ते में ही होंगे जो यमनी पाक हवा निहायत लताफ़त से चलेगी जो तमाम मोमिनों की रूह क़ब्ज़ कर जाएगी, फिर तो रूए ज़मीन पर रद्दी खुद्दी लोग रह जाएँगे जो चौपायों जैसे होंगे उन पर क़ियामत क़ायम होगी उस वक़्त क़ियामत इस क़द्र क़रीब होगी जैसे पूरे दिनों की घोड़ी जो जनने के क़रीब हो और घोड़ी वाला आसपास घूम रहा हो कि कब बच्चा हो। हज़रत कअब (रज़ि.) यह बयान करके कहने लगे अब जो शख़्स मेरे इस क़ौल और इस इल्म के बाद भी कुछ कहे उसने तकल्लुफ़ किया।'' कअब (रज़ि.) का यह वाक़िया बयान करना बेहतरीन वाक़िया है क्योंकि इसकी गवाही सहीह अहादीस में भी पायी

जाती है। अहादीस में यह भी आया है ''हज़रत ईसा (عليه السلام) उस ज़माने में बैतुल्लाह का हज्ज भी करेंगे।''

चुनाँचे मुस्नदे अहमद में यह हदीस मरफ़ूअन मरवी है कि ''आप याजूज माजूज के ख़ुरूज के बाद यक़ीनन बैतुल्लाह का हज्ज करेंगे।'' (अहमद : 3/28; सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (जअलल्लाहुल कअबतल बैतल हराम...) : 1593; सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 2507; इब्ने हिब्बान : 2832) यह हदीस बुख़ारी में भी है। जब यह होलनाकियाँ, जब यह ज़लज़ले, जब यह बलाएँ और आफ़तें आ जाएँगी तो उस वक़्त क़ियामत बिलकुल क़रीब आ जाएगी उसे देखकर काफ़िर कहने लगेंगे यह निहायत सख़्त दिन है, उनकी आखें फट जाएँगी और कहने लगेंगे हाय! हम तो ग़फ़्लत में ही रहे, हाय! हमने अपना ख़ुद का बिगाड़ा किया, गुनाहों का इक़रार और उस पर शर्मसार होंगे लेकिन अब बेकार है।

***

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنْتُمْ لَهَا وَارِدُونَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هَٰؤُلَاءِ
آلِهَةً مَا وَرَدُوهَا وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ
الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا
وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ
الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

तर्जुमा : ''तुम और अल्लाह के सिवा जिन जिनकी तुम इबादत करते हो सब दोज़ख़ का ईंधन बनोगे तुम सब दोज़ख़ में जाने वाले हो। (98) अगर यह सच्चे मअबूद होते तो जहन्नम में दाख़िल न होते, सबके सब उसी में हमेशा रहने वाले हैं। (99) वह वहाँ चिल्ला रहे होंगे और वहाँ कुछ भी न सुन सकेंगे। (100) जिनके लिए हमारी तरफ़ से नेकी पहले ही ठहर चुकी है वह सब जहन्नम से दूर ही रखे जाएँगे। (101) वह तो दोज़ख़ की आहट तक न सुनेंगे और अपनी मनमानी चीज़ों में हमेशा रहने वाले होंगे। (102) वह बड़ी घबराहट भी उन्हें ग़मगीन न कर सकेगी और वह फ़रिश्ते उन्हें हाथों हाथ लेंगे, यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम वादा दिये जाते रहे।'' (103)

मअबूदाने बातिला का अंजाम (आयत 98 से 103) : बुतपरस्तों से अल्लाह तआला फ़र्माता है कि तुम और तुम्हारे बुत जहन्नम की आग की लकड़ियाँ बनोगे। जैसे फ़र्मान है (وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ)

(66/तह़रीम : 6) उसका ईंधन इंसान हैं और पत्थर। ह़ब्शी ज़बान में ह़तब को ह़सब कहते हैं। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अम्बिया : 4739) यानी लकड़ियाँ। बल्कि एक क़िराअत में बजाए ह़सब के ह़तब है। तुम सब आबिद व मअ़बूद जहन्नमी हो और वह भी हमेशा के लिए। अगर यह सच्चे मअ़बूद होते तो क्यूँ आग में जलते यहाँ तो परस्तार और परसतिश किये जाने वाले अबदी त़ौर पर दोज़ख़ी हो गए। वह उल्टी सांस में चीखेंगे। जैसे फ़र्मान है (لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَّ شَهِيقٌ) (11/हूद : 106) वह सीधी उल्टी सांसों से चीखेंगे और चीखों के सिवा उनके कान में और कोई आवाज़ न पड़ेगी। ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से मरवी है कि जब सिर्फ़ मुश्रिक जहन्नम में रह जाएँगे, उन्हें आग के संदूक़ों में क़ैद कर दिया जाएगा, जिनमें आग के सरिये होंगे, उनमें से हर एक को यही गुमान होगा कि जहन्नम में उसके सिवा कोई नहीं, फिर आपने यही आयत तिलावत की। (इब्ने जरीर)

ह़ुस्ना से मुराद रह़मत और सआ़दत है। (त़ब्री : 18/541) जहन्नम वालों और उनके अ़ज़ाबों का ज़िक्र करके अब नेक लोगों का और उनकी जज़ाओं का ज़िक्र हो रहा है। यह लोग ईमान वाले थे उनके नेक आमाल की वजह से सआ़दत उनके इस्तिक़्बाल को तैयार थी जैसे फ़र्मान है (لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ) (10/यूनुस : 26) नेकों के लिए नेक अज्र है और ज़्यादती अज्र भी। फ़र्मान है (هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ) (55/रह़मान : 60) नेकी का बदला नेक ही है। उनके दुनिया के आमाल नेक थे तो आख़िरत में सवाब और नेक बदला मिला, अ़ज़ाब से बचे और रह़मते इलाही से सरफ़राज़ हुए। यह जहन्नम से दूर कर दिये गए कि उसकी आहट तक नहीं सुनते, न जहन्नम वालों का जलना वह सुनते हैं। पुलस़िरात़ पर दोज़ख़ियों को ज़हरीले नाग डसते हैं और यह वहाँ ह़स ह़स करते हैं जन्नती लोगों के कान भी इस दर्दनाक आवाज़ से नाआशना रहेंगे, इतना ही नहीं कि ख़ौफ़ डर से यह अलग हो गए बल्कि साथ ही राह़त व आराम भी ह़ासिल कर लिया। मनमानी चीज़ें मौजूद हमेशगी की राह़त ह़ाज़िर।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने एक रात इस आयत की तिलावत की और फ़र्माया कि मैं, उ़मर और उ़स्मान और ज़ुबैर और त़लह़ा और अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि.) उन ही लोगों में हैं या ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) का नाम लिया। इतने में नमाज़ की तक्बीर हुई तो आप चादर घसीटते (ला यस्मऊ़ना ह़सीसहा) पढ़ते हुए उठ खड़े हुए और रिवायत है कि आपने फ़र्माया, उ़स्मान (रज़ि.) और उनके साथी ऐसे ही हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यही लोग औलिया अल्लाह हैं, बिजली से भी ज़्यादा तेज़ी के साथ पुलस़िरात़ से पार हो जाएँगे और काफ़िर वहीं घुटनों के बल गिर पड़ेंगे। कुछ कहते हैं इससे मुराद वह बुज़ुर्गाने दीन हैं जो अल्लाह वाले थे, शिर्क से बेज़ार थे, लेकिन उनके बाद लोगों ने उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उनकी पूजा पाठ शुरू कर दी थी जैसे ह़ज़रत उ़ज़ैर (عليه السلام), ह़ज़रत मसीह़ (عليه السلام), फ़रिश्ते, सूरज, चाँद, ह़ज़रत मरयम (عليها السلام) वग़ैरह।

अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ब्अ़री ह़ुज़ूर (ﷺ) के पास आया और कहने लगा, तेरा ख़्याल है कि अल्लाह ने आयत (इन्नकुम वमा तअ़बुदूना मिन दूनिल्लाहि ह़सबु जहन्नम) उतारी है? अगर यह सच है तो क्या सूरज, चाँद, फ़रिश्ते, उ़ज़ैर (عليه السلام), ईसा (عليه السلام) सबके सब हमारे बुतों के साथ जहन्नम में जाएँगे? इसके जवाब में आयत (وَ لَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 57) उतरी और आयत (इन्नल्लज़ीना सबक़त लहुम् मिन्नल

हुस्ना) नाज़िल हुई। सीरत इब्ने इस्हाक़ में है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) एक दिन वलीद बिन मुग़ीरह के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे जो नज़्र बिन हारिस आया उस वक़्त मस्जिद में और क़ुरैशी भी बहुत सारे थे, नज़्र बिन हारिस रसूलुल्लाह (ﷺ) से बातें कर रहा था लेकिन वह लाजवाब हो गया तो आप (ﷺ) ने आयत इन्नकुम वमा तअबुदून) से (ला यस्मऊन) तक तिलावत फ़र्माई जब आप (ﷺ) उस मज्लिस से चले गए तो अब्दुल्लाह बिन ज़ब्अरी आया लोगों ने उससे कहा, आज नज़्र बिन हारिस ने बातें कीं लेकिन बुरी तरह चित्त हुए और हज़रत यह फ़र्माते हुए चले गए, उसने कहा, अगर मैं होता तो उन्हें जवाब देता कि हम फ़रिश्तों को पूजते हैं, यहूद उज़ैर (عليه السلام) को, ईसाई मसीह (عليه السلام) को यह सब भी जहन्नम में जलेंगे? सबको यह जवाब बहुत पसंद आया। जब हुज़ूर (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जिसने इबादत कराई वह आबिदों के साथ जहन्नम में है यह बुज़ुर्ग अपनी इबादत नहीं कराते थे बल्कि यह तो उन्हें नहीं शैतान को पूज रहे हैं, उसी ने इनकी इबादत की राह बतलाई है। आप (ﷺ) के जवाब के साथ ही क़ुरआनी जवाब उसके बाद की आयत (इन्नल्लज़ीना सबक़त) में उतरा तो जिन नेक लोगों की जाहिलों ने पूजा की थी वह उससे अलग हो गए। चुनाँचे क़ुरआन में है (وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّیْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ) (21/अम्बिया : 29) यानी उनमें से जो अपनी मअबूदियत औरों से मनवानी चाही उसका बदला जहन्नम है, हम ज़ालिमों को उसी तरह सज़ा देते हैं और आयत (وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا) (43/ज़ुख़रुफ़ : 57) उतरी कि इस बात के सुनते ही वह लोग ताज्जुब में पड़ गए और कहने लगे, हमारे मअबूद अच्छे या वह यह तो सिर्फ़ धेंगा मश्ती है और यह लोग झगड़ालू ही हैं, वह हमारा इन्आम याफ़्ता बन्दा था उसे हमने बनी इस्राईल के लिए नमूना बनाया था अगर हम चाहें तो तुम्हारे जानशीन फ़रिश्तों को कर दें। हज़रत ईसा (عليه السلام) निशाने क़ियामत हैं उनके हाथ पर जो मोजिज़ात सादिर हुए वह शकी चीज़ें नहीं वह क़ियामत की दलील हैं, तुझे इसमें शक न करना चाहिए, मेरी मानता चला जा, यही सिराते मुस्तक़ीम है। इब्ने ज़ब्अरी की जुर्अत को देखिए ख़िताब अहले मक्का से है और उनकी उन तस्वीरों और पत्थरों के लिए कहा गया है जिन्हें वह सिवाए अल्लाह के पूजा करते थे, न कि हज़रत ईसा (عليه السلام) वग़ैरह पाक नफ़्स मुवह्हिदों के लिए जो ग़ैरुल्लाह की इबादत से रोकते थे।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं, लफ़्ज़ मा जो यहाँ है वह अरब में उनके लिए आता है जो बेजान और बेअक़्ल होंगे। यह इब्ने ज़ब्अरी उसके बाद मुसलमान हो गए थे। यह बड़े मशहूर शायर थे पहले इन्होंने मुसलमानों का दिल खोलकर मज़ाक़ उड़ाया था लेकिन मुसलमान होने के बाद बड़ी मअज़िरत की। मौत की घबराहट, नफ़्ख़े की घबराहट, लोगों की जहन्नम के दाख़िले के वक़्त की घबराहट, उस घड़ी की घबराहट जबकि जहन्नम पर ढक्कन ढक दिया जाएगा जबकि मौत को दोज़ख़ जन्नत के बीच ज़िब्ह कर दिया जाएगा, ग़र्ज़ किसी अंदेशे का दर्द उन पर न होगा वह हर ग़म उससे दूर होंगे, पूरे मसरूर होंगे, ख़ुश होंगे और नाख़ुशी से कोसों दूर होंगे, फ़रिश्तों के गिरोह के गिरोह उनसे मुलाक़ात कर रहे होंगे, और उन्हें ढारस देते हुए कहते होंगे कि इसी दिन का वादा तुमसे किया गया था, इस वक़्त तुम क़ब्रों से उठने के दिन के इंतिज़ार करो।

يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ

اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾

तर्जुमा : "जिस दिन हम आसमान को लपेट लेंगे मिस्ल किताब के लिखे हुए पर जैसे कि हमने पहली बार पैदाइश की थी उसी तरह दोबारा करेंगे, यह हमारे ज़िम्मे वादा है और हम इसे ज़रूर करके ही रहेंगे।" (104)

आसमान लपेट दिया जाएगा (आयत 104) : यह क़ियामत के दिन होगा, जबकि हम आसमान को लपेट लेंगे जैसे फ़र्माया (وَ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ) (39/ज़ुमर : 67) इन लोगों ने जैसी क़द्र अल्लाह की करनी चाहिए थी जानी ही नहीं, तमाम ज़मीन क़ियामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और तमाम आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे होंगे, वह पाक और बरतर है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका शरीक ठहरा रहे हैं। बुख़ारी की ह़दीस में है, हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआला क़ियामत के दिन ज़मीनों को मुट्ठी में ले लेगा और आसमान उसके दाएँ हाथ में होंगे।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तौह़ीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (लिमा ख़लक़्तु बियदी...) : 7412) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं सातों आसमानों को और वहाँ की कुल मख़्लूक़ को, सातों ज़मीनों को और उसकी कुल कायनात को अल्लाह तआला अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा, वह उसके हाथ में ऐसे होंगे जैसे राई का दाना। सिजिल्ल से मुराद किताब है और कहा गया है कि मुराद यहाँ एक फ़रिश्ता है जब किसी का इस्तिग़्फ़ार चढ़ता है तो वह कहता है उसे नूर लिख लो। यह फ़रिश्ता आ़मालनामा पर मुक़र्रर है जब इंसान मर जाता है तो उसकी किताब को और किताबों के साथ लपेटकर उसे क़ियामत के लिए रख दिया जाता है, कहा गया है कि यह नाम है उस स़ह़ाबी का जो हुज़ूर (ﷺ) का कातिबे वह़ी था। (अबूदाउद, किताबुल ख़िराज, बाब फ़ी इत्तिख़ाज़िल कातिब : 2935; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत में यज़ीद बिन कअ़ब औज़ी मज्हूल रावी है।) लेकिन यह रिवायत साबित नहीं, अकसर ह़ाफ़िज़ाने ह़दीस ने इन सबको मौज़ूअ़ कहा है, ख़ुसूसन हमारे उस्ताद ह़ाफ़िज़ कबीर अबुल ह़ज्जाज मिज़्ज़ी (रह़.) ने।

मैंने इस ह़दीस को एक अलग किताब में लिखा है इमाम अबू जअ़फ़र इब्ने जरीर (रह़.) ने भी इस ह़दीस पर बहुत ही इंकार किया है और इसकी ख़ूब तर्दीद की है और फ़र्माया कि सिजिल्ल नाम का कोई स़ह़ाबी है ही नहीं। हुज़ूर (ﷺ) के तमाम मुंशियों के नाम मशहूर व मअ़रूफ़ हैं किसी का नाम सिजिल्ल नहीं। फ़िल वाक़ेअ़ इमाम साह़ब ने सही और दुरुस्त फ़र्माया, यह बड़ी वजह है इस ह़दीस के मुंकिर होने की बल्कि यह भी याद रहे कि जिसने इस स़ह़ाबी का ज़िक्र किया है उसने इसी ह़दीस पर ऐतिमाद करके ज़िक्र किया है जब यह साबित ही नहीं तो फिर वह मज़्कूर सरतापा ग़लत़ ठहरा। स़ह़ीह़ यही है कि सिजिल्ल से मुराद स़ह़ीफ़ा है। (त़बरी : 18/543; स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अम्बिया : 4739) जैसे कि अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है और लुग़ते भी यही बात है पस फ़र्मान है जिस दिन हम आसमान को लपेट लेंगे मिस्ल लपेटने किताब के लिखे हुए के लाम यहाँ पर मअ़नी में अ़ला के है। जैसे (وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ) (37/साफ़्फ़ात : 103) में लाम यहाँ मअ़नी में अ़ला के है , लुग़त में इसकी नज़ीरें भी हैं, वल्लाहु आ़लम!

यह यक़ीनन होकर रहेगा, उस दिन अल्लाह तआला नए सिरे से मख़्लूक़ को पहले की तरह पैदा करेगा, जो शुरुआत में क़ादिर था वह दोबारा पर भी उससे ज़्यादा क़ादिर है, यह अल्लाह का वादा है उसके वादे अटल होते हैं, वह न कभी बदलें, न उनमें ख़िलाफ़ हो, वह तमाम चीज़ों पर क़ादिर है, वह उसे पूरा और साबित करके ही रहेगा। हुज़ूर (ﷺ) ने खड़े होकर अपनी एक तक़रीर में फ़र्माया, तुम लोग अल्लाह के सामने जमा होने वाले हो, नंगे पैर, नंगे बदन, बेख़त्ने जैसे हमने पहली बार पैदा किया, इसी तरह दोबारा लौटाए जाओगे, यह हमारा वादा है जिसे हम पूरा करके रहेंगे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल अम्बिया : 4740; सहीह मुस्लिम : 2860; अहमद : 1/235) सब चीज़ें ख़त्म हो जाएँगी फिर बनाई जाएँगी।

***

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

तर्जुमा : "हम ज़बूर में पंद व नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि ज़मीन के वारिस मेरे नेक बंदे होकर रहेंगे। (105) इबादतगुज़ार बंदों के लिए तो इसमें किफ़ायत है। (106) हमने तुझे तमाम जहान वालों के लिए रहमत बनाकर ही भेजा है।" (107)

ज़मीन के वारिस अल्लाह के नेक बंदे ही होंगे (आयत 105 से 107) : अल्लाह तआला अपने बन्दों को जिस तरह आख़िरत देता है उसी तरह दुनिया में भी उन्हें मुल्क व माल देता है कि अल्लाह का हत्मी वादा और सच्चा फ़ैसला है। जैसे फ़र्माया (اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَاۤءُ مِنْ عِبَادِهٖ) (7/आराफ़ : 128) ज़मीन अल्लाह की है जिसे चाहता है इसका वारिस बना देता है, अंजामकार परहेज़गारों का हिस्सा है और फ़र्मान है हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया में और आख़िरत में मदद करते हैं। (40/ग़ाफ़िर : 51) और फ़र्मान है तुममें के ईमान वाले और नेक लोगों से अल्लाह तआला का वादा है कि वह उन्हें ज़मीन में ग़ालिब करेगा, जैसे कि उनसे अगलों को ग़ालिब किया और उनके लिए उनके दीन को मज़बूत कर देगा जिसे वह ख़ुश है। (24/नूर : 55) और फ़र्माया कि यह शरइया और क़द्रिया किताबों में मरक़ूम है, यक़ीनन होकर ही रहेगा। ज़बूर से मुराद बक़ौले सईद बिन ज़ुबेर (रह.) तौरात इंजील और क़ुरआन है। (तब्री : 18/547) मुजाहिद (रह.) कहते हैं ज़बूर से मुराद किताब है। (तब्री : 18/547) कुछ लोग कहते हैं ज़बूर उस किताब का नाम है जो हज़रत दाऊद (عليه السلام) पर उतरी थी, ज़िक्र से मुराद यहाँ पर तौरात है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ज़िक्र से मुराद क़ुरआन है। सईद (रह.) फ़र्माते हैं ज़िक्र वह है जो आसमानों में है यानी अल्लाह के पास की उम्मुल किताब जो सबसे पहली किताब है यानी लोहे महफ़ूज़। यह भी मरवी है कि ज़बूर वह आसमानी किताब पैग़म्बरों पर नाज़िल हुई और ज़िक्र से मुराद पहली किताब यानी लोहे महफ़ूज़। फ़र्माते हैं तौरात ज़बूर और इल्मे इलाही में पहले ही यह फ़ैसला हो गया था कि उम्मते मुहम्मदिया (ﷺ) ज़मीन की बादशाह बनेगी और नेक होकर जन्नत में जाएगी। यह भी कहा गया है कि ज़मीन से मुराद जन्नत की ज़मीन है। (तब्री : 18/549)

अबू दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं सालेह लोग हम ही हैं, मुराद इससे ईमान वाले लोग हैं, इस कुरआन में जो नबी आख़िरुज़्ज़मान (ﷺ) पर उतारा गया है पूरी नसीहत व किफ़ायत है उनके लिए जो हमारे इबादतगुज़ार बंदे हैं, जो हमारी मानते हैं, अपनी ख़्वाहिश को हमारे नाम पर कुर्बान कर देते हैं, फिर फ़र्माता है कि हमने अपने पास से इस नबी को रहमतुल लिल आलमीन बनाकर भेजा है पस इस नेअमत की शुक्रगुज़ारी करने वाला दुनिया व आख़िरत में शादमाँ (ख़ुश) है और नाक़द्री करने वाला दोनों जहान में बर्बाद व नाशाद है। जैसे इर्शाद है कि तुमने उन्हें देखा जिन्होंने अल्लाह की नेअमत की नाशुक्री की और अपनी क़ौम को ग़ारत कर दिया। (14/इब्राहीम : 28) इस कुरआन की निस्बत फ़र्माया कि यह ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफ़ा है हाँ! बेईमान बहरे अंधे हैं। (41/फ़ुस्सिलत : 44)

सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि ''एक मौक़े पर अस्हाबे रसूल ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर (ﷺ)! इन काफ़िरों के लिए बद्दुआ कीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं लअनत करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया बल्कि रहमत व हिदायत हूँ।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब अन्नही अन लुइनद्दवाब्बि व ग़ैरुहा : 2599; मुस्नदे अबी यअला : 6174) और हदीस में है आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मैं तो सिर्फ़ रहमत व हिदायत हूँ।'' (हाकिम : 1/35; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्अअमश अन्अन, अल्मुअजमुल औसत : 3005) और रिवायत में इसके साथ यह भी है कि ''मुझे एक क़ौम की तरक़्क़ी और दूसरी के तनज़्ज़ुल के साथ भेजा गया है।''(इस रिवायत में रजुल मज्हूल है लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।) तबरानी में है कि अबू जहल ने कहा, ऐ कुरैशियो! मुहम्मद यस्रिब (मदीना) में चला गया है, अपने तिलाये के लश्कर इधर उधर तुम्हारी जुस्तजू में भेज रहा है, देखो होशियार रहना, वह भूखे शेर की तरह ताक में है, वह ख़ार खाये हुए है क्योंकि तुमने उसे निकाल दिया है, वल्लाह! उसके जादूगर बेमिसाल हैं, मैं तो उसे या उसके साथियों में से जिस किसी को देखता हूँ तो मुझे उनके साथ शैतान नज़र आते हैं, तुम जानते हो कि ओस और ख़ज़रज हमारे दुश्मन हैं, इस दुश्मन को उन दुश्मनों ने पनाह दी है, इस पर मुतइम बिन अदी कहने लगे, अबुल हकम सुनो! तुम्हारे इस भाई से जिसे तुमने अपने मुल्क से जिलावतन कर दिया है मैंने तो किसी को ज़्यादा सच्चा और ज़्यादा वादे का पूरा करने वाला नहीं पाया, अब जबकि ऐसे भले आदमी के साथ तुम यह बदसुलूकी कर चुके हो तो अब तो इसे छोड़ दो, तुम्हें चाहिए इससे बिलकुल अलग थलग रहो, इस पर अबू सुफ़्यान बिन हारिस कहने लगा, नहीं! तुम्हें उस पर पूरी सख़्ती करनी चाहिए याद रखो! अगर उसके तरफ़दार तुम पर ग़ालिब आ गए, तो तुम कहीं के नहीं रहोगे, न वह रिश्ते देखेंगे, न कुंबा, मेरी राय में तो तुम्हें मदीने वालों को तंग कर देना चाहिए कि या तो वह मुहम्मद को निकाल दें और वह बेक बीनी दो गोश तने तंहा रह जाए, या उन मदीने वालों का सफ़ाया कर देना चाहिए, अगर तुम तैयार हो जाओ तो मैं मदीने के कोने कोने पर लश्कर बिठा दूँगा और उन्हें नाकों चने चबवा दूँगा जब हुज़ूर (ﷺ) को यह बातें पहुँचीं तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि मैं ही इन्हें क़त्लो ग़ारत करूँगा और क़ैद करके फिर एहसान करके छोड़ूँगा, मैं रहमत हूँ, मेरा भेजने वाला अल्लाह है, वह मुझे इस दुनिया से न उठाएगा तब तक कि अपने दीन को दुनिया पर ग़ालिब न कर दे, मेरे पाँच नाम हैं, मुहम्मद, अहमद, माही कि मेरी वजह से अल्लाह कुफ़्र को मिटाएगा। हाशिर कि लोग मेरे क़दमों पर जमा किये जाएँगे और आक़िब।'' (तबरानी : 1532; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) मुस्नदे अहमद में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) मदायन में थे बसाऔक़ात अहादीसे रसूल का मुज़ाकिरा रहा करता था एक दिन हज़रत हुज़ैफ़ा

(रज़ि.) हज़रत सलमान (रज़ि.) के पास आए तो हज़रत सलमान (रज़ि.) ने फ़र्माया, ऐ हुज़ैफ़ा (रज़ि.)! एक दिन रसूल अकरम (ﷺ) ने अपने ख़ुत्बे में फ़र्माया कि "जिसे मैंने गुस्से से बुरा भला कह दिया हो या उस पर लअनत कर दी हो तो तू समझ ले कि मैं भी तुम जैसा एक इंसान ही हूँ तुम्हारी तरह मुझे भी गुस्सा आ जाता है। हाँ! अल्बत्ता मैं चूँकि रहमतुल लिल आलमीन हूँ, तो मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला मेरे उन अल्फ़ाज़ को भी उन लोगों के लिए मौजिबे रहमत बना दे।" (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िन्नही अपने सब्बे अस्हाबिर्रसूलिल्लाहि (ﷺ) व सनदुहू हसन; अहमद : 5/437) रही यह बात कि कुफ़्फ़ार के लिए आप (ﷺ) रहमत कैसे थे? उसका जवाब यह है कि इब्ने जरीर में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इसी आयत की तफ़्सीर में मरवी है कि मोमिनों के लिए तो आप (ﷺ) दुनिया और आख़िरत में रहमत थे और ग़ैर मोमिनों के लिए आप (ﷺ) दुनिया में रहमत थे कि वह ज़मीन में धंसाए जाने से, आसमान से पत्थर बरसाये जाने से बच गए, जैसे कि अगली उम्मतों के मुंकिरों पर यह अज़ाब आए। (तब्री : 18/552)

***

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ
آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَمْ بَعِيدٌ مَا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ
مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾
قَالَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

तर्जुमा : "कह दे कि मेरी तो सारी वही का ख़ुलासा सिर्फ़ इसी क़द्र है कि तुम सबका मअबूद एक ही है तो क्या तुम भी उसको तस्लीम करने वाले हो? (108) फिर अगर यह मुँह मोड़ लें तो कह दे कि मैंने तो तुम्हें यकसाँ तौर पर ख़बरदार कर दिया है मुझे मुत्लक़न इल्म नहीं कि जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर है। (109) अल्बत्ता अल्लाह तआला तो खुली और ज़ाहिर बात को जानता है और जो तुम छुपाते हो उसे भी जानता है। (110) मुझे इसका भी इल्म नहीं मुम्किन है यह तुम्हारी आज़माइश हो और एक मुक़र्ररा वक़्त तक का फ़ायदा हो। (111) नबी (ﷺ) ने कहा कि ऐ रब! इंसाफ़ के साथ फ़ैसला फ़र्मा, हमारा रब बड़ा मेहरबान है जिससे मदद तलब की जाती है उन बातों पर जो तुम बयान किया करते हो।" (112)

अल्लाह एक है (आयत 108 से 112) : अल्लाह तबारक व तआला अपने नबी को हुक्म देता है कि आप मुश्रिकों से फ़र्मा दें कि मेरी जानिब यही वही की जाती है कि सिर्फ़ अल्लाह तआला ही मअबूदे बरहक़ है तुम सब भी उसे तस्लीम कर लो और अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो हम तुम जुदा हैं, तुम हमारे दुश्मन हो, हम तुम्हारे।

जैसे और आयत में है कि अगर झुठलाएँ तो कह दे कि मेरे लिए मेरा अ़मल है और तुम्हारे लिए तुम्हारा अ़मल है, तुम मेरे आ़माल से बरी हो और मैं तुम्हारे आ़माल से बेज़ार हूँ। (10/यूनुस : 41) और आयत में है (وَ اِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ) (8/अन्फ़ाल : 58) यानी अगर तुझे किसी क़ौम से ख़यानत व बदअ़हदी का अंदेशा हो तो अ़हद तोड़ देने की उन्हें फ़ौरन ख़बर दे दो।

इसी त़रह़ यहाँ भी है कि अगर तुम अ़लैह़िदगी इख़्तियार कर लो तो हमारे तुम्हारे तअ़ल्लुक़ात टूट गए हैं, यक़ीन मानो कि जो वादा तुमसे किया जाता है वह पूरा होने वाला तो ज़रूर है, अब ख़्वाह अभी हो, ख़्वाह देर से हो, उसका ख़ुद मुझे भी इल्म नहीं। ज़ाहिर व बात़िन का जानने वाला अल्लाह ही है जो तुम ज़ाहिर करो और जो छुपाओ, उसे सबका इल्म है, बन्दों का कुल इल्म आमाल ज़ाहिरी और पोशीदा उस पर आशकारा हैं, छोटा बड़ा खुला छुपा सब वह जानता है। मुम्किन है कि उसकी ताख़ीर भी तुम्हारी आज़माइश हो और तुम्हें तुम्हारी ज़िन्दगानी तक नफ़ा देना हो। अम्बिया (عليهم السلام) को जो दुआ़ सिखाई हुई थी कि ऐ अल्लाह! हममें और हमारी क़ौम में तू सच्चा फ़ैसला कर और तू ही बेहतर फ़ैसला करने वाला है। हुज़ूर (ﷺ) को भी इसी क़िस्म की दुआ़ का हुक्म हुआ, जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) किसी भी ग़ज़्वे में जाते तो दुआ़ करते कि ''मेरे रब! तू सच्चा फ़ैसला फ़र्मा, हम अपने मेहरबान रब से ही मदद त़लब करते हैं कि वह तुम्हारे झूठ इफ़्तिराओं को हमसे टाल दे, उसमें हमारा मददगार वही है।'' (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।)

अल्ह़म्दु लिल्लाह! अल्लाह के फ़ज़्लो-करम से सूरह अम्बिया मुकम्मल हुई।

***

सूरह हज्ज

سورة الحج

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह हज्ज - 22

आयातः 78 मदनी सूरह, पैराग्राफः 6

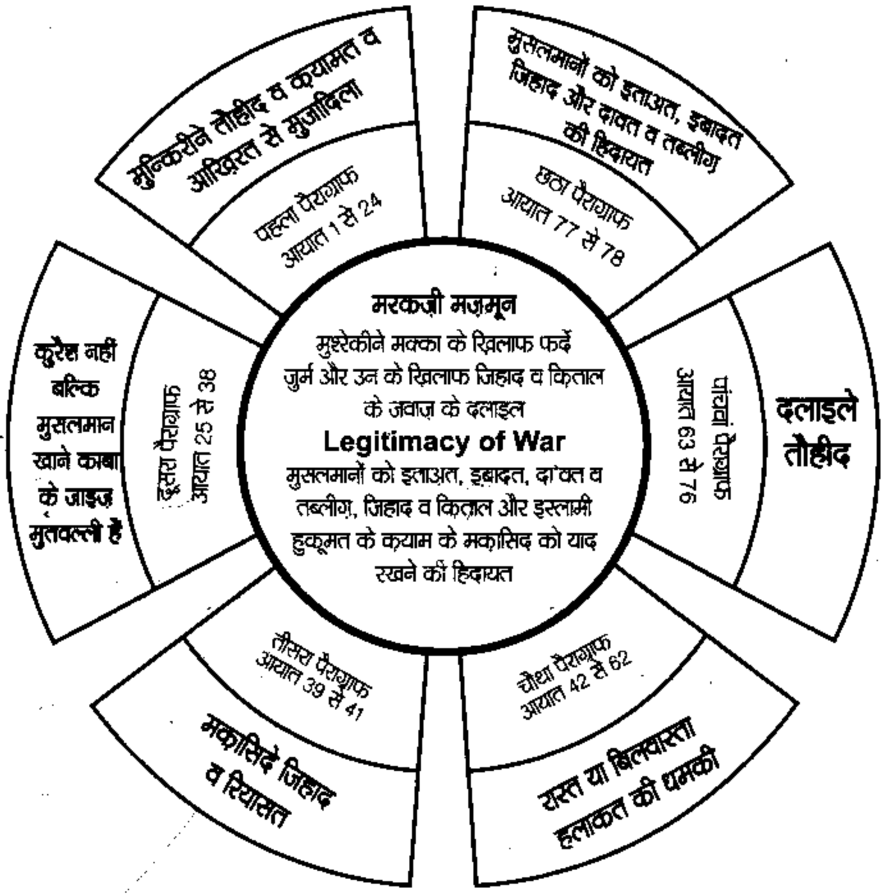

سورة الحج

तफ़्सीर सूरह हज्ज

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوۡا رَبَّكُمۡ‌ ۚ اِنَّ زَلۡزَلَةَ السَّاعَةِ شَىۡءٌ عَظِيۡمٌ ① يَوۡمَ تَرَوۡنَهَا تَذۡهَلُ كُلُّ مُرۡضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرۡضَعَتۡ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمۡلٍ حَمۡلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمۡ بِسُكٰرٰى وَلٰـكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيۡدٌ ②

तर्जुमा : ''लोगों अपने रब से डरते रहा करो, क़ियामत का ज़लज़ला बहुत ही बड़ी चीज़ है। (1) जिस दिन तुम उसे देख लोगे हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और तमाम ह़मल वालियों के ह़मल गिर जाएँगे और तू देखेगा कि लोग मतवाले दिखाई देंगे, हालाँकि दरहक़ीक़त वह मतवाले न होंगे लेकिन अल्लाह का अ़ज़ाब बड़ा ही सख़्त है।'' (2)

क़ियामत की होलनाकियाँ (आयत 1, 2) : अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को तक़्वे का हुक्म फ़र्माता है और आने वाले दहशतनाक उमूर से डरा रहा है, ख़ुसूसन क़ियामत के ज़लज़ले से। इससे मुराद या तो वह ज़लज़ला है जो क़ियामत के क़ायम होते हुए उठेगा जैसे फ़र्मान है (اِذَا زُلۡزِلَتِ الۡاَرۡضُ زِلۡزَالَهَا ۙ) (99/ज़िल्ज़ाल : 1) ज़मीन ख़ूब अच्छी तरह झिंझोड़ दी जाएगी। और फ़र्माया (وَّ حُمِلَتِ الۡاَرۡضُ وَ الۡجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۙ) (69/हाक़्क़ा : 14) यानी ज़मीन और पहाड़ उठाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाएँगे और फ़र्मान है (اِذَا رُجَّتِ الۡاَرۡضُ رَجًّا ۙ) (56/वाक़िया : 4) यानी जबकि ज़मीन बड़े ज़ोर से हिलने लगेगी और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे। सूर की ह़दीस में है कि ''अल्लाह तआ़ला जब आसमान व ज़मीन की पैदाइश कर चुका तो सूर को पैदा किया उसे ह़ज़रत इस्राफ़ील (عليه السلام) को दिया, वह उसे मुँह में लिए हुए आँखें ऊपर को उठाए हुए अ़र्श की जानिब देख रहे हैं कि कब हुक्मे रब्बानी हो और वह सूर फूँक दें।'' अबू हुरैरा (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! सूर क्या चीज़ है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''एक फूँकने की चीज़ है बहुत

बड़ी जिसमें तीन मर्तबा फूँका जाएगा, पहला नफ़्ख़ा घबराहट का होगा, दूसरा बेहोशी का, तीसरा अल्लाह के सामने खड़ा होने का। हज़रत इस्राफ़ील (ﷺ) को हुक्म होगा वह फूकेंगे जिससे कुल ज़मीन व आसमान वाले घबरा उठेंगे सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे बग़ैर रुके बग़ैर सांस लिए बहुत देर तक बराबर उसे फूँकते रहेंगे।'' इसी पहले सूर का ज़िक्र आयत (38/साद : 51) में है उससे पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे ज़मीन कपकपाने लगेगी। जैसे फ़र्मान है (وَ اَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ) (79/नाज़िआत : 6) जबकि ज़मीन लरज़ने लगेगी और एक के बाद एक ज़बरदस्त झटके लगेंगे, दिल धड़कने लगेंगे। ज़मीन की वह हालत हो जाएगी जो कश्ती की तूफ़ान में और गरदाब (भंवर) में होती है या जैसे क़िंदील अर्श में लटक रही हो जिसे हवाएँ चारों तरफ़ झुला रही हों। आह! यही वक़्त होगा कि दूध पिलाने वालियाँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएँगी और हामिला औरतों के हमल गिर जाएँगे और बच्चे बूढ़े हो जाएँगे। शयातीन भागने लगेंगे, ज़मीन के किनारों तक पहुँच जाएँगे लेकिन वहाँ से फ़रिश्तों की मार खाकर लौट आएँगे, लोग इधर उधर हैरान परेशान भागने दौड़ने लगेंगे। एक दूसरे को आवाज़ें देने लगेंगे। इसीलिए उस दिन का नाम कुरआन ने यौमुत्तनाद रखा। उसी वक़्त ज़मीन एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तक फट जाएगी, उस वक़्त की घबराहट का अंदाज़ा नहीं हो सकता, अब आसमान में इंक़िलाबात ज़ाहिर होंगे, सूरज चाँद बेनूर हो जाएँगे, सितारे झड़ने लगेंगे और खाल उधड़ने लगेगी, ज़िन्दा लोग यह सब कुछ देख रहे होंगे, हाँ! मुर्दा लोग इससे बेख़बर होंगे। आयते कुरआन (فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ) (27/नम्ल : 87) में जिन लोगों को इससे अलग किया गया है कि वह बेहोश न होंगे।

इससे मुराद शहीद लोग हैं, यह घबराहट ज़िन्दों पर होगी, शुहदा अल्लाह के यहाँ ज़िन्दा हैं और रोज़ियाँ पाते हैं, अल्लाह तआला उन्हें उस दिन के शर्र से नजात देगा, और उन्हें पुरअम्न रखेगा, अल्लाह का अज़ाब सिर्फ़ बदतरीन मख़्लूक़ को होगा। उसी को अल्लाह तआला इस सूरत की शुरू की आयतों में बयान फ़र्माता है। (इब्ने अबी हातिम : 12/163; तब्री : 18/559) यह हदीस तब्रानी, इब्ने जरीर, इब्ने अबी हातिम वग़ैरह में है और बहुत लम्बी है, इस हिस्से को वारिद करने से यहाँ मक़्सद यह है कि इस आयत में जिस ज़लज़ले का ज़िक्र है, यह क़ियामत से पहले क़ायम होगा और क़ियामत की तरफ़ उसकी इज़ाफ़त बवजह कुर्ब और नज़दीकी के है। जैसे कहा जाता है अशरातुस्साआ वग़ैरह वल्लाहु आलम! या इससे मुराद ज़लज़ला है जो क़ियामत के बाद मैदाने महशर में होगा, जबकि लोग क़ब्रों से निकलकर मैदान में जमा होंगे। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसे पसंद करते हैं, इसकी दलील में बहुत सी हदीसें हैं।

मैदाने महशर : हुज़ूर (ﷺ) एक सफ़र में थे, आपके अस्हाब तेज़ तेज़ चल रहे थे जो आप (ﷺ) ने बाआवाज़े बुलंद इन दोनों आयतों की तिलावत की, सहाबा (रज़ि.) के कान में आवाज़ पड़ते ही वह सब अपनी सवारियाँ लेकर आप (ﷺ) के पास जमा हो गए कि शायद आप (ﷺ) कुछ और फ़र्माएँगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''जानते हो यह कौनसा दिन होगा? यह वह दिन होगा जिस दिन अल्लाह तआला हज़रत आदम (ﷺ) को कहेगा कि ऐ आदम! जहन्नम का हिस्सा निकाल। वह कहेंगे, ऐ अल्लाह! कितनों में से कितने? फ़र्माएगा हर हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे (999) जहन्नम के लिए और एक जन्नत के लिए।'' यह

सुनते ही सहाबा के दिल दहल गए, चुप्पी लग गई। आप (ﷺ) ने यह हालत देखकर फ़र्माया कि "ग़म न करो, ख़ुश हो जाओ, अमल करते रहो। उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है तुम्हारे साथ मख़लूक़ की वह तादाद है कि जिसके साथ हो उसे बढ़ा दे यानी याजूज माजूज। बनी आदम में से जो हलाक हो गए और इब्लीस की औलाद।" अब सहाबा (रज़ि.) की घबराहट कम हुई तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अमल करते रहो और ख़ुशख़बरी सुनो, उसकी क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है कि यह आयत हालते सफ़र में उतरी, उसमें है कि सहाबा हुज़ूर (ﷺ) का वह फ़र्मान सुनकर रोने लगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, क़रीब क़रीब रहो और ठीक ठाक रहो, हर नबुव्वत के पहले जाहिलियत का ज़माना रहा है वही उस गिनती को पूरी कर देगा वरना मुनाफ़िक़ों से वह गिनती पूरी होगी।" उसमें है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मुझे उम्मीद है कि अहले जन्नत की चौथाई सिर्फ़ तुम ही होगे।" यह सुनकर सहाबा (रज़ि.) ने अल्लाहु अकबर कहा। इर्शाद हुआ कि "क्या अजब तुम तिहाई हो।" उस पर उन्होंने फिर तक्बीर कही। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मुझे उम्मीद है कि तुम ही आधो आध होगे।" उन्होंने फिर तक्बीर कही।" रावी कहते हैं मुझे याद नहीं कि फिर आप (ﷺ) ने दो तिहाइयाँ भी फ़र्माईं या नहीं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल हज्ज : 3168; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने जिदआन रावी ज़ईफ़ है। अहमद : 4/432; मुस्नदे हुमैदी : 831)

और रिवायत में है कि ग़ज़्वा तबूक से वापसी में मदीने के क़रीब पहुँचकर आप (ﷺ) ने तिलावते आयत शुरू की। (यह रिवायत मुर्सल है।) एक और रिवायत में है कि "जो हलाक हुए जिन्नों और इंसानों में।" (मुस्नदे अबू यअ़ला : 3122; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस रावी हैं। हाकिम : 1/29; इब्ने हिब्बान : 7354) और रिवायत में है कि "तुम तो एक हज़ार हिस्सों में से एक हिस्सा ही हो।" (व सनदुहू ज़ईफ़ुन इबाद बिन मंसूर ज़ईफ़ रावी है।)

सहीह बुख़ारी में इस आयत की तफ़्सीर में है कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला आदम (عليه السلام) को पुकारेगा। वह जवाब देंगे (लब्बैक रब्बना व सअ़दैक) फिर आवाज़ आएगी कि अल्लाह तआला तुझे हुक्म देता है कि अपनी औलाद में से जहन्नम का हिस्सा निकाल। पूछेंगे कि ऐ अल्लाह! कितना? हुक्म होगा, हर हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे। उस वक़्त हामिला के हमल गिर जाएँगे, बच्चे बूढ़े हो जाएँगे, लोग हवास बाख़्ता हो जाएँगे, किसी नशे से नहीं बल्कि अल्लाह के अ़ज़ाबों की सख़्ती की वजह से। यह सुनकर सहाबा (रज़ि.) के चेहरे मुतग़य्यर हो गए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया "याजूज माजूज में से नौ सौ निन्नान्वे और तुममें से एक, तुम तो ऐसे हो जैसे सफ़ेद रंग बैल के स्याह बाल जो उसके पहलू में हों, या मिस्ल चंद सफ़ेद बालों के जो चंद स्याह रंग बाल बैल के पहलू में हों।" फिर फ़र्माया, "मुझे उम्मीद है कि तमाम अहले जन्नत की गिनती में तुम्हारी गिनती चौथे हिस्से की होगी।" हमने उस पर तक्बीर कही। फिर फ़र्माया, आधी तादाद में सब और आधी तादाद सिर्फ़ तुम्हारी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हज्ज बाब क़ौलुहू (व तरन्नासा सुकारा) : 4741; सहीह मुस्लिम : 222; अहमद : 3/32) और रिवायत में है कि सहाबा ने कहा, हुज़ूर (ﷺ) फिर वह एक ख़ुशनसीब हममें से कोन होगा जबकि हालत यह है? (अहमद : 1/388; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्राहीम बिन मुस्लिम जोहरी ज़ईफ़ रावी है। मुस्नदे अबी यअ़ला : 5124) और रिवायत में है कि "तुम अल्लाह के

सामने नंगे पैर, नंगे बदन, बेख़त्ना जमा किये जाओगे।'' हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! मर्द औरतें सब एक साथ? एक दूसरे पर नज़र पड़ेगी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''आइशा! वह वक़्त निहायत सख़्त और ख़तरनाक होगा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्हश्र : 6527; सहीह मुस्लिम : 2859)

मुस्नदे अहमद में है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या दोस्त अपने दोस्त को क़ियामत के दिन याद रखेगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''आइशा! तीन मौक़ों पर कोई किसी को याद न रखेगा, आमाल की तोल के वक़्त, जब तक कमी ज़्यादती न मालूम हो जाए, आमालनामों के उड़ाये जाने के वक़्त, जब तक कि दाएँ बाएँ हाथ में न आ जाएँ, उस वक़्त जबकि जहन्नम में से एक गर्दन निकलेगी जो घेर लेगी और सख़्त ग़ज़बनाक होगी और कहेगी कि मैं तीन क़िस्म के लोगों पर मुसल्लत़ हूँ एक तो वह लोग जो अल्लाह तआला के सिवा दूसरों की इबादत करते थे, दूसरे वह जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखते थे और हर सरकश ज़िद्दी मुतकब्बिर पर फिर तो वह उन्हे समेट लेगी और चुन चुनकर अपने पेट में पहुँचा देगी। जहन्नम पर पुलसिरात़ होगी जो बाल से बारीक और तलवार से तेज़ होगी, उस पर आँकस और कांटे होंगे जिसे अल्लाह चाहे वह पकड़ लेगी, उस पर से गुज़रने वाले मिस्ल बिजली के होंगे और मिस्ल आँख झपकने के और मिस्ल हवा के और मिस्ल तेज़ रफ़्तार घोड़ों और ऊँटों के। फ़रिश्ते चारों तरफ़ खड़े दुआएँ करते होंगे कि अल्लाह सलामती दे, अल्लाह बचा दे पस कुछ तो बिलकुल सही सालिम गुज़र जाएँगे कुछ चोट खाकर बच जाएँगे कुछ ओंधे मुँह जहन्नम में गिर जाएँगे।'' (अहमद : 6/110; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/359) क़ियामत के आसार में और उसकी होलनाकियों में और भी बहुत सी हदीसें हैं जिनकी जगह और है। यहाँ फ़र्माया क़ियामत का ज़लज़ला निहायत ख़तरनाक है बहुत सख़्त है निहायत मुहलिक है, दिल दहलाने वाला और कलेजा उड़ाने वाला है। ज़लज़ला रौब व घबराहट के वक़्त दिल के हिलने को कहते हैं। जैसे आयत में है कि उस मैदाने जंग में मोमिनों को मुब्तला किया गया और सख़्त झिंझोड़ दिये गए। (33/अहज़ाब : 11) जब तुम उसे देखोगे यह ज़मीर शान की क़िस्म से है इसीलिए उसके बाद इसकी तफ़्सीर यह है कि उस सख़्ती की वजह से दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हामिला के हमल गिर जाएँगे लोग बदहवास हो जाएँगे। ऐसे मालूम होगा कि जैसे कोई नशे में बदमस्त हो रहा हो, दरअसल वह नशे में न होंगे बल्कि अज़ाबों की सख़्ती ने उन्हें बेहोश कर रखा होगा।

***

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝ كُتِبَ عَلَيْهِ

اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ
رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ
مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۗ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَاۤءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ
نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ
الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَاۤءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ
يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ
يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝٧

तर्जुमा : ''कुछ लोग अल्लाह के बारे में बातें बनाते हैं और वह भी बेइल्मी के साथ सरकश शैतान की मातहती में। (3) जिस पर क़ज़ाए इलाही लिख दी गई है कि जो कोई उसकी रफ़ाक़त करे वह उसे गुमराह कर देगा और उसे आग के अज़ाब की तरफ़ ले चलेगा। (4) लोगों! अगर तुम्हें मरने के बाद जी उठने में शक है तो सोचो तो कि हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर नुत्फ़े से फिर ख़ून बस्ता से फिर गोश्त के लोथड़े से जो सूरत दिया गया था और बेनक़्शा था यह हम तुम पर ज़ाहिर कर देते हैं और हम जिसे चाहें एक ठहराये हुए वक़्त तक रहमे मादर में रखते हैं फिर तुम्हें बचपन की हालत में दुनिया में लाते हैं फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी को पहुँचो तुममें से कुछ तो वह हैं जो फ़ौत कर लिए जाते हैं और कुछ नाकारा उम्र की तरफ़ फिर से लौटा दिये जाते हैं कि वह एक चीज़ से बाख़बर होने के बाद फिर बेख़बर हो जाए, तू देखता है कि ज़मीन बंजर और ख़ुश्क है फिर जबकि हम उस पर बारिश बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूलती है और हर क़िस्म की रौनक़ और नबातात उगाती है। (5) यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वह हर हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है। (6) और यह कि क़ियामत क़त्अन आने वाली है जिसमें कोई शक और शुब्हा नहीं और यक़ीनन अल्लाह तआला क़ब्रों वालों को दोबारा ज़िन्दा करेगा।'' (7)

अल्लाह तआला के बारे में बोहतानबाज़ी (आयत 3 से 7) : जो लोग मौत के बाद की ज़िन्दगी के इंकारी हैं और अल्लाह को उस पर क़ादिर ही नहीं मानते और फ़र्माने इलाही से हटकर नबियों की ताबेदारी को

छोड़कर सरकश इंसानों और जिन्नों की मातहती करते हैं, उनकी जनाब बारी तर्दीद कर रहा है। आप देखेंगे कि जितने बिदअ़ती और गुमराह लोग हैं वह हक़ से मुँह फेर लेते हैं, बातिल की इत्ताअत में लग जाते हैं, अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत को छोड़ देते हैं और गुमराह सरदारों की मानने लगते हैं उनकी राय और ख़्वाहिश पर अमल करने लगते हैं इसलिए फ़र्माया कि उनके पास कोई सही इल्म नहीं होता यह जिसकी मानते हैं वह अज़्ली मर्दूद हैं, अपनी तक़्लीद करने वालों को वह बहकाता रहता है और आख़िरकार उन्हें अज़ाबों में फंसा देता है जो जहन्नम के जलाने वाले आग के हैं। यह आयत नज़्र बिन हारिस के बारे में उतरी है। (तब्री : 18/566) उस ख़बीस ने कहा था कि ज़रा बतलाओ तो अल्लाह तआ़ला सोने का है या चाँदी का या तांबे का। उसके इस सवाल से आसमान लरज़ा गया और उसकी खोपड़ी उड़ गयी। एक रिवायत में है कि एक यहूदी ने ऐसा ही सवाल किया था उसी वक़्त आसमानी कड़ाके ने उसे हलाक कर दिया। (सनदुहू ज़ईफ़ुन; लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ रावी है)

इंसानी पैदाइश के मुख़्तलिफ़ अदवार : मुख़ालिफ़ीन और मुंकिरीने क़ियामत के सामने दलील बयान की जाती है कि अगर तुम्हें दूसरी बार की ज़िन्दगी से इंकार है तो हम इसकी दलील में तुम्हारी पहली बार की पैदाइश तुम्हें याद दिलाते हैं। तुम अपनी असलियत पर ग़ौर करके देखो कि हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है यानी तुम्हारे बाप आदम (अ.) को जिनकी नस्ल तुम सब हो फिर तुम सबको ज़लील पानी के क़तरों से पैदा किया है जिसने पहले ख़ून बस्ता की शक्ल इख़्तियार की फिर गोश्त का एक लोथड़ा बना। चालीस दिन तक तो नुत्फ़ा अपनी शक्ल में बढ़ता है फिर बहुक्मे रब्बानी उसमें ख़ून की सुर्ख़ फटकी पड़ती है फिर चालीस दिन के बाद वह एक गोश्त का टुकड़ा बन जाता है जिसमें कोई सूरत व शबीह नहीं होती फिर अल्लाह तआ़ला उसे सूरत इनायत करता है सर हाथ सीना पेट रानें पैर और कुल हिस्से बनते हैं कभी उससे पहले ही हमल साक़ित हो जाता है कभी उसके बाद बच्चा गिर पड़ता है यह तुम्हारे मुशाहिदे की बात है और कभी ठहर जाता है। जब उस लोथड़े पर चालीस दिन गुज़र जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्ते को भेजता है जो उसे ठीक ठाक और दुरुस्त करके उसमें रूह फूँक देता है और जैसे अल्लाह की चाहत हो ख़ूबसूरत बदसूरत मर्द औरत बना दिया जाता है। रिज़्क़ मौत नेकी बदी उसी वक़्त लिख दी जाती है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''तुममें से हर एक की पैदाइश उसकी माँ के पेट में चालीस रात तक जमा होती है। फिर चालीस दिन तक ख़ून बस्ता की सूरत रहती है फिर चालीस दिन तक गोश्त के लोथड़े की फिर फ़रिश्ते को चार चीजें लिख देने का हुक्म होता है रिज़्क़, अमल, अजल और शक़ी या सईद होना लिख लिया जाता है फिर उसमें रूह फूँकी जाती है।'' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइका, सलवातुल्लाहि अलैहिम : 3208; सहीह मुस्लिम : 2643; अबूदाउद : 4708; तिर्मिज़ी : 2137; इब्ने माजा : 76; अहमद : 1/382; इब्ने हिब्बान : 6174)

पैदा होने से पहले तक़्दीर का लिखा जाना : अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं नुत्फ़े के रहम में ठहरते ही फ़रिश्ता पूछता है कि ऐ अल्लाह! यह मख़्लूक़ होगा या नहीं? अगर इंकार हुआ तो वह जमता ही नहीं, ख़ून की शक्ल में रहम उसे ख़ारिज कर देता है और अगर हुक्म मिला कि इसकी पैदाइश की जाएगी, तो फ़रिश्ता पूछता है कि लड़का होगा या लड़की? नेक होगा या बुरा? अजल क्या है? असर क्या है? कहाँ मरेगा? फिर नुत्फ़े से

पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है? वह कहता है अल्लाह। पूछा जाता है राज़िक़ कौन है? कहता है अल्लाह, फिर फ़रिश्ते से कहा जाता है तू जा और अस़ल किताब में देख ले, वहीं इसका सारा ह़ाल मिल जाएगा। फिर वह पैदा किया जाता है लिखी हुई ज़िन्दगी पाता है, मुक़द्दर रिज़्क़ पाता है, मुक़र्ररा जगह चलता फिरता है फिर मौत आती है और दफ़न कर दिया जाता है जहाँ दफ़न होना मुक़द्दर है। फिर ह़ज़रत आ़मिर (रह़.) ने यही आयत तिलावत की। मुज़्ग़ा होने के बाद चौथी पैदाइश की त़रफ़ लौटा दिया जाता है ज़ी रूह़ बनता है।

ह़ज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद (रज़ि.) की मरफ़ूअ़ ह़दीस में है कि चालीस पैंतालीस दिन जब नुत़्फ़े पर गुज़र जाते हैं तो फ़रिश्ता पूछता है कि यह दोज़ख़ी है या जन्नती जो जवाब दिया जाता है लिख लेता है। फिर पूछता है लड़का होगा या लड़की? जो जवाब दिया जाता है लिख लेता है। फिर अ़मल, असर, रिज़्क़, और अजल लिखी जाती है और स़ह़ीफ़ा लपेट लिया जाता है जिसमें न कमी मुम्किन है न ज़्यादती। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब कैफ़ियतु ख़ल्क़ आदमा फ़ी बत़्नि उम्मिही... : 2644; अह़मद : 4/6; मुश्किलुल आसार : 2663; सुन्नतु लि इब्ने अबी आ़स़िम : 179; इब्ने ह़िब्बान : 6177) फिर बच्चा होकर दुनिया में पैदा होता है न अ़क़्ल है न समझ है कमज़ोर है और तमाम ह़िस़्से ज़ईफ़ हैं। फिर अल्लाह तआ़ला बढ़ाता रहता है माँ बाप को मेहरबान कर देता है दिन रात उन्हें उसकी फ़िक्र रहती है तक्लीफ़ें उठाकर पालते हैं और अल्लाह तआ़ला उसको परवान चढ़ाता है यहाँ तक कि जवानी का ज़माना आता है, ख़ूबसूरत तनोमंद हो जाता है, कुछ तो जवानी में ही चल बसते हैं कुछ बूढ़े हो जाते हैं।

इंसान की ज़ईफ़ुल उ़म्री : कि फिर से अ़क़्लो ख़िरद खो बैठता है और बच्चों की त़रह़ कमज़ोर हो जाता है, ह़ाफ़िज़ा फ़हम सब में फ़ितूर पड़ जाता है इ़ल्म के बाद बेइ़ल्म हो जाता है। जैसे फ़र्मान है (اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ) (30/रूम : 54) अल्लाह ने तुम्हें कमज़ोरी में पैदा किया फिर ज़ोर दिया फिर उस क़ुव्वत व त़ाक़त के बाद ज़ुअ़फ़ और बुढ़ापा आया। जो कुछ वह चाहता है पैदा करता है वह पूरे इ़ल्म वाला और कामिल क़ुदरत वाला है।

मुस्नदे ह़ाफ़िज़ अबू यअ़ला मूस़ली में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''बच्चा जब तक बुलूग़त को न पहुँचे उस की नेकियाँ उसके बाप के या माँ बाप के नामा-ए-आ़माल में लिखी जाती हैं और बुराई न उस पर होती है न उन पर। बुलूग़त पर पहुँचते ही क़लम उस पर चलने लगता है उसके साथ के फ़रिश्तों को उसकी ह़िफ़ाज़त के और उसे दुरुस्त रखने का हुक्म मिल जाता है। जब वह इस्लाम में ही चालीस साल की उ़म्र को पहुँचता है तो अल्लाह उसे तीन बलाओं से नजात दे देता है जुनून से, जुज़ाम से और बर्स़ से। जब उसे अल्लाह के दीन पर पचास साल गुज़रते हैं तो अल्लाह तआ़ला उसके ह़िसाब में तख़्फ़ीफ़ कर देता है जब वह साठ साल का होता है तो अल्लाह तआ़ला अपनी रज़ामंदी के कामों की त़रफ़ उसकी त़बीयत का पूरा मैलान कर देता है और उसे अपनी त़रफ़ राग़िब कर देता है। जब वह सत्तर बरस का हो जाता है तो आसमानी फ़रिश्ते उससे मुह़ब्बत करने लगते हैं और जब वह अस्सी बरस का हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी नेकियाँ तो लिखता है लेकिन बुराइयों से तजावुज़ कर लेता है जब वह नब्बे साल की उ़म्र को पहुँचता है तो अल्लाह तआ़ला उसके अगले पिछले गुनाह बख़्श देता है उसके घरवालों के लिए उसे सिफ़ारिशी और शफ़ीअ़ बना देता है वह

अल्लाह के यहाँ अमीनुल्लाह का ख़िताब पाता है और ज़मीन में अल्लाह के क़ैदियों की तरह रहता है।

जब बहुत बड़ी नाकारा उम्र को पहुँच जाता है जबकि इल्म के बाद बेइल्म हो जाता है तो जो कुछ वह अपनी सेहत और होश के ज़माने में नेकियाँ करता था सब उसके नामा-ए-आमाल में बराबर लिखी जाती हैं और अगर कोई बुराई उससे हो गई तो वह नहीं लिखी जाती।'' (मुस्नदे अबी यअ़ला : 3678; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत में ख़ालिद अज़्ज़य्यात और दाऊद और सुलेमान दोनों मज्हूल रावी हैं।) यह हदीस बहुत ग़रीब है और इसमें सख़्त नकारत है बावजूद इसके इसे इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) अपनी मुस्नद में लाए हैं। मौक़ूफ़न भी और मरफ़ूअ़न भी। हज़रत अनस (रज़ि.) से मौक़ूफ़न मरवी है और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) फिर हज़रत अनस (रज़ि.) से ही दूसरी सनद से मरफ़ूअ़न यही वारिद की है। (अहमद : 2/89; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत में फ़र्ज बिन फ़ुज़ाला है।) हाफ़िज़ अबूबक्र बिन बज़्ज़ार (रह.) ने भी इसे बरिवायत हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) हदीसे मरफ़ूअ़ में बयान किया है। (अहमद : 3/217, 218; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4246; अल्मौज़ूआत : 1/179) (और मुसलमानों पर रब की मेहरबानी का तक़ाज़ा भी यही है। अल्लाह हमारी उम्र में नेकी के साथ बरकत दे, आमीन।)

मरने के बाद ज़िन्दा होने की एक और दलील : मुर्दों को ज़िन्दा कर देने की एक दलील यह बयान करके फिर दूसरी दलील बयान करता है कि चटयल मैदान बेरूइदगी की ख़ुश्क और सख़्त ज़मीन को हम आसमानी पानी से लहलहातीऔर तरोताज़ा कर देते हैं, तरह तरह के फूल फल मेवे दाने वग़ैरह के दरख़्तों से सरसब्ज़ हो जाती है। क़िस्म क़िस्म के दरख़्त उग आते हैं और जहाँ कुछ न होता था वहाँ सब कुछ हो जाता है। मुर्दा ज़मीन एक दम ज़िन्दगी के कुशादा साँस लेने लगती है जिस जगह डर लगता था वहाँ अब राहते रूह और नूरे ऐन और सुरूरे दिल मौजूद हो जाता है, क़िस्म क़िस्म के तरह तरह के मीठे खट्टे ख़ुश ज़ायक़ा मज़ेदार रंग रूप वाले फल और मेवे से लदे हुए ख़ूबसूरत छोटे बड़े दरख़्त झूम झूमकर बहार का लुत्फ़ दिखाने लगते हैं यही वह मुर्दा ज़मीन है जो कल तक ख़ाक उड़ा रही थी आज दिल का सुरूर और आँखों का नूर बनकर अपनी ज़िन्दगी की जवानी का मज़ा दे रही है फूलों के छोटे छोटे पौधे दिमाग़ को तब्ल-ए-अत्तार बना देते हैं, दूर से नसीम के हल्के हल्के झोंके कितने ख़ुशगवार मालूम होते हैं, फ़सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिही। सच है ख़ालिक़ मुदब्बिर अपनी चाहत के मुताबिक़ करने वाला ख़ुद मुख़्तार हाकिमे हक़ीक़ी अल्लाह तआला ही है। वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है और उसकी निशानी मुर्दा ज़मीन का ज़िन्दा होना मख़्लूक़ की निगाहों के सामने है, वह हर इंक़िलाब पर हर क़ल्बे माहियत पर क़ादिर है जो चाहता है हो जाता है जिस काम का इरादा करता है कहता है हो जा फिर नामुम्किन है कि वह कहते ही न हो जाए। याद रखो क़ियामत क़तअन बिला शक व शुब्हा आने वाली ही है और क़ब्रों के मुर्दों को वह क़दीर अल्लाह ज़िन्दा करके उठाने वाला है। वह अदम से वुजूद में लाने पर क़ादिर था, है और हमेशा रहेगा। सूरह यासीन में भी कुछ लोगों के इस ऐतिराज़ का ज़िक्र करके उन्हें उनकी पहली पैदाइश याद दिलाकर क़ाइल किया गया है, साथ ही सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा करने की क़ल्बे माहियत को भी दलील में पेश किया गया। (36/यासीन : 78 से 80) और आयतें भी इस बारे में बहुत सी हैं।

हज़रत लुक़ीत बिन आमिर (रज़ि.) जो अबू रज़ीन अक़ीली की कुन्नियत से मशहूर है एक मर्तबा

रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछते हैं कि क्या हम लोग सबके सब क़ियामत के दिन अपने रब तबारक व तआला को देखेंगे? और उसकी मख़्लूक़ में उस देखने की मिसाल कोई है? आपने फ़र्माया, ''क्या तुम सबके सब चाँद को यक्साँ तौर पर नहीं देखते?'' हमने कहा, हाँ! फ़र्माया, ''फिर अल्लाह तो बड़ी अज़्मत वाला है।'' फिर पूछा, हुज़ूर (ﷺ)! मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करने की भी कोई मिसाल दुनिया में है? जवाब मिला कि ''क्या उन जंगलों से तुम नहीं गुज़रते जो ग़ैरआबाद वीराने पड़े हों, ख़ाक उड़ रही हो, ख़ुश्क मुर्दा हो रहे हों, फिर तुम देखते हो कि वही टुकड़ा सब्ज़े से और क़िस्म क़िस्म के दरख़्तों से हरा भरा ज़िन्दा नौपैद हो जाता है, बारौनक बन जाता है, इसी तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करता है और मख़्लूक़ में भी देखी हुई मिसाल उसका काफ़ी नमूना और सबूत है।'' (अहमद : 4/11; अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िर्रुअया : 4731; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 180; मुख़्तसर) हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) फ़र्माते हैं जो इस बात का यक़ीन रखे कि अल्लाह तआला हक़ है और क़ियामत क़तअन बेशुब्हा आने वाली है और अल्लाह तआला मुर्दों को क़ब्रों से दोबारा ज़िन्दा करेगा वह यक़ीनी जन्नती है।

***

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ⑧ ثَانِيَ عِطْفِهٖ

لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ⑨

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ⑩

तर्जुमा : ''कुछ लोग अल्लाह के बारे में बग़ैर इल्म के और बग़ैर हिदायत के और बग़ैर रोशन किताब के झगड़ते हैं। (8) अपना बाज़ू मोड़ने वाले बनकर इसलिए कि अल्लाह की राह से बहका दे उसे दुनिया में भी रुस्वाई होगी और क़ियामत के दिन भी हम उसे जहन्नम में जलने का अज़ाब चखाएँगे। (9) उन आमाल की वजह से जो तेरे हाथों ने आगे भेज रखे थे यक़ीन मानो कि अल्लाह तआला अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं।'' (10)

जाहिल मुक़ल्लिदों की हालत (आयत 8 से 10) : चूँकि ऊपर की आयतों में गुमराह जाहिल मुक़ल्लिदों का हाल बयान करता है यहाँ उनके मुर्शिदों और पीरों का हाल बयान कर रहा है कि वह बेअक़्ली और बेदलीली से सिर्फ़ राय क़यास और ख़्वाहिशे नफ़्सानी से अल्लाह के बारे में कलाम करते रहते हैं, हक़ से ऐराज़ करते हैं, तकब्बुर से गर्दन फेर लेते हैं, हक़ को क़बूल करने से बेपरवाही के साथ इंकार कर जाते हैं। जैसे फ़िरऔनियों ने हज़रत मूसा (عليه السلام) के खुले मोजिज़ों को देखकर भी बेपरवाही की और न माना। और आयत में है जब उनसे अल्लाह की वही की ताबेदारी को कहा जाता है और रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़र्मान की तरफ़ बुलाया जाता है तो तू देखेगा कि ऐ रसूल (ﷺ)! यह मुनाफ़िक़ तुझसे रुक जाया करते हैं। (4/निसाअ : 61)

सूरह मुनाफ़िक़ून में इर्शाद हुआ कि जब इनसे कहा जाता है कि आओ अपने लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) से तौबा कराओ तो वह अपने सर घुमाकर घमण्ड में आकर बेनियाज़ी से इंकार कर जाते हैं। (63/मुनाफ़िक़ून : 5)

हज़रत लुक़्मान (रह.) ने अपने साहबज़ादे को नसीहत करते हुए फ़र्माया (وَ لَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ) (31/लुक़्मान : 18) लोगों से अपने रुख़्सार न फुला दिया कर, यानी अपने आपको बड़ा समझकर उनसे तकब्बुर न कर। और आयत में है कि हमारी आयतें सुनकर यह तकब्बुर से चेहरा फेर लेते हैं। (31/लुक़्मान : 7) (लि युज़िल्ल) का लाम या तो लामे आ़क़िबत है या लामे तअ़लील है इसलिए कि बसाऔक़ात इसका मक़्सद दूसरों को गुमराह करना नहीं होता और मुम्किन है कि इससे मुराद दुश्मनी और इंकार ही हो और हो सकता है कि यह मतलब हो कि हमने इसे ऐसा बदख़ुल्क़ इसलिए बना दिया है कि यह गुमराहों का सरदार हो जाए। इसके लिए दुनिया में भी ज़िल्लत व ख़्वारी है जो बदला है उसके तकब्बुर का यह यहाँ तकब्बुर करके बड़ा बनना चाहता था हम इसे और छोटा कर देंगे यहाँ भी अपनी चाहत में नाकाम और बेमुराद रहेगा और आख़िरत के दिन भी नारे जहन्नम का लुक़्मा होगा। इसे बतौरे डांट डपट के कहा जाएगा कि यह तेरे आ़माल का नतीजा है अल्लाह की ज़ात ज़ुल्म से पाक है जैसे फ़र्मान है कि फ़रिश्तों से कहा जाएगा कि इसे पकड़ो और घसीटकर जहन्नम में ले जाओ और इसके सर पर आग जैसे पानी का धार बहाओ। ले अब अपनी इ़ज़्ज़त और बड़ाई का बदला लेता रह। यही है वह जिससे उम्रभर शक व शुब्हा में रहा। (44/दुख़ान : 47 से 50)

हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं मुझे यह रिवायत पहुँची कि एक दिन में वह सत्तर सत्तर मर्तबा आग में जलकर भरता हो जाएगा फिर ज़िन्दा किया जाएगा फिर जलाया जाएगा। (अऊज़ुबिल्लाह)

***

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ࣙاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ
فِتْنَةُ ࣙانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾ يَدْعُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ يَدْعُوْا لَمَنْ
ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۗ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾

तर्जुमा : ''कुछ लोग ऐसे भी हैं कि एक किनारे होकर अल्लाह की इबादत करते हैं अगर कोई नफ़ा मिल गया तो दिलचस्पी लेने लगते हैं और अगर कोई आफ़त आ गई तो उसी वक़्त चेहरा फेर लेते हैं उन्होंने दोनों जहान का नुक़्सान उठा लिया, वाक़ेई यह खुला नुक़्सान है। (11) अल्लाह के सिवा उन्हें पुकारा करते हैं जो न उन्हें नुक़्सान पहुँचा सकें न नफ़ा, यही तो दूर दराज़ की गुमराही है। (12) उसे पुकारते हैं जिसका नुक़्सान उसके नफ़ा से क़रीब है यक़ीनन बुरे

वाली हैं और बुरे साथी।'' (13)

मफ़ाद परस्त लोगों का ज़िक्र (आयत 11 से 13) : ह़र्फ़ के मअ़नी शक के। (त़ब्री : 18/571) एक त़रफ़ के हैं गोया वह दीन के एक किनारे खड़े हो जाते हैं फ़ायदा हुआ तो फूले नहीं समाते नुक़्सान देखा तो भाग खड़े हुए। स़ह़ीह़ बुख़ारी में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है ''हिज्रत करके मदीने पहुँचते थे अब अगर बाल बच्चे हुए जानवरों में बरकत हुई तो कहते हैं यह दीन बड़ा अच्छा है और अगर न हुए तो कहते हैं यह दीन निहायत बुरा है।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल ह़ज्ज बाब (वमिनन्नासि मय्यंअ़बुदुल्लाह अ़ला ह़र्फ़) : 4742)

इब्ने अबी ह़ातिम में आप ही से मरवी है कि अ़राब हुज़ूर (ﷺ) के पास आते इस्लाम क़बूल करते वापिस जाकर अपने यहाँ बारिश का पानी पाते, जानवरों में घरबार में बरकत देखते तो इत्मिनान से कहते, बड़ा अच्छा दीन है और अगर उसके ख़िलाफ़ देखते तो झट से बक देते कि इस दीन में सिवाए नुक़्स़ान के कुछ नहीं। इस पर यह आयत उतरी। बरिवायत औ़फ़ी ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मंक़ूल है कि ऐसे लोग भी थे जो मदीने पहुँचते यहाँ आकर उनके यहाँ लड़का, उनकी ऊँटनी को बच्चा होता उन्हें स़ेह़त होती तो ख़ुश हो जाते और उस दीन की तअ़रीफ़ें करने लगते और अगर कोई बला मुसीबत आ गई, मदीने की हवा मुवाफ़िक़ न आई, घर में लड़की पैदा हो गई, स़दक़े का माल मयस्सर न हुआ, तो शैत़ानी वस्वसे में आ जाते और स़ाफ़ कह देते कि इस दीन में तो मुश्किल ही मुश्किल है।'' (त़ब्री : 18/575)

अ़ब्दुर्रह़मान (रह़.) का बयान है कि यह ह़ालत मुनाफ़िक़ों की है दुनिया अगर मिल गई तो दीन से ख़ुश हैं जहाँ न मिली या कोई इम्तिह़ान आ गया फ़ौरन पल्ला झाड़ लिया करते हैं मुर्तद काफ़िर हो जाते हैं। (त़ब्री : 18/576) पूरे बदनस़ीब हैं दुनिया व आख़िरत बर्बाद कर लेते हैं इससे ज़्यादा और बर्बादी क्या होती। जिन ठाकुरों और बुतों और बुज़ुर्गों से यह मदद माँगते हैं जिनसे फ़रियाद करते हैं जिनके पास अपनी ह़ाजतें ले जाते हैं जिनसे रोज़ियाँ माँगते हैं वह तो स़िर्फ़ आ़जिज़ हैं नफ़ा नुक़्स़ान उनके हाथ है ही नहीं सबसे बड़ी गुमराही यही है। दुनिया में भी उनकी इ़बादत से नुक़्स़ान नफ़ा से बेशतर ही हो जाता है और आख़िरत में उनसे जो नुक़्स़ान पहुँचेगा उसका तो कहना ही क्या है। यह बुत तो उनके निहायत बुरे वली और निहायत बुरे साथी साबित होंगे। (त़ब्री : 18/579) या यह मत़लब कि ऐसा करने वाले ख़ुद बहुत ही बुरे और बड़े ही बुरे हैं। लेकिन पहली तफ़्सीर ज़्यादा अच्छी है, वल्लाहु आलम!

***

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ

اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ⑭ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ
بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ⑮ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ⑯

तर्जुमा : ''ईमान और नेक आमाल वालों को अल्लाह तआला लहरें लेती हुई, नहरों वाली जन्नतों में ले जाएगा। अल्लाह जो इरादा करे उसे करके रहता है। (14) जिसका यह ख़याल हो कि अल्लाह तआला अपने रसूल की मदद दोनों जहान में न करेगा वह ऊँचाई पर एक रस्सा बाँधकर अपने हलक़ में फंदा फांस ले फिर देख ले कि उसकी चालाकियों से वह बात हट जाती है जो उसे तड़पा रही है? (15) हमने इसी तरह इस क़ुरआन को वाज़ेह आयतों में उतारा है जिसे अल्लाह चाहे हिदायत नसीब करता है।'' (16)

(आयत 14 से 16) : बुरे लोगों का बयान करके भले लोगों का ज़िक्र हो रहा है जिनके दिलों में यक़ीन का नूर है और जिनके आमाल में सुन्नत का ज़ुहूर है, भलाइयों के ख़्वाहाँ बुराईयों से गुरेंजाँ है ये, बुलन्द महलात में आली दरजात होंगे क्योंकि ये राह याफ्ता उनके सिवा लोग हवासबाख़्ता हैं, अब जो चाहे करे जो चाहे रखे धरे, क़ुर्आन के अहकाम वाज़ेह है! यानी जो ये जान रहा है कि अल्लाह तआला अपने नबी की मदद दुनिया में करेगा न आख़िरत में वह यक़ीन माने कि उसका यह ख़्याल सिर्फ़ ख़्याल है आप (ﷺ) की मदद होकर ही रहेगी भले यह अपने गुस्से में मर ही जाए बल्कि इसे चाहिए कि अपने मकान की छत में रस्सी बाँधकर अपने गले में फंदा डालकर अपने आपको हलाक कर दे। (तब्री : 18/581; हाकिम : 2/386; मुख़्तसरन) नामुम्किन है कि वह चीज़ यानी अल्लाह की मदद उसके नबी के लिए न आए भले यह जल जलकर मर जाएँ मगर उनकी ख़्याल आराइयाँ ग़लत साबित होकर ही रहें गी। यह मतलब भी हो सकता है कि इसकी समझ के ख़िलाफ़ होकर ही रहेगा, अल्लाह की मदद आसमान से नाज़िल होगी, हाँ! अगर उसके बस में हो तो एक रस्सी लटकाकर आसमान पर चढ़ जाए और उस उतरती हुई मददे आसमानी को काट दे। लेकिन पहला मअनी ज़्यादा सही है और उसमें उनकी पूरी आजिज़ी और नामुरादी का सबूत है कि अल्लाह तआला अपने दीन को अपनी किताब को अपने रसूल (ﷺ) को तरक़्क़ी देगा ही चूँकि यह लोग उसे देख नहीं सकते, इसलिए इन्हें चाहिए कि यह मर जाएँ अपने आपको हलाक कर डालें जैसे फ़र्मान है (اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا) (40/ग़ाफ़िर : 51) हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की मदद करते ही हैं दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

यहाँ फ़र्माया कि यह फांसी पर लटककर देख ले कि शाने मुहम्मदी को किस तरह कम कर सकता है? अपने सीने की आग को किस तरह बुझा सकता है। इस क़ुरआन को हमने उतारा है जिसकी आयतें अल्फ़ाज़ और मअनी के लिहाज़ से बहुत ही वाज़ेह हैं, अल्लाह की तरफ़ से उसके बंदों पर यह हुज्जत है। हिदायत गुमराही अल्लाह के हाथ में है, उसकी हिक्मत वही जानता है कोई उससे पूछताछ नहीं कर सकता, वह सबका हाकिम है,

वह रहमतों वाला, अदल वाला, ग़ल्बे वाला, हिक्मत वाला, अज़्मत वाला और इल्म वाला है, कोई उस पर मुख़्तार नहीं जो चाहे करे सबसे हिसाब लेने वाला वही है और वह भी बहुत जल्द।

***

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ {السجدة}

तर्जुमा : ''ईमान वाले और यहूदी और साबी और ईसाई और मजूसी और मुश्रिकीन इन सबके बीच क़ियामत के दिन ख़ुद अल्लाह तआला फ़ैसले कर देगा। अल्लाह तआला हर चीज़ पर गवाह है। (17) क्या तू इन्हें देख रहा कि अल्लाह के सामने सज्दे में हैं सब आसमानों वाले और सब ज़मीनों वाले और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और जानवर और बहुत से इंसान भी। हाँ! बहुत से वह भी हैं जिन पर अ़ज़ाब का मक़ूला साबित हो चुका है जिसे रब ज़लील कर दे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं अल्लाह जो चाहता है करता है।'' (18)

(आयत 17, 18) : साइबीन का बयान इख़्तिलाफ़ के साथ सूरह बक़रह की तफ़्सीर में गुज़र चुका है। यहाँ फ़र्माता है कि इन मुख़्तलिफ़ मज़हब वालों का फ़ैसला क़ियामत के दिन साफ़ हो जाएगा, अल्लाह तआला ईमान वालों को जन्नत देगा और कुफ़्फ़ार को जहन्नम में डालेगा। सबके क़ौल अफ़आल ज़ाहिर बातिन अल्लाह पर अयाँ (खुले) हैं।

हर चीज़ अल्लाह को सज्दा कर रही है : मुस्तहिक़्क़े इबादत सिर्फ़ वही ला शरीके इलाह है उसकी अज़्मत के सामने हर चीज़ सर झुकाये हुए है ख़्वाह ख़ुशी से हो या बे ख़ुशी, हर चीज़ का सज्दा अपनी वज़्अ में है। चुनाँचे क़ुरआन ने साये का दाएँ बाएँ अल्लाह के सामने सर ब सुजूद होना भी आयत (أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ) (16/नहल : 48) में बयान किया है। आसमानों के फ़रिश्ते, ज़मीन के हैवान, इंसान, जिन्नात, परिन्द, चरिन्द, सब उसके सामने सर ब सुजूद हैं और उसकी तस्बीह और तहमीद बयान कर रहे हैं, सूरज चाँद सितारे भी उसके सामने सज्दे में गिरे हुए हैं। इन तीनों चीज़ों को अलग इसलिए बयान किया गया कि कुछ लोग उनकी पूजा करते हैं हालाँकि वह अल्लाह के सामने झुके हुए हैं, इसीलिए फ़र्माया, सूरज, चाँद को

सज्दे न करो, उसे सज्दे करो जो उनका ख़ालिक़ है। बुख़ारी व मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) से पूछा, "जानते हो यह सूरज कहाँ जाता है?" आपने जवाब दिया अल्लाह को इल्म है और उसके नबी को। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अर्श तले जाकर अल्लाह को सज्दा करता है फिर उससे इजाज़त मांगता है वक़्त आ रहा है कि उसे एक दिन कह दिया जाएगा कि जहाँ से आया है वहीं वापिस चला जा।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तुश्शम्स वल क़मर : 3199; सहीह मुस्लिम : 159; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11176; इब्ने हिब्बान : 6153) सुनन अबी दाऊद, नसाई इब्ने माजा, और मुस्नद अहमद में ग्रहण की हदीस में है कि "सूरज और चाँद अल्लाह की मख़लूक़ है वह किसी की मौत पैदाइश से ग्रहण में नहीं आते बल्कि अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ में से जिस किसी पर तजल्ली डालता है तो वह उसके सामने झुक जाता है।" (अहमद : 4/269; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1404; नसाई, किताबुल कुसूफ़, बाब नम्बर : 16; हदीस : 1486; इब्ने माजा : 1662; अबूदाऊद : 1193; मुख़्तसरन व सनदुहू ज़ईफ़ुन)

अबुल आलिया (रह.) फ़र्माते हैं सूरज चाँद और कुल सितारे गुरूब होकर सज्दे में जाते हैं और अल्लाह से इजाज़त मांगकर दाहिनी तरफ़ लौटकर फिर अपने मतलअ (उगने की जगह) में पहुँचते हैं पहाड़ों और दरख़्तों का सज्दा उनके साये का दायें बायें पड़ना है। एक शख़्स ने नबी (ﷺ) से अपना एक ख़्वाब बयान किया कि मैंने देखा कि गोया मैं एक दरख़्त के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ मैं जब सज्दे में गया तो वह दरख़्त भी सज्दे में गया और मैंने सुना कि वह अपने सज्दे में यह पढ़ रहा है (अल्लाहुम्मक्तुब ली बिहा इन्दका अज्रंव्वज़अ अन्नी बिहा विज़्रंव्वज्अल्हा ली इन्दका ज़ुख़्रंव्वतक़ब्बलहा मिन्नी कमा तक़ब्बल्तहा मिन अब्दिका दाऊद) यानी ऐ अल्लाह! इस सज्दे की वजह से मेरे लिए अपने पास अज्रो सवाब लिख और मेरे गुनाह माफ़ फ़र्मा और मेरे लिए इसे ज़ख़ीर-ए-आख़िरत कर और इसे क़बूल कर जैसे कि तूने अपने बंदे दाऊद (عليه السلام) का सज्दा क़बूल किया। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं कि फिर मैंने देखा कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सज्दे की आयत पढ़ी, सज्दा किया और यही दुआ आप (ﷺ) ने अपने उस सज्दे में पढ़ी जिसे मैं सुन रहा था। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मा यक़ूलु फ़ी सुजूदिल क़ुरआन : 3424; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 1053; इब्ने हिब्बान : 2768; इब्ने ख़ुज़ैमा : 562; हाकिम : 1/219; शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को हसन क़रार दिया है। देखिए (सहीह तिर्मिज़ी : 473))

तमाम हैवानात भी उसे सज्दा करते हैं चुनाँचे मुस्नद अहमद में हदीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "अपने जानवर की पीठ को अपना मिम्बर न बना लिया करो बहुत सी सवारियाँ अपने सवार से ज़्यादा अच्छी होती हैं। (अहमद : 3/441; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने लहीआ का इख़्तिलात से पहले यह रिवायत बयान करना साबित नहीं।) और ज़्यादा ज़िक्र करने वाली होती हैं और अक्सर इंसान भी अपनी ख़ुशी से अल्लाह की इबादत बजा लाते हैं और सज्दे करते हैं हाँ! वह भी हैं जो उससे महरूम हैं तकब्बुर करते हैं, सरकशी करते हैं। अल्लाह जिसे ज़लील करे उसे अज़ीज़ कौन कर सकता है? रब फ़ाइल ख़ुद मुख़्तार है।"

इब्ने अबी हातिम में है कि हज़रत अली (रज़ि.) से किसी ने कहा यहाँ एक शख़्स है जो अल्लाह के इरादों और उसकी मशिय्यत को नहीं मानता। आपने उसे फ़र्माया, ऐ शख़्स! बतला तेरी पैदाइश अल्लाह तआला

ने तेरी चाहत के मुताबिक़ की या अपनी? उसने कहा, अपनी चाहत के मुताबिक़। फ़र्माया यह भी बतला कि जब तू चाहता है मरीज़ हो जाता है या जब अल्लाह चाहता है। उसने कहा कि जब अल्लाह चाहता है। पूछा फिर तुझे शिफ़ा तेरी चाहत से होती है या अल्लाह के इरादे से? जवाब दिया अल्लाह के इरादे से। फ़र्माया, अच्छा! यह भी बता कि अब वह जहाँ चाहेगा तुझे ले जाएगा, या जहाँ तू चाहेगा? कहा, जहाँ वो चाहेगा। फ़र्माया, क्या बात रह गई? सुन अगर तू उसके ख़िलाफ़ जवाब देता तो मैं अल्लाह की क़सम! तेरा सर उड़ा देता।

मुस्लिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "जब इंसान सज्दे की आयत पढ़कर सज्दा करता है तो शैतान अलग हटकर रोने लगता है कि अफ़सोस! इब्ने आदम को सज्दे का हुक्म फ़र्माया और उसने सज्दा कर लिया जन्नती हो गया मैंने इंकार किया, जहन्नमी बन गया।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानु इत्लाक़ुन इस्मुल कुफ़्रि अला मन तरकस्सलात : 81; इब्ने माजा : 1056; अहमद : 2/443; इब्ने हिब्बान : 2759) हज़रत उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने एक मर्तबा हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! सूरह हज्ज को और तमाम सूरतों पर यह फ़ज़ीलत मिली कि इसमें दो आयतें सज्दे की हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! और जो इन दोनों पर सज्दा न करे, उसे चाहिए कि इसे पढ़े ही नहीं।" (अबूदाऊद, किताब सुजूदुल क़ुरआन, बाब तफ़रीड़ अब्वाबस्सुजूद, कम सज्दतन फ़िल क़ुरआन : 1402; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 578; अहमद : 4/151; हाकिम : 1/408)

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) फ़र्माते हैं यह हदीस क़वी नहीं लेकिन इमाम साहब का यह क़ौल क़ाबिले ग़ौर है क्योंकि इसके रावी इब्ने लहीआ (रह.) ने अपनी समाअत की इसमें तसरीह कर दी है और इन पर बड़ी जिरह तदलीस की है जो उससे उठ जाती है। अबूदाऊद में फ़र्माने रिसालत (ﷺ) है कि "सूरह हज्ज को क़ुरआन की और सूरतों पर यह फ़ज़ीलत दी गई है कि इसमें दो सज्दे हैं। (मरासीले लि अबी दाऊद : 78; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) इमाम अबूदाऊद (रह.) फ़र्माते हैं इस सनद से तो यह हदीस मुस्तनद नहीं लेकिन और सनद से यह मुस्नद भी बयान की गई है मगर सही नहीं। मरवी है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने हुदेबिया में इस सूरत की तिलावत की और दोबारा सज्दा किया और फ़र्माया, इसे इन दो सज्दों की फ़ज़ीलत दी गई है।" (अबूबक्र बिन अदी)

हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूरे क़ुरआन में पन्द्रह सज्दे पढ़ाए तीन सूरह मुफ़स्सल में दो सूरह हज्ज में। (अबू दाऊद, किताब सुजूदुल क़ुरआन, बाब तफ़रीड़ अब्वाबस्सुजूद, कम सजदतन फ़िल क़ुरआन : 1401; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हारिस बिन सईद रावी मज्हूलुल हाल है। इब्ने माजा : 1057; हाकिम : 1/223) पस यह रिवायतें इस बात को पूरी तरह मज़बूत कर देती हैं।

***

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۫ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۭ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۞ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۞ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۞ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۤ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۞

तर्जुमा : "यह दोनों अपने रब के बारे में इख़्तिलाफ़ करने वाले हैं पस काफ़िरों के लिए तो आग के कपड़े बेवन्त कर काटे जाएँगे और उनके सरों के ऊपर से सख़्त गर्म पानी का तरीड़ा बहाया जाएगा। (19) जिससे उनके पेट की सब चीज़ें और खालें गला दी जाएँगी। (20) और उनकी सज़ा के लिए लोहे के हथोड़े हैं। (21) यह जब भी वहाँ के ग़म से निकल भागने का इरादा करेंगे वहीं लौटा दिये जाएँगे जलने का अज़ाब चखते रहो।" (22)

मोमिन और काफ़िर का इख़्तिलाफ़ (आयत 19 से 22) : हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) क़सम खाकर फ़र्माते थे कि यह आयत हज़रत हम्ज़ा (रज़ि) और उनके मुक़ाबले में बद्र के दिन जो काफ़िर आए थे उत्बा और उसके दो साथियों के बारे में उतरी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हज्ज बाब क़ौलुहू (हाज़ानि ख़स्मानिख़्तसमू फ़ी रब्बिहिम) : 4743; सहीह मुस्लिम : 3033; इब्ने माजा : 2835) सहीह बुख़ारी में है हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) फ़र्माते हैं क़ियामत के दिन मैं सबसे पहले अल्लाह के सामने अपनी हुज्जत साबित करने के लिए घुटनों के बल बैठ जाऊँगा। हज़रत क़ैस (रह.) फ़र्माते हैं इन ही के बारे में यह आयत उतरी है बद्र के दिन यह लोग एक दूसरे के सामने आये थे अली और हम्ज़ा और उबेदा (रज़ि.) और शैबा, उत्बा और वलीद। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हज्ज : 4744; इब्ने अबी शैबा : 5/457) और क़ौल है कि मुराद मुसलमान और अहले किताब हैं। अहले किताब कहते थे हमारा नबी तुम्हारे नबी से और हमारी किताब तुम्हारी किताब से पहले है इसलिए हम अल्लाह से बनिस्बत तुम्हारे ज़्यादा क़रीब हैं और मुसलमान कहते थे कि हमारी किताब तुम्हारी किताब का फ़ैसला करती है और हमारे नबी खातिमुल अम्बिया हैं इसीलिए हम तुमसे औला हैं पस अल्लाह ने इस्लाम को ग़ालिब किया और यह आयत उतरी।

क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं मुराद इससे सच मानने वाले और झुठलाने वाले हैं। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं इस आयत में मोमिन व काफ़िर की मिसाल है जो क़ियामत में मुख़्तलिफ़ थे। इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं मुराद जन्नत व दोज़ख़ का क़ौल है। दोज़ख़ का सवाल था कि मुझे सज़ा की चीज़ बना और जन्नत की आरज़ू थी कि मुझे रहमत बना। मुजाहिद का क़ौल इन तमाम क़ौलों को शामिल है और बद्र का वाक़िया भी उसके ज़िम्न में आ सकता है। मोमिन अल्लाह के दीन का ग़ल्बा चाहते थे और कुफ़्फ़ार नूरे ईमान के बुझाने हक़ को पस्त करने और बातिल को उभारने की फ़िक्र में थे।

इब्ने जरीर (रह.) भी इसको मुख़्तार बतलाते हैं और यह है भी बहुत अच्छा, चुनाँचे इसके बाद ही है कि कुफ़्फ़ार के लिए आग के टुकड़े अलग अलग मुक़र्रर कर दिये जाएँगे यह तांबे की सूरत में होंगे जो बहुत ही

हरारत (गर्मी) पहुँचाता है। (तब्री : 18/890) फिर ऊपर से गर्म उबलते हुए पानी का तरीड़ा डाला जाएगा जिससे आंतें और चर्बी गल जाएगी और खाल भी झुलसकर झड़ जाएगी। तिर्मिज़ी में है कि ''उस गर्म आग जैसे पानी से उनकी आंतें वग़ैरह पेट से निकलकर पैरों पर गिर पड़ेगी फिर जैसे थे वैसे हो जाएँगे फिर यही होता रहेगा।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शराबे अहलिन्नार : 2582; व सनदुहू हसन; हाकिम : 2/387; हिल्यतुल औलिया : 8/182; शरहुस्सुन्ना : 4406) अब्दुल्लाह बिन सिर्री (रह.) फ़र्माते हैं फ़रिश्ता उस ढोलचे को उसके कड़ों से थामकर लाएगा, उसके मुँह में डालना चाहेगा यह घबराकर मुँह फेर लेगा तो फ़रिश्ता उसके माथे पर लोहे का हथोड़ा मारेगा जिससे उसका सर फट जाएगा, वहीं से उस गर्म आग पानी को डालेगा जो सीधा पेट में पहुँचेगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''उन हथोड़ों में से जिनसे दोज़ख़ियों की कटाई होगी अगर एक ज़मीन पर लाकर रख दिया जाए तो तमाम इंसान और जिन्नात मिलकर भी उसे उठा नहीं सकते।'' (अहमद : 3/29; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है। मुस्नदे अबी यअ़ला : 1388; हाकिम : 4/600) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अगर वह किसी बड़े पहाड़ पर मार दिया जाए तो वह चूरा चूरा हो जाए, जहन्नमी उससे टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे फिर जैसे थे वैसे ही कर दिये जाएँगे। अगर ग़स्साक़ का जो जहन्नम वालों की ग़िज़ा है एक ढोल दुनिया में बहा दिया जाए तो तमाम अहले दुनिया बदबू के मारे हलाक हो जाएँ।'' (अहमद : 3/83; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; देखिए हदीसे साबिक़ मुस्नदे अबी यअ़ला : 1377) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं उसके लगते ही बदन का एक एक हिस्सा झड़ जाएगा और हाय वाय का गुल मच जाएगा। (तब्री : 18/593) जब कभी वहाँ से निकल जाना चाहेंगे वहीं लौटा दिये जाएँगे।

हज़रत सलमान (रज़ि.) फ़र्माते हैं जहन्नम की आग सख़्त काली बहुत अंधेरे वाली है उसके शोले भी रोशन नहीं, न उसके अंगारे रोशन वाले हैं। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। (हाकिम : 2/387) हज़रत ज़ैद (रज़ि.) का क़ौल है जहन्नम उसमें साँस भी न ले सकेंगे। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ (रह.) फ़र्माते हैं वल्लाह! उन्हें छूटने की तो कोई आस ही न होगी, पैरों में बोझल बेड़ियाँ हैं हाथों में मज़बूत हतकड़ियाँ हैं, हाँ! आग के शोले उन्हें इस क़द्र ऊँचा कर देते हैं कि गोया बाहर निकल जाएँगे लेकिन फिर फ़रिश्तों के हाथों से घुन खाकर तह में उतर जाते हैं, उनसे कहा जाता है कि अब जलने का मज़ा चखो। जैसे फ़र्मान है उनसे कहा जाएगा कि उस आग का अ़ज़ाब बर्दाश्त करो जिसे आज तक झुठलाते रहे। (32/सज्दा : 20) ज़ुबानी भी और अपने आमाल से भी।

***

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ
فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ
الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

तर्जुमा :"ईमान वालों और नेक काम वालों को अल्लाह तआला उन जन्नतों में ले जाएगा जिनके दरख़्तों के नीचे से नहरें लहरें ले रही हैं, जहाँ वह सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और सच्चे मोती भी वहाँ उनका लिबास ख़ालिस रेशम का होगा। (23) उनको पाकीज़ा बात की रहनुमाई कर दी गई और क़ाबिले सद तारीफ़ की राह की हिदायत कर दी गई।" (24)

जन्नतियों पर इन्आमात (आयत 23, 24) : ऊपर जहन्नमियों का और उनकी सज़ाओं का उनके तौक़ व ज़ंजीर का उनके जलने झुलसने का उनके आग के लिबास का ज़िक्र करके अब जन्नत का वहाँ की नेअमतों का और वहाँ के रहने वालों का हाल बयान कर रहा है। अल्लाह हमें अपनी सज़ाओं से बचाए और जज़ाओं से नवाज़े, आमीन! फ़र्माता है ईमान और नेक अमल के बदले जन्नत मिलेगी जहाँ के महल्लात और बाग़ात के चारों तरफ़ पानी की नहरें लहरें मार रही होंगी जहाँ चाहेंगे वहीं ख़ुद ब ख़ुद उनका रुख़ हो जाया करेगा, सोने के ज़ेवरों से सजे हुए होंगे, मोतियों में तुल रहे होंगे। मुत्तफ़क़ अलैह हदीस में है "मोमिन का ज़ेवर वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ तक वुज़ू का पानी पहुँचता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब नक़्ज़स्सूर : 5953; सहीह मुस्लिम : 250) कअब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं जन्नत में एक फ़रिश्ता है जिसका नाम भी मुझे मालूम है वह अपनी पैदाइश से मोमिनों के लिए ज़ेवर बना रहा है और क़ियामत तक उसी काम में रहेगा, अगर उनमें से एक कंगन भी दुनिया में ज़ाहिर हो जाए तो सूरज की रोशनी उसी तरह जाती रहे जिस तरह उसके निकलने से चाँद की रोशनी जाती रहती है। दोज़ख़ियों के कपड़ों का ज़िक्र ऊपर हो चुका है यहाँ जन्नतियों के कपड़ों का ज़िक्र हो रहा है कि वह नर्म चमकीले रेशमी कपड़े पहने हुए होंगे जैसे सूरह दहर में है कि उनके लिबास सब्ज़ रेशमी होंगे, चाँदी के कंगन होंगे और शराबे तहूर के जाम पर जाम पी रहे होंगे, यह है तुम्हारी जज़ा और यह है तुम्हारी बारआवर सई की नतीजा। (72/दहर : 21, 22)

सहीह हदीस में है "रेशम तुम न पहनो जो इसे दुनिया में पहन लेगा वह आख़िरत के दिन इससे महरूम रहेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब लुब्सुल हरीर लिर्रिजालि व क़द्रु मा यजूज़ु मिन्ह : 5830, 5834; सहीह मुस्लिम : 2069; सुननुल कुब्रा : 9584) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर (रज़ि.) फ़र्माते हैं जो उस दिन रेशमी लिबास से महरूम रहा, वह जन्नत में न जाएगा क्योंकि जन्नत वालों का यही लिबास है। (अहमद : 1/37; व सनदुहू सहीहुन; व अस्लहू इन्दल बुख़ारी : 5837; व मुस्लिम : 2069) उनको पाक बात सिखा दी गई। जैसे फ़र्मान (تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ) (14/इब्राहीम : 23) ईमान वाले बहुक्मे रब्बानी जन्नत में जाएँगे जहाँ उनका तोहफ़ा आपस में सलाम होगा। और आयत में है हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आएँगे और सलाम करके कहेंगे तुम्हारे सब्र का क्या ही अच्छा अंजाम हुआ। (13/रअद : 23, 24)

और जगह फ़र्माया (لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝) (56/वाक़िया : 25, 26) वहाँ कोई लग़्वियात और रंजीदा बात न सुनेंगे सिवाय सलाम और सलामती के पस उन्हें वह मकान दे दिया गया जहाँ सिर्फ़ दिल लुभाने वाली आवाज़ें और सलाम ही सलाम सुनते हैं। जैसे फ़र्मान है वहाँ मुबारक सलामत की आवाज़ें ही आएँगी बरख़िलाफ़ दोज़ख़ के कि हर वक़्त डाँट डपट सुनते हैं झिड़के जाते हैं और सरज़निश की जा रही है कि ऐसे अज़ाब बर्दाश्त करो वग़ैरह। और उन्हें वह जगह दी गई कि यह निहाल निहाल हो गए और बेसाख़्ता उनकी ज़ुबानों से अल्लाह की हम्द अदा होने लगी क्योंकि बेशुमार बेनज़ीर रहमतें पा लीं।

सहीह हदीस में है कि "जैसे बेक़स्द बेतकल्लुफ़ साँस आता जाता रहता है उसी तरह जन्नत वालों को तस्बीह व हम्द का इल्हाम होगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़ी सिफ़ातिल जन्नति व अहलिहा....) : 2835) कुछ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तय्यब कलाम से मुराद क़ुरआने करीम है और (ला इलाहा इल्लल्लाहु) है। हदीस के और दो अज़्कार हैं और सिराते हमीद से मुराद इस्लामी रास्ता है। यह तफ़्सीर भी पहली तफ़्सीर से ख़िलाफ़ नहीं, वल्लाहु आलम!

***

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : "जिन लोगों ने कुफ़्र किया और राहे इलाही से रोकने लगे और इस हुर्मत वाली मस्जिद से भी जिसे हमने तमाम लोगों के लिए मसावी (बराबर) कर दिया है वहीं के रहने वाले हों या बाहर के हों जो भी ज़ुल्म के साथ वहाँ इल्हाद करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब चखाएँगे।" (25)

मस्जिदुल हराम से रोकना बड़ा गुनाह है (आयत 25) : अल्लाह तआला काफ़िरों के उस काम की तर्दीद करता है जो वह मुसलमानों को मस्जिदे हराम से रोकते थे वहाँ उन्हें अहकामे हज्ज अदा करने से बाज़ रखते थे बावजूद इसके ओलिया अल्लाह होने का दावा करते थे हालाँकि ओलिया अल्लाह वह हैं जिनके दिलों में अल्लाह का डर हो। इससे मालूम होता है कि यह ज़िक्र मदीने का है जैसे सूरह बक़रह की आयत (يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ) (2/बक़रह : 217) में है। यहाँ फ़र्माया कि बावजूद कुफ़्र के फिर यह भी फ़ेअल है कि अल्लाह की राह से और मस्जिदे हराम से मुसलमानों को रोकते हैं जो दरहक़ीक़त इसके अहल हैं। यही तर्तीब इस आयत की है (اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ) (13/रअद : 28) यानी उनकी सिफ़त यह है कि उनके दिल ज़िक्रुल्लाह से मुत्मइन हो जाते हैं।

मस्जिदे हराम जो अल्लाह ने सबके लिए यक्साँ तौर पर बाहुर्मत बनाई है। मुक़ीम मुसाफ़िर के हुक़ूक़ में कोई कमी व ज़्यादती नहीं रखी, अहले मक्का भी मस्जिदे हराम में उतर सकते हैं और बाहर वाले भी। (तब्री : 18/596) वहाँ की मंज़िलों में वहाँ के बाशिन्दे और बैरूनजात के लोग सब एक ही हक़ रखते हैं। इस मसले में इमाम शाफ़ेई, इमाम इस्हाक़ बिन राहवे (रह.) ने हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) की मौजूदगी में इख़्तिलाफ़ किया इमाम शाफ़ेई (रह.)तो फ़र्माने लगे मक्के की हवेलियाँ मिल्कियत में लाई जा सकती हैं, वरसे में बट सकती हैं और किराये पर भी दी जा सकती हैं। दलील यह दी कि ओसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया कि कल आप मक्के में अपने ही मकान में उतरेंगे? तो आप (ﷺ) ने जवाब दिया कि "अक़ील ने हमारे लिए कौनसी हवेली छोड़ी है?" फिर फ़र्माया काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं होता और न मुसलमान काफ़िर का। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब अयना रकज़न्नबी (ﷺ)

अर्रायत यौमल फ़त्ह : 4282, 4283; सहीह मुस्लिम : 1351; अबूदाउद : 2910; इब्ने माजा : 2730; अहमद : 5/201; इब्ने हिब्बान : 5149; बैहक़ी : 6/34) और दलील यह है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने हज़रत सफ़्वान बिन उमय्या का मकान चार हज़ार दिरहम में ख़रीदकर वहाँ जेलख़ाना बनाया था। ताउस और अम्र बिन दीनार भी इस मसले में इमाम साहब के हमनवा हैं।

इमाम इस्हाक़ बिन राहवे (रह.) इसके ख़िलाफ़ कहते हैं कि वह वरसे में नहीं बट सकते, न किराये पर दिये जा सकते हैं। सलफ़ में से एक जमाअत यही कहती है। मुजाहिद और अता का यही मस्लक है। इसकी दलील इब्ने माजा की यह हदीस है हज़रत अल्क़मा बिन नज़ला (रह) फ़र्माते हैं हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में और सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी ख़िलाफ़त में मक्के की हवेलियाँ आज़ाद और बेमिल्कियत कही जाती रहीं अगर ज़रूरत होती तो रहते वरना और को बसने के लिए दे देते। (इब्ने माजा, किताबुल मनासिक, बाब अज्रे बुयूत मक्कता : 3107; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सनद मुर्सल है। अल्क़मा बिन नज़्ला सहाबी नहीं हैं।) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं, न तो मक्के के मकानों को बेचना जाइज़ है न उनका किराया लेना। हज़रत अता भी हरम में किराया लेने को मना करते थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मक्के के घरों के दरवाज़े रखने से रोकते थे क्योंकि सेहन में हाजी लोग ठहरा करते थे। सबसे पहले घर का दरवाज़ा सुहैल बिन अम्र (रज़ि.) ने बनाया, हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसी वक़्त उन्हें हाज़िरी का हुक्म भेजा। उन्होंने आकर कहा, मुझे माफ़ फ़र्मा दीजिए, मैं सौदागर शख़्स हूँ मैंने ज़रूरतन यह दरवाज़े बनाये हैं ताकि मेरे जानवर मेरे बस में रहें। आपने फ़र्माया, फिर ख़ैर हम इसे तेरे लिए ही जाइज़ रखते हैं। और रिवायत में हुक्मे फ़ारूक़ी इन अल्फ़ाज़ में मरवी है कि ऐ अहले मक्का! अपने मकानो के दरवाज़े न रखो ताकि बाहर के लोग जहाँ चाहें ठहरें। अता (रह.) फ़र्माते हैं शहरी और ग़ैर वतनी उनमें बराबर हैं, जहाँ चाहें उतरें।

अब्दुल्लाह बिन उमर(रज़ि.) फ़र्माते हैं मक्के के घरों का किराया खाने वाला अपने पेट में आग भरने वाला है। इमाम अहमद (रह.) ने इन दोनों बातों के बीच का मस्लक पसंद किया है, यानी मिल्कियत को और वरसे को तो जाइज़ बतलाया हाँ! किराये को नाजाइज़ कहा है इससे दलीलों में जमा हो जाती है, वल्लाहु आलम! (बिइल्हादिन) में बा ज़ाइद है जैसे (تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ)(23/मोमिनून : 20) में और अअशा के शेअर (ज़मनत बिरिज़्क़ि इयालिना अरमाहुना...) में यानी हमारे घराने की रोज़ियाँ हमारे नेज़ों पर मौक़ूफ़ हैं... और शायरों के अश्आर में बा का ऐसे मौक़ों पर ज़ाइद आना मुस्तमिल हुआ है लेकिन इससे भी उम्दा बात यह है कि हम कहें कि यहाँ का फ़ेअल (यहुम्मु) के मअनी का मुतज़म्मिन है इसलिए बा के साथ मुतअद्दी हुआ है। इल्हाद से मुराद कबीरा शर्मनाक गुनाह है। (बिज़ुल्मिन) से मुराद क़सदन है तावील की रू से न होना है और मअनी शिर्क के ग़ैरुल्लाह की इबादत के भी किये गए हैं। (तब्री : 18/600) यह भी मतलब है कि हरम में अल्लाह के हराम किये हुए काम को हलाल समझ लेना जैसे गुनाह क़त्ल बेजा ज़ुल्मो सितम वग़ैरह ऐसे लोग दर्दनाक अज़ाबों के सज़ावार हैं। (तब्री : 18/600) हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं जो भी यहाँ बुरा काम करे, यह हरम की ख़ुसूसियत है कि ग़ैर वतनी लोग जब किसी बुरे काम का अज़्म कर लें तो उन्हें सज़ा होती है भले उसे न करें। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं अगर कोई शख़्स अदन में हो और हरम में इल्हाद व ज़ुल्म का इरादा रखता हो तो भी अल्लाह उसे दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखाएगा।

हज़रत शुअबा (रह.) फ़र्माते हैं उसने तो इसे मरफ़ूअ बयान किया था लेकिन मैं इसे मरफ़ूअ बयान नहीं करता। (अहमद : 1/428; व सनदुहू हसन; व सह्हहहुल हाकिम : 2/388; अला शर्ति मुस्लिम ववाफ़क़हुज़्ज़हबी; मुस्नदे अबी यअला : 5384; मुस्नदे बज़्ज़ार (ज़वाइद) : 2236) इसकी और सनद भी है जो सही है और मौक़ूफ़ होना बनिस्बत मरफ़ूअ होने के ज़्यादा ठीक है। उमूमन क़ौले इब्ने मसऊद (रज़ि.) से ही मरवी है, वल्लाहु आलम! और रिवायत में है "किसी पर बुराई के सिर्फ़ इरादे से बुराई नहीं लिखी जाती" लेकिन अगर दूर दराज़ मस्लन अदन में बैठकर भी यहाँ के किसी शख़्स के क़त्ल का इरादा करे तो अल्लाह उसे दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला करेगा। (हाकिम : 2/388; व सनदुहू हसन) हज़रत मुजाहिद(रह.) फ़र्माते हैं हाँ! इन पर यहाँ क़समें खाना भी इल्हाद में दाख़िल है। सईद बिन जुबेर (रह.) का फ़र्मान है कि अपने ख़ादिम को यहाँ गाली देना भी इल्हाद में है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है अमीर शख़्स का यहाँ आकर तिजारत करना। इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं मक्का में अनाज का बेचना, हबीब बिन अबू साबित (रह.) फ़र्माते हैं गिराँ फ़रोशी के लिए अनाज को यहाँ रोक रखना।

इब्ने अबी हातिम में भी फ़र्माने रसूल (ﷺ) से यही मन्क़ूल है। (अबूदाउद, किताबुल मनासिक, बाब तहरीमु मक्कता : 2020; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मूसा बिन बाज़ान जाफ़र बिन यहया और अम्मारा बिन सौबान मज्हूल व मस्तूर रावी हैं) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह आयत अब्दुल्लाह बिन उनैस के बारे में उतरी है इसे हुज़ूर (ﷺ) ने एक मुहाजिर और एक अंसार के साथ भेजा था। एक मर्तबा हर एक अपने अपने नसब पर फ़ख़्र करने लगा, उसने गुस्से में आकर अंसारी का क़त्ल कर दिया और मक्का की तरफ़ भाग खड़ा हुआ और दीने इस्लाम छोड़ बैठा। तो मतलब यह होगा कि जो इल्हाद करके मक्का की पनाह ले। इन आसार से भले यह मालूम होता है कि यह सब काम इल्हाद में से हैं लेकिन हक़ीक़तन यह उन सबसे ज़्यादा आम है बल्कि इसमें तंबीह है इससे बड़ी चीज़ पर इसीलिए कि जब हाथी वालों ने बैतुल्लाह की ख़राबी का इरादा किया तो अल्लाह तआला ने उन पर परिन्दों के ग़ोल के ग़ोल (झुण्ड) भेज दिये जिन्होंने उन पर कंकरियाँ फेंककर उनका भुस उड़ा दिया और वह दूसरों के लिए बाइसे इब्रत बना दिये गए।

चुनाँचे हदीस में है कि "एक लश्कर उस बैतुल्लाह के ग़ज़्वे के इरादे से आएगा जब वह पहुँचेंगे तो सबके सब पहले आख़िर साथ में धंसा दिये जाएँगे....।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब मा ज़िक्रु फ़िल अस्वाक़ : 2118; इब्ने हिब्बान : 6755) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर (रज़ि.) से फ़र्माते हैं आप यहाँ इल्हाद करने से बचें, मैंने हुज़ूर (ﷺ) से सुना है कि "यहाँ एक क़ुरैशी इल्हाद करेगा उसके गुनाह अगर तमाम जिन्न व इंस के गुनाहों से तोले जाएँ तो भी बढ़ जाएँ देखो ख़्याल रखो तुम वही न बन जाना।" (अहमद : 2/136; व सनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/285) और रिवायत में यह भी है कि यह नसीहत आपने उन्हें हतीम में बैठकर की थी। (अहमद : 2/219; ह : 7043; व सनदुहू हसन)

***

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

तर्जुमा : "जबकि हमने इब्राहीम (अ) को कअ़बा के मकान की जगह मुक़र्रर कर दी इस शर्त पर कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना और मेरे घर को तवाफ़ क़याम रुकूअ़ और सज्दा करने वालों के लिए पाक साफ़ रखना। (26) लोगों में हज्ज की मुनादी कर दे लोग तेरे पास पैदल भी आएँगे और दुबले पतले ऊँटों पर भी दूर दराज़ की तमाम राहों से आ जाएँगे।" (27)

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) और बैतुल्लाह (आयत 26, 27) : यहाँ मुश्रिकीन को मुतनब्बा (ख़बरदार) किया जाता है कि वह घर जिसकी बुनियाद पहले दिन से अल्लाह की तौह़ीद पर रखी गई है तुमने इसमें शिर्क जारी कर दिया। इस घर के बानी ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) हैं सबसे पहले आपने ही इसे बनाया। हुज़ूर (ﷺ) से अबू ज़र्र (रज़ि.) ने सवाल किया कि हुज़ूर (ﷺ)! सबसे पहले कौनसी मस्जिद बनाई गई? फ़र्माया, "मस्जिदे ह़राम" मैंने कहा, फिर? फ़र्माया "बैतुल मक़्दिस।" मैंने कहा, इन दोनों के बीच किस क़द्र मुद्दत का फ़ासला है? फ़र्माया "चालीस साल का।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया, बाब नम्बर : 10; ह़दीस : 3366; सह़ीह़ मुस्लिम : 520; इब्ने माजा : 753; अह़मद : 5/150; इब्ने ह़िब्बान : 1598) अल्लाह का फ़र्मान है (اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا) (3/आले इमरान : 96) दो आयतों तक। और आयत में है हमने इब्राहीम व इस्माईल (عليهما السلام) से वादा लिया कि मेरे घर को पाक रखना, आख़िर आयत तक।" (2/बक़रह : 125) बैतुल्लाह की बिना का कुल ज़िक्र हम पहले लिख चुके हैं इसलिए यहाँ दोबारा लिखने की ज़रूरत नहीं। यहाँ फ़र्माया इसे सिर्फ़ मेरे नाम पर बना और इसे पाक रख यानी शिर्क वग़ैरह से। (त़ब्री : 18/604) और इसे ख़ास कर दे उनके लिए जो मुवह्ह़िद हैं। त़वाफ़ वह इबादत है जो सारी ज़मीन पर सिवाय बैतुल्लाह के मयस्सर ही नहीं न जाइज़ है। फिर त़वाफ़ के साथ नमाज़ को मिलाया, क़याम रुकूअ़ सज्दे का ज़िक्र फ़र्माया, इसीलिए कि जिस त़रह़ त़वाफ़ उसके मख़्सूस है नमाज़ का क़िब्ला भी यही है हाँ! इस ह़ालत में कि इंसान को मालूम न हो या जिहाद में हो या सफ़र में नफ़्ल नमाज़ पढ़ रहा हो तो बेशक क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ न होने की ह़ालत में भी नमाज़ हो जाएगी, वल्लाहु आलम! और यह हुक्म मिला कि इस घर के ह़ज्ज की त़रफ़ तमाम इंसानों को बुला। मज़्कूर है कि आपने उस वक़्त अर्ज किया कि बारी तआ़ला! मेरी आवाज़ उन तक कैसे पहुँचेगी? जवाब मिला कि आपके ज़िम्मे पुकारना है आवाज़ पहुँचाना मेरे ज़िम्मे है। पस आपने मक़ामे इब्राहीम पर या सफ़ा पहाड़ी पर या अबू क़ुबैस पहाड़ पर खड़े होकर निदा की कि लोगों! तुम्हारे रब ने अपना एक घर बनाया है पस तुम इसका ह़ज्ज करो। पहाड़ झुक गए और आपकी आवाज़ सारी दुनिया में

गूँज गई, यहाँ तक कि बाप की पीठ में और माँ के पेट में जो थे, उन्हें भी सुनाई दी, हर पत्थर, दरख़्त और हर उस शख़्स ने जिसकी क़िस्मत में हज्ज करना लिखा था बाआवाज़े बुलंद लब्बैक पुकारा बहुत से सलफ़ से यह मंक़ूल है। (तब्री : 18/605; हाकिम : 2/388) वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माया पैदल लोग भी आएँगे और सवारियों पर सवार भी आएँगे। उससे कुछ हज़रात ने इस्तिदलाल किया है कि जिसे ताक़त हो उसके लिए पैदल हज्ज करना सवारी पर हज्ज करने से अफ़ज़ल है इसलिए कि पहले पैदल वालों का ज़िक्र है। (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/35) फिर सवारी का तो उनकी तरफ़ ज़्यादा तवज्जह हुई और उनकी हिम्मत की क़द्रदानी की गई। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मेरी यह तमन्ना बाक़ी रह गई कि काश! कि मैं पैदल हज्ज करता इसलिए कि फ़र्माने इलाही में पैदल वालों का ज़िक्र है। लेकिन अक्सर बुज़ुर्ग का क़ौल है कि सवारी पर अफ़ज़ल है क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बावजूद कमाले क़ुदरत व क़ुव्वत के पैदल हज्ज नहीं किया तो सवारी पर हज्ज करना हुज़ूर (ﷺ) की पूरी इक़्तिदा है फिर फ़र्माया दूरदराज़ से हज्ज के लिए आएँगे। ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) की दुआ भी यही थी कि (فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ) (14/इब्राहीम : 37) लोगों के दिलों को ऐ अल्लाह! तू इनकी तरफ़ मुतवज्जा कर दे। आज देख लो वह कौनसा मुसलमान है जिसका दिल कअ़बे की ज़ियारत का मुश्ताक़ न हो और जिसके दिल में तवाफ़ की तमन्नाएँ तड़प न रही हों। (अल्लाह हमें नसीब करे, आमीन!)

***

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآىِٕسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : ''अपने फ़ायदे के हासिल करने को आ जाएँ और उन मुक़र्ररा दिनों में अल्लाह का नाम याद करें उन चौपायों पर जो पालतू हैं। पस तुम आप भी खाओ और भूखे फ़क़ीरों को भी खिलाओ। (28) फिर अपना मैल कुचैल दूर करें और अपनी नज़्रें पूरी करें और अल्लाह के क़दीम घर का तवाफ़ अदा करें।'' (29)

(आयत 28, 29) : दुनिया आख़िरत के फ़ायदे हासिल करने को आएँ अल्लाह की रज़ा के साथ ही दुनियावी मफ़ाद तिजारत वग़ैरह का भी लें। (तब्री : 18/609) जैसे फ़र्माया (لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ) (2/बक़रह : 198) मौसमे हज्ज में तिजारत करना मम्नूअ नहीं। मुक़र्ररा दिनों से मुराद ज़िल्हिज्ज का पहला अशरा है। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है ''किसी दिन का अमल अल्लाह के नज़दीक उन दिनों के अमल से अफ़ज़ल नहीं। लोगों ने पूछा, जिहाद भी नहीं? फ़र्माया जिहाद भी नहीं सिवाय उस मुजाहिद के अमल के जिसने अपना जान व माल अल्लाह की राह में खपा दिया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल

ईदेन, बाब फ़ज़्लुल अमल फ़ी अय्यामित्तशरीक़ : 969; तिर्मिज़ी : 757; अबूदाउद : 2438; इब्ने माजा : 1827; अहमद : 1/224) मैंने इस हदीस को इसकी तमाम सनदों के साथ एक मुस्तक़िल किताब में जमा कर दिया है। चुनाँचे एक रिवायत में है किसी दिन का अमल अल्लाह के नज़दीक उन दिनों से बड़ा और प्यारा नहीं पस तुम इन दस दिनों में (ला इलाहा इल्लल्लाहु) और (अल्लाहु अकबर) और (अल्हम्दु लिल्लाह) बकसरत पढ़ा करो। (अहमद : 2/75; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ रावी है। शुअबुल ईमान : 3750; मुश्किलुल आसार : 2971) इन ही दस दिनों की क़सम (وَ لَيَالٍ عَشْرٍ ۙ) (89/फ़ज्र : 2) की आयत में है। कुछ सलफ़ कहते हैं (وَ اَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ) (7/आराफ़ : 142) से मुराद भी यही दिन हैं। अबूदाउद में है हुज़ूर (ﷺ) इन दिनों में रोज़े से रहा करते थे। (अबूदाउद, किताबुस्सियाम, बाब फ़ी सौमि अशरा : 2437; व सनदुहू सहीहुन; नसाई : 2420) बुख़ारी में है हज़रत इब्ने उमर और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) इन दिनों बाज़ार में आते और तक्बीर पुकारते बाज़ार वाले भी आपके साथ तक्बीरें पढ़ने लगते। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईदैन, बाब फ़ज़्लुल अमल फ़ी अय्यामि तशरीक़ क़ब्ल रक़म : 969 तअलीक़न) इन ही दस दिनों में अरफ़े का दिन है जिस दिन के रोज़े की निस्बत रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है कि "गुज़िश्ता और आइन्दा दो साल के गुनाह माफ़ हो जाते हैं।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम, बाब इस्तिहबाबु सियामिन सलासति अय्यामिम मिन कुल्लि शहर : 1162; अबूदाऊद : 2425; तिर्मिज़ी : 752; इब्ने माजा : 1730; इब्ने हिब्बान : 3633) इन ही दस दिनों में क़ुर्बानी का दिन यानी बक़रा ईद का दिन है जिसका नाम इस्लाम में हज्जे अकबर का दिन है। एक रिवायत में है कि "अल्लाह के नज़दीक यह सब दिनों से अफ़जल है।" अल्ग़र्ज़ सारे साल में ऐसी फ़ज़ीलत का दिन और नहीं। जैसे कि हदीस में है "यह दस दिन रमज़ान मुबारक के आख़िरी दस दिनों से भी अफ़ज़ल हैं।" क्योंकि नमाज़ रोज़ा सदक़ा वग़ैरह जो रमज़ान के इस आख़िरी अशरे में होता है वह सब इन दिनों में भी होता है मज़ीद बराँ इनमें फ़रीज़-ए-हज्ज अदा होता है। यह भी कहा गया है कि रमज़ान मुबारक के आख़िरी दस दिन अफ़ज़ल हैं क्योंकि इनमें लैलतुल क़द्र है जो एक हज़ार महीनों से बेहतर है। तीसरा क़ौल दरम्याना है कि दिन तो यह अफ़ज़ल और रातें रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस दिनों की अफ़ज़ल हैं। इस क़ौल के मान लेने से मुख़्तलिफ़ दलाइल जमा हो जाते हैं, वल्लाहु आलम! (अय्यामिम मअलूमात) की तफ़्सीर में एक दूसरा क़ौल यह है कि यह क़ुर्बानी का दिन और उसके बाद के तीन दिन हैं। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) और इब्राहीम नख़ई (रह.) से यही मरवी है और एक रिवायत से इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) का मज़हब भी यही है। तीसरा क़ौल यह है कि बक़र ईद और उसके बाद के दो दिन। और अय्यामे मअदूदात से बक़र ईद और उसके बाद के तीन दिन इसकी इस्नाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) तक सही है। सुद्दी (रह.) भी यही कहते हैं, इमाम मालिक (रह.) का भी यही मज़हब है और उसकी और इससे पहले के क़ौल की ताईद फ़र्माने बारी (अला मा रज़क़हुम मिम बहीमतिल अनआमि) से होती है क्यों कि इससे मुराद जानवरों की क़ुर्बानी के वक़्त अल्लाह का नाम लेना है। चौथा क़ौल यह है कि यह अरफ़े का दिन बक़रा ईद का दिन और उसके बाद का एक दिन है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का मज़हब यही है। हज़रत असलम (रह.) से मरवी है कि मुराद यौमे अरफ़ा यौमे नह्र और अय्यामे तशरीक़ हैं। बहीमतिल अन्आम से मुराद ऊँट गाय और बकरी हैं। जैसे सूरह अन्आम की आयत (ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ) (6/अन्आम :

143) में मुफ़स्सल मौजूद है। फिर फ़र्माया इसे ख़ुद खाओ और मोहताजों को खिलाओ। इससे कुछ लोगों ने दलील ली है कि कुर्बानी का गोश्त खाना वाजिब है लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। अक्सर बुज़ुर्गों का मज़हब है कि यह रुख़्सत है या इस्तिह़बाब है। चुनाँचे ह़दीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने जब कुर्बानी की तो हुक्म दिया कि "हर ऊँट के गोश्त का एक टुकड़ा निकाल कर पका लिया जाए।" फिर आप (ﷺ) ने वह गोश्त खाया और शोरबा पिया। (अह़मद : 1/314; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत का कुछ हिस्सा दूसरी सनद के साथ सह़ीह़ मुस्लिम में भी है। देखिए रक़म : 1218) इमाम मालिक (रह़.) फ़र्माते हैं मैं इसे पसंद करता हूँ कि क़ुर्बानी का गोश्त क़ुर्बानी करने वाला खा ले क्योंकि अल्लाह का फ़र्मान है।

इब्राहीम (रह़.) फ़र्माते हैं कि मुश्रिक लोग अपनी क़ुर्बानियों का गोश्त नहीं खाते थे इसके बरख़िलाफ़ मुसलमानों को इस गोश्त के खाने की इजाज़त दी गई, अब जो चाहे खाए जो चाहे न खाए। ह़ज़रत मुजाहिद (रह़.) और ह़ज़रत अ़त़ा (रह़.) से भी इसी त़रह़ मंक़ूल है। मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं यहाँ का यह हुक्म (وَ اِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا) (5/माइदा : 2) की त़रह़ है यानी जब तुम एह़राम से फ़ारिग़ हो जाओ तो शिकार खेलो और सूरह जुम्आ में फ़र्मान है (فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ) (62/जुम्आ : 10) जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ। (त़ब्री : 18/611) मत़लब यह है कि दोनों आयतों में हुक्म है शिकार करने का और ज़मीन में रोज़ी तलाश करने के लिए फैल जाने का लेकिन यह हुक्म वजूबी और फ़र्ज़ नहीं इसी तरह़ अपनी क़ुर्बानी के गोश्त को खाने का हुक्म भी ज़रूरी और वाजिब नहीं। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) भी इसी क़ौल को पसंद करते हैं कुछ लोगों का ख़्याल है कि क़ुर्बानी के गोश्त के दो हिस्से कर दिये जाएँ एक हिस्सा ख़ुद क़ुर्बानी करने वाले का और दूसरा हिस्सा फ़क़ीर फ़ुक़रा का। [illegible] कहते हैं तीन हिस्से करने चाहिए तिहाई अपना तिहाई हदिया देने के लिए और तिहाई स़दक़ा करने के लिए, पहले क़ौल वाले ऊपर की आयत की सनद लाते हैं और दूसरे क़ौल वाले आयत (وَ اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَ الْمُعْتَرَّ) (22/ह़ज्ज : 36) को दलील में पेश करते हैं उसका पूरा बयान आएगा, इंशाअल्लाह तआ़ला।

इक्रिमा (रह़.) फ़र्माते हैं (अल्बाइसल फ़क़ीर) से मुराद वह बेबस इंसान है जो ज़रूरत होने पर भी सवाल से बचता हो। (त़ब्री : 18/612) मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं जो दस्ते सवाल दराज़ न करता हो, बीमार हो, कम बीनाई वाला हो। (त़ब्री : 18/612) फिर वह एह़राम खोल डालें, सर मुँडवा लें, कपड़े पहन लें, नाख़ुन कटवा डालें वग़ैरह अह़कामे ह़ज्ज पूरे कर लें। (त़ब्री : 18/213) नज़्रें पूरी कर लें। (त़ब्री : 18/214) ह़ज्ज की क़ुर्बानी की और जो हों। पस जो शख़्स ह़ज्ज के लिए निकला उसके ज़िम्मे त़वाफ़ बैतुल्लाह त़वाफ़े मरवा अ़रफ़ात के मैदान में जाना, मुज़दलिफ़ा की ह़ाज़िरी शैत़ान को कंकर मारना वग़ैरह सब कुछ ज़रूरी है, इन तमाम अह़काम को पूरा करें और सही त़ौर पर बजा लाएँ और बैतुल्लाह का त़वाफ़ करें जो यौमुन्नह़र को वाजिब है।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ह़ज्ज का आख़िरी काम त़वाफ़ है, हुज़ूर (ﷺ) ने भी किया जब आप (ﷺ) दस ज़िल ह़िज्ज को मिना की त़रफ़ वापिस आए तो सबसे पहले शैत़ानों को कंकरियाँ मारीं, सात सात फिर क़ुर्बानी की फिर सर मुँडवाया फिर लौटकर बैतुल्लाह आकर त़वाफ़े बैतुल्लाह किया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि लोगों को हुक्म किया गया है कि इनका आख़िरी काम त़वाफ़े

बैतुल्लाह ही हाँ! अल्बत्ता हाइज़ा औरतों को छूट (तख़फ़ीफ़) दे दी गई है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब तवाफ़े विदाअ : 1755; सहीह मुस्लिम : 1328; बैहक़ी : 5/161) बैतुल अतीक़ के लफ़्ज़ से इस्तिदलाल करके फ़र्माया गया कि तवाफ़ करने वाले को हतीम भी अपने तवाफ़ के अन्दर ले लेना चाहिए इसलिए कि वह भी असल बैतुल्लाह में से है। हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की बिना में यह दाख़िल था भले क़ुरैश ने नया बनाते वक़्त इसे बाहर छोड़ दिया लेकिन इसकी वजह भी ख़र्च की कमी थी न कि और कुछ। इसीलिए हुज़ूर (ﷺ) ने हतीम के पीछे से तवाफ़ किया और फ़र्मा भी दिया कि हतीम भी बैतुल्लाह में दाख़िल है और आप (ﷺ) ने दोनों शामी रुक्नों को हाथ नहीं लगाया, न बोसा दिया क्योंकि वह बिना इब्राहीमी के मुताबिक़ पूरे नहीं। इस आयत के उतरने के बाद हुज़ूर (ﷺ) ने हतीम के पीछे से तवाफ़ किया। (सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत में 'रजुल' मज्हूल है।) पहले इसी तरह की इमारत थी कि यह अंदर था इसीलिए इसे पुराना घर कहा गया है, यही सबसे पहला ख़ाना कअबा है। (तब्री : 18/615) और वजह यह भी है कि यह तूफ़ाने नूह में सलामत रहा और यह भी वजह है कि कोई सरकश इस पर ग़ालिब नहीं आ सका, यह इन सबकी दस्तबुर्द से आज़ाद है जिसने भी इससे बुरा क़सद किया वह तबाह हुआ, अल्लाह ने इसे सरकशों के तसल्लुत से आज़ाद कर लिया। तिर्मिज़ी में इसी तरह की एक मरफ़ूअ हदीस भी है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल हज्ज : 3170 व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने शिहाब ज़ोहरी मुदल्लस हैं और सिमाअ की सराहत नहीं है। हाकिम : 2/389) जो हसन ग़रीब है और एक और सनद से मुर्सलन भी मरवी है।

***

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا
يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ
غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ
بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾

तर्जुमा : ''यह है और जो कोई अल्लाह की हुर्मतों की तअज़ीम करे उसके अपने लिए उसके रब के पास बेहतरी है और तुम्हारे लिए चौपाये जानवर हलाल कर दिये गए सिवाए उनके जो तुम्हारे सामने बयान किये गए हैं पस तुम्हें बुतों की गंदगी से बचते रहना चाहिए और झूठी बात से भी परहेज़ करना चाहिए। (30) अल्लाह की तौहीद को मानते हुए उसके साथ किसी को शरीक न करते हुए सुनो! अल्लाह के साथ शरीक करने वाला गोया आसमान से गिर पड़ा अब उसे या तो परिन्दे उचक ले जाएँगे या हवा किसी दूर दराज़ की जगह फेंक देगी।'' (31)

शआइरल्लाह तक़्दीसे ईमान की निशानी है (आयत 30, 31) : फ़र्माता है यह तो थे अहकामे हज्ज और उन पर जो जज़ा मिलती है उसका बयान अब और सुनो, जो शख़्स हुरुमाते बारी तआला की इज़्ज़त करे यानी गुनाहों से और हराम कामों से बचे, उनके करने से अपने आपको रोके और उनसे भागता रहे, उसके लिए अल्लाह के पास बड़ा अज्र है। जिस तरह नेकियों के करने पर अज्र है इसी तरह बुराइयों के छोड़ने पर भी सवाब है। मक्का हज्ज उमरा भी हुरुमाते बारी तआला हैं। तुम्हारे लिए चौपाये सब हलाल हैं हाँ! जो हराम थे वह तुम्हारे सामने बयान हो चुके हैं जो मुश्रिकों ने बहीरा, साइबा, वसीला और हाम नाम रख छोड़े हैं, यह अल्लाह ने इन्हें नहीं बतलाए अल्लाह को जो हराम करना था, बयान कर चुका, जैसे मुराद जानवर, बवक़्ते ज़िब्ह बहा हुआ ख़ून, सूअर का गोश्त, अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर मशहूर किया हुआ, गला घोंटा हुआ वग़ैरह। (तब्री : 18/618)

तुम्हें चाहिए कि बुतपरस्ती की गंदगी से दूर रहो, मिन यहाँ पर बयाने जिंस के लिए है। और झूठी बात से बचो। इस आयत में शिर्क के साथ झूठ को मिला दिया। जैसे आयत (قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ)(7/आराफ़ : 33) यानी मेरे रब ने गंदे कामों को हराम कर दिया ख़्वाह ज़ाहिर हों ख़्वाह छुपे हुए और गुनाह और सरकशी को और बेइल्मी के साथ अल्लाह पर बातें बनाने को इसी में झूठी गवाही भी दाख़िल है। बुख़ारी व मुस्लिम में है हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, "क्या मैं तुम्हें सबसे बड़ा कबीरा गुनाह बतलाऊँ? सहाबा (रज़ि.) ने कहा, इर्शाद हो। फ़र्माया, "अल्लाह के साथ शरीक करना। माँ बाप की नाफ़र्मानी करना, फिर तकिये से अलग हटकर फ़र्माया और झूठ बोलना और झूठी गवाही देना।" इसे बार बार फ़र्माते रहे यहाँ तक कि हमने कहा, काश! कि आप (ﷺ) अब न फ़र्माए।" (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शहादात, बाब मा क़ीला फ़ी शहादतिज़्ज़ूर : 2654; सहीह मुस्लिम : 87; तिर्मिज़ी : 1901) मुस्नदे अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) ने अपने ख़ुत्बे में खड़े होकर तीन बार फ़र्माया, "झूठी गवाही अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर कर दी गई।" फिर आप (ﷺ) ने मुंदर्जा बाला फ़िक़्रा तिलावत किया। (अहमद : 4/178; तिर्मिज़ी, किताबुश्शहादात बाब मा जाअ फ़ी शहादतिज़्ज़ूर : 2299; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ातिक रावी मज्हूलुल हाल है।) और रिवायत में है कि "सुबह की नमाज़ के बाद आप (ﷺ) ने खड़े होकर फ़र्माया।" (अहमद : 4/321; अबूदाऊद, किताबुल क़ज़ा, बाब फ़ी शहादतिज़्ज़ूर : 3599; व सनदुहू ज़ईफ़ुन हबीब बिन नोअमान रावी मज्हूलुल हाल है नीज़ मुहम्मद बिन उबेद मज्हूलुल ऐन रावी है। तिर्मिज़ी : 2300; इब्ने माजा : 2372) इब्ने मसऊद (रज़ि.) का यह फ़र्मान भी मरवी है अल्लाह के दीन को ख़ुलूस के साथ थाम लो, बातिल से हटकर हक़ की तरफ़ आ जाओ, उसकेसाथ किसी को शरीक ठहराने वालों में न बनो। फिर मुश्रिक की तबाही की मिसाल बयान की कि जैसे कोई आसमान से गिर पड़े पस या तो उसे परिन्द ही उचक ले जाएँगे या हवा किसी हलाकत की दूर दराज़ जगह में पहुँचा देगी। चुनाँचे काफ़िर की रूह को लेकर जब फ़रिश्ते आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खुलते और वहीं से उसे फेंक दिया जाता है इसी का बयान इस आयत में है। (अहमद : 4/287; व हुव हदीसुन सहीहुन) यह हदीस पूरी बहस के साथ सूरह इब्राहीम में गुज़र चुकी है। सूरह अन्आम में उन मुश्रिकों की एक और मिसाल बयान की है कि यह मिस्ल उसके है जिसे शैतान बावला बना दे। (6/अन्आम : 71)

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى
اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝

तर्जुमा : ''यह सुन लिया अब और सुनो अल्लाह की निशानियों की जो इ़ज़्ज़त व हुर्मत करे उसके दिल की परहेज़गारी की वजह से यह है। (32) उनमें तुम्हारे लिए एक मुक़र्ररा वक़्त तक का फ़ायदा है फिर उनके हलाल होने की जगह ख़ाना कअ़बा है।'' (33)

क़ुर्बानी के मसाइल (आयत 32, 33) : अल्लाह के शआइर की जिनमें क़ुर्बानी के जानवर भी शामिल हैं, हुर्मत व इ़ज़्ज़त बयान हो रही है कि अहकामे इलाही पर अ़मल करना अल्लाह के फ़र्मान की तौक़ीर करना है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यानी क़ुर्बानी के जानवरों को फ़रबा और उ़म्दा करना। (तब्री : 18/621) सहल (रज़ि.) का बयान है कि हम क़ुर्बानी के जानवरों को पालकर उन्हें फ़रबा और उ़म्दा करते थे तमाम मुसलमानों का यही दस्तूर था। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अज़ाही, बाब अज़्हियतुन्नबी (ﷺ) बि कब्शैनि अक़रनैन... तअलीक़न क़ब्लल ह़दीस : 5553) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''दो स्याह रंग के जानवरों के ख़ून से एक सफ़ेद रंग जानवर का ख़ून अल्लाह को ज़्यादा महबूब है।'' (अह़मद : 2/417; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; ह़ाकिम : 4/227) मुस्नद अह़मद, इब्ने माजा। पस भले और रंगत के जानवर भी जाइज़ हैं लेकिन सफ़ेद रंग के जानवर अफ़ज़ल हैं। सह़ीह़ बुख़ारी में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो भेड़े चितकबरे बड़े बड़े सींग वाले अपनी क़ुर्बानी में ज़िब्ह किये। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अज़ाही, बाब अज़्हियतुन्नबी (ﷺ) बि कब्शैनि अक़रनैन...: 5554; सह़ीह़ मुस्लिम : 1966; अबूदाऊद : 1794; तिर्मिज़ी : 1494; इब्ने माजा : 3120; अह़मद : 3/170; इब्ने ह़िब्बान : 590) अबू सईद (रज़ि.) फ़र्माते हैं हुज़ूर (ﷺ) ने एक भेड़ बड़े सींग वाला चित्कब्रा ज़िब्ह किया जिसके मुँह पर आँखों के पास और पैरों पर स्याह रंग था। (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़ह़ाया, बाब मा यस्तह़िब मिनज़्ज़ह़ाया : 2796; वहुव सह़ीहुन; तिर्मिज़ी : 1496; नसाई : 4395; इब्ने माजा : 3128)

इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) इसे सही कहते हैं। इब्ने माजा वग़ैरह में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने दो भेड़े बहुत मोटे ताज़े चिकने चितकबरे ख़सी ज़िब्ह किये।'' (अबू राफ़ेअ़ से रिवायत अह़मद : 6/8 में मौजूद है लेकिन वह शुरैक की वजह से ज़ईफ़ है जबकि इब्ने माजा, किताबुल अज़ाही बाब अज़ाही रसूलुल्लाहि (ﷺ) : 3122; वहुव ह़सन; में अबू हुरैरा (रज़ि.) से मौजूद है।) ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से मरवी है कि ''हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म फ़र्माया कि हम क़ुर्बानी के लिए जानवर ख़रीदते वक़्त उसकी आँखों को और कानों को अच्छी त़रह देखभाल लिया करें और आगे से कटे हुए कान वाले की पीछे कटे हुए कान वाले की लम्बाई से कटे हुए कान वाले की, सूराख़ वाले की क़ुर्बानी न करें।'' (अह़मद : 1/108; अबूदाऊद, किताबुज़्ज़ह़ाया, बाब मा यक्रहू मिनज़्ज़ह़ाया : 2804; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्ह़ाक़ मुदल्लस के सिमाअ़ की तसरीह़ साबित नहीं है। तिर्मिज़ी : 1498; नसाई : 4377; इब्ने माजा : 3142; ह़ाकिम : 4/224;

इमाम ह़ाकिम (रह़.) ने इसको सही कहा है और ज़हबी ने इसकी मुवाफ़िक़त की है और इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) ने इस रिवायत को ह़सन सही कहा है। लेकिन यह रिवायत ज़ईफ़ है, सही नहीं है।) इसे इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) सही कहते हैं। इसी तरह हुज़ूर (ﷺ) ने ''सींग टूटे हुए और कान कटे हुए जानवर की क़ुर्बानी से मना किया है।'' इसकी शरह में ह़ज़रत सईद बिन मुसय्यब (रह़.) फ़र्माते हैं जबकि आधा या आधे से ज़्यादा कान या सींग न हो। (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़ह़ाया, बाब मा यक्रहू मिनज़्ज़ह़ाया : 2805, 2806; तिर्मिज़ी : 1504; नसाई : 4382; इब्ने माजा : 3145; व सनदुहू ह़सन) कुछ अहले लुग़त कहते हैं अगर ऊपर से किसी जानवर का सींग टूटा हुआ हो तो उसे अ़रबी में क़समा कहते हैं और जब नीचे का हिस्सा टूटा हुआ हो तो उसे अ़ज़ब कहते हैं और ह़दीस में लफ़्ज़ अ़ज़ब है और कान का कुछ हिस्सा कट गया हो तो उसे भी अ़रबी में अअ़ज़ब कहते हैं।

इमाम शाफ़ेई (रह़.) फ़र्माते हैं ऐसे जानवर की क़ुर्बानी भले जाइज़ है लेकिन कराहत के साथ। इमाम अह़मद (रह़.) फ़र्माते हैं जाइज़ ही नहीं। (बज़ाहिर यही क़ौल ह़दीस के मुताबिक़ है) इमाम मालिक (रह़.) फ़र्माते हैं अगर सींग से ख़ून जारी है तो जाइज़ नहीं वरना जाइज़ है, वल्लाहु आलम! हुज़ूर (ﷺ) की ह़दीस है कि चार क़िस्म के ऐबदार जानवर क़ुर्बानी में जाइज़ नहीं, वह काना जानवर जिसका कानापन ज़ाहिर हो और वह बीमार जानवर जिसकी बीमारी खुली हुई हो और वह लंगड़ा जानवर जिसका लंगड़ापन ज़ाहिर हो और वह दुबला पतला मरयल जानवर जो गूदे बग़ैर का हो गया हो। (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़ह़ाया, बाब मा यक्रहू मिनज़्ज़ह़ाया : 2802; व सनदुहू सह़ीहुन; तिर्मिज़ी : 1497; नसाई : 4374; इब्ने माजा : 3144) इसे इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) सही कहते हैं। यह ऐब वह हैं जिनसे जानवर घट जाता है उसका गोश्त नाक़िस हो जाता है और बकरियाँ चरती चुगती रहती हैं मगर यह बवजह अपनी कमज़ोरी के चारा पूरा नहीं पाता। इसीलिए इसी ह़दीस के मुताबिक़ इमाम शाफ़ेई (रह़.) वग़ैरह के नज़दीक इसकी क़ुर्बानी जाइज़ है हाँ! बीमार जानवर के बारे में जिसकी बीमारी ख़तरनाक दर्जे की न हो, बहुत कम हो इमाम साह़ब (रह़.) के दोनों क़ौल हैं।

अबूदाऊद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने मना किया, ''बिलकुल सींग कटे जानवर से और सींग टूटे जानवर से और काने जानवर से और बिलकुल कमज़ोर जानवर से जो हमेशा ही रेवड़ के पीछे रह जाता हो बवजह कमज़ोरी के या बवजह ज़्यादा उ़म्र हो जाने के और लंगड़े जानवर से।'' (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़ह़ाया, बाब मा यक्रहू मिनज़्ज़ह़ाया : 2803; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत में अबू ह़मीद रईनी मज्हूल रावी है। (अत्तक़रीब : 2/414) पस इन कुल उ़यूब वाले जानवरों की क़ुर्बानी नाजाइज़ है हाँ! अगर क़ुर्बानी के लिए सही सालिम बेऐब जानवर मुक़र्रर कर देने के बाद इत्तिफ़ाक़न उसमें कोई ऐसी बात आ जाए मस्लन लूला लंगड़ा वग़ैरह हो जाए तो ह़ज़रत इमाम शाफ़ेई (रह़.) के नज़दीक उसकी क़ुर्बानी बिला शुब्हा जाइज़ है। इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) इसके ख़िलाफ़ हैं। इमाम शाफ़ेई (रह़.) की दलील वह ह़दीस है जो मुस्नद अह़मद में ह़ज़रत अबू सईद (रज़ि.) से मरवी है कि मैंने क़ुर्बानी के लिए जानवर ख़रीदा, उस पर एक भेड़िए ने ह़मला कर दिया और उसकी रान का बोटा तोड़ लिया, मैंने हुज़ूर (ﷺ) से वाक़िया बयान किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम उसी जानवर की क़ुर्बानी कर सकते हो।'' (अह़मद : 3/32; इब्ने माजा, किताबुल अज़ाह़ी, बाब मनिश्तरा ज़ह़यतन फ़अस़ाबहा इन्दहू शैअ : 3146; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में जाबिर बिन यज़ीद

जुअफ़ी ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 1/123) पस ख़रीदते वक़्त जानवर का फ़रबा होना तैयार होना बेऐब होना चाहिए। जैसे हुज़ूर (ﷺ) का हुक्म है कि आँख कान देख लिया करो। (इब्ने माजा, किताबुल अज़ाही, बाब मा यकरहू अंय्युज़्हा बिही : 3143; व सनदुहू हसन) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने एक निहायत ही उम्दा ऊँट क़ुर्बानी के लिए नामज़द किया। लोगों ने उसकी क़ीमत तीन सौ अशरफ़ी लगाई तो आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मसला पूछा कि क्या अगर आप इजाज़त दें तो मैं इसे बेच दूँ और इसकी क़ीमत से और जानवर बहुत से ख़रीद लूँ और उन्हें अल्लाह की राह में क़ुर्बान करूँ। आप (ﷺ) ने मना फ़र्मा दिया और हुक्म दिया कि इसी को अल्लाह की राह में ज़िब्ह करो।'' (अहमद : 2/145; अबूदाऊद, किताबुल मनासिक बाब तब्दीलुल हद्य : 1756; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; जहम या सहम रावी ज़ईफ़ है।)

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं क़ुर्बानी के ऊँट शआइरल्लाह में से हैं। मुहम्मद बिन अबी मूसा फ़र्माते हैं अरफ़ात में ठहरना और मुज़दलिफ़ा और रमी जिमार और सर मुँडवाना और क़ुर्बानी के ऊँट यह सब शआइरल्लाह हैं। इब्ने अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं इन सबसे बढ़कर बैतुल्लाह है। फिर फ़र्माता है इन जानवरों के बालों में ऊन में तुम्हारे लिए फ़वाइद हैं इन पर तुम सवार होते हो, इनकी खालें तुम्हारे लिए कारआमद हैं, यह सब एक मुक़र्ररा वक़्त तक यानी जब तक इसे राहे लिल्लाह नहीं किया। (तब्री : 18/623) इनका दूध पियो, इनसे नस्लें हासिल करो जब क़ुर्बानी के लिए मुक़र्रर कर दिया फिर वह अल्लाह की चीज़ हो गया। और बुज़ुर्ग कहते हैं अगर ज़रूरत हो तो अब भी सवारी ले सकता है।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''एक शख़्स को अपनी क़ुर्बानी का जानवर हाँकते हुए देखकर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इस पर सवार हो जाओ, उसने कहा हुज़ूर (ﷺ)! मैं इसे क़ुर्बानी की निय्यत का कर चुका हूँ। आप (ﷺ) ने दूसरी या तीसरी बार फ़र्माया, अफ़सोस! बैठ क्यूँ नहीं जाता।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब रुकूबुल बुदन : 1689; सहीह मुस्लिम : 1322; तिर्मिज़ी : 911; इब्ने माजा : 3104)

सहीह मुस्लिम में है ''जब ज़रूरत और हाजत हो तो सवार हो जाया करो। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब जवाज़ु रुकूबुल बुदना : 1324) एक शख़्स की क़ुर्बानी की ऊँटनी ने बच्चा दिया तो हज़रत अली (रज़ि.) ने उसे हुक्म दिया कि उसको दूध पेट भरकर पी लेने दे फिर भी अगर बच रहे तो ख़ैर अपने काम में ला और क़ुर्बानी वाले दिन इसे और इस बच्चे दोनों को अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह कर दे।''

फिर फ़र्माता है इनकी क़ुर्बानगाह बैतुल्लाह है जैसे फ़र्मान है (هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ)(5/माइदा : 95) और आयत में है (وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ) (48/फ़तह : 25) बैतुल अतीक़ के मआनी इससे पहले अभी अभी बयान हो चुके हैं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं बैतुल्लाह का तवाफ़ करने वाला एहराम से हलाल हो जाता है दलील में यही आयत तिलावत की।

***

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۗ فَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ﴿٣٤﴾ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : ''हर उम्मत के लिए हमने इबादत के तरीक़े मुक़र्रर किये हैं ताकि वह उन चौपाये जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दे रखे हैं समझ लो कि तुम सबका मअबूद बरहक़ सिर्फ़ एक ही है तुम उसी के ताबेअ फ़र्मान हो जाओ। ऐ नबी! आजिज़ी करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दे। (34) उन्हें कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए उनके दिल थर्रा जाते हैं, उन्हें जो बुराई पहुँचे उस पर सब्र करते हैं नमाज़ों की हिफ़ाज़त व इक़ामत करने वाले हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है वह भी देते रहते हैं।'' (35)

क़ुर्बानी की अहमियत (आयत 34, 35) : फ़र्मान है कि कुल उम्मतों में हर मज़हब में हर गिरोह को हमने क़ुर्बानी का हुक्म दिया था उनके लिए एक दिन ईद का मुक़र्रर था, वह भी अल्लाह के नाम ज़बीहा करते थे सबके सब मक्के में अपनी क़ुर्बानियाँ भेजते थे ताकि क़ुर्बानी के चौपाये जानवरों के ज़िब्ह के वक़्त अल्लाह का नाम ज़िक्र करें।'' हुज़ूर (ﷺ) के पास भी दो भेड़े चितकबरे बड़े बड़े सींगों वाले लाए गए आपने उन्हें लिटाकर उनकी गर्दन पर पैर रखकर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर पढ़कर ज़िब्ह किया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ाही, बाब तक्बीरु इन्दज़्ज़िब्ह : 5565; सहीह मुस्लिम : 1966)

मुस्नद अहमद में है कि सहाबा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि यह क़ुर्बानियाँ क्या हैं? आप (ﷺ) ने जवाब दिया तुम्हारे बाप इब्राहीम (عليه السلام) की सुन्नत, पूछा हमें इसमें क्या मिलता है? फ़र्माया हर बाल के बदले एक नेकी। पूछा और ऊन का क्या हुक्म है? फ़र्माया ऊन के हर रूएँ के बदले एक नेकी।'' इसे इमाम इब्ने माजा भी लाए हैं। (अहमद : 4/368; इब्ने माजा, किताबुल अज़ाही, बाब सवाबुल अज़्हिया : 3127; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा) तुम सबका अल्लाह एक है भले शरीअत के कुछ अहकाम अदल बदल होते रहे लेकिन तौहीद में अल्लाह की यगानिगत में किसी रसूल को किसी नेक उम्मत को इख़्तिलाफ़ नहीं हुआ, सब अल्लाह की तौहीद और उसी की इबादत की तरफ़ तमाम जहान को बुलाते रहे, सब पर अव्वल वही यही नाज़िल होती रही पस तुम सब उसकी तरफ़ झुक जाओ, उसके होकर रहो, उसके अहकाम की पाबंदी करो उसकी इताअत में इस्तिहकाम करो, जो लोग मुत्मइन हैं जो मुतवाज़ेअ हैं जो तक़्वा वाले हैं जो ज़ुल्म से बेज़ार हैं, मज़्लूमी की हालत में बदला लेने के ख़ोगर नहीं, मर्ज़ी मौला रज़ाए रब पर राज़ी हैं, उन्हें ख़ुशख़बरियाँ सुना दें वह मुबारकबाद के क़ाबिल हैं, जो ज़िक्रे इलाही सुनते ही दिल नर्म करके ख़ौफ़े रब्बानी से पुर करके रब की तरफ़ झुक जाते हैं। कठिन कामों पर सब्र करते हैं मुसीबतों पर सब्र करते हैं। इमाम हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं वल्लाह! अगर तुमने सब्रो सिहार की आदत न डाली तो तुम बर्बाद कर दिये जाओगे। (वल मुक़ीमी) की

क़िराअत इज़ाफ़त के साथ तो जुम्हूर की है लेकिन इब्ने सुमैक़ा ने (वल मुक़ीमीन) पढ़ा है और (अस्सलात) का ज़बर पढ़ा है। इमाम हसन (रह.) ने पढ़ा तो है नून के हज़फ़ और इज़ाफ़त के साथ लेकिन (अस्सलात) का ज़बर पढ़ा है। और फ़र्माते हैं कि नून का हज़फ़ यहाँ पर बवजह तख़फ़ीफ़ के है क्यों कि अगर बवजह इज़ाफ़त माना जाए तो उसका ज़ेर लाज़िम है और हो सकता है कि बवजह क़ुर्ब के हो मतलब यह है कि फ़रीज़ा रब्बानी के पाबन्द हैं और अल्लाह के हक़ के अदा करने वाले हैं और अल्लाह का दिया हुआ देते रहते हैं अपने घराने के लोगों को फ़क़ीरों मोहताजों को और तमाम मख़्लूक़ को जो भी ज़रूरत मंद हों सबके साथ सुलूक व एहसान से पेश आते हैं, अल्लाह की हुदूद की पूरी हिफ़ाज़त करते हैं, मुनाफ़िक़ों की तरह नहीं कि एक काम करें तो एक को छोड़ दें। सूरह तौबा में भी यही सिफ़तें बयान की हैं और वहीं पूरी तफ़्सीर भी बिहम्दिल्लाह! हम कर आए हैं।

***

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٣٦

तर्जुमा : ''क़ुर्बानी के ऊँट हमने तुम्हारे लिए अल्लाह तआला के निशानात मुक़र्रर कर दिये हैं उनमें तुम्हें नफ़ा है पस उन्हें अल्लाह का नाम पढ़कर नहर करो फिर जब उनके पहलू ज़मीन से लग जाएँ तो उसे ख़ुद भी खाओ और मिस्कीन सवाल से रुकने वालों और सवाल करने वालों को भी खिलाओ इसी तरह हमने चौपायों को तुम्हारे मातहत कर रखा है कि तुम शुक्रगुज़ारी करो।'' (36)

क़ुर्बानी के फ़ज़ाइल (आयत 36) : यह भी अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने जानवर पैदा किये और उन्हें अपने नाम पर क़ुर्बान करने और अपने घर बतौर क़ुर्बानी के पहुँचाने का हुक्म फ़र्माया और उन्हें शआइरल्लाह क़रार दिया और हुक्म फ़र्माया (لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ) (5/माइदा : 2) न तो अल्लाह के इन अज़्मत वाले निशानात की बेअदबी करो, न हुर्मत वाले महीनों की गुस्ताख़ी करो, आख़िर तक। पस हर ऊँट गाय जो क़ुर्बानी के लिए मुक़र्रर कर दिया जाए वह बुद्न में दाख़िल है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब बयानु वुजूहुल एहराम... : 1213; अबूदाऊद : 2809; तिर्मिज़ी : 904; इब्ने माजा : 3132; इब्ने हिब्बान : 7006; बैहक़ी : 5/168) भले कुछ लोगों ने सिर्फ़ ऊँट को ही बुद्न कहा है लेकिन सही यह है कि ऊँट तो है ही गाय भी इसमें शामिल है। सहीह मुस्लिम में रिवायत है कि ''हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया कि हम ऊँट में सात लोग शरीक हो जाएँ और गाय में भी सात आदमी शिर्कत कर लें।'' इमाम इस्हाक़ बिन राहवे (रह.) वग़ैरह तो फ़र्माते हैं इन दोनों जानवरों में दस दस आदमी शरीक हो सकते हैं। मुस्नदे अहमद में और सुनन नसाई में ऐसी हदीस भी आई है, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माया उन जानवरों में तुम्हारा आख़िरत का

फ़ायदा है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''बक़र ईद वाले दिन इंसान का कोई अमल अल्लाह के नज़दीक क़ुर्बानी से ज़्यादा पसंदीदा नहीं , जानवर क़ियामत के दिन अपने सींगों खुरों और बालों समेत इंसान में पेश किया जाएगा। याद रखो क़ुर्बानी के ख़ून का क़तरा ज़मीन पर गिरने से पहले अल्लाह तआला के यहाँ पहुँच जाता है पस ठण्डे दिल से क़ुर्बानियाँ करो।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल अज़ाही, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिल अज़्हिया : 1493; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबुल मसना रावी ज़ईफ़ है। इब्ने हिब्बान : 3126) हज़रत सुफ़्यान सौरी (रह.) तो क़र्ज़ लेकर भी क़ुर्बानी किया करते थे और लोगों के पूछने पर फ़र्माते कि अल्लाह तआला फ़र्माता है इसमें तुम्हारा भला है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''किसी ख़र्च का फ़ज़्ल अल्लाह तआला के नज़दीक बनिस्बत इस ख़र्च के जो बक़रा ईद वाले दिन की क़ुर्बानी पर किया जाए हर्गिज़ नहीं।'' (दारे क़ुत्नी : 4/282; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, इसकी सनद में इब्राहीम बिन यज़ीद ख़ौज़ी मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 1/75; रक़म : 254) पस अल्लाह तआला फ़र्माता है तुम्हारे लिए इन जानवरों में सवाब है, नफ़ा है, ज़रूरत के वक़्त दूध पी सकते हो, सवार हो सकते हो, फिर इनकी क़ुर्बानी के वक़्त अपना नाम पढ़ने की हिदायत करता है। हज़रत जाबिर (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मैंने ईदुल अज़्हा की नमाज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ पढ़ी, नमाज़ से फ़राग़त पाते ही आप (ﷺ) के सामने भेड़ लाया गया जिसे आप (ﷺ) ने (बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर) पढ़कर ज़िब्ह किया फिर कहा ऐ अल्लाह! यह मेरी तरफ़ से है और मेरी उम्मत में से जो क़ुर्बानी न कर सके उसकी तरफ़ से है।'' (अहमद : 3/356; अबूदाऊद, किताबुज़्ज़हाया, बाब फ़िश्शाति युज़्हा बिहा अन जमाअत : 2810; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 1521; अहमद : 3/362; हाकिम : 4/229; बैहक़ी : 4/285) ''फ़र्माते हैं ईद वाले दिन आप (ﷺ) के पास दो भेड़े लाए गए, उन्हें क़िब्ला रुख़ करके आप (ﷺ) ने (वज्जहतु वज्हिया लिल्लज़ी फ़तरस्समावाति वल अर्ज़ा हनीफ़व्वंमा अना मिनल मुश्रिकीन. इन्ना सलाती व नुसुकी व महयाया व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन. ला शरीक लहू वबि ज़ालिका उमिर्तु व अना अव्वलुल मुस्लिमीन, अल्लाहुम्मा मिन्का व लका अन मुहम्मदिव्वं उम्मतिही) पढ़कर (बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर) कहकर ज़िब्ह कर डाला।'' (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़हाया, बाब मा यस्तहिब मिनज़्ज़हाया : 2795; वहुव हसन; इब्ने माजा : 3121)

हज़रत अबू राफ़ेअ (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''क़ुर्बानी के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) दो भेड़े मोटे ताज़े तैयार उम्दा बड़े सींगों वाले चितकबरे ख़रीदते, जब नमाज़ पढ़कर ख़ुत्बे से फ़राग़त पाते एक जानवर आप (ﷺ) के पास लाया जाता आप (ﷺ) वहीं ईदगाह में ही ख़ुद अपने हाथ से ज़िब्ह करते और फ़र्माते अल्लाह तआला यह मेरी उम्मत की तरफ़ से है जो भी तौहीद व सुन्नत का गवाह है फिर दूसरा जानवर हाज़िर किया जाता जिसे ज़िब्ह करके फ़र्माते यह मुहम्मद और आले मुहम्मद (ﷺ) की तरफ़ से है फिर दोनों का गोश्त मिस्कीनों को भी देते और आप (ﷺ) और आप (ﷺ) के घर वाले भी खाते।'' (अहमद : 6/8; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस रिवायत में अली बिन हुसैन का अबू राफ़ेअ से सुनना साबित नहीं।)

(सवाफ़्फ़) के मअनी इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ऊँट को तीन पैरों पर खड़ा करके उसका बायाँ हाथ बाँधकर (बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाहु अल्लाहुम्म मिन्क व लका) पढ़कर उसे नहर करने के किये हैं। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने एक शख़्स को देखा कि उसने अपने ऊँट को नहर करने के लिए

बिठाया है तो आपने फ़र्माया, इसे खड़ा कर दे और इसका पैर बाँधकर इसे नहर कर, यही सुन्नत है अबुल क़ासिम (ﷺ) की। (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब नहरुल इबिल मुक़ीदा : 1713; सहीह मुस्लिम : 1320; अबूदाऊद : 1768; अहमद : 2/3; इब्ने हिब्बान : 5903) हज़रत जाबिर (रज़ि.) फ़र्माते हैं, हुज़ूर (ﷺ) और आप (ﷺ) के सहाबा ऊँट का एक पैर बाँधकर तीन पैर पर खड़ा करके ही नहर करते थे। (अबूदाऊद, किताबुल मनासिक, बाब कैफ़ा तुन्हरुल बुद्न : 1767; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू ज़ुबेर और इब्ने जुरैज दोनों रावी मुदल्लस हैं और सिमाअ की तसरीह नहीं है।) हज़रत सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह (रह.) ने सुलेमान बिन अ़ब्दुल मलिक से फ़र्माया था कि बाएँ तरफ़ से नहर किया करो। हज्जतुल वदाअ का बयान करते हुए हज़रत जाबिर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने तरेसठ ऊँट अपने दस्ते मुबारक से नहर किये आप (ﷺ) के हाथ में हरबा था, जिससे आप (ﷺ) ज़ख़्मी कर रहे थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब हज्जतुन्नबी (ﷺ) : 1218) इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िराअत में (सवाफ़्फ़ुन) ही यानी खड़े करके पैर बाँधकर। सवाफ़्फ़ के मअनी ख़ालिस के भी किये गए हैं, यानी जिस तरह जाहिलियत के ज़माने में अल्लाह के साथ दूसरों को भी शरीक करते थे तुम न करो सिर्फ़ अल्लाह वाहिद के नाम पर ही क़ुर्बानियाँ करो। फिर जब यह ज़मीन पर गिर पड़ें यानी नहर हो जाएँ, ठण्डे पड़ जाएँ तो ख़ुद खाओ औरों को भी खिलाओ, नेज़ा मारते ही टुकड़े काटने शुरू न करो, जब तक रूह न निकल जाए और ठण्डा न पड़ जाए, चुनाँचे एक हदीस में भी आया है कि "रूहों के निकालने में जल्दी न करो।" (दारे क़ुत्नी : 4/283; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा) सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि "अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ सलूक करना लिख दिया है। दुश्मनों को मैदाने जंग में क़त्ल करते वक़्त भी नेक सलूक रखो और जानवरों को ज़िब्ह करने के वक़्त अच्छी तरह से नर्मी के साथ ज़िब्ह करो, छुरी तेज़ कर लिया करो और जानवर को तक्लीफ़ न दिया करो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सैद, बाब अल्अम्रु बि इहसानिज़्ज़िब्ह वल क़त्ल : 1955; अबूदाऊद : 2815; तिर्मिज़ी : 1409; इब्ने माजा : 1370; इब्ने हिब्बान : 5882; अहमद : 4/123) फ़र्मान है कि "जानवर में जब तक जान है और उसके जिस्म का कोई हिस्सा काट लिया जाए उसका खाना हराम है।" (अहमद : 5/218; अबूदाऊद, किताबुल अज़ाही, बाब इज़ा क़ुतिआ मिनस्सैदि क़ित्अतन : 2858; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 1480; हाकिम : 4/239; बैहक़ी : 1/23; दारे क़ुत्नी : 548; दारमी : 18) फिर फ़र्माया, इसे ख़ुद खाओ कुछ सलफ़ तो फ़र्माते हैं , यह खाना मुबाह है। इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते हैं मुस्तहब है और लोग कहते हैं वाजिब है। और मिस्कीनों को भी ख़्वाह वह घरों में बैठने वाले हों ख़्वाह दर बदर सवाल करने वाले। यह भी मतलब है कि क़ानेअ तो वह है जो सब्र से घर में बैठा रहे और मुअ़त्तर वह है जो इधर उधर आए जाए लेकिन ताहम सवाल न करे। (तब्री : 18/636) यह भी कहा गया है कि क़ानेअ वह है जो सिर्फ़ सवाल पर बस करे और मुअ़त्तर वह है जो सवाल तो न करे लेकिन अपनी आजिज़ी मिस्कीनी का इज़्हार करे। यह भी मरवी है कि क़ानेअ वह है जो मिस्कीन हो आने जाने वाला और मुअ़तर से मुराद दोस्त और नातवाँ लोग और वह पड़ौसी जो भले ईमानदार हों लेकिन तुम्हारे यहाँ आए जाए उसे वह देखते हों वह भी हैं जो तम्अ रखते हों और वह भी जो अमीर फ़क़ीर मौजूद हों। यह भी कहा गया है कि क़ानेअ से मुराद अहले मक्का हैं। इमाम इब्ने जरीर (रह.) का फ़र्मान है कि क़ानेअ से मुराद तो साइल है क्योंकि वह अपना हाथ सवाल के लिए बढ़ाता है और मुअ़तर से

मुराद वह जो हेरे फेरे करे कि कुछ मिल जाए। कुछ लोगों का ख़्याल है कि कुर्बानी के गोश्त के तीन हिस्से करने चाहिएँ, तिहाई अपने खाने को तिहाई दोस्तों के देने को तिहाई सदक़ा करने को। हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मैंने तुम्हें क़ुर्बानी के गोश्त को जमा करके रखने से मना कर दिया था कि तीन दिन से ज़्यादा तक न रोका जाए, अब मैं इजाज़त देता हूँ कि खाओ जमा करो जिस तरह चाहो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल अज़ाही, बाब बयानु मा काना मिनन्नही अन उकुले लुहूमिल अज़ाही बअदा सलास... : 1977; तिर्मिज़ी : 1510) और रिवायत में है कि "खाओ जमा करो" और सदक़ा करो। (सहीह मुस्लिम, किताबुल अज़ाही, बाब बयानु मा काना मिनन्नही अन उकुले लुहूमिल अज़ाही बअदा सुलास... : 1971; अबूदाऊद : 2812; इब्ने हिब्बान : 5927) और रिवायत में है "खाओ खिलाओ और अल्लाह की राह में दो।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ाही, बाब मा युअकल मिन लुहूमिल अज़ाही वमा युतज़व्वद मिन्हा : 5569) कुछ लोग कहते हैं क़ुर्बानी करने वाला आधा गोश्त आप खाए और बाक़ी आधा सदक़ा कर दे, क्यों कि क़ुरआन में फ़र्माया है ख़ुद खाओ और मोहताज फ़क़ीर को खिलाओ और हदीस में यह भी है "कि खाओ जमा ज़ख़ीरा करो और राहे अल्लाह में दो।" अब जो शख़्स अपनी क़ुर्बानी का सारा गोश्त ख़ुद ही खा जाए तो एक क़ौल यह भी मरवी है कि उस पर कुछ हर्ज नहीं। कुछ कहते हैं उस पर वैसी ही क़ुर्बानी या उसकी क़ीमत की अदायगी है कुछ कहते हैं आधी क़ीमत दे कुछ आधा गोश्त, कुछ कहते हैं उसके हिस्सों में से छोटे से छोटे हिस्से की क़ीमत उसके ज़िम्मे है, बाक़ी माफ़ है। खाल केबारे में मुस्नद अहमद में हदीस है कि "खाओ और फ़िल्लाह दो उसके चमड़ों से फ़ायदा उठाओ लेकिन उन्हें बेचो नहीं।" (अहमद : 4/15; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/26) कुछ उलमा ने बेचने की रुख़्सत दी है कुछ कहते हैं ग़रीबों में बांट दिये जाएँ। (मसला)

बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) कहते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "सबसे पहले हमें उस दिन नमाज़े ईद अदा करनी चाहिए फिर लौटकर क़ुर्बानियाँ करनी चाहिएँ जो ऐसा करे उसने सुन्नत की अदायगी की और जिसने नमाज़ से पहले ही क़ुर्बानी कर ली उसने गोया अपने घरवालों के लिए गोश्त जमा कर लिया, उसे क़ुर्बानी से कोई लगाव नहीं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईदैन, बाब अल्ख़ुत्बतु बअदल ईद : 965; सहीह मुस्लिम : 1961; अबूदाऊद : 2801; तिर्मिज़ी : 1508; अहमद : 4/303; इब्ने हिब्बान : 5906) इसीलिए इमाम शाफ़ेई (रह.) और उलमा की एक जमाअत का ख़्याल है कि क़ुर्बानी का पहला वक़्त उस वक़्त होता है जब सूरज निकल आए। और इतना वक़्त गुज़र जाए कि नमाज़ हो ले और दो ख़ुत्बे हो लें। इमाम अहमद (रह.) के नज़दीक उसके बाद का इतना वक़्त भी कि इमाम ज़िब्ह कर ले क्यों कि सहीह मुस्लिम में है "इमाम जब तक क़ुर्बानी न करे तुम क़ुर्बानी न करो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल अज़ाही, बाब सिन्नुल अज़्हिया : 1964) इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक तो गाँव वालों पर ईद की नमाज़ ही नहीं, इसलिए कहते हैं कि वह तुलूए फ़ज्र के बाद ही क़ुर्बानी कर सकते हैं हाँ! शहरी लोग जब तक इमाम नमाज़ से फ़ारिग़ न हो ले, क़ुर्बानी न करें, वल्लाहु आलम! फिर यह भी कहा गया है कि सिर्फ़ ईद वाले दिन ही क़ुर्बानी करना मशरूअ है और क़ौल है कि शहर वालों के लिए तो यही है क्योंकि यहाँ क़ुर्बानियाँ आसानी से मिल जाती हैं लेकिन गाँव वालों के लिए ईद का दिन और उसके बाद के अय्यामे तशरीक़। यह भी कहा गया है कि

दसवीं और ग्यारहवीं तारीख़ सबके लिए क़ुर्बानी की है, यह भी कहा गया है कि ईद के बाद के दो दिन और यह भी कहा गया है कि ईद का दिन और उसके बाद के तीन दिन जो अय्यामे तशरीक़ के हैं। इमाम शाफ़ेई (रह.) का मज़हब यही है क्यों कि हज़रत जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "अय्यामे तशरीक़ सब क़ुर्बानी के हैं।" (अहमद : 4/82; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; बैहक़ी : 5/295; इस रिवायत की तमाम सनदें ज़ईफ़ हैं।) कहा गया है कि क़ुर्बानी के दिन ज़िल हिज्ज के ख़ात्मे तक हैं लेकिन यह क़ौल ग़रीब है। फिर फ़र्माता है कि इसी वजह से हमने इन जानवरों को तुम्हारा फ़र्मांबरदार और ज़ेरे असर कर दिया है कि जब तुम चाहो सवारी लो जब चाहो दूध निकालो जब चाहो ज़िब्ह करके गोश्त खा लो। जैसे सूरह यासीन में (اَوَ لَمْ يَرَوْا) से (اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ)(36/यासीन : 71 से 73) तक बयान हुआ है। यही फ़र्मान यहाँ है कि अल्लाह की इस नेअमत का शुक्र अदा करो और नाशुक्री नाक़द्री न करो।

***

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

तर्जुमा : "अल्लाह तआला को क़ुर्बानियों के गोश्त नहीं पहुँचते, न उनके ख़ून बल्कि उसे तो तुम्हारे दिल की परहेज़गारी पहुँचती है। इसी तरह अल्लाह ने उन जानवरों को तुम्हारा मुतीअ कर दिया है कि तुम उसकी रहनुमाई के शुक्रिये में उसकी बड़ाइयाँ बयान करो। नेक लोगों को ख़ुशख़बरी सुना दे।"(37)

तक़्वा की फ़ज़ीलत (आयत 37) : इर्शाद होता है कि क़ुर्बानियों के वक़्त अल्लाह का नाम बड़ाई से लिया जाए इसीलिए क़ुर्बानियाँ मुक़र्रर हुई हैं कि ख़ालिक़ राज़िक़ उसे माना जाए न कि क़ुर्बानियों के गोश्त व ख़ून से अल्लाह को कोई नफ़ा होता हो। अल्लाह तआला सारी मख़्लूक़ से ग़नी और कुल बंदों से बेनियाज़ है। जाहिलियत की बेवक़ूफ़ियों में से एक यह भी थी कि क़ुर्बानी के जानवर का गोश्त अपने बुतों के सामने रख देते थे और उन पर ख़ून का छींटा देते थे। यह भी दस्तूर था कि बैतुल्लाह पर क़ुर्बानी का ख़ून छिड़कते। मुसलमान होकर सहाबा (रज़ि.) ने ऐसा करने के बारे में सवाल किया जिस पर यह आयत उतरी कि अल्लाह तो तक़्वा देखता है उसी को क़बूल करता है और उसी पर बदला इनायत करता है। चुनाँचे सहीह हदीस में है कि "अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता, न उसकी नज़रें तुम्हारे माल पर हैं बल्कि उसकी नज़रें तुम्हारे दिलों पर और तुम्हारे आमाल पर है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब तहरीमु ज़ुल्मिल मुस्लिम : 34/2564) और हदीस में है कि "ख़ैरात सदक़ा साइल के हाथ में पड़े उससे पहले अल्लाह के हाथ में चला जाता है, क़ुर्बानी के जानवर के ख़ून का क़तरा अलग होते ही क़ुर्बानी मक़्बूल हो जाती है, वल्लाहु आलम! आमिर शअबी (रह.) से क़ुर्बानी की खालों की निस्बत पूछा गया तो फ़र्माया अल्लाह को

गोश्त व ख़ून नहीं पहुँचता अगर चाहो बेच दो अगर चाहो ख़ुद रख लो अगर चाहो राहे लिल्लाह दे दो। इसीलिए अल्लाह तआला ने उन जानवरों को तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया है कि तुम अल्लाह के दीन और उसकी शरीअत की राह पाकर उसकी मर्ज़ी के काम करो और नामर्ज़ी के कामों से रुक जाओ और उसकी अज़्मत व किब्रियाई बयान करो जो लोग नेक हैं हुदूदे इलाही के पाबंद हैं शरीअत के आमिल हैं रसूलों को सच्चा मानते हैं वह मुस्तहिक़े मुबारकबाद और लायक़े ख़ुशख़बरी हैं। (मसला) इमाम अबू हनीफ़ा, मालिक और सौरी (रह.) का क़ौल है कि जिसके पास निसाबे ज़कात जितना माल हो उस पर क़ुर्बानी वाजिब है, इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के नज़दीक यह शर्त भी है कि वह अपने घर में मुक़ीम हो चुनाँचे एक सहीह हदीस में है कि ''जिसे वुस्अत हो और कुर्बानी न करे तो वह हमारी ईदगाह के क़रीब भी न आए।'' (अहमद : 2/321; इब्ने माजा : 3123; व सनदुहू हसन; हाकिम : 2/389; दारे कुत्नी : 4/285) इस रिवायत में ग़राबत है और इमाम अहमद (रह.) इसे मुंकर बतलाते हैं। इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''रसूलुल्लाह (ﷺ) बराबर दस साल तक हर साल कुर्बानी करते रहे।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल अज़ाही, बाब अद्दलीलु अला अनिल अज़्हियतु सुन्ना : 1507; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हज्जाज बिन अरतात ज़ईफ़ मुदल्लस रावी है। अहमद : 2/38) इमाम शाफ़ेई (रह.) और हज़रत इमाम अहमद (रह.) का मज़हब है कि कुर्बानी वाजिब व फ़र्ज़ नहीं बल्कि मुसतहब है क्योंकि हदीस में आया है कि ''माल में ज़कात के सिवा और कोई फ़र्ज़ियत नहीं।'' (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़कात, बाब मा उद्दिया ज़कातुहू लैस बि कंज़ : 1789; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू हम्ज़ा मैमून अअवर रावी ज़ईफ़ है।) यह भी रिवायत पहले बयान हो चुकी है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी तमाम उम्मत की तरफ़ से क़ुर्बानी की'' पस वुजूब साक़ित हो गया। हज़रत अबू शुरैह (रह.) फ़र्माते हैं मैं हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) के पड़ौस में रहता था यह दोनों बुज़ुर्ग कुर्बानी नहीं करते थे इस डर से कि लोग उनकी इक़्तिदा करेंगे, कुछ लोग कहते हैं कि कुर्बानी सुन्नते किफ़ाया है जबकि महल्ले में से या गली में से या घर में से किसी एक ने कर ली बाक़ी सब पर से हट गई इसलिए कि मक़्सद सिर्फ़ शिआर का ज़ाहिर करना है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मैदाने अरफ़ात में फ़र्माया, ''हर घरवालों पर हर साल कुर्बानी है और अतीरा है। जानते हो अतीरा क्या है? वही जिसे तुम रज्बिया कहते हो।'' (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़हाया, बाब मा जाअ फ़ी ईजाबिल अज़ाही : 2788; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू रमला मज्हूलुल हाल रावी है। तिर्मिज़ी : 1518; नसाई : 4229; इब्ने माजा : 3125) इसकी सनद मे कलाम किया गया है। हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) फ़र्माते हैं सहाबा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की मौजूदगी में अपने पूरे घर की तरफ़ से एक बकरी राहे लिल्लाह ज़िब्ह कर दिया करते थे और ख़ुद भी खाते औरों को भी खिलाते फिर लोगों ने उसमें वह कर लिया है जो तुम देख रहे हो। (तिर्मिज़ी, किताबुल अज़ाही, बाब मा जाअ अनिश्शअतिल वाहिदाति तुज्ज़ा अन अहलिल बैत : 1505; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 3147) हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रह.) अपनी और अपने घरवालो की तरफ़ से एक बकरी की कुर्बानी किया करते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अहकाम, बाब बैअतुस्सग़ीर : 7210) अब कुर्बानी के जानवर की उम्र का बयान मुलाहिज़ा हो। सहीह मुस्लिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''न ज़िब्ह करो मगर मुसन्ना (दँता हुआ) सिवाय इस सूरत के कि वह तुम पर भारी पड़ जाए तो फिर भेड़ का बच्चा भी छः माह का ज़िब्ह कर सकते हो।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल अज़ाही, बाब सिन्नुल

अज़्हिया : 1963; अबूदाऊद : 2741; अहमद : 3/312; मुस्नदे अबी यअला : 2324) ज़ोहरी (रह.) तो कहते हैं कि जिज़्आ यानी छः माह का कोई जानवर कुर्बानी में काम आ ही नहीं सकता और उसके बिलमुक़ाबिल औज़ाई (रह.) का मज़हब है हर जानवर का जिज़्आ काफ़ी है लेकिन यह दोनों क़ौल इफ़रात तफ़रीत वाले हैं जुम्हूर का मज़हब यह है कि ऊँट गाय बकरी तो वह जाइज़ है जो सिन्नी हो और भेड़ का छः माह का भी जाइज़ है। ऊँट तो सिनी (दँता हुआ) होता है जब पाँच साल करके छठे साल में लग जाए और गाय जब दो साल पूरे करके तीसरे में लग जाए और यह भी कहा गया है कि तीन गुज़ारकर चौथे में लग गई हो और बकरी का सिन्नी वह है जो दो साल गुज़ार चुका हो और जिज़्आ कहते हैं उसे जो साल भर का हो गया हो और कहा गया है जो दस माह का हो। एक क़ौल है जो आठ माह का हो, एक क़ौल है जो छः माह का हो, इससे कम मुद्दत का कोई क़ौल नहीं। इससे कम उम्र वाले को ह़मल कहते हैं जब तक कि उसकी पीठ पर बाल खड़े हों और बाल लेट जाएँ और दोनों जानिब झुक जाएँ तो उसे जिज़्आ कहा जाता है, वल्लाहु आलम!

***

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾ أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "सुन रखो यक़ीनन सच्चे मोमिनों के दुश्मनों को ख़ुद अल्लाह तआला हटा देगा कोई ख़ियानत करने वाला नाशुक्रा अल्लाह को हर्गिज़ पसंद नहीं। (38) जिन मुसलमानों से काफ़िर जंग कर रहे हैं उन्हें भी मुक़ाबले की इजाज़त दी जाती है क्योंकि वह मज़्लूम हैं बेशक उनकी मदद पर अल्लाह क़ादिर है। (39) यह वह हैं जिन्हें बिला वजह उनके घरों से निकाला गया सिर्फ़ उनके इस क़ौल पर कि हमारा परवरदिगार फ़क़त अल्लाह है अगर अल्लाह तआला लोगों को आपस में एक दूसरे से न हटाता रहता तो इबादतख़ाने और गिरजे और मस्जिदें और यहूदियों के मअबद और मस्जिदें भी वीरान कर दी जातीं जहाँ अल्लाह का नाम बकसरत लिया जाता है। जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह भी ज़रूर उसकी मदद करेगा, बेशक अल्लाह तआला बड़ी कुव्वतों वाला बड़े ग़ल्बे वाला है।"(40)

(आयत 38 से 40) : अल्लाह तआला अपनी तरफ़ से ख़बर दे रहा है कि जो उसके बंदे उस पर भरोसा रखें उसकी तरफ़ झुकते रहें उन्हें वह अपनी अमान नसीब फ़र्माता है, शरीरों की बुराइयाँ दुश्मनों की बदियाँ ख़ुद ही उनसे दूर कर देता है अपनी मदद उन पर नाज़िल फ़र्माता है अपनी हिफ़ाज़त में उन्हें रखता है जैसे फ़र्मान (اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ) (39/जुमर : 36) यानी क्या अल्लाह अपने बंदे को काफ़ी नहीं?

और आयत में है (وَ مَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ) (65/तलाक़ : 3) जो अल्लाह पर भरोसा रखे अल्लाह आप इसे काफ़ी है, आख़िर तक। दग़ाबाज़ नाशुक्रे अल्लाह की मुहब्बत से महरूम हैं अपने अहदो पैमान पूरे न करने वाले अल्लाह की नेअमतों के मुंकिर अल्लाह के रहम से दूर हैं।

जिहाद की इजाज़त और उसका पसेमंज़र : इब्ने अब्बास(रज़ि.) कहते हैं जब हुज़ूर (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाब मदीने से भी निकाले जाने लगे और कुफ़्फ़ार मक्का से चढ़ दौड़े तब जिहाद की इजाज़त की यह आयत उतरी। (तब्री : 18/643) बहुत से सलफ़ से मंकूल है कि जिहाद की यह पहली आयत है जो कुरआन में उतरी। (तब्री : 18/643) इससे कुछ बुज़ुर्गों ने इस्तिदलाल किया है कि यह सूरत मदनी है। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मक्के से हिज्रत की अबूबक्र (रज़ि.) की ज़ुबान से निकला कि अफ़सोस! इन कुफ़्फ़ार ने अल्लाह के पैग़म्बर को वतन से निकाला यक़ीनन यह तबाह होंगे फिर यह आयत उतरी तो सिद्दीक़ (रज़ि.) ने जान लिया कि जंग होकर रहेगी। (अहमद : 1/216; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिल हज्ज : 3171; वहुव सहीहुन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11345) अल्लाह अपने मोमिन बन्दों की मदद पर क़ादिर है अगर चाहे तो बग़ैर लड़े भिड़े उन्हेंग़ालिब कर दे लेकिन वह आज़माना चाहता है इसलिए हुक्म दिया कि उन कुफ़्फ़ार की गर्दनें मारो, आख़िर तक। और आयत में है फ़र्माया (قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ) (9/तौबा : 14) इनसे लड़ो अल्लाह इन्हें तुम्हारे हाथों सज़ा देगा और रुस्वा करेगा और उन पर तुम्हें ग़ालिब करेगा और मोमिनों के हौसले निकालने का वक़्त देगा कि उनके कलेजे ठण्डे हो जाएँ साथ ही जिसे चाहेगा तौबा की तौफ़ीक़ देगा, अल्लाह इल्म व हिक्मत वाला है। और आयत में है (اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَ لَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ) (9/तौबा : 16) यानी क्या तुमने यह सोच रखा है कि तुम छोड़ दिये जाओगे हालाँकि अब तक वह तो नहीं खुले जो मुजाहिद हैं और अल्लाह और रसूल और मुसलमानों के सिवा किसी से दोस्ती और यगानिगत नहीं करते समझ लो कि अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। और आयत में है क्या तुमने यह गुमान किया कि तुम जन्नत में चले जाओगे हालाँकि अब तक मुजाहिदीन साबिरीन दूसरों से मुम्ताज़ (अलग) नहीं हुए। (3/आले इमरान : 142) और आयत में है (وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ وَ نَبْلُوَاْ اَخْبَارَكُمْ) (47/मुहम्मद : 31) हम तुम्हें यक़ीनन आज़माएँगे यहाँ तक कि तुममें से ग़ाज़ी और सब्र करने वाले हमारे सामने ज़ाहिर हो जाएँ। इस बारे में और भी बहुत सी आयतें हैं। फिर फ़र्माया अल्लाह उनकी इम्दाद पर क़ादिर है और यही हुआ भी कि अल्लाह ने अपने लश्कर को दुनिया पर ग़ालिब कर दिया। (तब्री : 18/643) जिहाद को शरीअत ने जिस वक़्त मशरूअ किया वह वक़्त ही उसके लिए बिलकुल मुनासिब और निहायत ठीक था। जब तक कि हुज़ूर (ﷺ) मक्के में रहे मुसलमान बहुत ही कमज़ोर थे, तादाद में भी दस के मुक़ाबले में एक बमुश्किल बैठता, चुनाँचे जब लैलतुल उक़्बा में

अंसारियों ने रसूले करीम (ﷺ) के हाथ पर बेअत की तो उन्होंने कहा कि अगर हुज़ूर(ﷺ) हुक्म दें तो इस वक़्त मिना में जितने मुश्रिकीन जमा हैं उन पर शबख़ून मारें लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे अभी इसका हुक्म नहीं दिया गया, यह याद रहे कि यह बुज़ुर्ग सिर्फ़ अस्सी(80) से कुछ ऊपर थे। जब मुश्रिकों की बग़ावत बढ़ गई जब वह सरकशी में हद से गुज़र गए हुज़ूर (ﷺ) को सख़्त ईज़ाएँ देते देते अब आप (ﷺ) के क़त्ल करने के दर पे हो गए। आप (ﷺ) को जिला वतन (देश निकाला) करने के मंसूबे बनाने लगे, उसी तरह सहाबा किराम (रज़ि)पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़ दिये, बैकबीनी दो गोश वतन, माल, अस्बाब, अपनों ग़ैरों को छोड़कर जहाँ जिसका मौक़ा बना घबराकर चल दिया, कुछ तो हब्शा पहुँचे कुछ मदीने गए यहाँ तक कि ख़ुद आफ़ताबे रिसालत का तुलूअ भी मदीने में हुआ, अहले मदीना मुहम्मदी झण्डे तले जोश व ख़रोश से जमा हो गए। लश्करी सूरत मुरत्तब हो गई कुछ मुसलमान एक झण्डे तले दिखाई देने लगे क़दम टिकाने की जगह मिल गई, दुश्मनाने दीन से जिहाद के अहकाम नाज़िल हुए पस सबसे पहले यही आयत उतरी। इसमें बयान है कि यह मुसलमान मज़्लूम हैं, इनके घरबार इनसे छीन लिये गए हैं, बेवजह घर से बेघर कर दिये गए हैं, मक्का से निकाल दिये गए, मदीने में बेसरोसामानी में पहुँचे। (तब्री : 18/643) इनका कोई जुर्म सिवाए इसके न था कि सिर्फ़ अल्लाह के इबादतगुज़ार थे रब को एक मानते थे, अपना परवरदिगार सिर्फ़ अल्लाह को जानते थे। यह इस्तिस्ना मुन्क़तअ है भले मुश्रिकीन के नज़दीक तो यह अम्र इतना बड़ा जुर्म है जो हर्गिज़ किसी सूरत से माफ़ी के क़ाबिल नहीं। फ़र्मान है (يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَ اِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ) (60/मुम्तहिना : 1) तुम्हें और तुम्हारे रसूल को सिर्फ़ इस बिना पर निकालते हैं कि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, जो तुम्हारा हक़ीक़ी परवरदिगार है। ख़ंदक़ों वालों के क़िस्से में फ़र्माया (वमा नक़मू मिन्हुम इल्ला अंय्युअमिनू बिल्लाहिल अज़ीज़िल हमीद) यानी दरअसल इनका कोई क़सूर न था सिवाय इसके कि वह अल्लाह ग़ालिब मेहरबान ज़ी एहसान पर ईमान लाए थे। मुसलमान सहाबा (रज़ि.) ख़ंदक़ खोदते हुए अपने रजुज़ में कह रहे थे,

لاہم لو لا انت ما اہتدینا — ولا تصدقنا ولا صلینا

فانزلن سکینتہ علینا — وثبت الاقدام ان لاقینا

ان الا ولی قد بغوا علینا — اذا ارادوافتنتہ ابینا

ला हुम्म लौला अन्ता महतदैना वला तसद्दक़्ना वला सल्लैना

फ़अन्ज़िलन सकीनतन अलैना व सब्बिबिल अक़्दामा इल्ला क़ैना

इन्नल ऊला क़द बग़ौ अलैना इज़ा अरादू फ़ित्नतन अबैना

ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) भी इनकी मुवाफ़िक़त में थे और क़ाफ़िया का आख़िरी हर्फ़ आप (ﷺ) भी इनके साथ अदा करते और (अबैना) कहते हुए ख़ूब बुलंद आवाज़ करते। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी,

बाब ग़ज़्वा ख़ंदक़ वहियल अहज़ाब : 4106; सहीह मुस्लिम : 1803) फिर फ़र्माता है अगर अल्लाह तआला एक का इलाज दूसरे से न करता अगर हर सेर पर सवा सेर न होता तो ज़मीन पर शर्र फ़साद मच जाता, हर क़वी हर कमज़ोर को निगल जाता। ईसाई आबिदों के छोटे इबादतख़ानों को सवामेअ कहते हैं। (तब्री : 18/647) एक क़ौल यह भी है कि साबी मज़हब के लोगों की इबादतख़ानों का नाम है और कुछ कहते हैं मजूसियों के आतिशकदों को सवामेअ कहते हैं। मुक़ातिल (रह.) कहते हैं यह वह घर हैं जो रास्तों पर होते हैं (बियउन) उनसे बड़े मकानात होते हैं यह भी नसरानियों के आबिदों के इबादतख़ाने होते हैं। (तब्री : 18/648) कुछ कहते हैं यह यहूदियों के कनीसे हैं, सलवात के भी एक मअनी तो यही किये गए हैं। (तब्री : 18/649) कुछ कहते हैं मुराद गिरजा हैं, कुछ का क़ौल है साबी लोगों का इबादतख़ाना रास्तों पर जो इबादतघर अहले किताब के हों उन्हें सलवात कहा जाता है और मुसलमानों के हों उन्हें मसाजिद (तब्री : 18/650) (फ़ीहा) की ज़मीर का मरजअ मसाजिद है इसलिए कि सबसे पहले यही लफ़्ज़ है यह भी कहा गया है कि मुराद यह सब जगहें हैं यानी तारिकुद्दुनिया लोगों के सवामेअ नसरानियों के बियअ यहूदियों के सलवात और मुसलमानों की मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम ख़ूब लिया जाता है। (तब्री : 18/650)

कुछ उलमा का बयान है कि इस आयत में अक़ल से अक्सर की तरफ़ की तरक़्क़ी की सन्अत रखी गई है पस सबसे ज़्यादा आबाद सबसे बड़ा इबादतख़ाना जहाँ के आबिदों का क़सद सहीह नेक निय्यत अमले सालेह है वह मस्जिदें हैं। फिर फ़र्माया, अल्लाह अपने दीन के मददगारों का ख़ुद मददगार है जैसे फ़र्मान है (يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝) (47/मुहम्मद : 7) यानी अगर ऐ ईमानवालों! तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा, वह तुम्हें साबित क़दमी अता करेगा, कुफ़्फ़ार पर अफ़सोस है और उनके आमाल ग़ारत हैं। फिर अपने दो वस्फ़ बयान किये, क़वी होना कि सारी मख़्लूक़ को पैदा कर दिया, इज़्ज़त वाला होना कि सब उसके मातहत हर एक उसके सामने ज़लील व पस्त सब उसकी मदद के मोहताज वह सबसे बेनियाज़ जिसे वह मदद दे वह ग़ालिब जिस पर उसकी मदद हट जाए वह मग़लूब। फ़र्माता है (وَ لَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ۝) (37/साफ़्फ़ात : 171-172) यानी हमने तो पहले से ही अपने रसूलों से वादा लिया है कि इनकी यक़ीनी तौर पर मदद की जाएगी और यह कि हमारा लश्कर ही ग़ालिब आएगा। और आयत में है (كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيْ) (58/मुजादिला : 21) अल्लाह तआला कह चुका है कि मैं और मेरा रसूल ग़ालिब हैं बेशक अल्लाह तआला कुव्वत व इज़्ज़त वाला है।

***

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ

وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ

نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ اِبْرٰهِیْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْیَنَ ۚ وَ كُذِّبَ مُوْسٰى
فَاَمْلَیْتُ لِلْكٰفِرِیْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿٤٤﴾ فَكَاَیِّنْ مِّنْ قَرْیَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِیَ
ظَالِمَةٌ فَهِیَ خَاوِیَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِیْدٍ ﴿٤٥﴾ اَفَلَمْ یَسِیْرُوْا فِی
الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ یَّعْقِلُوْنَ بِهَاۤ اَوْ اٰذَانٌ یَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى
الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِیْ فِی الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : ''यह वह लोग हैं कि अगर हम ज़मीन में इनके पैर जमा दें तो यह पूरी पाबंदी से नमाज़ें अदा करें और ज़कात दें और अच्छे कामों का हुक्म करें और बुरे कामों से मना करें तमाम कामों का अंजाम अल्लाह के इख़्तियार में है। (41) अगर यह लोग तुझे झुठलाएँ तो इनसे पहले नूह (عليه السلام) की क़ौम और आद व समूद। (42) और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत (43) और मदयन वाले भी अपने अपने नबियों को झुठला चुके हैं। मूसा (عليه السلام) भी झुठलाए जा चुके हैं तो मैंने काफ़िरों को यूँ ही सी मोहलत दी, फिर धर दबोचा फिर मेरा अज़ाब कैसा हुआ? (44) बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने तह व बाला कर दिया इसलिए कि वह ज़ालिम थे पस वह अपनी छतों के बल औंधी पड़ी हैं और बहुत से आबाद कुएँ बेकार पड़े हैं और बहुत से पक्के और बुलंद महल वीरान पड़े हैं। (45) क्या इन्होंने ज़मीन में सैरो सियाहत नहीं की जो इनके दिल इन बातों के समझने वाले होते या कानों से ही इन वाक़ियात को सुन लेते। बात यह है कि सिर्फ़ आँखें ही अँधी नहीं होतीं बल्कि वह दिल अँधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।'' (46)

(आयत 41 से 46) : हज़रत उस्मान (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह आयत हमारे बारे में उतरी है हम बेसबब देश से निकाल दिये गए थे फिर हमें अल्लाह ने सल्तनत दी हमने नमाज़ रोज़ा की पाबंदी की भले अहकाम दिये और बुराई से रोक जारी की पस यह आयत मेरे और मेरे साथियो के बारे में है। अबुल आलिया (रह.) फ़र्माते हैं मुराद इससे अस्हाबे रसूल (ﷺ) हैं।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने अपने ख़ुत्बे में इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया, इसमें सिर्फ़ बादशाहों का बयान ही नहीं बल्कि बादशाह रिआया दोनों का बयान है, बादशाह पर तो यह है कि हुक़ूक़े इलाही तुमसे बराबर ले, अल्लाह के हक़ की कोताही के बारे में तुम्हें पकड़े और एक का हक़ दूसरे से दिलवाए और जहाँ तक मुम्किन हो तुम्हें सिराते मुस्तक़ीम समझाता रहे, तुम पर उसका हक़ यह है कि ज़ाहिर बातिन ख़ुशी ख़ुशी उसकी इताअत गुज़ारी करो। अतिया (रह.) फ़र्माते हैं इसी आयत का मज़्मून आयत (وَعَدَ

(اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ) (24/नूर : 55) में है। कामों का अंजाम अल्लाह के हाथ है उम्दा नतीजा परहेज़गारों का होगा हर नेकी का बदला उसी के यहाँ है।

अम्बिया (ﷺ) को झुठलाने का अंजाम : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को तसल्ली देता है कि मुंकिरों का इंकार आपके साथ कोई नई चीज़ नहीं। नूह (ﷺ) से लेकर मूसा (ﷺ) तक के तमाम नबियों का इंकार कुफ़्फ़ार लोग बराबर करते चले आ रहे हैं, दलाइल सामने थे, हक़ खुल चुका लेकिन मुंकिर लोग न माने। मैंने काफ़िरों को मोहलत दी कि यह सोच समझ लें अपने अंजाम पर ग़ौर कर लें लेकिन जब वह नमक हरामी से बाज़ न आए तो आख़िरकार मेरे अज़ाबों में गिरफ़्तार हुए, देख ले कि मेरी पकड़ कैसी बेपनाह साबित हुई, किस क़द्र दर्दनाक अंजाम हुआ। सलफ़ से मंक़ूल है कि फ़िरओन के ख़ुदाई दावे और अल्लाह की पकड़ के बीच चालीस साल का अर्सा था। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अल्लाह तआला हर ज़ालिम को ढ़ील देता है फिर जब पकड़ता है तो छुटकारा नहीं पाता। फिर आप (ﷺ) ने आयत (وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ) (11/हूद : 102) पढ़ी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, सूरह हूद बाब क़ौलुहू (व कज़ालिका अख़्ज़ा रब्बुका इज़ा अख़ज़ल् कुरा...) :4686; सहीह मुस्लिम : 2583; तिर्मिज़ी : 3110; इब्ने माजा : 4018; इब्ने हिब्बान : 5175; बैहक़ी : 6/94) फिर फ़र्माया कि कई एक बस्तियों वाले ज़ालिमों को जिनहोंने रसूलों को झुठलाया था हमने ग़ारत कर दिया, जिनके महल्लात खण्डर बने पड़े हैं, ओंधे गिरे हुए हैं, उनकी मंज़िलें वीरान हो गईं, उनकी आबादियाँ उजड़ गईं, उनके कुएँ ख़ाली पड़े हैं जो कल तक आबाद थे आज ख़ाली हैं, उनके महल जो दूर से सफ़ेद चमकते हुए दिखाई देते थे जो बुलंद व बाला और पुख़्ता थे वह आज उजड़े पड़े हैं। (तब्री : 18/653) वहाँ उल्लू बोल रहा है, उनकी मज़बूती उन्हें न बचा सकी, उनकी ख़ूबसूरती और पायदारी बेकार साबित हुई, रब के अज़ाब ने उन्हें तहस नहस कर दिया। जैसे फ़र्मान है (اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَ لَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ)(4/निसाअ : 78) यानी भले तुम पक्के क़िलों में महफ़ूज़ हो लेकिन मौत वहाँ भी तुम्हें छोड़ने वाली नहीं, क्या वह ख़ुद ज़मीन में चले फिरे नहीं न सही कभी ग़ौरो फ़िक्र भी नहीं किया कि कुछ इब्रत हासिल होती। इमाम इब्ने अबिद्दुनिया (रह.) किताबुत्तफ़क्कुर वल ऐतिबार में रिवायत लाए हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (ﷺ) के पास वह्य भेजी कि ऐ मूसा (ﷺ)! लोहे के नअलैन पहन कर लोहे की लकड़ी लेकर ज़मीन में चल फिरकर आसार व इब्रत को देख वह ख़त्म न होंगे यहाँ तक कि तेरी लोहे की जूतियाँ टुकड़े टुकड़े हो जाएँगी और लोहे की लकड़ी भी टूट फूट जाए। उसी किताब में कुछ अक़्लमंदों का क़ौल है कि वअज़ के साथ अपने दिल को ज़िन्दा कर और ग़ौरो फ़िक्र के साथ उसे नूरानी कर और ज़ुहद और दुनिया से बचने के साथ उसे मार दे और यक़ीन के साथ उसे क़वी कर ले और मौत के ज़िक्र से उसे ज़लील कर दे और फ़ना के यक़ीन से उसे सब्र दे दुनिया की मुसीबतें उसके सामने रखकर उसकी आँखें खोल दे, ज़माने की तंगी उसे दिखाकर उसे दहशतनाक बना दे, दिनों के उलट फेर समझाकर उसे जगा दे, गुज़िश्ता वाक़ियात से इसे इब्रतनाक बना अगलों के क़िस्से इसे सुनाकर होशियार रख, इनके शहरों में और इनके सवानेह में इसे ग़ौरो फ़िक्र करने का आदी बना और देख कि गुनहगारों के साथ इसका मामला कैसा कुछ हुआ, किस तरह वह लोट पोट कर दिये गए। पस यहाँ भी यही

फ़र्मान है कि अगलों के वाक़ियात सामने रखकर दिलों को समझदार बनाओ, उनकी हलाकत के सच्चे अफ़साने सुनकर इब्रत हासिल करो, सुन लो आँखें ही अँधी नहीं होतीं बल्कि सबसे बुरा अंधापन दिल का है भले आँखें सही सालिम मौजूद हों। दिल के अंधेपन की वजह से न तो इब्रत हासिल होती है, न ख़ैरो शर्र की तमीज़ होती है। अबू मुहम्मद बिन हय्यान उंदलिसी ने जिनका इंतिक़ाल 517 हिज्री में हुआ है इस मज़्मून को अपने चंद अश्आर में ख़ूब निभाया है, वह कहते हैं ऐ शख़्स जो गुनाहों में लज़्ज़त पा रहा है क्या अपने बुढ़ापे और बुरे आपे से भी तू बेख़बर है? अगर नसीहत असर नहीं करती तो क्या देखने सुनने से भी इब्रत हासिल नहीं होती? सुन ले! आँखें और कान अपना काम न करें तो इतना बुरा नहीं जितना बुरा यह है कि वाक़ियात से सबक़ न हासिल किया जाए याद रख न तो दुनिया बाक़ी रहेगी, न आसमान, न सूरज चाँद। भले जी न चाहे मगर दुनिया से तुमको एक दिन चाहे न चाहे यहाँ से जाना ही पड़ेगा, क्या अमीर हो, क्या ग़रीब, क्या शहरी हो क्या देहाती।

***

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝٤٧ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ۝٤٨

तर्जुमा : "अज़ाब को तुझसे जल्दी तलब कर रहे हैं अल्लाह हर्गिज़ अपना वादा नहीं टालने का यहाँ अल्बत्ता तेरे रब के नज़दीक एक दिन तुम्हारी गिनती के ऐतिबार से एक हज़ार साल का है। (47) बहुत सी नाइंसाफ़ी करने वालों की बस्तियों को मैंने ढील दी फिर आख़िरकार उन्हें पकड़ लिया मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है।" (48)

क़ियामत के दिन की मिक़्दार का बयान (आयत 47, 48) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) से फ़र्मा रहा है कि यह मुल्हिद कुफ़्फ़ार अल्लाह को उसके रसूल को और क़ियामत के दिन को झुठलाने वाले तुझसे अज़ाब तलब करने में जल्दी कर रहे हैं कि जल्द उन अज़ाबों को क्यूँ नहीं बरपा कर दिया जाता जिनसे हमें हर वक़्त डराया धमकाया जा रहा है। चुनाँचे वह अल्लाह से भी कहते थे कि इलाही! अगर यह तेरी तरफ़ से हक़ है तो हम पर आसमान से संगबारी कर या और किसी तरह का दर्दनाक अज़ाब भेज। कहते थे कि हिसाब के दिन से पहले ही हमारा मामला साफ़ कर दे। अल्लाह तआला फ़र्माता है याद रखो! अल्लाह का वादा अटल है, क़ियामत और अज़ाब आकर ही रहेंगे। ओलिया अल्लाह की इज़्ज़त और अल्लाह के दुश्मनों की ज़िल्लत यक़ीनी और शुदनी चीज़ है। अस्मई कहते हैं मैं अबू अम्र बिन अला के पास था कि अम्र बिन उबैद आया और कहने लगा कि ऐ अबू अम्र! क्या अल्लाह तआला अपने वादे का ख़िलाफ़ करता है? आपने फ़र्माया, नहीं! उसने उसी वक़्त अज़ाब की आयत तिलावत की। इस पर आपने फ़र्माया, क्या तू अज्मी है? सुन अरब में वादा का यानी अच्छी बात के वादे का ख़िलाफ़ बुरा समझा जाता है लेकिन ऐआद का यानी सज़ा के अहकाम का रद्दोबदल या माफ़ी बुरी नहीं समझी जाती बल्कि वह रहमो करम समझा जाता है। देखो शायर

कहता है (فانی وان اوعدتہ او وعدتہ لمخلف ایعادی ومنجز موعدی) मैं किसी को सज़ा कहूँ या उससे इन्आम का वादा करूँ तो यह तो हो सकता है कि मैं अपनी धमकी का ख़िलाफ़ कर जाऊँ बल्कि क़तअ़न हर्गिज़ सज़ा न दूँ लेकिन अपना वादा तो ज़रूर पूरा करके ही रहूँगा। अल्ग़र्ज़ सज़ा का वादा करके सज़ा न करना यह वादाख़िलाफ़ नहीं लेकिन रहमत व इन्आम का वादा करके फिर रोक लेना यह बुरी सिफ़त है जिससे अल्लाह तआ़ला की ज़ात पाक है। फिर फ़र्माता है कि एकएक दिन अल्लाह के नज़दीक तुम्हारे हज़ार हज़ार दिनों के बराबर है, यह बाऐतिबार उसके ह़िल्म और बुर्दबारी के है, उसे इल्म है कि वह हर वक़्त उनकी गिरफ़्त पर क़ादिर है इसलिए उ़ज्लत क्या है भले कितनी ही मोहलत मिल जाए भले कितनी ही रस्सी ढीली हो जाए लेकिन जब चाहेगा साँस लेने की भी मोहलत न देगा और पकड़ लेगा इसीलिए उसके बाद ही फ़र्मान होता है बहुत सी बस्तियों के लोग ज़ुल्म पर कमर कसे हुए थे, मैं ने भी उनसे चशमपोशी कर रखी थी जब मस्त हो गए तो अचानक गिरफ़्त कर ली, सब मजबूर हैं सबको मेरे ही सामने ह़ाज़िर होना है सबका लौटना मेरी ही त़रफ़ है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''फ़ुक़रा मुसलमान मालदार मुसलमानों से आधा दिन पहले जन्नत में जाएँगे यानी पाँच सौ साल पहले।'' (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ अनिल फ़ुक़राइल मुहाजिरीन यदख़ुलूनल जन्नता क़ब्ला अग़नियाइहिम : 2353, 2354; वहुव ह़सन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11348; इब्ने माजा : 4122; अह़मद : 2/296; इब्ने हिब्बान : 676)

और रिवायत में है कि ''ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने पूछा कि आधे दिन की मिक़्दार क्या है? फ़र्माया, क्या तूने क़ुरआन नहीं पढ़ा? मैंने कहा, हाँ! तो यही आयत सुनाई'' यानी अल्लह के यहाँ एक दिन एक हज़ार साल का है। (अबूदाऊद, किताबुल मलाह़िम, बाब क़ियामुस्साअ़त : 4350; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सनद मुन्क़तअ़ है।) अबूदाऊद की किताबुल मलाह़िम के आख़िर में लिखा है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मुझे अल्लाह तआ़ला की ज़ात से उम्मीद है कि वह मेरी उम्मत को आधे दिन तक तो ज़रूर मुअख़्ख़र रखेगा। ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) से पूछा गया कि आधा दिन कितने अ़र्से का हुआ। आपने फ़र्माया, पाँच सौ साल का।'' इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) इस आयत को पढ़कर फ़र्माने लगे यह उन दिनों में से जिनमें अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया। (इब्ने जरीर)

बल्कि इमाम अह़मद बिन ह़ंबल (रह़.) ने किताबुर्रद्द अ़लल जहमिया में इस बात को खुले लफ़्ज़ में बयान किया है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं यह आयत मिस्ल आयत (يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ) (32/सज्दा : 5) के है यानी अल्लाह तआ़ला काम की तदबीर आसमान से ज़मीन की त़रफ़ करता है फिर उसकी त़रफ़ चढ़ जाता है एक ही दिन में जिसकी मिक़्दार तुम्हारी गिनती के ऐतिबार से एक हज़ार साल की है।

इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन (रह़.) एक नौ मुस्लिम अहले किताब से नक़्ल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को छः दिन में पैदा किया है और एक दिन तेरे रब के नज़दीक मिस्ल एक हज़ार साल के है जो तुम गिनते हो अल्लाह ने दुनिया की अजल छः दिन की की है सातवें दिन क़ियामत है और एक दिन मिस्ल हज़ार हज़ार साल के है पस छः दिन तो गुज़र गए और तुम सातवें दिन में हो अब तो बिलकुल उस ह़ामिला की त़रह़ है जो पूरे दिनों हो न जाने कब बच्चा हो जाए।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ
فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾ لِّيَجْعَلَ مَا
يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ
لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ
فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

तर्जुमा : ''ऐलान कर दो कि लोगों! मैं तुम्हें खुल्लम खुल्ला चौकन्ना करने वाला ही हूँ। (49) पस जो ईमान लाए हैं और जिन्होंने नेक आमाल किये हैं उन ही के लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी। (50) और जो लोग हमारी आयतों को पस्त करने के दर पे रहते हैं वही दोज़ख़ी हैं। (51) हमने तुझसे पहले जिस रसूल और नबी को भेजा उसके साथ यह हुआ कि जब वह अपने दिल में कोई आरज़ू करने लगा, शैतान ने उसकी आरज़ू में कुछ मिला दिया, पस शैतान की मिलावट को अल्लाह तआला दूर कर देता है फिर अपनी बातें पक्की कर देता है अल्लाह तआला दाना और बाहिक्मत है। (52) यह इसलिए कि शैतानी मिलावट को अल्लाह तआला उन लोगों की आज़माइश का ज़रिया बना दे जिनके दिलों मे बीमारी है और जिनके दिल सख़्त हैं बेशक गुनहगार लोग दूरदराज़ की मुख़ालिफ़त में हैं। (53) और इसलिए भी कि जिन्हें इल्म अता किया गया है वह यक़ीन कर लें कि यह तेरे रब ही की तरफ़ से सरासर हक़ है फिर वह इस पर ईमान लाएँ और इनके दिल उसकी तरफ़ झुक जाएँ यक़ीनन अल्लाह तआला ईमान वालों को राहे रास्त की तरफ़ रहबरी करने वाला ही है।'' (54)

(आयत 49 से 54) : चूँकि कुफ़्फ़ार अज़ाब माँगा करते थे और उनकी जल्दी मचाते रहते थे उनके जवाब में ऐलान कराया जा रहा है कि लोगों! मैं तो अल्लाह का भेजा हुआ हूँ कि तुम्हें रब के अज़ाबों से जो तुम्हारे आगे हैं चौकन्ना कर दूँ, तुम्हारा हिसाब मेरे ज़िम्मे नहीं, अज़ाब अल्लाह के बस में है, चाहे अब लाए चाहे देर से लाए, मुझे क्या मालूम कि तुममें से किसकी क़िस्मत में हिदायत है और कौन अल्लाह की रहमत से महरूम

रहने वाला है चाहत अल्लाह की ही पूरी होनी है हुकूमत उसी के हाथ है, मुख़्तार और करता धरता वही है किसी को उसके सामने चूँ चरा की मजाल नहीं, वह बहुत हिसाब लेने वाला है मेरी हैसियत तो सिर्फ़ आगाह करने वाले की ही है। जिन दिलों में यक़ीन व ईमान है और उसकी गवाही उनके आमाल से भी साबित है उनके कुल गुनाह माफ़ी के लायक़ हैं और उनकी कुल नेकियाँ क़द्रदानी के क़ाबिल। रिज़्के करीम से मुराद जन्नत है। जो लोग औरों को भी अल्लाह की राह से इताअते रसूल (ﷺ) से रोकते हैं वह जहन्नमी हैं। (तब्री : 18/662) सख़्त अज़ाबों और तेज़ आग का ईंधन हैं अल्लाह हमें बचाए और आयत में है कि ऐसे कुफ़्फ़ार को उनके फ़साद के बदले अज़ाब पर अज़ाब हैं। (16/नह्ल : 88)

वही इलाही में बातिल की मिलावट नहीं हो सकती : यहाँ पर अक्सर मुफ़स्सिरीन ने ग़रानीक़ का क़िस्सा नक़्ल किया है और यह भी कि इस वाक़िया की वजह से अक्सर मुहाजिरीन हब्श यह समझकर कि अब मुश्रिकीने मक्का मुसलमान हो गये वापिस मक्के आ गए। लेकिन यह रिवायत हर सनद से मुर्सल है किसी सही सनद से मुस्नद मरवी नहीं, वल्लाहु आलम! चुनाँचे इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मक्का में सूरह नज्म की तिलावत की जब यह आयतें आप पढ़ रहे थे (اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَ الْعُزّٰى ۝ وَ مَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ۝) (53/नज्म : 19,20) तो शैतान ने आपकी जुबान मुबारक पर यह अल्फ़ाज़ डाले (तिल्का ग़रानीक़ल उला व अन्न शफ़ाअतहुम तुर्तजा) पस मुश्रिकीन ख़ुश हो गए कि आज तो हुज़ूर (ﷺ) ने हमारे मअबूदों की तारीफ़ की जो इससे पहले आप (ﷺ) ने कभी नहीं की। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने सज्दा किया इधर वह सब भी सज्दे में गिर पड़े इस पर यह आयत उतरी। इसे इब्ने जरीर (रह.) ने भी रिवायत किया है यह मुर्सल है मुस्नदे बज़्ज़ार में भी इसके ज़िक्र के बाद है कि सिर्फ़ इसी सनद से ही यह मुत्तसिलन मरवी है सिर्फ़ उमय्या बिन खालिद ही इसे वस्ल करते हैं हैं वह मशहूर सिक़ा। यह सिर्फ़ तरीक़े कल्बी से ही मरवी है इब्ने अबी हातिम ने इसे दो सनदों से लिया है लेकिन दोनों मुर्सल हैं। इब्ने जरीर में भी मुर्सल है। क़तादा (रह.) कहते हैं मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ते हुए हुज़ूर (ﷺ) को ऊँघ आ गयी और शैतान ने आप (ﷺ) की जुबान पर डाला (व इन्न शफ़ाअतहा ल तुर्तजा व अन्नहा ल मअल ग़रानीक़िल उला) मुश्रिकीन ने इन लफ़्ज़ों को पकड़ लिया और शैतान ने यह बात फैला दी। इस पर यह आयत उतरी और उसे ज़लील होना पड़ा। इब्ने अबी हातिम में है कि सूरह नज्म नाज़िल हुई और मुश्रिकीन कह रहे थे कि अगर यह शख़्स हमारे मअबूदों का अच्छे लफ़्ज़ों में ज़िक्र करे तो हम इसे और इसके साथियों को छोड़ दें मगर इसका तो यह हाल है कि यहूदो नसारा और जो लोग इसके दीनी मुख़ालिफ़ हैं उन सबसे ज़्यादा गालियों और बुराई से हमारे मअबूदों का ज़िक्र करता है। उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) पर और आपके अस्हाब (रज़ि.) पर सख़्त मसाइब तोड़े जा रहे थे आप (ﷺ) को उनकी हिदायत का लालच था जब सूरह नज्म की तिलावत आप (ﷺ) ने शुरू की और (वलहुल उन्सा) (53/नज्म : 21) तक पढ़ा तो शैतान ने बुतों के ज़िक्र के वक़्त यह कलिमात डाल दिये (व इन्नहुन्ना लहुन्नल ग़रानीक़ुल उला व अन्न शफ़ाअतहुन्ना ल हियल्लती तरतजी) यह शैतान की मुक़फ़्फ़ा इबादत थी हर मुश्रिक के दिल में यह कलिमात बैठ गए और एक एक को याद हो गए यहाँ तक कि यह मशहूर हो गया कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) अपने पहले दीन की तरफ़ लौट आए हैं और जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरह नज्म के

ख़ात्मे पर सज्दा किया तो सारे मुसलमान और मुश्रिकीन सज्दे में गिर पड़े हाँ! वलीद बिन मुग़ीरह चूँकि बहुत ही बूढ़ा था इसलिए उसने एक मुट्ठी मिट्टी की भरकर ऊँची ले जाकर उसी को अपने माथे पर लगा लिया। अब हर एक को ताज्जुब मालूम होने लगा क्यों कि हुज़ूर (ﷺ) के सज्दे पर सज्दा उन्होंने कैसे किया? शैतान ने जो अल्फ़ाज़ मुश्रिकों के कानों में फूँके थे वह मुसलमानों ने सुने ही न थे, इधर उनके दिल खुल रहे थे क्योंकि शैतान ने इस तरह आवाज़ में आवाज़ मिलाई कि मुश्रिकीन उसमें कोई तमीज़ ही नहीं कर सकते थे वह तो सबको इसी यक़ीन पर पक्का कर चुका था कि ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) ने इसी सूरत की इन दोनों आयतों को तिलावत फ़र्माया है पस दरअसल मुश्रिकीन का सज्दा अपने बुतों को था, शैतान ने इस वाक़िया को इतना फैला दिया कि मुहाजिरीने हब्शा के कानों में भी पहुँचा। उस्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब सुना कि अहले मक्का मुसलमान हो गए हैं बल्कि उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी और वलीद बिन मुग़ीरह सज्दा न कर सका तो उसने मिट्टी की एक मुट्ठी उठाकर उसी पर सर टिका लिया और मुसलमान अब पूरे अमन और इत्मिनान से हैं तो उन्होंने वहाँ से वापसी की ठानी और ख़ुशी ख़ुशी मक्का आ गए, उनके पहुँचने से पहले शैतान के इन अल्फ़ाज़ की क़ल्ई खुल चुकी थी अल्लाह ने उन अल्फ़ाज़ को हटा दिया था और अपना कलाम महफ़ूज़ कर दिया था यहाँ मुश्रिकीन की आतिशे अदावत और भड़क उठी थी और उन्होंने मुसलमानों पर नए मसाइब के बादल बरसाने शुरू कर दिये थे। यह रिवायत भी मुर्सल है बैहक़ी की किताब दलाइलुन्नबुव्वा में भी यह रिवायत है। इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ भी इसे अपनी सीरत में लाए हैं लेकिन यह सनदें मुर्सलात और मुन्क़तआत हैं, वल्लाहु आलम! इमाम बग़वी (रह.) ने अपनी तफ़सीर में यह सबकुछ हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह के कलाम से इसी तरह की रिवायतें वारिद की हैं फिर ख़ुद ही एक सवाल वारिद किया है कि जब रसूले करीम (ﷺ) की अस्मत का मुहाफ़िज़ ख़ुद अल्लाह तआला है तो ऐसी बात कैसे वाक़ेअ हो गई फिर बहुत से जवाब दिये हैं जिनमें एक लतीफ़ जवाब यह भी है कि शैतान ने यह अल्फ़ाज़ लोगों के कानों में डाले और उन्हें वहम डाला कि यह अल्फ़ाज़ हुज़ूर (ﷺ) के मुँह से निकले हैं। हक़ीक़त में ऐसा न था यह सिर्फ़ शैतानी हरकत थी न कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की आवाज़, वल्लाहु आलम! और भी इस क़िस्म के बहुत से जवाब मुतकल्लिमीन ने दिये हैं क़ाज़ी अयाज़ ने भी शिफ़ा में इसे छेड़ा है ओर इनके जवाब का माहसल यह है कि यह इसी तरह है बसबब इसके सबूत के। और फ़र्माने रब कि जबकि वह आरज़ू करता है, आख़िर तक। इसमें हुज़ूर (ﷺ) की तसल्ली फ़र्माई गई है कि आप इसमें परेशान ख़ातिर न हों, अगले नबियों और रसूलों पर भी ऐसे इत्तिफ़ाक़ात आए। बुख़ारी में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि इसकी आरज़ू में जब वह बात करता है तो शैतान उसकी बात में बोल डाल देता है पस शैतान के डाले हुए को बातिल करके फिर अल्लाह तआला अपनी आयात को मुहकम करता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुल हज्ज तअलीक़न क़ब्ल, रक़म : 4741) मुजाहिद (रह.) कहते हैं (तमन्ना) का मअनी (क़ाल) के हैं। (तब्री : 18/667) (उम्नियतिही) के मअनी (क़राअतिही) के हैं (इल्ला अमानिय्य) का मतलब यह है कि पढ़ते हैं लिखते नहीं। बग़वी और अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं (तमन्ना) के मअनी (तला) के हैं यानी जब किताबुल्लाह पढ़ता है तो शैतान उसकी तिलावत में कुछ डाल देता है चुनाँचे हज़रत उस्मान (रज़ि.) की मदह में शायर ने कहा है (तमन्ना किताबल्लाहि अव्वल लैलतिन व आख़रुहा ला फ़ी हम्मामिल मक़ादिर) यहाँ भी

लफ़्ज़ तमन्ना पढ़ने के मअ़नी में है। इब्ने जरीर (रह.) कहते हैं यह क़ौल बहुत क़रीब की तावील वाला है। (तबरी : 18/666) नस्ख़ के ह़क़ीक़ी मअ़नी लुग़त में इज़ाला और रफ़अ के यानी हटाने के और मिटा देने के हैं। अल्लाह सुब्हानहू व तआला शैतान के इल्क़ा को बातिल कर देता है। (तबरी : 18/668) जिब्रील (عليه السلام) बहुक्मे रब्बानी ज़्यादती शैतान को मिटा देते हैं और अल्लाह की आयतें मज़बूत रह जाती हैं अल्लाह तआला तमाम कामों का जानने वाला है कोई मख़्फ़ी बात भी कोई राज़ भी उस पर पोशीदा नहीं, वह ह़कीम है उसका कोई काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं, यह इसलिए कि जिनके दिलों में शक शिर्क कुफ़्र निफ़ाक़ है उनके लिए फ़ित्ना बन जाए चुनाँचे मुश्रिकीन ने इसे अल्लाह की तरफ़ से मान लिया ह़ालाँकि वह अल्फ़ाज़े शैतानी थे पस मरीज़ दिल वालों से मुराद मुनाफ़िक़ हैं और सख़्त दिल वालों से मुराद मुश्रिक हैं। (तबरी : 18/669) यह भी क़ौल है कि मुराद यहूद हैं ज़ालिम ह़क़ से बहुत दूरनिकल गए हैं, वह सीधे रास्ते से गुम हो गए हैं और जिन्हें स़ह़ीह़ इल्म दिया गया है जिससे वह ह़क़ व बातिल में तमीज़ कर लेते हैं उन्हें इस बात के बिलकुल ह़क़ होने का और मिन्जानिब अल्लाह होने का सही यक़ीन हो जाए और वह कामिल ईमान वाले बन जाएँ और समझ लें कि बेशक यह अल्लाह का कलाम है इसीलिए तो इस क़द्र इसकी ह़िफ़ाज़त सियानत और निगहदाश्त है कि किसी जानिब से किसी तरीक़ से इसमें बातिल की आमेज़िश नहीं हो सकती, ह़कीम व ह़मीद अल्लाह की तरफ़ से नाज़िलशुदा है। पस इनके दिल तस्दीक़ से पुर हो जाते हैं झुककर रग़बत से मुतवज्जा हो जाते हैं अल्लाह तआला ईमान वालों की रहबरी दुनिया में ह़क़ और हिदायत की तरफ़ करता है सिराते मुस्तक़ीम सुझा देता है और आख़िरत में अ़ज़ाबों से बचाकर दर्जों में पहुँचाता है और नेअ़मतें नस़ीब करता है।

***

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ
يَوْمٍ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾ الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي
جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾
وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ
اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾ لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾ ذَٰلِكَ ۖ
وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : ''काफ़िर इस वह्ी इलाही में हमेशा शक व शुब्हा ही करते रहेंगे अचानक उनके सरों पर क़ियामत आ जाए या उनके पास उस दिन का अ़ज़ाब आ जाए जो ख़ैर से ख़ाली है। (55) उस दिन सिर्फ़ अल्लाह ही की बादशाहत होगी वही उनमें फ़ैसले करेगा ईमान और नेक अ़मल वाले तो नेअ़मतों से भरपूर जन्नतों में होंगे। (56) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को न माना था उनके लिए ज़लील करने वाले अ़ज़ाब ही होंगे। (57) और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में तर्के वतन किया फिर वह शहीद कर दिये गए या अपनी मौत मर गए अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़रूर बेहतरीन रोज़ियाँ अ़ता करेगा और बेशक अल्लाह तआ़ला अल्बत्ता सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।(58) उन्हें अल्लाह तआ़ला ऐसी जगह पहुँचाएगा कि वह उससे राज़ी राज़ी हो जाएँगे बेशक अल्लाह तआ़ला इल्म और बुर्दबारी वाला है। (59) बात यही है और जिसने बदला लिया उसी के बराबर जो उसके साथ किया गया था फिर अगर उससे ज़्यादती की जाए तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ख़ुद उसकी मदद करेगा बेशक अल्लाह तआ़ला दरगुज़र करने वाला बख़्शने वाला है।'' (60)

क़ुरआन मजीद और कुफ़्फ़ार की हालत (आयत 55 से 60) : यानी इन काफ़िरों को जो शक शुब्हा अल्लाह की इस वह्ी यानी क़ुरआन में है वह इनके दिलों से नहीं जाने का (तब्री : 18/670) शैतान यह ग़लत गुमान क़ियामत तक इनके दिलों से न निकलने देगा, क़ियामत और उसके अ़ज़ाब इनके पास अचानक आ जाएँगे यह सिर्फ़ बेशऊर होंगे, इस वक़्त जो मोहलत इन्हें मिल रही है इससे यह मग़रूर हो रहे हैं, जिस क़ौम के पास अल्लाह के अ़ज़ाब आए उसी हालत में आए कि वह उनसे निडर बल्कि बेपरवाह हो गए थे अल्लाह के अ़ज़ाबों से ग़ाफ़िल वही होते हैं जो पूरे फ़ासिक़ और ऐलानिया मुज्रिम हो या उन्हें बेख़ैर दिन का अ़ज़ाब पहुँचे जो दिन उनके लिए मंहूस साबित होगा। कुछ का क़ौल है कि इससे मुराद योमे बद्र है और कुछ ने कहा है मुराद इससे क़ियामत का दिन है यही क़ौल सही है भले बद्र का दिन भी उनके लिए अ़ज़ाबे अल्लाह का दिन था उस दिन सिर्फ़ अल्लाह की ही बादशाहत होगी। जैसे और आयत में है अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन का मालिक है। (1/फ़ातिहा : 4) और आयत में है उस दिन रहमान का ही मुल्क होगा और वह दिन काफ़िरों पर निहायत ही गिराँ गुज़रेगा। (25/फ़ुरक़ान : 26) फ़ैसले ख़ुद अल्लाह तआ़ला करेगा जिनके दिलों में अल्लाह पर ईमान रसूल की सदाक़त और ईमान के मुताबिक़ जिनके आमाल थे जिनके दिल और अमल में मुवाफ़िक़त थी जिनकी ज़ुबानें दिल के मानिन्द थीं वह जन्नतों की नेअ़मतों में मालामाल होंगे जो नेअ़मतें न फ़ना हों न घटें, न बिगड़ें, न कम हों जिनके दिलों में ह़क़्क़ानियत से कुफ़्र था जो ह़क़ को झुठलाते थे, नबियों का ख़िलाफ़ करते थे, इत्तिबाअ़े ह़क़ से तकब्बुर करते थे उनके तकब्बुर के बदले उन्हें ज़लील करने वाले अ़ज़ाब होंगे। जैसे फ़र्मान है (اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ) (40/ग़ाफ़िर : 60) जो लोग मेरी इबादतों से सरकशी करते हैं वह ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।

हिज्रत और जिहाद का सवाब : यानी जो शख़्स अपना वतन अपने अहलो अ़याल अपने दोस्त अहबाब छोड़कर अल्लाह की रज़ामंदी के लिए उसकी राह में हिज्रत कर जाए उसके रसूल की और उसके दीन की मदद

के लिए पहुँचे फिर वह मैदाने जिहाद में दुश्मन के हाथों शहीद कर दिया जाए या बग़ैर लड़े भिड़े अपनी क़ज़ा अपने बिस्तर पर उसे मौत आ जाए उसे बहुत बड़ा अज्र और ज़बरदस्त सवाब अल्लाह की तरफ़ से है जैसे इर्शाद है (وَ مَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ) (4/निसाअ : 100) यानी जो शख़्स अपने घर और देश को छोड़कर अल्लाह रसूल की तरफ़ हिज्रत करके निकले फिर उसे मौत आ जाए तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे साबित हो चुका, उन पर अल्लाह का फ़ज़्ल होगा उन्हें जन्नत की रोज़ियाँ मिलेंगी जिससे उनकी आँखें ठण्डी हों, अल्लाह तआला बेहतरीन राज़िक़ है, उन्हें परवरदिगार जन्नत में पहुँचाएगा जहाँ यह ख़ुश हो जाएँगे। जैसे फ़र्मान है कि जो हमारे मुक़र्रबों में से है उसके लिए राहत और ख़ुश्बूदार फूल और नेअमतों भरे बाग़ात हैं ऐसे लोगों को राहत व रिज़्क़ और जन्नत मिलेगी। (56/वाक़िया : 88, 89) अपनी राह के सच्चे मुहाजिरों को अपनी राह में जिहाद करने वालों को अपनी नेअमतों के मुस्तहिक़ लोगों को अल्लाह तआला ख़ूब जानता है वह बड़े हिल्म वाला है बन्दों के गुनाह माफ़ करता है उनकी ख़ताओं को दरगुज़र फ़र्माता है, उनकी हिज्रत क़बूल करता है उनके तवक्कल को ख़ूब जानता है। जो लोग अल्लाह की राह में शहीद हों मुहाजिर हों, या न हों वह रब के पास ज़िन्दगी और रोज़ी पाते हैं। जैसे फ़र्मान है (وَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا) (3/आले इमरान : 169) अल्लाह की राह के शहीदों को मुर्दा न कहो वह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ियाँ दिये जाते हैं। इस बारे में बहुत सी हदीसें हैं जो बयान हो चुकीं। पस फ़ी सबीलिल्लाह शहीद होने वालों का अज्र अल्लाह के ज़िम्मे साबित हो चुका है, इस आयत से और इसी बारे की हदीसों से भी। हज़रत शुरहबील बिन सुम्त (रह.) फ़र्माते हैं कि रोम के एक क़िले के मुहासिरे पर हमें मुद्दत गुज़र गई, इत्तिफ़ाक़ से हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) वहाँ से गुज़रे तो फ़र्माने लगे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, ''जो शख़्स अल्लाह की राह की तैयारी में मर जाए तो उसका अज्र और रिज़्क़ बराबर अल्लाह की तरफ़ से हमेशा उस पर जारी रहता है और वह फ़ित्ने में डालने वालों से महफ़ूज़ रहता है अगर तुम चाहो तो यह आयत (वल्लज़ीना हाजरू) पढ़ लो। (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब फ़ज़्लुर्रिबात फ़ी सबीलिल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल : 1913; बिदूनिल आयत) हज़रत अबू क़बील और रबीआ बिन सैफ़ मआरिफ़ी (रह.) कहते हैं हम रौदस के जिहाद में थे हमारे साथ हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद (रज़ि.) भी थे। दो जनाज़े हमारे पास से गुज़रे जिनमें एक शहीद था दूसरा अपनी मौत मरा था, लोग शहीद के जनाज़े पर झुक पड़े। हज़रत फ़ुज़ाला (रज़ि.) ने फ़र्माया, यह क्या बात है? लोगों ने कहा, हज़रत! यह शहीद हैं और यह दूसरे शहादत से महरूम हैं। आपने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! मुझे तो दोनों बातें बराबर हैं ख़्वाह इसकी क़ब्र में से उठूँ ख़्वाह इसकी। सुनो! किताबुल्लाह में है फिर आपने इसी आयत की तिलावत फ़र्माई। (तबरी : 9/182) और रिवायत में है कि आप मरे हुए की क़ब्र पर ही ठहरे रहे और फ़र्माया, तुम्हें और क्या चाहिए जन्नत में जगह और उम्दा रोज़ी। और रिवायत में है कि आप उस वक़्त अमीर थे। यह आख़िरी आयत सहाबा (रज़ि.) के उस छोटे से लश्कर के बारे में उतरी है जिनसे मुश्रिकीन के एक लश्कर ने बावजूद उनके रुक जाने के हुर्मत के महीने में लड़ाई की। अल्लाह ने मुसलमानों की मदद की और मुख़ालिफ़ीन को नीचा दिखाया अल्लाह तआला दरगुज़र करने वाला बख़्शने वाला है। (तबरी : 18/674)

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٦١
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيْرُ ۝٦٢ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۡ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ۭ اِنَّ اللّٰهَ
لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝٦٣ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦٤
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۭ وَيُمْسِكُ
السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٥ وَهُوَ
الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ۡ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝٦٦

तर्जुमा : ''यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में पहुँचाता है और दिन को रात में ले जाता है और बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (61) यह सब इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और उसके सिवा जिसे भी यह पुकारते हैं वह बातिल ही है और बेशक अल्ल्लाह ही बुलंदी वाला किब्रियाई वाला है। (62) क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह तआला आसमान से पानी बरसाता है पस ज़मीन सरसब्ज़ हो जाती है बेशक अल्लाह तआला लुत्फ़ करने वाला और बाख़बर है। (63) आसमान व ज़मीन में जो कुछ है उसी का है और यक़ीनन अल्लाह वही है बेनियाज़ तआरीफ़ों वाला। (64) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने ज़मीन की तमाम चीज़ें तुम्हारे बस में कर दी हैं और उसके फ़र्मान से पानी में चलती हुई कश्तियाँ भी। वही आसमान को थामे हुए है कि ज़मीन पर उसकी परवानगी बग़ैर गिर न पड़े बेशक अल्लाह तआला लोगों पर शफ़्क़त व नर्मी करने वाला और मेहरबान है। (65) उसी ने तुम्हें ज़िन्दा किया है फिर वही तुम्हें मार डालेगा फिर वही तुम्हें दोबारा ज़िन्दा कर देगा बेशक इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है।'' (66)

रात और दिन का आना जाना (आयत 61 से 66) : अल्लाह तआला बयान फ़र्मा रहा है कि ख़ालिक़ और मुतसर्रिफ़ सिर्फ़ वही है अपनी सारी मख़्लूक़ में जो चाहता है करता है। फ़र्मान है (قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ) (3/आले इमरान : 26) इलाही तू ही मालिकुल मुल्क है जिसे चाहे मुल्क दे जिससे चाहे ले ले जिसे चाहे इज़्ज़त का झूला झुलाए जिसे चाहे दर दर से दर दर कराए, सारी भलाइयाँ तेरे ही हाथ में हैं, तू ही हर चीज़ पर क़ादिर है, दिन को रात में रात को दिन में तू ही ले जाता है ज़िन्दे को मुर्दे से मुर्दे को ज़िन्दे से तू ही निकालता है

जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ियाँ देता है। पस कभी के दिन बड़े रातें छोटी कभी की रातें बड़ी दिन छोटे जैसे गर्मियों और जाड़ों (सर्दी) में होता है, बन्दों की तमाम बातें अल्लाह सुनता है, उनकी तमाम हरकात सक्नात देखता है कोई हाल उस पर छुपा हुआ नहीं। उसका कोई हाकिम नहीं बल्कि कोई चूँ चरा भी उसके सामने नहीं कर सकता। वही सच्चा मअबूद है इबादतों के लायक़ उसके सिवा कोई और नहीं ज़बरदस्त ग़ल्बे वाला बड़ी शान वाला वही है जो चाहता है होता है जो नहीं चाहता नामुम्किन है वह हो जाए, हर शख़्स उसके सामने फ़क़ीर हर एक उसके आगे आजिज़ उसके सिवा जिसे लोग पूजें वह झूठे, कोई नफ़ा नुक़्सान किसी के हाथ नहीं, वह बुलंदियों वाला है हर चीज़ उसके मातहत, उसके ज़ेरे हुक्म उसके सिवा कोई मअबूद नहीं न उसके सिवा कोई रब न उससे कोई बड़ा, न उस पर कोई ग़ालिब वह तक़द्दुस वाला वह इज़्ज़त व जलालत वाला, ज़ालिमों की कही हुई तमाम निकम्मी बातों से पाक सब ख़ूबियों वाला तमाम नुक़्सानात से दूर।

दोबारा ज़िन्दा होने की मिसाल से वज़ाहत : अपनी अज़ीमुश्शान क़ुदरत और ज़बरदस्त ग़ल्बे को बयान कर रहा है कि सूखी ग़ैर आबाद मुर्दा ज़मीन पर उसके हुक्म से हवाएँ बादल को लाती हैं जो पानी बरसाता है और वही ज़मीन आबाद लहलहाती हुई सरसब्ज़ हो जाती है गोया जी उठती है। यहाँ पर 'फ़' तअक़ीब के लिए है हर चीज़ की तअक़ीब उसी के अंदाज़ से होती है। नुत्फ़े का अल्क़ा होना फिर अल्क़े का मुज़्ग़ा होना जहाँ बयान फ़र्माया है वहाँ भी 'फ़' आई है और हर दो सूरत में चालीस दिन का फ़ासला होता है और यह भी मज़्कूर है कि हिजाज़ की कुछ ज़मीनें ऐसी भी हैं कि बारिश के होते ही मअन सुर्ख़ सब्ज़ हो जाती है, वल्लाहु आलम! ज़मीन के गोशों में और उसके पेट में जो कुछ है सब अल्लाह के इल्म में है एक एक दाना उसकी दानिस्त में है, पानी वहीं पहुँचता है और वह उग आता है जैसे हज़रत लुक़्मान (ﷺ) के क़ौल में है कि ऐ बच्चे! अगरचे कोई चीज़ राई के दाने बराबर हो फिर वह भी किसी चट्टान में हो या आसमान में हो या ज़मीन में हो, अल्लाह उसे ज़रूर लाएगा, अल्लाह तआला पाकीज़ा और बाख़बर है। (31/लुक़्मान : 16) और आयत में है ज़मीन व आसमान की पोशीदगियाँ अल्लाह ज़ाहिर कर देगा। (27/नम्ल : 25) और आयत में है हर पत्ते के झड़ने का हर दाने का जो ज़मीन के अंधेरों में हो हर तर व ख़ुश्क चीज़ का अल्लाह को इल्म है और वह खुली किताब में है। (6/अन्आम : 59) और जगह है कोई ज़र्रा आसमान व ज़मीन में अल्लाह से छुपा हुआ नहीं कोई छोटी बड़ी चीज़ ऐसी नहीं जो ज़ाहिर किताब में न हो। उमय्या बिन अबू सुल्त या ज़ेद बिन अम्र बिन नुफ़ैल के क़सीदे में है,

وقولا له من ينبت الحب فى الثرى　　　فيصبح منه البقل يهتز رابيا

ويخرج منه حبه فى روسه　　　ففى ذاك ايات لمن كان داعيا

व क़ूला लहू मन युम्बितुल हब्ब फ़िस्सरा फ़युस्बिहा मिन्हुल बक़्ला यहतज़ु राबिया
व यख़रुजु मिन्हु हब्बहू फ़ी रुउसिही　　फ़फ़ी ज़ाका आयातुन लिमन काना वाइया

ऐ मेरे दोनों पैग़म्बरो! तुम इससे कहो कि मिट्टी में से दाने कौन निकालता है कि दरख़्त फूटकर झूमने

लगता है और उसके सिरे पर बाल निकल आती है अक़्लमंद के लिए तो इसमें क़ुदरत की एक छोड़ कई एक निशानियाँ मौजूद हैं। तमाम कायनात का मालिक वही है वह हर एक चीज़ से बेनियाज़ है हर एक उसके सामने फ़क़ीर और उसकी बारगाहे आली का मोहताज है सब इंसान उसके गुलाम हैं। क्या तुम नहीं देख रहे कि कुल हैवानात जमादात खेतियाँ बाग़ात उसने तुम्हारे फ़ायदे के लिए तुम्हारी मातहती में दे रखे हैं आसमान व ज़मीन की चीज़ें तुम्हारे लिए सरगर्दां हैं उसी का एहसान व फ़ज़्लो करम है कि उसके हुक्म से कश्तियाँ तुम्हें इधर से उधर ले जाती हैं तुम्हारे मालो मताअ उसमें यहाँ से वहाँ पहुँचते हैं पानी को चीरती हुई मौजों को काटती हुई बहुक्मे इलाही हवाओं के साथ कश्तियाँ तुम्हारे नफ़ा के लिए चल रही हैं यहाँ की ज़रूरत की चीज़ें वहाँ से वहाँ की यहाँ से बराबर पहुँचती रहती हैं वह ख़ुद आसमान को थामे हुए है कि ज़मीन पर गिरना पड़े वरना अभी वह हुक्म दे तो यह ज़मीन पर आ गिरे और तुम सब हलाक हो जाओ।

इंसानों के गुनाहों के बावजूद अल्लाह उन पर राफ़्त व शफ़क़त बंदा नवाज़ी और गुलाम परवरी कर रहा है जैसे फ़र्मान है (وَ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ) (13/रअ़द : 6) लोगों के गुनाहों के बावजूद अल्लाह तआला उन पर साहिबे मग़्फ़िरत है। हाँ! बेशक वह सख़्त अज़ाबों वाला भी है उसी ने तुम्हें पैदा किया है वही तुम्हें फ़ना करेगा वही फिर दोबारा पैदा करेगा जैसे फ़र्माया (كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ) (2/बक़रह : 28) तुम अल्लाह के साथ कैसे कुफ़्र करते हो हालाँकि तुम मुर्दा थे उसी ने तुम्हें ज़िन्दा किया फिर वही तुम्हें मार डालेगा फिर दोबारा ज़िन्दा कर देगा फिर तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे और आयत में है (قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ) (45/जासिया : 26) अल्लाह ही तुम्हें जिलाता है फिर वही तुम्हें मार डालेगा फिर तुम्हें क़ियामत वाले दिन जिसके आने में कोई शुब्हा नहीं जमा करेगा। और जगह फ़र्माया वह कहेंगे कि ऐ अल्लाह! तूने हमें दो बार मारा और दो बार ज़िन्दा किया। (40/ग़ाफ़िर : 11) पस कलाम का मतलब यह है कि ऐसे अल्लाह के साथ तुम दूसरों को शरीक क्यूँ ठहराते हो? औरों की इबादत उसके साथ कैसे करते हो? पैदा करने वाला फ़क़त वही रोज़ी देने वाला सिर्फ़ वही मालिक व मुख़्तार फ़क़त वही तुम कुछ न थे उसने तुम्हें पैदा कर दिया फिर तुम्हारी मौत के बाद फिर से पैदा करेगा यानी क़ियामत के दिन इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है और बेक़द्रा है।

***

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ
لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ يَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾

तर्जुमा : ''हर उम्मत के लिए हमने इबादत का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है जिसे वह बजा लाने वाले हैं पस उन्हें इस अम्र में तुझसे झगड़ा न करना चाहिए। तू अपने परवरदिगार की तरफ़ लोगों को बुलाता रह, यक़ीनन तू ठीक हिदायत पर ही है। (67) फिर भी अगर यह लोग तुझसे उलझने लगें तो तू कह देना कि तुम्हारे आमाल से अल्लाह बख़ूबी वाक़िफ़ है। (68) बेशक तुम्हारे सबके इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला ख़ुद कर देगा।'' (69)

हर क़ौम की शरीअत का तज़्किरा (आयत 67 से 69) : असल में अरबी ज़ुबान में (मन्सक) का लफ़्ज़ी तर्जुमा उस जगह का है जहाँ के जाने आने की इंसान आदत डाल ले, अहकामे हज्ज की बजाआवरी को इसीलिए (मनासिक) कहा जाता है कि लोग बार बार वहाँ जाते हैं और ठहरते हैं। मंक़ूल है कि मुराद यहाँ यह है कि हर उम्मत के पैग़म्बर के लिए हमने शरीअत मुक़र्रर की है तो इस अम्र में यह लोग न लड़ें से मुराद यह मुश्रिक लोग हैं और अगर मुराद हर उम्मत के बतौरे क़ुदरत के उनके अफ़आल का मुक़र्रर करना है जैसे सूरह बक़रह में फ़र्मान है कि हर एक के लिए एक सिम्त है जिधर वह मुतवज्जा होता है। (2/बक़रह : 148) यहाँ भी है कि वह उसके बजा लाने वाले हैं तो ज़मीर का एआदा भी ख़ुद उन पर ही है यानी यह सब अल्लाह की क़ुदरत व रब के इरादे से कर रहे हैं, तू इनके झगड़ने से बद दिल न हो और हक़ से न हट जा, अपने रब की तरफ़ बुलाता रह और अपनी हिदायत व इस्तिक़ामत के कामिल यक़ीन पर रह। यही रास्ता हक़ से मिलाने वाला और मक़्सद को कामयाबी से गोदियों में ला डालने वाला है। जैसे फ़र्माया है (وَ لَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ) (28/क़सस : 87) ख़बरदार! कहीं यह लोग तुझे अल्लाह की आयतों के तेरे पास पहुँच जाने पर भी उनसे रोक न दें अपने रब के रास्ते की दावते आम देता रह, उस पर भी अगर कोई ठहर जाए तू उससे पल्ला झाड़ ले कह दे कि अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहा है जैसे कई जगह इसी मज़्मून को दोहराया है एक जगह है कि अगर यह तुझे झुठलाएँ तू इनसे कह दे कि मेरे लिए मेरा अमल है और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल हैं, तुम मेरे आमाल से बरी हो मैं तुम्हारे करतूत से बेज़ार हूँ। (10/यूनुस : 41) पस यहाँ भी उनके कान खोल दिये कि अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल से बाख़बर है वह तुम्हारी अदना से अदना हरकत को भी जानता है और वही हम तुममें काफ़ी शाहिद है। क़ियामत के दिन हम तुममें फ़ैसला अल्लाह ख़ुद कर देगा और उस वक़्त सारे इख़्तिलाफ़ात मिट जाएँगे जैसे फ़र्मान है तू उसी की दावत देता रह और हमारे हुक्म पर जमा रह और किसी की ख़्वाहिश के पीछे न लग और साफ़ ऐलान कर दे कि अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब पर मेरा ईमान है, आख़िर तक।

***

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ

عِلْمٌ ۚ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ
الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ۚ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ قُلْ
اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۚ اَلنَّارُ ۚ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾

तर्जुमा : "क्या तुझे इतना भी इल्म नहीं कि आसमान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह के इल्म में है यह सब लिखी हुई किताब में महफ़ूज़ है अल्लाह तआला पर तो यह अम्र बिलकुल आसान है। (70) अल्लाह के सिवा उन्हें पूज रहे हैं जिसकी कोई रब होने की दलील नाज़िल हुई ही नहीं, न वह ख़ुद ही इसका कोई इल्म रखते हैं, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।(71) जब उनके सामने हमारे कलाम की खुली हुई आयतों की तिलावत की जाती है तो तू काफ़िरों के चेहरों पर नाख़ुशी के साथ आसार पहचान लेता है। वह तो क़रीब होते हैं कि हमारी आयतें सुनाने वालों पर हमला कर बैठें कह दे कि क्या मैं तुम्हें उससे भी ज़्यादा नाख़ुशी की ख़बर दूँ वह आग है जिसका वादा अल्लाह ने काफ़िरों से कर रखा है और वह बहुत ही बुरी जगह है।" (72)

सबसे पहले क़लम को पैदा किया गया (आयत 70 से 72) : रब के कमाले इल्म का बयान हो रहा है कि ज़मीनो आसमान की हर चीज़ उसके इल्म के एहाता में है एक ज़र्रा भी उससे बाहर नहीं कायनात के वुजूद से पहले ही कायनात का इल्म उसे था बल्कि उसने लोहे महफ़ूज़ में लिखवा दिया था। सहीह मुस्लिम में हदीस है कि "अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पचास हज़ार साल पहले जबकि उसका अर्श पानी पर था मख़्लूक़ की तक़्दीरें लिखीं।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब हुजाजे आदम व मूसा सल्लल्लाहु अलैहिमा व सल्लम : 2653; तिर्मिज़ी : 2156; अहमद : 2/162; इब्ने हिब्बान : 6138) सुनन की हदीस में है कि "सबसे पहले अल्लाह तआला ने क़लम को पैदा किया और उससे कहा लिख उसने पूछा, क्या क्या लिखूँ? फ़र्माया जो कुछ होने वाला है। पस क़ियामत तक जो कुछ होने वाला था उसे क़लम से क़लम बंद कर लिया।" (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िल क़द्र : 4700; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 3319, 2155) इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि सौ साल की राह में अल्लाह तआला ने लोहे महफ़ूज़ को पैदा किया और मख़्लूक़ की पैदाइश से पहले जबकि अल्लाह तआला अर्श पर था क़लम को लिखने का हुक्म दिया उसने पूछा क्या लिखूँ? फ़र्माया मेरा इल्म जो मख़्लूक़ के बारे में क़ियामत तक का है पस क़लम चल पड़ा और क़ियामत तक के होने वाले उमूर जो इल्मे अल्लाह में थे उसने लिख लिए। पस उसी को अपने नबी (ﷺ) से इस आयत में फ़र्मा रहा है कि क्या तू नहीं जानता कि आसमान व ज़मीन की हर एक चीज़ का मैं आलिम हूँ पस यह उसका कमाले इल्म है कि चीज़ के वुजूद से पहले उसे मालूम है बल्कि लिख भी लिया है और वह सब यूँ ही वाक़ेअ होने वाला है बन्दों के तमाम आमाल का इल्म उनके अमल से पहले अल्लाह को है वह जो करते हैं उस करने से पहले अल्लाह जानता था हर फ़र्मांबरदार और नाफ़र्मान उसके इल्म में था और

उसकी किताब में लिखा हुआ था और हर चीज़ उसके इल्मी एहाते के अंदर ही अंदर थीऔर यह अम्र अल्लाह पर कुछ मुश्किल न था सब किताब में था और रब पर बहुत ही आसान।

कलामुल्लाह से बेरग़बती क़ाबिले गिरफ़्त है : बग़ैर दलील के बिला सनद के अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा पाठ इबादत बंदगी करने वालों का जहल व कुफ़्र बयान फ़र्माता है कि सिवाए शैतानी तक़्लीद और बाप दादों की देखा देखी के न कोई नक़ली दलील उनके पास है न अक़्ली। चुनाँचे और आयत में है (وَ مَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا) (23/मोमिनून : 117) जो भी अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद को बेदलील पुकारे उससे अल्लाह ख़ुद बाजपुर्स कर लेगा नामुम्किन है कि ऐसे ज़ालिम छुटकारा पा जाएँ। यहाँ भी फ़र्माया कि इन ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं कि अल्लाह के किसी अज़ाब से उन्हें बचा ले। उन पर अल्लाह के पाक कलाम की आयतें सही दलीलें वाज़ेह हुज्जतें जब पेश की जाती हैं तो उनके तन बदन में आग लग जाती है। अल्लाह की तौहीद, रसूलों के इत्तिबाअ को साफ़ तौर पर बयान किया कि उन्हें मिर्चीं लगीं, शक्लें बदल गईं, पेशानियों पर बल पड़ने लगे, आसतीनें चढ़ने लगीं। अगर बस चले तो ज़ुबान खींच लें एक लफ़्ज़ भी हक़्क़ानियत का ज़मीन पर न आने दें उसी वक़्त गला घोंट दें। उन सच्चे ख़ैरख़्वाहों की अल्लाह के दीन के मुबल्लिग़ों की बुराइयाँ करने लगते हैं ज़ुबानें उनके खिलाफ़ चलने लगती हैं और मुम्किन हो तो हाथ भी उनके ख़िलाफ़ उठने में नहीं रुकते। फ़र्मान होता है कि नबी! इनसे कह दो कि एक तरफ़ तो तुम जो दुख इन अल्लाह के दीन के मुतवल्लियों को पहुँचाना चाहते हो उसे वज़न करो दूसरी तरफ़ उस दुख का वज़न कर लो जो तुम्हें यक़ीनन तुम्हारे कुफ़्र व इंकार की वजह से पहुँचने वाला है फिर देखो कि बदतरीन चीज़ कौनसी है? वह आतिशे दोज़ख़ और वहाँ की तरह तरह के अज़ाब? या जो तक्लीफ़ तुम इन सच्चे मुवह्हिदों को पहुँचाना चाहते हो? भले यह भी तुम्हारे इरादे ही इरादे हैं। अब तुम भी समझ लो कि जहन्नम कैसी बुरी जगह है किस क़द्र होलनाक है किस क़द्र ईज़ादेहिन्दा है और कितनी मुश्किल वाली जगह है। यक़ीनन वह निहायत ही बदतरीन जगह और बहुत ही ख़ौफ़नाक मक़ाम है जहाँ राहत व आराम का नाम भी नहीं।

***

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا

ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ

الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ۝ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝

तर्जुमा : "लोगों! एक मिसाल बयान की जा रही है ज़रा कान लगाकर सुन तो लो अल्लाह के सिवा जिन जिनको तुम पुकार रहे हो वह एक मक्खी भी तो पैदा नहीं कर सकते भले सारे के सारे ही जमा हो जाएँ बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले भागे तो यह तो उसे भी उससे छीन

नहीं सकते, बड़ा बूदा है माँगने वाला और बड़ा बूदा है वह जिससे माँगा जा रहा है। (73) इन्होंने अल्लाह के मर्तबे के मुताबिक़ उसकी क़द्र ही न जानी, अल्लाह तआला बड़ा ही ज़ोर व कुव्वत वाला और ग़ालिब व ज़बरदस्त है।'' (74)

मअबूदाने बातिला की बेबसी (आयत 73, 74) : अल्लाह के सिवा जिनकी इबादत की जाती है उनकी कमज़ोरी और उनके पुजारियों की कमअक़्ली बयान हो रही है कि ऐ लोगों! यह जाहिल जिनकी इबादत अल्लाह के सिवा करते हैं रब के साथ यह जो शिर्क करते हैं उनकी एक मिसाल निहायत ही उम्दा और बिलकुल वाक़िया के मुताबिक़ बयान हो रही है। ज़रा तवज्जा से सुनो कि इनके तमाम के तमाम बुत ठाकर वग़ैरह जिन्हें यह अल्लाह के शरीक ठहरा रहे हैं जमा हो जाएँ और एक मक्खी बनाना चाहें तो सारे आजिज़ आ जाएँगे और एक मक्खी भी पैदा न कर सकेंगे। मुस्नद अहमद की हदीसे कुदसी में फ़र्माने बारी है ''उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो मेरी तरह किसी को बनाना चाहता है अगर वाक़ेई में किसी को यह कुदरत हासिल है तो एक ज़र्रा (या एक मक्खी) या एक दाना अनाज का ही ख़ुद बना दें।'' (अहमद : 2/391, 2/232; ह : 7166; वसनदुहू सहीहुन; बुख़ारी : 5953; व मुस्लिम : 2111) बुख़ारी व मुस्लिम में अल्फ़ाज़ यूँ हैं कि ''वह एक ज़र्रा या एक जौ ही बना दें।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बा नक़्ज़स्सूर : 5953; सहीह मुस्लिम : 2111; इब्ने हिब्बान : 5859; बैहक़ी : 7/268) अच्छा और भी इनके मअबूदाने बातिल की कमज़ोरी और नातवानी सुनो कि यह एक मक्खी का मुक़ाबला भी नहीं कर सकते वह इनका हक़ इनकी चीज़ इनसे छीने चली जा रही है यह बेबस हैं यह भी तो नहीं कर सकते कि उससे अपनी चीज़ ही वापिस ले लें। भला मक्खी जैसी हक़ीर और कमज़ोर मख़्लूक़ से भी जो अपना हक़ न ले सके उससे भी ज़्यादा कमज़ोर और बूरा ज़ुअफ़ नातवाँ बेबस और गिरा पड़ा कोई और हो सकता है? हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं तालिब से मुराद बुत और मत्लूब से मुराद मक्खी है। (तब्री : 18/685) इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को पसंद करते हैं और ज़ाहिर लफ़्ज़ों से भी यही ज़ाहिर है। दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि तालिब से मुराद आबिद और मत्लूब से मुराद अल्लाह के सिवा और मअबूद। अल्लाह की क़द्रो अज़्मत ही उनके दिलों में नहीं रची अगर ऐसा होता तो इतने बड़े तवाना अल्लाह के साथ ऐसी ज़लील मख़्लूक़ को क्यूँ शरीक कर लेते जिसे मक्खी उड़ाने की भी कुदरत न हो। जैसे मुश्रिकीने कुरैश के बुत थे। अल्लाह अपनी कुदरत व कुव्वत में अकेला है। तमाम चीज़ें बेनमूना सबसे पहली पैदाइश में उसने पैदा कर दी हैं बिला उसके कि किसी एक से भी मदद ले मश्वरा ले शरीक करे। फिर सबको हलाक करके दोबारा उससे भी ज़्यादा आसानी से पैदा करने पर क़ादिर है। वह बड़ी मज़बूत पकड़ वाला इब्तिदा और एआदा करने वाला रिज़्क़ देने वाला और बेअंदाज़ कुव्वत रखने वाला है। सबकुछ उसके सामने पस्त है कोई उसके इरादे को बदलने वाला उसके फ़र्मान को टालने वाला, उसकी अज़्मत और सल्तनत का मुक़ाबला करने वाला नहीं वह वाहिद व क़ह्हार है।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

तर्जुमा : ''फ़रिश्तों में से और इंसानों में से रसूलों को अल्लाह ही छांट लेता है बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला देखने वाला है। (75) वह बख़ूबी जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है और अल्लाह ही की तरफ़ सब काम लौटाए जाते हैं।'' (76)

मंसबे रिसालत का हक़दार कौन? (आयत 75, 76) : अपनी मुक़र्ररा तक़्दीर के जारी करने और अपनी मुक़र्ररा शरीअत को अपने रसूल (ﷺ) तक पहुँचाने के लिए अल्लाह तआला जिस फ़रिश्ते को चाहता है मुक़र्रर कर लेता है। इसी तरह लोगों में से भी पैग़म्बरी की ख़ल्अत से जिसे चाहता है नवाज़ता है। बन्दों के क़ौल सब वह सुनता है एक एक बन्दा और उसके आमाल उसकी निगाह में हैं वह बख़ूबी जानता है कि मुस्तहिक़े मंसबे नबुव्वत कौन है। जैसे फ़र्माया (اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ) (6/अन्आम : 124) रब ही को इल्म है कि मंसबे रिसालत का सहीह तौर पर अहल कौन है? रसूलों के आगे पीछे का अल्लाह को इल्म है क्या उस तक पहुँचा क्या उसने पहुँचाया सब उस पर ज़ाहिर है। जैसे फ़र्मान है (عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝) (72/जिन्न : 26) यानी वह ग़ैब का जानने वाला है अपने ग़ैब का किसी पर इज़्हार नहीं करता, हाँ! जिस पैग़म्बर को वह पसंद करे तो उसके आगे पीछे पहरे मुक़र्रर कर देता है ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुँचा दिये और अल्लाह तआला हर उस चीज़ का एहाता किये हुए है जो उनके पास है और हर चीज़ की गिनती तक उसके पास शुमार हो चुकी है। पस अल्लाह सुब्हानहू व तआला अपने रसूलों का निगहबान है जो उन्हें कहा सुना जाता है उस पर ख़ुद ही उनका हाफ़िज़ है और उनका मददगार भी है। जैसे फ़र्मान है (يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ) (5/माइदा : 67) ऐ रसूल (ﷺ)! जो कुछ तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से उतरा है पहुँचा दे अगर ऐसा न किया तो हक़्क़े रिसालत अदा न होगा तेरा बचाव अल्लाह के ज़िम्मे है।

***

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ
۝ {السجده} وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي
الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا
لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۭ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۷۸﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालों! रुकूअ सज्दा करते रहो अपने परवरदिगार की इबादत में लगे रहो और नेक काम करते रहो ताकि तुम कामयाब हो जाओ। (77) और अल्लाह की राह में वैसा ही जिहाद करो जैसे जिहाद का उसका हक़ है उसी ने तुम्हें बरगुज़ीदा बनाया है और तुम पर दीन के बारे में कोई तंगी नहीं डाली, दीन तुम्हारे बाप इब्राहीम (عليه السلام) का उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है इस कुरआन से पहले और इसमें भी ताकि पैग़म्बर तुम पर गवाह हो जाए और तुम और तमाम लोगों के गवाह बन जाओ पस तुम्हें चाहिए कि नमाज़ें क़ायम करो और ज़कातें अदा करते रहो और अल्लाह को मज़बूत थाम लो वही तुम्हारा वली और मालिक है पस क्या ही अच्छा मालिक है और कितना ही बेहतर मददगार है।" (78)

इस्लाम आसान दीन है (आयत 77, 78) : इस दूसरे सज्दे के बारे में दो क़ौल हैं। पहले सज्दे की आयत के मौक़े पर हमने वह हदीस बयान कर दी है जिसमें है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "सूरह हज्ज को दो सज्दों से फ़ज़ीलत दी गई जो यह सज्दे न करे वह यह पढ़े ही नहीं।" (अबूदाऊद, किताब सुजूदुल क़ुरआन, बाब तफ़रीअ़ अब्वाबुस्सुजूद... : 1402; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 578; अहमद : 4/151; हाकिम : 1/221; दारे क़ुत्नी : 1/408) पस रुकूअ सज्दा इबादत और भलाई का हुक्म करके फ़र्माता है अपने मालों अपनी जानों और अपनी ज़ुबानों से अल्लाह की राह में जिहाद करो और हक़्क़े जिहाद अदा करो जैसे हुक्म दिया है कि अल्लाह से इतना डरो जितना उससे डरने का हक़ है उसी ने तुम्हें बरगुज़ीदा और पसंदीदा कर लिया है और उम्मतों पर तुम्हें शराफ़त व करामत इज़्ज़त व बुज़ुर्गी अ़ता फ़र्माई, कामिल रसूल और कामिल शरीअ़त से तुम्हें सरबरावर्दा किया तुम्हें आसान सहल और उम्दा दीन दिया। वह अहकाम तुम पर न रखे वह सख़्ती तुम पर न की वह बोझ तुम पर न डाले जो तुम्हारे बस के न हों जो तुम पर गिराँ गुज़रें, जिन्हें तुम बजा न ला सको। इस्लाम के बाद सबसे आला और सबसे ज़्यादा ताकीद वाला रुक्न नमाज़ है इसे देखिए घर में आराम से बैठे हुए हों तो चार रकअ़तें फ़र्ज़ और फिर अगर सफ़र में हो तो वह भी दो ही रह जाएँ और ख़ौफ़ में तो हदीस के मुताबिक़ सिर्फ़ एक ही रकअ़त। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुल मुसाफ़िरीन व क़सरुहा : 687) वह भी सवारी पर हो तो और पैदल हो तो रू क़िब्ला हो तो और दूसरी तरफ़ तवज्जह हो तो इसी तरह यही हुक्म सफ़र की नफ़्ल नमाज़ का है कि जिस तरफ़ सवारी का मुँह हो पढ़ सकते हैं। फिर नमाज़ का क़ियाम भी बवजह बीमारी के साक़ित हो जाता है। मरीज़ बैठकर नमाज़ पढ़ सकता है उसकी भी ताक़त न हो तो लेटे लेटे अदा कर ले। इसी तरह और फ़राइज़ और वाजिबात को देखो कि किस क़द्र उनमें अल्लाह तआ़ला ने आसानियाँ रखी हैं। इसीलिए हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माया करते थे मैं यक तरफ़ और बिलकुल आसानी वाला दीन देकर भेजा गया हूँ। (अहमद : 5/266; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) आप (ﷺ) ने जब हज़रत मुआ़ज़ (रज़ि.) और हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) को यमन का अमीर बनाकर भेजा तो फ़र्माया था, "ख़ुशख़बरी सुनाना, नफ़रत न दिलाना, आसानी करना सख़्ती न करना।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद,

बाब मा युक्रहुत्तनाज़ोअ वल इख़्तिलाफ़ु फ़िल हर्ब : 3038; सहीह मुस्लिम : 1733) और भी इस मज़्मून की बहुत सी हदीसें हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस आयत की यही तफ़्सीर करते हैं कि तुम्हारे दीन में कोई तंगी व सख़्ती नहीं। (तब्री : 18/689) इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं मिल्लत का नसब ब नज़अ ख़फ़्ज़ है गोया असल में (कम्लता अबैकुम) था और हो सकता है कि (अल्ज़िमू) को महज़ूफ़ माना जाए और (मिल्लत) को इसका मफ़ऊल क़रार दिया जाए। (तब्री : 18/691) इस सूरत में यह इस आयत की तरफ़ हो जाएगा। (6/अन्आम : 161) उसने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है। यानी अल्लाह तआला ने इब्राहीम (ﷺ) से भी पहले (तब्री : 18/691) क्योंकि उनकी दुआ थी कि हम दोनों बाप बेटों को और हमारी औलाद में से एक गिरोह को मुसलमान बना दे लेकिन इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं यह क़ौल कुछ जचता नहीं कि पहले से मुराद हज़रत इब्राहीम (ﷺ) के पहले से हो इसलिए कि यह तो बहुत ज़ाहिर है कि हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने इस उम्मत का नाम इस क़ुरआन में मुस्लिम नहीं रखा तो "पहले से" के लफ़्ज़ के मअनी यह हैं कि पहली किताबों में और ज़िक्र में और इस पाक और आख़िरी किताब में। यही क़ौल हज़रत मुजाहिद (रह.) वग़ैरह का है और यही दुरुस्त है क्योंकि इससे पहले इस उम्मत की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत का बयान है उनके दीन के आसान होने का ज़िक्र है। फिर उन्हें दीन की मज़ीद रग़्बत दिलाने के लिए बतलाया जा रहा है कि यह वह दीन है जो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (ﷺ) लेकर आए थे। फिर इस उम्मत की बुज़ुर्गी के लिए और इन्हें माइल करने के लिए फ़र्माया जा रहा है कि तुम्हारा ज़िक्र मेरी अगली किताबों में भी है।

मुद्दतों से अम्बिया (ﷺ) की आसमानी किताबों में तुम्हारे चर्चे चले आ रहे हैं। अगली किताबों के पढ़ने वाले तुमसे ख़ूब आगाह हैं पस इस क़ुरआन से पहले और इस क़ुरआन में तुम्हारा नाम मुस्लिम है और ख़ुद अल्लाह का रखा हुआ नाम है। नसाई में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जो शख़्स जाहिलियत के दावे अब भी करे यानी बाप दादों पर हसब नसब पर फ़ख़्र करे और दूसरे मुसलमानों को कमतर और हल्का ख़्याल करे वह जहन्नम का ईंधन है।" किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगरचे वह रोज़े रखता हो और नमाज़ें भी पढ़ता हो? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! अगरचे वह रोज़ेदार और नमाज़ी हो। अल्लाह तआला ने जो नाम तुम्हारे रखे हैं उन ही नामों से पुकारो और पुकारो मुस्लिमीन, मोमिनीन, इबादुल्लाह।" (तिर्मिज़ी, किताबुल अम्साल, बाब मा जाअ फ़ी मिस्लुस्सलाति वस्सियामि वस्सदक़ति : 2863; व सनदुहू सहीहुन; अहमद : 4/130; मुस्नदे अबी यअला : 1571; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1895; इब्ने हिब्बान : 6233; हाकिम : 1/117; मुस्नदे तयालिसी : 1161) सूरह बक़रह की आयत (يَاأَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا) (2/बक़रह : 21) की तफ़्सीर में हम इस हदीस को पूरी बयान कर चुके हैं। फिर फ़र्माता है हमने तुम्हें आदिल उम्दह बेहतर उम्मत इसलिए बनाया है और इसलिए और तमाम उम्मतों में तुम्हारी अदालत की शोहरत कर दी है कि तुम क़ियामत के दिन और लोगों पर गवाही दो। तमाम अगली उम्मतें उम्मते मुहम्मद (ﷺ) की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत की इक़रारी होंगी। इस उम्मत को और तमाम उम्मतों पर सरदारी हासिल है इसलिए इनकी गवाही उन पर मुअतबर मानी जाएगी इस बारे में कि उनके रसूलों ने पैग़ामे रब्बानी उन्हें पहुँचा दिया है। वह तब्लीग़ का फ़र्ज़ अदा कर चुके हैं। और ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) इस उम्मत पर गवाही देंगे कि आप (ﷺ) ने इन्हें दीने इलाही पहुँचा दिया और हक़्क़े रिसालत अदा कर दिया। इसकी बाबत जितनी हदीसें हैं और इस बारे की जितनी तफ़्सीर है वह

हम सबकी सब सूरह बक़रह के सत्रहवें रुकूअ की आयत (وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا) (2/बक़रह : 143) की तफ़्सीर में लिख आए हैं इसलिए यहाँ इसे दोबारा बयान करने की ज़रूरत नहीं वहीं देख ली जाए वहीं हज़रत नूह (ﷺ) और उनकी उम्मत का वाक़िया भी बयान कर दिया है। फिर फ़र्माता है कि इस इतनी बड़ी अज़ीमुश्शान नेअ़मत का शुक्रिया तुम्हें ज़रूर अदा करना चाहिए जिसका तरीक़ा यह है कि फ़राइज़ अल्लाह के तुम पर हैं उन्हें शोक़ से दिल की ख़ुशी से बजा लाओ। ख़ुसूसन नमाज़ और ज़कात का पूरा ख़्याल रखो। जो कुछ अल्लाह ने वाजिब किया है उसे दिली मुहब्बत से बजा लाओ और जो चीज़ें हराम कर दी हैं उनके पास भी न फटको। पस नमाज़ जो ख़ालिस रब की है और ज़कात जिसमें रब की इबादत के अलावा मख़्लूक़ के साथ एहसान भी है कि अमीर लोग अपने माल का एक हिस्सा फ़क़ीरों को ख़ुशी ख़ुशी देते हैं उनका काम चलता है दिल ख़ुश हो जाता है इसमें भी अल्लाह की तरफ़ से बहुत आसानी है हिस्सा भी कम है और साल भर में एक ही मर्तबा। ज़कात के कुल अह़काम सूरह तौबा की आयते ज़कात (اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ) (9/तौबा : 60) की तफ़्सीर में हमने बयान कर दिये हैं वहीं देख लिए जाएँ। फिर हुक्म होता है कि अल्लाह पर पूरा भरोसा रखो उसी पर तवक्कल करो अपने तमाम कामों में उसी से मदद तलब किया करो। ऐतिमाद हर वक़्त उसी पर रखो उसी की ताईद पर नज़रें रखो वह तुम्हारा मौला है, तुम्हारा ह़ाफ़िज़ है, नासिर है, तुम्हें तुम्हारे दुश्मनों पर कामयाबी अ़ता करने वाला है, वह जिसका वली बन गया उसे किसी और की विलायत की ज़रूरत नहीं, सबसे बेहतरीन वाली वही है सबसे बेहतर मददगार वही है तमाम दुनिया भले दुश्मन हो जाए लेकिन वह सब पर क़ादिर है और सबसे ज़्यादा क़वी है। इब्ने अबी ह़ातिम में हज़रत वुहैब बिन वुर्द (रज़ि.) से मरवी है कि अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है ऐ इब्ने आदम! अपने गुस्से के वक़्त तू मुझे याद कर लिया कर, मैं भी अपने ग़ज़ब के वक़्त तुझे माफ़ कर दूंगा और जिन पर मेरा अ़ज़ाब नाज़िल होगा मैं तुझे उनमें से बचा लूँगा, बर्बाद होने वालों के साथ तुझे बर्बाद न करूँगा, ऐ इब्ने आदम! जब तुझ पर ज़ुल्म किया जाए, तू सब्रो सिहार से काम ले, मुझ पर निगाहें रख मेरी मदद पर भरोसा रख, मेरी इम्दाद पर राज़ी रह, याद रख मैं तेरी मदद करूँ य ह उससे बहुत बेहतर है कि तू आप अपनी मदद करे।'' अल्लाह तआला हमें भलाईयों की तौफ़ीक़ दे, अपनी इम्दाद नसीब करे, आमीन।

अल्ह़म्दु लिल्लाह! सूरह ह़ज्ज की तफ़्सीर मुकम्मल हुई और इसी के साथ अल्लाह के फ़ज़्लो करम से सत्रहवाँ पारा की तफ़्सीर भी मुकम्मल हो गई।

सूरह मोमिनून

سورة المؤمنون

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह मोमिनून - 23

आयात: 118 मक्की सूरह, पैराग्राफ: 8

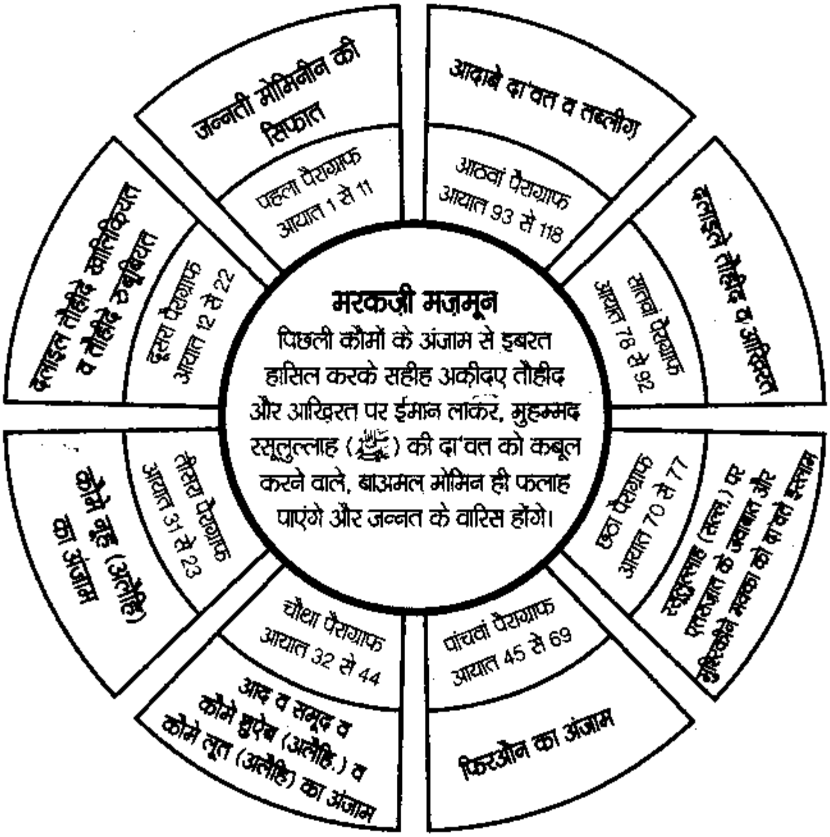

जमानए नुज़ूल :

सूरह मोमिनून, सूरह फुरकान के साथ ग़ालिबन सात नबवी के क़हत के ज़माने में, रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़यामे मक्का के तीसरे दौर (6 से 10 नबवी) में हजरत उमर (रज़ि.) के क़बूले इस्लाम (जुलहिज्जा 6 नबवी) के बाद नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) पर मजनून होने का इल्ज़ाम था (आयत 70)। जुनून का यही इल्ज़ाम हज़रत नूह (अलैहि) पर भी आइद किया गया था।
(आयत 25) आख़री आयत 118 में रहम की दुआ मांगी गई है कि अल्लाह तआ़ला कुरैशे मक्का को हलाक न करे।

سورة المؤمنون

तफ़्सीर सूरह मुअमिनून

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ① الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ② وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ
مُعۡرِضُوۡنَ ③ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوۡنَ ④ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ⑤ اِلَّا
عَلٰٓى اَزۡوَاجِهِمۡ اَوۡ مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُمۡ فَاِنَّهُمۡ غَيۡرُ مَلُوۡمِيۡنَ ⑥ فَمَنِ ابۡتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡعٰدُوۡنَ ⑦ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ ⑧ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَلٰى
صَلَوٰتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ ⑨ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡوٰرِثُوۡنَ ⑩ الَّذِيۡنَ يَرِثُوۡنَ الۡفِرۡدَوۡسَؕ هُمۡ فِيۡهَا
خٰلِدُوۡنَ ⑪

तर्जुमा : ''ईमान वालों ने नजात हासिल कर ली। (1) जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ करते हैं। (2) जो लग़्वियात से मुँह मोड़ लेते हैं। (3) जो ज़कात अदा करने वाले हैं। (4) जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (5) सिवाय अपनी बीवियों और मिल्कियत की लौण्डियों के यक़ीनन यह मलामतियों में से नहीं हैं। (6) इसके सिवा जो और ढूँढ़ें वही हद से तजावुज़ कर जाने वाले हैं। (7) जो अपनी अमानतों और वादे के हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (8) जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी किया करते हैं। (9) यही वारिस हैं। (10) जो फ़िरदौस (जन्नत) के वारिस होंगे जहाँ वह हमेशा रहेंगे।'' (11)

अल्लाह के नेक बन्दों की सिफ़ात (आयत 1 से 11) : नसाई, तिर्मिज़ी, मुस्नद अह़मद में मरवी है कि "ह़ज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जब वह़ी उतरती तो एक ऐसी मीठी मीठी भीनी भीनी हल्की हल्की सी आवाज़ आपके पास सुनी जाती जैसे शहद की मक्खियों के उड़ने की भिनभिनाहट की होती है। एक बार यही ह़ालत त़ारी हुई थोड़ी देर के बाद जब वह़ी उतर चुकी तो आप (ﷺ) ने क़िब्ले की त़रफ़ मुतवज्जह होकर अपने दोनों हाथ उठाकर यह दुआ पढ़ी कि या अल्लाह! तू हमें ज़्यादा कर, कम न कर, हमारा इकराम कर, एहानत न कर, हमें इन्आम अ़त़ा फ़र्मा, मह़रूम न रख, हमें दूसरों पर इख़्तियार कर ले, हम पर दूसरों को पसंद न कर, हमसे तू ख़ुश हो जा और हमें ख़ुश कर दे। अ़रबी के अल्फ़ाज़ यह हैं (अल्लाहुम्मा ज़िदना वला तन्कुस्ना व अक्रिम्ना वला तुहिन्ना व आ़तिना वला तह़रिम्ना व आसिरना वला तुअसिर अ़लैना वर्ज़ अ़न्ना व अर्ज़िना) फिर फ़र्माया मुझ पर दस आयतें उतरीं हैं जो उन पर जम गया वह जन्नती हो गया, फिर आप (ﷺ) ने मुंदर्जा बाला दस आयतें तिलावत फ़र्माईं।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल मुअमिनून : 3173; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 1439; अह़मद : 1/34 ह़ाकिम : 2/392; इसकी सनद में यूनुस बिन सुलैम मज्हूल रावी है। (अत्तक़रीब : 2/385; रक़म : 479) इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) इस ह़दीस को मुंकर बतलाते हैं क्योंकि इसका रावी यूनुस बिन सुलैम है जो मुह़द्दिसीन के नज़दीक मअ़रूफ़ नहीं। नसाई में है ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से हुज़ूर (ﷺ) के आ़दात व अख़्लाक़ के बारे में सवाल हुआ तो आपने फ़र्माया "हुज़ूर (ﷺ) का ख़ल्क़ क़ुरआन था फिर इन आयतों की (युह़ाफ़िज़ून) तक तिलावत की और फ़र्माया यही अख़्लाक़ हुज़ूर (ﷺ) के थे। (ह़ाकिम : 2/392; व सनदुहू ह़सन) मरवी है कि "जब अल्लाह तआ़ला ने जन्नते अ़द्न पैदा की और उसमें दरख़्त वग़ैरह अपने हाथ से लगाए तो उसे देखकर फ़र्माया, कुछ बोल! उसने यही आयतें तिलावत कीं जो क़ुरआन में नाज़िल हुईं। (ह़ाकिम : 2/392; व सनदुहू ह़सन) अबू सईद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि उसकी एक ईंट सोने की और दूसरी चाँदी की है, आख़िर तक।" फ़रिश्ते उसमें जब दाख़िल हुए तो कहने लगे वाह! वाह! यह तो बादशाहों की जगह है" और रिवायत में है "उसका गारा मुश्क का था।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 3508; ह़िल्यतुल औलिया : 6/204; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, अ़दी बिन फ़ज़ल मतरूक रावी है।) और रिवायत में है कि "उसमें वह वह चीज़ें हैं जो न किसी आँख ने देखीं, न किसी दिल में समाईं।" (मुअ़जमुल कबीर : 11429; मुअ़जमुल औसत़ : 742; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; बक़िय्यतु लम युस्रिह़ बिस्सिमाइल मुसलसल, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 5468) और रिवायत में है कि "जन्नत ने जब इन आयतों की तिलावत की तो जनाब बारी ने फ़र्माया, मुझे अपनी बुज़ुर्गी व जलाल की क़सम तुझमें बख़ील हर्गिज़ दाख़िल नहीं हो सकता।" (मुअ़जमुल औसत़ : 5514; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ह़म्माद बिन ईसा ज़ईफ़) और ह़दीस में है कि "उसकी एक ईंट सफ़ेद मोती की है और दूसरी लाल याक़ूत की और तीसरी सब्ज़ ज़बरजद की उसका गारा मुश्क का है उसकी घास ज़ाफ़रान की है।" उसके आख़िर में है कि इस ह़दीस को बयान फ़र्माकर हुज़ूर (ﷺ) ने आयत (وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ) (59/ह़श्र : 9) पढ़ी। (इब्ने अबिद्दुनिया व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुह़म्मद बिन ज़ियाद कल्बी ज़ईफ़)

अल्ग़र्ज़ फ़र्मान है कि मोमिन मुराद को पहुँच गए वह सआदत पा गए उन्होंने नजात पा ली उन मोमिनों की शान यह है कि वह अपनी नमाज़ों में ख़ौफ़े इलाही रखते हैं, ख़ुशूअ और सुकून के साथ नमाज़ अदा करते हैं। (तब्री : 19/9) पस यह ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ उसी शख़्स को हासिल हो सकता है जिसका दिल फ़ारिग़ हो ख़ुलूस हासिल हो और नमाज़ में पूरी दिलचस्पी हो और तमाम कामों से ज़्यादा उसी में दिल लगता हो। चुनाँचे हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुझे ख़ुश्बू और औरतें ज़्यादा पसंद हैं और मेरी आँखों की ठण्डक नमाज़ में रख दी गई है।" (नसाई, किताब अशरतुन्निसाअ, बाब हुब्बुन्निसाअ : 3391; व सनदुहू हसन; अहमद : 3/128; अबू यअला : 3482) "एक अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने नमाज़ के वक़्त लौण्डी से कहा कि पानी लाओ नमाज़ पढ़कर राहत हासिल करूँ तो सुनने वालों को उनकी यह बात गिराँ गुज़री। आपने फ़र्माया, रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत बिलाल (रज़ि.) से फ़र्माते थे "ऐ बिलाल! उठो और नमाज़ के साथ हमें राहत पहुँचाओ।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी सलातिल अत्मा : 4986; वहुव सहीहुन; अहमद : 5/371; मुश्किलुल आसार : 5549) फिर और वस्फ़ बयान हुआ कि वह बातिल से शिर्क से गुनाह से और हर एक बेहूदा और बेफ़ायदा क़ौल व अमल से बचते हैं। जैसे फ़र्मान है (وَ اِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا) (25/फ़ुरक़ान : 72) वह लग्वियात से बुज़ुर्गाना गुज़र जाते हैं, वह बुराई और बेकार कामों से अल्लाह की रोक की वजह से रुक जाते हैं और वस्फ़ उनका यह है कि यह ज़कातें माल अदा करते हैं अक्सर मुफ़स्सिरीन फ़र्माते हैं लेकिन इसमें एक बात यह है कि यह आयत मक्की है और ज़कात की फ़र्ज़ियत हिज्रत के दूसरे साल में हुई है। फिर मक्की आयत में इसका बयान कैसे ? इसका जवाब यह है कि असल ज़कात तो मक्का में ही वाजिब हो चुकी थी हाँ! उसकी मिक़्दार माल का निसाब वग़ैरह यह सब अहकाम मदीने में मुक़र्रर हुए। देखिए सूरह अन्आम भी मक्की है और इसमें भी ज़कात का हुक्म मौजूद है (وَ اٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ) (6/अन्आम : 141) यानी खेती के कटने वाले दिन उसकी ज़कात अदा कर दिया करो, हाँ! यह भी मअनी हो सकते हैं कि मुराद ज़कात से यहाँ नफ़्स को शिर्क व कुफ़्र के मेल कुचेल से पाक करना हो। जैसे फ़र्मान है (قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا) (91/शम्स : 9) उसने अपने नफ़्स को पाक कर लिया उसने फ़लाह पा ली और जिसने इसे ख़राब कर लिया वह नामुराद हुआ। यही एक क़ौल आयत (وَ وَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ) (41/फ़ुस्सिलत : 6) में भी है और यह भी हो सकता है कि आयत में दोनों ज़कातें एक साथ मुराद ली जाएँ यानी ज़कातें नफ़्स भी और ज़कातें माल भी, फ़िल्वाक़ेअ मोमिन कामिल वही है जो अपने नफ़्स को भी पाक रखे और अपने माल को भी ज़कात दे, वल्लाहु आलम! फिर और वस्फ़ बयान फ़र्माया कि वह सिवाय अपनी बीवियों और मिल्कियत की लौण्डियों के और औरतों से अपने नफ़्स को दूर रखते हैं यानी हरामकारी से बचते हैं, ज़िना लवातत (समलैंगिक) वग़ैरह से अपने आपको बचाते हैं, हाँ! उनकी बीवियाँ जो अल्लाह ने उन पर हलाल की हैं और जिहाद में मिली हुई लौण्डियाँ जो उन पर हलाल हैं उनके साथ मिलने में कोई मलामत और हर्ज नहीं जो शख़्स इनके सिवा और तरीक़ों से या औरों से ख़्वाहिश पूरी करे वह हद से गुज़र जाने वाला है। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि एक औरत ने अपने गुलाम को ले लिया और अपनी सनद में यही आयत पेश की। जब हज़रत उमर (रज़ि.) को यह मालूम हुआ तो आपने सहाबा (रज़ि.) के सामने इस मामले को पेश किया। सहाबा (रज़ि.) ने फ़र्माया, उसने ग़लत

मअनी मुराद लिए, इस पर फ़ारूक़े आज़म ने उस गुलाम का सर मुँडवाकर जला वतन कर दिया और उस औरत से फ़र्माया इसके बाद तू हर मुसलमान पर हराम है लेकिन यह असर मुन्क़तअ है और साथ ही ग़रीब भी है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इसे सूरह माइदा की तफ़्सीर के शुरू में वारिद किया है लेकिन इसके वारिद करने की सही जगह यही थी इसे आम मुसलमानों पर हराम करने की वजह उसके इरादे के ख़िलाफ़ उसके साथ मामला करना था, वल्लाहु आलम!

इमाम शाफ़ेई (रह.) और उनके मुवाफ़िक़ीन ने इस आयत से इस्तिदलाल किया है कि अपने हाथ से ख़ास पानी निकाल डालना हराम है। क्योंकि यह भी उन दोनों हलाल सूरतों के अलावा है और मुश्तज़नी करने वाला शख़्स भी हद से गुज़र जाने वाला है। इमाम हसन बिन अरफ़ा (रह.) ने अपने मशहूर जुज़ में एक हदीस वारिद की है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "सात क़िस्म के लोग हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला नज़रे रहमत से न देखेगा और न उन्हें पाक करेगा और न उन्हें आलिमों के साथ जमा करेगा और उन्हें सबसे पहले जहन्नम में जाने वालों के साथ जहन्नम में डाला जाएगा। यह और बात है कि वह तौबा कर लें। तौबा करने वालों पर अल्लाह तआला मेहरबानी से रुजूअ फ़र्माता है, एक तो हाथ से निकाह करने वाला यानी मुश्तज़नी करने वाला और अग़लामबाज़ी करने और कराने वाला और नशेबाज़ शराब का आदी और अपने माँ बाप को मारने पीटने वाला यहाँ तक कि वह चीख़ पुकार करने लगें और अपने पड़ोसियों को ईज़ा पहुँचाने वाला यहाँ तक कि वह उस पर लअनत भेजने लगें और अपनी पड़ौसन से बदकारी करने वाला।" (शुअबुल ईमान : 5470; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्लिमा बिन जाफ़र और हस्सान बिन हमीद दोनों मज्हूलुल हाल है।) वल्लाहु आलम! और वस्फ़ है कि वह अपनी अमानतें और अपने वादे पूरे करते हैं, अमानत में ख़यानत नहीं करते बल्कि अमानत की अदायगी में सब्क़त करते हैं, वादे पूरे करते हैं, इसके ख़िलाफ़ आदतें मुनाफ़िक़ों की होती हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं जब बात करे झूठ बोले, जब वादा करे ख़िलाफ़वर्ज़ी करे, जब अमानत दिया जाए ख़यानत करे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अलामातुल मुनाफ़िक़ : 33; सहीह मुस्लिम : 59; तिर्मिज़ी : 2633; अहमद : 2/357; मुस्नदे अबी यअला : 6533; मुस्नदे अबी अवाना : 1/21)

फिर और वस्फ़ बयान फ़र्माया कि वह नमाज़ों की उनके औक़ात पर हिफ़ाज़त करते हैं, रसूले करीम (ﷺ) से सवाल हुआ कि "सबसे ज़्यादा महबूब अमल अल्लाह के नज़दीक क्या है? आपने फ़र्माया नमाज़ को वक्त पर अदा करना, पूछा गया फिर? फ़र्माया, माँ बाप से सुलूक करना, पूछा गया फिर? फ़र्माया अल्लाह की राह में जिहाद करना।" (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब फ़ज़्लुस्सलात लि वक़्तिहा : 527; सहीह मुस्लिम : 85; तिर्मिज़ी : 173; अहमद : 1/451; इब्ने हिब्बान : 1477) हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं वक़्त से रुकूअ सज्दे वग़ैरह की हिफ़ाज़त मुराद है उन पर दोबारा नज़र डालो शुरू में भी नमाज़ का बयान हुआ और आख़िर में भी नमाज़ का बयान हुआ, जिससे साबित हुआ कि नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है।

हदीस में है "सीधे सीधे रहो और तुम हर्गिज़ एहाता न कर सकोगे जान लो कि तुम्हारे तमाम आमाल में बेहतरीन अमल नमाज़ है, देखो वुज़ू की हिफ़ाज़त सिर्फ़ मोमिन ही कर सकता है।" (इब्ने माजा,

किताबुत्तहारत, बाब अल्मुहाफ़िज़तु अलल वुज़ू : 277; वहुव हसन; अहमद : 5/276; हाकिम : 1/130) इन सब सिफ़ात का बयान फ़र्मा कर इर्शाद होता है कि यही लोग वारिस हैं जो जन्नतुल फ़िरदौस के दाइमी वारिस होंगे, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का फ़र्मान है, ''अल्लाह से जब जन्नत मांगो जन्नतुल फ़िरदौस मांगो वह सबसे आला और औसत जन्नत है वहीं से जन्नत की सब नहरें जारी होती हैं उसी के ऊपर अल्लाह तआला का अर्श है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब दरजातुल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह : 2790; अहमद : 2/335; इब्ने हिब्बान : 4611)

फ़र्माते हैं तुममें से हर एक की दो दो जगहें हैं, एक मंज़िल जन्नत में एक जहन्नम में। जब कोई दोज़ख़ में गया तो उसकी मंज़िल के वारिस जन्नती बनते हैं उसी का बयान इस आयत में है। (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब सिफ़तुल जन्ना, : 4341; वहुव सहीहुन) मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं जन्नती तो अपनी जन्नत की जगह सँवार लेता है और जहन्नम की जगह ढा देता है और दोज़ख़ी उसके ख़िलाफ़ करता है कुफ़्फ़ार जो इबादत के लिए पैदा किये गए थे उन्होंने इबादत तर्क कर दी तो उनके लिए जो इन्आमात थे वह उनसे छीनकर सच्चे मोमिनों के हवाले कर दिये गए इसीलिए उन्हें वारिस कहा गया। सहीह मुस्लिम में है कुछ मुसलमान पहाड़ों के बराबर गुनाह लेकर आएँगे जिन्हें अल्लाह तआला यहूदों नसारा पर डाल देगा और उन्हें बख़्श देगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौहीद, बाब फ़ी सअति रहमतिल्लाहि तआला अलल मोमिनीन व फ़िदाउ कुल्लि मुस्लिम बिकाफ़िरिम् मिनन्नारि : 2767)

और सनद से मरवी है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला हर मुसलमान को एक एक यहूदी या नसरानी देगा कि यह तेरा फ़िदया है जहन्नम से हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने जब यह हदीस सुनी तो रावी हदीस अबू बुर्दा (रज़ि.) को क़सम दी उन्होंने तीन मर्तबा क़सम खाकर हदीस को दोहराया। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौहीद, बाब फ़ी सअति रहमतिल्लाहि तआला अलल मोमिनीन व फ़िदाउ कुल्लि मुस्लिम बिकाफ़िरिम् मिनन्नारि : 2767) इसी जैसी आयत यह भी है (تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا) (19/मरयम : 63) और आयत में है (وَ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 72) फ़िरदौस रूमी ज़ुबान में बाग़ को कहते हैं। कुछ सलफ़ कहते हैं कि उस बाग़ को जिसमें अंगूर की बेलें हों, वल्लाहु आलम!

***

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ
خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ
لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ
لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने इंसान को बजती हुई मिट्टी से पैदा किया। (12) फिर उसे नुत़्फ़ा बनाकर महफ़ूज़ जगह में क़रार दे दिया। (13) फिर नुत़्फ़े को हमने जमा हुआ ख़ून बना दिया फिर उस ख़ून के लोथड़े को गोश्त का टुकड़ा कर दिया फिर गोश्त के टुकड़े को हमने हड्डियाँ बना दीं फिर हड्डियों को हमने गोश्त पहना दिया फिर एक और ही पैदाइश में पैदा कर दिया। बरकतों वाला है वह अल्लाह जो सबसे अच्छी पैदाइश करने वाला है। (14) उसके बाद फिर तुम सब यक़ीनन मर जाने वाले हो। (15) फिर क़ियामत के दिन बिला शुब्हा तुम सब उठाये जाओगे।'' (16)

इंसान की पैदाइश और उसकी हक़ीक़त (आयत 12 से 16) : अल्लाह तआला इंसानी पैदाइश की शुरुआत बयान करता है कि असल आदम मिट्टी से है जो कीचड़ की और बजने वाली मिट्टी की सूरत मेंथी फिर हज़रत आदम (ﷺ) के पानी से उनकी औलाद पैदा हुई। जैसे फ़र्मान है अल्लाह तआला ने तुम्हें मिट्टी से पैदा करके फिर इंसान बनाकर ज़मीन पर फैला दिया। (30/रूम : 20) मुस्नद में है ''अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (ﷺ) को ख़ाक की एक मुट्ठी से पैदा किया जिसे तमाम ज़मीन पर से ली थी पस उसी ऐतिबार से औलादे आदम के रंग व रूप मुख़्तलिफ़ हुए कोई लाल है कोई सफ़ेद है कोई काला है कोई और रंग का है उनमें नेक हैं और बद भी हैं। (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िल क़द्र : 4693; व सनदुहू सह़ीहुन; तिर्मिज़ी : 2955; अह़मद : 4/400; ह़ाकिम : 2/261; इब्ने ह़िब्बान : 6160) (सुम्म जअ़ल्नाहु) में ज़मीर का मरजअ जिंसे इंसान की तरफ़ है। जैसे इर्शाद है (وَ بَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ) (32/सज्दा : 7, 8) और आयत में है (اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝) (77/मुर्सलात : 20, 21) पस इंसान के लिए एक मुद्दते मुअय्यन तक उसकी माँ का रह़म ही ठिकाना होता है जहाँ एक ह़ाल से दूसरी ह़ालत की तरफ़ और एक सूरत से दूसरी सूरत की तरफ़ मुंतक़िल होता रहता है फिर नुत़्फ़े की जो एक उछलने वाला पानी है जो मर्द की पीठ से और औरत के सीने से निकलता है शक्ल बदलकर लाल रंग की बोटी की शक्ल में बदल जाता है फिर उसे गोश्त के एक टुकड़े की सूरत में बदल दिया जाता है जिसमें कोई शक्ल और कोई ख़त़ नहीं होता फिर उनमें हड्डियाँ बना दीं सर हाथ पैर हड्डी रग पुट्ठे वग़ैरह बनाए पीठ की हड्डी बनाई, रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''इंसान का तमाम जिस्म गल सड़ जाता है सिवाय रीढ की हड्डी के। उसी से पैदा किया जाता है और उसी से तर्कीब दी जाती है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुज़्ज़ुमर बाब क़ौलुहू (व नुफ़िख़ा फ़िस्सूरि फ़सइक़...) : 4814; सह़ीह़ मुस्लिम : 2955; अबूदाऊद : 4743; इब्ने माजा : 4266; अह़मद : 2/322; इब्ने ह़िब्बान : 3139) फिर उन हड्डियों को वह गोश्त पहनाता है ताकि वह पोशीदा और क़वी रहें फिर उसमें रूह़ फूँकता है जिससे वह हिलने जुलने चलने फिरने के क़ाबिल हो जाता है और एक जानदार इंसान बन जाए, देखने की सुनने की समझने की और ह़रकत व सुकून की क़ुदरत अ़ता करता है वह बाबरकत अल्लाह सबसे अच्छी पैदाइश का पैदा करने वाला है, ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से मरवी है कि जब नुत़्फ़े पर चार महीने गुज़र जाते हैं तो अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को भेजता है जो तीन तीन अंधेरियों में उसमें रूह़ फूँकता है। यही

मअनी है कि हम फिर उसे दूसरी ही पैदाइश में पैदा करते हैं यानी दूसरी क़िस्म की उस पैदाइश से मुराद रूह़ का फूँका जाना है पस एक ह़ालत से दूसरी और दूसरी से तीसरी की त़रफ़ माँ के पेट में ही हेर फेर होने के बाद बिलकुल नासमझ बच्चा पैदा होता है फिर वह बढ़ता जाता है, यहाँ तक कि वह जवान बन जाता है फिर उसे अधेड़पन आता है फिर बूढ़ा हो जाता है फिर बिलकुल ही बूढ़ा हो जाता है अल्ग़र्ज़ रूह़ का फूँका जाना और फिर उन इंक़िलाबात का आना शुरू हो जाता है। (त़बरी : 19/18) वल्लाहु आलम! हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''तुममें से हर एक की पैदाइश चालीस दिन तक उसकी माँ के पेट में जमा होती है फिर चालीस दिन तक वह ख़ून बस्ता की सूरत में रहता है फिर चालीस दिन तक वह गोश्त के लोथड़े की शक्ल में रहता है फिर अल्लाह तआला फ़रिश्ते को भेजता है जो उसमें रूह़ फूँकता है और बहुक्मे इलाही चार बातें लिख ली जाती है रोज़ी, अजल, अ़मल और नेक या बद बुरा या भला होना। पस क़सम है उसके जिसके सिवा कोई मअबूदे बरह़क़ नहीं कि एक शख़्स जन्नती का अ़मल करता रहता है यहाँ तक कि जन्नत से सिर्फ़ एक हाथ दूर रह जाता है लेकिन तक़्दीर का वह लिखा ग़ालिब आ जाता है और ख़ात्मा के वक़्त दोज़ख़ी काम करने लगता है और उसी पर मरता है और जहन्नम में चला जाता है इसी त़रह़ एक इंसान बुरे काम करते करते दोज़ख़ से हाथ भर के फ़ासले पर रह जाता है लेकिन फिर तक़्दीर का लिखा आगे बढ़ जाता है और जन्नत के आ़माल पर ख़ात्मा होकर दाख़िले जन्नतुल फ़िरदौस हो जाता है।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइका स़लवातुल्लाहि अ़लैहिम : 3208; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2643; अबूदाऊद : 4708; तिर्मिज़ी : 3137; इब्ने माजा : 76; अह़मद : 1/382; इब्ने ह़िब्बान : 6174)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं नुत्फ़ा जब रह़म में पड़ता है तो वह हर हर बाल और नाख़ुन की जगह पहुँच जाता है फिर चालीस दिन के बाद उसकी शक्ल जमे हुए ख़ून जैसी हो जाती है मुस्नद अह़मद में कि ''ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने अस्ह़ाब से बातें बयान कर रहे थे जो एक यहूदी आ गया तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने उससे कहा, यह नबुव्वत के दावेदार हैं उसने कहा, अच्छा! मैं इनसे एक सवाल करता हूँ जिसे नबियों के सिवा और कोई नहीं जानता। आपकी मज्लिस में आकर बैठकर पूछता है कि बताओ इंसान की पैदाइश किस चीज़ से होती है? आपने फ़र्माया, मर्द औ़रत के नुत्फ़े से, मर्द का नुत्फ़ा ग़लीज़ और गाढ़ा होता है उससे हड्डियाँ और पुट्ठे बनते हैं और औ़रत का नुत्फ़ा रक़ीक़ और पतला होता है उससे गोश्त और ख़ून बनता है उसने कहा, आप सच्चे हैं अगले नबियों का भी यही क़ौल है। (अह़मद : 1/465; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हुसैन बिन ह़सन अश्क़र; जुम्हूर मुह़द्दिसीन के नज़दीक ज़ईफ़ और अ़त़ा बिन साइब मुख़्तलत़ रावी है।) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं जब नुत्फ़े को रह़म में चालीस दिन गुज़र जाते हैं तो एक फ़रिश्ता आता है और अल्लाह तआ़ला से पूछता है कि या अल्लाह! यह नेक होगा या बुरा? मर्द होगा या औ़रत? जो जवाब मिलता है वह लिख लेता है और अ़मल और उम्र और नर्मी गर्मी सब कुछ लिख लेता है फिर दफ़्तर लपेट लिया जाता है, उसमें फिर किसी कमी बेशी की गुंजाइश नहीं है।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब कैफ़ियतु ख़ल्क़िल आदमी फ़ी बत़्नि उम्मिही... : 2644; अह़मद : 4/6; मुश्किलुल आसार : 2663) बज़्ज़ार की ह़दीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआ़ला ने रह़म पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर

किया है जो अ़र्ज़ करता है या अल्लाह! अब नुत्फ़ा है या अल्लाह! अब लौथड़ा है, या अल्लाह! अब गोश्त का टुकड़ा है। जब जनाब बारी तआला उसे पैदा करना चाहता है वह पूछता है या अल्लाह! मर्द हो या औरत? शक़ी हो या सईद? रिज़्क़ क्या है? अजल (मौत) क्या है? इसका जवाब दिया जाता है'' और यह सब चीज़ें लिख ली जाती हैं। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब ख़ल्क़े आदम व ज़ुर्रियतिही : 3333; सहीह मुस्लिम : 2646; अहमद : 3/148) इन सब बातों और अपनी कामिल क़ुदरतों का बयान करके फ़र्माया कि सबसे अच्छी पैदाइश करने वाला अल्लाह बरकतों वाला है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने अपने रब की मुवाफ़िक़त चार बातों में की है। जब यह आयत उतरी कि हमने इंसान को बजती मिट्टी से पैदा किया है तो बेसाख़ता मेरी ज़ुबान से (फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन) निकला और वही फिर उतरा। (मुस्नदे तयालिसी : 41; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अली बिन ज़ेद बिन जिदआन मशहूर ज़ईफ़ रावी है।) ''ज़ेद बिन साबित अंसारी (रज़ि.) को जब रसूले करीम (ﷺ) ऊपर वाली आयतें लिखवा रहे थे (सुम्मा अन्शअनाहू ख़ल्क़न आख़र) तक लिखवा चुके तो हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने बेसाख़्ता कहा (फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालेक़ीन) इसे सुनकर अल्लाह के नबी (ﷺ) हंस दिये। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप क्यों हंसे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''इस आयत के ख़ात्मे पर भी यही है।'' (मुअजमुल औसत : 4657; इसकी सनद में जाबिर बिन यज़ीद जअफ़ी सख़्त ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 1/123) जैसाकि हाफ़िज इब्ने कसीर ने फ़र्माया, लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) इस हदीस की सनद का एक रावी जाबिर जअफ़ी है जो बहुत ही ज़ईफ़ है और यह रिवायत बिलकुल मुंकर है। हज़रत ज़ेद बिन साबित (रज़ि.) कातिबे वही मदीना में थे न कि मक्का में। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) के इस्लाम का वाक़िया भी मदीना का वाक़िया है और यह आयत मक्का में नाज़िल हुई है पस मुंदर्जा बाला रिवायत बिलकुल मुंकर है, वल्लाहु आलम! इस पहली पैदाइश के बाद तुम मरने वाले हो फिर क़ियामत के दिन दूसरी बार पैदा किये जाओगे फिर हिसाब किताब होगा ख़ैरो शर्र का बदला मिलेगा।

***

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾ وَاَنْزَلْنَا مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا
لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً
تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ

لَعِبْرَةً نُسْقِيكُمْ مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَّمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : ''हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाये हैं और हम मख़्लूक़ात से ग़ाफ़िल नहीं हैं। (17) हम एक सही अंदाज़े से आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उसे ज़मीन में ठहरा देते हैं और हम इसके ले जाने पर यक़ीनन क़ादिर हैं। (18) उसी पानी के ज़रिये से हम तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ात पैदा कर देते हैं कि तुम्हारे लिए उनमें बहुत से मेवे होते हैं, उन ही में से तुम खाते भी हो।(19) और वह दरख़्त जो तूरे सीना पहाड़ से निकलता है जो तेल निकालता है और खाने वालों के लिए सालन है। (20) तुम्हारे लिए चौपायों में भी बड़ी भारी इब्रत है उनके पेटों में से हम तुम्हें दूध पिलाते हैं और भी बहुत से नफ़ा तुम्हारे लिए उनमें हैं उनमें से कुछ कुछ को तुम खाते भी हो। (21) और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार कराये जाते हो।'' (22)

आसमान की पैदाइश का तज़्किरा (आयत 17 से 22) : इंसान की पैदाइश का ज़िक्र करके आसमानों की पैदाइश का बयान हो रहा है जिनकी बनावट इंसानी बनावट से बहुत बड़ी और बहुत भारी और बहुत बड़ी सन्अत वाली है, सूरह अलिफ़ लाम मीम सज्दा में भी इसका बयान है जिसे हुज़ूर (ﷺ) जुम्अे के दिन सुबह की नमाज़ की पहली रकअत में पढ़ा करते थे वहाँ पहले आसमान व ज़मीन की पैदाइश का ज़िक्र है। फिर इंसानी पैदाइश का ज़िक्र है फिर क़ियामत का और सज़ा जज़ा का ज़िक्र है वग़ैरह। सात आसमानों के बनाने का ज़िक्र किया है। जैसे फ़र्मान है (تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهِنَّ) (17/बनी इस्राईल : 44) सातों आसमान और सब ज़मीनों और उनकी सब चीज़ें अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करती हैं, क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने किस तरह ऊपर तले सातों आसमानों को बनाया, अल्लाह तआला वह है जिसने सात आसमान बनाये और उन ही जैसी ज़मीनें। उसका हुक्म उनके बीच नाज़िल होता है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है और तमाम चीज़ों को अपने वसीअ इल्म से घेरे हुए है अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ से ग़ाफ़िल नहीं जो चीज़ ज़मीन में जाए जो ज़मीन से निकले अल्लाह के इल्म में है, आसमान से जो उतरे और जो आसमान की तरफ़ चढ़े वह जानता है जहाँ भी तुम हो वह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे एक एक अमल को वह देख रहा है आसमान की बुलंद व बाला चीज़ें और ज़मीन की छुपी चीज़ें पहाड़ों की चोटियाँ समुन्द्रों की तह सब उसके सामने खुली हुई है, पहाड़ों के टीलों की, रेत की, समुन्द्रों की, मैदानों की, दरख़्तों की, सबकी उसे ख़बर है, दरख़्तों का कोई पत्ता नहीं गिरता जो उसके इल्म में न हो, कोई दाना ज़मीन की अंधेरियों में ऐसा नहीं जाता जिसे वह जानता न हो, कोई तर ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं जो खुली किताब में न हो।

चंद बड़ी नेअ़मतों का ज़िक्र : अल्लाह तआ़ला की यूँ तो बेशुमार और अनगिनत नेअ़मतें हैं लेकिन चंद बड़ी बड़ी नेअ़मतों का यहाँ ज़िक्र हो रहा है कि वह आसमान से क़द्रे ह़ाजत व ज़रूरत बारिश बरसाता है न तो बहुत ज़्यादा कि ज़मीन ख़राब हो जाए और पैदावार सड़ गल जाए, न बहुत कम कि फल अनाज वग़ैरह पैदा ही न हो बल्कि उस अंदाज़े से कि खेती सरसब्ज़ रहे, बाग़ात हरे भरे रहें, हौज़ तालाब नहरें, नदियाँ नाले दरिया बह निकलें, न पीने की कमी हो, न पिलाने की यहाँ तक कि जिस जगह ज़्यादा बारिश की ज़रूरत होती है वहाँ ज़्यादा होती है और जहाँ कम की, वहाँ कम होती है और जहाँ की ज़मीन इस क़ाबिल ही नहीं होती वहाँ पानी नहीं बरसता लेकिन नदियों और नालों के ज़रिये वहाँ कुदरत बरसाती पानी पहुँचाकर वहाँ की ज़मीन को सैराब कर देती है जैसे कि मिस्र के इलाक़े की ज़मीन जो दरियाए नील की तरी से सरसब्ज़ व शादाब हो जाती है उसी पानी के साथ लाल मिट्टी खींचकर जाती है जो ह़ब्शा के इलाक़े में होती है वहाँ की बारिश के साथ वह मिट्टी बहकर पहुँचती है जो ज़मीन पर ठहर जाती है और ज़मीन खेती के क़ाबिल हो जाती है, वरना वहाँ की शोर ज़मीन खेती के क़ाबिल नहीं। सुब्ह़ानल्लाह! उस लतीफ़ व ख़बीर, ग़फ़ूर व रह़ीम अल्लाह की क्या क्या कुदरतें और ह़िक्मतें हैं ज़मीन में अल्लाह पानी को ठहरा देता है ज़मीन में उसके चूस लेने और जज़्ब कर लेने की क़ाबिलियत अल्लाह तआ़ला पैदा कर देता है ताकि दानों को और गुठलियों को अंदर ही अंदर वह पानी पहुँचा दे।

फिर फ़र्माता है हम इसके ले जाने और दूर कर देने पर यानी न बरसाने पर भी क़ादिर हैं अगर चाहें शोर संगलाख़ ज़मीन पर और पहाड़ों और बेकार वनों में बरसा दें। अगर चाहें पानी कड़वा कर दें, न पीने के क़ाबिल रहे न पिलाने के, न खेत और बाग़ात के मतलब का रहे, न नहाने धोने के मक़्सद का अगर चाहें ज़मीन में वह कुव्वत ही न रखें कि वह पानी को जज़्ब कर ले, चूस ले बल्कि ऊपर ही ऊपर तैरता फिरे यह भी हमारे इख़्तियार में है कि ऐसी दूर दराज़ झीलों में पानी पहुँचा दें कि तुम्हारे लिए बेकार हो जाए और तुम कोई फ़ायदा उससे न उठा सको यह ख़ास अल्लाह का फ़ज़्लो करम और उसका लुत्फ़ो रहम है कि वह बादलों से मीठा उ़म्दा हल्का और ख़ुश ज़ायक़ा पानी बरसाता है फिर उसे ज़मीन में पहुँचाता है और इधर उधर रेल पेल कर देता है खेतियाँ अलग पकती हैं, बाग़ात अलग तैयार होते हैं, ख़ुद पीते हो अपने जानवरों को पिलाते हो, नहाते धोते हो, पाकीज़गी और सुथराई ह़ासिल करते हो, फ़ल्ह़म्दु लिल्लाह! आसमानी बारिश से रब्बुल आ़लमीन तुम्हारे लिये रोज़ियाँ उगाता है लहलहाते हुए ख़ेत हैं, कहीं सरसब्ज़ बाग़ हैं जो अलावा ख़ुशनुमा और ख़ुशमंज़र होने के मुफ़ीद और फ़ेज़ वाले हैं, खजूर अंगूर जो अहले अ़रब का दिल पसंद मेवा है और इसी त़रह़ हर मुल्क वालों के लिए अलग अलग त़रह़ त़रह़ के मेवे उसने पैदा कर दिये हैं जिनकी पूरी शुक्रगुज़ारी भी किसी की बस की नहीं। बहुत मेवे तुम्हें उसने दे रखे हैं जिनकी ख़ूबसूरती भी तुम देखते हो और ख़ुशज़ायक़ी से भी खाकर फ़ायदा उठाते हो, फिर ज़ैतून के दरख़्त का ज़िक्र फ़र्माया, तूरे सीना वह पहाड़ है जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) से बातचीत की थी और उसके आसपास की पहाड़ियाँ। तूर उस पहाड़ को कहते हैं जो हरा और दरख़्तों वाला हो, वरना उसे जबल कहेंगे, तूर नहीं कहेंगे। पस तूरे सीना में जो दरख़्त ज़ैतून पैदा होता है उसमें से तेल निकलता है जो खाने वालों को सालन का काम

देता है। हदीस में है "ज़ैतून का तेल खाओ और लगाओ वह मुबारक दरख़्त में से निकलता है।" (अहमद : 3/497; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी मुदल्लस व अन्अन; हाकिम : 2/397) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) के यहाँ एक साहब आशूरे की रात को मेहमान बनकर आये तो आपने उन्हें ऊँट की सिरी और ज़ैतून खिलाया और फ़र्माया, यह उस मुबारक दरख़्त का तेल है जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) से किया है फिर चौपायों का ज़िक्र हो रहा है और उनसे जो फ़वाइद इंसान उठा रहे हैं उन नेअमतों का इज़्हार हो रहा है कि उनका दूध पीते हैं उनका गोश्त खाते हैं उनके बालों और ऊन से लिबास वग़ैरह बनाते हैं, उन पर सवार होते हैं, उन पर अपना सामान अस्बाब लादते हैं और दूरदराज़ तक पहुँचते हैं कि अगर यह न होते तो वहाँ तक पहुँचने में जान आधी रह जाती। बेशक अल्लह तआला बन्दों पर मेहरबानी और रहमत करने वाला है जैसे फ़र्मान है (اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ) (36/यासीन : 71) क्या वह नहीं देखते कि ख़ुद हमने इन्हें चौपायों का मालिक बना रखा है कि यह उनके गोश्त खाएँ उन पर सवारियाँ करें और तरह तरह के नफ़ा हासिल करें क्या अब भी इन पर हमारी शुक्रगुज़ारी वाजिब नहीं? यह ख़ुश्की की सवारियाँ हैं फिर तरी की सवारियाँ कश्ती जहाज़ वग़ैरह अलग हैं।

***

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन हमने नूह (عليه السلام) को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा उसने कहा कि ऐ मेरी कोम के लोगों! अल्लाह तआला की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं क्या तुम तक़्वा नहीं रखते। (23) उसकी क़ौम के काफ़िर सरदारों ने साफ़ कह दिया कि यह तो तुम जैसा ही इंसान है यह तुम पर फ़ज़ीलत और बड़ाई हासिल करना चाहता है अगर अल्लाह ही को मंज़ूर होता तो किसी फ़रिश्ते को उतारता हमने तो इसे अपने अगले बाप दादों के ज़मानों में सुना ही नहीं। (24) यक़ीनन इस शख़्स को जुनून है पस तुम इसे एक वक़्ते मुक़र्ररा तक ढील दो।" (25)

नूह (عليه السلام) और मुतकब्बिर सरदार (आयत 23 से 25) : नूह (عليه السلام) को अल्लाह तआला ने बशीर व नज़ीर बनाकर उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा। आपने उनमें जाकर पैग़ामे इलाही पहुँचाया कि अल्लाह की

इबादत करो उसके सिवा तुम्हारी इबादतों का हक़दार कोई नहीं, तुम अल्लाह के सिवा उसके साथ दूसरों को पूजते हुए अल्लाह से डरते नहीं हो? क़ौम के बड़ों ने और सरदारों ने कहा कि यह तो तुम जैसा ही एक इंसान है, नबुव्वत का दावा करके तुमसे बड़ा बनना चाहता है, सरदारी हासिल करने की फ़िक्र में है, भला इंसाना की तरफ़ वही (अल्लाह का पैग़ाम) कैसे आती? अल्लाह का इरादा नबी भेजने का होता तो किसी आसमानी फ़रिश्ते को भेज देता। यह तो हमने क्या? हमारे बाप दादों ने भी नहीं सुना कि इंसान अल्लाह का रसूल बन जाए यह तो कोई दीवाना शख़्स है कि ऐसे दावे करता है और डींगे मारता है अच्छा ख़ामोश रहो देख लो हलाक हो जाएगा।

***

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾

तर्जुमा : ''नूह (عليه السلام) ने दुआ की ऐ मेरे पालने वाले! इनके झुठलाने पर तू मेरी मदद कर। (26) तो हमने उनकी तरफ़ वही भेजी कि तू हमारी आँखों के सामने हमारी वही के मुताबिक़ एक कश्ती बना, जब हमारा हुक्म आ जाए और तन्नुर (पानी) उबल पड़े तो तू हर क़िस्म का एक एक जोड़ा उसमें रख ले और अपनी अहल को भी मगर उनमें से जिसकी बाबत हमारी बात पहले गुज़र चुकी है। ख़बरदार! जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझसे कुछ कलाम न करना वह तो सब डुबोये जाएँगे। (27) जब तू और तेरे साथी कश्ती पर बाइत्मिनान बैठ जाओ तो कहना कि सब तअरीफ़ अल्लाह के लिए ही है जिसने हमें ज़ालिम लोगों से नजात अता की। (28) और कहना कि ऐ मेरे रब! मुझे बाबरकत उतारना और तू ही बेहतर उतारने वाला है। (29) यक़ीनन इसमें बड़ी बड़ी निशानियाँ हैं और हम बेशक आज़माइश करने वाले हैं।'' (30)

नूह (ﷺ) को कश्ती बनाने का हुक्म (आयत 26 से 30) : जब नूह (ﷺ) उनसे तंग आ गये और मायूस हो गए तो अल्लाह तआला से दुआ की कि मेरे परवरदिगार! मैं लाचार हो गया हूँ तू मेरी मदद फ़र्मा, झुठलाने वालों पर मुझे ग़ालिब कर, उसी वक़्त फ़र्माने इलाही सरज़द हुआ कि कश्ती बनाओ और ख़ूब मज़बूत चौड़ी चकली उसमें हर क़िस्म का एक एक जोड़ा रख लो, हेवानात नबातात, फल वग़ैरह वग़ैरह और उसी में अपने वालों को भी बिठा, मगर जिस पर अल्लाह की तरफ़ से हलाकत सब्क़त कर चुकी है जो ईमान नहीं लाए जैसे आपकी क़ौम के काफ़िर और आपका लड़का और आपकी बीवी, वल्लाहु आलम! और जब तुम अज़ाबे आसमानी बसूरते बारिश और पानी आना देख लो फिर मुझसे उन ज़ालिमों की सिफ़ारिश न करना, फिर उन पर रहम न करना, न उनके ईमान की उम्मीद रखना बस फिर तो यह सब डूब जाएँगे और कुफ़्र पर ही उनका ख़ात्मा होगा, इसका पूरा बयान सूरह हूद की तफ़्सीर में गुज़र चुका है इसलिए हम यहाँ नहीं दोहराते, जब तू और तेरे साथी मोमिन कश्ती पर सवार हो जाओ तो कहना कि सब तअरीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें ज़ालिमों से नजात दी। जैसे फ़र्मान है कि अल्लाह ने तुम्हारी सवारी के लिए कश्तियाँ और चौपाये बनाए हैं ताकि तुम सवारी लेकर अपने रब की नेअमत को मानो और सवार होकर कहो कि वह अल्लाह पाक है जिसने इन जानवरों को हमारा ताबेअ बना दिया, हालाँकि हममें ख़ुद इतनी ताक़त न थी, बिलयक़ीन हम अपने रब की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं। (43/ज़ुख़रुफ़ : 12 से 14) हज़रत नूह (ﷺ) ने यही कहा और फ़र्माया, आओ इसमें बैठ जाओ अल्लाह के नाम के साथ इसका चलना और ठहरना है पस शुरू चलने के वक़्त भी अल्लाह को याद किया ओर जब वह ठहरने लगी तब भी अल्लाह को याद किया और दुआ की कि या अल्लाह! मुझे मुबारक मंज़िल पर उतारना और तू ही सबसे बेहतर उतारने वाला है। इसमें यानी मोमिनों की नजात और काफ़िरों की हलाकत में अम्बिया (ﷺ) की तस्दीक़ की निशानियाँ हैं, अल्लाह की क़ुदरत की अलामतें हैं उसकी क़ुदरत उसका इल्म इससे ज़ाहिर होता है, यक़ीनन रसूलों को भेजकर अल्लाह तआला अपने बन्दों की आज़माइश और उनका पूरा इम्तिहान कर लेता है।

***

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا
تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ
﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ

لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ
هُوَ اِلَّا رَجُلُ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا
كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ
غُثَآءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

तर्जुमा : "उनके बाद हमने और भी उम्मतें पैदा कीं। (31) फिर उनमें से ही रसूल भी भेजे कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं तुम क्यूँ नहीं डरते? (32) सरदाराने क़ौम ने जवाब दिया जो क़ौम कुफ्र करती थी और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाती थी और हमने उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में ख़ुशहाल कर रखा था कि यह तो तुम जैसा ही इंसान है तुम्हारी ही ख़ूराक यह भी खाता है और तुम्हारे पीने का पानी ही यह भी पीता है। (33) अगर तुमने अपने जैसे ही इंसान की ताबेदारी कर ली तो बेशक तुम घाटा उठाने वाले हो। (34) क्या यह तुम्हें उस बात से धमकाता है कि जब तुम मरकर सिर्फ़ राख और हड्डी रह जाओगे तो तुम फिर ज़िन्दा किये जाओगे। (35) नहीं नहीं! दूर और बहुत दूर है वह जिसका तुम वादा दिये जाते हो। (36) यह तो सिर्फ़ ज़िन्दगानी दुनिया ही है हम मरते जीते रहते हैं, यह नहीं कि हम फिर भी उठाये जाएँ। (37) यह तो वह शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँध लिया है हम तो इस पर यक़ीन लाने वाले नहीं हैं। (38) नबी ने दुआ की कि परवरदिगार! इनके झुठलाने पर तू मेरी मदद कर। (39) जवाब मिला कि यह तो बहुत ही जल्द अपने किये पर पछताने लगेंगे। (40) आख़िरकार अ़दल के तक़ाज़े के मुताबिक़ उन्हें चीख़ ने पकड़ लिया और हमने उन्हें कूड़ा करकट कर डाला पस ज़ालिमों के लिए दूरी है।" (41)

क़ौमे नूह (عليه السلام) के बाद आद व समूद (आयत 31 से 41) : अल्लाह तआ़ला बयान फ़र्माता है कि हज़रत नूह (عليه السلام) के बाद भी बहुत सी उम्मतें आईं जैसे कि आ़दी कि उनके मुत्तसिल ही थे या समूदी कि उन पर चीख़ का अ़ज़ाब आया था जैसे कि इस आयत में है। उनमें भी अल्लाह के रसूल आए, अल्लाह की इबादत और उसकी तौहीद की तालीम दी। लेकिन उन्होंने झुठलाया मुख़ालिफ़त की। इत्तिबाअ़ से इंकार किया सिर्फ़ इस बिना पर कि यह इंसान हैं। क़ियामत को भी न माना, जिस्मानी हश्र के मुंकिर बन गए और कहने लगे कि यह बिलकुल दूर अज़्क़यास है। बअ़स व नश्रो हश्र व क़ियामत कोई चीज़ नहीं। उस शख़्स ने यह सब बातें अज़्ख़ुद गढ़ ली हैं हम ऐसी वाही तबाही बातों के मानने वाले नहीं, नबी ने दुआ की और उन पर मदद तलब की, उसी वक़्त जवाब मिला कि तेरी नामुवाफ़िक़त अभी अभी उन पर अ़ज़ाब बनकर बरसेगी और यह आठ आठ आँसू रोएँगे आख़िर एक ज़बरदस्त चीख़ और बेपनाह चिंघाड़ के साथ सब तल्फ़ कर

दिये गए और उसी के वह मुस्तहिक़ भी थे तेज़ तुंद आँधी और पूरी ताक़तवर हवा के साथ ही फ़रिश्ते की दिल दहला देने वाली ख़ौफ़नाक आवाज़ ने उन्हें पारा पारा कर दिया, वह हलाक और तबाह हो गए, भूसी सी उड़ गई सिर्फ़ मकानात के खण्डर रह गये गुज़रे हुए लोगों की निशानदेही के लिए, वह कूड़े करकट की तरह बेकार चीज़ हो गए, ऐसे ज़ालिमों के लिए दूरी है उन पर रब ने ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन ही का किया हुआ था जो उनके सामने आया पस लोगों तुम्हें भी मुख़ालिफ़ते रसूल (ﷺ) से डरना चाहिए।

***

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾
ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا
وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ
بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾
فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ
الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

तर्जुमा : ''उनके बाद हमने और भी बहुत सी उम्मतें पैदा कीं। (42) न तो कोई उम्मत अपनी मौत से आगे बढ़ी और न पीछे रही। (43) फिर हमने लगातार रसूल भेजे जिस उम्मत के पास उसका रसूल आया, उसने झुठलाया पस हमने एक को दूसरे के पीछे लगा दिया और उन्हें अफ़साना बना दिया उन लोगों को दूरी है जो ईमान क़बूल नहीं करते। (44) फिर हमने मूसा (عليه السلام) को और उसके भाई हारून (अ.) को अपनी आयतों और ज़ाहिर ग़ल्बे के साथ भेजा। (45) फ़िरऔन और उसके लश्करों की तरफ़ पस उन्होंने तकब्बुर किया और थे ही वह सरकश लोग। (46) कहने लगे कि क्या हम अपने जैसे दो शख़्सों पर ईमान लाएँ हालाँकि ख़ुद उनकी क़ौम भी हमारे मातहत है। (47) पस उन्होंने उन दोनों को झुठलाया आख़िर वह भी हलाकशुदा लोगों में मिल गए। (48) हमने तो मूसा (عليه السلام) को किताब भी दे रखी थी कि लोग राहे रास्त पर आ जाएँ।'' (49)

मुख़्तलिफ़ उम्मतों का ज़िक्र (आयत 42 से 49) : उनके बाद भी बहुत सी उम्मतें और मख़्लूक़ आई जो हमारी पैदाकर्दा थी उनकी पैदाइश से पहले उनकी मौत जो क़ुदरत ने मुक़र्रर की थी उसे उसने पूरी की न

जल्दी की न देरी की। फिर हमने लगातार पैग़म्बर भेजे। (तब्री : 19/34) हर उम्मत में पैग़म्बर आया, उसने लोगों को पैग़ामे रब पहुँचाया कि एक अल्लाह तआला की इबादत करो, उसके सिवा किसी की पूजा न करो, कुछ राहे रास्त पर आ गए और कुछ पर कलिम-ए-अज़ाब रास्त आ गया, तमाम उम्मतों की अक्सरियत नबियों की मुंकिर रही। जैसे सूरह यासीन में फ़र्माया (يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ) (36/यासीन : 30) अफ़सोस है बन्दों पर उनके पास जो रसूल आया उन्होंने उसका मज़ाक़ बनाया, हमने एक के बाद एक सबको ग़ारत और फ़ना कर दिया। (وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ) (17/बनी इस्राईल : 17) नूह (عليه السلام) के बाद भी हमने कई एक बस्तियाँ तबाह कर दीं उन्हें हमने पुराने अफ़साने बना दिये, क़िस्से उनके बाक़ी रह गए और वह तहस नहस हो गए, पारा पारा कर दिये गए बेईमानों के लिए रहमत से दूरी है।

हज़रत मूसा और हारून (عليه السلام) और फ़िरऔन : हज़रत मूसा (عليه السلام) और उनके भाई हज़रत हारून (عليه السلام) को अल्लाह तआला ने फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के पास पूरी दलीलों और ज़बरदस्त मोजिज़ों के साथ भेजा लेकिन उन्होंने भी अपने से अगले काफ़िरों की तरह अपने नबियों को झुठलाया और मुख़ालिफ़त की और अगले कुफ़्फ़ार की तरह यही कहा कि हम अपने जैसे इंसानों की नबुव्वत के क़ाइल नहीं, उनके दिल भी बिलकुल उन जैसे ही हो गए, आख़िरकार एक ही दिन में एक साथ सबको अल्लाह तआला ने दरिया में डुबो दिया। उसके बाद हज़रत मूसा (عليه السلام) को लोगों की हिदायत के लिए तौरात मिली फिर से मोमिनों के हाथों काफ़िर हलाक किये गए जिहाद के अहकाम उतरे इस तरह आम अज़ाब से कोई उम्मत फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन क़िब्त के बाद हलाक नहीं हुई और आयत में फ़र्मान है अगली उम्मतों की हलाकत के बाद हमने मूसा (عليه السلام) को किताब इनायत की जो लोगों के लिए बसीरत हिदायत और रहमत थी ताकि वह नसीहत हासिल करें।

***

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ
كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِىْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ
وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : ''हमने इब्ने मरयम को और उसकी वालिदा को एक निशानी बनाया और उन दोनों

को बुलंद क़रार वाली और जारी पानी वाली जगह में पनाह दी। (50) ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! हलाल चीज़ें खाओ और नेक अमल करो तुम जो कुछ कर रहे हो उससे मैं बख़ूबी वाक़िफ़ हूँ। (51) यक़ीनन तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है और मैं ही तुम सबका रब हूँ पस तुम मुझसे डरते रहा करो। (52) फिर उन्होंने ख़ुद ही अपने अम्र के आपस में टुकड़े टुकड़े कर दिये, हर गिरोह जो कुछ उसके पास है उसी पर इतरा रहा है। (53) पस तू भी उन्हें उनकी ग़फ़्लत में ही कुछ मुद्दत पड़ा रहने दे। (54) क्या यह यूँ समझ बैठे हैं? कि हम जो भी उनके माल व औलाद बढ़ा रहे हैं। (55) वह उनके लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं नहीं! नहीं! बल्कि यह समझते ही नहीं।'' (56)

हज़रत ईसा (عليه السلام) की पैदाइश, अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला का इज़्हार (आयत 50 से 56) : हज़रत ईसा बिन मरयम (عليه السلام) को अल्लाह ने अपनी क़ुदरते कामिला के इज़्हार की एक ज़बरदस्त निशानी बनाया। आदम (عليه السلام) को मर्द औरत के बग़ैर पैदा किया, हव्वा (عليه السلام) को सिर्फ़ मर्द से बग़ैर औरत के पैदा किया, ईसा (عليه السلام) को सिर्फ़ औरत से बग़ैर मर्द के पैदा किया। बाक़ी के तमाम इंसानों को मर्द औरत से पैदा किया। (रब्वतिन) कहते हैं बुलंद ज़मीन को जो हरी और पैदावार के क़ाबिल हो। (अद्दुर्रुल मंसूर : 7/207) वह जगह घास पानी वाली, तरोताज़ा और हरी भरी थी जहाँ अल्लाह तआला ने अपने उस गुलाम और नबी को और उनकी सिद्दीक़ा वालिदा को जो अल्लाह की बंदी और लौण्डी थीं जगह दी थी वह जारी पानी वाली साफ़ सुथरी हमवार ज़मीन थी। (तब्री : 19/39) कहते हैं यह टुकड़ा मिस्र का था या दमिश्क़ का या फ़लस्तीन का। (रब्वतिन) रेतीली ज़मीन को भी कहते हैं, चुनाँचे एक बहुत ही ग़रीब हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने किसी सहाबी से फ़र्माया था कि तेरा इंतिक़ाल रब्वा में होगा वह रेतीली ज़मीन में फ़ौत हुए। (यह रिवायत रवाद बिन जर्राह की वजह से ज़ईफ़ है।) इन तमाम क़ौलों में ज़्यादा क़रीब क़ौल वह है कि मुराद इससे नहर है जैसे और आयत में इस तरह बयान फ़र्माया है (قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا) (19/मरयम : 24) ''तेरे रब ने तेरे क़दमों तले एक जारी नहर बहा दी है।'' पस यह मक़ाम बैतुल मक़्दिस का मक़ाम है तो गोया इस आयत की तफ़्सीर यह आयत है और क़ुरआन की तफ़्सीर पहले क़ुरआन से फिर हदीस से फिर आसार से करनी चाहिए।

तमाम अम्बिया (عليهم السلام) की दावत एक थी : अल्लाह तआला अपने तमाम अम्बिया (عليهم السلام) को हुक्म करता है कि वह हलाल लुक़्मा खाएँ और नेक आमाल करें पस साबित हुआ कि लुक़्मा हलाल अमले सालेह का मददगार है पस अम्बिया ने सब भलाइयाँ जमा कर लीं, क़ौल फ़ेअल दलालत नसीहत सब उन्होंने समेट ली, अल्लाह तआला उन्हें अपने सब बन्दों की तरफ़ से नेक बदले दे। यहाँ कोई रंगत मज़ा बयान नहीं फ़र्माया बल्कि यह फ़र्माया है कि हलाल चीज़ें खाओ, हज़रत ईसा (عليه السلام) अपनी वालिदा के बुनने की उज्रत में से खाते थे। सहीह हदीस में है ''कोई नबी ऐसा नहीं जिसने बकरियाँ न चराई हों लोगों ने पूछा, आप (ﷺ) भी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! मैं भी चंद क़ीरात (कुछ रुपयों) पर अहले मक्का की बकरियाँ चराया करता था।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल इजारा, बाब रअयल ग़नम अला क़रारीत : 2262; इब्ने

माजा : 2149) और हदीस में है "हज़रत दाऊद (عليه السلام) अपने हाथ की मेहनत का खाया करते थे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब कस्बर्रजुल व अमलिही बि यदिह : 2072, 2073; इब्ने हिब्बान : 6227) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है "अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसंदीदा रोज़ा दाऊद (عليه السلام) का रोज़ा है और सबसे ज़्यादा पसंदीदा क़ियाम दाऊद (عليه السلام) का क़ियाम है, आधी रात सोते थे और तिहाई रात नमाज़े तहज्जुद पढ़ते थे और छठा हिस्सा सो जाते थे और एक दिन रोज़ा रखते एक दिन न रखते थे। मैदाने जंग में कभी पीठ न दिखाते।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब अहब्बुस्सलाति इलल्लाहि सलाति दाऊद...: 3420; सहीह मुस्लिम : 1159; अबूदाऊद : 2448; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 1327; इब्ने माजा : 1712) उम्मे अब्दुल्लाह बिन्ते शद्दाद (रज़ि.) फ़र्माती हैं "मैंने हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में दूध का एक प्याला शाम के वक़्त भेजा ताकि आप उससे अपना रोज़ा इफ़्तार कर लें, दिन का आख़िरी हिस्सा था और धूप की तेज़ी थी तो आपने क़ासिद को वापिस कर दिया कि अगर तेरी बकरी का होता तो ख़ैर और बात थी। उन्होंने कहलवाया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस गर्मी में मैंने दूध भेजा बहुत देर से भेजा था आपने मेरे क़ासिद को वापिस किया आपने फ़र्माया, हाँ! मुझे यही फ़र्माया गया है अम्बिया (عليهم السلام) सिर्फ़ हलाल खाते हैं और सिर्फ़ नेक अमल करते हैं।"(तबरानी : 24/174, 175; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/291; इसकी सनद में अबूबक्र बिन अबी मरयम ज़ईफ़ रावी है। देखिए तक़रीबुत्तहज़ीब : 7974) और हदीस में है आपने फ़र्माया "लोगों! अल्लाह तआला पाक है वह सिर्फ़ पाक ही को क़बूल करता है, अल्लाह तआला ने मोमिनों को भी वही हुक्म दिया है जो रसूलों को दिया है कि ऐ रसूलों! पाक चीज़ें खाओ और नेक काम करो, मैं तुम्हारे आमाल का आलिम हूँ। यही हुक्म ईमान वालों को दिया कि ऐ ईमान वालो! जो चीज़ें हलाल हमने तुम्हें दे रखी हैं, उन्हें खाओ फिर आपने एक उस शख़्स का ज़िक्र किया जो लम्बा सफ़र करता है परागंदा बालों वाला गुबार आलूद चेहरे वाला होता है लेकिन खाना पीना पहनना हराम का होता है वह अपने हाथ आसमान की तरफ़ फैला कर ऐ रब! ऐ रब! कहता है लेकिन नामुम्किन है कि उसकी दुआ क़बूल की जाए।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब क़बूलुस्सदक़ति मिनल कसबित्तय्यब व तर्बीतुहा : 1015; तिर्मिज़ी : 2989; अहमद : 2/328) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इस हदीस को हसन ग़रीब बतलाते हैं।

फिर फ़र्माया, ऐ पैग़म्बर (ﷺ)! तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है एक ही मिल्लत है यानी अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू की इबादत की तरफ़ दावत देना। इसीलिए इसी के बाद फ़र्माया कि मैं तुम्हारा रब हूँ पस मुझसे डरो। सूरह अम्बिया में इसकी तफ़्सीर व तशरीह हो चुकी है (उम्मतंव्वाहिदा) पर नसब हाल होने की वजह से है जिन उम्मतों की तरफ़ हज़राते अम्बिया (عليهم السلام) भेजे गए थे उन उम्मतों ने अल्लाह के दीन के टुकड़े कर दिये और जिस गुमराही पर अड़ गए उसी पर नाज़ाँ व फ़रहाँ हो गए, इसलिए कि अपने नज़दीक इसी को हिदायत समझ बैठे पस बतौरे डाँट के फ़र्माया, इन्हें इनके बहकने भटकने ही में छोड़ दीजिए यहाँ तक कि उनकी तबाही का वक़्त आ जाए खाने पीने दे मस्त व बेख़ुद होने दे, अभी अभी मालूम हो जाएगा क्या यह मग़रूर यह गुमान करते हैं कि हम जो माल व औलाद उन्हें दे रहे हैं वह उनकी भलाई और नेकी की वजह

से उनके साथ सलूक कर रहे हैं हर्गिज़ नहीं! यह तो इन्हें धोखा लगा है यह इससे समझ बैठे हैं कि जैसे हम यहाँ ख़ुशहाल हैं वहाँ भी बेसज़ा रह जाएँगे, यह सिर्फ़ ग़लत है जो कुछ इन्हें दुनिया में हम दे रहे हैं वह तो सिर्फ़ ज़रा सी मोहलत है लेकिन यह बेशऊर हैं असल तक पहुँचे ही नहीं। जैसे फ़र्मान है (فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ) (9/तौबा : 55) तुझे इनके माल और औलाद धोखे में न डाल दें, अल्लाह का इरादा तो यह है कि इससे उन्हें दुनिया में अज़ाब करे और आयत में है यह ढील सिर्फ़ इसलिए दी गई है कि वह अपने गुनाहों में बढ़ जाएँ। (3/आले इमरान : 178) और जगह है मुझे और इस बात के झुठलाने वालों को छोड़ दे हम उन्हें इस तरह बतदरीज पकड़ेंगे कि उन्हें मालूम भी न हो....। (68/क़लम : 44) और आयतों में फ़र्माया (ذَرْنِىْ وَ مَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝) (74/मुद्दस्सिर : 11) यानी मुझे और उसे छोड़ दे जिसको मैंने तंहा पेदा किया है और बकसरत माल दिया है और हाज़िरबाश फ़रज़न्द दिये हैं और सब तरह का सामान उसके लिए मुहय्या कर दिया है फिर इसे हवस है कि मैं इसे और ज़्यादा दूँ हर्गिज़ नहीं वह हमारी बातों का मुख़ालिफ़ है और आयत में है (وَ مَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِىْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا) (34/सबा : 37) तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादें तुम्हें मुझसे मिला नहीं सकतीं मुझसे क़रीब तो वह है जो ईमान वाले और नेक अमल वाले हों...। इस मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं यही अल्लाह का शुक्र है पस तुम इंसानों को माल और औलाद से न परखो बल्कि इंसान की कसोटी ईमान और नेक अमल है। हुज़र (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला ने तुम्हारे अख़्लाक़ भी तुममें इसी तरह बांट रखे हैं जिस तरह रोज़ियाँ बाँटी गयी हैं, अल्लाह तआला दुनिया तो उसे भी देता है जिससे मुहब्बत रखे और उसे भी देता है जिससे मुहब्बत न रखे, हाँ! दीन सिर्फ़ उसी को देता है जिससे पूरी मुहब्बत रखता हो पस जिसे अल्लाह दीन दे समझो कि अल्लाह तआला उससे मुहब्बत रखता है उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है बन्दा मुसलमान नहीं होता जब तक कि उसका दिल और ज़ुबान मुसलमान न हो जाए, और बन्दा मोमिन नहीं होता जब तक कि उसके पड़ौसी उसकी ईज़ाओं से बेफ़िक्र न हो जाएँ, लोगों ने पूछा कि ईज़ाओं से क्या मुराद है, फ़र्माया, धोखाबाज़ी ज़ुल्म वग़ैरह। सुनो! जो बंदा हराम माल हासिल कर लाये उसके ख़र्च में उसे बरकत नहीं होती, उसका सदक़ा क़बूल नहीं होता, जो छोड़कर जाता है वह उसका जहन्नम का सामान होता है, अल्लाह तआला बुराई को बुराई से नहीं मिटाता, हाँ! बुराई को भलाई से दूर कर देता है ख़बीस ख़बीस को नहीं मिटाता।'' (अहमद : 1/387; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; शुअबुल ईमान : 5524; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/153; इसकी सनद में सबाह बिन मुहम्मद ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/306; रक़म : 3848; व तक़रीबुत्तहज़ीब : 2898)

***

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾
وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ
رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन जो लोग अपने रब की हैबत से डरते रहते हैं। (57) और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58) और जो अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते। (59) और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कपकपाते रहते हैं कि वह अपने रब की त़रफ़ लौटने वाले हैं। (60) यही हैं जो जल्दी जल्दी भलाइयाँ ह़ासिल कर रहे हैं और यही हैं जो इनकी तरफ़ दौड़ जाने वाले हैं।'' (61)

मोमिन नेक आमाल करके भी डरते हैं (आयत 57 से 61) : फ़र्मान है कि एह़सान और ईमान के साथ ही साथ नेक आमाल और फिर अल्लाह के डर से थरथराना और काँपते रहना, यह ईमान वालों की सिफ़त है। ह़ज़रत ह़सन (रह़.) फ़र्माते हैं मोमिन नेकी और ख़ौफ़े इलाही का मज्मूआ होता है, मुनाफ़िक़ बुराई के साथ निडर और बेख़ौफ़ होता है। (त़बरी : 19/45) यह अल्लाह तआला की शरई और पैदाइशी आयतों और निशानियों को बावर करते हैं। जैसे ह़ज़रत मरयम (عليها السلام) का वस्फ़ बयान हुआ है कि वह अपने रब के कलिमात और उसकी किताबों का यक़ीन रखती थीं, अल्लाह की क़ुदरत क़ज़ा और शरअ का उन्हें पूरा यक़ीन था, मोमिनीन अल्लाह तआला के हर अम्र को मह़बूब रखते हैं, अल्लाह के मनाकर्दा हर काम को वह नापसंद रखते हैं, हर ख़बर को वह सच मानते हैं, वह तौह़ीद परस्त होते हैं शिर्क से बेज़ार रहते हैं, अल्लाह को वाह़िद और बेनियाज़ जानते हैं, उसे बेऔलाद और बग़ैर बीवी का मानते हैं, बेनज़ीर और अकेला समझते हैं। उसके साथ किसी को शरीक नहीं करते, अल्लाह के नाम पर ख़ैरातें करते हैं लेकिन ख़ौफ़ज़दा रहते हैं कि ऐसा न हो, क़बूल न हुई हो। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि क्या यह वह लोग हैं जिनसे ज़िना चोरी और शराबख़ोरी हो जाती है लेकिन इनके दिल में ख़ौफ़े रब्बानी होता है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ सिद्दीक़ (रज़ि.) की लड़की! यह वह नहीं बल्कि यह वह हैं जो नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं, स़दक़े करते हैं लेकिन क़बूल न होने से डरते हैं यही हैं जो नेकियों में सब्क़त करते हैं।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल मुअमिनीन : 3175; वहुव ह़सन; अह़मद : 6/159) इस आयत की दूसरी क़िराअत (यअतूना मा अतौ) भी है यानी करते हैं जो करते हैं लेकिन दिल इनके डरते हैं। मुस्नद अह़मद में है कि ''ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) के पास अबू आसिम गए, आपने मरह़बा कहा और कहा बराबर आते क्यूँ नहीं हो? जवाब दिया इसलिए कि कहीं आपको तक्लीफ़ न हो, अम्मा! मैं आज एक आयत के अल्फ़ाज़ की तह़क़ीक़ के लिए ह़ाज़िर हुआ हूँ। (युअतूना मा अतौ) हैं या (यअतूना मा अतौ) हैं? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, तुम्हें कौनसा ज़्यादा पसंद है? मैंने कहा आख़िर के

अल्फ़ाज़ अगर हों तो गोया मैंने सारी दुनिया पा ली बल्कि इससे मुझे बहुत ज़्यादा ख़ुशी होगी। आपने फ़र्माया फिर तुम ख़ुश हो जाओ, अल्लाह की क़सम! मैंने इसी तरह इन ही अल्फ़ाज़ को पढ़ते हुए रसूलुल्लाह (ﷺ) को सुना है।'' (अहमद : 6/95; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इस्माईल बिन मुस्लिम मक्की मशहूर ज़ईफ़ रावी है।) सातों मशहूर क़िराअतों और जुम्हूर की क़िराअत में वही है जो मौजूदा क़ुरआन में है और मअ़नी की रू से भी ज़्यादा ज़ाहिर यही मालूम होता है क्योंकि उन्हें साबिक़ क़रार दिया है और अगर दूसरी क़िराअत को लें तो यह साबिक़ नहीं बल्कि दरम्याना और हल्के हो जाते हैं, वल्लाहु आलम!

***

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْئَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْئَرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

तर्जुमा :''हम किसी नफ़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देते, हमारे पास ऐसी किताब है जो हक़ के साथ बोलती है उनके ऊपर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा।(62) बल्कि इनके दिल इस तरफ़ से ग़फ़्लत में हैं और इनके लिए इसके सिवा भी बहुत से आमाल हैं जिन्हें वह करने वाले हैं। (63) यहाँ तक कि जब हमने इनके आसूदा हाल लोगों को अज़ाब में पकड़ लिया तो वह फ़रियाद वज़ारी करने लगे। (64) आज मत चिल्लाओ यक़ीनन तुम हमारे मुक़ाबले पर मदद न किये जाओगे। (65) मेरी आयतें तो तुम्हारे सामने पढ़ी जाया करती थीं फिर भी तुम अपनी ऐड़ियों के बल उल्टे भागते थे। (66) अकड़ते ऐंठते अफ़सानागोई करते उसे छोड़ देते थे।'' (67)

इस्लाम बहुत आसान दीन है (आयत 62 से 67) : अल्लाह तआला ने शरीअत आसान रखी है ऐसे अह़काम नहीं दिये जो इंसानी ताक़त से बाहर हों, फिर क़ियामत के दिन वह उनके आमाल का ह़िसाब लेगा जो सबके सब किताबी सूरत में लिखे हुए मौजूद होंगे, यह नामाएआमाल सही सही तौर पर इनका एक एक अमल बता देगा किसी तरह का ज़ुल्म किसी पर न किया जाएगा, कोई नेकी कम न होगी, हाँ! अक्सर मोमिनों की बुराइयाँ माफ़ कर दी जाएँगी लेकिन मुश्रिकों के दिल क़ुरआन से बहके और भटके हुए हैं, इसके

सिवा भी उनकी और बदआमालियाँ भी हैं। जैसे शिर्क वग़ैरह जिसे यह धड़ल्ले से कर रहे हैं। (तब्री : 19/49) ताकि इनकी बुराइयाँ इन्हें जहन्नम से दूर न रहने दें। चुनाँचे वह हदीस गुज़र चुकी जिसमें फ़र्मान है कि "इंसान नेकी के काम करते करते जन्नत से सिर्फ़ हाथ भर के फ़ासले पर रह जाता है जो उस पर तक़्दीर का लिखा ग़ालिब आ जाता है और बुरे आमाल शुरू कर देता है, नतीजा यह होता कि जहन्नमियों में से हो जाता है।" (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति सलवातुल्लाहि अलैहिम : 3208; सहीह मुस्लिम : 2643; अहमद : 1/382; इब्ने हिब्बान : 1674) यहाँ तक कि जब उनमें से आसूदा हाल दौलतमंद लोगों पर अज़ाबे इलाही आ पड़ता है तो अब वह फ़रियाद करने लगते हैं। सूरह मुज़्ज़म्मिल में फ़र्मान है कि मुझे और मालदार झुठलाने वालों को छोड़ दीजिए उन्हें कुछ मोहलत और दीजिए, हमारे पास बेड़ियाँ भी हैं और जहन्नम भी है और गले में अटकने वाला खाना है और दर्दनाक सज़ा है। (73/मुज़म्मिल : 11 से 13) और आयत में है (وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّ لَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ) (38/साद : 3) यानी हमने इनसे पहले और भी बहुत सी बस्तियों को तबाह कर दिया, उस वक़्त उन्होंने वावेला शुरू की जबकि वह सिर्फ़ बेकार थी, यहाँ फ़र्माता है कि आज तुम क्यूँ शोर मचा रहे हो? क्यूँ फ़रियाद कर रहे हो? कोई भी तुम्हें आज काम नहीं आ सकता, तुम पर अज़ाबे इलाही आ पड़े, अब चीख़ना चिल्लाना सब बेकार है, कौन है? जो मेरे अज़ाबों के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद कर सके, फिर उनका एक बड़ा गुनाह बयान हो रहा है कि यह मेरी आयतों के मुंकिर थे, उन्हें सुनते थे और टाल देते हैं, बुलाये जाते थे लेकिन इंकार कर देते थे तौहीद का इंकार करते थे शिर्क पर अक़ीदा रखते थे हुक्म तो बुलंद व बरतर अल्लाह ही का चलता है (मुस्तक्बिरीन) हाल है उनके हक़ से हटने और हक़ का इंकार करने से कि यह उस वक़्त तकब्बुर करते थे और हक़ और अहले हक़ को हक़ीर (नीचा) समझते थे । इस मअनी की रू से बिही की ज़मीर का मरज़अ या तो हरम है यानी मक्का कि यह उसमें बेहूदा बकवास बकते थे या क़ुरआन है जिसे यह मज़ाक़ में उड़ाते थे कभी शायरी कहते थे, कभी कहानत वग़ैरह, या ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) हैं कि यह लोग रातों को बेकार बैठे हुए अपनी गपशप में कभी हुज़ूर (ﷺ) को शायर कहते, कभी काहिन कहते, कभी जादूगर कहते, कभी झूठा कहते, कभी मज्नू बतलाते। हालाँकि हरम अल्लाह का घर है क़ुरआन अल्लाह का कलाम है, हुज़ूर(ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं , जिन्हें अल्लाह ने अपनी मदद पहुँचाई और मक्का पर क़ाबिज़ किया, उन मुश्रिकों को वहाँ से ज़लीलो पस्त करके निकाला और यह भी कहा गया कि मुराद यह है कि लोग बैतुल्लाह की वजह से फ़ख़्र करते थे और ख़्याल करते थे कि वह औलिया अल्लाह हैं हालाँकि यह ख़्याल सिर्फ़ वहम था। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि मुश्रिकीने क़ुरैश बैतुल्लाह पर फ़ख़्र करते थे। (हाकिम : 2/394) अपने आपको उसका एहतिमाम करने वाले और मुतवल्ली बतलाते थे, हालाँकि न उसे आबाद करते थे न उसका सही अदब करते थे। इब्ने अबी हातिम (रह.) ने यहाँ पर बहुत कुछ लिखा है मतलब सबका यही है।

***

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَآءَهُم مَّا لَمْ يَأْتِ آبَآءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾ أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا
رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَآءَهُم بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ
لِلْحَقِّ كٰرِهُونَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ وَمَن
فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنٰهُم بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَن ذِكْرِهِم مُّعْرِضُونَ ﴿٧١﴾ أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا
فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ﴿٧٢﴾ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٣﴾ وَإِنَّ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرٰطِ لَنٰكِبُونَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم
مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾

तर्जुमा : ''क्या इन्होंने इस बात में ग़ौरो फ़िक्र ही नहीं किया? या इनके पास वह आया जो इनके अगले बाप दादों के पास नहीं आया था? (68) या इन्होंने अपने पैग़म्बर को पहचाना नहीं कि उसके मुंकिर हो रहे हैं। (69) या यह कहते हैं कि इसे जुनून है? बल्कि वह तो इनके पास हक़ लाया है, हाँ! इनमें के अक्सर लोग हक़ से चिढ़ने वाले हैं। (70) अगर हक़ ही इनकी ख़्वाहिशों का पैरू हो जाए तो ज़मीनो आसमान और इनके बीच की हर चीज़ दरहम बरहम हो जाए हक़ तो यह है कि हमने इन्हें इनकी नसीहत पहुँचा दी है लेकिन यह अपनी नसीहत से मुँह मोड़ने वाले हैं। (71) क्या तू इनसे कोई उज्रत (मजदूरी) चाहता है? याद रख कि तेरे रब की उज्रत बहुत ही बेहतर है और वह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है। (72) यक़ीनन तू तो इन्हें राहे रास्त की तरफ़ बुला रहा है। (73) बेशक जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते वह सीधे रास्ते से मुड़ जाने वाले हैं। (74) अगर हम इन पर रहम करें और इनकी तक्लीफ़ें दूर कर दें तो यह तो अपनी सरकशी में जमकर और बहकने लगें।'' (75)

कुरआन बेमिस्ल और बेनज़ीर किताब है (आयत 68 से 75) : अल्लाह तआला मुश्रिकों के उस काम पर इंकार कर रहा है जो वह कुरआन के न समझने और उसमें ग़ौरो फ़िक्र न करने में कर रहे थे और उससे मुँह फेर लेते थे हालाँकि अल्लाह तआला ने उन पर अपनी वह पाक और बरतर किताब नाज़िल की थी जो किसी नबी पर नहीं उतारी गई यह सबसे अकमल अशरफ़ और अफ़ज़ल किताब है उनके बाप दादे जाहिलियत में मरे थे जिनके हाथों में कोई अल्लाह की किताब न थी, उनमें कोई पैग़म्बर नहीं आया था तो इन्हें चाहिए था

कि अल्लाह के रसूल की बात मानते, किताबुल्लाह की क़द्र करते और दिन रात इस पर अ़मल करते। जैसे कि इनमें के समझदारों ने किया कि वह मुसलमान मुत्तबेअ़े रसूल हो गए और अपने आ़माल से अल्लाह को रज़ामंद कर दिया, अफ़सोस कुफ़्फ़ार ने अ़क़्लमंदी से काम न लिया। क़ुरआन की मुतशाबेह आयतों के पीछे पड़कर हलाक हो गए। क्या यह लोग मुहम्मद (ﷺ) को जानते नहीं, क्या आपकी सदाक़त अमानत दयानत इन्हें मालूम नहीं? आप (ﷺ) तो इन ही में पैदा हुए, इन ही में पले, इन ही में बड़े हुए, फिर क्या वजह है कि आज उसे झूठा कहने लगे जिसे इससे पहले सच्चा (सादिक़) कहते थे, दोहरे हो रहे थे। हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने शाहे हब्श नज्जाशी से सरे दरबार यही फ़र्माया था कि अल्लाह तआ़ला रब्बुल आ़लमीन वहदहू ला शरीक लहू ने हममें एक रसूल भेजा है जिसका नसब जिसकी सदाक़त जिसकी अमानत हमें ख़ूब मालूम थी। हज़रत मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने किसरा से बवक़्ते जंग मैदान में यही फ़र्माया था, अबू सुफ़्यान सख़र बिन हर्ब ने शाहे रूम से यही फ़र्माया था जबकि सरे दरबार उसने उनसे और उनके साथियों से पूछा था हालाँकि उस वक़्त तक वह मुसलमान भी नहीं हुए थे लेकिन उन्हें आपकी सदाक़त अमानत दयानत सच्चाई और नसब की उ़म्दगी का इक़रार करना पड़ा। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब कैफ़ काना बदउल वही इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 7; सहीह मुस्लिम : 1773) कहते थे कि जुनून है या इसने क़ुरआन अपनी तरफ़ से गढ़ लिया है हालाँकि बात इस तरह नहीं, हक़ीक़त सिर्फ़ यह है कि इनके दिल ईमान से ख़ाली हैं, यह क़ुरआन पर नज़रें नहीं डालते और जो ज़ुबान पर चढ़ता है बक देते हैं, क़ुरआन तो वह कलाम है जिसकी मिस्ल और नज़ीर से सारी दुनिया आ़जिज़ आ गई, बावजूद सख़्त मुख़ालिफ़त के और बावजूद पूरी कोशिश और इंतिहाई मुक़ाबले के किसी से न बन पड़ा कि इस जैसा क़ुरआन ख़ुद बना लेता या सबकी मदद लेकर इस जैसी एक ही सूरत बना लाता यह तो सरासर हक़ है और इन्हें हक़ से चिढ़ है। पिछला जुम्ला हाल है और हो सकता है कि ख़बरिया मुस्तानिफ़ा हो, वल्लाहु आ़लम! मज़्कूर है कि हुज़ूर (ﷺ) ने एक शख़्स से एक मर्तबा फ़र्माया, "मुसलमान हो जा, उसने कहा, अगरचे मुझे इससे नफ़रत हो? आपने फ़र्माया, अगरचे हो।" एक रिवायत में है कि "एक शख़्स हुज़ूर (ﷺ) को रास्ते में मिला, आपने उससे फ़र्माया, इस्लाम क़बूल कर इस पर यह बहुत भारी पड़ा और उसका चेहरा तमतमा उठा, आपने फ़र्माया, देखो! अगर तुम किसी ग़ैर आबाद ख़तरनाक ग़लत रास्ते पर जा रहे हो और तुम्हें एक शख़्स मिले जिसके नाम व नसब से जिसकी सच्चाई और अमानतदारी से तुम बख़ूबी वाक़िफ़ हो वह तुमसे कहे कि उस रास्ते चलो जो वसीअ़ आसानी सीधा और साफ़ है बताओ तुम उसके बतलाये हुए रास्ते पर चलोगे या नहीं? उसने कहा, हाँ! ज़रूर। आपने फ़र्माया, बस तो यक़ीन मानो! अल्लाह की क़सम! तुम इस दुनियावी सख़्त दुश्वार गुज़ार और ख़तरनाक राह से भी ज़्यादा बुरी राह पर हो और मैं तुम्हें सीधी राह की दावत देता हूँ, मेरी मान लो।" मज़्कूर है कि "एक और ऐसे ही शख़्स से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था जबकि उसने दावते इस्लाम का बुरा मनाया कि तेरे दो साथी हों एक सच्चा अमानतदार और दूसरा झूठा ख़यानतपेशा हो तो बता तू किससे मुहब्बत करेगा? उसने कहा, सच्चे अमीन से। फ़र्माया इसी तरह तुम लोग अपने रब के नज़दीक हो।" (यह रिवायत मुर्सल है।) हक़ से मुराद बक़ौले सुद्दी (रह.) ख़ुद अल्लाह तआ़ला है। (तब्री : 19/57) यानी अल्लाह तआ़ला अगर इन ही की मर्ज़ी के मुताबिक़ शरीअ़त मुक़र्रर करता तो ज़मीनो

आसमान बिगड़ जाते। जैसे और आयत में है कि काफ़िरों ने कहा, उन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े शख़्स पर यह क़ुरआन क्यूँ न उतरा? उसके जवाब में यह फ़र्मान है कि क्या रह़मते रब्बानी की तक़्सीम इनके हाथों में है? (43/ज़ुख़रुफ़ : 31, 32) और आयत में है कि अगर रब की रह़मत के ख़ज़ानों के मालिक यह होते तो यह अपनी कंजूसी की वजह से दुनिया को तरसा देते। (17/बनी इस्राईल : 100) और आयत में है कि अगर इन्हें मुल्क के किसी ह़िस्से का मालिक बना दिया गया होता तो यह तो किसी को एक कोड़ी भी न परखाते। (4/निसाअ : 53) पस इन आयतों में जनाब बारी तआला ने बयान किया कि इंसानी दिमाग़ मख़्लूक़ के इंतिज़ाम की क़ाबिलियत में नाअहल है यह अल्लाह ही की शान है कि उसकी सिफ़तें उसके फ़र्मान उसके अफ़आल उसकी शरीअत उसकी तक़्दीर उसकी तदबीर तमाम मख़्लूक़ को ह़ावी है और तमाम मख़्लूक़ की ह़ाजत बरआरी और उनकी मस्लिह़त के मुताबिक़ है उसके सिवा न कोई मअबूद है, न पालनहार है। फिर फ़र्माया इस क़ुरआन को इनकी नसीह़त के लिए हम लाए और यह उससे मुँह मोड़ रहे हैं। फिर इर्शाद होता है कि तू तब्लीग़े क़ुरआन पर इनसे कोई उज्रत नहीं माँगता तेरी नज़रें अल्लाह पर हैं, वही तुझे इसका अज्र देगा। जैसे फ़र्माया जो बदला मैं तुमसे माँगू वह भी तुम्हें ही दिया मैं तो अज्र का त़ालिब सिर्फ़ अल्लाह से ही हूँ। (34/सबा : 47) और आयत में हुज़ूर (ﷺ) को हुक्म हुआ कि ऐलान कर दो न मैं कोई बदला चाहता हूँ न तकल्लुफ़ करने वालों में हूँ। (38/साद : 86) और जगह है कह दे कि मैं तुमसे इस पर कोई उज्रत नहीं चाहता सिर्फ़ क़राबतदारी के मेल का जोश है। (42/शूरा : 23) सूरह यासीन में है कि शहर केदूर के किनारे से जो शख़्स दौड़ता हुआ आया उसने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों! नबियों की इत़ाअत करो जो तुमसे किसी अज्र के ख़्वाहिशमंद नहीं। (36/यासीन : 20) यहाँ फ़र्माया, वही बेहतरीन राज़िक़ है तू लोगों को सीधे रास्ते की त़रफ़ बुला रहा है। मुस्नद अह़मद में है ''हुज़ूर (ﷺ) सोये हुए थे जो दो फ़रिश्ते आए, एक आपके पैरों की त़रफ़ बैठ गया और दूसरा सिराहने। पहले ने दूसरे से कहा, इसकी और इसकी उम्मत की मिसाल बयान करो, उसने कहा इनकी मिसाल मिस्ल उन मुसाफ़िरों के क़ाफ़िले के है जो एक बयाबान चटयल मैदान में थे न उनके पास सामाने भत्ता था, न पानी दाना और न आगे बढ़ने की क़ुव्वत, न पीछे हटने की त़ाक़त। ह़ैरान थे कि क्या होगा इतने में इन्होंने देखा कि एक भला आदमी एक शरीफ़ इंसान उ़म्दा लिबास पहने हुए आ रहा है, उसने आते ही इनकी घबराहट और परेशानी देखकर इनसे कहा कि अगर तुम मेरा कहा मानो और मेरे पीछे चलो तो मैं तुम्हें फलों से लदे हुए बाग़ों और पानी से भरे हुए ह़ौज़ों में पहुँचा दूँ। सबने उसकी बात मान ली और उसने उन्हें वाक़ेई में हरे भरे तरोताज़ा बाग़ों और जारी चश्मों में पहुँचा दिया जहाँ उन लोगों ने बेरोक टोक खाया पिया और आसूदा ह़ाली की वजह से मोटे ताज़े हो गए। एक दिन उसने कहा, देखो में तुम्हें इस हलाकत व इफ़्लास से बचाकर यहाँ लाया और इस फ़ारिग़ुल बाली में पहुँचाया, अब अगर तुम मेरी मानो तो मैं तुम्हें इससे भी आला बाग़ात और इससे अच्छी जगह और इससे भी ज़्यादा लहरदार नहरों की त़रफ़ ले चलूँ। उस पर एक जमाअत तो तैयार हो गयी और उन्होंने कहा हम आपके साथ हैं लेकिन दूसरी जमाअत ने कहा, हमें और की ज़रूरत नहीं बस हम तो यहीं रहेंगे।'' (अह़मद : 1/267; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अ़ली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़्रीब : 2/37; रक़्म : 242) अबू यअ़ला मूसली में है ''हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं मैं तुम्हारी कोलियाँ भर भरकर

तुम्हारी कमरें पकड़ पकड़कर तुम्हें जहन्नम से रोक रहा हूँ लेकिन तुम परवानों और बरसाती कीड़ों की तरह मेरे हाथों से छूट छूटकर आग में गिर रहे हो, क्या तुम यह चाहते हो कि मैं तुम्हें छोड़ दूँ? सुनो मैं तो हौज़े कौसर पर भी तुम्हारा पेशवा और मीरे सामान हूँ वहाँ तुम इक्का दुक्का और गिरोह गिरोह बनकर मेरे पास आओगे, मैं तुम्हें तुम्हारी निशानियों अलामतों और नामों से पहचान लूँगा। जैसे एक नो वारिद अंजान आदमी अपने ऊँटों को दूसरों के ऊँटों में पहचान लेता है, मेरे देखते हुए तुममें से कुछ को बाएँ तरफ़ वाले अज़ाब के फ़रिश्ते पकड़कर ले जाना चाहेंगे तो मैं जनाब बारी तआला से अर्ज़ करूँगा कि, ऐ अल्लाह! यह मेरी क़ौम के मेरी उम्मत के लोग हैं पस जवाब दिया जाएगा कि आपको नहीं मालूम कि इन्होंने आपके बाद क्या क्या बिदअतें निकाली थीं यह तो आपके बाद अपनी ऐड़ियों के बल लौटते ही रहे हैं। उन्हें भी पहचान लूँगा जो क़ियामत के दिन अपनी गर्दन पर बकरी लिये हुए आएगा जो बकरी चीख़ रही होगी, वह मेरा नाम लेकर आवाज़ें दे रहा होगा लेकिन मैं उससे साफ़ कह दूँगा कि मैं अल्लाह के सामने तुझे कुछ काम नहीं आ सकता, मैंने तो अल्लाह की बातें पहुँचा दी थीं इसी तरह कोई होगा जो ऊँट को लिये हुए आएगा जो बिलबिला रहा होगा, निदा करेगा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! ऐ मुहम्मद (ﷺ)! में कह दूँगा कि मैं अल्लाह के यहाँ तेरे लिए कुछ इख़्तियार नहीं रखता, मैं तो पहुँचा चुका था कुछ आएँगे जिनकी गर्दन पर घोड़ा सवार होगा जो हिनहिना रहा होगा, वह भी मुझे आवाज़ देगा और मैं यही जवाब दूँगा कुछ आएँगे मश्कें लादे हुए, पुकारेंगे या मुहम्मद! या मुहम्मद (ﷺ)! मैं कहूँगा मैं तो तेरे किसी अम्र का मालिक नहीं, मैं तो पहुँचा चुका था।'' (मज्मउज़्ज़वाइद : 3/85; कश्फ़ुल इस्तार : 900; व सनदुहू हसन) इमाम अली बिन मदीनी (रह.) फ़र्माते हैं, इस हदीस की सनद है तो हसन लेकिन इसका एक रावी हफ़्स बिन हमीद मज्हूल है लेकिन इमाम यहया बिन मुईन (रह.) ने इसे सालेह कहा है और नसाई और इब्ने हिब्बान ने भी इसे सिक़ा कहा है आख़िरत का यक़ीन न रखने वाले राहे रास्त से हटे हुए हैं, जब कोई शख़्स सीधी राह से हट गया तो अरब कहते हैं (नकिबा फ़ुलानुन अनित्तरीक़) इनके कुफ़्र की पुख़्तगी बयान हो रही है कि अगर अल्लाह तआला इनसे सख़्ती को हटा दे और इन्हें क़ुरआन सुना समझा दे तो भी यह अपने कुफ़्रो दुश्मनी से सरकशी और तकब्बुर से न हटेंगे जो कुछ नहीं हुआ वह जब होगा जब किस तरह होगा, उसका इल्म अल्लाह को है। इसलिए और जगह इर्शाद फ़र्माया है कि अगर अल्लाह तआला इनमें भलाई देखता तो ज़रूर इन्हें सुनाता और अगर इन्हें सुनाता भी तो वह मुँह फेरे हुए उससे घूम जाते। (8/अन्फ़ाल : 23) यह तो जहन्नम के सामने खड़े होकर ही यक़ीन करेंगे उस वक़्त कहेंगे, काश! कि हम लौटा दिये जाते और रब की बातों को न झुठलाते और यक़ीनमंद हो जाते। इससे पहले जो छुपा था वह अब खुल गया बात यह है कि अगर यह लौटा भी दिये जाएँ तो फिर से मना किये हुए कामों की तरफ़ लौट आएँगे, आख़िर तक। पस यह वह बात है जो होगी नहीं लेकिन अगर हो तो क्या हो। उसे अल्लाह अच्छे से जानता है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से जो जुम्ला क़ुरआने करीम में है वह कभी वाक़ेअ होने वाला नहीं।

***

وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٧٦ حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٧ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝٧٩ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠ بَلْ
قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
۝٨٢ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٣

तर्जुमा : ''हमने इन्हें भी अ़ज़ाब में पकड़ा ताहम यह लोग न तो अपने परवरदिगार के सामने झुके और न ही आजिज़ी इख़्तियार की। (76) यहाँ तक कि जब हमने इन पर सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया तो उसी वक़्त फ़ौरन मायूस हो गए। (77) वही अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किये मगर तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78) वही है जिसने तुम्हें पैदा करके ज़मीन में फैला दिया और उसी की त़रफ़ तुम जमा किये जाओगे। (79) यह वही है जो जिलाता और मारता है और रात दिन के रद्दोबदल का मुख़्तार भी वही है, क्या तुमको समझ बूझ नहीं। (80) बल्कि इन लोगों ने भी वैसी ही बात कही जो अगले कहते चले आए। (81) कि क्या जब हम मरकर मिट्टी हो जाएँगे क्या फिर भी हम खड़े किये जाने वाले हैं। (82) हमसे और हमारे बाप दादों से पहले ही से यह वादा होता चला आया है कुछ नहीं, यह तो सिर्फ़ अगले लोगों के ढकोसले हैं।''(83)

अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब और कुफ़्फ़ार की हठधर्मी (आयत 76 से 83) : फ़र्माता है कि हमने उन्हें उनकी बुराइयों की वजह से सख़्तियों और मुसीबतों में भी मुब्तला किया लेकिन ताहम न तो उन्होंने अपना कुफ़्र छोड़ा, न अल्लाह की त़रफ़ झुके बल्कि कुफ़्रो ज़लालत पर अड़े रहे, न उनके दिल नर्म हुए, न यह सच्चे दिल से हमारी त़रफ़ मुत्वज्जा हुए, न दुआ़ के लिए हाथ उठाये। जैसे फ़र्मान है (فَلَوْلَآ اِذْ جَاۗءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا) (6/अन्आम : 43) हमारे अ़ज़ाबों को देखकर यह हमारी त़रफ़ आजिज़ी से क्यूँ न झुके? बात यह है कि इनके दिल सख़्त हो गए हैं, आख़िर तक। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इस आयत में उस क़हत़साली का ज़िक्र है ''जो कुरैश पर हुज़ूर (ﷺ) के न मानने की वजह से आई थी, जिसकी शिकायत लेकर अबू सुफ़्यान रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए थे और आप (ﷺ) को अल्लाह की क़समें देकर रिश्तेदारियों के वास्ते दिलाकर कहा था कि हम तो अब लीद और ख़ून खाने लगे हैं।'' (त़ब्रानी :

2038; इब्ने हिब्बान : 967; व सनदुहू हसन; हाकिम : 2/394) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "क़ुरैश की शरारतों से तंग आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन पर बद्दुआ की थी कि जैसे हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के ज़माने में सात साल की क़हतसाली आई थी ऐसे ही क़हत से या अल्लाह! तू इन पर मेरी मदद फ़र्मा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रूम : 4774; सहीह मुस्लिम : 2798; अहमद : 1/380; तिर्मिज़ी : 3254) इब्ने अबी हातिम में है कि "हज़रत वहब बिन मुनब्बा (रह.) को क़ैद कर दिया गया, वहाँ एक नौ उम्र शख़्स ने कहा, मैं आपको जी बहलाने के लिए कुछ अश्आर सुनाऊँ? तो आपने फ़र्माया, इस वक़्त हम अज़ाबे इलाही में हैं और कुरआन ने इनकी शिकायत की है जो ऐसे वक़्त भी अल्लाह की तरफ़ न झुकें फिर आपने तीन रोज़े बराबर रखे। उनसे सवाल किया गया कि यह बीच में इफ़्तार किये बग़ैर रोज़े कैसे? तो जवाब दिया कि एक नई चीज़ इधर से हुई यानी क़ैद तो एक नई चीज़ हमने की यानी ज़्यादती इबादत।" यहाँ तक कि हुक्मे इलाही आ पहुँचा अचानक वक़्त आ गया और जिन अज़ाबों का ख़्वाब व ख़्याल भी न था वह आ पड़े तो तमाम ख़ैर से मायूस हो गए आस टूट गयी और हैरतज़दा हो गए। अल्लाह की नेअमतों को देखो उसने कान दिये आँखें दीं, दिल दिये, अक़्ल फ़हम अता की कि ग़ौरो फ़िक्र कर सको, अल्लाह की वहदानियत को उसकी बाइख़्तियारी को समझ सको। लेकिन ज्यों ज्यों नेअमतें बढ़ीं शुक्र कम हुए। जैसे फ़र्मान है तू भले हिर्स कर लेकिन उनमें से अक्सर बेईमान हैं। (12/यूसुफ़ : 103) फिर अपनी अज़ीमुश्शान सल्तनत और कुदरत का बयान कर रहा है कि मख़्लूक़ को उसने पैदा करके वसीअ ज़मीन पर बाँट दिया है फिर क़ियामत के दिन इन बिखरे हुए लोगों को समेटकर अपने पास जमा करेगा। अब भी उसी ने पैदा किया है फिर वही ज़िन्दा करेगा। कोई छोटा बड़ा आगे पीछे का बाक़ी न बचेगा, वही बोसीदा और खोखली हड्डियों का ज़िन्दा करने वाला और लोगों को मार डालने वाला है उसी के हुक्म से दिन चढ़ता है रात आती है एक निज़ाम से एक के बाद एक आता जाता है, न सूरज चाँद से आगे निकले, न रात दिन पर सब्क़त करे क्या तुममें इतनी भी अक़्ल नहीं कि इतने बड़े निशानात को देखकर अपने अल्लाह को पहचान लो? और उसके ग़ल्बे और उसके इल्म के क़ाइल बन जाओ। बात यह है कि उस ज़माने के काफ़िर हों या अगले ज़मानों के दिल उन सबके यक्साँ हैं ज़ुबानें भी एक ही हैं वही बकवास जो अगलों की थी पिछलों की है कि मरकर मिट्टी हो जाने और सिर्फ़ बोसीदा हड्डियों की सूरत में बाक़ी रह जाने के बाद भी नई पैदाइश में पैदा किये जाएँ, यह समझ से बाहर है। हमसे भी यही कहा गया हमारे बाप दादों को भी इसी से धमकाया गया लेकिन हमने तो किसी को मरकर ज़िन्दा होते देखा नहीं हम तो जानते हैं कि यह सिर्फ़ बकवास है। दूसरी आयत में है कि उन्होंने कहा, क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जाएँगे उस वक़्त भी फिर ज़िन्दा किये जाएँगे? जनाब बारी तआला ने फ़र्माया, जिसे तुम अनहोनी बात समझ रहे हो वह तो एक आवाज़ के साथ हो जाएगी और सारी दुनिया अपनी क़ब्रों से निकलकर एक मैदान में हमारे सामने आ जाएगी। सूरह यासीन में भी यह ऐतिराज़ और जवाब है कि क्या इंसान देखता नहीं कि हमने नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह ज़िद्दी झगड़ालू बन बैठा और अपनी पैदाइश को भूल गया और हम पर ऐतिराज़ करते हुए मिसालें देने लगा कि इन बोसीदा हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? ऐ नबी (ﷺ)! तुम इन्हें जवाब दे दो कि इन्हें नए सिरे से वह अल्लाह पैदा करेगा जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया है और जो हर चीज़ की पैदाइश का आलिम है।(36/यासीन : 79)

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
﴿۸۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۸۶﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ﴿۸۷﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۸﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿۸۹﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۹۰﴾

तर्जुमा : ''पूछ तो सही कि ज़मीन और उसकी कुल चीज़ें किसकी हैं? बतलाओ अगर जानते हो। (84) फ़ौरन जवाब देंगे कि अल्लाह तआला की कह दे कि फिर तुम नसीहत क्यूँ नहीं हासिल करते? (85) पूछ कि सातों आसमानों का और बहुत बाअज़्मत अर्श का रब कौन है? (86) वह लोग जवाब देंगे कि अल्लाह तआला ही है। कह दे कि फिर तुम क्यूँ नहीं डरते? (87) पूछ कि तमाम चीज़ों का इख़्तियार किसके हाथ है? जो पनाह देता है और जिसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दिया जाता अगर तुम जानते हो तो बतला दो। (88) यही जवाब देंगे कि अल्लाह तआला ही है। कह दे कि फिर तुम किधर से जादू कर दिये जाते हो? (89) हक़ यह है कि हमने इन्हें हक़ पहुँचा दिया है और यह बेशक झूठे हैं।'' (90)

मुश्रिकीन भी अल्लाह तआला ही को ख़ालिक़ मालिक मानते थे (आयत 84 से 90) : अल्लाह तआला जल्ल व अ़ला अपनी वहदानियत ख़ालिक़ियत तसर्रुफ़ और मिल्कियत का सबूत देता है ताकि मालूम हो जाए कि मअ़बूदे बरहक़ सिर्फ़ वही है उसके सिवा किसी और की इबादत न करनी चाहिए। वह वाहिद है और बेशरीक है पस अपने मुहतरम रसूल (ﷺ) को हुक्म देता है कि आप इन मुश्रिकीन से पूछें तो वह साफ़ लफ़्ज़ों में अल्लाह के रब होने का इक़रार करेंगे और उसमें किसी को शरीक नहीं बतलाएँगे। आप इन्हीं के जवाब को लेकर इन्हें क़ाइल मअ़क़ूल करें कि जब ख़ालिक़ मालिक सिर्फ़ अल्लाह ही है उसके सिवा कोई और नहीं, फिर मअ़बूद भी तंहा वही क्यूँ न हो? उसके साथ दूसरों की इबादत क्यूँ की जाए? वाक़िया यही है कि वह अपने मअ़बूदों को भी मख़्लूके अल्लाह और मम्लूके अल्लाह जानते थे लेकिन उन्हें मुक़र्रिबाने इलाही समझकर इस निय्यत से उनकी इबादत करते थे कि वह हमें भी मुक़र्रिबे इलाही बना देंगे। पस हुक्म होता है कि ज़मीन और ज़मीन की तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ मालिक कौन है? उसकी बाबत इन मुश्रिकों से सवाल करो। इनका जवाब यही होगा कि वहदहू ला शरीक लहू अब तुम फिर इनसे कहो कि क्या अब भी इस इक़रार के बाद भी तुम इतना नहीं समझते कि इबादत के लायक़ भी वही है क्योंकि ख़ालिक़ व राज़िक़ वही है। फिर पूछो कि उस बुलंद व बाला आसमान का उसकी मख़्लूक़ का ख़ालिक़ कौन है जो अ़र्श जैसी ज़बरदस्त चीज़ का रब है? जो मख़्लूक़ की छत है। जैसे कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया है कि ''अल्लाह की शान बहुत बड़ी है। उसका अ़र्श आसमानों पर इस तरह है और आपने अपने हाथ से कुब्बा की तरह

बनाकर बतलाया।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िल जहमिया : 4726; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुहम्मद बिन इस्हाक़ मुदल्लस रावी के सिमाअ की सराहत नहीं।) और हदीस में है ''सातों आसमान सातों ज़मीन और उनकी कुल मख़्लूक़ कुर्सी के मुक़ाबले पर ऐसी है जैसे किसी चटयल मैदान में कोई हल्का पड़ा हो। और कुर्सी अपनी तमाम चीज़ों समेत अर्श के मुक़ाबले में भी ऐसी ही है। कुछ सलफ़ से मंक़ूल है कि अर्श की एक जानिब से दूसरी जानिब की दूरी पचास हज़ार साल की मसाफ़त की है। और सातवीं ज़मीन से उसकी बुलंद पचास हज़ार साल की मसाफ़त की है। अर्श का नाम अर्श उसकी बुलंदी की वजह से ही है। कअब अहबार (रज़ि.) से मरवी है कि आसमान अर्श के मुक़ाबले में ऐसे हैं जैसे कोई क़िंदील आसमान व ज़मीन के बीच हो। मुजाहिद (रह.) का क़ौल है कि आसमान व ज़मीन बमुक़ाबला अर्शे इलाही ऐसे हैं जैसे कोई छल्ला किसी वसीअ चटयल मैदान में पड़ा हो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अर्श की क़द्रो अज़्मत का कोई भी सिवाय अल्लाह तआला के सही अंदाज़ा नहीं कर सकता। कुछ सलफ़ का क़ौल है कि अर्श लाल रंग याक़ूत का है। इस आयत में अर्शे अज़ीम कहा गया है और इस सूरत के आख़िर में अर्शे करीम कहा गया है यानी बहुत बड़ा और बहुत हुस्न व ख़ूबी वाला पस लम्बाई चौड़ाई वुस्अत अज़्मत हुस्न व ख़ूबी में वह बहुत ही आला और बाला है, इसीलिए लोगों ने उसे याक़ूत लाल कहा है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) का फ़र्मान है कि तुम्हारे रब के पास रात दिन कुछ नहीं उसके अर्श का नूर उसके चेहरे के नूर से है। अल्ग़र्ज़ इस सवाल का जवाब भी वह यही देंगे कि आसमान और अर्श का रब अल्लाह है तो तुम कहो कि फिर तुम उसके अज़ाबों और उसकी सज़ाओं से क्यूँ नहीं डरते? कि उसके साथ दूसरों की इबादतें कर रहे हो।

किताबुत् तफ़क्कुर वल ऐतिबार में इमाम अबूबक्र बिन अबिद्दुनिया (रह.) एक हदीस लाए हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उमूमन इस हदीस को बयान किया करते थे कि ''जाहिलियत के ज़माने में एक औरत पहाड़ की चोटी पर बकरियाँ चराया करती थी उसके साथ उसका लड़का भी था। एक मर्तबा उसने अपनी माँ से पूछा कि अम्मा! तुम्हें किसने पैदा किया है? उसने कहा, अल्लाह ने। कहा, मेरे वालिद को किसने पैदा किया? कहा अल्लाह ने। पूछा मुझे किसने पैदा किया? उसने कहा, अल्लाह ने। बच्चे ने पूछा, और इन आसमानों को? उसने कहा, अल्लाह ने। पूछा और ज़मीन को? उसने जवाब दिया, अल्लाह ने, पूछा और इन पहाड़ों को अम्मा किसने बनाया है? माँ ने जवाब दिया इनका ख़ालिक़ भी अल्लाह तआला ही है। पूछा और इन हमारी बकरियों का ख़ालिक़ कौन है? माँ ने कहा, अल्लाह ही है। इसने कहा, सुब्हानल्लाह! अल्लाह की इतनी बड़ी शान है? बस इस क़द्र अज़्मत उसके दिल में अल्लाह तआला की समा गई कि वह थरथर काँपने लगा और पहाड़ से गिर पड़ा और जान बहक़्क़े तस्लीम कर दी।'' उसका एक रावी ज़रा ठीक नहीं, वल्लाहु आलम! पूछा कि तमाम मुल्क का मालिक हर चीज़ का मुख़्तार कौन है? हुज़ूर (ﷺ) की क़सम उमूमन इन लफ़्ज़ों में होती थी कि उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है और जब कोई ताकीदी क़सम खाते तो फ़र्माते उसकी क़सम जो दिलों का मालिक और उनका फेरने वाला है।(सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर, बाब कैफ़ कानत यमीनुन्नबी (ﷺ) : 6628; अबूदाऊद : 6263; तिर्मिज़ी : 1540; अहमद : 2/25; मुस्नदे अबी यअला : 5442) फिर यह भी पूछ कि वह कौन है? जो सबको

पनाह दे और उसकी दी हुई पनाह को कोई तोड़ न सके और उसके मुक़ाबले पर कोई पनाह दे न सके। किसी की पनाह का वह पाबंद नहीं यानी इतना बड़ा सय्यद व मालिक कि तमाम ख़ल्क़, मुल्कहुकूमत उसी के हाथ में है, बतलाओ कौन है? अरब में दस्तूर था कि सरदार क़बीला अगर किसी को पनाह दे दे तो सारे क़बीले उसके पाबंद है लेकिन क़बीले में से कोई किसी को अपनी पनाह में ले ले तो सरदार पर उसकी पाबंदी नहीं। पस यहाँ अल्लाह की अ़ज़्मत व सल्तनत बयान हो रही है कि वह क़ादिरे मुत्लक़ हाकिमे कुल है उसका इरादा कोई बदल नहीं सकता उसका कोई हुक्म टल नहीं सकता, उससे कोई पूछताछ कर नहीं सकता, उसकी चाहत के बग़ैर पत्ता हिल नहीं सकता। वह सबसे पूछताछ कर ले लेकिन किसी की मजाल नहीं कि उससे कोई सवाल कर सके। उसकी अ़ज़्मत उसकी किब्रियाई उसका ग़ल्बा उसका दबाव उसकी कुदरत उसकी इ़ज़्ज़त उसकी हिक्मत उसका अ़दल बेपाया और बेमिस्ल है मख़्लूक़ सब उसके सामने आ़जिज़ पस्त और लाचार है, रब सारी मख़्लूक़ की बाज़पुर्स करने वाला है। इस सवाल का जवाब भी उनके पास सिवाय उसके और नहीं कि वह इक़रार करें कि इतना बड़ा बादशाह ऐसा ख़ुद मुख़्तार अल्लाह वाहिद ही है। कह दे कि फिर तुम पर क्या टपकी पड़ी है? ऐसा कौनसा जादू तुम पर हो गया है कि बावजूद इस इक़रार के फिर भी दूसरों की पूजा करते हो। हम तो उनके सामने हक़ ला चुके तौहीदे रुबूबियत के साथ साथ तौहीदे उलूहियत बयान कर दी, सही दलीलें और साफ़ बातें पहुँचा दीं और उनका ग़लत़ गो होना ज़ाहिर कर दिया कि यह शरीक बनाने में झूठे हैं और इनका झूठ ख़ुद इनके इक़रार से ज़ाहिर व बाहिर है जैसे कि सूरत के आख़िर में फ़र्माया कि अल्लाह के सिवा दूसरों के पुकारने की कोई सनद नहीं, आख़िर तक। (23/मोमिनून : 117) सिर्फ़ बाप दादों की तक़्लीद पर अड़े हैं और यही वह कहते भी थे कि हमने अपने बुज़ुर्गों को इस पर पाया और हम उनकी तक़्लीद नहीं छोड़ेंगे।

***

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾

तर्जुमा : "न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया और न उसके साथ और मअ़बूद है, वरना हर मअ़बूद अपनी मख़्लूक़ को लिये लिये फिरता और हर एक दूसरे पर बुलंद होना चाहता। जो औसाफ़ यह बतलाते हैं उनसे अल्लाह निराला है। (91) वह ग़ायब हाज़िर का जानने वाला है और जो शिर्क यह करते हैं उससे बालातर है।" (92)

आसमानों व ज़मीन का निज़ाम अल्लाह ही के हाथ में है (आयत 91, 92) : अल्लाह तआ़ला इससे

अपनी बरतरी बयान कर रहा है कि उसकी औलाद हो या उसका शरीक हो। मुल्क में तसर्रुफ़ में इबादत का मुस्तहिक़ होने में वह यक्ता है न उसकी औलाद है न उसका शरीक है। अगर मान लिया जाए कि कई एक अल्लाह हैं तो हर एक अपनी मख़्लूक़ का मुस्तक़िल मालिक होना चाहिए तो मौजूदात में निज़ाम क़ायम नहीं रह सकता। हालाँकि कायनात का इंतिज़ाम मुकम्मल है। आलमे अल्वा और आलमे सुफ़्ला आसमान व ज़मीन वग़ैरह कमाले रब्त के साथ अपने अपने मुक़र्ररा काम में मशग़ूल हैं, दस्तूर से एक इंच इधर उधर नहीं होते। पस मालूम हुआ कि इन सबका ख़ालिक़ मालिक अल्लाह एक ही है, न कि अलग अलग कई एक। और अल्लाह बहुत से मान लेने की सूरत में यह भी ज़ाहिर है कि हर एक दूसरे को पस्त मग़्लूब करना और ख़ुद ग़ालिब और ज़ोरावर होना चाहेगा, अगर ग़ालिब आ गया तो मग़्लूब अल्लाह न रहा, अगर ग़ालिब न आया तो वह ख़ुद अल्लाह नहीं। पस यह दोनों दलीलें बतला रही हैं कि अल्लाह एक ही है। मुतकल्लिमीन के तौ र पर इस दलील को दलीले तमानोअ कहते हैं। इनकी तक़रीर यह है कि अगर दो अल्लाह माने जाएँ या उससे ज़्यादा फिर एक तो एक जिस्म की हरकत का इरादा कर ले और दूसरा उसके सुकून का इरादा करे अब अगर दोनों की मुराद हासिल न हो तो दोनों ही आजिज़ ठहरे और जब आजिज़ ठहरे तो अल्लाह नहीं हो सकते क्योंकि वाजिब आजिज़ नहीं होता। और यह भी नामुम्किन है कि दोनों की मुराद पूरी हो क्योंकि एक के ख़िलाफ दूसरे की चाहत है तो दोनों की मुराद का हासिल होना महाल है और यह महाल लाज़िम हुआ है इस वजह से कि दो या दो से ज़्यादा अल्लाह फ़र्ज़ किये गए थे। पस यह गिनती बेकार हो गयी। अब रही तीसरी सूरत यानी यह कि एक की चाहत पूरी हो और एक की न हो तो जिसकी पूरी हुई वह तो ग़ालिब और वाजिब रहा और जिसकी पूरी न हुई वह मग़्लूब और मुम्किन हुआ। क्योंकि वाजिब की यह सिफ़त नहीं कि वह मग़्लूब हो तो इस सूरत में भी मअबूदों की ज़्यादती तादाद बातिल होती है। पस साबित हुआ कि अल्लाह एक है। वह ज़ालिम सरकश हद से गुज़र जाने वाले मुश्रिक जो अल्लाह की औलाद ठहराते हैं और उसके शरीक बतलाते हैं उनके इन बयानकर्दा औसाफ़ से ज़ाते अल्लाह बुलंद व बाला, बरतर व मुनज़्ज़ा है। वह हर उस चीज़ को जानता है जो मख़्लूक़ से पोशीदा है और उसे भी मख़्लूक़ पर अयाँ है पस वह इन तमाम शुरका से पाक है जिसे मुंकिर और मुश्रिक शरीके अल्लाह बतलाते हैं।

***

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَاِنَّا عَلٰٓى
اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا
يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ
يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

तर्जुमा : "तू दुआ किया कर कि ऐ परवरदिगार! अगर तू मुझे वह दिखाये जिसका वादा उन्हें दिया जा रहा है। (93) तो ऐ रब! तू मुझे ज़ालिमों के गिरोह में न करना। (94) हम जो कुछ वादे इन्हें दे रहे हैं सबको तुझे दिखा देने पर यक़ीनन क़ादिर हैं। (95) बुराई को इस तरीक़े से दूर करो जो सरासर भलाई वाला हो। जो कुछ यह बयान करते हैं हम बख़ूबी वाक़िफ़ हैं। (96) और दुआ कर कि ऐ मेरे परवरदिगार! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूँ। (97) और ऐ रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आ जाएँ।" (98)

बुराई का जवाब भलाई से देना हिम्मत का काम है (आयत 93 से 98) : सख़्तियों के उतरने के वक़्त की दुआ सिखाई जा रही है कि अगर तू इन बदकारों पर अ़ज़ाब लाए और मैं इनमें मौजूद हूँ तो मुझे उन अ़ज़ाबों से बचा लेना। मुस्नदे अहमद और तिर्मिज़ी की हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) की दुआओं में यह जुम्ला भी होता था कि "या अल्लाह! जब तू किसी क़ौम के साथ फ़ित्ने का इरादा करे तो मुझे फ़ित्ने में डालने से पहले उठा ले।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति साद : 3235; व सनदुहू हसन; अहमद : 5/243) अल्लाह तआला इसकी तालीम देने के बाद फ़र्माता है कि हम इन अ़ज़ाबों को तुझे दिखा देने पर क़ादिर हैं जो इन काफ़िरों पर हमारी जानिब से उतरने वाले हैं, फिर वह बात सिखाई जाती है जो तमाम मुश्किलों को दूर और दफ़ा करने वाली है और वह यह कि बुराई करने वाले से भलाई की जाए ताकि उसकी अ़दावत मुहब्बत से और नफ़रत उल्फ़त से बदल जाए। जैसे और आयत में भी है कि भलाई से दूर कर तो जानी दुश्मन दिली दोस्त बन जाएगा। (41/फ़ुस्सिलत : 34) लेकिन यह काम उन्हीं से हो सकता है जो सब्र करने वाले हों यानी उस हुक्म की तामील और इस सिफ़त की तहसील सिर्फ़ उन लोगों से हो सकती है जो लोगों की तक्लीफ़ को बर्दाश्त कर लेने के आदी हो जाएँ और भले वह बुराई करें लेकिन यह भलाई करते जाएँ। यह वस्फ़ उन ही लोगों का है जो बड़े नसीब वाले हों दुनिया और आख़िरत की भलाई जिनकी क़िस्मत में हो। इंसान की बुराई से बचने की बेहतरीन तर्कीब बतलाकर फिर शैतान की बुराई से बचने की तर्कीब बतलाई जाती है कि अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हें शैतान से बचा ले, इसलिए कि उसके फ़न फ़रेब से बचने के हथियार तुम्हारे पास सिवाय उसके और नहीं। वह सलूक व एहसान से बस में नहीं आने के इस्तिआज़ा के बयान में हम लिख आए हैं कि हुज़ूर (ﷺ) (अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अ़लीमि मिनश्शैतानिर्रजीम मिन हम्ज़िही व नफ़्ख़िही व नफ़्सिही) पढ़ा करते थे। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मन रअयल इस्तिफ़्ताह सुब्हानकल्लाहुम्म व बि हम्दिका : 775; व सनदुहू हसन) और मैं पनाह माँगता हूँ कि शैतान मेरे किसी काम में हाइल हो और वह मेरे पास पहुँच जाए। पस हर एक काम के शुरू में अल्लाह का ज़िक्र शैतान को शामिल होने से रोक देता है, खाना पीना जिमाअ ज़िब्ह वग़ैरह कुल कामों के शुरू करने से पहले अल्लाह तआला का ज़िक्र करना चाहिए। अबूदाऊद में है कि हुज़ूर (ﷺ) की एक दुआ यह भी थी (अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिनल हरमि व अऊज़ुबिका मिनल हदमि वमिनल ग़र्क़ि व अऊज़ुबिका अंय्यत ख़ब्बतनियश् शैतानु इन्दल मौत) (अबूदाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल इस्तिआज़ा : 1552; व सनदुहू हसन; नसाई : 5534) "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे बुरे बुढ़ापे से और दबकर मरने से और डूबकर मरने से

पनाह माँगता हूँ और उससे भी कि मौत के वक़्त शैतान मुझको बहका दे।'' मुस्नद अहमद में है कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दुआ सिखाते थे कि नींद उचाट हो जाने के मर्ज़ को दूर करने के लिए हम सोते वक़्त पढ़ा करें (बिस्मिल्लाहि अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन ग़ज़बिही व इक़ाबिही वमिन शर्रि इबादिही वमिन हमज़ातिशशयातीनि वअंय्यहज़ुरून) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) का दस्तूर था कि अपनी औलाद में से जो होशियार होते उन्हें तो यह दुआ सिखा दिया करते और जो छोटे नासमझ होते याद न कर सकते, उनके गले में उस दुआ को लिखकर लटका देते। (अबूदाऊद, किताबुत्तिब्ब, बाब कैफ़र्रक़ी : 3893; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुहम्मद बिन इस्हाक़ मुदल्लस के सिमाअ की तसरीह नहीं है। तिर्मिज़ी : 3828; अमलल यौम वल्लैलह : 748; अहमद : 2/181) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं।

***

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

كَلَّا ۭ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَاۗىِٕلُهَا ۭ وَمِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾

तर्जुमा : ''यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मौत आने लगती है तो कहता है ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे वापिस लौटा दे। (99) कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेक आमाल कर लूँ। हर्गिज़ ऐसा नहीं होने का यह तो सिर्फ़ एक क़ौल है जिसका यह क़ाइल है, उनके पसेपुश्त तो एक हिजाब है उनके दोबारा जी उठने के दिन तक।'' (100)

बरज़ख़ और अज़ाबे क़ब्र (आयत 99, 100) : बयान हो रहा है कि मौत के वक़्त कुफ़्फ़ार और बदतरीन गुनहगार सख़्त नादिम होते हैं और [illegible] व अफ़सोस के साथ आरज़ू करते हैं कि काश के हम दुनिया की तरफ़ लौटाए जाएँ ताकि हम नेक आमाल कर लें लेकिन उस वक़्त यह उम्मीद फ़िज़ूल यह आरज़ू लाहासिल है चुनाँचे सूरह मुनाफ़िक़ून में फ़र्माया जो हमने दिया है हमारी राह में देते रहो इससे पहले कि तुममें से किसी की मौत आ जाए उस वक़्त वह कहे कि या अल्लाह! ज़रा सी मोहलत दे दे तो मैं सदक़ा ख़ैरात कर लूँ और नेक बंदा बन जाऊँ लेकिन अजल आ चुकने के बाद किसी को मोहलत नहीं मिलती तुम्हारे तमाम आमाल से अल्लाह तआला ख़बरदार है। (63/मुनाफ़िक़ून : 10, 11) इसी मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं। मस्लन (يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ) से (نَتَّبِعِ الرُّسُلَ) (14/इब्राहीम : 44) और (يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ) से (نَعْمَلُ) (7/आराफ़ : 53) और (وَ لَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ) से (مُوْقِنُوْنَ) (32/सज्दा : 12) और (وَ لَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا) से (تُكَذِّبُوْنَ) (6/अन्आम : 27, 28) और (وَ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ) से (مِنْ سَبِيْلٍ) (42/शूरा : 44) और आयत (قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا) (40/ग़ाफ़िर : 11) और इसके बाद की आयत (وَ هُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا) (35/फ़ातिर : 37) वग़ैरह। इन आयतों में बयान हुआ है कि ऐसे बदकार लोग मौत को देखकर क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने की पेशी के वक़्त जहन्नम के सामने खड़े होकर

दुनिया में वापिस आने की तमन्ना करेंगे और नेक आमाल करने का वादा करेंगे लेकिन उस समय उनकी तलब (इच्छा) पूरी न होगी। यह तो वह कलिमा है जो बमजबूरी ऐसे आड़े वक़्तों में उनकी ज़ुबान से निकल ही जाता है और यह भी कि यह कहते हैं मगर करने के नहीं, अगर दुनिया में वापिस लौटाए भी जाएँ तो अमले सालेह नहीं करेंगे बल्कि वैसे ही रहेंगे जैसे पहले रहे थे। यह तो झूठे और लिबाड़िये हैं। कितना मुबारक है वह शख़्स जो इस ज़िन्दगी में नेक अमल कर ले और कैसे बदनसीब हैं यह लोग कि आज न इन्हें माल व औलाद की तमन्ना है न दुनिया और ज़ीनते दुनिया की ख़्वाहिश है सिर्फ़ यह चाहते हैं कि दो दिन की ज़िन्दगी और हो जाए तो कुछ नेक आमाल कर लें लेकिन तमन्ना बेकार आरज़ू बेसूद ख़्वाहिश बेजा। यह भी मरवी है कि उनकी तमन्ना पर उन्हें अल्लाह डाँट देगा और फ़र्मा देगा कि यह भी तुम्हारी बात है अमल अब भी नहीं करोगे। हज़रत अला बिन ज़ियाद (रह.) क्या ही उम्दा बात फ़र्माते हैं। आप फ़र्माते हैं तुम यूँ समझ लो कि मेरी मौत आ चुकी थी लेकिन मैंने अल्लाह से दुआ की कि मुझे चंद रोज़ की मोहलत दे दी जाए ताकि मैं नेकियाँ कर लूँ अल्लाह तआला ने मुझे मोहलत दे दी है तो अब मुझे चाहिए कि दिल खोलकर नेकियाँ कर लूँ। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं काफ़िर की आस उम्मीद को याद रखो और ख़ुद ज़िन्दगी की घड़ियाँ इताअते रब में बसर करो। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं जब काफ़िर अपनी क़ब्र में रखा जाता है और अपना जहन्नम का ठिकाना देख लेता है तो कहता है मेरे रब! मुझे लौटा दे मैं तौबा कर लूँगा और नेक आमाल करता रहूँगा। जवाब मिलता है कि जितनी उम्र तुझे दी गई थी तू ख़त्म कर चुका। फिर उसकी क़ब्र उस पर सिमट जाती है और तंग हो जाती है और साँप बिच्छू चिमट जाते हैं। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं गुनहगारों पर उनकी क़ब्रें बड़ी मुसीबत की जगह होती हैं। उनकी क़ब्रों में उन्हें काले साँप डसते रहते हैं जिनमें से एक बहुत बड़ा उसके सिरहाने होता है और एक इतना ही बड़ा पैरों की तरफ़ होता है वह सिर की तरफ़ से डसना और ऊपर चढ़ना शुरू करता है, यह पैरों की तरफ़ से काटना और ऊपर चढ़ना शुरू करता है यहाँ तक कि बीच की जगह आकर दोनों इकट्ठे हो जाते हैं। पस यह है वह बरज़ख़ जहाँ यह क़ियामत तक रहेंगे। (मिव्वंराइहिम) के मअनी किये गए हैं कि इनके आगे बरज़ख़ एक हिजाब और आड़ है, दुनिया और आख़िरत के बीच। वह न तो सहीह तौर पर दुनिया में हैं कि खाएँ पीएँ, न आख़िरत में हैं कि आमाल के पूरे बदले में आ जाएँ बल्कि बीच ही बीच में हैं। पस इस आयत में ज़ालिमों को डराया जा रहा है कि उन्हें आलमे बरज़ख़ में भी बड़े भारी अज़ाब होंगे। जैसे फ़र्मान है (مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ) (45/जासिया : 10) उनके आगे जहन्नम है और आयत में है (وَ مِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ) (14/इब्राहीम : 17) इनके आगे बहुत सख़्त अज़ाब है। बरज़ख़ का क़ब्र का यह अज़ाब इन पर क़ियामत के क़ायम होने तक बराबर जारी रहेगा जैसे हदीस में है कि ''वह उसमें बराबर अज़ाब में रहेगा यानी ज़मीन में।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल जनाइज़, बाब मा जाअ फ़ी अज़ाबि क़ब्र : 1071; व सनदुहू हसन)

***

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١٠١ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٠٢ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝١٠٣ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۝١٠٤

तर्जुमा : ''पस जबकि सूर फूँक दिया जाएगा उस दिन न तो आपस के रिश्ते ही रहेंगे, न आपस की पूछगछ, (101) जिनकी तराज़ू का पल्ला भारी हो गया वह तो नजात वाले हो गए। (102) और जिनकी तराज़ू का पल्ला हल्का हो गया यह हैं वो जिन्होंने अपना नुक़्सान आप कर लिया जो हमेशा के लिए जहन्नमी हो गये। (103) इनके चेहरों को आग झुलसाती रहेगी और वह वहाँ बदशक्ल बने हुए होंगे।''(104)

मैदाने महशर का नक़्शा (आयत 101 से 104) : जब जी उठने का सूर फूँका जाएगा और लोग अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा होकर खड़े होंगे उस दिन न रिश्ते नाते बाक़ी रहेंगे, न कोई किसी से पूछेगा न बाप को औलाद पर शफ़क़त होगी, न औलाद बाप का ग़म खाएगी। अजब आपा धापी होगी। जैसे फ़र्मान है कि कोई दोस्त किसी दोस्त से बावजूद एक दूसरे को देखने के कुछ न पूछेगा। (70/मआरिज : 10) साफ़ देखेगा कि क़रीबी शख़्स है मुसीबत में है गुनाहों के बोझ में दब रहा है लेकिन उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात तक न करेगा, न कुछ पूछेगा बल्कि आँख फेर लेगा। जैसे ख़ुद क़ुरआन में है कि उस दिन आदमी अपने भाई से अपनी माँ से अपने बाप से अपनी बीवी से और अपने बच्चों से भागता फिरेगा। (80/अबस : 34) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अगलों पिछलों को जमा करेगा फिर एक मुनादी निदा करेगा कि जिस किसी का कोई हक़ किसी दूसरे के ज़िम्मे हो वह आए और उससे अपना हक़ ले जाए। तो अगरचे किसी का कोई हक़ अपने बाप के ज़िम्मे या अपनी औलाद के ज़िम्मे या अपनी बीवी के ज़िम्मे हो वह भी ख़ुश होता हुआ और दौड़ता हुआ आएगा और अपने हक़ के तक़ाज़े शुरू करेगा। (तब्री : 19/72) जैसे इस आयत में है।

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जो चीज़ इसे नाख़ुश करे वह मुझे भी नाख़ुश करती है और जो चीज़ इसे ख़ुश करे वह मुझे भी ख़ुश करती है। क़ियामत के दिन सब रिश्ते नाते टूट जाएँगे लेकिन मेरा नसब मेरा हसब मेरी रिश्तेदारी न टूटेगी।'' (अहमद : 4/323; वसनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 9/203; हाकिम : 3/158) इस हदीस की असल बुख़ारी व मुस्लिम में भी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''फ़ातिमा (रज़ि.) मेरे जिस्म का एक टुकड़ा है इसे नाराज़ करने वाली और इसे सताने वाली चीज़ें मुझे नाराज़ करने वाली और मुझे तक्लीफ़ देने वाली हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब हुब्बुर्रजुल अन इब्नतिही फ़िल ग़ैरति वल इंसाफ़ : 5230; सहीह मुस्लिम :

2449; अबूदाऊद : 2071; तिर्मिज़ी : 3866; इब्ने माजा : 1998; अहमद : 4/338) मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मिम्बर पर फ़र्माया, "लोगों का क्या हाल है कि कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का रिश्ता भी आपकी क़ौम को कोई फ़ायदा न देगा। अल्लाह की क़सम! मेरा रिश्ता दुनिया में और आख़िरत में मिला हुआ है। ऐ लोगों! मैं तुम्हारा मीरे सामान हूँ जब तुम आओगे एक शख़्स कहेगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं फ़लाँ बिन फ़लाँ हूँ। मैं जवाब दूँगा हाँ! नसब तो मैंने पहचान लिया लेकिन तुम लोगों ने मेरे बाद बिदअतें ईजाद की थीं और ऐड़ियों के बल मुर्तद हो गए थे।" (अहमद : 3/18; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअला : 1238; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/364; अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अक़ील ज़ईफ़ है।) मुस्नद अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब में हमने कई सनदों से यह रिवायत वारिद की है कि जब आपने उम्मे कुलसुम बिन्ते अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) से निकाह किया तो फ़र्माया करते थे, अल्लाह की क़सम! मुझे इस निकाह से सिर्फ़ यह ग़र्ज़ थी कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि "हर हसब व नसब क़ियामत के दिन कट जाएगा मगर मेरा नसब और हसब।" यह भी मज़्कूर है कि आपने उनका महर अज़्रूए ताज़ीम व बुज़ुर्गी चालीस हज़ार मुक़र्रर किया था। इब्ने असाकिर में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "कुल रिश्ते नाते और ससुराली ताल्लुक़ात सिवाय मेरे ऐसे ताल्लुक़ात के क़ियामत के दिन कट जाएँगे।" एक और हदीस में है कि "मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि जहाँ मेरा निकाह हुआ है और जिसका निकाह मेरे साथ हुआ है वह सब जन्नत में भी मेरे साथ रहें तो अल्लाह तआला ने मेरी दुआ क़बूल की।" जिसकी एक नेकी भी गुनाहों से बढ़ गई वह कामयाब हो गया, जहन्नम से आज़ाद और जन्नत में दाख़िल हो गया, अपनी मुराद को पहुँच गया और जिससे डरता था उससे बच गया और जिसकी बुराइयाँ भलाइयों से बढ़ गई वह हलाक हो गया नुक़्सान में आ गए। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "क़ियामत के दिन तराज़ू पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होगा जो हर एक इंसान को लाकर तराज़ू के पास बीचों बीच खड़ा करेगा फिर नेकी बदी तोली जाएगी अगर नेकी बढ़ गई तो बआवाज़े बलंद ऐलान करेगा कि फ़लाँ बिन फ़लाँ नजात पा गया, अब इसके बाद हलाकी उसके पास भी नहीं आने की और अगर बुराई बढ़ गई तो निदा करेगा और सबको सुनाकर कहेगा कि फ़लाँ का बेटा फ़लाँ हलाक हुआ। अब वह भलाई से महरूम हो गया।" इसकी सनद ज़ईफ़ है। दाऊद बिन हजर रावी ज़ईफ़ व मतरूक है। ऐसे लोग हमेशा जहन्नम में रहेंगे दोज़ख़ की आग उनके मुँह झुलसा देगी। चेहरों को जला देगी कमर को सुलगा देगी। यह बेबस होंगे आग को हटा न सकेंगे। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "पहले ही शोले की लपट उनका सारा गोश्त पोस्त हड्डियों से अलग करके उनके क़दमों में डाल देगी वह वहाँ बदशक्ल होंगे, दाँत निकले हुए होंगे, होंठ ऊपर चढ़ा हुआ और नीचे गिरा हुआ होगा। ऊपर का होंठ तो तालू तक पहुँचा हुआ होगा और नीचे का होंठ नाफ़ तक आ जाएगा।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल मोमिनीन : 3176; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दराज की अबुल हैशम से रिवायत ज़ईफ़ होती है। मुस्नदे अबी यअला : 1367; अहमद : 3/88; हाकिम : 2/246; हिल्यतुल औलिया : 8/182)

***

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا
شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾

तर्जुमा : ''क्या मेरी आयतें तुम्हारे सामने तिलावत नहीं की जाती थीं? फिर भी तुम उन्हें झुठलाते थे। (105) कहेंगे कि ऐ परवरदिगार! हमारी बदबख़्ती हम पर ग़ालिब आ गई, वाक़ेई हम थे ही गुमराह। (106) ऐ हमारे परवरदिगार! हमें यहाँ से नजात दे अगर अब भी हम ऐसा ही करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं।'' (107)

कुफ़्फ़ार की पशेमानी (शर्मिन्दगी) (आयत 105 से 107) : काफ़िरों को उनके कुफ़्र और गुनाहों पर और न मानने पर क़ियामत के दिन जो डाँट डपट होगी उसका बयान हो रहा है कि उनसे अल्लाह तआला कहेगा कि मैं ने तुम्हारी तरफ़ रसूल भेजे थे तुम पर किताबें नाज़िल की थीं तुम्हारी शक शुब्हे दूर कर दिये थे तुम्हारी कोई हुज्जत बाक़ी नहीं रखी थी। जैसे फ़र्मान है कि ताकि लोगों का उज़्र रसूलों के आने के बाद बाक़ी न रहे। (4/निसाअ : 165) और फ़र्माया हम जब तक रसूल न भेज दें, अज़ाब नहीं करते। (17/बनी इस्राईल : 15) और आयत में है जब जहन्नम में कोई जमाअत जाएगी उससे वहाँ के दारोग़े पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास अल्लाह तआला की तरफ़ से आगाह करने वाले आये न थे? (67/मुल्क : 8) उस वक़्त यह महरूम लोग इक़रार करेंगे कि बेशक तेरी हुज्जत पूरी हो गई थी लेकिन हम अपनी बदक़िस्मती और सख़्तदिली की वजह से सुधरे नहीं अपनी गुमराही पर अड़ गए और सीधे रास्ते पर न चले। या अल्लाह! अब तू हमें फिर से दुनिया की तरफ़ भेज दे अगर अब ऐसा करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं और सज़ा के हक़दार हैं। जैसे फ़र्मान है (فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ) (40/ग़ाफ़िर : 11) हमें अपनी तक़्सीरों का इक़रार है, क्या अब किसी तरह भी छुटकारे की राह मिल सकती है? आख़िर तक। लेकिन जवाब मिलेगा कि अब सब राहें बंद हो चुकीं, अमल की जगह फ़ना हो गयी, अब दारे जज़ा है। तौहीद के वक़्त शिर्क किया, अब पछताने से क्या फ़ायदा?

***

قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِي
وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला कहेगा फटकारे हुए यहीं पड़े रहो और मुझसे बात न करो। (108) मेरे बन्दों की एक जमाअत थी जो बराबर यही कहती रही कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान ला चुके हैं तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़र्मा, तू सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। (109) लेकिन तुम उन्हें मज़ाक़ में ही उड़ाते रहे, यहाँ तक कि उनके पीछे तुम मेरी याद भुला बैठे और तुम उनसे मख़ौल ही करते रहे। (110) मैंने आज उन्हें उनके सब्र का बदला दे दिया है कि वह ख़ातिर ख़्वाह अपनी मुराद को पहुँच चुके हैं।" (111)

दोज़ख़ियों को अल्लाह तआला की डाँट (आयत 108 से 111) : काफ़िर जब जहन्नम से निकलने की आरज़ू करेंगे तो उन्हें जवाब मिलेगा कि अब तो तुम इसी में ज़िल्लत के साथ पड़े रहोगे, ख़बरदार! अब यह सवाल मुझसे न करना। आह! यह कलामे रहमान होगा जो जहन्नमियों को हर ख़ैर से मायूस कर देगा (अल्लाह तआला हमें बचाये, ऐ रहमतों वाले परवरदिगार! हमें अपने रहम के दामन में छुपा ले और अपनी डाँट डपट और गुस्से से बचा ले, आमीन!) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जहन्नमी तो पहले दारोग़ा जहन्नम को बुलाएँगे चालीस साल तक उसे पुकारते रहेंगे लेकिन कोई जवाब न मिलेगा, चालीस साल के बाद जवाब मिलेगा कि तुम यहीं पड़े रहो। उनकी पुकार की न तो कोई वक़अत दारोग़ा जहन्नम के पास होगी न अल्लाह जल्ल व अला के पास। फिर बराहे रास्त अल्लाह से फ़रियाद करेंगे और कहेंगे कि या अल्लाह! हम अपनी बदबख़्ती की वजह से हलाक हो गए, हम अपनी गुमराही में डूब गए, या अल्लाह! अब तू हमें यहाँ से नजात दे। अगर अब भी हम यही बुरे काम करें, तू जो चाहे सज़ा करना। इसका जवाब उन्हें दुनिया की दुगुनी उम्र तक न दिया जाएगा। फिर फ़र्माया जाएगा कि रहमत से दूर होकर ज़लीलो ख़्वार होकर इसी दोज़ख़ में पड़े रहो और मुझसे बात न करो। अब यह सिर्फ़ मायूस हो जाएँगे और गधों की तरह चिल्लाते और शोर मचाते जलते झुलसते रहेंगे। उस वक़्त इनके चेहरे बदल जाएँगे, सूरतें मस्ख़ हो जाएँगी, यहाँ तक कि कुछ मोमिन सिफ़ारिश की इजाज़त लेकर आएँगे लेकिन यहाँ किसी को नहीं पहचानेंगे. जहन्नमी उन्हें देखकर कहेंगे कि मैं फ़लाँ हूँ लेकिन यह जवाब देंगे कि ग़लत है हम तुम्हें नहीं पहचानते। अब दोज़ख़ी लोग अल्लाह को पुकारेंगे और वह जवाब पायेंगे जो ऊपर मज़्कूर हुआ। फिर दोज़ख़ के दरवाज़े बंद कर दिये जाएँगे और यह वहीं सड़ते रहेंगे। उन्हें शर्मिन्दा और पशेमान करने के लिए उनका एक ज़बरदस्त गुनाह पेश किया जाएगा कि वह अल्लाह के प्यारे बन्दों का मज़ाक़ उड़ाते थे और उनकी दुआओं पर दिललगी करते थे। वह मोमिन अपने रब से बख़्शिश व रहमत तलब करते थे, उसे अरहमुर्राहिमीन कहकर पुकारते थे, लेकिन यह उसे हँसी में उड़ाते थे और उनके बुग़्ज़ में ज़िक्रे रब छोड़ बैठते थे और उनकी इबादतों और दुआओं पर हँसते थे जैसे फ़र्मान है (اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ) (83/मुतफ़्फ़िफ़ीन : 29) यानी गुनहगार ईमान वालों से हँसते थे और उन्हें मज़ाक़ में उड़ाते थे। अब उनसे अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि मैंने अपने ईमान वाले सब्र वाले बन्दों को बदला दे दिया है वह सआदत सलामत नजात व कामयाबी पा चुके हैं और पूरे कामयाब हो चुके हैं।

قُلَ كَمۡ لَبِثۡتُمۡ فِي الۡاَرۡضِ عَدَدَ سِنِيۡنَ ۝١١٢ قَالُوۡا لَبِثۡنَا يَوۡمًا اَوۡ بَعۡضَ يَوۡمٍ فَسۡـَٔلِ
الۡعَآدِّيۡنَ ۝١١٣ قٰلَ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا لَّوۡ اَنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۝١١٤ اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ
عَبَثًا وَّاَنَّكُمۡ اِلَيۡنَا لَا تُرۡجَعُوۡنَ ۝١١٥ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الۡمَلِكُ الۡحَـقُّ‌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ‌ ۚ رَبُّ
الۡعَرۡشِ الۡكَرِيۡمِ ۝١١٦

तर्जुमा : "अल्लाह तआला पूछेगा कि तुम ज़मीन में बाऐतिबार बरसों की गिनती के किस क़द्र रहे। (112) वह कहेंगे एक दिन या एक दिन से भी कम गिनती गिनने वालों से भी पूछ लीजिए। (113) अल्लाह तआला कहेगा फ़िल्वाक़ेअ तुम वहाँ बहुत ही कम रहे हो, ऐ काश! तुम इसे पहले ही से जान लेते? (114) क्या तुम यह गुमान किये हुए हो कि हमने तुम्हें यूँ ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौटाये ही न जाओगे? (115) अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है वह बड़ी बुलंदी वाला है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं वही बुज़ुर्ग अर्श का मालिक है।" (116)

इंसान बेकार नहीं बनाया गया (आयत 112 से 116) : बयान हो रहा है कि दुनिया की थोड़ी सी उम्र में यह बदकारियों में मशग़ूल हो गए अगर नेकोकार रहते तो अल्लाह के नेक बन्दों के साथ अपनी उन नेकियों का बड़ा अज्र पाते। आज इनसे सवाल होगा कि तुम दुनिया में किस क़द्र रहे? जवाब देंगे कि बहुत ही कम एक दिन या उससे भी कम हिसाबदान लोगों से पूछ लिया जाए। जवाब मिलेगा कि इतनी मुद्दत हो या ज़्यादा लेकिन वाक़ेई में दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है अगर तुम इसी को जानते होते तो इस फ़ानी को उस जावेदानी पर तर्जीह न देते और बुराई करके इस थोड़ी सी मुद्दत में इस क़द्र अल्लाह को नाराज़ न कर देते। वह ज़रा सा वक़्त अगर सब्रो सिहार से इताअते इलाही में बसर कर देते तो आज राज था ख़ुशी ही ख़ुशी थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जब जन्नती और दोज़ख़ी अपनी अपनी जगह पहुँच जाएँगे तो जनाब बारी अज़्ज़ व जल्ल मोमिनों से पूछेगा कि तुम दुनिया में कितनी मुद्दत रहे? वह कहेंगे यही कोई एक आध दिन। अल्लाह तआला कहेगा फिर तो तुम बहुत ही अच्छे रहे कि इतनी से देर की नेकियों का यह बदला पाया कि मेरी रहमत रज़ामंदी और जन्नत हासिल कर ली जहाँ हमेशगी है। फिर जहन्नमियों से यही सवाल होगा वह भी इतनी ही मुद्दत बतलाएँगे तो अल्लाह तआला कहेगा तुम्हारी तिजारत बड़ी घाटे वाली हुई कि इतनी सी मुद्दत में तुमने मेरी नाराज़गी गुस्सा और जहन्नम ख़रीद लिया जहाँ तुम हमेशा पड़े रहोगे।" क्या तुम लोग यह समझे हुए हो कि तुम बेकार बे क़सद व इरादा पैदा किये गए हो? कोई हिक्मत तुम्हारी पैदाइश में नहीं? सिर्फ़ खेल के तौर पर तुम्हें पैदा कर दिया गया है कि मिस्ल जानवरों के तुम उछलते कूदते फिरो? सवाब व अज़ाब के मुस्तहिक़ न होओ? यह गुमान ग़लत है तुम इबादत के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों की बजाआवरी के लिए पैदा किये गए हो। क्या तुम यह ख़्याल करके बेपरवाह हो गए हो कि तुम्हें

हमारी तरफ़ लौटना ही नहीं? यह भी ग़लत ख़्याल है जैसे फ़र्माया (أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ۝) (75/क़ियामा : 36) क्या लोग यह गुमान करते हैं कि वह बेकार छोड़ दिये जाएँगे? अल्लाह तआला की ज़ात इससे बुलंद व बरतर है कि वह कोई बेकार काम करे, बेकार बनाए बिगाड़े, वह सच्चा बादशाह इससे पाक है और उसके सिवा कोई मअबूद नहीं। वह अर्शे अज़ीम का मालिक है जो तमाम मख़्लूक़ को मिस्ल छत के छाया हुआ है वह बहुत भला और बहुत उम्दा है ख़ुश शक्ल और नेक मंज़र है। जैसे फ़र्मान है ज़मीन में हमने हर भली जोड़ को पैदा कर दिया है। (31/लुक़्मान : 10) ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने अपने आख़िरी ख़ुत्बे में अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद फ़र्माया कि लोगों! तुम बेकार और अबस पैदा नहीं किये गए और तुम ऐसे ही छोड़ नहीं दिये गए, याद रखो वादे का एक दिन है जिसमें ख़ुद अल्लाह तआला फ़ैसले करने और हुक्म करने के लिए नाज़िल होगा। वह नुक़्सान में पड़ा उसने ख़सारा उठाया, वह बेनसीब और बदबख़्त हो गया वह महरूम और ख़ाली हाथ रहा जो अल्लाह की रहमत से दूर हो गया और जन्नत से रोक दिया गया जिसकी चौड़ाई मिस्ल कुल ज़मीनों और आसमानों के है। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि कल क़ियामत के दिन वह अज़ाबे रब से बच जाएगा जिसके दिल में उस दिन का डर आज है और जो इस फ़ानी दुनिया को उस बाक़ी आख़िरत पर क़ुर्बान कर रहा है इस थोड़े को उस बहुत के हासिल करने के लिए बेतकान ख़र्च कर रहा है और अपने इस डर को अम्न से बदलने के सामान मुहय्या कर रहा है। क्या तुम नहीं देखते कि तुमसे अगले हलाक हुए जिनके क़ायम मक़ाम अब तुम हो, इसी तरह तुम भी मिटा दिये जाओगे और तुम्हारे बदले आइन्दा आने वाले आएँगे, यहाँ तक कि एक वक़्त आएगा कि सारी दुनिया समेटकर उस ख़ैरुल वारेसीन के दरबार में हाज़िरी देगी लोगों! ख़्याल तो करो कि तुम दिन रात अपनी मौत से क़रीब हो रहे हो और अपने क़दमों अपनी क़ब्र की तरफ़ जा रहे हो, तुम्हारे फल पक रहे हैं, तुम्हारी उम्मीदें ख़त्म हो रही हैं, तुम्हारी उम्रें पूरी हो रही हैं, तुम्हारी मौत नज़दीक आ गयी है, तुम ज़मीन के गढ़ों में दफ़न कर दिये जाओगे, जहाँ न कोई बिस्तर होगा, न तकिया, दोस्त अहबाब छूट जाएँगे, हिसाब किताब शुरू हो जाएगा। आमाल सामने आ जाएँगे जो छोड़ आए हो, वह दूसरों का हो जाएगा, जो आगे भेज चुके उसे सामने पाओगे, नेकियों के मोहताज हो जाओगे, बदियों की सज़ाएँ भुगतोगे। ऐ अल्लाह के बन्दों! अल्लाह से डरो उसकी बातें सामने आ जाएँ उससे पहले मौत तुमको उचक ले जाए, इससे पहले जवाबदेही के लिए तैयार हो जाओ। इतना कहा था जो रोने के ग़ल्बे ने आवाज़ बुलंद कर दी मुँह पर चादर का कोना डालकर रोने लगे और हाज़िरीन की भी आहवज़ारी शुरू हो गयी।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन्न सता रहा था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के पास आया तो आपने (अफ़हसिब्तुम) से सूरत के ख़त्म तक की आयतें उसके कान में तिलावत कीं। वह अच्छा हो गया, जब नबी (ﷺ) से इसका ज़िक्र आया तो आपने फ़र्माया "अब्दुल्लाह! तुमने इसके कान में क्या पढ़ा था? आपने बतलाया तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमने यह आयतें इसके कान में पढ़कर उसे जला दिया, अल्लाह की क़सम! इन आयतों को अगर कोई ईमान वाला यक़ीन करने वाला शख़्स किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह भी अपनी जगह से हिल जाए।" (मुस्नदे अबी यअला : 5045; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) अबू नईम (रह.) ने रिवायत नक़्ल की है, इब्राहीम बिन हारिस (रज़ि.) ने

फ़र्माया कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें एक लश्कर में भेजा और फ़र्माया कि हम सुबह व शाम (अफ़हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़्नाकुम अबसव् व अन्नकुम इलैना ला तुर्जऊन) पढ़ते रहें। हमने बराबर इसकी तिलावत दोनों वक़्त जारी रखी, अल्हम्दु लिल्लाह! हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापिस लौटे। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं मेरी उम्मत का डूबने से बचाव, कश्तियों में सवार होने के वक़्त यह कहना है (बिस्मिल्लाहिल मलिकिल हक़्क़ि वमा क़दरुल्लाह हक़्क़ा क़द्रिही वल अर्जु जमीअन क़ब्ज़तुहू यौमल क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् बि यमीनिही सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून बिस्मिल्लाहि मज्रीहा व मुर्साहा इन्ना रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रहीम.) (इब्ने अबी हातिम व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, नहशल बिन सईद मतरूक रावी है और बाक़ी सनद भी मर्दूद है।)

***

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

तर्जुमा : "जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअबूद को पुकारे जिसकी कोई दलील उसके पास नहीं पस उसका हिसाब तो उसके रब के पास ही है। बेशक काफ़िर लोग नजात से महरूम हैं। (117) तू दुआ करता रह कि ऐ मेरे रब! तू बख़्श और रहम कर और तू सब मेहरबानों से बेहतर मेहरबानी वाला है।"(118)

मुसीबत में काम आने वाला कौन है? (आ. 117, 118) : मुश्रिकों को अल्लाह वाहिद डरा रहा है और बयान कर रहा है कि इनके पास इनके शिर्क की कोई दलील नहीं। यह जुम्ला मुअतर्ज़ा है और जवाबे शर्त (फ़ इन्नमा) वाले जुम्ले के ज़िम्न में है यानी इसका हिसाब अल्लाह के यहाँ है। काफ़िर उसके पास कामयाब नहीं हो सकते वह नजात से महरूम रह जाते हैं। एक शख़्स से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा कि "तू किस किसको पूजता है? उसने कहा, अल्लाह को और फ़लाँ फ़लाँ को। आपने पूछा कि उनमें से ऐसा किसे जानता है कि तेरी मुसीबतों में तुझे काम आए? उसने कहा, सिर्फ़ अल्लाह (तआला जल्ल शानुहू) को। आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब काम आने वाला वही है तो फिर उसके सिवा इन दूसरों की इबादत की क्या ज़रूरत? क्या तेरा ख़्याल है कि वह अकेला तुझे काफ़ी न होगा? उसने कहा, यह तो नहीं कह सकता अल्बत्ता इरादा यह है कि औरों की इबादत करके उसका पूरा शुक्र बजा ला सकूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! इल्म के साथ यह बेइल्मी? जानते हो और फिर अंजान बन जाते हो। अब कोई जवाब बन न पड़ा। चुनाँचे वह मुसलमान हो जाने के बाद कहा करते थे मुझे हुज़ूर (ﷺ) ने क़ाइल कर दिया।" यह हदीस मुर्सल है। (सुनन तिर्मिज़ी : 3483; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) फिर एक दुआ सिखाई ग़फ़र के मअनी जब वह मुत्लक़ हो तो गुनाहों को मिटा देने और उन्हें लोगों से छुपा देने के आते हैं और रहमत के मअनी सही राह पर क़ायम रखने और अच्छे क़ौल व फ़ेअल की तौफ़ीक़ देने के होते हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह मोमिनून की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

सूरह नूर

سورۃ النور

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह नूर - 24

आयातः 64 मदनी सूरह, पैराग्राफः 5

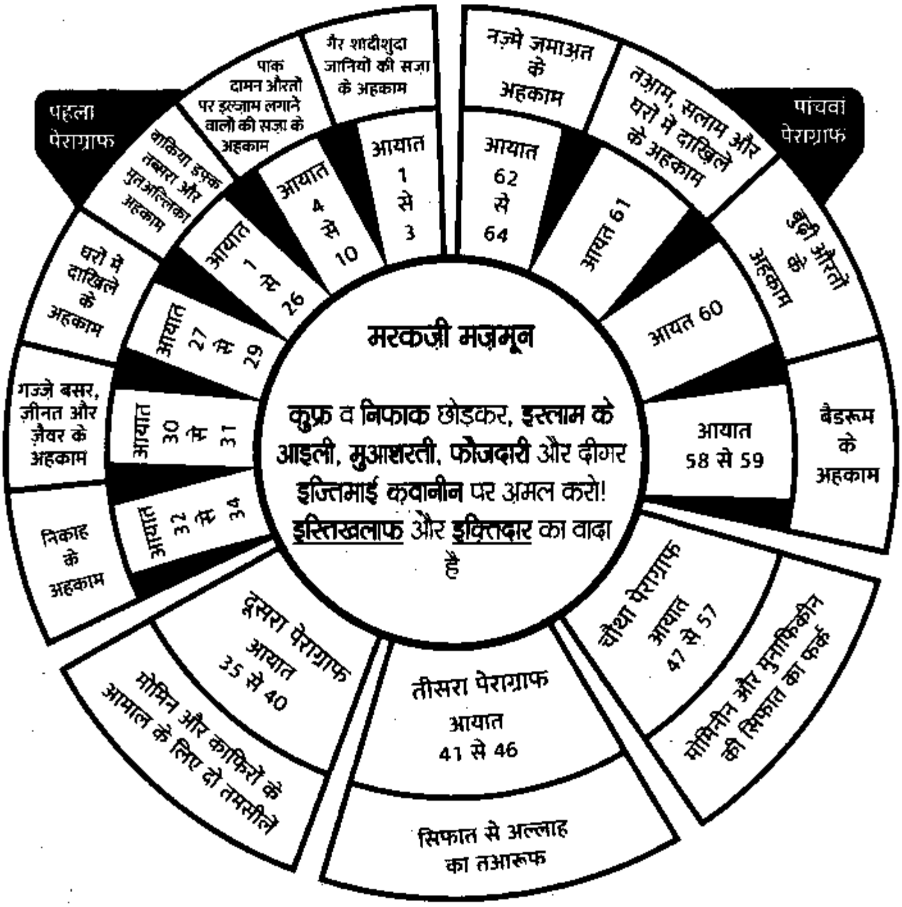

سورة النور

तफ़्सीर सूरह नूर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ① اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۠ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ②

तर्जुमा : ''यह है वह सूरत जो हमने नाज़िल की है और मुक़र्रर कर दी है और जिसमें हमने खुले अहकाम उतारे हैं ताकि तुम याद रखो। (1) ज़िनाकार औरत व मर्द में से हर एक को सौ कोड़े लगाओ। उन पर अल्लाह तआला की शरीअत की हद जारी करते हुए तुम्हें हर्गिज़ तरस न खाना चाहिए, अगर तुम्हें अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान हो। उनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअत मौजूद होनी चाहिए।'' (2)

हद्दे रजम और कोड़ों की सज़ा (आ. 1, 2) : इस बयान से कि हमने इस सूरत को नाज़िल किया है इस सूरत की बुज़ुर्गी और ज़रूरत को ज़ाहिर करना है लेकिन इससे यह मक़्सूद नहीं कि और सूरतें ज़रूरी और बुज़ुर्गी वाली नहीं। (फ़रज़्नाहा) के मअनी मुजाहिद व क़तादा (रह.) ने यह बयान किये हैं कि हलाल व हराम अम्र व नही और हुदूद वग़ैरह का इसमें बयान है। (तब्री : 19/89) इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं इसे हमने तुम पर और तुम्हारे बाद वालों पर मुक़र्रर कर दिया है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नूर क़ब्ल हदीस

: 4745) इसमें साफ़ साफ़ और खुले खुले रोशन अहकाम बयान किये हैं ताकि तुम नसीहत व इब्रत हासिल करो, अहकामे इलाही को याद रखो। और फिर उन पर अमल करो, फिर ज़िनाकारी की शरई सज़ा बयान की। ज़िनाकार या तो कुँवारा होगा या शादीशुदा होगा। यानी वह जो हुर्रियते बुलूग़त और अक़्ल की हालत में निकाहे शरई के साथ किसी औरत से मिला हो। पस कुँवारा जिसका निकाह अभी नहीं हुआ वह अगर ज़िना कर बैठे तो उसकी हद वही है जो इस आयत में बयान हुई यानी सौ (100) कोड़े। और जुम्हूर उलमा (रहि.) के नज़दीक उसे साल भर देश निकाला की सज़ा भी होगी। हाँ! इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का क़ौल है कि यह देश निकाला इमाम की राय पर है अगर वह चाहे दे चाहे न दे। जुम्हूर की दलील तो बुख़ारी व मुस्लिम की वह हदीस है जिसमें है कि "दो आराबी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए, एक ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा बेटा इसके यहाँ मुलाज़िम था वह इसकी बीवी से ज़िना कर बैठा, मैंने उसके फ़िदये में एक सौ बकरियाँ और एक लौण्डी दी, फिर मैंने उलमा से पूछा तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे बेटे पर शरई सज़ा सौ कोड़ों की है और एक साल का देश निकाला और इसकी बीवी पर रजम यानी संगसारी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! मैं तुममें अल्लाह की किताब का सही फ़ैसला करता हूँ, लौण्डी और बकरियाँ तो तुझे वापिस दिलवा दी जाएँगी और तेरे बच्चे पर सौ कोड़े और एक साल का देश निकाला है और ऐ उनैस! तू इसकी बीवी का बयान ले (यह हज़रत उनैस (रज़ि.) क़बील-ए-असलम के एक शख़्स थे) अगर वह अपनी स्याहकारी का इक़रार कर ले तो तू उसे संगसार कर देना। चुनाँचे उसकी बीवी ने इक़रार किया और उन्हें रजम (पत्थरों से मारकर हलाक) कर दिया गया।" (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सुल्ह, बाब इज़स्तलिहू अला सुल्हि जौर फस्सुल्हु मर्दूद : 2695; सहीह मुस्लिम : 1697; अबूदाऊद : 4445; तिर्मिज़ी : 1433; इब्ने माजा : 2549; अहमद : 4/115; इब्ने माजा : 4437) इस हदीस से साबित होता है कि कुँवारे पर सौ कोड़ों के साथ ही साल भर तक की देश निकाला भी है और अगर शादीशुदा है तो वह रजम कर दिया जाएगा। चुनाँचे मौत्ता इमाम मालिक में है कि "हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने एक ख़ुत्बे में हम्दो सना के बाद फ़र्माया कि लोगों! अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा और आप पर अपनी किताब नाज़िल की इस किताबुल्लाह में रजम करने के हुक्म की आयत भी थी जिसे हमने तिलावत किया, याद किया और उस पर अमल भी किया। ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में भी रजम हुआ और हमने भी आप (ﷺ) के बाद रजम किया, मुझे डर लगता है कि कुछ ज़माना गुज़रने के बाद कोई यह न कहने लगे कि हम रजम को किताबुल्लाह में नहीं पाते, ऐसा न हो कि वह अल्लाह के फ़रीज़े को जिसे अल्लाह तआला ने अपनी किताब में उतारा छोड़कर गुमराह हो जाएँ। किताबुल्लाह में रजम का हुक्म मुत्लक़ हक़ है उस पर जो ज़िना करे और शादीशुदा हो, ख़्वाह मर्द हो या औरत जबकि उसके ज़िना पर शरई दलील हो या हमल हो या इक़रार हो।" यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में इससे भी लम्बी है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल हुदूद, बाब रजमुल हुब्ला फ़िज़्ज़िना इज़ा अहसन्त : 6830; सहीह मुस्लिम : 1691; मौत्ता इमाम मालिक : 2/823; तिर्मिज़ी : 1432; इब्ने माजा : 2553; मुस्नदे अबी यअ़ला : 151) मुस्नद अहमद में है कि "आपने अपने ख़ुत्बे में फ़र्माया, लोग कहते हैं कि रजम यानी संगसारी का मसला हम क़ुरआन में नहीं पाते, क़ुरआन में सिर्फ़ कोड़े मारने का हुक्म है, याद रखो ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रजम किया और हमने भी आपके बाद रजम किया, अगर मुझे यह डर न होता कि लोग

कहेंगे, क़ुरआन में जो न था उमर (रज़ि.) ने लिख दिया तो मैं आयते रजम को इसी तरह लिख देता, जिस तरह नाज़िल हुई थी।'' (अहमद : 1/29; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7151; व सनदुहू सहीहुन) मुस्नद अहमद में है कि आपने अपने ख़ुत्बे में रजम का ज़िक्र किया और फ़र्माया, ''रजम ज़रूरी है वह अल्लाह की हदों में से एक हद है ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) ने रजम किया और हमने भी आपके बाद रजम किया। अगर लोगों के इस कहने का खटका न होता कि उमर (रज़ि.) ने किताबुल्लाह में ज़्यादती की जो इसमें न थी तो मैं किताबुल्लाह के एक तरफ़ आयते रजम लिख देता।'' उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.), अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) और फ़लाँ और फ़लाँ की गवाही है कि हुज़ूर (ﷺ) ने रजम किया और हमने भी रजम किया। याद रखो तुम्हारे बाद ऐसे लोग आने वाले हैं जो रजम को और सिफ़ारिश को और अज़ाबे क़ब्र को झुठलाएँगे और इस बात को भी कुछ लोग जहन्नम से उसके बाद निकाले जाएँगे कि वह कोयले हो गए होंगे।'' (अहमद : 1/23; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्नदे अबी यअला : 146) मुस्नद अहमद में है कि ''हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, रजम के हुक्म के इंकार करने की हलाकत से बचना...।'' (अहमद : 1/36; व सनदुहू सहीहुन; बैहक़ी : 8/212 ; मुस्नदे शाफ़ेई : 1/163; तिर्मिज़ी : 1431; बि बि तसर्रुफ़िन यसीर) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) भी इसे लाये हैं और इसे सही कहा है। (तिर्मिज़ी, किताबुल हुदूद, बाब मा जाअ फ़ी तहक़ीक़िर्रजम : 1431; वहुव सहीहुन) अबू यअला मूसली में है कि ''लोग मरवान के पास बैठे थे हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि.) भी थे, आपने फ़र्माया, हम क़ुरआन में पढ़ते थे कि शादीशुदा मर्द या औरत जब ज़िनाकारी करें तो उन्हें ज़रूर रजम कर दो। मरवान ने कहा फिर तुमने इस आयत को क़ुरआन में न लिख लिया? फ़र्माया, सुनो! हममें जब इसका ज़िक्र चला तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं तुम्हारी तशफ़्फ़ी कर देता हूँ। एक शख़्स नबी (ﷺ) के पास आया उसने आपसे ऐसा ऐसा ज़िक्र किया और रजम का बयान किया। किसी ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप रजम की आयत लिख लीजिए आपने फ़र्माया अब तो मैं इसे लिख नहीं सकता।'' या इसी के मिस्ल यह रिवायत नसाई में भी है।'' (सुननुल कुब्रा लिल बैहक़ी : 7148; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) पस इन सब अहादीस से साबित हुआ कि रजम की आयत पहले लिखी हुई थी फिर तिलावत मंसूख़ हो गई और हुक्म बाक़ी रहा, वल्लाहु आलम! ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) ने उस शख़्स की बीवी के रजम का हुक्म दिया जिसने अपने मुलाज़िम से बदकारी कराई थी। इसी तरह हुज़ूर (ﷺ) ने माइज़ (रज़ि.) को और एक ग़ामिदिया औरत को रजम कराया। इन सब वाक़ियात में यह मज़्कूर नहीं कि रजम से पहले आपने उन्हें कोड़े भी लगवाए हों। बल्कि इन सब सही और साफ़ हदीसों में सिर्फ़ रजम का ज़िक्र है किसी में भी कोड़ों का बयान नहीं। इसीलिए जुम्हूर उलमा-ए-इस्लाम का यही मज़हब है। अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ेई (रहि.) भी इसी तरफ़ गए हैं। इमाम अहमद (रह.) फ़र्माते हैं पहले इसे कोड़े मारने चाहिए फिर रजम करना चाहिए ताकि क़ुरआन हदीस दोनों पर अमल हो जाए। जैसे कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन (रज़ि.) से मंक़ूल है कि जब आपके पास सराजा लाई गई जो शादीशुदा औरत थी और ज़िनाकारी में आई थी तो आपने जुमेरात के दिन तो उसे कोड़े लगवाये और जुम्आ के दिन संगसार करा दिया और फ़र्माया कि किताबुल्लाह पर अमल करके मैंने कोड़े पिटवाये और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अमल करके संगसार कराया। (अहमद : 1/93; ह : 716; व सनदुहू सहीहुन)

मुस्नदे अहमद, सुनने अरबआ और मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "मेरी बात ले लो मेरी बात ले लो, अल्लाह तआला ने इनके लिए रास्ता निकाल दिया, कुँवारा कुँवारा के साथ ज़िना करे तो सौ कोड़े और साल भर का देश निकाला और शादी शुदा शादी शुदा के साथ ज़िना करे तो रजम।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल हुदूद, बाब हद्दुज़्ज़िना : 1690; अबूदाऊद : 4415; तिर्मिज़ी : 1434; सुननुल कुब्रा : 7142; अहमद : 5/313; इब्ने हिब्बान : 4425; बैहक़ी : 8/222) फिर फ़र्माया अल्लाह के हुक्म के मातहत इस हद के जारी करने में तुम्हें इन पर तरस और रहम न खाना चाहिए। दिल का रहम और चीज़ है वह तो ज़रूर होगा लेकिन हद के जारी करने में इमाम का कमी और सुस्ती करना बुरी चीज़ है। जब इमाम यानी सुल्तान के पास कोई ऐसा वाक़िया जिसमें हद हो पहुँच जाए तो उसे चाहिए कि हद को जारी करे और उसे न छोड़े। हदीस में है कि "अपने आपस में हुदूद से दरगुज़र करो जो बात मुझ तक पहुँची और उसमें हद हो तो वह तो वाजिब और ज़रूरी हो गई।" (अबूदाऊद, किताबुल हुदूद, बाब यअफ़ी अनिल हुदूद मा लम तब्लग़िस्सुल्तान : 4376; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने जुरैज मुदल्लस के सिमाअ की सराहत नहीं है। नसाई : 489; हाकिम : 4/383) और हदीस में है कि "एक हद का ज़मीन में क़ायम होना ज़मीन वालों के लिए चालीस दिन की बारिश से बेहतर है।" (नसाई, किताब क़तअस्सारिक़, बाब अत्तर्ग़ीब फ़ी इक़ामतिल हद : 4909; इब्ने माजा : 2537, 2538; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; जरीर बिन यज़ीद बजली रावी ज़ईफ़ है। इब्ने हिब्बान : 4397) यह भी क़ौल है कि तरस खाकर मार को नरम न कर दो, बल्कि दरम्याना तौर पर कोड़े लगाओ यह भी न हो कि हड्डी तोड़ दो। तोहमत लगाने वाले की हद के जारी करने के वक़्त उसके जिस्म पर कपड़े होने चाहिए, हाँ! ज़ानी के हद के वक़्त न हों। यह क़ौल हज़रत हम्माद बिन अबू सुलेमान (रज़ि.) का है इसे बयान करके आपने यही जुम्ला (वला तअख़ुज़्कुम.....) पढ़ा तो हज़रत सईद बिन अबी उरूबा (रज़ि.) ने पूछा, यह हुक्म में है कहाँ? हाँ! हुक्म में है और कोड़ों में यानी हद के क़ायम करने में और सख़्त चोट मारने में। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) की लौण्डी ने जब ज़िना किया तो आपने उसके पैरों पर और कमर पर कोड़े मारे तो हज़रत उबेदुल्लाह (रह.) ने इसी आयत का यह जुम्ला तिलावत किया कि हद्दे रब्बानी के जारी करने में तुम्हें तरस न आना चाहिए। तो आपने फ़र्माया, क्या तेरे नज़दीक मैंने इस पर कोई तरस खाया है? सुनो अल्लाह ने इसके मार डालने का हुक्म नहीं दिया, न यह फ़र्माया है कि इसके सर पर कोड़े मारे जाएँ। मैंने इसे ताक़त से कोड़े लगाये हैं और पूरी सज़ा दी हैं फिर फ़र्माया अगर तुम्हें अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान है तो तुम्हें इस हुक्म की बजाआवरी करनी चाहिए और ज़ानियों पर हदें क़ायम करने में पहलू तही न करनी चाहिए। और इन्हें चोट भी शदीद मारनी चाहिए लेकिन हड्डी तोड़ने वाली नहीं। ताकि वह अपने इस गुनाह से बाज़ रहें और इनकी यह सज़ा दूसरों के लिए इब्रत बने, रजम बुरी चीज़ नहीं। एक हदीस में है कि "एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं बकरी को ज़िब्ह करता हूँ लेकिन मेरा दिल दुखता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इस रहम पर भी तुझे अज्र मिलेगा।" (अहमद : 3/436 ; ह : 15592; व सनदुहू सहीहुन; व सह्हहुल हाकिम : 4/231; व वाफ़क़हुज़्ज़हबी; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/32, 33) फिर फ़र्माता है कि इनकी सज़ा के वक़्त मुसलमानों का मज्मअ होना चाहिए ताकि सबके दिल में डर बैठ जाए और ज़ानी की रुस्वाई भी हो ताकि और लोग उससे रुक जाएँ, उसे ऐलानिया सज़ा दी जाए, छुपे तौर पर मारपीट करके

न छोड़ा जाए। एक शख़्स और उससे ज़्यादा भी हो जाए तो जमाअत हो गई और आयत पर अमल हो गया। इसी को लेकर इमाम मुहम्मद (रह.) का मज़हब है कि एक शख़्स भी ताइफ़ा है। अता (रह.) का क़ौल है कि दो होने चाहिएँ। सईद बिन जुबैर (रह.) कहते हैं चार हों। जोहरी (रह.) कहते हैं तीन या तीन से ज़्यादा। इमाम मालिक (रह.) फ़र्माते हैं चार और उससे ज़्यादा क्योंकि ज़िना में चार से कम गवाह नहीं हैं चार हों या उससे ज़्यादा। इमाम शाफ़ेई (रह.) का मज़हब भी यही है। रबीआ (रह.) कहते हैं पाँच हों। हसन बसरी (रह.) के नज़दीक दस। क़तादा (रह.) कहते हैं एक जमाअत हो ताकि नसीहत इब्रत और सज़ा हो। नसर बिन अल्क़मा (रह.) ने इस जमाअत की मौजूदगी की इल्लत यह बयान की है कि वह उन लोगों के लिए जिन पर हद जारी की जा रही है दुआए मग़्फ़िरत व रहमत करें।

***

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَاۤ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ
وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ③

तर्जुमा : "ज़ानी मर्द सिवाय ज़ानिया या मुश्रिका औरत के और से ज़िनाकारी नहीं कर सकता। और ज़िनाकार औरत भी सिवाय ज़ानी या मुश्रिक मर्द के और से बदकारी नहीं करती। ईमान वालों पर यह हराम कर दिया गया।" (3)

बदकार औरतें और बदकार मर्द (आयत 3) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि ज़ानी से ज़िनाकारी पर रज़ामंद वही औरत होती है जो बदकार हो या मुश्रिका हो कि वह उस बुरे काम को ऐब ही नहीं समझती। ऐसी बदकार औरत से वही मर्द मिलता है जो उसी जैसा बदचलन हो या मुश्रिक हो जो उसकी हुर्मत का क़ाइल ही नहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से बसनद सहीह मरवी है कि यहाँ निकाह से मुराद जिमाअ है यानी ज़ानिया औरत से ज़िनाकार या मुश्रिक मर्द ही ज़िना करता है। यही क़ौल मुजाहिद, इक्रिमा, सईद बिन जुबैर, उर्वा बिन जुबैर, ज़हहाक, मक्हूल, मुक़ातिल बिन हय्यान (रहि.) और बहुत से बुज़ुर्ग मुफ़स्सिरीन से मरवी है कि मोमिनों पर यह हराम है यानी ज़िनाकारी करना और ज़ानिया औरतों से निकाह करना या अफ़ीफ़ा और पाकदामन औरतों को ऐसे ज़ानियों के निकाह में देना। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि मुराद इस आयत से यह है कि ज़िना मुसलमानों पर हराम है। क़तादा (रह.) वग़ैरह से मरवी है कि बदकार औरतों से निकाह करना मुसलमानों पर हराम है। जैसे और आयत में है (مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّ لَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ) (4/निसाअ : 25) यानी मुसलमानों को जिन औरतों से निकाह करना चाहिए उनमें यह तीनों औसाफ़ होने चाहिएँ वह पाकदामन हों, वह बदकार न हों, न छुप छुपकर बुरे लोगों से मैल मिलाप करने वाली हों। यही तीनों वस्फ़ मर्दों में होने चाहिए। इसीलिए इमाम अहमद (रह.) का फ़र्मान है कि नेक और पाकदामन मुसलमान का निकाह बदकार औरत से सही नहीं होता जब तक कि वह तौबा न कर ले, हाँ! तौबा के बाद

अक़्दे निकाह़ दुरुस्त है, इसी त़रह़ भोली भाली पाकदामन अ़फ़ीफ़ा औ़रतों का निकाह़ ज़ानी और बदकार लोगों से मुन्अक़िद ही नहीं होता जब तक कि वह सच्चे दिल से अपने इस नापाक काम से तौबा न कर लें क्योंकि फ़रमाने इलाही है कि यह मोमिनों पर ह़राम कर दिया गया है।'' एक शख़्स ने उम्मे महज़ूल नामी एक बदकार औ़रत से निकाह़ कर लेने की इजाज़त हुज़ूर (ﷺ) से त़लब की तो आपने यही आयत पढ़कर सुनाई।'' (अह़मद : 2/159; व सनदुहू ह़सन; व अख़्तान मन ज़अअफ़हू) और रिवायत में है कि उसकी त़लबे इजाज़त पर यह आयत उतरी। (अह़मद : 2/225; व सनदुहू ह़सन; बैहक़ी : 7/153; ह़ाकिम : 2/193) तिर्मिज़ी में है कि ''एक सह़ाबी जिनका नाम मुर्सिद बिन अबू मर्सद था यह मक्का से मुसलमान क़ैदियों को उठा लाया करते थे और मदीने पहुँचा दिया करते थे। इनाक़ नामी एक बदकार औ़रत मक्का में रहा करती थी। जाहिलियत के ज़माने में उनका उस औ़रत से रिश्ता था। ह़ज़रत मर्सद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि एक मर्तबा मैं एक क़ैदी को लाने के लिए मक्का गया। एक बाग़ की दीवार के नीचे मैं पहुँच गया। रात का वक़्त था, चाँदनी चटकी हुई थी। इत्तिफ़ाक़ से इनाक़ आ पहुँची और मुझे देख लिया बल्कि पहचान गई और आवाज़ देकर कहा क्या मर्सद है? मैंने कहा, हाँ! मर्सद हूँ। उसने बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की और मुझसे कहने लगी कि चलो रात मेरे यहाँ गुज़ारना। मैंने कहा, इनाक़, अल्लाह तआ़ला ने ज़िनाकारी ह़राम कर दी है जब वह मायूस हो गई तो उसने मुझे पकड़वाने के लिए शोर मचाना शुरू किया, कि ऐ ख़ेमे वालों! होशियार हो जाओ, देखो चोर आ गया है यही है जो तुम्हारे क़ैदियों को चुराया करता है। लोग जाग गए और आठ आदमी मुझे पकड़ने को मेरे पीछे दौड़े, मैं मुट्ठियाँ बंद करके ख़ंदक़ के रास्ते भागा और एक ग़ार में जा छुपा। यह लोग मेरे पीछे ही पीछे ग़ार पर आ पहुँचे लेकिन मैं उन्हें न मिला। यह वहीं पेशाब करने को बैठे, अल्लाह की क़सम! उनका पेशाब मेरे सर पर आ रहा था। लेकिन अल्लाह ने उन्हें अंधा कर दिया। उनकी नज़रें मुझ पर न पड़ीं। इधर उधर ढूँढ भालकर वापिस चले गए। मैंने कुछ देर गुज़ारकर जब यह यक़ीन कर लिया कि वह फिर सो गए होंगे तो यहाँ से निकला फिर मक्का की राह ली और वहीं पहुँचकर उस मुसलमान क़ैदी को अपनी कमर पर चढ़ाया और वहाँ से ले भागा। चूँकि वह भारी बदन के थे। मैं जब अज़्ख़र में पहुँचा तो थक गया मैंने उन्हें उतारकर उनके बँधन खोले और आज़ाद कर दिया। अब उठाता चलाता मदीने पहुँच गया। चूँकि इनाक़ की मुह़ब्बत मेरे दिल में थी मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इजाज़त चाही कि मैं उससे निकाह़ कर लूँ। आप ख़ामोश रहे। मैंने दोबारा यही सवाल किया फिर भी आप ख़ामोश रहे और यह आयत उतरी। तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ मर्सद! ज़ानिया से निकाह़ ज़ानी या मुश्रिक ही करता है तू उससे निकाह़ का इरादा छोड़ दे।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिन्नूर : 3177; व सनदुहू ह़सन; अबूदाऊद : 2051; नसाई : 3230; बैहक़ी : 7/153; ह़ाकिम : 2/166; मुख़्तसरन) अबूदाऊद वग़ैरह में है ज़ानी जिस पर कोड़े लग चुके हों वह अपने जैसे से ही निकाह़ कर सकता है। (अबूदाऊद, किताबुन्निकाह़, बाब फ़ी क़ौलिही तआ़ला (अज़्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानियतन) : 2052; व सनदुहू ह़सन; अह़मद : 2/324; मुश्किलुल आसार : 4548; ह़ाकिम : 2/166)

मुस्नद अह़मद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''तीन क़िस्म के लोग हैं जो जन्नत में न जाएँगे

और जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला नज़रे रहमत से न देखेगा, माँ बाप का नाफ़र्मान, वह औरतें जो मर्दों की मुशाबिहत करें और दय्यूस और तीन क़िस्म के लोग हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला नज़रे रहमत से न देखेगा, माँ बाप का नाफ़र्मान, हमेशा का नशे का आदी और राहे इलाही में देकर एहसान जताने वाला।'' (नसाई, किताबुज़्ज़कात, बाब अलमन्नानु बिमा अअता : 2563; व सनदुहू हसन; अहमद : 2/134) मुस्नदे अहमद में है कि आप (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''तीन क़िस्म के लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम कर दी है हमेशा का शराबी, माँ बाप का नाफ़र्मान और अपने घरवालों में ख़बासत को बरक़रार रखने वाला।'' (अहमद : 2/134; व सनदुहू हसन; व सह्हहुल हाकिम : 1/72; व वाफ़क़हुज़्ज़हबी; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/327) अबूदाऊद तयालिसी में है कि ''जन्नत में कोई दय्यूस नहीं जाएगा।'' (मुस्नदे तयालिसी : 642; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीही मल्लम युसम्म) इब्ने माजा में है ''जो शख़्स अल्लाह तआला से पाक साफ़ होकर मिलना चाहता है उसे चाहिए कि पाकदामन औरतों से निकाह करे जो लौण्डियाँ न हों।'' (इब्ने माजा, किताबुन्निकाह, बाब तज़्वीजुल हरासिर वल बुलूद : 1862; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा सलाम बिन सिवार और उसका शैख़ कसीर बिन सुलैम दोनों ज़ईफ़ रावी हैं। अल्मौज़ूआत : 2/261) इसकी सनद ज़ईफ़ है। दय्यूस कहते हैं बेग़ैरत शख़्स को। नसाई में है कि ''एक शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहने लगा, मुझे अपनी बीवी से बहुत ही मुहब्बत है लेकिन उसमें यह आदत है कि किसी के हाथ को वापिस नहीं लौटाती। आपने फ़र्माया, तलाक़ दे दे। उसने कहा, मुझे तो सब्र नहीं आने का। आपने फ़र्माया, फिर जा उससे फ़ायदा उठा।'' (नसाई, किताबुन्निकाह, बाब तज़्वीजुज़्ज़ानिया : 3231; वहुव सहीहुन; बैहक़ी : 7/154) लेकिन यह हदीस साबित नहीं इसका रावी अब्दुल करीम क़वी नहीं, दूसरा रावी इसका हारून है जो इससे क़वी है मगर उनकी रिवायत मुर्सल है और यही ठीक भी है। यही रिवायत मुस्नदन भी मरवी है। लेकिन इमाम नसाई का फ़ैसला यह है कि मुस्नद करना ख़ता है और सही यही है कि यह मुर्सल है, यह हदीस और किताबों में और सनदों से भी मरवी है। इमाम अहमद (रह.) तो इसे मुंकर कहते हैं। इमाम अबू इब्ने कुतैबा (रह.) इसकी तावील करते हैं कि यह जो कहा है कि वह किसी छूने वाले के हाथ को लौटाती नहीं, इससे मुराद बेहद सख़ावत है कि वह किसी सवाल करने वाले से इंकार ही नहीं करती लेकिन अगर यही मतलब होता तो हदीस में बजाय (लामिसिन) के लफ़्ज़ (मुल्तमिसिन) का लफ़्ज़ होना चाहिए था यह भी कहा गया है कि इसकी ख़स्लत ऐसी मालूम होती थी न यह कि वह बुराई करती थी क्योंकि अगर यही ऐब उसमें होता तो फिर हुज़ूर (ﷺ) उस सहाबी को उसके रखने की इजाज़त न देते क्यों कि यह तो दय्यूसी है जिस पर सख़्त वईद आई है हाँ! यह मुम्किन है कि शौहर को उसकी आदत ऐसी लगी हो और उसका अंदेशा ज़ाहिर किया हो तो आप (ﷺ) ने मश्वरा दिया कि फिर तलाक़ दे दो लेकिन जब उसने कहा कि मुझे उससे बहुत ही मुहब्बत है तो आपने बसाने की इजाज़त दे दी क्योंकि मुहब्बत तो मौजूद है। उसे एक ख़तरे के सिर्फ़ वहम पर तोड़ देना मुम्किन है कोई बुराई पैदा कर दे (वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम)। अल्ग़र्ज़ ज़ानिया औरतों से पाकदामन मुसलमानों को निकाह मना है हाँ! जब वह तौबा कर लें तो निकाह हलाल है। चुनाँचे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से एक शख़्स ने पूछा, कि एक ऐसी ही वाही औरत से मेरा बुरा ताल्लुक़ था लेकिन अब अल्लाह तआला ने हमें तौबा की तौफ़ीक़ दी तो मैं चाहता हूँ कि उससे निकाह

कर लूँ लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि ज़ानी ही ज़ानिया और मुश्रिका औरत से निकाह करते हैं। आपने फ़र्माया, नहीं! इस आयत का यह मतलब नहीं तुम इससे अब निकाह कर सकते हो जाओ। अगर कोई गुनाह हो तो मेरे ज़िम्मे। हज़रत यहया (रह.) से जब यह ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि यह आयत मंसूख़ हो गई, इसके बाद की आयत (وَ اَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ) (24/नूर 32) से। इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई (रह.) भी यही फ़र्माते हैं।

***

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً
وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥

तर्जुमा : ''जो लोग पाकदामन औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाएँ फिर चार गवाह पेश न कर सकें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और कभी भी उनकी गवाही क़बूल न करो, यह फ़ासिक़ लोग हैं। (4) हाँ! जो लोग इसके बाद तौबा और इस्लाह कर लें तो अल्लाह तआला बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है।'' (5)

पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाने वाले की सज़ा (आ. 4, 5) : जो लोग किसी औरत पर या किसी मर्द पर ज़िनाकारी की तोहमत लगाएँ और सबूत न दे सकें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाए जाएँगे, हाँ! अगर शहादत पेश कर दें तो हद से बच जाएँगे और जिन पर जो जुर्म साबित हुआ है उन्हें उनकी हद मारी जाएगी। अगर शहादत न पेश कर सके तो अस्सी कोड़े भी लगेंगे ओर आइन्दा के लिए हमेशा उनकी गवाही ग़ैरमक़्बूल रहेगी और वह आदिल नहीं बल्कि फ़ासिक़ समझे जाएँगे। इस आयत में जिन लोगों को मख़्सूस और अलग किया गया है तो कुछ तो कहते हैं कि यह इस्तिस्ना सिर्फ़ फ़ासिक़ होने से है यानी तौबा के बाद वह फ़ासिक़ नहीं रहेंगे। कुछ कहते हैं न फ़ासिक़ रहेंगे, न मर्दूदुश्शहादत बल्कि फिर उनकी शहादत भी ले ली जाएगी। हाँ! हद जो है वह तौबा से किसी तरह हट नहीं सकती। इमाम मालिक, अहमद और शाफ़ेई (रह.) का मज़हब तो यह है कि तौबा से शहादत का मर्दूद होना और फ़िस्क़ हट जाएगा। सय्यदुत्ताबेईन हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) और सलफ़ की एक जमाअत का यही मज़हब है। (तब्री : 19/105) लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) फ़र्माते हैं कि सिर्फ़ फ़िस्क़ दूर हो जाएगा लेकिन शहादत क़बूल नहीं हो सकती। कुछ और लोग भी यही कहते हैं। शअबी और ज़हहाक (रहि.) कहते हैं कि अगर उसने इस बात का इक़रार कर लिया कि उसने बोहतान बाँधा था और फिर तौबा भी पूरी की तो उसकी गवाही उसके बाद मक़्बूल है। (तब्री : 19/103)

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ
اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٦ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ
كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ
لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٨ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٩
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝١٠

तर्जुमा : "जो लोग अपनी बीवियों पर बदकारी की तोहमत लगाएँ और उनका कोई गवाह सिवाय ख़ुद उनकी अपनी ज़ात के न हो तो ऐसे लोगों में से हर एक का सबूत यह है कि वह चार मर्तबा क़सम खाकर कहें कि वह सच्चा है। (6) और पाँचवीं बार कहे कि उस पर अल्लाह की लअनत हो अगर वह झूठों में से हो। (7) उस औरत से सज़ा इस तरह दूर हो सकती है कि वह चार मर्तबा अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि यक़ीनन उसका शौहर झूठ बोलने वालों में है। (8) और पाँचवीं बार कहे कि उस पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर उसका शौहर सच्चा हो। (9) अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम तुम पर न होता और अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला बाहिक्मत है।" (10)

लिआन कब और कैसे? (आ. 6 से 10) : इन आयतों में अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन ने उन शौहरों के लिए जो अपनी बीवियों की निस्बत ऐसी बात कह दें छुटकारे की सूरत बयान की है कि जब वह गवाह पेश न कर सकें तो लिआन कर लें। इसकी सूरत यह है कि इमाम के सामने आकर वह अपना बयान दे जब शहादत न पेश कर सके तो हाकिम उसे चार गवाहों के क़ायम मक़ाम चार क़समें देगा और यह क़सम खाकर कहेगा कि वह सच्चा है जो बात कहता है वह हक़ है। पाँचवीं बार कहेगा कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लअनत हो। इतना कहते ही इमाम शाफ़ेई (रह.) वग़ैरह के नज़दीक उसकी औरत उससे बाइन हो जाएगी और हमेशा के लिए हराम हो जाएगी। यह महर अदा कर देगा और उस औरत पर हद्दे ज़िना साबित हो जाएगी। लेकिन अगर वह औरत भी सामने मुलाइना करे तो हद उस पर से हट जाएगी। यह भी चार मर्तबा हल्फ़िया बयान देगी कि उसका शौहर झूठा है और पाँचवीं बार कहेगी कि अगर वह सच्चा हो तो उस पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो। इस लतीफ़े को भी ख़्याल रखिए कि औरत के लिए ग़ज़ब का लफ़्ज़ कहा गया है इसलिए कि उमूमन कोई मर्द नहीं चाहता कि वह अपनी बीवी को ख़्वाह मख़्वाह तोहमत लगाए और अपने आपको बल्कि अपने कुंबे को भी बदनाम करे। उमूमन वह सच्चा ही होता है और अपनी सच्चाई की

बिना पर ही वह मअज़ूर समझा जा सकता है। इसीलिए पाँचवीं बार में उससे यह कहलवाया गया कि अगर उसका शौहर सच्चा हो तो उस पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब आए। फिर ग़ज़ब वाले वह होते हैं जो हक़ को जानकर फिर उससे रूगर्दानी करें। फिर फ़र्माता है कि अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्लो रहम तुम पर न होता तो ऐसी आसानियाँ तुम पर न होतीं बल्कि तुम पर मशक़्क़त उतरती। अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा क़बूल किया करता है भले कैसे ही गुनाहों और भले किसी वक़्त भी तौबा हो। वह हकीम है अपनी शरअ में अपने हुक्मों में अपनी मुमानिअत में।

इस आयत के बारे में जो रिवायतें हैं वह भी सुन लीजिए। मुस्नद अहमद में है "जब यह आयत (नम्बर 4) उतरी तो हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) जो अंसार के सरदार हैं कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या यह आयत इसी तरह उतारी गयी है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अंसारियों! सुनते नहीं हो यह तुम्हारे सरदार क्या कह रहे हैं? उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप दरगुज़र कीजिए यह सिर्फ़ इनकी बढ़ी चढ़ी ग़ैरत के सबब है और कुछ नहीं इनकी ग़ैरत का यह हाल है कि यह सिर्फ़ कुँवारी से निकाह करते हैं और हममें से कोई इनकी तलाकशुदा से निकाह करने की जुर्अत नहीं करता। हज़रत सअद (रज़ि.) ने फ़र्माया या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह तो मेरा ईमान है कि यह हक़ है लेकिन मुझे हैरत हो रही है कि अगर मैं किसी को बीवी के पैर पकड़े हुए देख लूँ तो भी मैं उसे कुछ नहीं कर सकता यहाँ तक कि मैं चार गवाह लाऊँ तब तक तो वह अपना काम पूरा कर लेगा। इस बात को ज़रा सी ही देर हुई होगी कि हज़रत हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) आए यह उन तीन शख़्सों में से हैं जिनकी तौबा क़बूल हुई थी। यह अपनी ज़मीन से इशा के वक़्त अपने घर आये तो देखा कि घर में एक ग़ैर मर्द है जिसे ख़ुद इन्होंने अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से उनकी बातें सुनीं। सुबह आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से यह ज़िक्र किया। आपको बहुत बुरा मालूम हुआ और तबियत पर निहायत ही शाक़ गुज़रा। अंसार सब जमा हो गए और कहने लगे, हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) के क़ौल की वजह से हम इस आफ़त में मुब्तला किये गए, अब तो इस सूरत में रसूलुल्लाह (ﷺ) हिलाल बिन उमय्या को तोहमत की हद लगाएँगे और उसकी गवाही को मर्दूद ठहराएँगे। हज़रत हिलाल (रज़ि.) कहने लगे, अल्लाह की क़सम! मैं सच्चा हूँ और मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है कि अल्लाह तआला मेरा छुटकारा कर देगा। कहने लगे या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं देखता हूँ कि मेरा कलाम आपकी तबीयत पर बहुत गिराँ गुज़रा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे अल्लाह की क़सम है मैं सच्चा हूँ। अल्लाह तआला ख़ूब जानता है लेकिन चूँकि गवाह पेश नहीं कर सकते थे क़रीब था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उन्हें हद मारने को फ़र्माएँ इतने में वही उतरनी शुरू हुई। सहाबा (रज़ि.) आपके चेहरे को देखकर अलामत से पहचान गए कि इस वक़्त वही उतर रही है। जब उतर चुकी तो आपने हज़रत हिलाल (रज़ि.) की तरफ़ देखकर फ़र्माया, "ऐ हिलाल! ख़ुश हो जाओ अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए कुशादगी और छुट्टी नाज़िल कर दी।" हज़रत हिलाल (रज़ि.) कहने लगे अल्हम्दु लिल्लाह! मुझे रब रहीम की ज़ात से यही उम्मीद थी। फिर आपने हज़रत हिलाल (रज़ि.) की बीवी को बुलवाया और इन दोनों के सामने आयते मुलाइना पढ़कर सुनाई और फ़र्माया, "देखो आख़िरत का अज़ाब दुनिया के अज़ाब से सख़्त है।" हिलाल (रज़ि.) फ़र्माने लगे, या

रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं बिलकुल सच्चा हूँ। उस औरत ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! यह झूठ कह रहे हैं। आपने हुक्म दिया कि अच्छा लिआन करो। तो हिलाल (रज़ि.) को कहा गया कि इस तरह चार क़समें खाओ और पाँचवीं बार यूँ कहो। हज़रत हिलाल (रज़ि.) जब चार बार कह चुके और पाँचवीं बार की नौबत आयी तो उनसे कहा गया कि हिलाल! अल्लाह तआला से डर जा, दुनिया की सज़ा आख़िरत के अज़ाबों से बहुत हल्की है यह पाँचवीं बार तेरी ज़ुबान से निकलते ही तुझ पर अज़ाब वाजिब हो जाएगा। तो उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम अल्लाह की जिस तरह अल्लाह तआला ने मुझे दुनिया की सज़ा से मेरी सदाक़त (सच्चाई) की वजह से बचाया उसी तरह आख़िरत के अज़ाबों से भी मेरी सच्चाई की वजह से मेरा रब मुझे महफ़ूज़ रखेगा। फिर पाँचवीं बार के अल्फ़ाज़ भी ज़ुबान से अदा कर दिये। अब उस औरत से कहा गया कि तू चार बार क़समें खा कि यह झूठा है। जब वह चारों क़समें खा चुकी तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे पाँचवीं बार के इस कलिमे के कहने से रोका और जिस तरह हज़रत हिलाल (रज़ि.) को समझाया गया था उससे भी फ़र्माया, तो इसे कुछ ख़्याल पैदा हो गया। रुकी झिझकी ज़ुबान को संभाला क़रीब था कि अपने क़सूर का इक़रार कर ले फिर कहने लगी मैं हमेशा के लिए अपनी क़ौम को रुस्वा नहीं करने की। फिर कह दिया कि अगर उसका शौहर सच्चा हो तो मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो। पस हुज़ूर (ﷺ) ने उन दोनों में जुदाई करा दी और हुक्म दे दिया कि इससे जो औलाद हो वह हज़रत हिलाल (रज़ि.) की तरफ़ मंसूब न की जाए, न उसे हराम की औलाद कहा जाए। जो इस बच्चे को हरामी कहे, या इस औरत पर तोहमत रखे, वह हद लगाया जाएगा, यह भी फ़ैसला कर दिया कि इसका कोई नान नफ़्क़ा इसके शौहर पर नहीं, क्योंकि जुदाई कर दी गई है। न तलाक़ हुई है, न शौहर का इंतिक़ाल हुआ है और फ़र्माया, देखो! अगर यह बच्चा सुर्ख़ सफ़ेद रंग मोटी पिण्डलियों वाला पैदा हो तो तू इसे हिलाल (रज़ि.) का समझना और अगर वह पतली पिण्डलियों वाला स्याही माइल रंग का पैदा हुआ तो उस शख़्स का समझना जिसके साथ इस पर इल्ज़ाम क़ायम किया गया है। जब बच्चा हुआ तो लोगों ने देखा कि वह इस बुरी सिफ़त पर था जो इल्ज़ाम की हक़्क़ानियत की निशानी थी। उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, "अगर यह मसला क़समों पर तयशुदा न होता तो मैं इस औरत को क़त्अन हद लगाता।" यह साहबज़ादे बड़े होकर मिस्र के वाली बने थे और इनकी निस्बत इनकी माँ की तरफ़ थी।" (अबूदाऊद, किताबुत्तलाक़, बाब फ़िल्लिआन : 2256; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अब्बाद बिन मंसूर ज़ईफ़ व मुदल्लस रावी है। अहमद : 1/238; मुस्नदे अबी यअला : 2740)

इस हदीस के और भी बहुत से शाहिद हैं, बुख़ारी में भी यह हदीस है उसमें है कि "शुरैक बिन सहमा के साथ तोहमत लगाई गई थी और हुज़ूर (ﷺ) के सामने जब हज़रत हिलाल (रज़ि.) ने ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया था गवाह पेश करो वरना तुम्हारी पीठ पर हद लगेगी। हज़रत हिलाल (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! एक शख़्स अपनी बीवी को बुरे काम पर देखकर गवाह ढूँढ़ने जाए? लेकिन हुज़ूर (ﷺ) यही फ़र्माते रहे। इसमें यह भी है कि दोनों के सामने आपने यह भी फ़र्माया कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि तुम दोनों में से एक ज़रूर झूठा है। क्या तुममें से कोई तौबा करके अपने झूठ से हटता है?" और रिवायत में है कि "पाँचवीं बार आपने किसी से कहा कि इसका मुँह बंद कर दो फिर इसे नसीहत की और

फ़र्माया कि अल्लाह की लअनत से हर चीज़ हल्की है। इसी तरह उस औरत के साथ किया गया, आख़िर तक।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नूर बाब (व यद्‌रऊ अन्हल अज़ाब) : 4747; अबूदाऊद : 2254; तिर्मिज़ी : 3176; इब्ने माजा : 2067; मुश्किलुल आसार : 2962) सईद बिन जुबैर (रह.) फ़र्माते हैं कि लिआन करने वाले मर्द व औरत की निस्बत मुझसे पूछा गया कि क्या उनमें जुदाई करा दी जाए? यह वाक़िया है हज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) की इमारत के ज़माने का। मुझे तो इसका जवाब कुछ बन न पड़ा तो मैं अपने मकान से चलकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की मंज़िल पर आया और उनसे यही मसला पूछा तो आपने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! सबसे पहले यह बात फ़लाँ बिन फ़लाँ ने पूछी कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! कोई शख़्स अपनी औरत को किसी बुरे काम पर पाए तो अगर ज़ुबान से निकाले तो भी बड़ी बेशर्मी की बात है और अगर ख़ामोश रहे तो भी बड़ी बेग़ैरती की ख़ामोशी है। आप सुनकर ख़ामोश हो गए फिर वह आया और कहने लगा, हुज़ूर (ﷺ)! मैंने जो सवाल जनाब से किया था अफ़सोस! वही वाक़िया मेरे यहाँ पेश आया। पस अल्लाह तआला ने सूरह नूर की यह आयतें नाज़िल कीं। आपने दोनों को पास बुलाकर एक एक को अलग से नसीहत की, बहुत कुछ समझाया लेकिन हर एक ने अपना सच्चा होना ज़ाहिर किया फिर दोनों ने आयत के मुताबिक़ क़समें खाईं और आपने उनमें जुदाई करा दी।'' (अहमद : 2/19; सहीह मुस्लिम, किताबुल्लिआन : 1493; तिर्मिज़ी : 1202) और रिवायत में है कि ''सहाबा (रज़ि.) का एक मज्मआ शाम के वक़्त जुम्आ के दिन मस्जिद में बैठा हुआ था जो एक अंसारी ने कहा जबकि कोई शख़्स अपनी बीवी के साथ किसी शख़्स को पाये तो अगर वह उसे मार डाले तो तुम उसे मार डालोगे और अगर ज़ुबान से निकाले तो तुम गवाह मौजूद न होने की वजह से उसी को कोड़े लगाओगे और अगर यह अंधेर देखकर ख़ामोश होकर बैठ रहे तो यह बड़ी बेग़ैरती और बेहयाई है। अल्लाह की क़सम! अगर मैं सुबह तक ज़िन्दा रहा तो हुज़ूर (ﷺ) से उसकी बाबत पूछूँगा। चुनाँचे उसने उन ही लफ़्ज़ों में हुज़ूर (ﷺ) से पूछा और दुआ की कि अल्लाह इसका फ़ैसला नाज़िल करे। पस आयते लिआन उतरी और सबसे पहले यही शख़्स उसमें मुब्तला हुआ।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल्लिआन : 1495; अहमद : 1/421; अबूदाऊद : 2253; बैहक़ी : 7/405; इब्ने हिब्बान : 4281) और रिवायत में है कि ''हज़रत उवेमिर (रज़ि.) ने हज़रत आसिम बिन अदी (रज़ि.) से कहा कि ज़रा जाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछो कि अगर कोई शख़्स अपनी बीवी के साथ किसी को पाये तो क्या करे? ऐसा तो नहीं कि वह क़त्ल करे तो उसे क़त्ल किया जाएगा? चुनाँचे आसिम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उस सवाल से बहुत नाराज़ हुए। जब उवेमिर (रज़ि.) आसिम (रज़ि.) से मिले तो पूछा कि कहो तुमने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा? और आपने क्या जवाब दिया? आसिम (रज़ि.) ने कहा तुमने मुझसे कोई अच्छी ख़िदमत नहीं ली, अफ़सोस! मेरे इस सवाल को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐब पकड़ा और बुरा माना। उवेमिर (रज़ि.) ने कहा, अच्छा! मैं ख़ुद जाकर आप (ﷺ) से पूछ लूँगा। यहाँ आए तो हुक्म नाज़िल हो चुका था। चुनाँचे लिआन के बाद उवेमिर (रज़ि.) ने कहा, अब अगर मैं इसे अपने घर ले जाऊँ तो गोया मैंने उस पर झूठ तोहमत बाँधी थी पस आपके हुक्म से पहले ही उसने औरत को जुदा कर दिया फिर तो लिआन करने वालों का यही तरीक़ा मुक़र्रर हो गया...।'' (सहीह बुख़ारी, कताबुत्तलाक़, बाब मन जव्वज़त्तलाक़स्सलासा...: 5259; सहीह मुस्लिम : 1492; अबूदाऊद :

2247; इब्ने माजा : 2066; इब्ने हिब्बान : 4285) और रिवायत में है कि "यह औरत हामिला थी और उनके शोहर ने उससे इंकार किया कि वह हमल उनसे हो। इसलिए यह बच्चा अपनी माँ की तरफ़ मंसूब होता रहा फिर सुन्नत तरीक़ा यूँ जारी हुआ कि यह अपनी माँ का वारिस होगा और माँ इसकी वारिस होगी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब (अल्ख़ामिसतु अन्ना लअनतल्लाहि अलैहि इन काना मिनल काज़िबीन) : 4746; सहीह मुस्लिम : 1492; अबूदाऊद : 2245; इब्ने माजा : 2066; अहमद : 5/336; इब्ने हिब्बान : 4285) एक मुर्सल और ग़रीब हदीस में है कि "आपने हज़रत सिद्दीक़ और हज़रत उमर (रज़ि.) से पूछा कि अगर तुम्हारे यहाँ ऐसी वारदात हो तो क्या करोगे? दोनों ने कहा गर्दन उड़ा देंगे ऐसे वक़्त चश्मपोशी वही कर सकते हैं जो दय्यूस हों। इस पर यह आयतें उतरीं।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2237; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ व मुदल्लस व अन्अन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/74) एक रिवायत में है कि **"सबसे पहले लिआन मुसलमानों में हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) और उनकी बीवी के बीच हुआ था, आख़िर तक।"**

***

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُو بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ ۚ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم ۖ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١﴾

तर्जुमा : "जो लोग यह बहुत बड़ा तूफ़ान बाँध लाए हैं यह भी तुममें से ही एक गिरोह है। तुम उसे अपने लिये बुरा न समझो बल्कि यह तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है। हाँ! उनमें से हर एक शख़्स पर इतना गुनाह है जितना उसने कमाया है और उनमें से जिसने उसके बहुत बड़े हिस्से को सरअंजाम दिया है उसके लिए अज़ाब भी बहुत ही बड़ा है।" (11)

हज़रत आइशा (रज़ि.) की पाकीज़गी और फ़ज़ीलत (आ. 11) : इस आयत से लेकर दस आयतों तक उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई हैं जबकि मुनाफ़िक़ीन ने आप पर बोहतान बाँधा था जिस पर अल्लाह को बसबबे क़राबतदारी रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ैरत आई और यह आयतें नाज़िल कीं ताकि रसूलुल्लाह (ﷺ) की आबरू पर हर्फ़ न आए। उन बोहतानबाज़ों की एक पार्टी थी। उस लअनती काम में सबसे पेश पेश अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल था जो तमाम मुनाफ़िक़ों का सरदार था। उसी बेईमान ने एक एक के कान में बना बनाकर और मसाला चढ़ा चढ़ाकर यह बातें ख़ूब गढ़ गढ़कर पहुँचाई थी। यहाँ तक कि कुछ मुसलमानों की ज़ुबान भी हिलने लगी थी और खुसर फुसर क़रीब क़रीब महीने भर तक चलती रही। यहाँ तक कि क़ुरआने करीम की आयतें नाज़िल हुईं। इस वाक़िया का पूरा बयान सही हदीसों में मौजूद है। हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) की आदते मुबारका थी कि सफ़र में

जाने के वक़्त आप अपनी बीवियों के नाम क़ुरआ डालते और जिसका नाम निकलता उसे अपने साथ ले जाते। चुनाँचे एक ग़ज़्वे के मौक़े पर मेरा नाम निकला। मैं आपके साथ चली, यह वाक़िया पर्दे की आयतें उतरने के बाद का है। मैं अपने होदज में बैठी रहती और जब क़ाफ़िला कहीं उतरता तो मेरा होदज वापिस उतार लिया जाता मैं उसी में बैठी रहती। जब क़ाफ़िला कहीं चलता यूँ ही होदज रख दिया जाता। हम गए हुज़ूर (ﷺ) ग़ज़्वे से फ़ारिग़ हुए, वापिस लौट रहे थे मदीने के क़रीब आ गए, रात को चलने की आवाज़ लगाई गई। मैं क़ज़ाए हाजत के लिए निकली और लश्कर के पड़ाव से दूर जाकर मैंने क़ज़ाए हाजत की फिर वापिस लौटी। लश्करगाह के क़रीब आकर मैं ने अपने गले को टटोला तो हार न पाया मैं वापिस उसके ढूँढने के लिए चली और तलाश करती रही। यहाँ यह हुआ कि लश्कर ने कूच कर दिया। जो लोग मेरा होदज उठाते थे उन्होंने यह समझकर कि मैं हस्बे आदत अंदर ही हूँ, होदज उठाकर ऊपर रख दिया और चल पड़े। यह भी याद रहे कि उस वक़्त तक औरतें न कुछ ऐसा खाती पीती थीं न वह भारी बदन की बोझल थीं। तो मेरे होदज के उठाने वालों को मेरे होने न होने का मुत्लक़ पता न चला। और मैं उस वक़्त अवाइले उम्र की ही तो थी। अल्ग़र्ज़ बहुत देर के बाद मुझे मेरा हार मिला यहाँ जो मैं पहुँची तो किसी आदमी का नामो निशान भी न था न कोई पुकारने वाला न जवाब देने वाला। मैं अपने निशान के मुताबिक़ वहीं पहुँची जहाँ हमारा ऊँट बिठाया गया था और वहीं इंतिज़ार में बैठ गई कि जब आगे चलकर मेरे न होने की ख़बर पाएँगे तो मुझे तलाश करने के लिए यहीं आएंगे, मुझे बैठे बैठे नींद आ गई। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत सफ़्वान बिन मुअत्तल (रज़ि.) जो लश्कर के पीछे रहे थे और पिछली रात को चले थे सुबह की चाँदनी में यहाँ पहुँच गए। एक सोते हुए आदमी को देखकर ख़्याल आना ही था ग़ौर से देखा तो चूँकि पर्दे के हुक्म से पहले वह मुझे देखे हुए थे, देखते ही पहचान गए और बाआवाज़े बलंद उनकी ज़ुबान से (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन) निकला। उनकी आवाज़ सुनते ही मेरी आँख खुल गई और मैं अपनी चादर से अपना मुँह ढाँपकर संभल बैठी। उन्होंने झठ से अपने ऊँट को बिठाया और उसकी टाँग पर अपना पैर रखा। मैं उठी और ऊँट पर सवार हो गई। उन्होंने ऊँट को खड़ा किया और भगाते हुए ले चले। क़सम अल्लाह की न वह मुझसे कुछ बोले, न मैंने उनसे कोई बात की, न सिवाय (इन्ना लिल्लाह) के मैंने उनके मुँह से कोई कलिमा सुना। दोपहर के क़रीब हम अपने क़ाफ़िले से मिल गए। बस हलाक होने वालों इतनी सी बात का बतंगड़ बना लिया। उनका सबसे बड़ा और बढ़ बढ़कर बातें बनाने वाला अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल था। मदीने आते ही मैं बीमार पड़ गई और महीने भर तक बीमारी में घर में रही, न मैंने कुछ सुना, न किसी ने मुझसे कुछ कहा, जो कुछ गुल ग़पाड़ा लोगों में हो रहा था उससे सिर्फ़ बेख़बर थी अल्बत्ता मेरे जी में ख़्याल बसाऔक़ात गुज़रता था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की महर व मुहब्बत में कमी की क्या वजह है? बीमारी में आम तौर पर जो शफ़क़त हुज़ूर (ﷺ) को मेरे साथ होती थी उस बीमारी में वह बात न पाती थी इसलिए मुझे रंज तो बहुत था मगर कोई वजह मालूम न थी। पस हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाते सलाम करते और पूछते तबियत कैसी है? और कोई बात न करते इससे मुझे बड़ा सदमा होता मगर बोहतान बाज़ों की तोहमत से मैं बिलकुल ग़ाफ़िल थी।

अब सुनिए! उस वक़्त तक घरों में पाख़ाने बने हुए न थे और अरब की पुरानी आदत के मुताबिक़

हम लोग मैदान में क़ज़ाए हाजत के लिए जाया करती थीं, औरतें उमूमन रात को जाया करती थीं घरों में पाख़ाने बनाने से आम तौर पर नफ़रत थी। हस्बे आदत मैं उम्मे मिस्तह (रज़ि.) बिन्ते अबी रहम बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ़ के साथ क़ज़ाए हाजत के लिए चली, उस वक़्त मैं बहुत ही कमज़ोर हो गई थी। यह उम्मे मिस्तह (रज़ि.) मेरे वालिद साहब की ख़ाला थीं उनकी वालिदा सख़रा बिन आमिर की लड़की थीं उनके लड़के का नाम मिस्तह बिन असासा बिन अब्बाद बिन अब्दुल मुत्तलिब था। जब हम वापिस आने लगे तो हज़रत उम्मे मिस्तह का पैर चादर के दामन में उलझा और बेसाख़्ता उनके मुँह से निकल गया कि मिस्तह ग़ारत हो। मुझे बहुत बुरा लगा और मैंने कहा, तुमने बहुत बुरा कलिमा बोला तौबा करो तुम उसे गाली देती हो जिसने जंगे बद्र में शिर्कत की। उस वक़्त उम्मे मिस्तह (रज़ि.) ने कहा भोली बीवी आपको क्या मालूम? मैंने कहा क्या बात है? उन्होंने फ़र्माया वह भी उन लोगों में है जो आपको बदनाम करते फिरते हैं। मुझे सख़्त हैरत हुई मैं उनके सर हो गई कि कम अज़्कम मुझसे सारा वाक़िया तो कहो। अब उन्होंने बोहतानबाज़ लोगों की तमाम कारसतानियाँ मुझे सुनाईं। मेरे तो हाथों के तोते उड़ गए, रंजो ग़म का पहाड़ मुझ पर टूट पड़ा, मारे सदमे के मैं तो और बीमार हो गई। बीमार तो पहले से ही थी उस ख़बर ने तो निढाल कर दिया ज्यों त्यों करके घर पहुँची। अब सिर्फ़ यह ख़्याल था कि मैं अपने मायके जाकर अच्छी तरह मालूम तो कर लूँ कि क्या वाक़ेई मेरी निस्बत ऐसी अफ़वाह फैलाई गई है और क्या क्या मशहूर किया जा रहा है? इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास आए और सलाम किया और पूछा, क्या हाल है? मैंने कहा अगर आप इजाज़त दें तो अपने वालिद साहब के यहाँ हो आऊँ। आपने इजाज़त दे दी। मैं यहाँ आई अपनी वालिदा से पूछा कि अम्माजान! लोगों में क्या बातें फैल रही हैं? उन्होंने फ़र्माया, बेटी! यह तो निहायत मामूली बात है तुम इतना अपना दिल भारी न करो। किसी शख़्स की अच्छी बीवी जो उसे महबूब हो और उसकी सौकनें भी हों वहाँ ऐसी बातों का खड़ा होना तो लाज़मी अम्र है। मैंने कहा, सुब्हानल्लाह! क्या वाक़ेई लोग मेरी निस्बत ऐसी अफ़वाहें उड़ा रहे हैं? अब तो मुझे रंजो ग़म ने इस क़द्र घेरा कि बयान से बाहर है, उस वक़्त से जो रोना शुरू हुआ, अल्लाह की क़सम! एक दम भर के लिए मेरे आँसू नहीं थमे। मैं सर डालकर रोती रही, किसका खाना पीना, किसका सोना बैठना, कहाँ की बातचीत, ग़म व रंज और रोना है और मैं हूँ। सारी रात उसी हालत में गुज़री कि आँसू की लड़ी न थमी। दिन को भी यही हाल रहा। हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को और हज़रत उसामा बिन ज़ेद (रज़ि.) को बुलवाया। वह्यी में देर हुई। अल्लाह तआला की तरफ़ से आप (ﷺ) को कोई बात मालूम न हुई थी इसलिए आप (ﷺ) ने उन दोनों हज़रात से मश्वरा किया कि आप मुझे अलग कर दें या क्या? हज़रत उसामा (रज़ि.) ने तो साफ़ कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम आपके अहल पर कोई बुराई नहीं जानते। हमारे दिल उनकी मुहब्बत इज़्ज़त और शराफ़त की गवाही देने के लिए हाज़िर हैं। हाँ! हज़रत अली (रज़ि.) ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह की तरफ़ से आप पर कोई तंगी नहीं औरतें उनके सिवा भी बहुत हैं अगर आप घर की ख़ादिमा से पूछें तो आप (ﷺ) को सही वाक़िया मालूम हो सकता है। आप (ﷺ) ने उसी वक़्त घर की ख़ादिमा हज़रत बरीरा (रज़ि.) को बुलवाया और उनसे फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.) की कोई बात शक व शुब्हा वाली कभी भी देखी हो तो बतलाओ। बरीरा (रज़ि.) ने कहा, उस अल्लाह की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, मैंने उनसे

कोई बात कभी इस क़िस्म की नहीं देखी। हाँ! सिर्फ़ यह बात है कि कम उम्री की वजह से ऐसा हो जाता है कि कभी कभी गुँधा हुआ आटा यूँ ही रखा रहता है और सो जाती थीं ता बकरी आकर खा जाती थी उसके सिवा मैंने उनका कोई क़सूर कभी नहीं देखा।

चूँकि कोई सबूत इस वाक़िया का न मिला इसलिए उसी दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर खड़े हुए और मज्मआ से मुख़ातिब होकर फ़र्माया "कौन है जो मुझे उस शख़्स की ईज़ाओं से बचाए जिसने मुझे ईज़ाएँ पहुँचाते पहुँचाते अब तो मेरी घरवालियों में भी मुझे ईज़ाएँ पहुँचानी शुरू कर दी हैं। अल्लाह की क़सम! मैं जहाँ तक जानता हूँ मुझे अपनी घरवालियों में सिवाय भलाई के कोई चीज़ मालूम नहीं। जिस शख़्स का नाम यह लोग ले रहे हैं मेरी दानिस्त (जानकारी) में तो उसके बारे में भी सिवाय भलाई के और कुछ नहीं वह मेरे साथ ही घर में आता था।" यह सुनते ही हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) खड़े हो गए और फ़र्माने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं मौजूद हूँ अगर वह क़बील-ए-औस का शख़्स है तो अभी हम उसकी गर्दन तन से अलग करते हैं और अगर वह हमारे ख़ज़रज भाईयों से है तो भी आप जो हुक्म दें हमें उसकी तामील में कोई उज़्र न होगा। यह सुनकर हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) खड़े हो गए यह क़बीला ख़ज़रज के सरदार थे। थे तो यह बड़े नेकबख़्त मगर हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) का उस वक़्त की बातचीत से उन्हें अपने क़बीले की हमिय्यत आ गई और उनकी तरफ़दारी करते हुए हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) से कहने लगे, न तो तू उसे क़त्ल करेगा, न उसके क़त्ल पर तू क़ादिर है अगर वह तेरे क़बीले का होता तो तू उसका क़त्ल किया जाना कभी पसंद न करता। यह सुनकर हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) खड़े हो गए। यह हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के भतीजे होते थे। कहने लगे, ऐ सअद बिन उबादा! तुम झूठ कहते हो, हम उसे ज़रूर मार डालेंगे आप मुनाफ़िक़ आदमी हैं कि मुनाफ़िक़ों की तरफ़दारी कर रहे हैं। अब उनकी तरफ़ से उनका क़बीला और इनकी तरफ़ से इनका क़बीला एक दूसरे के मुक़ाबले पर आ गया और क़रीब था कि औस व ख़ज़रज के यह दोनों क़बीले आपस में लड़ पड़ें। हुज़ूर (ﷺ) ने मिम्बर पर से ही उन्हें समझाना और चुप कराना शुरू किया यहाँ तक कि दोनों तरफ़ ख़ामोशी छा गयी। हुज़ूर (ﷺ) भी चुप हो गए। यह तो था वहाँ का वाक़िया मेरा हाल यह था कि यह सारा दिन भी रोने में ही गुज़रा। मेरे इस रोने ने मेरे माँ बाप की भी सिट्टी गुम कर दी थी वह समझ बैठे थे कि यह रोना मेरा कलेजा फाड़ देगा। दोनों हैरतज़दा मग़मूम बैठे हुए थे और मुझे तो रोने के सिवा और कोई काम ही न था। अंसार की एक औरत आई और वह भी मेरे साथ रोने लगीं हम यूँ ही बैठे हुए थे जो अचानक रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और सलाम करके मेरे पास बैठ गए। क़सम अल्लाह की जबसे यह बोहतानबाज़ी हुई थी आज तक रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास कभी नहीं बैठे थे। महीने भर गुज़र गया था कि हुज़ूर (ﷺ) की यही हालत थी कोई वह्यी नहीं आई थी कि फ़ैसला हो सके। आपने बैठते ही पहले तो तशह्हुद पढ़ा फिर अम्माबअद कहकर फ़र्माया कि, "आइशा! तेरी निस्बत मुझे यह ख़बर पहुँची है अगर तू वाक़ेई पाकदामन है तो अल्लाह तआला तेरी पाकीज़गी ज़ाहिर कर देगा और अगर फ़िल हक़ीक़त तू किसी गुनाह में आलूद हो गई है तो अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार कर और तौबा कर। बंदा जब गुनाह करके अपने गुनाह के इक़रार के साथ अल्लाह तआला की

तरफ़ झुकता है और उससे माफ़ी माँगता है तो अल्लाह तआला उसे बख़्श देता है। आप इतना फ़र्माकर ख़ामोश हो गए, यह सुनते ही मेरा रोना धोना सब जाता रहा, आँसू थम गए यहाँ तक कि मैं आँसू का एक क़तरा भी नहीं पाती थी। मैंने पहले तो अपने वालिद से दरख़्वास्त की कि मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह (ﷺ) को आप ही जवाब दीजिए। लेकिन उन्होंने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मेरी समझ में नहीं आता कि मैं हुज़ूर (ﷺ) को क्या जवाब दूँ? अब मैंने अपनी वालिदा की तरफ़ देखा और उनसे कहा कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) को जवाब दीजिए। लेकिन उन्होंने भी यही कहा कि मैं नहीं समझ सकती कि मैं क्या जवाब दूँ? आख़िर मैंने ख़ुद ही जवाब देना शुरू किया। मेरी उम्र कुछ ऐसी बड़ी तो न थी और न मुझे ज़्यादा कुरआन हिफ़्ज़ था। मैंने कहा, आप सबने एक बात सुनी उसे अपने दिल में बिठा ली और गोया सच समझ ली अब अगर मैं कहूँगी कि मैं इससे बिलकुल बरी हूँ और अल्लाह ख़ूब जानता है कि वाक़ेई मैं इससे बिलकुल बरी हूँ लेकिन तुम लोग नहीं मानने के। हाँ! अगर मैं किसी अम्र का इक़रार कर लूँ हालाँकि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मैं बिलकुल बेगुनाह हूँ तो तुम अभी मान लोगे। मेरी और तुम्हारी मिसाल तो बिलकुल हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) के वालिद का यह क़ौल है (فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ) (12/यूसुफ़ : 18) पस सब्र ही अच्छा है जिसमें शिकायत का नाम ही न हो और तुम जो बातें बनाते हो उनमें अल्लाह तआला ही मेरी मदद करेगा। इतना कहकर मैंने करवट फेर ली और अपने बिस्तर पर लेट गई। क़सम अल्लाह की मुझे यक़ीन था कि चूँकि मैं पाक हूँ अल्लाह तआला मेरी बरा'त अपने रसूल (ﷺ) को ज़रूर मालूम करा देगा लेकिन यह तो मेरे गुमान में भी न था कि मेरे बारे में कुरआन की आयतें नाज़िल हों। मैं अपने आपको इससे बहुत कमतर जानती थी कि मेरे बारे में कलामुल्लाह की आयतें उतरें। हाँ! मुझे ज़्यादा से ज़्यादा यह ख़्याल होता था कि मुम्किन है ख़्वाब में अल्लाह तआला हुज़ूर (ﷺ) को मेरी बरा'त दिखा दे। अल्लाह की क़सम! अभी तो न रसूल (ﷺ) अपनी जगह से हटे थे और न घर वालों में से कोई घर के बाहर निकला था कि हुज़ूर (ﷺ) पर वह्यी उतरनी शुरू हो गयी और चेहरे पर वही निशान ज़ाहिर हुए जो वह्यी के वक़्त होते थे और पेशानी मुबारक से पसीने की पाक बूँदें टपकने लगीं। सख़्त सर्दी में भी वह्यी के नुज़ूल की यही कैफ़ियत हुआ करती थी। जब वह्यी उतर चुकी तो हमने देखा कि हुज़ूर (ﷺ) का चेहरा हँसी से शगुफ़्ता हो रहा है, सबसे पहले आप (ﷺ) ने मेरी ओर देखकर फ़र्माया कि, आइशा! ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआला ने तुम्हारी बरा'त नाज़िल कर दी। उसी वक़्त मेरी वालिदा ने फ़र्माया, बच्ची! हुज़ूर (ﷺ) के सामने खड़ी हो जा। मैंने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम! न तो मैं आपके सामने खड़ी होऊँ और न सिवाय अल्लाह तआला के और किसी की तारीफ़ करूँ, उसी ने मेरी बरा'त और पाकीज़गी नाज़िल की है। पस (इन्नल्लज़ीना जाऊ बिल इफ़्क) से लेकर दस आयतों तक नाज़िल हुईं।

इन आयतों के उतरने के बाद और मेरी पाकदामनी साबित हो चुकने के बाद चूँकि उस शर्र के फैलाने में हज़रत मिस्तह बिन असासा भी शरीक थे और उन्हें मेरे वालिद साहब उनकी मोहताजी और उनकी क़राबतदारी की वजह से हमेशा कुछ देते रहते थे अब उन्होंने कहा, जब इस शख़्स ने मेरी बेटी पर तोहमत बाँधने में हिस्सा लिया तो अब मैं इसके साथ कुछ भी सलूक न करूँगा। इस पर आयत (وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا

الْفَضْلِ) (24/नूर : 22) नाज़िल हुई यानी तुममें से जो लोग बुज़ुर्गी और वुस्अत वाले हैं उन्हें न चाहिए कि क़राबतदारों और मिस्कीनों और अल्लाह तआला की राह के मुहाजिरों से सलूक न करने की क़सम खा बैठें। क्या तुम नहीं चाहते कि वह बख़्शिश वाला और मेहरबानी वाला अल्लाह तुम्हें बख़्श दे? उसी वक़्त उसके जवाब में सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने फ़र्माया, क़सम अल्लाह की मैं तो बख़्शिश का तालिब हूँ। चुनाँचे उसी वक़्त से हज़रत मिस्तह (रज़ि.) का वज़ीफ़ा जारी कर दिया और फ़र्मा दिया कि अल्लाह की क़सम! अब उम्र भर तक इसमें कमी या कोताही न करूँगा। मेरे इस वाक़िया के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत ज़ेनब बिन्ते जहश (रज़ि.) से भी जो आपकी बीवी साहिबा थीं पूछा था यही बीवी साहिबा थीं जो हुज़ूर (ﷺ) की तमाम बीवियों में मेरे मुक़ाबले की थीं लेकिन यह अपनी परहेज़गारी और दीनदारी की वजह से साफ़ बच गईं और जवाब दिया कि हुज़ूर (ﷺ)! मैं तो सिवाय बेहतरी के आइशा (रज़ि.) के बारे में और कुछ नहीं जानती मैं अपने कानों को और अपनी नज़रों को महफ़ूज़ रखती हूँ। भले उन्हें उनकी बहन हमना बिन्ते जहश ने बहुत कुछ बहलावे भी दिये बल्कि लड़ पड़ीं लेकिन उन्होंने अपनी ज़ुबान से मेरी बुराई का कोई कलिमा नहीं निकाला। हाँ! उनकी बहन ने तो ज़ुबान खोल दी और मेरे बारे में हलाक होने वालों में शामिल हो गईं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीसुल इफ़्क : 4141; सहीह मुस्लिम : 2770; अहमद : 6/194) एक सनद से यह भी मरवी है कि ''आपने अपने उस ख़ुत्बे में यह भी फ़र्माया था कि जिस शख़्स की तरफ़ मंसूब करते हैं वह सफ़र हज़र में मेरे साथ रहा, मेरी अदमे मौजूदगी में कभी मेरे घर नहीं आया। उसमें है कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) के मुक़ाबले में जो साहब खड़े हुए, उन ही के क़बीले में उम्मे हस्सान थीं। उसमें यह भी है कि उसी ख़ुत्बे के दिन के बाद रात को मैं उम्मे मिस्तह के साथ निकली थीं। उसमें यह भी है कि एक मर्तबा यह फिसलीं और उन्होंने अपने बेटे मिस्तह को कोसा मैंने मना किया फिर फिसलीं फिर कोसा मैंने फिर रोका। फिर उलझीं फिर कोसा तो मैंने उन्हें डाँटना शुरू किया। उसमें है कि उसी वक़्त से मुझे बुख़ार चढ़ आया। उसमें है कि मेरी वालिदा के घर पहुँचाने के लिए मेरे साथ हुज़ूर (ﷺ) ने एक गुलाम कर दिया था। मैं जब वहाँ पहुँची तो मेरे वालिद ऊपर के घर में तिलावते क़ुरआन में मशग़ूल थे और वालिदा नीचे के मकान में थीं। मुझे देखते ही मेरी वालिदा ने पूछा, आज कैसे आना हुआ? तो मैंने तमाम वाक़िया कह सुनाया। लेकिन मैंने देखा कि उन्हें यह बात न कोई अनोखी बात मालूम हुई न इतना सदमा और रंज ुआ, जिसकी तवक़्क़ो मुझे थी, उसमें है कि मैंने वालिदा से पूछा कि क्या मेरे वालिद साहब को भी इसका इल्म है? उन्होंने कहा, हाँ! मैंने कहा और रसूलुल्लाह (ﷺ) तक भी यह बात पहुँची है? जवाब दिया कि हाँ। अब तो मुझे फूट फूटकर रोना आ गया यहाँ तक कि मेरी आवाज़ मेरे वालिद साहब के कान में भी जा पहुँची वह जल्दी से नीचे आए, पूछा कि क्या बात है? मेरी वालिदा ने कहा कि इन्हें इस तोहमत का इल्म हो गया है जो इन पर लगाई गई है। यह सुनकर और मेरी हालत देखकर मेरे वालिद साहब की आँखों में भी आँसू भर आए और मुझसे कहने लगे, बेटी! मैं तुम्हें क़सम देता हूँ कि अभी ही अपने घर को लौट जाओ। चुनाँचे मैं वापिस चली आयी। यहाँ मेरे पीछे घर की ख़ादिमा से भी मेरी बाबत रसूलुल्लाह (ﷺ) ने और लोगों की मौजूदगी में पूछा था जिस पर उसने जवाब दिया कि मैं आइशा में कोई बुराई नहीं देखती सिवाय इसके कि वह आटा गूँधा हुआ छोड़कर उठ खड़ी होती हैं बेख़बरी से सो जाती हैं बसा औक़ात

आटा बकरियाँ खा जाती हैं। बल्कि इसे कुछ लोगों ने बहुत डाँटा डपटा भी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने सच सच बात जो हो बता दे उस पर बहुत सख़्ती की लेकिन उसने कहा अल्लाह की क़सम! एक सुनार ख़ालिस सोने में जिस तरह कोई ऐब किसी तरह भी तपा तपाकर भी बता नहीं सकता उसी तरह मैं सिद्दीक़ा पर कोई उँगली टिका नहीं सकती। जब उस शख़्स को यह ख़बर मिली जिसे बदनाम किया जा रहा था तो उसने कहा, क़सम अल्लाह की! मैंने तो आज तक किसी औरत का बाज़ू कभी खुला हुआ नहीं देखा। आख़िरकार यह अल्लाह की राह में शहीद हुए। इसमें है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास असर की नमाज़ के बाद तशरीफ़ लाए थे, उस वक़्त मेरी माँ और मेरे वालिद साहब दायें बायें बैठे हुए थे और वह अंसारिया औरत जो आई थीं वह दरवाज़े पर बैठी थीं। उसमें है कि जब हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे नसीहत शुरू की और मुझसे पूछा तो मैंने कहा, हाय! कैसी बेशर्मी की बात है उस औरत का भी तो ख़्याल नहीं? उसमें यह भी है कि मैंने भी अल्लाह की हम्दो सना के बाद जवाब दिया था। उसमें यह भी है कि मैंने उस वक्त हर चंद हज़रत यअक़ूब (عليه السلام) का नाम याद किया लेकिन अल्लाह की क़सम! वह ज़ुबान पर न आया इसलिए मैंने अबू यूसुफ़ कह दिया। उसमें है कि जब हुज़ूर (ﷺ) ने वह्ी के उतरने के बाद मुझे ख़ुशख़बरी सुनाई, अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मेरा ग़म भरा गुस्सा बहुत ही बढ़ गया था, मैंने अपने माँ बाप से कहा था कि मैं इस मामले में तुम्हारी भी शुक्रगुज़ार नहीं। तुम सबने एक बात सुनी लेकिन न तुमने इंकार किया न तुम्हें ज़रा ग़ैरत आई। उसमें है कि इस क़िस्से को ज़ुबान पर लाने वाले हमना, मिस्तह, हस्सान बिन साबित और अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल थे, यह सबका सरदार था और यही ज़्यादातर लगाता बुझाता था।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नूर बाब (इन्नल्लज़ीना युहिब्बूना अन तशीअल फ़ाहिशतु फ़िल्लज़ीना आमनू...) : 4757) और हदीस में है कि ''मेरे उज़्र की यह आयतें उतरने के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो मर्दों और एक औरत को तोहमत की हद लगाई यानी हस्सान बिन साबित, मिस्तह बिन असासा और हमना बिन्ते जहश को।'' (अबूदाऊद, किताबुल हुदूद, बाब फ़ी हद्दिल क़ाज़िफ़ : 4474; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 3181; इब्ने माजा : 2567; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7351; अहमद : 6/35; बैहक़ी : 8/250) एक रिवायत में है कि, जब माई आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) को अपने ऊपर तोहमत लगने का और उसका इल्म आपके वालिद को और हुज़ूर (ﷺ) को हो जाने का वाक़िया मालूम हुआ तो आप बेहोश होकर गिर पड़ीं। जब ज़रा होश में आईं तो सारा जिस्म भभक रहा था और ज़ोर का बुख़ार चढ़ा हुआ था और काँप रही थीं। आपकी वालिदा ने उसी वक़्त कम्बल ओढ़ाया और रसूलुल्लाह (ﷺ) आए पूछा यह क्या हाल है? मैंने कहा, जाड़े से बुख़ार चढ़ा है। आपने फ़र्माया, शायद इस ख़बर को सुनकर यह हाल हो गया होगा? जब मेरे उज़्र की आयतें उतरीं तो मैंने उन्हें सुनकर कहा कि यह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से है न कि आप (ﷺ) के। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने फ़र्माया, तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस तरह कहती हो? सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया हाँ!'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीसुल इफ़्क : 4143; अहमद : 6/367, 368; मुस्नद तयालिसी : 1665; इब्ने हिब्बान : 7103)

अब आयतों का मतलब सुनिए जो लोग झूठ बोहतान गढ़ी हुई बात ले आए और हैं भी वही कई

एक। उसे तुम ऐ आले अबीबक्र! अपने लिए बुरा न समझो बल्कि अंजाम के लिहाज़ से दीन व दुनिया में वह तुम्हारे लिए भला है। दुनिया में तुम्हारी सदाक़त साबित होगी आख़िरत में बुलंद मर्तबे मिलेंगे। हज़रत आइशा (रज़ि.) की बरा'त क़ुरआने करीम में नाज़िल हो गई जिसके आसपास भी बातिल नहीं आ सकता। यही वजह थी कि जब हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) माई साहिबा (रज़ि.) के पास उनके आख़िरी वक़्त आये तो फ़र्माने लगे, उम्मुल मोमिनीन! आप ख़ुश हो जाइए कि आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की बीवी हैं और हुज़ूर (ﷺ) मुहब्बत से पेश आते रहे और हुज़ूर (ﷺ) ने आपके सिवा किसी और कुँवारी से निकाह नहीं किया और आपकी बरा'त आसमान से नाज़िल हुई। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नूर बाब (वलौला समिअ़तुमूहु कुल्तुम मा यकूनु लना अन् नतकल्लमा बिहाज़ा...) : 4753) एक बार हज़रत आइशा और हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) अपने औसाफ़े हमीदा का ज़िक्र करने लगीं तो हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ने फ़र्माया, मेरा निकाह आसमान से उतरा। और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, मेरी पाकीज़गी की गवाही क़ुरआने करीम में आसमान से उतरी जबकि सफ़्वान बिन मुअ़त्तल (रज़ि .) मुझे अपनी सवारी पर बिठा लाए थे। हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ने पूछा यह तो बतलाओ जब तुम उस ऊँट पर सवार हुई थी तो तुमने क्या कलिमात कहे थे? आपने फ़र्माया (हस्बियल्लाहु व निअ़मल वकील) उस पर वह बोल उठीं कि तुमने मोमिनों का कलिमा पढ़ा था। फिर फ़र्माया जिस जिसने पाकदामन सिद्दीक़ा (रज़ि.) पर तोहमत लगाई है हर एक को बड़ा अ़ज़ाब होगा और जिसने इसकी शुरुआत की है जो इसे इधर उधर फैलाता रहा है उसके लिए सख़्त तरीन अ़ज़ाब हैं। इससे मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मल्ऊन है। ठीक क़ौल यही है भले किसी किसी ने कहा कि मुराद इससे हस्सान हैं लेकिन यह क़ौल ठीक नहीं। चूँकि यह क़ौल भी है इसलिए हमने इसे बयान कर दिया वरना इसके बयान में कोई फ़ायदा नहीं क्योंकि हज़रत हस्सान (रज़ि.) बड़े बुज़ुर्ग सहाबा (रज़ि.) में से हैं उनकी बहुत सी फ़ज़ीलतें और बुज़ुर्गियाँ अहादीस में मौजूद हैं। यही थे जो काफ़िर शायरों की हिजू के शेअ़रों का अल्लाह के नबी (ﷺ) की तरफ़ से जवाब देते थे। उन ही से हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुम कुफ़्फ़ार की मज़म्मत बयान करो जिब्रईल (عليه السلام) [illegible] साथ हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब हिजाउल मुश्रिकीन : 6153; सहीह मुस्लिम : 2486) हज़रत मसरूक़ (रह.) का बयान है कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास था जो हज़रत हस्सान बिन साबित (रज़ि.) आए। हज़रत आइशा (रज़ि.) उन्हें इज़्ज़त के साथ बिठाया हुक्म दिया कि इनके लिए गद्दी बिछा दो। जब वह वापिस चले गए तो मैंने कहा कि आप इन्हें क्यूँ आने देती हैं? इनके आने से क्या फ़ायदा? अल्लाह तआला तो फ़र्माता है कि इनमें से जो तोहमत का वाली है उसके लिए बड़ा अ़ज़ाब है। तो माई आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अँधापे से बड़ा अ़ज़ाब और क्या होगा। यह नाबीना हो गए थे तो फ़र्माया शायद यही अ़ज़ाबे अ़ज़ीम हो। फिर फ़र्माया तुम्हें नहीं ख़बर, यही तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से काफ़िरों के हिजू वाले अश्आर का जवाब देने पर मुक़र्रर थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीसुल इफ़्क : 4146; सहीह मुस्लिम : 2488) एक रिवायत में है कि हज़रत हस्सान (रज़ि.) ने उस वक़्त हज़रत आइशा (रज़ि.) की मदह में शेअ़र पढ़ा था कि आप पाकदामन भोली तमाम ओछे कामों से और ग़ीबत और बुराई से परहेज़ करने वाली हैं तो आपने फ़र्माया तुम तो ऐसे न थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नूर बाब (व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल आयात, वल्लाहु अ़लीमुन हकीम) : 4756) हज़रत आइशा

(रज़ि.) फ़र्माती हैं मुझे हस्सान (रज़ि.) के शेअरों से ज़्यादा अच्छे अश्आर नज़र नहीं आते और मैं जब कभी उन शेअरों को पढ़ती हूँ तो मेरे दिल में ख़्याल आता है कि हस्सान जन्नती हैं। वह अबू सुफ़्यान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब को ख़िताब करके अपने शेअरों में फ़र्माते हैं तूने मुहम्मद (ﷺ) की हिजू की है जिसका मैं जवाब देता हूँ और उसका बदला अल्लाह तआला से पाऊँगा। मेरे बाप दादा और मेरी इज़्ज़त आबरू सब मुहम्मद (ﷺ) पर कुर्बान है। मैं इन सबको फ़ना करके भी तुम्हारी बदज़ुबानियों के मुक़ाबले से हट नहीं सकता। तुझ जैसा शख़्स जो मेरे नबी (ﷺ) के कफ़े पा (पैर) की हमसारी भी नहीं कर सकता, हुज़ूर (ﷺ) की हिजू करे? याद रखो कि तुम जैसे बुरे हुज़ूर (ﷺ) जैसे नेक पर फ़िदा हैं। जब तुमने हुज़ूर (ﷺ) की हिजू की है तो अब मेरी ज़ुबान से जो तेज़ धारदार बेऐब तलवार से भी तेज़ है बचकर तुम कहाँ जाओगे? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) से पूछा गया कि क्या यह लग्व कलाम नहीं? आपने फ़र्माया, हर्गिज़ नहीं! लग्व कलाम तो शायरों की वह बकवास है जो औरतों वग़ैरह के बारे में होती है। आपसे पूछा गया कि क्या क़ुरआन में नहीं कि इस तोहमत में बड़ा हिस्सा लेने वाले के लिए बड़ा अज़ाब है? फ़र्माया, हाँ! लेकिन क्या जो अज़ाब इन्हें हुआ बड़ा नहीं? आँखें इनकी जाती रहीं तलवार इन पर उठी, वह तो कहिए हज़रत सफ़्वान (रज़ि.) रुक गए वरना अजब नहीं कि अपनी निस्बत यह बात सुनकर इन्हें क़त्ल ही कर डालते।''

***

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ
مُّبِيْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ
اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾

तर्जुमा : ''इसे सुनते ही मोमिन मर्दों औरतों ने अपने हक़ में नेकगुमानी क्यूँ न की? और क्यूँ न कह दिया कि यह तो खुल्लम खुल्ला सरीह बोहतान है। (12) वह इस बात पर चार गवाह क्यूँ न लाए? और जब गवाह नहीं लाए तो यह बोहतानबाज़ लोग यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक महज़ झूठे हैं।'' (13)

सिद्दीक़ा (रज़ि.) की पाकदामनी का आसमानी ऐलान (आ. 12, 13) : इन आयतों में अल्लाह तबारक व तआला मोमिनों को अदब सिखाता है कि उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) की शान में जो कलिमात मुँह से निकाले वह उनकी शायाने शान न थे बल्कि उन्हें चाहिए था कि यह कलाम सुनते ही अपनी शरई माँ के साथ कम अज़्कम वह ख़्याल करते जो अपने नफ़्सों के साथ करते जबकि वह अपने आपको भी ऐसे काम के लायक़ न पाते तो शाने उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) को इससे बहुत आला और बाला जानते। एक वाक़िया भी बिलकुल इसी तरह का हुआ था। हज़रत अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद अंसारी (रज़ि.) से उनकी बीवी

साहिबा उम्मे अय्यूब (रज़ि.) ने कहा कि क्या आपने वह भी सुना जो हज़रत आइशा (रज़ि.) की निस्बत कहा जा रहा है? आपने फ़र्माया हाँ! और यह यक़ीनन झूठ है उम्मे अय्यूब! तुम ही बतलाओ क्या तुम कभी ऐसा कर सकती हो? उन्हों ने कहा, नऊज़ुबिल्लाह! नामुम्किन। आपने फ़र्माया पस हज़रत आइशा (रज़ि.) तो तुमसे कहीं अफ़ज़ल और बेहतर हैं। पस जब आयतें उतरीं तो पहले तो बोहतानबाज़ों का ज़िक्र हुआ यानी हज़रत हस्सान (रज़ि.) और उनके साथियों का फिर इन आयतों में ज़िक्र हुआ हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) और उनकी बीवी साहिबा (रज़ि.) की उस बातचीत का जो ऊपर ज़िक्र हुई। यह भी एक क़ौल है कि यह मक़ूला हज़रत उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) का था। अल्ग़र्ज़ मोमिनों को साफ़ बातिन रहना चाहिए। और अच्छे ख़याल करने चाहिएँ बल्कि ज़ुबान से भी ऐसे वाक़िया की तर्दीद और तक्ज़ीब कर देनी चाहिए इसलिए कि जितना कुछ वाक़िया गुज़रा उसमें शक शुब्हा की गुंजाइश भी न थी। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) खुल्लम खुल्ला सवारी पर सवार दिन दोपहर को भरे लश्कर में पहुँचती हैं। ख़ुद पैग़म्बरे इलाही (ﷺ) मौजूद हैं अगर अल्लाह न करे अगर कोई ऐसी बात होती तो यह इस तरह खुले बंदों आम मज्मआ में न आते बल्कि ख़ुफ़िया और पोशीदा तौर पर शामिल हो जाते जो किसी को कानों कान ख़बर तक न पहुँचे। पस साफ़ ज़ाहिर है कि बोहतानबाज़ों की ज़ुबान ने जो फ़िक़रा गढ़ा वह महज़ झूठ बोहतान और इफ्तिरा था जिससे उन्होंने अपने ईमान और अपनी इज़्ज़त को ग़ारत किया फिर फ़र्माया कि उन बोहतानबाज़ों ने जो कुछ कहा अपनी सच्चाई पर चार गवाह वाक़िये के क्यूँ न पेश किये? और जबकि यह गवाह पेश न कर सकें तो शरअन अल्लाह तआला के नज़दीक वह झूठे हैं, फ़ासिक़ हैं, फ़ाजिर हैं।

***

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

तर्जुमा : "अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम तुम पर दुनिया और आख़िरत में न होता तो यक़ीनन तुमने जिस बात के चर्चे शुरू कर रखे थे उस बारे में तुम्हें बहुत बड़ा अज़ाब पहुँचता। (14) जबकि तुम उसे अपनी ज़ुबानों से नक़ल पर नक़ल करने लगे और अपने मुँह से वह बात निकालने लगे जिसकी तुम्हें कुछ ख़बर न थी भले तुम उसे हल्की बात समझते रहे लेकिन अल्लाह के नज़दीक वह बहुत बड़ी बात थी।" (15)

आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) की अज़्मत का बयान (आ. 14, 15) : फ़र्मान है कि ऐ वह लोगों! जिन्होंने सिद्दीक़ा (रज़ि.) की बाबत अपनी ज़ुबानों को बुरी हरकत दी अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्लो

करम तुम पर न होता कि वह दुनिया में तुम्हारी तौबा क़बूल कर ले और आख़िरत में तुम्हें तुम्हारे ईमान की वजह से माफ़ कर दे तो जिस बोहतान में तुमने अपनी ज़ुबानें हिलाईं उसमें तुम्हें बड़ा भारी अ़ज़ाब होता। यह आयत उन लोगों के हक़ में है जिनके दिलों में ईमान था लेकिन रवादरी में कुछ कह गए थे जैसे हज़रत मिस्तह़, हज़रत हस्सान, हज़रत हमना (रज़ि.)। लेकिन जिनके दिल ईमान से ख़ाली थे जो इस तूफ़ान के उठाने वाले थे जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरह मुनाफ़िक़ीन यह लोग इस हुक्म में नहीं। क्योंकि न उसके पास ईमान था न अ़मले सालेह़। यह भी याद रहे कि जिस बदी पर जो वईद है वह उसी वक़्त साबित होती है जब तौबा न हो और उसके मुक़ाबले में उस जैसी या उससे बड़ी नेकी न हो। जबकि तुम इस बात को फैला रहे थे उससे सुनकर उससे कही और उसने सुनकर दूसरे से कही। हज़रत आइशा (रज़ि.) की क़िराअत में (इज़ तल्क़ौनहू) है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीसुल इफ़्क : 4144) यानी जबकि तुम इस झूठ की इशाअ़त (पब्लिशिंग) कर रहे थे। पहली क़िराअत जुम्हूर की है और यह क़िराअत उनकी है जिन्हें इस आयत का ज़्यादा इल्म था और तुम वह बात ज़ुबान से निकालते थे जिसका तुम्हें इल्म न था। तुम भले इस कलाम को हल्का समझते रहे लेकिन दरअसल अल्लाह के नज़दीक वह बड़ा भारी कलाम था। किसी मुसलमान औरत की निस्बत ऐसी तोहमत जुर्मे अ़ज़ीम है। फिर अल्लाह के रसूल (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा (रज़ि.) के ऊपर ऐसा कलाम समझ लो कि कितना बड़ा कबीरा गुनाह हुआ? इसीलिए रब की ग़ैरत अपने नबी (ﷺ) की वजह से जोश में आई और अल्लाह तआ़ला ने वह़ी नाज़िल करके ख़ातिमुल अम्बिया सय्यदुल मुर्सलीन (ﷺ) की पाकदामन बीवी की पाकीज़गी साबित की। हर नबी की बीवी को अल्लाह तआ़ला ने उस बेहयाई से दूर रखा है पस कैसे मुम्किन था कि तमाम नबियों की बीवियों से अफ़ज़ल और उनकी सरदार तमाम नबियों से अफ़ज़ल और तमाम औलादे आदम के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) की बीवी इसमें आलूदा हों, हाशा व कल्ला। पस तुम भले इस कलाम को बेवक़अ़त समझो लेकिन हक़ीक़त इसके बरअक्स है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "इंसान कुछ मर्तबा अल्लाह की नाराज़गी का कोई कलिमा कह गुज़रता है जिसकी कोई वक़अ़त उसके नज़दीक नहीं होती लेकिन उसकी वजह से वह जहन्नम के इतने नीचे तब्क़े में पहुँच जाता है जितनी ज़मीन आसमान से है बल्कि उससे भी ज़्यादा नीचा होता है।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब हिफ़्ज़ुल्लिसान : 6477, 6478; सह़ीह़ मुस्लिम : 2988)

***

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ
﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

तर्जुमा : ''तुमने ऐसी बात को सुनते ही क्यूँ न कह दिया कि हमें ऐसी बात मुँह से निकालनी भी लायक़ नहीं। ऐ अल्लाह! तू पाक है यह तो बहुत बड़ा बोहतान है और तोहमत है। (16) अल्लाह तआला तुम्हें नसीहत कर रहा है कि फिर कभी भी ऐसा काम न करना अगर तुम सच्चे मोमिन हो। (17) अल्लाह तआला तुम्हारे सामने अपनी आयतें बयान कर रहा है और अल्लाह तो इल्म व ह़िक्मत वाला है। (18) जो लोग मुसलमानों में बुराई फैलाने के आरज़ूमंद रहते हैं उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब हैं। अल्लाह तआला सब कुछ जानता है और तुम कुछ भी नहीं जानते।'' (19)

(आयत 16 से 19) : पहले तो नेक गुमानी का हुक्म दिया यहाँ दूसरा हुक्म दे रहा है कि भले लोगों की शान में कोई बुराई का कलिमा बेतह़क़ीक़ हर्गिज़ न निकालना चाहिए। बुरे ख़्यालात, गंदे इल्ज़ामात और शैतानी वस्वसों से दूर रहना चाहिए कभी ऐसे कलिमात ज़ुबान से न निकालने चाहिए भले दिल में कोई ऐसा वस्वसा शैतानी पैदा भी हो तो ज़ुबान क़ाबू में रखनी चाहिए। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि ''अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के दिलों में पैदा होने वाले वस्वसों से दरगुज़र फ़र्मा लिया है जब तक कि वह ज़ुबान से न कहें, या अ़मल में न लाएँ।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर, बाब इज़ा ह़नसा नासियन फ़िल ईमान : 6664; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 127) तुम्हें चाहिए था कि ऐसे वाही कलाम को सुनते ही कह देते कि हम ऐसी लग़्व बात से अपनी ज़ुबान नहीं बिगाड़ते। हमसे यह बेदअबी नहीं हो सकती कि अल्लाह तआला के ख़लील और उसके रसूल(ﷺ) की बीवी साह़िबा (रज़ि.) की निस्बत कोई ऐसी बेकार बात कहें। अल्लाह की ज़ात पाक है देखो! ख़बरदार आइन्दा ऐसी ह़रकत न हो, वरना ईमान के ज़ब्त होने का अंदेशा है। हाँ! अगर कोई शख़्स ईमान से ही कोरा हो तो वह बेअदब गुस्ताख़ और भले लोगों की एहानत करने वाला होता ही है अह़कामे शरइया को अल्लाह तआला तुम्हारे सामने खोल खोलकर बयान कर रहा है। वह अपने बन्दों की मस्लिह़तों से वाक़िफ़ है उसका कोई हुक्म ह़िक्मत से ख़ाली नहीं होता।

बुराई की इशाअ़त ह़राम है : यह तीसरी तंबीह है कि जो शख़्स कोई ऐसी बात सुने उसे उसका फैलाना ह़राम है। जो ऐसी बुरी ख़बरों को उड़ाते फिरते हैं उन्हें दुनियावी सज़ा यानी ह़द भी लगेगी और आख़िरत की सज़ा यानी अ़ज़ाबे जहन्नम भी होगा। अल्लाह आ़लिम है तुम बेइल्म हो। पस तुम्हें अल्लाह तआला की तरफ़ तमाम उमूर लौटाने चाहिए। ह़दीस में है कि ''अल्लाह के बन्दों को ईज़ा न दो, उन्हें आ़र न दिलाओ। उनकी पोशीदगियाँ न टटोलो। जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के ऐबों को टटोलेगा अल्लाह उसके ऐबों के पीछे पड़ जाएगा और उसे यहाँ तक रुस्वा करेगा कि उसके घर वाले भी उसे बुरी नज़र से देखने लगेंगे।'' (अह़मद : 5/279; ह़ : 22402; व सनदुहू ह़सन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/86)

***

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا
تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ
اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢١

तर्जुमा : ''अगर यह बात न होती कि तुम पर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और रहमत है और यह भी कि अल्लाह बड़ी शफ़क़त रखने वाला मेहरबान है। (20) ईमानवालों! शैतान के क़दम बक़दम न चलो। जो शख़्स शैतानी क़दमों की पैरवी करे तो वह तो बेहयाई और बुराई के कामों का ही हुक्म करेगा। और अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम तुम पर न होता तो तुममें से कोई भी कभी भी पाक साफ़ न होता। लेकिन अल्लाह तआला जिसे पाक करना चाहे कर देता है। अल्लाह सब सुनने वाला सब जानने वाला है।'' (21)

शैतानी राहें (आयत 20, 21) : यानी अगर अल्लाह का फ़ज़्लो करम लुत्फ़ो रहम न होता तो उस वक़्त कोई और ही बात हो पड़ती मगर उसने तौबा करने वालों की तौबा क़बूल कर ली। पाक होने वालों को बज़रिये हद्दे शरई के पाक कर दिया। शैतानी तरीक़ों पर शैतानी राहों पर न चलो उसकी बातें न मानो। वह तो बुराई का, बदी का, बेहयाई का हुक्म देता है पस तुम्हें उसकी बातें मानने से परहेज़ करना चाहिए उसके अमल से बचना चाहिए। उसके वस्वसों से दूर रहना चाहिए। अल्लाह की हर नाफ़र्मानी में क़दम बढ़ाना शैतान की पैरवी है। (तब्री : 3/310) एक शख़्स ने हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से कहा कि मैंने फ़लाँ चीज़ न खाने की क़सम खा ली है। आपने फ़र्माया, यह शैतान का बहकावा है, अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो और उसे खा लो। एक शख़्स ने हज़रत शअ़बी (रह.) से कहा कि मैंने अपने बच्चे को ज़िब्ह करने की नज़्र मानी है। आपने फ़र्माया, यह शैतानी हरकत है ऐसा न करो इसके बदले एक भेड़ ज़िब्ह कर ले। अबू राफ़ेअ (रह.) कहते हैं कि एक बार मेरे और मेरी बीवी के बीच झगड़ा हो गया, वह बिगड़कर कहने लगीं एक दिन वह यहूदिया है और एक दिन नसरानिया है और उसके तमाम ग़ुलाम आज़ाद हैं अगर तू अपनी बीवी को तलाक़ न दे दे। मैंने आकर अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मसला पूछा तो आपने फ़र्माया, यह शैतानी हरकत है। ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) जो उस वक़्त सबसे ज़्यादा दीनी समझ रखने वाली ख़ातून थीं उन्होंने भी फ़त्वा दिया। और आसिम बिन उमर ने भी यही बतलाया। फिर फ़र्माता है कि अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तो तुममें से एक भी अपने आपको शिर्क व कुफ़्र से बुराई और बदी से न बचा सकता। यह रब तआला का एहसान है कि वह तुम्हें तौबा की तौफ़ीक़ देता है फिर तुम पर मेहरबानी से रुजूअ करता है और तुम्हें पाक साफ़ बना देता है

(अल्लाह जिसे चाहे पाक करता है और जिसे चाहे हलाकत के गढ़े में धकेल देता है अल्लाह तआला अपने बन्दों की बातों को सुनने वाला उनके अह़वाल को जानने वाला है। मुस्तह़िक़े हिदायत और मुस्तह़िक़े ज़लालत उसकी निगाह में हैं और उसमें भी उस ह़कीमे मुत्लक़ की बेपायाँ ह़िक्मत है।)

***

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ
وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ
وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ
اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''तुममें से जो बुज़ुर्गी और कुशादगी वाले हैं उन्हें अपने क़राबतदारों और मिस्कीनों और मुहाजिरों को राहे लिल्लाह में न देने से क़सम न खा लेनी चाहिए बल्कि माफ़ कर देना चाहिए और दरगुज़र कर लेना चाहिए। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे क़सूर माफ़ कर दे, अल्लाह तआला क़सूरों का माफ़ करने वाला मेहरबान है। (22) जो लोग पाकदामन भोली भाली ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं वह दुनिया और आख़िरत में मलऊन (लअनती) हैं और उनके लिए बड़ा भारी अज़ाब है। (23) जबकि उनके मुक़ाबले में उनकी ज़ुबानें और उनके हाथ पैर उनके आमाल की गवाही देंगे। (24) उस दिन अल्लाह तआला उन्हें पूरा पूरा बदला ह़क़ व इंसाफ़ के साथ देगा और वह जान लेंगे कि अल्लाह तआला ही ह़क़ है और वही ज़ाहिर करने वाला है।'' (25)

सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का वाक़िया (आयत 22 से 25) : तुममें से जो कुशादा रोज़ी वाले साह़िबे मक़दिरत हैं सदक़ा और एह़सान करने वाले हैं उन्हें इस बात की क़सम न खानी चाहिए कि वह अपने क़राबतदारों को मिस्कीनों को मुहाजिरों को कुछ देंगे ही नहीं। इस त़रह़ उन्हें मुतवज्जा करके फिर और नर्म करने के लिए फ़र्माया कि उनकी त़रफ़ से कोई क़सूर भी सरज़द हो गया हो तो उन्हें माफ़ कर देना चाहिए।

उनसे कोई बुराई या ईज़ा पहुँची हो तो उनसे दरगुज़र कर लेना चाहिए। यह भी अल्लाह तआला का हिल्म व करम और लुत्फ़ो रहम है कि वह अपने नेक बन्दों को भलाई का हुक्म देता है। यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के बारे में उतरी है जबकि आपने हज़रत मिस्तह बिन असासा (रज़ि.) के साथ किसी क़िस्म का सलूक करने से क़सम खा ली थी क्योंकि बोहताने सिद्दीक़ा में यह भी शामिल थे। जैसे कि पहले कीआयतों की तफ़्सीर में यह वाक़िया गुज़र चुका है। तो जब असल बात अल्लाह ने ज़ाहिर कर दी। हज़रत उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) बरी हो गईं मुसलमानों के दिल रोशन हो गए, मोमिनों की तौबा क़बूल हो गई, तोहमत रखने वालों में से कुछ को हद्दे शरई लग चुकी तो अल्लाह तआला ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को हज़रत मिस्तह (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जा किया जो आपकी ख़ाला के लड़के थे और मिस्कीन शख़्स थे। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ही उनकी परवरिश करते रहे थे, यह मुहाजिर थे लेकिन उस बारे में इत्तिफ़ाक़िया ज़ुबान खुल गई थी उन्हें तोहमत की हद भी लगाई गई थी। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की सख़ावत मशहूर थी क्या अपने क्या ग़ैर सबके साथ आपका सलूक आम था। आयत के ख़ुसूसन जब यह अल्फ़ाज़ हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) के कान में पड़े कि क्या तुम बख़्शिशे इलाही के तालिब नहीं हो? आपकी ज़ुबान से बेसाख़्ता निकल गया कि हाँ! क़सम अल्लाह की हमारी तो ऐन चाहत है कि अल्लाह हमें बख़्श दे और उसी वक्त से मिस्तह (रज़ि.) को जो कुछ दिया करते थे, देना शुरू कर दिया। गोया इन आयतों में हमें तल्क़ीन हुई है कि जिस तरह हम चाहते हैं कि हमारी ग़लतियाँ माफ़ हो जाएँ हमें चाहिए कि दूसरों की ग़लतियों से भी दरगुज़र कर लिया करें। यह भी ख़्याल में रहे कि जिस तरह आपने पहले यह फ़र्माया था कि अल्लाह की क़सम! मैं इसके साथ कभी भी सलूक न करूँगा, अब अहद किया कि अल्लाह की क़सम! मैं इससे कभी भी इसका मुक़र्रर रोज़ीना न रोकूँगा। सच है सिद्दीक़ सिद्दीक़ ही थे।

इफ़्फ़ते मआब औरतों पर तोहमत की सज़ा : जबकि आम मुसलमान औरतों पर तूफ़ान उठाने वालों की सज़ा यह है तो अम्बिया की बीवियों पर जो मुसलमानों की माएँ हैं बोहतानबाज़ी करने वालों की सज़ा क्या होगी? और ख़ुसूसन उस बीवी पर जो सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की साहबज़ादी थीं। उलमा-ए-किराम का इस पर इज्माअ है कि इन आयतों के नाज़िल हो चुकने के बाद भी जो शख़्स माई साहिबा (रज़ि.) को इस इल्ज़ाम से याद करे वह काफ़िर है क्योंकि उसने क़ुरआन के ख़िलाफ़ किया आपके और अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) के बारे में सही क़ौल यही है कि वह भी मिस्ल सिद्दीक़ा (रज़ि.) के हैं, वल्लाहु आलम! फ़र्माता है कि ऐसे मूज़ी बोहतान परवाज़ दुनिया और आख़िरत में लअनते रब्बानी के मुस्तहिक़ हैं। जैसे और आयत में है (إِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللهَ وَ رَسُوْلَهٗ) (33/अहज़ाब : 57) यानी जो लोग अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को तक्लीफ़ देते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह तआला की फटकार है और उनके लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार हैं। कुछ लोगों का ख़्याल है कि यह मख़्सूस है उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ। इब्ने अब्बास (रज़ि.) यही फ़र्माते हैं। सईद बिन ज़ुबैर, मुक़ातिल बिन हय्यान (रह.) का यही क़ौल है। इब्ने जरीर (रह.) ने भी हज़रत आइशा (रज़ि.) से यह नक़्ल किया है लेकिन फिर जो तफ़्सीलवार रिवायत लाए हैं उसमें आप पर तोहमत लगने, हुज़ूर (ﷺ) पर वही आने और इस आयत के

नाज़िल होने का ज़िक्र है लेकिन इस हुक्म के आपके साथ मख़्सूस होने का ज़िक्र नहीं पस सबबे नुज़ूल भले ख़ास हो लेकिन हुक्म आम रहता है। मुम्किन है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह के क़ौल का भी यही मतलब हो, वल्लाहु आलम! कुछ बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि कुल अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) का तो यह हुक्म है लेकिन और मोमिना औरतों का यह हुक्म नहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि इस आयत से तो मुराद हुज़ूर (ﷺ) की बीवियाँ हैं कि अहले निफ़ाक़ जो इस तोहमत में थे सब धुत्कारे हुए, लअ़नती ठहरे और ग़ज़बे इलाही के हक़दार बन गए। उसके बाद मोमिना औरतों पर बदकारी के बोहतान बाँधने वालों के हुक्म में आयत (وَ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا) (24/नूर : 4) उतरी। पस उन्हें कोड़े लगेंगे। अगर उन्होंने तौबा की तो तौबा क़बूल की जाएगी लेकिन उनकी गवाही फिर से हमेशा तक ग़ैर मुअ़तबर रहेगी।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने एक मर्तबा सूरह नूर की तफ़्सीर बयान करते हुए फ़र्माया कि यह आयत तो हुज़ूर (ﷺ) की बीवियों के बारे में उतरी है। उन बोहतानबाज़ों की तौबा भी क़बूल नहीं। इस आयत में इब्हाम है। और चार गवाह न ला सकने की आयत आम ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाने वालों के हक़ में है उनकी तौबा मक़्बूल है। यह सुनकर मज्मअ़ में से लोगों का इरादा हुआ कि आपकी पेशानी चूम लें। क्योंकिआपने निहायत ही उम्दा तफ़्सीर की थी। इब्हाम से मुराद यह है कि हुर्मते तोहमत आम है हर पाकदामन औरत की शान में और ऐसे लोग सब मल्ऊन हैं। हज़रत अब्दुर्रह़मान (रह़.) फ़र्माते हैं कि हर एक बोहतानबाज़ इस हुक्म में तो है लेकिन हज़रत आइशा (रज़ि.) बतौर औला हैं। (त़बरी : 19/139) इमाम इब्ने जरीर (रह़.) भी उमूम को ही पसंद करते हैं और यह सही भी है। और उमूम की ताईद में यह ह़दीस भी है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''सात गुनाहों से बचो जो मुहलिक हैं पूछा गया वह क्या क्या हैं? फ़र्माया अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू, किसी को बेवजह मार डालना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जिहाद से भागना, पाकदामन भोली मोमिना पर तोहमत लगाना।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल वस़ाया, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (इन्नल्लज़ीना यअकुलूना अम्वालल यतामा ज़ुल्मन...) : 2766; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 89; अबूदाऊद : 2874; इब्ने हिब्बान : 5561; बैहक़ी : 8/249) और ह़दीस में है कि ''पाकदामन औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाने वाले की सौ साल की नेकियाँ ग़ारत हैं।'' (अल्मुअजमुल कबीर : 3023; मुस्नदे बज़्ज़ार : 2929; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 16/279) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का फ़र्मान है कि जब मुश्रिकीन देखेंगे कि जन्नत में सिवाय नमाज़ियों के और कोई नहीं भेजा जाता तो वह कहेंगे, आओ हम भी इंकार कर दें। चुनाँचे अपने शिर्क का यह इंकार कर देंगे उसी वक़्त उनके मुँह पर मुहर लग जाएगी और हाथ पैर गवाही देने लगेंगे और अल्लाह तआ़ला से कोई बात छुपा न सकेंगे। (त़बरी : 8/373) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''काफ़िरों के सामने जब उनकी बदआमालियाँ पेश की जाएँगी तो वह इंकार कर जाएँगे और अपनी बेगुनाही बयान करने लगेंगे तो कहा जाएगा यह हैं तुम्हारे पड़ौसी यह तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दे रहे हैं, यह कहेंगे, यह सब झूठे हैं तो कहा जाएगा कि अच्छा! ख़ुद तुम्हारे कुंबे क़बीले के लोग मौजूद हैं। यह कह देंगे, यह भी झूठे हैं तो कहा जाएगा, अच्छा तुम क़समें खाओ, यह क़समें खा लेंगे फिर अल्लाह तआ़ला उन्हें गूँगा कर देगा और ख़ुद उनके हाथ पैर उनकी बदआमालियों की गवाही देंगे फिर उन्हें जहन्नम में भेज दिया जाएगा।'' (ह़ाकिम : 4/605; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है। मुस्नदे अबी

यअ़ला : 1392; और शैख़ अल्बानी (रह़.) इस रिवायत को ज़ईफ़ क़रार देते हैं। (सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ा : 2708) ह़ज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं "हम हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे जो आप हँस दिये और कहने लगे, जानते हो क्यूँ हँसा? हमने कहा, अल्लाह ही जानता है। आपने फ़र्माया, बंदा क़ियामत के दिन अपने रब से जो हुज्जतबाज़ी करेगा उस पर। यह कहेगा कि ऐ अल्लाह! क्या तूने मुझे ज़ुल्म से नहीं रोका था? अल्लाह तआला कहेगा, हाँ! तो यह कहेगा बस आज जो गवाह मैं सच्चा मानूँ उसी की गवाही मेरे बारे में मुअतबर मानी जाए और वह गवाह सिवाय मेरे और कोई नहीं। अल्लाह कहेगा, अच्छा यूँ ही सही, तू ही अपना गवाह रह। अब मुँह पर मुहर लग जाएगी और बदन के ह़िस्से से सवाल होगा तो वह सारे अ़क़्दें खोल देंगे। उस वक़्त बंदा कहेगा तुम ग़ारत हो जाओ तुम्हें बर्बादी हो, तुम्हारी त़रफ़ से ही तो मैं लड़ झगड़ रहा था।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अदुनिया सिज्नुन लिल मोमिन व जन्नतुन लिल काफ़िर : 2969; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11653; मुस्नदे अबी यअ़ला : 3977; इब्ने ह़िब्बान : 7385) क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं ऐ इब्ने आदम! तू ख़ुद अपनी बदआमालियों का गवाह है तेरे जिस्म के तमाम ह़िस्से तेरे ख़िलाफ़ गवाही देंगे, इनका ख़्याल रख, अल्लाह तआला से पोशीदगी और ज़ाहिरी में डरता रह, उसके सामने कोई चीज़ छुपी नहीं। अंधेरा उसके सामने रोशन है छुपा हुआ उसके सामने खुला हुआ है। अल्लाह के साथ नेक गुमानी की ह़ालत में मरो, अल्लाह ही के साथ हमारी कुव्वतें हैं, यहाँ दीन से मुराद ह़िसाब है। (त़बरी : 19/141) जुम्हूर की क़िराअत में ह़क़्क़ का ज़बर है। क्योंकि वह दीन की सिफ़त है। मुजाहिद (रह़.) ने ह़क़्क़ु पढ़ा है इस बिना पर कि यह लुग़त है लफ़्ज़ अल्लाह की। उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) के मुस्ह़फ़ में (यौमइज़िय्युंवफ़्फ़ीहिमुल्लाहुल ह़क़्क़ु दीनहुम) कुछ सलफ़ से पढ़ना मरवी है। उस वक़्त जान लेंगे कि अल्लाह के वादे वईद ह़क़ हैं। उसका ह़िसाब अ़दल वाला है, ज़ुल्म से दूर है।

***

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ۗ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

तर्जुमा : "ख़बीस औरतें ख़बीस मर्दों के लायक़ हैं और ख़बीस मर्द ख़बीस औरतों के लायक़ हैं और पाक औरतें पाक मर्दों के लायक़ हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लायक़ हैं ऐसे पाक लोगों के बारे में जो कुछ बकवास बोहतानबाज़ कर रहे हैं वह उनसे बिलकुल बेलगाव हैं उनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी।" (26)

बदकार औरतें बदकार मर्दों के लिए और स़ालेह़ा औरतें नेक मर्दों के लिए (आ. 26) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ऐसी बुरी बात बुरे लोगों के लिए है भली बात के ह़क़दार भले लोग होते हैं। यानी अहले निफ़ाक़ ने सिद्दीक़ा (रज़ि.) पर जो तोहमत बाँधी और उनकी शान में जो बदअल्फ़ाज़ी की उसके लायक़ वही हैं इसलिए कि वही बुरे हैं और ख़बीस हैं। सिद्दीक़ा (रज़ि.) चूँकि पाक हैं इसलिए वह पाक

कलिमों के लायक़ हैं वह नापाक बोहतानों से बरी हैं। यह आयत भी हज़रत आइशा (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है। (तब्री : 19/142) आयत का साफ़ मतलब यह है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) जो हर तरह तय्यब हैं नामुम्किन है कि उनके निकाह में अल्लाह किसी ऐसी औरत को दे जो ख़बीसा हो। ख़बीसा औरतें तो ख़बीस मर्दों के लायक़ होती हैं। इसीलिए फ़र्माया कि यह लोग इन तमाम तोहमतों से पाक हैं जो अल्लाह के दुश्मन बाँध रहे हैं। इन्हें उनकी बदकलामियों से जो रंज व तक्लीफ़ पहुँची वह भी इनके लिए गुनाह से मग़्फ़िरत का बाइस बन जाएगी और यह चूँकि हुज़ूर (ﷺ) की बीवी हैं जन्नते अदन में भी आपके साथ ही रहेंगी। एक मर्तबा उसैर बिन जाबिर हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि आज तो मैंने वलीद बिन उक़्बा से एक निहायत ही उम्दा बात सुनी तो हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया, ठीक है मोमिन के दिल में एक बात उतरती है और वह उसके सीने में आ जाती है फिर वह उसे ज़ुबान से बयान करता है वह बात चूँकि भली होती है भले सुनने वाले उसे अपने दिल में बिठा लेते हैं और इसी तरह बुरी बात बुरे लोगों के दिलों से सीनों तक और वहाँ से ज़ुबानों तक आती है बुरे लोग उसे सुनते हैं और अपने दिल में बिठाते हैं। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। मुस्नद अहमद में हदीस है कि ''जो शख़्स बहुत सी बातें सुने फिर उनमें जो सबसे ख़राब हो उसे बयान करे उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स किसी बकरियों वाले से एक बकरी माँगे वह उसे कहे कि जा इस रेवड़ में से तुझे जो पसंद हो ले ले यह जाए। (इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल हिक्मतु : 4172; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अहमद : 2/405; मुस्नद तयालिसी : 90; मुस्नद अबी यअला : 6388; इसकी सनद में अली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/37; रक़म : 342) और रेवड़ के कुत्ते का कान पकड़कर ले जाए।'' और हदीस में है कि ''हिक्मत का कलिमा मोमिन की गुम गश्ता दौलत है जहाँ से पाये ले ले।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल इल्म, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिल फ़िक़्ह अलल इबादति : 2687; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; इब्ने माजा : 4169; इसकी सनद में इब्राहीम बिन फ़ज़ल मख़ज़ूमी मतरूक रावी है। (अत्तक़रीब : 1/41; रक़म : 255)

***

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى
اَهْلِهَا ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا
تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا
مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : "ऐ ईमानवालों! अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ जब तक कि इजाज़त न ले लो और वहाँ के रहने वालों को सलाम करो यही तुम्हारे लिए सरासर बेहतरी है ताकि तुम नसीहत हासिल करो। (27) अगर वहाँ तुम्हें कोई भी न मिल सके तो भी परवानगी (इजाज़त) मिले बग़ैर अंदर न जाओ। और अगर तुमसे लौट जाने को कहा जाए तो तुम लौट ही जाओ यही बात तुम्हारे लिए सुथराई वाली है। जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह ख़ूब जानता है। (28) हाँ! ग़ैर आबाद घरों में जहाँ तुम्हारा कोई फ़ायदा या अस्बाब हो जाने में तुम पर कोई गुनाह नहीं तुम जो कुछ भी ज़ाहिर करते हो और जो छुपाते हो अल्लाह सब कुछ जानता है।" (29)

घरों में दाख़िले के आदाब (आ. 27 से 29) : शरई अदब बयान हो रहा है कि किसी के घर में दाख़िल होने से पहले इजाज़त माँगो जब इजाज़त मिले, जाओ पहले सलाम करो अगर पहली बार की इजाज़त तलबी पर जवाब न मिले तो फिर इजाज़त माँगो तीन बार इजाज़त चाहो अगर फिर भी इजाज़त न मिले तो लौट जाओ। सही ह़दीस में है कि ह़ज़रत अबू मूसा (ﷺ) ह़ज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) के पास गए तीन बार इजाज़त माँगी जब कोई न बोला तो आप वापिस लौट गए, थोड़ी देर में ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने लोगों से कहा, देखो! अब्दुल्लाह बिन क़ैस आना चाहते हैं, उन्हें बुला लाओ। लोग गए देखा तो वह चले गए हैं वापिस आकर ह़ज़रत उमर (रज़ि.) को ख़बर दी। दोबारा जब ह़ज़रत अबू मूसा और ह़ज़रत उमर (रज़ि.) की मुलाक़ात हुई तो ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने पूछा आप वापिस क्यूँ चले गए थे? जवाब दिया कि हुज़ूर (ﷺ) का हुक्मू है कि तीन बार इजाज़त चाहने के बाद भी अगर इजाज़त न मिले तो वापिस लौट जाओ, मैंने तीन बार इजाज़त चाही जब जवाब न आया तो मैं उस ह़दीस पर अमल करके वापिस लौट गया। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया इस पर किसी गवाह को पेश करो वरना मैं तुम्हें सज़ा दूँगा। आप वहाँ से उठकर अंसार के एक मज्मअे में पहुँचे और सारा वाक़िया उनसे बयान किया और फ़र्माया कि तुममें से किसी ने अगर हुज़ूर (ﷺ) का यह हुक्म सुना हो तो मेरे साथ चलकर उमर (रज़ि.) से कह दे। अंसार ने कहा यह मसला तो आम है बेशक हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया है हम सबने सुना है हम अपने सबसे कम उम्र लड़के को आपके साथ करते हैं, यही गवाही दे आएँगे। चुनाँचे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) गए और उमर (रज़ि.) से जाकर कहा कि मैंने भी हुज़ूर (ﷺ) से यही सुना है। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) उस वक़्त अफ़सोस करने लगे कि बाज़ारों के लेन देन ने मुझे इस मसले से ग़ाफ़िल रखा। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब अल्ख़ुरूज फ़ित्तिजारति : 2062; सह़ीह़ मुस्लिम : 2153; अबूदाऊद : 5181; इब्ने ह़िब्बान : 5807)

एक बार हुज़ूर (ﷺ) ने ह़ज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) से इजाज़त माँगी फ़र्माया अस्सलामु अलैकुम व रह़मतुल्लाहि। ह़ज़रत सअद (रज़ि.) ने जवाब में व अलैकुमुस्सलाम व रह़मतुल्लाह तो कह दिया लेकिन ऐसी आवाज़ से कि आप न सुनें। चुनाँचे तीन बार यही हुआ। हुज़ूर (ﷺ) सलाम करते और वह जवाब देते लेकिन इस तरह़ कि हुज़ूर (ﷺ) सुनें नहीं। उसके बाद आप वहाँ से लौट चले। ह़ज़रत सअद (रज़ि.) आपके पीछे लपके हुए आए और कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपकी तमाम आवाज़ें मेरे कानों में पहुँच रही थीं, मैंने हर सलाम का जवाब भी दिया। लेकिन इस ख़्याल से कि आपकी दुआएँ बहुत

सारी लूँ और ज़्यादा बरकत हासिल करूँ, अब आप चलिए तशरीफ़ रखिए। चुनाचे हुज़ूर (ﷺ) गए। उन्होंने आपके सामने किशमिश रखीं आप (ﷺ) ने नोश फ़र्माई और फ़ारिग़ होकर फ़र्माने लगे "तुम्हारा खाना नेक लोगों ने खाया, फ़रिश्ते तुम पर रहमत भेज रहे हैं। तुम्हारे रोज़ेदारों ने रोज़ा खोला।" (अहमद : 3/138; अबूदाऊद : 3854; वहुव हदीसुन हसन; मुश्किलुल आसार लित्तहावी : 1/498, 499; व सनदुहू हसन; मुस्नदे बज़्ज़ार : 1960; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/34) और रिवायत में है कि "जिस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने सलाम किया और हज़रत सअद (रज़ि.) ने आहिस्ता जवाब दिया तो उनके लड़के हज़रत क़ैस (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि आप हुज़ूर (ﷺ) को इजाज़त क्यूँ नहीं देते? आपने फ़र्माया, ख़ामोश रहो। देखो हुज़ूर (ﷺ) दोबारा सलाम कहेंगे, हमें दोबारा आपकी दुआ मिलेगी। इसमें यह भी है कि यहाँ जाकर हुज़ूर (ﷺ) ने गुस्ल किया। हज़रत सअद (रज़ि.) ने ज़ाफ़रान या विर्स से रंगी हुए एक चादर पेश की जो आपने जिस्मे मुबारक से लपेट ली फिर हाथ उठाकर हज़रत सअद (रज़ि.) के लिए दुआ की कि ऐ अल्लाह! सअद बिन उबादा की आल पर अपने दुरूद व रहमत नाज़िल फ़र्मा। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने वहीं खाना तनावुल फ़र्माया जब वापिस जाने का इरादा किया तो हज़रत सअद (रज़ि.) अपने गधे पर पालान कस लाए। हुज़ूर (ﷺ) की सवारी के लिए उसे पेश किया और अपने लड़के क़ैस (रज़ि.) से कहा तुम हुज़ूर (ﷺ) के साथ साथ जाओ यह साथ चले मगर हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, क़ैस! आओ तुम भी सवार हो जाओ। उन्होंने कहा हुज़ूर (ﷺ)! मुझसे तो यह न हो सकेगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "दो बातों में से एक तुम्हें ज़रूर करनी होगी या तो मेरे साथ इस जानवर पर सवार हो जाओ या वापिस चले जाओ। हज़रत क़ैस (रज़ि.) ने वापिस जाना मंज़ूर कर लिया।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब कम मर्रतन युसल्लिमुर्रजुल फ़िल इस्तिअज़ान : 5185; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सनद में इंक़िताअ है। सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 10157) यह याद रहे कि इजाज़त माँगने वाला घर के दरवाज़े के सामने खड़ा न रहे बल्कि दायें बायें क़द्रे खिसककर खड़ा रहे क्योंकि अबूदाऊद में है कि "हुज़ूर (ﷺ) जब किसी के यहाँ जाते तो उसके दरवाज़े के बिलकुल सामने खड़े न होते बल्कि इधर उधर क़द्रे दूर होकर ज़ोर से सलाम कहते। उस वक़्त तक दरवाज़ों पर पर्दे भी लटके नहीं रहा करते थे। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब कम मर्रतन युसल्लिमुर्रजुल फ़िल इस्तिअज़ान : 5186; व सनदुहू हसन) हुज़ूर (ﷺ) के मकान के दरवाज़े के सामने ही खड़े होकर एक शख़्स ने इजाज़त माँगी तो आपने उसे सिखाया कि नज़र न पड़े इसीलिए तो इजाज़त मुक़र्रर की गई है फिर दरवाज़े के सामने खड़े होकर आवाज़ देने का क्या मतलब? या तो ज़रा सा इधर हो जा या उधर।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल इस्तिअज़ान : 5174; व सनदुहू ज़ईफ़ुन अल्अअमश अन्अन) एक और हदीस में है कि "अगर कोई तेरे घर में तेरी इजाज़त के बग़ैर झाँकने लगे और तू उसे कंकर मारे जिससे उसकी आँख फूट जाए तो तुझे कोई गुनाह न होगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दियात, बाब मन अत्तलअ फ़ी बैति क़ौमिन फ़फ़क़ऊ अयनहू फ़ला दियता लहू... : 6902; सहीह मुस्लिम : 2158; अहमद : 2/243; इब्ने हिब्बान : 6002) "हज़रत जाबिर (रज़ि.) एक मर्तबा अपने वालिद मरहूम के क़र्ज़े की अदायगी के फ़िक्र में हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए दरवाज़ा खटखटाने लगे तो आपने पूछा, कौन साहब हैं? हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा मैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "मैं मैं गोया आपने उसके कहने को नापसंद फ़र्माया।" (सहीह बुख़ारी,

किताबुल इस्तिअज़ान, बाब इज़ा क़ाल मन ज़ा फ़क़ाल अना : 2650; सहीह मुस्लिम : 2155; अबूदाऊद : 5187; तिर्मिज़ी : 2711; इब्ने माजा : 3709; अहमद : 3/320; इब्ने हिब्बान : 5808) क्योंकि मैं कहने से यह तो मालूम नहीं हो सकता कि कौन है जब तक कि नाम या मशहूर कुन्नियत न बताई जाए। मैं तो हर शख़्स अपने लिए कह सकता है। पस इजाज़त तलबी का असली मक़्सद हासिल नहीं हो सकता।

(इस्तिअज़ान इस्तिनास) एक ही बात है। (तब्री : 19/146) इब्ने अब्बास(रज़ि.) फ़र्माते थे (तस्तानिसू) कातिबों (लिखने वालों) की ग़लती है। (तस्तअज़िनू) लिखना चाहिए। इब्ने अब्बास (रज़ि.) की यही क़िराअत थी और उबय बिन कअब (रज़ि.) की भी लेकिन यह बहुत ग़रीब है। इब्ने मसऊद (रज़ि.) के अपने मुस्हफ़ में (हत्ता तुसल्लिमू अला अहलिहा व तस्तअज़िनू) है। ''सफ़्वान बिन उमय्या जब मुसलमान हो गए तो एक मर्तबा कुल्दा बिन हंबल को आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास भेजा आप उस वक़्त वादी के ऊँचे हिस्से में थे। यह सलाम किये बग़ैर और इजाज़त लिए बग़ैर ही आपके पास पहुँच गए। आपने फ़र्माया, लौट जाओ और कहो अस्सलामु अलैकुम क्या मैं आऊँ?'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब कैफ़ल इस्तिअज़ान : 5176; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2710; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 6735; अहमद : 3/414) और हदीस में है कि ''क़बीला बनू आमिर का एक शख़्स आपके घर आया और कहने लगा, मैं अंदर आ जाऊँ? आपने अपने गुलाम से फ़र्माया, जाओ! इसे इजाज़त माँगने का तरीक़ा सिखाओ कि पहले तो सलाम करे फिर पूछे। उस शख़्स ने यह सुन लिया और इसी तरह सलाम करके इजाज़त चाही, आपने इजाज़त दे दी और वह अंदर गए।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, कैफ़ल इस्तिअज़ान : 5177; व सनदुहू सहीहुन) और हदीस में है कि ''आपने अपनी ख़ादिमा से फ़र्माया था।'' (तब्री : 19/146) (तिर्मिज़ी) और हदीस में है कि ''कलाम से पहले सलाम होना चाहिए।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब मा जाअ फ़िस्सलामि क़ब्लल कलाम : 2699; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; मुस्नद अबी यअला : 2059; उनसबा बिन अब्दुर्रहमान और मुहम्मद बिन ज़िज़ान मतरूक रावी हैं। (अत्तक़रीब : 2/88; रक़म : 783; 2/161; रक़म : 217) तिर्मिज़ी में है हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) हाजत से फ़ारिग़ होकर आ रहे थे लेकिन धूप की ताब न ला सके तो एक कुरैशी औरत की झोपड़ी के पास पहुँचकर फ़र्माया, अस्सलामु अलैकुम क्या मैं अंदर आ जाऊँ? उसने कहा, सलामती से आ जाओ। आपने फिर यही कहा, उसने फिर यही जवाब दिया। आपके पैर जल रहे थे कभी इस क़दम पर सहारा लेते कभी उस क़दम पर। फ़र्माया यूँ कहो कि आ जाओ। उसने कहा कि आ जाओ। अब आप अंदर तशरीफ़ ले गए। हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास चार औरतें गईं, इजाज़त चाही क्या हम आ जाएँ? आपने फ़र्माया, नहीं! तुममें जो इजाज़त का तरीक़ा जानती हो उसे कहो कि वह इजाज़त ले तो एक औरत ने पहले सलाम किया फिर इजाज़त माँगी। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इजाज़त दे दी फिर यही आयत पढ़कर सुनाई। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अपनी माँ और बहनों के पास भी जाना हो तो ज़रूर इजाज़त ले लिया करो। अंसार की एक औरत ने रसूले करीम (ﷺ) से कहा कि मैं कुछ दफ़ा घर में इस हालत में होती हूँ कि अगर मेरे बाप भी आ जाएँ या मेरा अपना लड़का भी उस वक़्त आ जाए तो मुझे बुरा मालूम होता है क्योंकि वह हालत ऐसी नहीं होती कि उस वक़्त किसी की भी निगाह मुझ पर पड़े तो मैं नाख़ुश न होऊँ और घरवालों में कोई आ ही जाता है। उस वक़्त यह आयत उतरी। (इसकी

सनद में अश्अस बिन सिवार ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 1/263; रक़म : 996) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं तीन आयतें हैं कि लोगों ने उन पर अमल छोड़ रखा है एक तो यह कि अल्लाह तआला फ़र्माता है तुममें सबसे ज़्यादा बुज़ुर्गी वाला वह है जो सबसे ज़्यादा ख़ौफ़े इलाही रखता हो और लोगों का ख़्याल यह है कि सबसे बड़ा वह है जो सबसे ज़्यादा अमीर हो और अदब की आयतें भी लोग छोड़ बैठे हैं। हज़रत अता (रह.) ने उनसे पूछा मेरे घर में मेरी यतीम बहनें हैं जो एक ही घर में रहती हैं और मैं ही उन्हें पालता हूँ। क्या उनके पास जाने के लिए भी मुझे इजाज़त की ज़रूरत है? आपने फ़र्माया, हाँ! ज़रूर इजाज़त माँगा करो। मैं ने दोबारा यही सवाल किया कि शायद कोई रुख़सत का पहलू निकल आए। लेकिन आपने फ़र्माया, क्या तुम उन्हें नंगा देखना पसंद करोगे? मैंने कहा, नहीं! फ़र्माया तो फिर ज़रूर इजाज़त माँगा करो। मैंने फिर यही सवाल दोहराया तो आपने फ़र्माया, क्या तू अल्लाह का हुक्म मानेगा या नहीं? मैंने कहा, हाँ मानूँगा। आपने फ़र्माया फिर बग़ैर ख़बर दिये हर्गिज़ उनके पास भी न जाओ। हज़रत ताउस (रह.) फ़र्माते हैं मुहर्रिमाते अब्दिया पर उनकी उरयानी की हालत में नज़र पड़ जाए उससे ज़्यादा बुराई मेरे नज़दीक और कोई नहीं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) का क़ौल है कि अपनी माँ के पास भी घर में बग़ैर इत्तिलाअ न जाओ। अता (रह.) से पूछा गया कि बीवी के पास भी बग़ैर इजाज़त के न जाए? फ़र्माया यहाँ इजाज़त की ज़रूरत नहीं। यह क़ौल भी महमूल है उस पर कि उससे इजाज़त माँगने की ज़रूरत नहीं लेकिन ताहम ख़बर ज़रूर होनी चाहिए, मुम्किन है कि वह उस वक़्त ऐसी हालत में हो कि वह नहीं चाहती कि शौहर भी उस हालत में उसे देखे।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि मेरे शौहर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) जब मेरे पास घर में आते तो खंखार कर आते। कभी बुलंद आवाज़ से दरवाज़े के बाहर किसी से बातें करने लगते, ताकि घरवालों को आपके आने की ख़बर हो जाए। (इब्ने माजा, किताबुत्तिब्ब, बाब तअलीकुत्तमाइम : 3530; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अअमश रावी मुदल्लस है और सिमाअ की सराहत नहीं है। अहमद : 1/381; तबरी : 19/148) चुनाँचे हज़रत मुजाहिद (रह.) ने (तस्तअनिसू) के मअनी भी यही किये हैं कि खंखार देना, थूक देना वग़ैरह। इमाम अहमद (रह.) फ़र्माते हैं मुस्तहब है कि जब इंसान अपने घर में जाना चाहे बाहर से ही खंखार दे या जूतियों की आहट सुना दे। एक हदीस में है कि "सफ़र से रात के वक़्त बेख़बर घर आ जाने से हुज़ूर (ﷺ) ने मना किया है कि क्योंकि उससे गोया घर वालों की ख़यानत का पोशीदा तौर पर टटोलना है। (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब ला यत्रुकु अहलहू लैलन इज़ा अतालल ग़ैबत... : 5243; सहीह मुस्लिम : 715; अबूदाऊद : 2776; अहमद : 3/299; इब्ने हिब्बान : 4182) आप एक मर्तबा एक सफ़र से सुबह के वक़्त आए तो हुक्म दिया कि बस्ती के पास लोग उतरें ताकि मदीना में ख़बर मशहूर हो जाए, शाम को अपने घरों में जाना इसलिए कि उस वक़्त औरतें अपनी सफ़ाई सुथराई कर लें।" (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब तलबुल वलदिह : 5245, 5246; सहीह मुस्लिम : 715; अहमद : 3/303; मुस्नद अबू यअला : 1850) और हदीस में है कि "हुज़ूर (ﷺ) से पूछा गया, सलाम तो हम जानते हैं लेकिन इस्तीनास का तरीक़ा क्या है? आपने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह या अल्हम्दु लिल्लाह या अल्लाहु अकबर। बुलंद आवाज़ से कह देना या खंखार देना जिससे घर वाले मालूम कर लें कि फ़लाँ आ

रहा है।'' (इसकी सनद में वासिल बिन साइब मतरूक रावी है जबकि अबू सौरह के बारे में इमाम बुख़ारी ने इन्दहू मनाकीर कहा है। (अल्मीज़ान : 4/328; रक़्म : 9322; 4/535; रक़्म : 10282) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि तीन बार की इजाज़त इसलिए मुक़र्रर की है कि पहली बार में तो घर वाले मालूम कर लें कि फ़लाँ है दूसरी बार में वह संभल जाएँ और होशियार हो जाएँ। तीसरी बार में अगर वह चाहें इजाज़त दें चाहें मना कर दें। जब इजाज़त न मिले फिर दरवाज़े पर ठहरा रहना बुरा है। लोगों को अपने काम और अश्ग़ाल ऐसे ज़रूरी होते हैं कि वह उस वक़्त इजाज़त नहीं दे सकते। मुक़ातिल बिन हय्यान (रह.) फ़र्माते हैं कि जाहिलियत के ज़माने में सलाम का दस्तूर न था एक दूसरे से मिलते थे लेकिन सलाम न करते थे किसी के घर जाते थे तो इजाज़त नहीं लेते थे। यूँ ही जा धमके फिर कह दिया कि मैं आ गया हूँ तो बसा औक़ात यह घर वाले पर गिराँ गुज़रता। ऐसा भी हुआ कि वह अपन घर में कभी ऐसे हाल में होता कि उसे उसका आना बहुत बुरा लगता। अल्लाह तआला ने यह तमाम बुरे दस्तूर अच्छे आदाब सिखाकर बदल दिये। इसीलिए फ़र्माया कि यही तरीक़ा तुम्हारे लिए बेहतर है उसमें मकान वाले को आने वाले को दोनों को राहत है। यह चीज़ें तुम्हारी नसीहत और ख़ैरख़्वाही की हैं अगर वहाँ किसी को न पाओ तो बेइजाज़त अंदर न जाओ क्योंकि यह दूसरे की मिल्क में तसर्रुफ़ करना है जो नाजाइज़ है। मालिक मकान को हक़ है कि अगर वह चाहे इजाज़त दे चाहे रोक दे। अगर तुम्हें कहा जाए लौट जाओ तो तुम्हें वापिस लौट जाना चाहिए, इसमें बुरा मानने की बात नहीं बल्कि यह तो बड़ा ही प्यारा तरीक़ा है। कुछ मुहाजिरीन अफ़सोस किया करते थे कि हमें अपनी पूरी उम्र में इस आयत पर अमल करने का मौक़ा नहीं मिला कि कोई हमसे कहता लौट जाओ और हम इस आयत के मातहत वहाँ से वापिस हो जाते। (तब्री : 19/150) इजाज़त न मिलने पर दरवाज़े पर ठहरे रहना भी मना फ़र्मा दिया। अल्लाह तआला तुम्हारे अमलों से बाख़बर है। यह आयत अगली आयत से ख़ास है इसमें उन घरों में बग़ैर इजाज़त जाने की रुख़्सत है जहाँ कोई न हो और वहाँ उसका कोई सामान वग़ैरह हो जैसे कि मेहमानख़ाना वग़ैरह। यहाँ जब पहली बार इजाज़त मिल गई फिर हर बार की इजाज़त ज़रूरी नहीं। तो गोया यह आयत पहली आयत से इस्तिस्ना है इसी तरह के ऐसे ही ताजिरों के गोदाम मुसाफ़िरख़ाने वग़ैरह है और अव्वल बात ज़्यादा ज़ाहिर है, वल्लाहु आलम! ज़ेद (रह.) कहते हैं कि मुराद इससे बैतुश्शेअर है।

***

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ

اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝

तर्जुमा : ''मुसलमान मर्दों से कहो कि अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करें। यही उनके लिए पाकीज़गी है। लोग जो कुछ करें अल्लाह तआला सबसे ख़बरदार है।'' (30)

नज़रें झुकाकर चलो (आयत 30) : हुक्म होता है कि जिन चीज़ों का देखना मैंने ह़राम कर दिया है उन पर नज़रें न डालो। ह़राम चीज़ों से आँखें नीची कर लो अगर अचानक नज़र पड़ भी जाए तो भी दोबारा या नज़र भरकर न देखो। स़ह़ीह़ मुस्लिम में है कि ह़ज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से अचानक निगाह के जाने की बाबत पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अपनी नज़र फ़ौरन हटा लो।'' (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब नज़रुल फ़ज़ाइ : 2159; अबूदाऊद : 2148; तिर्मिज़ी : 2776; अह़मद : 4/358; इब्ने ह़िब्बान : 5571) नीची नज़र करना या इधर उधर देखने लग जाना अल्लाह की ह़रामकर्दा चीज़ों को न देखना आयत का मक़्सद है। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अ़ली! नज़र पर नज़र न जमाओ अचानक जो पड़ गई वह तो माफ़ हो क़स्दन माफ़ नहीं।'' (अबूदाऊद, किताबुन्निकाह़, बाब फ़ी मा युअमर बिही मन ग़ज़्ज़ल बस़र : 2149; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; शुरैक क़ाज़ी मुदल्लस के सुनने की स़राह़त नहीं है। तिर्मिज़ी : 2777; अह़मद . 5/351; ह़ाकिम : 2/194) हुज़ूर (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया, ''रास्तों पर बैठने से बचो'' लोगों ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! काम काज के लिए वह तो ज़रूरी है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''अच्छा! तो रास्तों का ह़क़ अदा करते रहो। उन्होंने कहा, वह क्या है? फ़र्माया, नज़रें नीची रखना किसी को तक्लीफ़ न देना, सलाम का जवाब देना, अच्छी बातों का तालीम करना, बुरी बातों से रोकना।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (या अय्युहल्लज़ीना आमनू ला तदख़ुलू बुयूतन...) : 2669; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2121; अह़मद : 3/36; इब्ने ह़िब्बान : 595) आप (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''छः चीज़ों की ज़मानत ले लो मैं तुम्हारे लिए जन्नत की ज़मानत लेता हूँ, बात करते हुए झूठ न बोलो, अमानत में ख़यानत न करो, वादाख़िलाफ़ी न करो, नज़र नीची रखो, हाथों को ज़ुल्म से बचाए रखो, अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करो।'' स़ह़ीह़ बुख़ारी में है ''जो शख़्स़ ज़ुबान और शर्मगाह को अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान के मातह़त रखे मैं उसके लिए जन्नत का ज़ामिन हूँ।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब ह़िफ़्ज़ुल्लिसान : 6474; तिर्मिज़ी : 3408) उ़बेदा (रह़.) का क़ौल है कि जिस चीज़ का नतीजा अल्लाह की नाफ़र्मानी हो, वह कबीरा गुनाह है चूँकि निगाह पड़ने के बाद दिल में फ़साद खड़ा होता है इसलिए शर्मगाह को बचाने के लिए नज़रें नीची रखने का फ़र्मान हुआ। नज़र भी इब्लीस के तीरों में से एक तीर है पस ज़िना से बचना भी ज़रूरी है और निगाह नीची रखना भी ज़रूरी है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करो मगर अपनी बीवियों और लौण्डियों से। (अबूदाऊद, किताबुल ह़म्माम, बाब फ़ित्तअ़री : 4017; व सनदुहू ह़सन; तिर्मिज़ी : 2769; इब्ने माजा : 1920; अह़मद : 5/3; मुश्किलुल आसार : 1381) मुह़र्रमात को न देखने से दिल पाक होता है और दीन स़ाफ़ होता है जो लोग अपनी नज़र ह़राम चीज़ों पर नहीं डालते, उनकी आँखों में नूर भर देता है और उनके दिल भी नूरानी कर देता है।'' आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जिसकी नज़र किसी औरत के हुस्नो जमाल पर पड़ जाए फिर वह अपनी नज़र हटा ले अल्लाह तआ़ला उसके बदले एक ऐसी इ़बादत उसे अ़त़ा करता है जिसकी लज़्ज़त वह अपने दिल में पाता है।'' (अह़मद : 5/264; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/63; त़ब्रानी : 7842; इसकी सनद में अ़ली बिन यज़ीद अल्हानी मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 3/161; रक़म : 5966) इस ह़दीस की सनदें तो ज़ईफ़ हैं मगर है यह रग़बत दिलाने के बारे में और ऐसी ह़दीसों में सनद की इतनी ज़्यादा

देखभाल नहीं होती। त़ब्रानी में है कि या तो तुम अपनी निगाहें नीची रखोगे और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करोगे और अपने मुँह सीधे रखोगे या अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतें बदल देगा, अआज़नल्लाहु मिन कुल्लि अ़ज़ाबहि। नज़र इब्लीसी तीरों में से एक तीर है जो शख़्स ख़ौफ़े इलाही से अपनी नज़र रोक रखे अल्लाह तआला उसके दिल में ऐसा नूरे ईमान पैदा कर देता है कि उसे मज़ा आने लगता है। लोगों का कोई अ़मल अल्लाह तआला से छुपा हुआ नहीं, वह आँखों की ख़यानत को दिल के भेद को जानता है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि इब्ने आदम के ज़िम्मे उसका ज़िना का हिस्सा लिख दिया गया है जिसे वह ला महाला पा लेगा। आँखों का ज़िना देखना है, ज़ुबान का ज़िना बोलना है, कानों का ज़िना सुनना है, हाथों का ज़िना थामना है, पैरों का ज़िना चलना है, दिल ख़्वाहिश, तमन्ना और आरज़ू पैदा करता है फिर शर्मगाह तो सबको सच्चा कर देती है या सबको झूठा बना देती है। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब ज़नल जवारेह़ दूनल फ़र्ज : 6243; सह़ीह़ मुस्लिम : 2/276; इब्ने ह़िब्बान : 442) रवाहु बुख़ारी तअ़लीक़न। अक्सर सलफ़ लड़कों की घूरा घूरी से भी मना करते थे। अइम्मा सूफ़िया में के बहुतों ने इस बारे में बहुत कुछ सख़्ती की है। अहले इल्म की जमाअ़त ने इसे मुत़लक़ ह़राम कहा है और कुछ ने इसे कबीरा गुनाह फ़र्माया है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "हर आँख क़ियामत के दिन रोएगी मगर वह आँख जो अल्लाह तआला की ह़राम की हुई चीज़ों के देखने से बंद रहे और वह आँख जो अल्लाह की राह में जागती रहे और वह आँख जो ख़ौफ़े इलाही से रोये, भले उसमें से आँसू सिर्फ़ मक्खी के सिर के बराबर निकला हो।" (सनदुन ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में उ़मर बिन मुह़म्मद बिन स़ोहबान कमज़ोर रावी है (अल्मीज़ान : 3/220; रक़म : 6195)

***

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ
زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ
اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ
التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى
عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ۗ وَتُوْبُوْٓا اِلَى
اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾

तर्जुमा : "मुसलमान औरतों से कह दो कि वह भी अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी अस्मत में फ़र्क़ न आने दें और अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें, सिवाय उसके जो ज़ाहिर है और अपने गिरेबानों पर अपनी ओढ़नियों के बुक्कल मारे रहें और अपनी आराइश को ज़ाहिर न करें, सिवाय अपने शौहरों के या अपने वालिद के या अपने ससुर के या अपने लड़कों के या अपने शौहर के लड़कों के या अपने भाईयों के या अपने भतीजों के या अपने भांजों के या अपने मैलजोल की औरतों के या अपने गुलामों के या ऐसे नौकर चाकर मर्दों के जो शहवत वाले न हों, या ऐसे बच्चों के जो औरतों के पर्दे की बातों से ख़बर रखने वाला नहीं और इस तरह ज़ोर ज़ोर से पैर मारकर न चलें कि उनकी पोशीदा ज़ीनत मालूम हो जाए। ऐ मुसलमानों! तुम सबके सब अल्लाह तआला की जनाब में तौबा करो ताकि तुम नजात पाओ।"(31)

पर्दे के शरई हुक्म (आयत 31) : यहाँ अल्लाह तआला मोमिना औरतों को हुक्म देता है ताकि उनके बाग़ैरत मर्दों को तस्कीन हो और जाहिलियत की बुरी रस्में निकल जाएँ। मरवी है कि अस्मा बिन्ते मर्सद (रज़ि.) का मकान बनू हारसा के महल्ले में था उनके पास औरतें आती थीं और दस्तूर के मुताबिक़ अपने पैरों के ज़ेवर और सीने और बाल खोले हुए आया करती थीं। हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने कहा यह कैसी बुरी बात है? इस पर यह आयतें उतरी। पस हुक्म होता है कि मुसलमान औरतों को भी अपनी नज़रें नीची रखनी चाहिए सिवाए अपने शौहर के किसी को बनज़रे शहवत न देखना चाहिए। अजनबी मर्दों की तरफ़ तो देखना ही हराम है ख़्वाह शहवत से हो ख़्वाह बग़ैर शहवत के। अबूदाऊद और तिर्मिज़ी में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हज़रत उम्मे सलमा और हज़रत मैमूना (रज़ि.) बैठी थीं जो इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) तशरीफ़ ले आए। यह वाक़िया पर्दे की आयतें उतरने के बाद का है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि पर्दा कर लो। उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह तो नाबीना हैं, न हमें देखेंगे, न पहचानेंगे। आपने फ़र्माया, तुम तो नाबीना नहीं हो कि उसे न देखो?" (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब फ़ी क़ौलिही तआला (व कुल लिल मोमिनाति यग़ज़ुज़्ना मिन अब्सारिहिन्न) 4112; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2778; अहमद : 6/296; बैहक़ी : 7/91; इब्ने माजा : 5575) हाँ! कुछ उलमा ने बेशहवत नज़र को हराम नहीं कहा, इनकी दलील वह हदीस है जिसमें है कि "ईद के दिन हब्शी लोगों ने मस्जिद में हथियारों के करतब शुरू किये और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) को हुज़ूर (ﷺ) ने अपने पीछे खड़ा कर लिया आप देख रही थीं यहाँ तक कि जी भर गया और थककर चली गईं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईदैन, बाब अल्हराबु वद्दरकु यौमुल ईद : 590; सहीह मुस्लिम : 892) औरतों को भी अपनी अस्मत का बचाव चाहिए। बदकारी से दूर रहें अपने आप किसी को न दिखाएँ। अजनबी ग़ैर मर्दों के सामने अपनी ज़ीनत की किसी चीज़ को ज़ाहिर न करें। हाँ! जिसका छुपाना मुम्किन ही न हो, उसकी और बात है। जैसे चादर और ऊपर का कपड़ा वग़ैरह। (तब्री : 19/156) जिनका पोशीदा रखना औरतों के लिए नामुम्किन है। यह भी मरवी है कि इससे मुराद चेहरा कलाइयों तक के हाथ और अंगूठी है लेकिन हो सकता है कि इससे मुराद यह हो कि यही ज़ीनत के वह महल

हैं जिनके ज़ाहिर करने से शरीअ़त ने मना कर दिया। जैसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से रिवायत है कि वह अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें यानी बालियाँ हार पैर का ज़ेवर वग़ैरह। (त़ब्री : 19/156) फ़र्माते हैं कि ज़ीनत दो त़रह़ की है एक तो वह जिसे शौहर ही देखे जैसे अंगूठी और कंगन और दूसरी ज़ीनत वह जिसे ग़ैर भी देखें जैसे ऊपर का कपड़ा। ज़ोहरी (रह़.) फ़र्माते हैं कि इस आयत में जिन रिश्तेदारों का ज़िक्र है उनके सामने तो कंगन दुपट्टा बालियाँ खुल जाएँ तो ह़र्ज नहीं लेकिन लोगों के सामने सिर्फ़ अंगूठियाँ ज़ाहिर हो जाएँ तो पकड़ नहीं। और रिवायत में अँगूठियों के साथ ही पैर के ख़लख़ाल का भी ज़िक्र है हो सकता है कि (मा ज़हर मिन्हा) की तफ़्सीर इब्ने अ़ब्बास वग़ैरह ने मुँह और कलाइयों से की हो। जैसे अबूदाऊद में है कि ''अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) के पास आईं कपड़े बारीक पहने हुए थीं तो आप (ﷺ) ने मुँह फेर लिया और फ़र्माया जब औ़रत बुलूग़त को पहुँच जाए तो सिवाए उसके और उसके यानी चेहरे के और कलाइयों के उसका कोई ह़िस्सा दिखाना ठीक नहीं।'' (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब फ़ीमा तुब्दियुल मर्अतु मिन ज़ीनतिहा : 4104; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; वलीद बिन मुस्लिम मुदल्लस के सुनने की स़राह़त नहीं नीज़ इसकी सनद में सईद बिन बशीर ज़ईफ़ रावी है।) लेकिन यह मुर्सल है ख़ालिद बिन दुरैक (रह़.) इसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत करते हैं और उनका माई स़ाह़िबा (रज़ि.) से मुलाक़ात करना साबित नहीं, वल्लाहु आ़लम!

औ़रतों को चाहिए कि अपने दुपट्टों से या और कपड़े से बुकल मार लें ताकि सीना और गले का ज़ेवर छुपा हुआ रहे। जाहिलियत में इसका भी रवाज न था। औ़रतें अपने सीनों पर कुछ नहीं डालती थीं। बसा औक़ात गर्दन और बाल चोटी बालियाँ वग़ैरह स़ाफ़ नज़र आती थीं। और आयत में है ऐ नबी! अपनी बीवियों से अपनी बेटियों से मुसलमान औ़रतों से कह दीजिए कि अपनी चादरें अपने ऊपर लटका लिया करें ताकि वह पहचान ली जाए और सताई न जाएँ। (33/ज़ुख़रुफ़ : 59) ख़ुमर ख़िमार की जमा है। ख़िमार कहते हैं हर उस चीज़ को जो ढाँप ले चूँकि दुपट्टा सर को ढाँप लेता है इसलिए इसे भी ख़िमार कहते हैं। पस औ़रतों को चाहिए कि या तो अपनी ओढ़नी से या किसी और कपड़े से अपना गला और सीना भी छुपाए रखें। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं अल्लाह तआ़ला उन औ़रतों पर रह़म करे जिन्होंने शुरू शुरू हिज्रत की थी कि जब यह आयत उतरी तो उन्होंने अपनी चादरों को फाड़कर दुपट्टे बनाए। कुछ ने अपने तहमद के किनारे काटकर उनसे सर ढक लिया। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नूर बाब (वल यज़्रिब्ना बि ख़ुमुरिहिन्ना अ़ला जुयूबिहिन्न) : 4758) एक बार ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के पास औ़रतों ने क़ुरैशी औ़रतों की फ़ज़ीलत बयान करनी शुरू की तो आपने फ़र्माया कि इनकी फ़ज़ीलत की क़ाइल मैं भी हूँ लेकिन अल्लाह की क़सम! मैंने अंस़ार की औ़रतों से अफ़ज़ल औ़रतें नहीं देखीं उनके दिलों में जो किताबुल्लाह की तस्दीक़ और उस पर कामिल ईमान है वह बेशक क़ाबिले क़द्र है। सूरह नूर की आयत (वल यज़्रिब्ना बिख़ुमुरिहिन्न) जब नाज़िल हुई और उनके मर्दों ने घर में जाकर यह आयत उन्हें सुनाई तो उसी वक़्त उन औ़रतों ने उस पर अ़मल कर लिया और सुबह़ की नमाज़ में वह आईं तो सबके सरों पर दुपट्टे मौजूद थे गोया ढोल रखे हुए हैं। (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब फ़ी क़ौलिल्लाहि तआ़ला (युदनीना अ़लैहिन्ना मिन

जलाबीबिहिन्न...) 4100; मुख़्तसरन व सनदुहू हसन) उसके बाद उन मर्दों का बयान फ़र्माया जिनके सामने औरत हो सकती है और बग़ैर बनाव सिंगार के उनके सामने शर्मो हया के साथ आ जा सकती है। भले ज़ाहिरी कुछ ज़ीनत की चीज़ों पर भी उनकी नज़र पड़ जाए सिवाय शौहर के कि उसके सामने तो औरत अपना पूरा बना सिंगार ज़ेबो ज़ीनत करे। भले चचा और मामू भी ज़ी महरम हैं लेकिन उनका नाम यहाँ इसलिए नहीं लिया गया कि मुम्किन है कि वह अपने बेटों के सामने उनके म हासिन बयान करें इसलिए उनके स ामने बग़ैर दुपट्टे के आना चाहिए फिर फर्माया तुम्हारी औरतें यानी मुसलमान औरतों के सामने भी इस ज़ीनत के इज़्हार में कोई हर्ज नहीं। अहले जिम्मा की औरतों के सामने इसलिए रुख़सत नहीं दी गई कि बहुत मुम्किन है वह अपने मर्दों में उनकी ख़ूबसूरती और ज़ीनत का ज़िक्र करें। मोमिन औरतों से भी भले यह डर है मगर शरीअत ने चूँकि इसे हराम क़रार दिया है इसलिए मुसलमान औरतें तो ऐसा न करेंगी लेकिन ज़िम्मी काफ़िरों की औरतों को इससे कौनसी चीज़ रोक सकती है। बुख़ारी मुस्लिम में है कि ''किसी औरत को जाइज़ नहीं कि दूसरी औरत से मिलकर उसके औसाफ़ अपने शौहर के सामने इस तरह बयान करे कि गोया वह उसे देख रहा है। (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब ला तुबाशिरुल मर्अतु फ़तनअतुहा लि ज़ौजिहा : 5240; अबूदाऊद : 2150; तिर्मिज़ी : 2772; अहमद : 1/440; मुस्नदे अबी यअ़ला : 5083; इब्ने हिब्बान : 4160) अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हज़रत अबू उबेदा (रज़ि.) को लिखा कि मुझे मालूम हुआ है कि कुछ मुसलमान औरतें आम हम्माम में जाती हैं उनके साथ मुश्रिका औरतें भी होती हैं। सुनो! किसी मुसलमान औरत को हलाल नहीं कि वह अपना जिस्म किसी ग़ैर मुस्लिमा औरत को दिखाए।'' हज़रत मुजाहिद (रह.) भी (अव निसाइहिन्न) की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं मुराद इससे मुसलमान औरतें हैं तो इनके सामने वह ज़ीनत ज़ाहिर कर सकती है जो अपने ज़ी महरम रिश्तेदारों के सामने ज़ाहिर कर सकती है। यानी गला बालियाँ हार। पस मुसलमान औरत को नंगे सिर किसी मुश्रिका औरत के सामने होना जाइज़ नहीं। एक रिवायत में है कि ''जब सहाबा (रज़ि.) बैतुल मक़्दिस पहुँचे तो उनकी बीवियों के लिए दाया यहूदिया और नसरानियाँ औरतें ही थीं।'' पस अगर यह बात साबित हो जाएतो महमूल होगा कि ज़रूरत पर या उन औरतों की ज़िल्लत पर। फिर इसमें ग़ैर ज़रूरी जिस्म का खुलना भी नहीं, वल्लाहु आलम! हाँ! मुश्रिका औरतों में से जो लौण्डियाँ बान्दियाँ हों वह इस हुक्म से ख़ारिज हैं। (तबरी : 19/160) कुछ कहते हैं कि गुलामों का भी यही हुक्म है। अबूदाऊद में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के पास उनके देने को एक गुलाम लेकर आए। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) उसे देखकर अपने आपको अपने दुपट्टे में छुपाने लगीं। लेकिन चूँकि कपड़ा छोटा था सिर ढाँपती थीं तो पैर खुल जाते थे और पैर ढाँपती थीं तो सिर खुल जाता था। हुज़ूर (ﷺ) ने यह देखकर फ़र्माया, बेटी! क्यूँ तक्लीफ़ करती हो मैं तो तुम्हारा वालिद हूँ और यह तुम्हारा गुलाम है।'' (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब फ़िल्अबदि यंज़ुर इला शअ़रे मौलातिही : 4106; व सनदुहू हसन; बैहक़ी : 7/95) इब्ने असाकिर की रिवायत में है कि उस गुलाम का नाम अब्दुल्लाह बिन मस्अदा था। यह फ़ुज़ारी थे सख़्त काले कलूटे। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने उन्हें परवरिश करके आज़ाद कर दिया था। सिफ़्फ़ीन की जंग में यह हज़रत मुआविया (रज़ि.) के साथ थे और हज़रत अली (रज़ि.) के बहुत मुख़ालिफ़ थे। मुस्नदे अहमद में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने औरतों से फ़र्माया तुममें से

जिस किसी का मुकातब गुलाम हो जिससे यह शर्त हो गई हो कि इतना इतना रुपया दे दे तो तू आज़ाद है। फिर उसके पास उतनी रक़म भी जमा हो गई हो तो चाहिए कि उससे पर्दा करे।'' (अबूदाऊद, किताबुल इत्क़, बाब अल्मुकातब युअद्दी बअ्ज़ किताबति फ़युअजिज़ औ यमूत : 3928; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 1261; इब्ने माजा : 2520; अहमद : 6/289; मुस्नदे अबी यअ्ला : 2956; बैहक़ी : 10/327) फिर बयान फ़र्माया कि नौकर चाकर काम काज करने वाले उन मर्दों के सामने जो मर्दानगी नहीं रखते औरतों की ख़्वाहिश जिन्हें नहीं। यह वह लोग हैं जो सुस्त हो गए हैं, औरतों के काम के ही नहीं लेकिन वह मुख़न्नस और हीजड़े जो बदज़ुबान और बुराई फैलाने वाले होते हैं उनका यह हुक्म नहीं। जैसे कि बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में है कि ''एक ऐसा ही शख़्स हुज़ूर (ﷺ) के घर आया था चूँकि उसे उसी आयत के मातहत आपकी अज़्वाजे मुतह्हरात ने समझा, उसे मना न किया था इत्तिफ़ाक़ से उसी वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) आ गए। उस वक़्त वह हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के भाई अब्दुल्लाह (रज़ि.) से कह रहा था कि अल्लाह तआला जब ताइफ़ को फ़तह कराएगा तो मैं तुझे ग़ीलान की लड़की दिखाऊँगा कि आते हुए उसके पेट पर चार सिलवटें पड़ती हैं और वापिस जाते हुए आठ नज़र आती हैं। उसे सुनते ही हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''ख़बरदार! ऐसे लोगों को हर्गिज़ न आने दिया करो। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वतुत्ताइफ़ फ़ी शव्वालि सनति सिमान : 4324; सहीह मुस्लिम : 2180, 2181; अबूदाऊद : 4929; इब्ने माजा : 1902; अहमद : 6/290; मुस्नदे अबी यअ्ला : 6960) उससे पर्दा कर लो।'' चुनाँचे उसे मदीना से निकाल दिया गया। बैदाअ में यह रहने लगा, वहाँ से जुम्आ के दिन आ जाता और लोगों से खाने पीने को कुछ ले जाता।'' छोटे बच्चों के सामने होने की इजाज़त है जो अब तक औरतों के ख़ास औसाफ़ से वाक़िफ़ न हों। औरतों पर उनकी ललचाई नज़रें न पड़ती हों। हाँ! जब वह इस उम्र को पहुँच जाएँ कि उनमें तमीज़ आ जाए औरतों की ख़ूबियाँ उनकी नज़रों में जचने लगें, ख़ूबसूरत बदसूरत का फ़र्क़ मालूम कर लें फिर उनसे भी पर्दा है भले वह पूरे जवान न भी हुए हों। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, लोगों! औरतों के पास जाने से बचो। पूछा गया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! देवर जेठ? आपने फ़र्माया, ''वह तो मौत है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब ला यख़्लून रजुलुन बि इमरातुन इल्ला ज़ू महरम...: 5232; सहीह मुस्लिम : 2172; तिर्मिज़ी : 2171; अहमद : 4/149; इब्ने हिब्बान : 5588; बैहक़ी : 7/90) फिर फ़र्माया कि औरतें अपने पैरों को ज़मीन पर ज़ोर ज़ोर से मारकर न चलें। जाहिलियत में अक्सर होता था कि वह ज़ोर से पैर ज़मीन पर रखकर चलती थीं ताकि पैर का ज़ेवर बजे। इस्लाम ने इसे मना क़रार दिया। पस औरत को हर एक ऐसी हरकत मना है जिससे उसका कोई छुपा हुआ सिंगार खुल जाए। पस उसे घर से इत्र और ख़ुश्बू लगाकर बाहर निकलना भी ममनूअ है। तिर्मिज़ी में है कि ''हर आँख ज़ानिया है। औरत जब इत्र लगाकर फूल पहनकर महकती हुई मर्दों की मज्लिस के पास से गुज़रे तो वह ऐसी और ऐसी है यानी ज़ानिया है।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़ी कराहियति ख़ुरूजिल मर्अतु मुतअत्तरतन : 2786; व सनदुहू हसन; अहमद : 4/141; इब्ने माजा : 4424; हाकिम : 2/396) अबूदाऊद में है कि ''हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) को एक औरत ख़ुश्बू से महकती हुई मिली। आपने उससे पूछा क्या तू मस्जिद से आ रही है? उसने कहा, हाँ! फ़र्माया क्या तुमने ख़ुश्बू लगाई है? उसने कहा, हाँ! आपने फ़र्माया मैंने अपने हबीब अबुल

क़ासिम (ﷺ) से सुना है कि जो औरत इस मस्जिद में आने के लिए ख़ुश्बू लगाए उसकी नमाज़ नामक़्बूल है जब तक कि वह लौटकर जनाबत की तरह ग़ुस्ल न करे।''(अबूदाऊद, किताबुत्तरज्जुल, बाब फ़ी तीबिल मर्अतु लिल ख़ुरूज : 4174; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4002; नसाई : 5130; मुख़्तसरन अहमद : 2/246) तिर्मिज़ी में है कि ''अपनी ज़ीनत को ग़ैर जगह ज़ाहिर करने वाली औरत की मिसाल क़ियामत के उस अंधेरे जैसी है जिसमें नूर न हो।'' (तिर्मिज़ी, किताबुर्रिज़ाअ, बाब मा जाअ फ़ी कराहियति ख़ुरूजिन्निसाइ फ़िज़्ज़ीनत : 1167; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; मूसा बिन उबेदा रावी ज़ईफ़ है।) अबूदाऊद में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मर्दों औरतों को रास्ते में मिले जुले चलते हुए देखकर फ़र्माया, औरतों! तुम इधर उधर हो जाओ तुम्हें बीच राह में न चलना चाहिए। यह सुनकर औरतें दीवारों से लगी लगी चलने लगीं यहाँ तक कि उनके कपड़े दीवारों से रगड़ते थे।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी मश्यन्निसाइ मअर्रिजाल फ़ित्तरीक़ : 5272; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; शद्दाद रावी मज्हूल और उसका वालिद मस्तूर है।) फिर फ़र्माता है कि मोमिनों ! मेरा कहा मानो इन नेक सिफ़तों को ले लो जाहिलियत की बदख़स्लतों से रुक जाओ पूरी फ़लाह और नजात और कामयाबी उसी के लिए है जो अल्लाह का फ़र्मांबरदार हो उसके मनाकर्दा कामों से रुक जाता हो। अल्लाह तआला ही से हम मदद चाहते हैं।

***

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ
يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝٣٢ وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا
حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا
تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ
وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣٣ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ
اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٣٤

तर्जुमा : "तुममें से जो मर्द औरत तन्हा हों उनका निकाह कर दिया करो और अपने नेकबख़्त गुलाम लौण्डियों का भी। अगर वह मुफ़्लिस भी होंगे तो अल्लाह तआला उन्हें अपने फ़ज़्ल से अमीर बना देगा। अल्लाह तआला कुशादगी वाला और इल्म वाला है। (32) और उन लोगों को पाकदामन रहना चाहिए जो अपना निकाह करने का मक़्दूर नहीं रखते यहाँ तक कि अल्लाह तआला उन्हें अपने फ़ज़्ल से मालदार बना दे। तुम्हारे गुलामों में से जो कोई कुछ तुम्हें देकर आज़ादगी की तहरीर करानी चाहे तो तुम ऐसी तहरीर उन्हें कर दिया करो अगर तुमको उनमें कोई भलाई नज़र आती हो और अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है उसमें से उन्हें भी दो, तुम्हारी जो लौण्डियाँ पाकदामन रहना चाहती हैं। उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ायदे की ग़र्ज़ से बदकारी पर मजबूर न करो। और जो उन्हें मजबूर कर दे तो अल्लाह उन पर जबर के बाद बख़्शश देने वाला और मेहरबानी करने वाला है। (33) हमने तुम्हारी तरफ़ खुली और रोशन आयतें उतार दी हैं और उन लोगों की कहावतें जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं और परहेज़गारों के लिए नसीहत।" (34)

निकाह के अहकाम (आ. 32 से 34) : इसमें अल्लाह तआला ने बहुत से अहकाम बयान कर दिये हैं पहले निकाह का, उलमा (रह.) की एक जमाअत का ख़्याल है कि जो शख़्स निकाह की कुदरत रखता हो उस पर निकाह करना वाजिब है। हुज़ूर (ﷺ) का इर्शाद है कि "ऐ नौजवानों! तुममें से जो शख़्स निकाह की ताक़त रखता हो उसे निकाह कर लेना चाहिए। निकाह नज़र को नीची रखने वाला, शर्मगाह को बचाने वाला है और जिसे ताक़त न हो वह लाज़मी तौर पर रोज़े रखे। यही उसके लिए ख़सी होना है।"(सहीह बुख़ारी, किताबुन निकाह , बाब मल्लम यस्ततीउल बाअत फ़ल्यसुम : 5066; सहीह मुस्लिम : 1400; अबूदाऊद : 2046; तिर्मिज़ी : 1081; इब्ने माजा : 1845; अहमद : 1/378; इब्ने हिब्बान : 4026) सुनन में है कि "आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ज़्यादा औलाद जिनसे होने की उम्मीद हो उनसे निकाह करो ताकि नस्ल बढ़े। मैं तुम्हारे साथ और उम्मतों में फ़ख़्र करने वाला हूँ।" (अबूदाऊद, किताबुन्निकाह, बाब अन्नही अन तज़्वीजे मल्लम यलिदुन्निसाअ : 2050; वहुव हसन; नसाई : 3229; अहमद : 3/158; इब्ने हिब्बान : 4028; बैहक़ी : 7/81) एक रिवायत में है कि "यहाँ तक कि कच्चे गिरे हुए बच्चे की गिनती के साथ भी (अयामा) जमा है (अयिमुन) की। जौहरी (रह .) कहते हैं अहले लुग़त के नज़दीक बग़ैर बीवी का मर्द और बग़ैर शौहर वाली औरत को अय्यिम कहते हैं ख़्वाह वह शादीशुदा हो या ग़ैर शादीशुदा। फिर मज़ीद रग़बत दिलाते हुए फ़र्माता है कि अगर वह मिस्कीन भी होंगे तो अल्लाह तआला उन्हें अपने फ़ज़्लो करम से मालदार बना देगा ख़्वाह वह आज़ाद हों ख़्वाह गुलाम हों। (तब्री : 19/166) अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) का क़ौल है कि तुम निकाह के बारे में अल्लाह तआला का हुक्म मानो वह तुमसे अपना वादा पूरा करेगा। इब्ने मसऊद (रज़ि) फ़र्माते हैं अमीरी को निकाह में तलब करो। (तब्री : 19/166) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "तीन क़िस्म के लोगों की मदद का अल्लाह तआला के ज़िम्मे हक़ है निकाह करने वाला जो हरामकारी से बचने की निय्यत से निकाह करे वह लिखत लिख देने वाला गुलाम जिसका इरादा अदायगी का हो। वह ग़ाज़ी जो अल्लाह की राह में निकला हो।" (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल जिहाद, बाब मा जाअ फ़िल मुजाहिद

वन्नाकिह अल मुकातब व औनुल्लाहि इय्याहुम : 1655; व सनदुहू हसन; नसाई : 3220; इब्ने माजा : 2518; अहमद : 2/251; इब्ने हिब्बान : 4030; हाकिम : 2/160) इसी की ताईद में वह रिवायत है जिसमें है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस शख़्स का निकाह एक औरत से करा दिया जिसके पास सिवाय तहमद के और कुछ न था यहाँ तक कि लोहे की अंगूठी भी उसके पास से नहीं निकली थी। बावजूद उस फ़क़ीरी और मुफ़्लिसी के आपने उसका निकाह करा दिया और मुहर यह ठहराया कि जो कुरआन याद है अपनी बीवी को याद करा देना।" (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब तज़्वीजुल मअसर : 5087; सहीह मुस्लिम : 1425) यह इसी बिना पर कि नज़रें अल्लाह के फ़ज़्लो करम पर थीं कि वह मालिक इन्हें वुस्अत देगा और इतनी रोज़ी पहुँचाएगा कि उसे और उसकी बीवी को किफ़ायत हो। एक हदीस अक्सर लोग वारिद किया करते हैं कि "फ़क़ीरी में भी निकाह किया करो अल्लाह तआला तुम्हें ग़नी कर देगा।" मेरी निगाह से तो यह हदीस गुज़री नहीं, न किसी क़वी सनद से न ज़ईफ़ सनद से और न हमें ऐसी लापता रिवायत की इस मज़्मून में कोई ज़रूरत है क्योंकि कुरआन की इस आयत और इन हदीसों में यह चीज़ मौजूद है, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! फिर हुक्म दिया कि जिन्हें निकाह का मक़्दूर नहीं वह हरामकारी से बचें। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "ऐ नौजवान उम्र लोगों! तुममें से जो निकाह की वुस्अत रखते हों वह निकाह कर लें यह निगाह को नीची करने वाला शर्मगाह को बचाने वाला है और जिसे इसकी ताक़त न हो वह अपने ज़िम्मे रोज़ों का रखना ज़रूरी कर ले यही उसके लिए ख़स्सी होना है।' यह आयत मुत्लक़ है और सूरह निसाअ की इससे ख़ास है। यानी यह फ़र्मान (وَ مَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا)(4/निसाअ : 25) पस लौण्डियों से निकाह करने से बेहतर सब्र करना है इसलिए कि इस सूरत में औलाद पर गुलामी का हर्फ़ आता है । इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं कि जो मर्द किसी औरत को देखे और उसके दिल में ख़्वाहिश पैदा हो उसे चाहिए कि अगर उसकी बीवी मौजूद हैं तो उसके पास चला जाए वरना अल्लाह तआला की ख़ुदाई में नज़रें डाले और सब्र करे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे ग़नी कर दे। उसके बाद अल्लाह तआला उन लोगों से फ़र्माता है जो गुलामों के मालिक हैं कि अगर उनके गुलाम उनसे अपनी आज़ादगी की बाबत कोई तहरीर करना चाहें तो वह इंकार न करें। गुलाम अपनी कमाई से वह माल जमा करके अपने आक़ा को दे देगा और आज़ाद हो जाएगा। अक्सर उलमा फ़र्माते हैं कि यह हुक्म ज़रूरी नहीं फ़र्ज़ व वाजिब नहीं बल्कि बतौरे इस्तिहबाब के और ख़ैरख़्वाही के है। आक़ा को इख़्तियार है कि गुलाम जबकि कोई हुनर जानता हो और वह कहे कि मुझसे इतना इतना रुपया ले लो और मुझे आज़ाद कर दो तो उसे इख़्तियार है ख़्वाह इस क़िस्म का मुआहिदा करे या न करे। उलेमा (रह.) की एक जमाअत आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ को लेकर कहती है कि आक़ा पर वाजिब है कि जब उसका गुलाम उससे अपनी आज़ादी की बाबत तहरीर चाहे तो वह उसकी बाबत क़बूल कर ले। हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में हज़रत अनस (रज़ि.) के गुलाम सीरीन ने जो मालदार था उनसे दरख़्वास्त की कि मुझसे मेरी आज़ादी की किताबत (लिखत) कर लो। हज़रत अनस (रज़ि.) ने इंकार किया दरबारे फ़ारूक़ी में यह मुक़द्दमा गया आपने हज़रत अनस (रज़ि.) को हुक्म दिया और उनके न मानने पर कोड़े लगवाए और यही आयत तिलावत की यहाँ तक कि उन्होंने तहरीर लिखवा दी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मुकातब, बाब अल्मुकातब व नुजूमुहू फ़ी कुल्लि ...क़ब्ल व हदीस : 2560) अता (रह.) से दोनों क़ौल मरवी हैं। इमाम

शाफ़ेई (रह़.) का पहला क़ौल यही था लेकिन नया क़ौल यह है कि वाजिब नहीं। क्योंकि ह़दीस में है कि ''मुसलमान का माल बग़ैर उसकी दिली ख़ुशी के ह़लाल नहीं।'' (अह़मद : 5/72; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है। मुस्नदे अबी यअ़ला : 1570; दारे क़ुत्नी : 3/26; बैहक़ी : 6/100) इमाम मालिक (रह़.) फ़र्माते हैं कि यह वाजिब नहीं। मैंने नहीं सुना कि किसी इमाम ने किसी आक़ा को मजबूर किया हो कि वह अपने ग़ुलाम की आज़ादी की तह़रीर कर दे अल्लाह का यह हुक्म बतौर इजाज़त के है न कि बतौर वाजिब के । यही क़ौल इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का है। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) के नज़दीक मुख़्तार क़ौल वुजूब का है। ख़ैर से मुराद अमानतदारी सच्चाई माल और माल के ह़ासिल करने पर क़ुदरत वग़ैरह है। ह़ुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अगर तुम अपने इन ग़ुलामों में जो तुमसे मुकातिबत करना चाहें माल के कमाने की सलाह़ियत देखो तो उनकी उस ख़्वाहिश को पूरा कर दो, वरना नहीं क्योंकि उस सूरत में वह लोगों पर अपना बोझ डालेंगे। (अबूदाऊद फ़िल मरासील : 143; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) यानी इनसे सवाल करेंगे और रक़म पूरी करना चाहेंगे।'' उसके बाद फ़र्माया है कि उन्हें अपने माल में से कुछ दो। यानी जो रक़म ठहर चुकी है उसमें से कुछ माफ़ कर दो चौथाई या तिहाई या आधा या कुछ ह़िस्सा। यह मतलब भी बयान किया गय। है कि माले ज़कात से उनकी मदद करो। आक़ा भी और दूसरे मुसलमान भी उसे माले ज़कात दें ताकि वह मुक़र्ररा रक़म पूरी करके आज़ाद हो जाए। पहले ह़दीस गुज़र चुकी है कि जिन तीन क़िस्म के लोगों की मदद अल्लाह तआला पर बरह़क़ है उनमें से एक यह भी है। लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा मशहूर है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के ग़ुलाम अबू उमय्या ने मुकातिबा किया था। जब वह अपनी रक़म की पहली क़िस्त लेकर आया तो आपने फ़र्माया, जाओ अपनी इस रक़म में दूसरों से भी मदद तलब करो। उसने जवाब दिया कि अमीरुल मोमिनीन! आप आख़िरी क़िस्त तक तो मुझे ही मेह़नत करने दीजिए। फ़र्माया, नहीं! मुझे डर है कि कहीं अल्लाह तआला के इस फ़र्मान को हम छोड़ न बैठें कि उन्हें अल्लाह तआला का वह माल जो उसने तुम्हें दे रखा है। पस यह पहली क़िस्तें थीं जो इस्लाम में अदा की गईं। इब्ने उ़मर (रज़ि .) की आदत थी कि शुरू शुरू में आप न कुछ देते थे न माफ़ करते थे। क्योंकि ख़्याल होता था कि ऐसा न हो आख़िर में यह रक़म पूरी न कर सके तो मेरा दिया हुआ मुझे ही वापिस आ जाए। हाँ! आख़िरी क़िस्तें होतीं तो जो चाहते अपनी तरफ़ से माफ़ कर देते। एक ग़रीब मरफ़ूअ़ ह़दीस में है कि चौथाई छोड़ दो। (ह़ाकिम : 2/397; व सनदुहू ज़ईफ़ुन: अ़ता बिन साइब का इख़्तिलात से पहले यह रिवायत बयान करना साबित नहीं है। नीज़ यह रिवायत मौक़ूफ़ है।) लेकिन सही यही है कि वह ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का क़ौल है।

लौण्डियों को बदकारी पर मजबूर मत करो : फिर फ़र्माता है कि अपनी लौण्डियों से ज़बरदस्ती बदकारियाँ न कराओ। जाहिलियत के बदतरीन तरीक़ों में एक तरीक़ा यह भी था कि वह अपनी लौण्डियों को मजबूर करते थे कि वह ज़िनाकारी कराएँ और वह रक़म अपने मालिकों को दें। इस्लाम ने आकर इस बुरी रस्म को तोड़ा। मंक़ूल है कि ''यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के बारे में उतरी है वह ऐसा ही करता था ताकि रुपया भी मिले और लौण्डीज़ादों से शाने रियासत भी बढ़े, उसकी लौण्डी का नाम मआ़ज़ा था।'' और रिवायत में है कि ''उसका नाम मुसैका था और थी यह इस्लाम वाली। तो यह

बदकारी से इंकार करती थी। जाहिलियत में तो यह काम चलता रहा यहाँ तक उससे नाजाइज़ औलाद भी हुई। लेकिन इस्लाम लाने के बाद उसने इंकार कर दिया। उस पर उस मुनाफ़िक़ ने उसे ज़द व कूब किया पस यह आयत उतरी। (बज़्ज़ार, व सनदुहू मौज़ूअ; मुहम्मद बिन हज्जाज रावी झूठा है।)मरवी है कि ''बद्र का एक कुरैशी क़ैदी अब्दुल्लाह बिन उबय के पास था वह चाहता था कि उसकी लौण्डी से मिले। लौण्डी इस्लाम लाने की वजह से हरामकारी से बचती थी, अब्दुल्लाह बिन उबय की ख़्वाहिश थी कि यह उस कुरैशी से मिले इसलिए उसे मजबूर करता था और मारता पीटता था। पस यह आयत उतरी।'' और रिवायत में है कि ''यह सरदारे मुनाफ़िक़ीन अपनी उस लौण्डी को अपने मेहमानों की ख़ातिरदारी के लिए भेज दिया करता था। इस्लाम लाने के बाद उस लौण्डी से जब यह इरादा किया गया तो उसने इंकार कर दिया और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से अपनी यह मुसीबत बयान की। हज़रत अबूबक्र (रज़ि .) ने दरबारे मुहम्मदी में यह बात पहुँचाई। आपने हुक्म दिया कि उस लौण्डी को उसके यहाँ न भेजो। उसने लोगों में शोर मचाना शुरू कर दिया कि देखो! मुहम्मद (ﷺ) हमारी लौण्डियों को छीन लेता है। इस पर यह आसमानी हुक्म उतरा।'' एक रिवायत में है कि ''मुसैका और मआज़ा दो लौण्डियाँ दो शख़्सों की थीं जो उनसे बदकारी कराते थे। इस्लाम के बाद मुसैका और उसकी माँ ने आकर हुज़ूर (ﷺ) से शिकायत की इस पर यह आयत उतरी।'' यह जो फ़र्माया गया है कि अगर वह लौण्डियाँ पाकदामनी का इरादा करें इससे यह मतलब न लिया जाए कि अगर इनका इरादा यह न हो तो फिर कोई हर्ज नहीं। क्योंकि उस वक़्त वाक़िया यही था इसलिए यूँ फ़र्माया गया। पस अक्सरियत और ग़ल्बा के तौर पर यह फ़र्माया गया है कोई क़ैद और शर्त नहीं है। इससे ग़र्ज़ उनकी यह थी कि माल हासिल हो औलादें हों जो लौण्डियाँ ग़ुलाम बनें। हदीस में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पछने लगाने की उज्रत, बदकारी की उज्रत, काहिन की उज्रत से मना कर दिया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब सम्नुल कल्ब : 2237; सहीह मुस्लिम : 1567; बिदूनि ज़िक्रुल हिजाम लेकिन इसका ज़िक्र सहीह मुस्लिम 1568 में है।) और रिवायत में है कि ''ज़िना की ख़र्ची और पछने लगाने वाले की कमाई और कुत्ते की क़ीमत ख़बीस है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाक़ात, बाब तहरीमु सम्निल कल्ब व हल्वानुल काहिन व महरुल बग़्य : 1568) फिर फ़र्माता है जो शख़्स इन लौण्डियों पर जबर करे तो उन्हें तो अल्लाह तआला उनकी मजबूरी की वजह से बख़्श देगा और उनके मालिकों को जिन्होंने उन पर दबाव ज़ोर ज़बरदस्ती डाली थी उन्हें पकड़ लेगा। इस सूरत में यही गुनहगार रहेंगे। बल्कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि) की क़िराअत में रहीम के बाद (व इस्महुन्ना अला मन अक्रहुन्न) (तब्री : 19/175) है यानी उस हालत में जबर और ज़बरदस्ती करने वालों पर गुनाह है। मरफ़ूअ हदीस में है कि ''अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत की ख़ता से भूल से और जिन कामों पर वह मजबूर कर दिये जाए उन पर ज़बरदस्ती की जाए उनसे दरगुज़र फ़र्मा लिया है।'' (इब्ने माजा, किताबुत्तलाक़, बाब तलाक़ुल मकरूह वन्नासी : 2043; सनदुहू ज़ईफ़ुन; वल हदीसु सहीह बिश्शवाहिद) इन अहकाम को तफ़्सीलवार बयान करने के बाद फ़र्मान होता है कि हमने अपने पाक कलाम कुरआने करीम की यह रोशन व वाज़ेह आयात तुम्हारे सामने बयान कर दीं। अगले लोगों के वाक़ियात भी तुम्हारे सामने आ चुके कि उनकी मुख़ालिफ़त हक़ का अंजाम क्या और कैसा हुआ? वह एक अफ़साना बना दिये गए और आने वालों के लिए एक इब्रतनाक वाक़िया बना दिये गए

कि मुत्तक़ी उनसे इब्रत हासिल करें और अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियों से बचें, हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते थे कुरआन में तुम्हारे इख़्तिलाफ़ के फ़ैसले मौजूद हैं तुमसे अगलों की ख़बरें मौजूद हैं बाद में होने वाले उमूर के अहवाल बयान हैं। यह मुफ़स्सल है बकवास नहीं। इसे जो भी बेपरवाही से छोड़ देगा उसे अल्लाह तआला बर्बाद कर देगा और जो इसके सिवा दूसरी किताब में तलाश करेगा उसे अल्लाह तआला गुमराह कर देगा। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिल कुरआन : 2906; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हारिस अअवर रावी ज़ईफ़ है।)

***

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۳۵﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला नूर है आसमानों का और ज़मीन का उसके नूर की मिसाल एक ताक़ के है जिसमें चराग़ हो। और चराग़ शीशा की क़िंदील में हो और शीशा मिस्ल चमकते हुए रोशन सितारे के हो वह चराग़ एक बाबरकत दरख़्त जैतून के तेल से जलाया जाता हो जो दरख़्त न मश्रिक़ी है न मग़्रिबी। ख़ुद वह तेल क़रीब है कि आप ही रोशनी देने लगे भले उसे मुत्लक़न आग लगी ही न हो नूर पर नूर है। अल्लाह तआला अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई करता है जिसे चाहे लोगों के समझाने को यह मिसालें अल्लाह तआला बयान कर रहा है। अल्लाह तआला हर चीज़ के हाल से बख़ूबी वाक़िफ़ है।" (35)

अल्लाह तआला के नूर की ख़ूबसूरत मिसाल (आ. 35) : इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला हादी है आसमान वालों का और ज़मीन वालों का।" (तब्री : 19/177) वही इन दोनों में सूरज चाँद और सितारों की तदबीर करता है। (तब्री : 19/177) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अल्लाह का नूर हिदायत है। इब्ने जरीर (रह.) इसी को इख़्तियार करते हैं। हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) फ़र्माते हैं उसके नूर की मिसाल यानी उसका नूर रखने वाले मोमिन की मिसाल जिसके सीने में ईमान व कुरआन है उसकी मिसाल अल्लाह तआला ने बयान की है, पहले अपने नूर का ज़िक्र किया फिर मोमिन की नूरानियत का कि अल्लाह पर ईमान रखने वाले के नूर की मिसाल। बल्कि हज़रत उबय (रज़ि.) उसको इस तरह पढ़ते थे (मसलु नूरि मन आमना बिही) इब्ने अब्बास (रज़ि.) का इस तरह पढ़ना भी मरवी है

(कज़ालिका नूरु मन आमना बिल्लाहि) कुछ किराअत में (अल्लाहु नव्वर) है यानी उसने आसमान व ज़मीन को नूरानी बना दिया है। सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं, उसी के नूर से आसमान व ज़मीन रोशन हैं। सीरत मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि जिस दिन अहले ताइफ़ ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को बहुत तक्लीफ़ पहुँचाई थी। आपने अपनी दुआ में फ़र्माया था (अऊज़ु बिनूरि वज्हिकल्लज़ी अश्रक़त लहुज़्ज़ुलुमातु व सलह अलैहि अम्रुद्दुनिया वल आख़िरति अय्यंहिल्ला बी अज़बुका औ यन्ज़िला बी सख़तुका लकल उत्बा हत्ता तर्ज़ा वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह) इस दुआ में है कि ''मैं तेरे चेहरे के उस नूर की पनाह में आ रहा हूँ जो अंधेरियों को रोशन कर देता है और जिस पर दुनिया और आख़िरत की सलाहियत मौक़ूफ़ है, आख़िर तक।'' सहीहैन की हदीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) रात को तहज्जुद के लिए उठते तब यह फ़र्माते कि ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए सब तअरीफ़ सज़ावार है तू आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनमें है सबका नूर है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब अत्तहज्जुद बिल्लैलि : 1120; सहीह मुस्लिम : 769; अहमद : 1/358; इब्ने हिब्बान : 2597) इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं तुम्हारे रब के यहाँ रात और दिन नहीं उसके चेहरे के नूर से उसके अर्श का नूर है। (नूरिही) की ज़मीर का मरजअ कुछ के नज़दीक तो लफ़्ज़े अल्लाह ही है यानी अल्लाह तआला की हिदायत जो मोमिन के दिल में है उसकी मिसाल यह है। (तब्री : 19/179) और कुछ के नज़दीक मोमिन है जिस पर स्याक़े कलाम की दलालत है। यानी मोमिन के दिल के नूर की मिसाल मिस्ल ताक़ के है जैसे फ़र्मान है कि एक शख़्स है जो अपने रब की दलील और साथ ही शाहिद लिए हुए है, आख़िर तक। (11/हूद : 17) पस मोमिन के दिल की सफ़ाई को बुलूर के फ़ानूस से मुशाबेहत दी और फिर क़ुरआन और शरीअत से जो मदद उसे मिलती रहती है उसकी तशबीह दी ज़ैतून के उस तेल से जो ख़ुद साफ़ शफ़्फ़ाफ़ चमकीला और रोशन है। पस ताक़ और ताक़ में चराग़ और वह भी रोशन चराग़। यहूदियों ने ऐतिराज़न कहा था कि अल्लाह तआला का नूर आसमानों के पार कैसे होता है? तो मिसाल देकर समझाया गया कि जैसे फ़ानूस के शीशे से रोशनी। पस फ़र्माया कि अल्लाह तआला नूर है आसमानों का और नूर है ज़मीन का। मिश्कात के मअनी घर के ताक़ के हैं। यह मिसाल अल्लाह तआला ने अपनी फ़र्मांबरदारी की दी है और अपनी ताअत को नूर फ़र्माया है। फिर इसके और भी बहुत से नाम हैं। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि लुग़ते हब्शा में इसे ताक़ कहते हैं। (हाकिम : 2/397) कुछ कहते हैं ऐसा ताक़ जिसमें कोई और सूराख़ वग़ैरह न हो। फ़र्माते हैं इसी में क़िंदील रखी जाती है पहला क़ौल ज़्यादा क़वी है यानी क़िंदील रखने की जगह। चुनाँचे क़ुरआन में भी है कि उसमें चराग़ है। पस मिस्बाह से मुराद नूर है यानी क़ुरआन और ईमान जो मुसलमान के दिल में होता है। सुद्दी (रह.) कहते हैं चराग़ मुराद है। फिर फ़र्माया, यह रोशनी जिसमें बहुत ही जोत है यह साफ़ क़िंदील में है। यह मिसाल है मोमिन के दिल की। फिर वह क़िंदील ऐसी है जैसे मोती जैसा चमकीला रोशन सितारा। इसकी दूसरी क़िराअत दिरइय्युन भी है यह माख़ूज़ है (दर्आ) से जिसके मअनी दफ़ा के हैं जब कोई सितारा टूटता है उस वक़्त वह बहुत रोशन होता है और जो सितारे ग़ैर मअरूफ़ हैं उन्हें भी अरब दरारी कहते हैं। मतलब चमकदार और रोशन सितारे हैं जो ख़ूब ज़ाहिर हो और बड़ा हो। फिर उस चराग़ में तेल भी मुबारक दरख़्त ज़ैतून का हो। (ज़ैतूनतिन) का लफ़्ज़ बदल है या अत्फ़े बयान है । फिर वह ज़ैतून का दरख़्त भी न मश्रिक़ी कि शुरू दिन से उस पर धूप आ जाए और न

मग़्रिबी है कि ग़ुरूबे सूरज से पहले उस पर से साया हट जाए बल्कि वस्त जगह में है कि सुबह़ से शाम तक सूरज की साफ़ रोशनी में रहे।

पस उसका तेल भी बहुत साफ़ चमकदार और मुअ़तदिल होता है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मतलब यह है कि वह दरख़्त मैदान में से कोई दरख़्त या पहाड़ या ग़ार या कोई और चीज़ उसे छुपाये हुए नहीं है। इस वजह से उस दरख़्त का तेल बहुत साफ़ होता है। इक्रिमा (रह़.) फ़र्माते हैं कि सुबह़ से शाम तक खुली हवा और साफ़ धूप उसे पहुँचती रहती है। क्योंकि वह खुले मैदान में बीच की जगह है इसी वजह से उसका तेल बहुत पाक साफ़ और रोशन चमकदार होता है और उसे न मश्रिक़ी कह सकते हैं, न मग़्रिबी। ऐसा दरख़्त बहुत सरसब्ज़ खुला होता है। पस जैसे यह दरख़्त आफ़तों से बचा हुआ होता है उसी त़रह़ मोमिन फ़ित्नों से बचा हुआ रहता है, अगर किसी फ़ित्ने की आज़माइश में पड़ता भी है तो अल्लाह तआ़ला उसे साबित क़दम रखता है। पस उसे चार सिफ़तें क़ुदरत दे देती है बात में सच हुक्म में अ़दल, मुसीबत पर स़ब्र, नेअ़मत पर शुक्र फिर वह तमाम और इंसानों में ऐसा होता है जैसे कोई ज़िन्दा जो मुर्दों में है। ह़सन बस़री (रह़.) फ़र्माते हैं कि अगर यह दरख़्त दुनिया में ज़मीन पर होता तो ज़रूरी था कि मश्रिक़ी होता या मग़्रिबी लेकिन यह तो नूरे इलाही की मिसाल है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि यह मिसाल है नेक मर्द की जो न यहूदी है न नस़रानी। इन सब क़ौल से बेहतरीन क़ौल पहला क़ौल है कि वह दरम्याना ज़मीन में है कि सुबह़ से शाम तक बेरोक हवा और धूप पहुँचती है क्योंकि चारों त़रफ़ से कोई आड़ नहीं तो ला मह़ाला ऐसे दरख़्त का तेल बहुत ज़्यादा साफ़ होगा और लत़ीफ़ और चमकदार होगा। इसीलिए फ़र्माया कि ख़ुद वह तेल इतना लत़ीफ़ है कि गोया बग़ैर जलाए रोशनी दे नूर पर नूर है यानी ईमान का नूर फिर उस पर नेक अ़मल का नूर। (त़ब्री : 19/182) ख़ुद ज़ैतून का तेल रोशन फिर वह जल रहा है और रोशनी दे रहा है पस उसे पाँच नूर ह़ासिल हो जाते हैं उसका कलाम नूर है उसका अ़मल नूर है उसका आना नूर है उसका जाना नूर है और उसका आख़िरी ठिकाना नूर है यानी जन्नत। कअ़ब (रह़.) से मरवी है कि यह मिसाल है रसूलुल्लाह (ﷺ) की कि आपकी नबुव्वत इस क़द्र ज़ाहिर है कि भले आप ज़ुबानी न भी कहें ताहम लोगों पर ज़ाहिर हो जाए। जैसे यह ज़ैतून कि बग़ैर रोशन किये रोशन है तो दो नूर यहाँ जमा हैं एक ज़ैतून का एक आग का। उनके मज्मूअ़े से रोशनी ह़ासिल होती है इसी त़रह़ नूरे क़ुरआन नूरे ईमान जमा हो जाते हैं और मोमिन का दिल रोशन हो जाता है। अल्लाह तआ़ला जिसे पसंद करता है अपनी हिदायत की राह लगा देता है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ात को एक अंधेरे में पैदा किया फिर उस दिन उन पर अपना नूर डाला जिसे वह नूर पहुँचा उसने राह पाई और जो मह़रूम रहा वह गुमराह हुआ। इसीलिए मैं कहता हूँ कि क़लम अल्लाह तआ़ला के इल्म के मुताबिक़ चलकर सूख गया।'' (मुस्नद अह़मद : 2/176; ह़ : 6644: व सनदुहू स़ह़ीह़ुन; इब्ने ह़िब्बान : 6169) अल्लाह तआ़ला ने मोमिन के दिल की हिदायत की मिसाल नूर से देकर फिर फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला यह मिसालें लोगों के समझने के लिए बयान कर रहा है। उसके इल्म में भी कोई उस जैसा नहीं वह हिदायत व ज़लालत के हर मुस्तह़िक़ को बख़ूबी जानता है। मुस्नद की एक ह़दीस में है कि ''दिलों की चार क़िस्में हैं एक तो साफ़ और रोशन एक ग़िलाफ़दार बँधा हुआ एक उल्टा और

औंधा एक फिरा हुआ उल्टा सीधा। पहला दिल तो मोमिन का दिल है जो नूरानी होता है और दूसरा दिल काफ़िर का दिल है और तीसरा दिल मुनाफ़िक़ का दिल है कि उसने जाना फिर अंजान हो गया पहचान लिया फिर मुंकिर हो गया। चौथा दिल वह दिल है जिसमें ईमान भी है निफ़ाक़ भी है। ईमान की मिसाल तो उसमें मिस्ल तरकारी के दरख़्त के है कि अच्छा पानी उसे बढ़ा देता है और निफ़ाक़ की मिसाल उसमें मिस्ल फोड़े के है कि ख़ून पीप उसे उभार देता है अब जो ग़ालिब आ गया वह उस दिल पर छा जाता है।'' (अहमद : 3/17; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्मुअजमुस्सग़ीर : 1075)

***

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ
﴿٣٦﴾ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ
الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ
مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

तर्जुमा : ''उन घरों में जिनके अदब व एहतिराम का और नामे बारी तआला वहाँ लिये जाने का हुक्मे इलाही है वहाँ सुबह शाम अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करते हैं। (36) ऐसे लोग जिन्हें तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह तआला के ज़िक्र से और नमाज़ के क़ायम करने और ज़कात देने से ग़ाफ़िल नहीं करती उस दिन से डरते रहते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें उलट पलट जाएँगी। (37) इस इरादे से कि अल्लाह उन्हें उनके आमाल का बेहतरीन बदला दे बल्कि अपने फ़ज़्ल से और कुछ ज़्यादती अता करे। अल्लाह तआला जिसे चाहे बेशुमार रोज़ियाँ देता है।'' (38)

आदाबे मस्जिद (आ. 36 से 38) : मोमिन के दिल की और उसमें जो हिदायत व इल्म है उसकी मिसाल ऊपर वाली आयत में उस रोशन चराग़ से दी थी जो शीशा की हाँडी में हो और साफ़ ज़ैतून के रोशन तेल से जल रहा हो। इसलिए यहाँ उसकी जगह बयान की कि हो भी उन मकानात यानी मस्जिदों में जो सबसे ज़्यादा बेहतरीन और बारी तआला की महबूब जगहें हैं जहाँ उसकी इबादत की जाती है और उसकी तौहीद बयान होती हे जिनकी निगहबानी का और जिनके पाक साफ़ रखने का और बेहूदा क़ौल फ़ेअल से जिनके बचाने का हुक्म बारी तआला है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कि (अन तुर्फ़अ) के मअनी इसमें बेहूदगी न करने के हैं। (तब्री : 19/191) क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि मुराद इससे यही मस्जिदें हैं जिनके

बनाने का और आबादी का और अदब का और पाकीज़गी का हुक्मे बारी तआला है। कअब (रह.) कहा करते थे कि तौरात में लिखा हुआ है कि ज़मीन में मेरे घर मस्जिदें हैं जो भी बा वुज़ू मेरे घर पर मेरी मुलाक़ात के लिए आएगा मैं उसकी इज़्ज़त करूँगा। हर उस शख़्स पर जिससे मिलने के लिए कोई उसके घर आए हक़ है कि वह उसकी तक्रीम करे। (तफ़्सीर इब्ने अबी हातिम) मस्जिदों के बनाने और उनका अदब व एहतिराम करने उन्हें ख़ुश्बूदार और पाक साफ़ रखने के बारे में बहुत सी हदीसें वारिद हुई हैं जो बिहम्दिल्लाह मैंने एक मुस्तक़िल किताब में लिखी हैं यहाँ भी उनमें से थोड़ी बहुत वारिद करता हूँ। अल्लाह तआला मदद करे उसी पर हमारा भरोसा और तवक्कल है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ामंदी हासिल करने की निय्यत से मस्जिद बनाए अल्लाह तआला उसके लिए उसी जैसा घर जन्नत में बनायेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब मम् बना मस्जिदन : 450; सहीह मुस्लिम : 533; तिर्मिज़ी : 318; अहमद : 1/61; इब्ने हिब्बान : 1609; बैहक़ी : 2/437) फ़र्माते हैं "नाम अल्लाह तआला के ज़िक्र किये जाने के लिए जो शख़्स मस्जिद बनाए अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक घर बनाता है।" (इब्ने माजा, किताबुल मसाजिद, बाब मम बना लिल्लाहि मस्जिदन : 735; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सनद मुंक़तअ है। उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत मुर्सल है। अहमद : 1/20; इब्ने हिब्बान : 1608) हुज़ूर (ﷺ) ने हुक्म दिया कि "महल्लों में मस्जिदें बनाई जाएँ और पाक साफ़ और ख़ुश्बूदार रखी जाएँ।" (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब इत्तिख़ाज़ुल मसाजिद फ़िद्दूर : 455; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 594; इब्ने माजा : 759; अहमद : 6/279; इब्ने हिब्बान : 1634; बैहक़ी : 2/440) हज़रत उमर (रज़ि.) का फ़र्मान है कि "लोगों के लिए मस्जिदें बनाओ जहाँ उन्हें जगह मिले लेकिन सुर्ख़ या ज़र्द रंग से बचो ताकि लोग फ़ित्ने में न पड़ जाएँ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब बयानुल मस्जिद क़ब्ल हदीस : 446) एक ज़ईफ़ सनद से मरफ़ूअन मरवी है कि "जब तक किसी क़ौम ने अपनी मस्जिदों को टीपटाप वाली नक़्शो निगार और रंग रोग़न वाली न बनाया उनके आमाल बुरे नहीं हुए।" (इब्ने माजा, किताबुल मसाजिद, बाब तश्यीदुल मसाजिद : 741; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, जबारा बिन मुग़्लिस कज़्ज़ाब और लैस बिन अबी सुलैम रावी ज़ईफ़ है।) आप फ़र्माते हैं "मुझे मस्जिदों को बुलंद व बाला और पुख़्ता बनाने का हुक्म नहीं दिया गया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) रावी हदीस फ़र्माते हैं कि तुम यक़ीनन मस्जिदों को मुज़य्यन मुनक़्क़श और रंगदार करोगे जैसे कि यहूदो नसारा ने किया।" (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब फ़ी बिनाइल मसाजिद : 448; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी मुदल्लस रावी के सुनने की सराहत नहीं है।) फ़र्माते हैं, "क़ियामत क़ायम न होगी जब तक कि लोग मस्जिदों के बारे में आपस में एक दूसरे पर फ़ख़्र व ग़ुरूर न करने लगें।"(अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब फ़ी बिनाइल मसाजिद : 449; व सनदुहू सहीहुन;य नसाई : 690; इब्ने माजा : 739; अहमद : 3/145; इब्ने हिब्बान : 1613; बैहक़ी : 2/439) "एक शख़्स मस्जिद में अपने ऊँट को ढूँढता हुआ आया और कहने लगा, है कोई जो मुझे मेरे लाल रंग ऊँट का पता दे? आपने बद्दुआ की कि अल्लाह करे तुझे न मिले, मस्जिदें तो जिस मतलब के लिए बनाई गई हैं उसी काम के लिए हैं।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब अन्नही अन नशदिज़्ज़ालत फ़िल मस्जिद... : 1569; इब्ने माजा : 765; इब्ने हिब्बान : 1652) हुज़ूर (ﷺ) ने मस्जिदों में व्यापार, तिजारत ख़रीदो

फ़रोख़्त करने से और वहाँ अशआर के गाये जाने से मना कर दिया है।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब अत्तहल्लक़ यौमल जुम्अति क़ब्लस्सलात : 1079; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 322; नसाई : 715; इब्ने माजा : 749; अहमद : 2/178) फ़र्मान है कि ''जिसे मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त करते हुए देखो तो कहो कि अल्लाह तेरी तिजारत में नफ़ा न दे और जब किसी को गुमशुदा जानवर मस्जिद में तलाश करता हुआ पाओ तो कहो कि अल्लाह करे न मिले।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल बुयूअ, बाब अन्नही अनिल बैअ फ़िल मस्जिद : 1321; वसनदुहू सहीहुन; इब्ने हिब्बान : 1650; हाकिम : 2/52; इसकी असल सहीह मुस्लिम 568 वग़ैरह में मौजूद है।) इर्शाद है कि ''बहुत सी बातें मस्जिद के लायक़ नहीं। मस्जिद को रास्ता न बनाया जाए। मस्जिद में हथियार न निकाले जाएँ। मस्जिद में तीर कमान पर न लगाया जाए, न तीर फैलाये जाएँ। न कच्चा गोश्त लाया जाए, न यहाँ हद मारी जाए, न यहाँ बातें और क़िस्से कहे जाएँ, न इसे बाज़ार बनाया जाए।'' (इब्ने माजा, किताबुल मसाजिद, बाब मा यक्रहू फ़िल मसाजिद : 748; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा इसकी सनद में ज़ेद बिन जुबैर मतरूक रावी है है (अत्तक़रीब :1/273; रक़म : 166) फ़र्मान है कि ''हमारी मस्जिदों से अपने बच्चों को और दीवानों को और ख़रीदो फ़रोख़्त को और लड़ाई झगड़े को और बुलंद आवाज़ से बोलने को और हदों के जारी करने को और तलवारों के नंगी करने को रोको इनके दरवाज़ों पर वुज़ू वग़ैरह की जगह बनाओ और जुम्आ के दिन इन्हें ख़ुश्बू से महका दो।'' (इब्ने माजा, किताबुल मसाजिद, बाब मा यक्रहू फ़िल मसाजिद : 749; व सनदुहू मौज़ूउन अबू सईद मस्लूब कज़्ज़ाब और हारिस बिन नबहान मतरूक रावी है।) कुछ उलमा ने बिला ज़रूरते शदीद मस्जिदों को गुज़रगाह बनाना मकरूह कहा है। एक असर में है कि ''जो शख़्स बग़ैर नमाज़ पढ़े मस्जिद से गुज़र जाए फ़रिश्ते उस पर तअज्जुब करते हैं।'' हथियारों और तीरों से जो मना किया, फ़र्माया यह इसलिए कि मुसलमान वहाँ बकसरत जमा होते हैं ऐसा न हो कि किसी के लग जाए, इसीलिए हुज़ूर (ﷺ) का हुक्म है कि ''कोई तीर या नेज़ा लेकर गुज़रे तो उसे चाहिए कि उसका फल अपने हाथ में रखे ताकि किसी को नुक़्सान न पहुँचे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब युअख़ज़ बि नसूलिल नबल इज़ा मर्र फ़िल मस्जिद : 451, 452; सहीह मुस्लिम : 2614, 2615; अबूदाऊद : 2587; इब्ने माजा : 3778; अहमद : 4/410; इब्ने हिब्बान : 1649; बैहक़ी : 8/23) कच्चा गोश्त लाना इसलिए मना है कि ख़ौफ़ है उसमें से ख़ून न टपके, जैसे कि हाइज़ा औरत को भी इसी वजह से मस्जिद में आने की मुमानिअत कर दी गई है। मस्जिद में हद लगाना और क़िसास लेना इसलिए मना किया गया कि कहीं ऐसा न हो वह शख़्स मस्जिद को नापाक कर दे। बाज़ार बनाना इसलिए मना है कि वह ख़रीदो फ़रोख़्त की जगह है और मस्जिद में यह दोनों बातें मना हैं क्योंकि मस्जिदें अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ की जगह हैं जैसे कि हुज़ूर (ﷺ) ने उस आराबी से फ़र्माया था जिसने मस्जिद के किसी गोशे में पेशाब कर दिया था कि ''मस्जिदें इसलिए नहीं बनीं, बल्कि वह अल्लाह तआला के ज़िक्र और नमाज़ की जगह है फिर उसके पेशाब पर एक बड़ा डोल पानी का बहाने का हुक्म दिया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब तर्कन्नबी (ﷺ) वन्नासुल आराबी ...: 219; सहीह मुस्लिम : 285; इब्ने माजा : 528; अहमद : 3/226; इब्ने हिब्बान : 1401) दूसरी हदीस में है कि ''अपने बच्चों को अपनी मस्जिदों से रोको इसलिए कि खेलकूद ही उनका काम है और मस्जिद में यह

मुनासिब नहीं।'' चुनाँचे फ़ारूके आज़म (रज़ि.) जब किसी बच्चे को मस्जिद में खेलता हुआ देख लेते तो उसे कोड़े से पीटते और इशा की नमाज़ के बाद मस्जिद में किसी को न रुकने देते। दीवानों को भी मस्जिदों से रोका गया क्योंकि वह बेअक़्ल होते हैं और लोगों के मज़ाक़ का ज़रिया होते हैं और मस्जिद उस तमाशे के लायक़ नहीं। और यह भी है कि उनकी नजासत वग़ैरह का डर है। तिजारत से रोका गया क्योंकि वह ज़िक्रे इलाही से (रोकने वाला है) है झगड़े और झगड़ों की चकूतियाँ इसलिए मना कर दी गईं कि उसमें आवाज़ें बलंद होती हैं ऐसे अल्फ़ाज़ भी निकल जाते हैं जो आदाबे मस्जिद के ख़िलाफ़ हैं। अक्सर उलमा का क़ौल है कि फ़ैसले मस्जिद में न किये जाएँ इसीलिए इस जुम्ला के बाद बुलंद आवाज़ से मना किया। साइब बिन यज़ीद कुंदी (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं मस्जिद में खड़ा था कि अचानक मुझ पर किसी ने कंकर फेंका, मैंने देखा तो वह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) थे, मुझसे कहने लगे जाओ उन दोनों शख़्सों को मेरे पास लाओ। जब मैं आपके पास उन्हें लाया तो आपने पूछा, तुम कौन हो? या पूछा कि तुम कहाँ के हो? उन्होंने कहा, हम ताइफ़ के रहने वाले हैं। आपने फ़र्माया अगर तुम यहाँ के रहने वाले होते तो मैं तुम्हें सज़ा देता तुम मस्जिदे नबवी में ऊँची ऊँची आवाज़ों से बोल रहे हो? (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब रफ़इस्सौति फ़िल मस्जिद : 470) एक शख़्स की ऊँची आवाज़ सुनकर जनाब फ़ारूक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया था जानता भी है कि तू कहाँ है? (नसाई) और मस्जिद के दरवाज़ों पर वुज़ू की और पाकीज़गी हासिल करने की जगह बनाने का हुक्म दिया। मस्जिदे नबवी के क़रीब ही कूएँ थे जिनमें से पानी खींचकर पीते थे और वुज़ू और पाकीज़गी हासिल करते थे। जुम्अे के दिन उसे ख़ुश्बूदार करने का हुक्म हुआ क्योंकि उस दिन लोग बकसरत जमा होते हैं। चुनाँचे अबू यअला मूसली में है कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) हर जुम्अे के दिन मस्जिदे नबवी को महका दिया करते थे।

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''जमाअत की नमाज़ इंसान की अकेली नमाज़ पर जो घर में या दुकान पर पढ़ी जाए पच्चीस दर्जे ज़्यादा सवाब रखती है यह इसलिए कि जब वह अच्छी तरह वुज़ू करके सिर्फ़ नमाज़ के इरादे से चलता है तो हर हर क़दम के उठाने पर उसका एक दर्जा बढ़ता है और एक गुनाह माफ़ होता है और जब नमाज़ पढ़ चुकता है फिर जब तक वह अपनी नमाज़ की जगह रहे फ़रिश्ते उस पर दुरूद भेजते रहते हैं, कहते हैं कि ऐ अल्लाह! इस पर अपनी रहमत नाज़िल कर और इस पर रहम कर और जब तक जमाअत के इंतिज़ार में रहे नमाज़ का सवाब मिलता रहता है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब फ़ज़्ले सलातिल जमाअत : 647; सहीह मुस्लिम : 661; अबूदाऊद : 559; तिर्मिज़ी : 603; इब्ने माजा : 281; इब्ने हिब्बान : 2043; अहमद : 2/252; बैहक़ी : 3/61) दारे क़ुत्नी में है कि ''मस्जिद के पड़ौसी की नमाज़ मस्जिद के सिवा नहीं होती।'' (हाकिम : 1/246; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; दारे क़ुत्नी : 1/420; बैहक़ी : 3/57; इस सनद में सुलेमान बिन दाऊद यमामी मुंकरुल हदीस है (अल्मीज़ान : 2/202; रक़म : 3449) सुनन में है कि ''अंधेरों में मस्जिद जाने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन्हें क़ियामत के दिन पूरा पूरा नूर मिलेगा।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा जाअ फ़िल मशिय्य इलस्सलाति फ़िज़्ज़ुल्म : 561; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 223; इब्ने माजा : 781) यह

भी मुस्तहब है कि मस्जिद में जाने वाला पहले अपना दाहिना क़दम रखे और यह दुआ पढ़े जो बुख़ारी में है कि हुज़ूर (ﷺ) जब मस्जिद में आते यह कहते (अऊज़ुबिल्लाहिल अज़ीमि वबि वज्हिहिल करीमि व सुल्तानिहिल क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम) फ़र्मान है कि ''जब कोई शख़्स यह पढ़ता है शैतान कहता है मेरे शर्र से यह तमाम दिन के लिए महफ़ूज़ हो गया।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यक़ूलुर्रजुल इन्द दुख़ूलिल मस्जिद : 466; व सनदुहू सहीहुन) मुस्लिम में हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान मरवी है कि ''तुममें से जब कोई मस्जिद में जाना चाहे तो यह दुआ पढ़े (अल्लाहुम्मफ़्तह़ ली अब्वाब रहमतिक) ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। और जब मस्जिद से बाहर जाए यह कहे (अल्लाहुम्मफ़्तह़ ली अब्वाब फ़ज़्लिक) ऐ अल्लाह! तू मेरे लिए अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दे।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब मा यक़ूलु इज़ा दख़लल मस्जिद : 713) इब्ने माजा वग़ैरह में है कि ''जब तुममें से कोई मस्जिद में जाए तो अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) पर सलाम भेजे फिर (अल्लाहुम्मफ़्तह़ ली अब्वाब व रहमतिक) पढ़े और जब मस्जिद से निकले तो नबी (ﷺ) पर सलाम भेजकर (अल्लाहुम्मअसिम्नी मिनश्शैतानिर्रजीम) पढ़े।(इब्ने माजा, किताबुल मसाजिद, बाब अद्दुआउ इन्दहू दुख़ूलुल मस्जिद : 773; वहुव सहीहुन; हाकिम : 1/207; इब्ने हिब्बान : 2047) तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि जब आप मस्जिद में आते तो दुरूद पढ़कर (अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह़ ली अब्वाब रहमतिक) पढ़ते और जब मस्जिद से निकलते तो दुरूद के बाद (अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह़ ली अब्वाबा फ़ज़्लिक) पढ़ते।'' (तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब मा जाअ मा यक़ूलु इन्द दुख़ूलिल मस्जिद : 314; व सनदुहू ज़ईफ़ुन लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ रावी है। इब्ने माजा : 771) इस हदीस की सनद मुत्तसिल नहीं। अल्ग़र्ज़ यह और इन जैसी और बहुत सी हदीसें इस आयत के बारे में हैं जो मस्जिद और अहकामे मस्जिद के साथ ताल्लुक़ रखती हैं और आयत में है तुम हर मस्जिद में अपना मुँह सीधा रखो और ख़ुलूस के साथ सिर्फ़ अल्लाह तआला को पुकारो। (7/आराफ़ : 29) और आयत में है कि मस्जिदें अल्लाह तआला ही की हैं उसी का नाम उनमें लिया जाए। (72/जिन्न : 18) यानी किताबुल्लाह की तिलावत की जाए। (तब्री : 19/191) सुबह शाम वहाँ उस अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करते हैं। आसाल जमा है असील की शाम के वक़्त को असील कहते हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं जहाँ कहीं क़ुरआन में तस्बीह का लफ़्ज़ है वहाँ मुराद नमाज़ है पस यहाँ मुराद सुबह की और अस्र की नमाज़ है, पहले पहले यही दो नमाज़ें फ़र्ज़ हुई थीं पस वही याद दिलाई गईं। एक क़िराअत में (युसब्बहु) है और इस क़िराअत पर आसाल पर पूरा वक़्फ़ है और (रिजालुन) से फिर दूसरी बात शुरू है गोया कि वह मुफ़स्सिर है फ़ाइल महज़ूफ़ के लिए। तो गोया कहा गया कि वहाँ तस्बीह कौन करते हैं? तो जवाब दिया गया कि ऐसे लोग। और (युसब्बहु) की क़िराअत पर (रिजालुन) फ़ाइल है तो वक़्फ़ फ़ाइल के बयान के बाद चाहिए। (रिजालुन) कहने में इशारा है उनके बेहतरीन मक़ासिद और उनकी पाक निय्यतों और आला कामों की तरफ़ कि यह अल्लाह तआला के घरों के आबाद रखने वाले हैं, उसकी इबादत की जगहें उनसे ज़ीनत पाती हैं तौहीद और शुक्रगुज़ारी के करने वाले यह हैं। जैसे फ़र्मान है (مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ) (33/अहज़ाब : 23) यानी मोमिनों में ऐसे भी मर्द हैं कि जिन्होंने जो अहद अल्लाह तआला से किये थे वह पूरे कर दिखाए, आख़िर तक। हाँ! औरतों के लिए तो

मस्जिद की नमाज़ से अफ़ज़ल घर की नमाज़ है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, ''औरत की नमाज़ अपने घर में बेहतर है उसके हुज्रे की नमाज़ से और उसके हुज्रे की नमाज़ से अंदर वाले कमरे की नमाज़ अफ़ज़ल है।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब अत्तशदीदु फ़ी ज़ालिक : 570; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस के सुनने की सराहत नहीं है। इब्ने ख़ुज़ैमा : 1690; अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब : 508) मुस्नद में है कि ''औरतों की बेहतरीन मस्जिद घर के अंदर का कोना है।'' (अहमद : 6/297; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; साइब मौला उम्मे सलमा मज्हूलुल हाल वस्सक़हू इब्ने हिब्बान वहदहू; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1683; हाकिम : 1/209; मुस्नदे अबी यअला : 7025) मुस्नद अहमद में है कि ''हज़रत अबू हमीद साअदी (रज़ि.) की बीवी साहिबा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और कहा, हुज़ूर (ﷺ)! मैं आपके साथ नमाज़ अदा करना बहुत पसंद करती हूँ। आपने फ़र्माया, यह मुझे भी मालूम है लेकिन मसला यह है कि तेरी अपने घर की नमाज़ अँगनाई की नमाज़ से और हुज्रे की नमाज़ घर की नमाज़ से और घर की कोठरी की नमाज़ हुज्रे की नमाज़ से अफ़ज़ल है और महल्ले की मस्जिद से अफ़ज़ल घर की नमाज़ है और महल्ले की मस्जिद की नमाज़ मेरी मस्जिद की नमाज़ से अफ़ज़ल है। यह सुनकर उन्होंने अपने घर के बिलकुल इंतिहाई हिस्से में एक जगह को बतौरे मस्जिद के मुक़र्रर कर लिया और आख़िरी घड़ी तक वहीं नमाज़ पढ़ती रहीं।'' (अहमद : 6/371; व सनदुहू हसन; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1689; इब्ने हिब्बान : 2217; मज्मउज़्ज़वाइद : 2/33) हाँ! अल्बत्ता औरतों के लिए भी मस्जिद में मर्दों के साथ नमाज़ पढ़ना जाइज़ ज़रूर है बशर्तेकि मर्दों पर अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न होने दें और न ख़ुश्बू लगाकर निकलें। सहीह हदीस में फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि ''अल्लाह तआला की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों से न रोको।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुम्आ, बाब : 13; हदीस : 900; सहीह मुस्लिम : 442) अबूदाऊद में है कि ''औरतों के लिए उनके घर अफ़ज़ल हैं।''(अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा जाअ फ़ी ख़ुरूजिन्निसाइ इलल मस्जिद : 567; वहुव सहीहुन) और हदीस में है कि ''वह ख़ुश्बू इस्तेमाल करके न निकलें।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा जाअफ़ी ख़ुरूजिन्निसाइ इलल मस्जिद : 565; व सनदुहू हसन; अहमद : 2/528; इब्ने हिब्बान : 2214) सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है कि ''आपने औरतों से फ़र्माया जब तुममें से कोई मस्जिद आना चाहे तो ख़ुश्बू को हाथ भी न लगाए।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब ख़ुरूजुन्निसाइ इलल मसाजिद इज़ा लम यतरत्तब...: 443; अहमद : 6/363; इब्ने हिब्बान : 2215) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''मुसलमान औरतें सुबह की नमाज़ में आती थीं फिर वह अपनी चादरों में लिपटी हुई चली जाती थीं। (सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब वक़्तुल फ़ज्र : 578; सहीह मुस्लिम : 645; अबूदाऊद : 423; तिर्मिज़ी : 153; अहमद : 6/179; मुस्नदे अबी यअला : 4415) और रात की वजह से क़द्रे अंधेरे के वह पहचानी नहीं जाती थीं। सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि औरतों ने यह जो नई नई बातें निकाली हैं अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) इन बातों को पा लेते तो इन्हें मस्जिदों में आने से रोक देते जैसे कि बनी इस्राईल की औरतें रोक दी गईं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब इंतिज़ारुन्नास क़ियामुल इमामिल आलिम : 869; सहीह मुस्लिम : 445)

ऐसे लोग जिन्हें ख़रीदो फ़रोख़्त यादे इलाही से नहीं रोकती। जैसे इर्शाद है कि ईमान वालों! माल औलाद तुम्हें ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल न कर दे। सूरह जुम्आ में है कि जुम्आ की अज़ान सुनकर ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ चल पड़ो और तिजारत छोड़ दो। (62/जुम्आ : 9) मतलब यह है कि उन लोगों को दुनिया और मताअे दुनिया आख़िरत और ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं कर सकती, इन्हें आख़िरत पर और वहाँ की नेअमतों पर पूरा यक़ीन है और उन्हें बाक़ी समझते हैं और यहाँ की चीज़ों को फ़ानी जानते हैं इसलिए उन्हें छोड़कर उस तरफ़ तवज्जा करते हैं। अल्लाह तआला की इताअत को उसकी मुहब्बत को उसके अहकाम को मुक़द्दम रखते हैं। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने एक बार तिजारत पेशा हज़रात को अज़ान सुनकर अपने काम काज छोड़कर मस्जिद की तरफ़ जाते हुए देखकर यही आयत तिलावत की और फ़र्माया, यह लोग उन ही में से हैं। इब्ने उमर (रज़ि.) से भी यही मरवी है। अबू दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं तिजारत करूँ अगरचे उसमें मुझे हर दिन तीन सौ अशरफ़ियाँ मिलती हों लेकिन मैं नमाज़ों के वक़्त ज़रूर सब छोड़कर चला जाऊँगा। मेरा मतलब यह हर्गिज़ नहीं कि तिजारत करना हराम है बल्कि हममें यह वस्फ़ होना चाहिए जो इस आयत में बयान हुआ है। सालिम बिन अब्दुल्लाह (रह.) नमाज़ के लिए जा रहे थे देखा कि मदीना शरीफ़ के सौदागर अपनी अपनी दुकानों पर कपड़े ढककर नमाज़ के लिए गए हुए हैं और कोई भी दुकान पर मौजूद नहीं तो यही आयत पढ़ी और फ़र्माया, यह उन्हीं में से हैं जिनकी तारीफ़ जनाब बारी तआला ने की है। इस बात का सलफ़ में यहाँ तक ख़्याल था कि तराज़ू उठाए तोल रहे हैं और अज़ान की आवाज़ सुनी तो तराज़ू रख दी और मस्जिद की तरफ़ चल दिये। फ़र्ज़ नमाज़ बाजमाअत मस्जिद में अदा करने का उन्हें पूरा शौक़ था। वह वक़्तों की, अरकान की, आदाब की हिफ़ाज़त के साथ नमाज़ों के पाबंद थे। यह इसलिए कि दिलों में ख़ौफ़े इलाही था क़ियामत का आना बरहक़ जानते थे उस दिन की ख़ौफ़नाकी से वाक़िफ़ थे कि सख़्ततर घबराहट और कामिल परेशानी और बेहद उलझन की वजह से आँखें पथरा जाएँगी दिल उड़ जाएँगे, कलेजे दहल जाएँगे। जैसे फ़र्मान है कि मेरे नेक बन्दे मेरी मुहब्बत की बिना पर मिस्कीनों को खाना खिलाते हैं और यतीमों और क़ैदियों को भी और कह देते हैं कि हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ाजोई के लिए खिला रहे हैं हमारा मक़्सद तुमसे शुक्रिया तलब करने या बदला लेने का नहीं। हमें तो अपने परवरदिगार से उस दिन का डर है जबकि लोग मारे रंज के मुँह लटकाये हुए और तेवर बदले हुए होंगे। पस अल्लाह तआला उन्हें उस दिन की मुसीबतों से नजात देगा और उन्हें तरोताज़गी बश्शाशी हंसी ख़ुशी और राहत आराम से मिला देगा। और उनके सब्र के बदले उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता करेगा।'' (76/दहर : 8 से 12)

यहाँ भी फ़र्माता है कि उनकी नेकियाँ मक़्बूल हैं उनकी बुराइयाँ माफ़ हैं उनके एक एक अमल का बेहतरीन बदला मअ ज़्यादती और फ़ज़्ले बारी तआला के उन्हें ज़रूर मिलना है जैसे फ़र्मान है अल्लाह तआला बक़द्र एक ज़र्रे के भी ज़ुल्म नहीं करता। (4/निसाअ : 40) और आयत में है नेकी दस गुनी कर दी जाती है। (6/अन्आम : 160) और आयत में है जो अल्लाह तआला को अच्छा क़र्ज़ देगा उसे अल्लाह तआला बढ़ा चढ़ाकर ज़्यादा से ज़्यादा कर देगा। (2/बक़रह : 245) फ़र्मान है (يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ) (2/बक़रह : 261) वह बढ़ा देता है जिसके लिए चाहे। यहाँ फ़र्मान है वह जिसे चाहे बेहिसाब रोज़ी देता है।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के पास एक बार दूध लाया गया, आपने अपनी मज्लिस के साथियों में से हर एक को पिलाना चाहा मगर सब रोज़े से थे इसलिए आप ही के पास फिर से बर्तन आया। आपने यही आयत (यख़ाफ़ून) से पढ़ी और पी लिया। (हाकिम : 2/399) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "क़ियामत के दिन जब पहले आख़िर सब जमा होंगे अल्लाह तआला एक मुनादी को हुक्म देगा जो बाआवाज़े बलंद ऐलान करेगा जिसे तमाम अहले महशर सुनेंगे कि आज सबको मालूम हो जाएगा कि अल्लाह तआला के यहाँ सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग कौन है? फिर कहेगा वह लोग खड़े हो जाएँ जिन्हें व्यापार तिजारत ज़िक्रे अल्लाह तआला से रोकता न था पस वह खड़े हो जाएँगे और वह बहुत ही कम होंगे सबसे पहले उन्हें हिसाब से फ़ारिग़ कर दिया जाएगा। (इब्ने अबी हातिम व सनदुहू ज़ईफ़ुन) आप फ़र्माते हैं उनकी नेकियों का अज्र यानी जन्नत भी उन्हें मिलेगी और ज़ाइद फ़ज़्ले इलाही यह होगा कि जिन लोगों ने उनके साथ एहसान किये होंगे और होंगे वह मुस्तहिक़े सिफ़ारिश उन सबकी सिफ़ारिश का मंसब उन्हें हासिल हो जाएगा।" (अल्मुअजमुल कबीर : 10462; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीहि इ़लल मिन्हा ज़ुअफ़ इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह कुंदी व तदलीसुल आमश व ग़ैरुहुमा)

***

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ اَوْ
كَظُلُمٰتٍ فِىْ بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۗ ظُلُمٰتٌۢ
بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا
فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : "काफ़िरों के आमाल मिस्ल उस चमकती हुई रेत के हैं जो चटयल मैदान में हो जिसे प्यासा शख़्स दूर से पानी समझता है लेकिन जब उसके पास पहुँचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता हाँ! अल्लाह को अपने पास पाता है जो उसका हिसाब पूरा पूरा चुका देता है। अल्लाह तआला बहुत जल्द हिसाब कर देने वाला है। (39) या मिस्ल उन अंधेरियों के है जो निहायत गहरे समुन्द्र की तह में हों जिसे ऊपर तले की लहरों ने ढाँप रखा है फिर ऊपर से बादल छाये हुए हों। अल्ग़र्ज़ अंधेरियाँ हैं जो ऊपर तले पे दर पे हैं। जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी ग़ालिबन न देख सके। बात यह है कि जिसे अल्लाह तआला ही नूर न दे उसके पास कोई रोशनी नहीं होती।" (40)

काफ़िर व मुश्रिक के नेक आमाल की मिसाल (आयत 39, 40) : यह दो मिसालें हैं और दो क़िस्म के काफ़िरों की हैं। जैसे सूरह बक़रह के शुरू में दो मिसालें दो क़िस्म के मुनाफ़िक़ों की बयान हुई हैं। एक आग की एक पानी की। और जैसे कि सूरह रअ़द में हिदायत व इल्म की जो इंसान के दिल में जगह पकड़ जाए ऐसी ही दो मिसालें आग और पानी की बयान हुई हैं दोनों सूरतों में इन आयतों की तफ़्सीर पूरी गुज़र चुकी है। फ़ल्हम्दु लिल्लाह। यहाँ पहली मिसाल तो उन काफ़िरों की है जो कुफ़्र की तरफ़ दूसरों को भी बुलाते हैं और अपने आपको हिदायत पर समझते हैं हालाँकि वह सिर्फ़ बेराह हैं उनकी तो ऐसी मिसाल है जैसे किसी प्यासे को जंगल में दूर से रेत का चमकता हुआ तौदा दिखाई देता है और वह उसे पानी का मौजे दरिया समझ बैठता है। क़ीअ़ह जमा है क़ाउ़न की जैसे जारुन की जमा है जीरा और क़ाउ़न वाहिद भी होता है और जमा क़ीआन होती है जैसे जारुन की जमा जीरान है मअ़नी उसके चटयल वसीअ़ फैले हुए मैदान के हैं। ऐसे ही मैदानों में सैराब नज़र आया करते हैं। दोपहर के वक़्त बिलकुल यही मालूम होता है कि पानी का वसीअ़ दरिया लहरें ले रहा है जंगल में जो प्यासा हो पानी की तलाश में उसकी बाछें खिल जाती हैं और उसे पानी समझकर जान तोड़ कोशिश करके वहाँ तक पहुँचता है लेकिन हैरत व हसरत से अपना मुँह चेहरा पीट लेता है जब देखता है कि वहाँ पानी का क़तरा छोड़ नामोनिशान भी नहीं। इसी तरह यह कुफ़्फ़ार है कि अपने दिल में समझे बैठे हैं कि हमने बहुत कुछ आमाल किये हैं बहुत सी भलाइयाँ जमा कर ली हैं लेकिन क़ियामत के दिन देखेंगे कि एक नेकी भी उनके पास नहीं या तो उनकी बदनिय्यती से वह ग़ारत हो चुकी है या मुताबिक़े शरअ़ न होने से वह बर्बाद हो गई है। ग़र्ज़ उनके यहाँ पहुँचने से पहले उनके काम जहन्नम रसीद हो चुके हैं। यहाँ यह बिलकुल ख़ाली हाथ रह गए हैं। हिसाब किताब के मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ख़ुद मौजूद है और वह एक एक अ़मल का हिसाब ले रहा है और कोई अ़मल उनका क़ाबिले सवाब नहीं निकलता। (तब्री : 19/196) चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''यहूदियों से क़ियामत के दिन सवाल होगा कि तुम दुनिया में किसकी इबादत करते रहे? वह जवाब देंगे कि अल्लाह तआ़ला के बेटे उ़ज़ैर (عليه السلام) की। कहा जाएगा कि झूठे हो अल्लाह का कोई बेटा नहीं, अच्छा बतलाओ, अब क्या चाहते हो? वह कहेंगे, ऐ अल्लाह! हम बहुत प्यासे हो रहे हैं हमें पानी पिलवाया जाए तो उनसे कहा जाएगा कि देखो वह क्या नज़र आ रहा है? तुम वहाँ क्यूँ नहीं जाते? अब उन्हें दूर से जहन्नम ऐसी नज़र आएगी जैसे दुनिया में सराब होता है जिस पर जारी पानी का धोखा होता है यह वहाँ जाएँगे और दोज़ख़ में डाल दिये जाएँगे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला (वुजूहुंय्यौमइज़िन नाज़िरा इला रब्बिहा नाज़िरा...) : 7439; सहीह मुस्लिम : 183) यह मिसाल तो थी जहले मुर्कब वालों की।

अब जहले बसीत़ वालों की मिसाल सुनिए जो कोरे मुक़ल्लिद थे अपनी गिरह की अ़क़्ल मुत्लक़ नहीं रखते थे अगली मिसाल वाले अइम्म-ए-कुफ़्र की कोरी तक़्लीद करते थे और आँखे बंद किये उनकी आवाज़ पर लगे हुए थे कि उनकी मिसाल गहरे समुन्द्र की तह की अंधेरियाँ जैसी है जिसे ऊपर से तह ब तह मौजों ने ढाँप रखा हो और फिर ऊपर से बादल ढाँके हुए हों। यानी अंधेरियों पर अंधेरियाँ हों यहाँ तक कि हाथ को हाथ भी सुझाई न देता हो। यही हाल उन सुफ़्ने जाहिल काफ़िरों का है कि निरे मुक़ल्लिद हैं यहाँ तक कि

जिसकी तक़्लीद के पीछे पड़े हुए हैं उसे भी सही तौर पर नहीं पहचानते उसका भी हक़ नाहक़ पर होना उन्हें मालूम नहीं। कोई है जिसके पीछे हो लिए हैं लेकिन नहीं मालूम कि वो इन्हें कहाँ ले जा रहे हैं? चुनाँचे मस्लन कहा जाता है कि किसी जाहिल से पूछा गया कि कहाँ जा रहा है? उसने कहा इनके साथ जा रहा हूँ। पूछने वाले ने फिर पूछा कि यह कहाँ जा रहे हैं? उसने कहा मुझे तो मालूम नहीं। पस जैसे उस समुन्द्र पर लहरें उठ रही हैं उसी तरह काफ़िर के दिल पर उसके कानों पर उसकी आँखों पर पर्दा पड़ा हुआ है। जैसे फ़र्मान है कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर और कानों पर मुहर लगा दी है, आख़िर तक। (2/बक़रह : 7) और आयत में इर्शाद होता है (اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ) (45/जासिया : 23) तूने उन्हें देखा जिन्होंने ख़्वाहिशपरस्ती शुरू कर रखी है और अल्लाह तआला ने उन्हें इल्म पर बहका दिया है और उनके दिलों पर और कानों पर मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया है, आख़िर तक। उबय बिन कअब (रज़ि.) फ़र्माते हैं ऐसे लोग पाँच अंधेरों में होते हैं, कलाम, अमल, जाना, आना और अंजाम सब अंधेरों में हैं। (तब्री : 19/198; हाकिम : 2/399, 400; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) जिसे अल्लाह तआला अपने नूर की तरफ़ हिदायत न करे वह नूरानियत से ख़ाली रह जाता है जिहालत में मुब्तला रहकर हलाकत में पड़ जाता है। जैस फ़र्माया (7/आराफ़ : 186) जिसे अल्लाह तआला गुमराह करे उसके लिए कोई हादी नहीं होता। यह बमुक़ाबला उसके है जो मोमिनों की मिसाल के बयान में फ़र्माया था कि अल्लाह तआला अपने नूर की हिदायत करता है जिसे चाहे। अल्लाह तआला अज़ीमो करीम से हमारी दुआ है कि वह हमारे दिलों में नूर पैदा कर दे और हमारे दायें बायें भी नूर अता करे और हमारे नूर को बढ़ा दे और उसे बहुत बड़ा और ज़्यादा करे, आमीन।

***

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۴۲﴾

तर्जुमा : "क्या तू नहीं देखता कि आसमान व ज़मीन की कुल मख़्लूक़ और पर फैलाए उड़ने वाले कुल परिन्द अल्लाह तआला की तस्बीह में मशग़ूल हैं। हर एक की नमाज़ और तस्बीह उसे मालूम है। लोग जो कुछ करें उससे अल्लाह तआला बख़ूबी वाक़िफ़ है। (41) ज़मीनो आसमन की बादशाहत अल्लाह ही की है और अल्लाह तआला ही की तरफ़ लौटना है।" (42)

हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह बयान करती है (आ. 41, 42) : तमाम के तमाम इंसान और जिन्नात और फ़रिश्ते और हैवान यहाँ तक कि जमादात भी अल्लाह की तस्बीह बयान करने में मशग़ूल हैं। और मक़ाम पर है कि सातों आसमान और सब ज़मीनें और उनमें जो हैं सब अल्लाह तआला की पाकीज़गी के

बयान में मशग़ूल हैं अपने परों से उड़ने वाले परिन्द भी अपने रब की इबादत और पाकीज़गी के बयान में हैं। (17/बनी इस्राईल : 44) इन सबको जो जो तस्बीह लायक़ थी अल्लाह तआला ने उन्हें सिखा दी है सबको अपनी इबादत के मुख़्तलिफ़ अलग अलग तरीक़े सिखा दिये हैं और अल्लाह तआला पर कोई काम मख़्फ़ी नहीं वह आलिमे कुल है हाकिम मुतसर्रिफ़ मालिक मुख़्तारे कुल मअबूदे हक़ीक़ी आसमान व ज़मीन का बादशाह सिर्फ़ वही है उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं उसके हुक्मों को कोई टालने वाला नहीं। क़ियामत के दिन सबको उसी के सामने हाज़िर होना है वह जो चाहेगा अपनी मख़्लूक़ात में हुक्म करेगा। बुरे लोग बद बदले पाएँगे नेक नेकियों का फल हासिल करेंगे। ख़ालिक़ मालिक वही है दुनिया और आख़िरत का हाकिम वही है और उसी की ज़ात हम्दो सना के लायक़ है।

***

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ
مِنْ خِلَالِهِ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ
وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ ۖ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٤٣﴾ يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ
وَالنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾ وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَاءٍ ۖ
فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي
عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۚ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ
مُبَيِّنَاتٍ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : "क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला बादलों को चलाता है फिर उन्हें मिलाता है फिर उन्हें तह ब तह कर देता है फिर तू देखता है कि उनके बीच में से बारिश बरसती है। वही आसमान की जानिब से ओलों के पहाड़ों में से ओले बरसाता है फिर जिन्हें चाहे उनके पास उन्हें बरसाये और जिनसे चाहे उनसे उन्हें हटा दे। बादल ही से निकलने वाली बिजली की चमक ऐसी होती है कि गोया अब आँखों की रोशनी ले चली। (43) अल्लाह तआला ही दिन और रात को रद्दोबदल करता रहता है। आँखों वालों के लिए तो इसमें यक़ीनन बड़ी बड़ी इब्रतें हैं। (44)

तमाम के तमाम चलने फिरने वाले जानदारों को अल्लाह तआला ही ने पानी से पैदा किया है उनमें से कुछ तो अपने पेट के बल चलते हैं कुछ दो पैर पर चलते हैं। कुछ चार पैर पर चलते हैं अल्लाह तआला जो चाहता है पैदा करता है अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (45) बिला शक व शुब्हा हमने रोशन और वाज़ेह आयतें उतार दी हैं अल्लाह तआला जिसे चाहे सीधी राह दिखा देता है।'' (46)

अल्लाह तआला की कुदरत की निशानियाँ (आ. 43 से 46) : पतले धुएँ जैसे बादल पहले पहले तो कुदरते बारी तआला से उठते हैं फिर मिल जुलकर जसीम हो जाते हैं और एक दूसरे के ऊपर जम जाते हैं फिर उनमें से बारिश बरसती है, हवाएँ चलती हैं ज़मीन को क़ाबिल बनाती हैं, फिर बादल को उठाती हैं फिर उन्हें मिलाती हैं फिर वह पानी से भर जाते हैं फिर बरस पड़ते हैं। (तब्री : 19/201) फिर आसमान से ओलों के बरसाने का ज़िक्र है। इस जुम्ले में पहला मिन इब्तिदाए ग़ायत का है दूसरा तब्ईज़ का तीसरा बयाने जिंस का। यह इस तफ़्सीर की बिना पर है कि आयत के मअनी यह किये जाएँ कि ओलों के पहाड़ आसमान पर हैं और जिनके नज़दीक यहाँ पहाड़ का लफ़्ज़ बादल के लिए ही बतौरे किनाया है उनके नज़दीक मिन सानिया (दूसरा) भी इब्तिदाए ग़ायत के लिए है लेकिन वह पहले से बदल है, वल्लाहु आलम! उसके बाद के जुम्ले का यह मतलब है कि बारिश और ओले जहाँ अल्लाह तआला बरसाना चाहे वहाँ उसकी रहमत से बरसते हैं और जहाँ न चाहे नहीं जाते। या यह मतलब है कि ओलों से जिनकी चाहे खेतियाँ और बाग़ात ख़राब कर देता है और जिन पर मेहरबानी करे उन्हें बचा लेता है। फिर बिजली की चमक की कुव्वत बयान हो रही है कि क़रीब है वह आँखों की रोशनी खो दे दिन रात का तसर्रुफ़ भी उसी के क़ब्ज़े में है जब चाहता है दिन को छोटा और रात बड़ी कर देता है और जब चाहता है रात छोटी करके दिन को बड़ा कर देता है यह तमाम निशानियाँ हैं जो कुदरते क़ादिर को ज़ाहिर करती हैं अल्लाह तआला की अज़्मत को आशकारा करती हैं। जैसे फ़र्मान है कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश रात दिन के इख़्तिलाफ़ में अक़्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

मुख़्तलिफ़ जानदारों की तख़्लीक़ का ज़िक्र: अल्लाह तआला अपनी कामिल कुदरत और ज़बरदस्त सल्तनत का बयान करता है कि उसने एक ही पानी से तरह तरह की मख़्लूक़ पैदा कर दी है। साँप वग़ैरह को देखो जो अपने पेट के बल चलते हैं। इंसान और परिन्द को देखो कि उनके दो पैर होते हैं जिन पर चलते हैं हैवानों और चौपायों को देखो वह चार पैर पर चलते हैं। वह बड़ा क़ादिर है जो चाहता है हो जाता है जो नहीं चाहता नहीं हो सकता, वह क़ादिरे कुल है।

यह हिक्मत भरे अहकाम यह रोशन मिसालें इस कुरआने करीम में अल्लाह तआला ही ने बयान की है अक़्लमंदों को इनके समझने की तौफ़ीक़ दी है। रब तआला जिसे चाहे सीधी राह पर लगा दे।

***

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۗ
وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۚ بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ
اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٥٢﴾

तर्जुमा : ''कहते हैं कि हम अल्लाह तआला और रसूल (ﷺ) पर ईमान लाए और फ़र्मांबरदार हुए फिर उनमें से एक फ़िर्क़ा उसके बाद भी फिर जाता है। यह ईमान वाले हैं ही नहीं। (47) जब यह इस बात की तरफ़ बुलाए जाते हैं कि अल्लाह तआला और उसका रसूल (ﷺ) इनके झगड़े चुका दे तो भी इनकी एक जमाअत मुँह मोड़ने वाली बन जाती है। (48) हाँ! अगर इन ही को हक़ पहुँचता हो तो मुतीअ व फ़र्मांबरदार होकर उसकी तरफ़ चले आते हैं। (49) क्या इनके दिलों में बीमारी है या यह शक व शुब्हा में पड़े हुए हैं? या इन्हें इस बात का डर है कि अल्लाह तआला और उसका रसूल (ﷺ) उनकी हक़तल्फ़ी न कर दें? बात तो यह है कि लोग ख़ुद ही बड़े बेइंसाफ़ हैं। (50) ईमानवालों का क़ौल तो यह है कि जब उन्हें इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह और उसका रसूल (ﷺ) उनमें फ़ैसला कर दे तो वह कहते हैं कि हमने सुना और मान लिया। यही लोग कामयाब होने वाले हैं। (51) जो भी अल्लाह तआला की उसके रसूल (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी करें ख़ौफ़े इलाही रखें और उसके अज़ाबों से डरते रहें वही नजात पाने वाले हैं।'' (52)

कामयाब और नाकाम लोग? (आ. 47 से 52) : मुनाफ़िक़ों का हाल बयान हो रहा है कि ज़ुबान से तो ईमान व इताअत का इक़रार करते हैं लेकिन दिल से उसके ख़िलाफ़ हैं अमल कुछ है क़ौल कुछ है इसलिए कि दरअसल ईमानदार नहीं। हदीस में है कि ''जो शख़्स बादशाह के सामने बुलवाया जाए और वह न जाए वह ज़ालिम है।'' और नाहक़ पर है जब उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाया जाता है क़ुरआन व हदीस के मानने को कहा जाता है तो यह मुँह फेर लेते हैं और तकब्बुर करने लगते हैं जैसे (اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ) से (صُدُوْدًا) (4/निसाअ : 60, 61) तक की आयतों में बयान गुज़र चुका है। हाँ! अगर उन्हें शरई फ़ैसले में

अपना नफ़ा नज़र आता हो तो लम्बे लम्बे कलिमे पढ़ते हुए गर्दन हिलाते हुए हँसी ख़ुशी चले आएँगे और जब मालूम हो जाए कि शरई फ़ैसला उनकी तब्ई ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ है दुनियावी मफ़ाद के मुख़ालिफ़ है तो मुड़कर हक़ की तरफ़ देखेंगे भी नहीं पस ऐसे लोग पुख़्ता काफ़िर हैं इसलिए कि तीन हाल से ख़ाली नहीं या तो यह कि उनके दिलों में ही बेईमानी घर कर गई है या उन्हें अल्लाह के दीन की हक़्क़ानियत में शुकूक हैं, या ख़ौफ़ है कि कहीं अल्लाह व रसूल (ﷺ) उनका हक़ न मार लें उन पर ज़ुल्मो सितम न कर लें और यह तीनों सूरतें कुफ़्र की हैं अल्लाह उनमें से हर एक को जानता है जो जैसा बातिन में है उसके पास वह ज़ाहिर है। दरअसल यही लोग फ़ाजिर हैं ज़ालिम हैं अल्लाह और रसूलुल्लाह (ﷺ) इससे पाक हैं। हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में ऐसे काफ़िर जो ज़ाहिर में मुसलमान थे बहुत से थे उन्हें जब अपना मतलब क़ुरआन व हदीस में निकलता नज़र आता तो ख़िदमते नबवी (ﷺ) में अपने झगड़े पेश करते और जब उन्हें दूसरों से मतलब बरारी नज़र पड़ती तो सरकारे मुहम्मदी (ﷺ) में आने से साफ़ इंकार कर जाते। पस यह आयत उतरी और हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया "जिन दो शख़्सों में कोई झगड़ा हो और वह इस्लामी हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसले की तरफ़ बुलाया जाए और वह उससे इंकार करे वह ज़ालिम है और नाहक़ पर है।" (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) यह हदीस ग़रीब है फिर सच्चे मोमिनों की शान बयान होती है कि वह किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) के सिवा किसी तीसरी चीज़ को दाख़िले दीन नहीं समझते। वह तो क़ुरआन व हदीस सुनते ही उसकी आवाज़ कान में पड़ते ही साफ़ कह देते हैं कि हमने सुना और माना। यह कामयाब बामुराद और नजात याफ़्ता लोग हैं। हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) जो बद्री सहाबी हैं अंसारी हैं अंसारियों के एक सरदार हैं उन्होंने अपने भतीजे जुनादा बिन अबी उमय्या (रज़ि.) से बवक़्ते इंतिक़ाल फ़र्माया कि आओ मुझसे सुन लो कि तुम्हारे ज़िम्मे क्या है? सुनना और मानना सख़्ती में भी आसानी में भी ख़ुशी में भी नाख़ुशी में भी उस वक़्त भी जबकि तेरा हक़ दूसरे को दिया जा रहा हो अपनी ज़ुबान को अदल और सच्चाई के साथ सीधी रख काम के अहल लोगों से काम को न छीन। हाँ! अगर किसी खुली नाफ़र्मानी का वह हुक्म दें तो न मानना। किताबुल्लाह के ख़िलाफ़ कोई भी कहे हर्गिज़ न मानना। किताबुल्लाह की पैरवी में लगे रहना। अबू दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इस्लाम बग़ैर अल्लाह तआला की इताअत के नहीं और बेहतरी जो कुछ है वह जमाअत में और अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की और ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन की और आम मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही में है।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इस्लाम का मज़बूत कड़ा अल्लाह तआला की वहदानियत की गवाही, नमाज़ की पाबंदी, ज़कात की अदायगी, और मुसलमानों के बादशाह की इताअत है जो अहादीस व आसार किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह की इताअत के बारे में और मुसलमान बादशाहों की मानने के बारे मे मरवी हैं वह इस क़द्र कसरत से हैं कि सब यहाँ किसी तरह बयान हो ही नहीं सकते। जो शख़्स अल्लाह तआला व रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मांबरदार बन जाए जो हुक्म मिले बजा लाए जिन चीज़ों से रोक दें रुक जाए जो गुनाह हो जाए उससे ख़ौफ़ खाता रहे, आइन्दा के लिए उससे बचता रहे ऐसे लोग तमाम भलाइयों को समेटने वाले और तमाम बुराइयों से बच जाने वाले हैं। दुनिया और आख़िरत में वह नजात पाने वाले हैं।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ
مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى
الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾

तर्जुमा : ''बड़ी पुख़्तगी के साथ अल्लाह की क़समें खा खाकर कहते हैं कि आपका हुक्म होते ही यह निकल खड़े होंगे। कह दे कि बस क़समें न खाओ तुम्हारी इताअत की हक़ीक़त मालूम है जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह तआला उससे बाख़बर है। (53) कह दे कि अल्लाह तआला का हुक्म मानो, रसूलुल्लाह (ﷺ) की इताअत करो फिर भी अगर तुमने रूगर्दानी की तो रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ वही है जो उस पर लाज़िम कर दिया गया है और तुम पर उसकी जवाबदेही है जो तुम पर रखा गया है। हिदायत तो तुम्हें उसी वक़्त मिलेगी जब रसूल की मातहती करो सुनो रसूल (ﷺ) के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ तौर पर पहुँचा देना है।'' (54)

मोमिन की ज़ुबान और काफ़िर का दिल (आ. 53, 54) : अहले निफ़ाक़ का हाल बयान हो रहा है कि वह रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आकर अपनी ईमानदारी और ख़ैरख़्वाही जताते हुए क़समें खा खाकर यक़ीन दिलाते थे कि हम जिहाद के लिए तैयार बैठे हैं बल्कि बेक़रार हैं आपके हुक्म की देर है फ़र्मान होते ही घरबार बाल बच्चे छोड़कर मैदाने जंग में पहुँच जाएँगे। अल्लाह तआला फ़र्माता है इनसे कह दो कि क़समें न खाओ। तुम्हारी इताअत की हक़ीक़त तो रोशन हो चुकी है ज़बानी डींगे बहुत हैं अमली हिस्सा सिफ़र (जीरो) है। तुम्हारी क़समों की हक़ीक़त भी मालूम है दिल में कुछ हैं ज़ुबान पर कुछ है। जितनी ज़ुबान मोमिन है उतना दिल काफ़िर है। यह क़समें सिर्फ़ मुसलमानों की हमदर्दी हासिल करने के लिए हैं। उन क़समों को तो यह लोग ढाल बनाए हुए हैं तुमसे ही नहीं बल्कि काफ़िरों के सामने भी इनकी मुवाफ़िक़त की और इनकी इम्दाद की क़समें खाते हैं लेकिन हैं इतने बुज़दिल कि उनका साथ भी ख़ाक नहीं दे सकते। इस जुम्ले के एक मअनी यह भी हो सकते हैं कि तुम्हें तो मअक़ूल और पसंदीदा इताअत का शेवा चाहिए न कि क़समें खाने और डींगें मारने का। तुम्हारे सामने मुसलमान मौजूद हैं देखो न वह क़समें खाते हैं न बढ़ बढ़कर बातें बनाते हैं हाँ! काम के वक़्त सबसे आगे निकल आते हैं और फ़ेअली (करनी का) हिस्सा बढ़ चढ़कर लेते हैं। अल्लाह तआला पर किसी का कोई अमल छुपा हुआ नहीं वह अपने बन्दों के एक एक अमल से बाख़बर है। हर आसी (नाफ़र्मान) और मुतीअ उस पर ज़ाहिर है हर एक के बातिन पर भी उसकी नज़रें वैसी ही हैं जैसी ज़ाहिर पर भले तुम ज़ाहिर कुछ करो लेकिन वह बातिन पर भी आगाह है।

अल्लाह तआला की और उसके रसूल (ﷺ) की यानी क़ुरआन की और ह़दीस की इत्तिबाअ करो अगर तुम उससे मुँह मोड़ लो उसे छोड़ दो तो तुम्हारे इस गुनाह का वबाल मेरे नबी पर नहीं उसके ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ामे इलाही का पहुँचाना और अमानत का अदा करना है। तुम पर वह है जिसके ज़िम्मेदार तुम हो यानी क़बूल करना, अमल करना वग़ैरह। हिदायत सिर्फ़ इताअते रसूल (ﷺ) में है इसलिए कि सिराते मुस्तक़ीम का दाई वही है जो सिराते मुस्तक़ीम उस बारी तआला तक पहुँचाती है जिसका राज पाठ तमाम ज़मीन व आसमान है। रसूल (ﷺ) के ज़िम्मे सिर्फ़ पहुँचा देना है ह़िसाब सबका हमारे ज़िम्मे है जैसे फ़र्मान है (فَذَكِّرْ ۗ إِنَّمَآ أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝) (88/ग़ाशिया : 21) तू सिर्फ़ नासेह़ व वाइज़ है इन्हें नसीह़त कर दिया कर तू इनका वकील या दारोग़ा नहीं।

वहब बिन मुनब्बा (रह़.) फ़र्माते हैं कि शअया (عليه السلام) की त़रफ़ वह़ी इलाही आई कि तू बनी इस्राईल के मज्मअ़े में खड़ा हो जा मैं तेरी ज़ुबान से जो चाहूँगा निकलवाऊँगा। चुनाँचे आप खड़े हुए तो आपकी ज़ुबान से बहुक्मे बारी तआला यह ख़ुत्बा बयान हुआ, ऐ आसमान! सुन, ऐ ज़मीन! ख़ामोश रह, अल्लाह तआला एक शान पूरी करना और एक अम्र की तदबीर करना चाहता है जिसे वह पूरा करने वाला है, वह चाहता है कि जंगलों को आबाद कर दे, वीराने को बसा दे, सेह़राओं को सरसब्ज़ बना दे, फ़क़ीरों को ग़नी कर दे, चरवाहों को सुल्त़ान बना दे, अनपढ़ों में से एक उम्मी को नबी बनाकर भेजे जो न बद गो हो न बदअख़्लाक़ हो, न बाज़ारों में शोरो गुल करने वाला हो, इतना मिस्कीन सिफ़त और मुवाज़ेअ हो कि उसके दामन की हवा से वह चराग़ भी न बुझे जिसके पास से वह गुज़रा हो अगर वह सूखे बाँसों पर पैर रखकर चले तो भी चरचराहट किसी के कान में न पहुँचे मैं उसे बशीर व नज़ीर बनाकर भेजूँगा, वह ज़ुबान का पाक होगा, अँधी आँखें उसकी वजह से रोशन हो जाएँगी, बहरे कान उसके बाइस सुनने लगेंगे ग़िलाफ़ वाले दिल उसकी बरकत से खुल जाएँगे हर हर भले काम से मैं उसे सँवारूँगा , हर हर ख़ल्क़े करीम (अच्छे अख़्लाक़) से मैं उसे सरफ़राज़ करूँगा सकीनत उसका लिबास होगी, नेकी उसका वत़ीरा होगी, तक़्वा उसका ज़मीर होगा, ह़िक्मत उसकी बातें होंगी, सिद्क़ व वफ़ा उसकी त़बीयत होगी, अफ़ू दरगुज़र करना और उम्दगी व भलाई चाहना उसकी ख़स्लत होगी ह़क़ उसकी शरीअ़त होगी, अदल उसकी सीरत होगी, हिदायत उसकी इमाम होगी, इस्लाम उसकी मिल्लत होगी, अह़मद उसका नाम होगा (ﷺ) गुमराही के बाद उसके ज़रिये से मैं हिदायत फैलाऊँगा, जिहालत के बाद इल्म चमक उठेगा पस्ती के बाद उसकी वजह से तरक़्क़ी होगी अंजान लोग उसकी ज़ात से पहचानने से बदल जाएगा कमी ज़्यादती से बदल जाएगी, फ़क़ीरी को उसके ज़रिये मैं अमीरी से बदल दूँगा उसकी ज़ात से जुदा जुदा लोगों को मैं मिला दूँगा फ़ुर्क़त के बाद उल्फ़त होगी, फूट के बाद ऐकता होगी, इख़्तिलाफ़ के बाद इत्तिफ़ाक़ होगा मुख़्तलिफ़ दिल जुदागाना ख़्वाहिशें एक हो जाएँगी, अल्लाह तआला के बेशुमार बंदे हलाकत से बच जाएँगे, उसकी उम्मत को मैं तमाम उम्मतों से बेहतर कर दूँगा जो लोगों के नफ़ा के लिए होगी भलाइयों का हुक्म देने वाली बुराइयों से रोकने वाली होगी, मुवह़्ह़िद मोमिन मुख़्लिस होंगे, अल्लाह तआला के जितने रसूल अल्लाह तआला की त़रफ़ से जो कुछ लाए हैं यह सबको मानेंगे, किसी के इंकारी न होंगे।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـــًٔا ۭ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﮍ

तर्जुमा : ''तुममें से उन लोगों से जो ईमान लाए हैं और नेक आमाल किये हैं अल्लाह तआला वादा कर चुका है कि उन्हें ज़रूर मुल्क का हाकिम बनाएगा। जैसे कि उन लोगों को हाकिम बनाया था जो उनसे पहले थे और यक़ीनन उनके लिए उनके इस दीन को मज़बूती के साथ महकम करके जमा देगा जिसे उनके लिए वह पसंद कर चुका है और उनके इस डर व ख़तर को वह अम्नो अमान से बदल देगा कि मेरी इबादत करते रहेंगे मेरे साथ किसी को भी शरीक न ठहराएँगे उसके बाद भी जो लोग नाशुक्री और कुफ़्र करें वह यक़ीनन फ़ासिक़ ही हैं।'' (55)

अहले ईमान से ख़िलाफ़त व हुकूमत का वादा (आयत 55) : अल्लाह तबारक व तआला अपने रसूल (ﷺ) से वादा कर रहा है कि आपकी उम्मत को वह ज़मीन का मालिक बना देगा, लोगों का सरदार कर देगा मुल्क उनकी वजह से आबाद होगा, अल्लाह तआला के बंदे उनसे दिल शाद होंगे। आज यह लोगों से लरज़ाँ तरसाँ हैं कल यह बा अम्नो इत्मिनान होंगे। हुकूमत इनकी होगी सल्तनत इनके हाथों में होगी। अल्हम्दु लिल्लाह यही हुआ भी। मक्का, ख़ैबर, बहरैन, जज़ीरा अरब और यमन तो ख़ुद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) की मौजूदगी में फ़तह हो गया, हिज्र के मजूसियों ने जिज़्या दे के मातहती क़बूल कर ली, शाम के कुछ हिस्सों का भी यही हाल हुआ। शाम, रोम, हिरक़्ल ने तोहफ़े तहाइफ़ रवाना किये। मिस्र के वाली ने भी ख़िदमते अक़्दस में तोहफ़े भेजे। इस्कन्द्रया के बादशाह मक़ूक़स ने और ओमान के शाहों ने यही किया और इस तरह अपनी इताअत गुज़ारी का सबूत दिया। हब्शा के बादशाह अस्हमा (रज़ि.) तो मुसलमान हो ही गये और उनके बाद जो वाली हब्शा हुए, उसने भी मुहम्मद (ﷺ) को तोहफ़े भेजे। फिर जबकि अल्लाह तआला रब्बुल इज़्ज़त ने अपने मुहतरम रसूल (ﷺ) को अपनी मेहमानदारी में बुलवा लिया आपकी ख़िलाफ़त सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने संभाली जज़ीरा अरब की हुकूमत मज़बूत और मुस्तक़िल बनाई, साथ ही एक जर्रार लश्कर सैफुल्लाह ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) की सिपहसालारी में फ़ारस शहर की तरफ़ भेजा जिसने वहाँ फुतूहात का सिलसिला शुरू किया, कुफ़्र के दरख़्तों को छाँट दिया और इस्लामी पौधे हर तरफ़ लगा दिये। हज़रत अबू उबेदा बिन जर्राह (रज़ि.) वग़ैरह उमरा के मातहत शाम के मुल्कों की तरफ़ लश्करे इस्लाम के जाँबाज़ों को रवाना किया, उन्होंने भी यहाँ मुहम्मदी झण्डा बुलंद

किया और सलीबी निशान औंधे मुँह गिराये। मिस्र की तरफ़ मुजाहिदीन का लश्कर हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि.) की सरदारी में रवाना किया। बसरा दमिश्क़ हर्रान वग़ैरह की फ़ुतूहात के बाद आप भी राही मुल्के बक़ा हुए और ब इल्हाम बारी तआला हज़रत उमर (रज़ि.) फ़ारूक़ जैसे ज़बरदस्त ज़ोरावर हाथों में सल्तनते इस्लाम की बागें दे गए। सच तो यह है कि आसमान के तले किसी नबी के बाद ऐसे पाक ख़लीफ़ाओं का दौर नहीं हुआ। आपकी कुव्वत तबीयत आपकी नेक सीरत आपके अदल का कमाल आपकी अल्लाहतर्सी की मिसाल दुनिया में आपके बाद तलाश करना सिर्फ़ बेकार और लाहासिल है। तमाम मुल्के शाम पूरा इलाक़ा मिस्र अक्सर हिस्सा फ़ारस आपकी ख़िलाफ़त के ज़माने में फ़तह हुआ सल्तनते किसरा के टुकड़े उड़ गए ख़ुद किसरा को मुँह छुपाने के लिए कोई जगह न मिली, कामिल ज़िल्लत व एहानत के साथ भागता फिरा। क़ैसर को फ़ना कर दिया नाम मिटा दिया शाम की सल्तनत से दस्तबरदार होना पड़ा कुस्तुन्तुनिया में जाकर मुँह छुपाया। उन सल्तनों की सदियों की दौलत और जमा किये हुए बेशुमार ख़ज़ाने उन अल्लाह के बन्दों ने अल्लाह तआला के नेक नफ़्स और मिस्कीन ख़स्लत बन्दों पर ख़र्च किये और अल्लाह तआला के वह वादे पूरे हुए जो उसने हबीबे अकरम (ﷺ) की ज़ुबानी किये थे, सलवातुल्लाहि व सलामुहू अलैह

फिर हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) की ख़िलाफ़त का दौर आता है और मश्रिक़ व मग़्रिब की इंतिहा तक अल्लाह का दीन फैल जाता है। लश्करे इलाही एक तरफ़ अक़्साए मश्रिक़ तक और दूसरी जानिब इंतिहाए मग़्रिब तक पहुँचकर दम लेते हैं। और मुजाहिदीन की आबदार तलवारें अल्लाह की तौहीद को दुनिया के गोशे गोशे और चप्पे चप्पे में पहुँचा दती है। उंदलुस, क़बरस, क़ैरवान व सब्ता यहाँ तक कि चीन तक आपके ज़माने में फ़तह हुए किसरा क़त्ल कर दिया गया उसका मुल्क छोड़ नामो निशान तक खोदकर फेंक दिया गया और हज़ारों साल के आतिशकदे बुझा दिये गए और हर ऊँचे टीले से सदाए अल्लाहु अकबर आने लगी। दूसरी जानिब मदायन, इराक़, ख़ुरासान, अहवाज़ सब फ़तह हो गए तुर्कों से जंगे अज़ीम हुई, आख़िर उनका बड़ा बादशाह ख़ाक़ान ख़ाक में मिला ज़लीलोख़ार हुआ और ज़मीन के मश्रिक़ी और मग़्रिबी कोनों ने अपने ख़िराज बारगाहे ख़िलाफ़ते उस्मानी में पहुँचवाए। हक़ तो यह है कि मुजाहिदीन की इन जाँबाज़ियों में जान डालने वाली चीज़ हज़रत उस्मान (रज़ि.) की तिलावते क़ुरआन की बरकत थी। आप (रज़ि.) को क़ुरआन से कुछ ऐसा शग़फ़ था जो बयान से बाहर है। क़ुरआन के जमा करने, उसके हिफ़्ज़ करने, उसकी इशाअत करने, उसके संभालने में जो नुमायाँ ख़िदमतें ख़लीफ़ा सालिस से नुमायाँ हुई वह यक़ीनन अदीमुल मिसाल हैं। आपके ज़माने को देखो और अल्लाह तआला के रसूल की पेशगोई को देखो कि ''आप (ﷺ) ने फ़र्माया था मेरे लिए ज़मीन समेट दी गई यहाँ तक कि मैंने मश्रिक़ व मग़्रिब देख ली। अन्क़रीब मेरी उम्मत की सल्तनत वहाँ तक पहुँच जाएगी जहाँ तक इस वक़्त मुझे दिखाई गई है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब हलाकु हाज़िहिल उम्मति बअज़ुहुम बिबअज़िन : 2889) (मुसलमानों! बारी तआला के उस वादे को पैग़म्बर (ﷺ) की उस पेशगोई को देखो, फिर तारीख़ के औराक़ पलटो और अपनी गुज़िश्ता अज़्मत व शान को देखो, आओ नज़रें डालो कि आज तक इस्लाम का परचम बिहम्दिल्लाह! बुलंद है और मुसलमान उन मुजाहिदीने किराम की मफ़्तूह ज़मीनों में शाहाना हैसियत

से चल फिर रहे हैं अल्लाह तआला और उसके रसूल सच्चे हैं। मुसलमानों! हैफ़ और सदहैफ़ उस पर जो क़ुरआन व हदीस के दायरे से बाहर निकले हसरत और सदहसरत उस पर जो अपने आबाई ज़ख़ीरे को ग़ैर के हवाले करे। अपने बाप दादों (पूर्वजों) के ख़ून के क़तरों से ख़रीदी हुई चीज़ को अपनी नालायक़ों और बेदीनियों से ग़ैर की भेंट चढ़ा दे और सुख से बैठा लेटा रहे। अल्लाह तआला हमें कामिल ईमान अता कर अल्लाह हमें सच्चा ज़ौक़ दे अल्लाह हमें इस्लामी सिपाह बना अल्लाह हमें अपने लश्कर की तौफ़ीक़ दे, अल्लाह हमें अपना लश्करी बना ले आमीन, सुम्म आमीन!) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "लोगों का काम भलाई से जारी रहेगा यहाँ तक कि उनमें बारह ख़लीफ़ा हों। फिर आपने एक जुम्ला आहिस्ता बोला जो रावी हदीस हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.)सुन न सके तो उन्होंने अपने वालिद साहब से पूछा कि हुज़ूर (ﷺ) ने क्या फ़र्माया? उन्होंने बयान किया यह फ़र्माया है यह सबके सब क़ुरैशी होंगे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अहकाम, बाब अल्इस्तिख़्लाफ़ : 7222, 7223; सहीह मुस्लिम : 1821; अबूदाऊद : 4279; तिर्मिज़ी : 2223; अहमद : 5/86; इब्ने हिब्बान : 6666; दलाइलुन्नबुव्वा : 6/516) आपने यह बात उस शाम को बयान की थी जिस दिन हज़रत माइज़ बिन मालिक (रज़ि.) को रजम किया गया था। (सहीह मुस्लिम : 1822) पस मालूम हुआ कि इन बारह ख़लीफ़ाओं का होना ज़रूरी है लेकिन यह याद रहे कि यह वह ख़लीफ़ा नहीं जो शियों ने समझ रखे हैं क्योंकि शियों के इमामों में तो बहुत से वह भी हैं जिन्हें ख़िलाफ़त व सल्तनत का कोई हिस्सा भी पूरी उम्र में नहीं मिला था और यह बारह ख़ुल्फ़ा होंगे सबके सब क़ुरैशी होंगे, हुक्म में अदल करने वाले होंगे, इनकी बशारत अगली किताबों में भी है और यह भी शर्त नहीं है कि यह सबके सब यके बाद दीगरे होंगे बल्कि इनका होना यक़ीनी है ख़्वाह पे दर पे कुछ हों ख़्वाह मुतफ़र्रिक़ ज़मानों में कुछ हों। चुनाँचे चारों ख़लीफ़ा तो बित्तर्तीब हुए, पहले अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.), फिर उमर (रज़ि.), फिर उस्मान (रज़ि.) फिर अली (रज़ि.)। उनके बाद फिर सिलसिला टूट गया फिर भी ऐसे ख़लीफ़ा हुए और मुम्किन है आगे चलकर भी हों। उनके सही ज़मानों का इल्म अल्लाह ही को है, हाँ! इतना यक़ीनी है कि हज़रत इमाम महदी (रह.) भी उन ही बारह में से होंगे जिनका नाम हुज़ूर (ﷺ) के नाम से जिनकी कुन्नियत हुज़ूर (ﷺ) की कुन्नियत से मुताबिक़ होगी, तमाम ज़मीन को अदलो इंसाफ़ से भर देंगे जैसे कि वह ज़ुल्म व नाइंसाफ़ी से भर गई होगी। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "मेरे बाद ख़िलाफ़त तीस साल रहेगी फिर काट खाने वाला मुल्क हो जाएगा।" (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िल ख़ुलफ़ा : 4646; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2226; अहमद : 5/220; इनमें (काट खाने वाला) के लफ़्ज़ नहीं हैं।)

अबुल आलिया (रह.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं, हुज़ूर (ﷺ) और आपके अस्हाब (रज़ि.) दस साल तक मक्का में रहे अल्लाह की तौहीद और उसकी इबादत की तरफ़ दुनिया को दावत देते रहे लेकिन यह ज़माना पोशीदगी का डर ख़ौफ़ का और बेइत्मिनानी का था जिहाद का हुक्म नहीं आया था। मुसलमान बेहद कमज़ोर थे उसके बाद हिज्रत का हुक्म हुआ। मदीने पहुँचे अब जिहाद का हुक्म मिला, जिहाद शुरू हुआ, दुश्मनों ने चारों तरफ़ से घेरा हुआ था अहले इस्लाम बहुत डरे हुए थे। ख़तरे से कोई वक़्त ख़ाली न था, सुबह शाम सहाबा (रज़ि.) हथियारों से आरास्ता रहते थे।" एक सहाबी (रज़ि.) ने एक बार

हुज़ूर (ﷺ) से कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम इसी तरह ख़ौफ़ज़दा ही रहेंगे? या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हमारी ज़िन्दगी की कोई घड़ी भी इत्मिनान से नहीं गुज़रेगी? या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हथियार उतारकर भी हमें कभी आसूदगी का साँस लेना मयस्सर होगा? आपने पूरे सुकून से फ़र्माया, कुछ दिन और सब्र कर लो फिर तो इस क़द्र अमनो इत्मिनान हो जाएगा कि पूरी मज्लिस में भरे दरबार में गोट लगाए आराम से बैठे हुए होंगे, एक के पास क्या किसी के पास भी कोई हथियार न होगा क्यों कि कामिल अम्नो अमान पूरा इत्मिनान होगा।" उस वक़्त यह आयत उतरी। फिर तो अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) जज़ीरा अरब पर ग़ालिब आ गए। अरब भर में कोई काफ़िर न रहा, मुसलमानों के दिल ख़ौफ़ से ख़ाली हो गए और हथियार हर वक़्त लगाए रहने ज़रूरी न रहे। फिर उसी अम्न व राहत का दौर दौरा हुज़ूर (ﷺ) के बाद भी तीन ख़िलाफ़तों तक रहा यानी अबूबक्र, उमर और उस्मान (रज़ि.) के ज़माना तक। फिर मुसलमान उन झगड़ों में पड़ गए जो ज़ाहिर हुए फिर ख़ौफ़ज़दा रहने लगे और पहरेदार, चौकीदार, दारोग़े वग़ैरह मुक़र्रर किये। अपनी हालतों को मुतग़य्यर किया तो मुतग़य्यर हो गए। कुछ सलफ़ से मंक़ूल है कि उन्होंने हज़रत अबूबक्र, उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त की हक़्क़ानियत के बारे में इस आयत को पेश किया। बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) कहते हैं कि जिस वक़्त यह आयत उतरी है उस वक़्त हम इंतिहाई ख़ौफ़ और इज़्तिराब की हालत में थे। जैसे फ़र्मान है (وَ اذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ) (8/अन्फ़ाल : 26) यानी वह वक़्त भी था कि तुम बेहद कमज़ोर और थोड़े थे और क़दम क़दम और दम दम पर ख़ौफ़ज़दा होते रहते थे, अल्लाह तआला ने तुम्हारी तादाद बढ़ा दी, तुम्हें कुव्वत व ताक़त इनायत की और अम्नो अमान दिया। फिर बयान किया कि जैसे इनसे पहले के लोगों को उसने ज़मीन का मालिक कर दिया था जैसे कि कलीमुल्लाह हज़रत मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया था (عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ) (7/आराफ़ : 129) बहुत मुम्किन है बल्कि बहुत क़रीब है कि अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों को हलाक कर दे और तुम्हें उनका जानशीन बना दे। और आयत में है (وَ نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ) (28/क़सस : 5) यानी हमने उन पर एहसान करना चाहा जो ज़मीन भर में सबसे ज़्यादा ज़ईफ़ और नातवाँ थे।

फिर फ़र्माया कि उनके दीन को जो पसंदीदा अल्लाह तआला है जमा देगा और उसे कुव्वत व ताक़त देगा। "हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि.) जब बतौरे वफ़्द आप (ﷺ) के पास आए तो आपने उनसे फ़र्माया क्या तूने हीरा देखा है। उसने जवाब दिया कि मैं हीरा को नहीं जानता हाँ! नाम सुना है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उसकी क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अल्लाह तआला मेरे इस दीन को कामिल तौर पर फैलाएगा यहाँ तक कि अम्नो अमान हो जाएगा कि हीरा से एक साँडनी सवार औरत अकेले निकलेगी और वह बैतुल्लाह तक पहुँचकर तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर वापिस लौट जाएगी, न ख़ौफ़ज़दा होगी, न वह किसी की अमान में होगी। यक़ीन मानो कि किसरा बिन हुर्मुज़ शाहे ईरान के ख़ज़ाने फ़तह होंगे। हज़रत अदी (रज़ि.) ने ताज्जुब से पूछा कि शाहे ईरान किसरा बिन हुर्मुज़ के ख़ज़ाने मुसलमानों के फ़ुतूहात में आएँगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! इसी किसरा बिन हुर्मुज़ के। सुनो इस क़द्र माल बढ़ जाएगा कि कोई क़बूल करने वाला न मिलेगा। हज़रत अदी (रज़ि.) फ़र्माते हैं अब तुम देख लो कि फ़िल वाक़ेई हीरा से औरतें बग़ैर किसी की

पनाह के आती जाती हैं। इस पेशीनगोई को पूरा होते हुए हमने देख लिया। दूसरी पेशीनगोई तो मेरी नज़रों के सामने पूरी हुई। किसरा के ख़ज़ाने फ़तह करने वालों में ख़ुद मैं मौजूद था और तीसरी पेशीनगोई भी यक़ीनन पूरी होकर रहेगी क्योंकि वह भी रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है।" (अहमद : 4/257; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; दलाइलुन्नबुव्वा : 5/343; इसकी असल सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब अलामातुन्नबुव्वति फ़िल इस्लामि 3595 में है और वही सही है।) मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "इस उम्मत को तरक़्क़ी और बढ़ोतरी की मदद और दीन की इशाअत की बशारत दो। हाँ! जो शख़्स आख़िरत का अमल दुनिया के हासिल करने के लिए करे वह जान ले कि आख़िरत में उसे कोई हिस्सा न मिलेगा।" (अहमद : 5/134; ह : 21223; व सनदुहू हसन; हाकिम : 4/311; इब्ने हिब्बान : 405)

फिर फ़र्माता है कि वह मेरी ही इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को शरीक न करेंगे। मुस्नद अहमद में है कि "हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैं एक गधे पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ आपके पीछे बैठा हुआ था मेरे और आप (ﷺ) के बीच सिर्फ़ पालान की लकड़ी थी। आपने मेरे नाम से मुझे आवाज़ दी। मैंने लब्बैक व सअदैक कहा। फिर थोड़ी सी देर चलने के बाद उसी तरह मुझे पुकारा और मैंने भी उसी तरह जवाब दिया। आपने फ़र्माया, जानते हो अल्लाह तआला का हक़ अपने बन्दों पर क्या है? मैंने कहा, अल्लाह तआला और उसका रसूल ख़ूब जानते हैं। आपने फ़र्माया, बन्दों पर अल्लाह तआला का हक़ यह है कि वह उसी की इबादत करें उसके साथ किसी को शरीक न करें। फिर थोड़ी देर चलने के बाद मुझे पुकारा और मैंने जवाब दिया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया जानते हो जब बन्दे अल्लाह के हक़ अदा करें तो अल्लाह के ज़िम्मे बन्दों का क्या हक़ है? मैंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) ही को पूरा इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह कि उन्हें अज़ाब न करे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब इरदाफ़ुर्रजुल ख़ल्फ़र्रजुल : 5967; सहीह मुस्लिम : 30; अहमद : 5/242; इब्ने हिब्बान : 362) फिर फ़र्माया उसके बाद जो मुंकिर हो जाए वह यक़ीनन फ़ासिक़ है। यानी उसके बाद भी जो मेरी फ़र्मांबरदारी छोड़ दे उसने मेरी हुक्म अदूली की और यह गुनाह सख़्त और बहुत बड़ा है। शाने बारी तआला देखो जितना जिस ज़माने में ज़ोरे इस्लाम रहा उतनी ही मददे बारी तआला हुई। सहाबा (रज़ि.) अपने ईमान में बढ़े हुए थे फ़ुतूहात में भी सबसे आगे निकल गए ज्यों ज्यों ईमान कमज़ोर होता गया दुनियावी हालत सल्तनत व शौकत भी गिरती गई। बुख़ारी व मुस्लिम में है "मेरी उम्मत में से एक जमाअत हमेशा बरसरे हक़ रहेगी और वह ग़ालिब रहेगी। उनके मुख़ालिफ़ उनका कुछ न बिगाड़ सकेंगे, क़ियामत तक इसी तरह रहेगी।" और रिवायत में है "यहाँ तक कि अल्लाह तआला का वादा आ जाए।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (इन्नमा क़ौलुना लि शैइन इज़ा अरदनाहू) : 7459; सहीह मुस्लिम : 1920; अबूदाऊद : 2484; तिर्मिज़ी : 2177) और एक रिवायत में है "यहाँ तक कि यही जमाअत सबसे आख़िर दज्जाल से जिहाद करेगी।" और हदीस में है कि "हज़रत ईसा (ﷺ) के उतरने तक यह लोग काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे।" (मुस्नदे अबी यअला : 2078; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी असल सहीह मुस्लिम 156 में मौजूद है और यही सही है।) यह सब रिवायतें सही हैं और सबका एक ही मतलब है।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾

तर्जुमा : "नमाज़ की पाबन्दी करो ज़कात अदा करते रहो अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी में लगे रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (56) यह ख़्याल तो कभी भी न करना कि मुंकिर लोग ज़मीन में इधर उधर भागकर हमें हरा देने वाले हैं। उनका अस़ली ठिकाना तो जहन्नम है। जो यक़ीनन बहुत ही बुरा ठिकाना है।" (57)

आमाले ख़ैर की तर्ग़ीब (आयत 56, 57) : अल्लाह तआला अपने ईमान वाले बन्दों को सिर्फ़ अपनी इबादत का हुक्म देता है कि उसी के लिए नमाज़ें पढ़ते रहो और साथ ही उसी के बन्दों के साथ एहसान और सलूक करते रहो। ज़ईफ़ों, मिस्कीनों, फ़क़ीरों की ख़बरगीरी करते रहो। माल में से हक़्क़े रब्बानी यानी ज़कात निकालते रहो। और हर अम्र में अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) की इताअत करते रहो जिस बात का वह हुक्म दे बजा लाओ जिस अम्र से रोके रुक जाओ। यक़ीन जानो कि अल्लाह तआला की रहमत के हासिल करने का यही तरीक़ा है। चुनाँचे और आयत में है (اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ) (9/तौबा : 71) यही लोग हैं जिन पर ज़रूर ज़रूर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल होती है ऐ नबी (ﷺ)! यह गुमान न करना कि आपको झुठलाने वाले और आपकी न मानने वाले हम पर ग़ालिब आ जाएँगे या इधर उधर भागकर हमारे बेपनाह अज़ाबों से बच जाएँगे। हम तो उनका अस़ली ठिकाना जहन्नम में मुक़र्रर कर चुके हैं। जो निहायत बुरी जगह हैं क़रारगाह के ऐतिबार से भी और बाज़गश्त के ऐतिबार से भी।

***

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا

الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ

الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۗ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ

جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ

الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾ وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا

اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ

ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : ''ईमान वालों ! तुमसे तुम्हारी मिल्कियत के गुलामों और उन्हें भी जो तुममें से बुलूग़त को न पहुँचे हों अपने आने की तीन वक़्तों में इजाज़त हासिल करनी ज़रूरी है। नमाज़े फ़ज्र से पहले और ज़ुहर के वक़्त जबकि तुम अपने कपड़े उतार रखते हो और इशा की नमाज़ के बाद यह तीनों वक़्त तुम्हारी ख़ल्वत और पर्दा के हैं। (58) इन वक़्तों के अलावा न तो तुम पर कोई गुनाह है न उन पर। तुम सब आपस में एक दूसरे के पास बकसरत आने जाने वाले हो ही। अल्लाह तआला इस तरह खोल खोलकर अपने अहकाम तुमसे बयान कर रहा है। अल्लाह तआला पूरे इल्म और कामिल हिक्मत वाला है। तुममें के बच्चे भी जब बुलूग़त को पहुँच जाएँ तो जिस तरह उनसे पहले के बड़े लोग इजाज़त माँग लिया करते हैं उन्हें भी इजाज़त माँगकर आना चाहिए। (59) अल्लाह तआला तुमसे इसी तरह अपनी आयतें बयान करता है अल्लाह तआला ही हिल्म हिक्मत वाला है। बूढ़ी बड़ी औरतें जिन्हें निकाह की उम्मीद व ख़्वाहिश ही न रही हो वह अगर अपने कपड़े उतार रखें तो उन पर कोई गुनाह नहीं बशर्तेकि वह अपना बनाव सिंगार ज़ाहिर करने वालियाँ न हों। लेकिन ताहम अगर उनसे भी एहतियात रखें तो उनके लिए बहुत अफ़ज़ल है और अल्लाह तआला सुनने वाला, जानने वाला है।'' (60)

बग़ैर इजाज़त घरों में दाख़िले मम्नूअ है (आ. 58 से 60) : इस आयत में क़रीबी रिश्तेदारों को भी हुक्म हो रहा है कि वह भी इजाज़त हासिल करके आया करें। इससे पहले को इस सूरत की शुरू की आयत में जो हुक्म था वह अजनबियों के लिए था। पस फ़र्माता है कि तीन वक़्तों में गुलामों को बल्कि नाबालिग़ बच्चों को भी इजाज़त माँगनी चाहिए। सुबह की नमाज़ से पहले क्योंकि वह सोने का वक़्त होता है और दोपहर को जबकि इंसान दो घड़ी राहत हासिल करने के लिए उमूमन अपने घर में बालाई कपड़े उतारकर सोता है और इशा की नमाज़ के बाद क्यों कि वह भी बाल बच्चों के साथ सोने का वक़्त है। पस तीन वक़्तों में न मालूम इंसान बेफ़िक्री से अपने घर में किस हालत में हो? इसलिए घर के लौण्डी गुलाम और छोटे बच्चे भी बग़ैर ख़बर दिये इन वक़्तों में चुपचाप न घुस आएँ। हाँ! इन ख़ास वक़्तों के अलावा उन्हें आने की इजाज़त माँगने की ज़रूरत नहीं क्योंकि उनका आना जाना तो ज़रूरी है बार बार के आने जाने वाले हैं हर वक़्त को इजाज़त तलबी उनके लिए और नीज़ तुम्हारे लिए बड़ी हर्ज की चीज़ होगी। एक हदीस में है कि ''बिल्ली नजिस नहीं वह तो तुम्हारे घरों में तुम्हारे आस पास घूमने फिरने वाली है।'' (अबूदाऊद,

किताबुत्तहारत, बाब सूअरुल हिर्रा : 75, 76; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 92; नसाई : 68; इब्ने माजा : 367; अहमद : 5/303; इब्ने हिब्बान : 1299; हाकिम : 1/160) हुक्म तो यही है और अमल इस पर बहुत कम है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं तीन आयतों पर उमूमन लोगों ने अमल छोड़ रखे हैं। एक तो यही आयत और एक सूरह निसाअ की आयत (وَ اِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ) (4/निसाअ : 8) और एक सूरह हुजुरात की आयत (اِنَّ اَكْرَمَكُمْ) (49/हुजुरात : 13) शैतान लोगों पर छा गया और उन्हें इन आयतों पर अमल करने से ग़ाफ़िल कर दिया गोया उन पर ईमान ही नहीं। मैंने तो अपनी उस लौण्डी से भी कह रखा है कि इन तीनों वक़्तों में बग़ैर इजाज़त हर्गिज़ न आए। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल इस्तिअज़ान फ़िल औरातिस्सुलास : 5191; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान बिन उयेयना मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं।) पहली आयत में तो इन तीनों वक़्तों में लौण्डी गुलाम और नाबालिग़ बच्चों को भी इजाज़त लेने का हुक्म है। दूसरी आयत में वर्से की तक़्सीम के वक़्त जो क़राबतदार और यतीम मिस्कीन आ जाएँ उन्हें अल्लाह तआला के नाम पर कुछ दे देने और उनसे नर्मी से बात करने का हुक्म है। और तीसरी आयत में हसब नसब पर फ़ख़्र न करने बल्कि क़ाबिले इकराम ख़ौफ़ इलाही के होने का ज़िक्र है।

हज़रत शअबी (रह.) से किसी ने पूछा कि क्या यह आयत मंसूख़ हो गई है? आपने फ़र्माया, हर्गिज़ नहीं! उसने कहा फिर लोगों ने इस पर अमल क्यूँ छोड़ रखा है? फ़र्माया अल्लाह तआला से तौफ़ीक़ तलब करनी चाहिए। (तब्री : 19/213) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं इस आयत पर अमल के तर्क की एक बड़ी वजह मालदारी और फ़राख़ी है। पहले तो लोगों के पास इतना भी न था कि अपने दरवाज़ों पर पर्दे लटका लेते बाकुशादा घर कई अलग अलग कमरों वाले होते तो बसाऔक़ात लौण्डी गुलाम बेख़बरी में चले आते और मियाँ बीवी मशग़ूल होते तो आने वाले भी शर्मा जाते और घर वालों पर भी शाक़ गुज़रता, अब जबकि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को कुशादगी दी कमरे जुदागाना बन गए दरवाज़े बाक़ायदा लग गए दरवाज़ों पर पर्दे पड़ गए तो महफ़ूज़ हो गए, हुक्मे इलाही की मस्लिहत पूरी हो गई इसलिए इजाज़त की पाबंदी उठ गई और लोगों ने उसमें सुस्ती और ग़फ़्लत शुरू कर दी। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल इस्तिअज़ान फ़िल औरातिस्सलासा : 5192; बहुव हसन) सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं यही तीन वक़्त ऐसे हैं कि इंसान को ज़रा फ़ुर्सत होती है घर में होता है अल्लाह जाने किस हालत में हो इसलिए लौण्डी गुलामों को भी इजाज़त का पाबंद कर दिया क्योंकि उसी वक़्त में उमूमन लोग अपनी घरवालियों से मिलते हैं ताकि नहा धोकर बाआराम घर से निकलें और नमाज़ों में शामिल हों। यह भी मरवी है कि "एक अंसारी (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) के लिए कुछ खाना पकाया लोग बग़ैर इजाज़त उनके घर में जाने लगे। हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह तो निहायत बुरी बात है कि गुलाम बग़ैर इजाज़त घर में आ जाए, मुम्किन है कि मियाँ बीवी एक ही कपड़े में हों।" पस यह आयत उतरी। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) इस आयत के मंसूख़ न होने पर इस आयत के ख़ात्मे के अल्फ़ाज़ भी दलालत करते हैं कि इसी तरह अल्लाह तआला अपनी आयतें बयान करता है और अल्लाह तआला अलीम व हकीम है। हाँ! जब बच्चे बुलूग़त को पहुँच जाएँ तो फिर उन्हें इन तीनों वक़्तों के अलावा और वक़्तों में भी इजाज़त लेनी चाहिए। छोटे बच्चों को

घर में अपने माँ बाप के पास जाने के लिए भी इन तीन वक़्तों में जिनका बयान ऊपर गुज़र चुका है इजाज़त माँगनी ज़रूरी है। लेकिन बुलूग़त के बाद तो हर वक़्त ख़बर करके ही जाना चाहिए जैसे कि और बड़े लोग इजाज़त माँगकर आते हैं ख़्वाह अपने हों ख़्वाह पराये। जो बुढ़िया औरतें इस उम्र को पहुँच जाएँ कि न अब उन्हें मर्द की ख़्वाहिश रहे न निकाह की तवक़्क़ा हैज़ बंद हो जाए उम्र से उतर जाएँ तो उन पर पर्दे की वह पाबन्दियाँ नहीं जो और औरतों पर हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं आयत (وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ) (24/नूर : 31) से यह आयत मुस्तस्ना है। (अबूदाऊद, किताबुल्लिबास, बाब फ़ी क़ौलिही तआला (कुल लिल मोमिनाति यग़्ज़ुज़्ना मिन अब्सारिहिन्न) : 4111; व सनदुहू हसन) इब्ने मसऊद (रज़ि.) से रिवायत है कि ऐसी औरतों को इजाज़त है कि वह बुर्क़ा और चादर उतार दिया करें सिर्फ़ दुपट्टे में और कुर्ते पाजामे में रहें। (तबरी : 19/217) आपकी क़िराअत भी (अंय्यज़अना मिन सियाबिहिन्न) है मुराद इससे दुपट्टे के ऊपर की चादर है। तो बुढ़िया औरतें जबकि मोटा चौड़ा दुपट्टा ओढ़े हुए हों तो उन्हें उसके ऊपर और चादर डालना ज़रूरी नहीं। लेकिन मक़्सूद इससे भी इज़्हारे ज़ीनत न हो। हज़रत आइशा (रज़ि.) से जब इस क़िस्म के सवालात औरतों ने किये तो आपने फ़र्माया, तुम्हारे लिए बनाव सिंगार बेशक हलाल तय्यिब है लेकिन ग़ैर मर्दों की आँखें ठण्डी करने के लिए नहीं। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) की बीवी साहिबा (रज़ि.) जब बिलकुल बुढ़िया फूस हो गईं तो आपने अपने गुलाम के हाथों अपने सर के बालों में मेहन्दी लगवाई जब उनसे इसका सवाल किया गया तो फ़र्माया कि मैं उन उम्ररसीदा औरतों में हूँ जिन्हें ख़्वाहिश नहीं रही। आख़िर में फ़र्माया कि भले चादर का न लेना उन बड़ी बूढ़ी औरतों के लिए जाइज़ है मगर ताहम अफ़ज़ल यही है कि चादरों और बुर्क़ों में ही रहें। अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।

***

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى
اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾

तर्जुमा : ''अंधे पर, लंगड़े पर, बीमार पर और ख़ुद तुम पर मुत्लक़न कोई हर्ज नहीं कि तुम अपने घरों से खा लो या अपने बापों के घरों से या अपनी माओं के घरों से या अपने भाईयों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामूओं के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उन घरों से जिनकी कुँजियों के मालिक तुम हो या अपने दोस्तों के घरों से खा लो। तुम पर इसमें भी कोई गुनाह नहीं कि तुम सब साथ बैठकर खाना खाओ या अलग अलग। पस जब तुम घरों में जाने लगो तो अपने वालों को सलाम कर लिया करो दुआए ख़ैर है जो बाबरकत और पाकीज़ा है अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िलशुदा। यूँ ही अल्लाह तआला खोल खोलकर तुमसे अपने अहकाम बयान फ़र्मा रहा है ताकि तुम समझ लो।''(61)

क़रीबी रिश्तेदारों के घर और मुतअल्लिक़ा आदाब (आ. 61) : इस आयत में जिस हर्ज के न होने का ज़िक्र है उसकी बाबत हज़रत अ़ता (रह.) वग़ैरह तो फ़र्माते हैं मुराद इससे अंधे लूले लंगड़े का जिहाद में न आना है। जैसे कि सूरह फ़तह में है तो यह लोग अगर जिहाद में शामिल न हों तो इन पर बवजह इनके म अक़ूल शरई उ़ज़्र के कोई हर्ज नहीं। सूरह बरा'त में है (لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ) (9/तौबा : 91) बूढ़े बड़ों पर और बीमारों पर और मुफ़्लिसों पर जबकि वह तहेदिल से दीने इलाही के और रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ैरख़्वाह हों कोई हर्ज नहीं भले लोगों पर कोई सरज़निश नहीं, अल्लाह ग़फ़ूर्रहीम है। उन पर भी इसी तरह कोई हर्ज नहीं जो सवारी नहीं पाते और तेरे पास आते हैं तो तेरे पास से भी उन्हें सवारी नहीं मिल सकती, आख़िर तक। हज़रत सईद (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कि लोग अंधो, लूलों, लंगड़ों और बीमारों के साथ खाना खाने में हर्ज जानते थे कि ऐसा न हो वह खा न सकें और हम ज़्यादा खा लें या अच्छा अच्छा खा लें तो इस आयत में उन्हें इजाज़त मिली कि इसमें तुम पर कोई हर्ज नहीं। (तब्री : 19/221) कुछ लोग घिन करके भी उनके साथ खाने को नहीं बैठते थे। यह जाहिलाना आदतें शरीअ़त ने उठा दीं। मुजाहिद (रह.) से मरवी है कि लोग ऐसे लोगों को अपने बाप भाई बहन वग़ैरह क़रीबी रिश्तेदारों के यहाँ पहुँचा आते थे कि वह वहाँ खा लें यह लोग उससे आ़र करते कि हमें औरों के घर ले जाते हैं। इस पर यह आयत उतरी। सुद्दी (रह.) का क़ौल है कि इंसान जब अपने भाई बहिन वग़ैरह के घर जाता वह न होते और औरतें कोई खाना उन्हें पेश करतीं तो यह उसे नहीं खाते थे कि मर्द तो हैं ही नहीं न उनकी इजाज़त है तो जनाब बारी तआला ने उसके खा लेने की रुख़्सत दे दी। यह जो फ़र्माया कि ख़ुद तुम पर भी हर्ज नहीं। यह तो ज़ाहिर ही था बयान इसका इसलिए किया गया कि और चीज़ का इस पर अ़त्फ़ हो और उसके बाद का बयान इस हुक्म में बराबर हो। बेटों के घरों का भी यही हुक्म है भले लफ़्ज़ों में बयान नहीं आया लेकिन ज़िम्नन है बल्कि इसी आयत से इस्तिदलाल करके कुछ लोगों ने कहा है कि बेटे का माल बमंज़िला बाप के माल के है। मुस्नद और सुनन में कई सनदों से हदीस है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, तू और तेरा माल तेरे बाप का है।'' (अबूदाऊद, किताबुल बुयूअ, बाब अरंजुल यअकुलु मिम्मालि व वलदिही : 3530; व सनदुहू हसन; इब्ने माजा : 22?2; अहमद : 2/179) और जिन लोगों के नाम आए हैं उनसे इस्तिदलाल करके कुछ ने कहा है कि क़राबतदारों का नान नफ़्क़ा कुछ का कुछ पर वाजिब है जैसे कि इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का और इमाम अहमद (रह.) का

मज़हब का मशहूर मक़ूला है। जिसकी कुँजियाँ तुम्हारी मिल्कियत में हैं उससे मुराद गुलाम और दारोग़े हैं कि वह अपने आक़ा के माल से हस्बे ज़रूरत व दस्तूर खा पी सकते हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) का बयान है कि "जब रसूलुल्लाह (ﷺ) जंग में जाते तो हर एक की चाहत यही होती कि हम भी आपके साथ जाएँ। जाते हुए अपने ख़ास दोस्तों को अपनी कुँजियाँ दे जाते और उनसे कह देते कि जिस चीज़ के खाने की तुम्हें ज़रूरत हो हम तुम्हें रुख़्सत देते हैं। लेकिन ताहम यह लोग अपने आपको अमीन समझकर और इस ख़्याल से मबादा उन लोगों ने बादिले नाख़्वास्ता इजाज़त दी हो किसी खाने पीने की चीज़ को न छूते।" इस पर यह हुक्म नाज़िल हुआ।

फिर फ़र्माया कि तुम्हारे दोस्तों के घरों से भी खा लेने में तुम पर कोई पकड़ नहीं जबकि तुम्हें इल्म हो कि वह उसका बुरा न मानेंगे और उन पर यह शाक़ न गुज़रेगा। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि तू जब अपने दोस्त के यहाँ जाए तो उसकी बग़ैर इजाज़त इसके खाने को खा लेने की तुझे रुख़्सत है। फिर फ़र्माया तुम पर साथ बैठकर खाना खाने में और जुदा जुदा होकर खाने में कोई गुनाह नहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि जब आयत (يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ) (4/निसाअ : 29) उतरी यानी ईमान वालों! एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ। तो सहाबा (रज़ि.) ने आपस में कहा कि खाने पीने की चीज़ें भी माल हैं तो हमें यह भी हलाल नहीं कि एक दूसरे के साथ खाएँ। चुनाँचे वह इससे भी रुक गए इस पर यह आयत उतरी। (तब्री : 19/224) इसी तरह तंहाख़ोरी से भी कराहियत करते थे जब तक कोई साथ न हो न खाते थे। इसलिए अल्लाह तआला ने इस हुक्म में दोनों बातों की इजाज़त दी यानी दूसरों के साथ खाने की और तंहा खाने की। क़बीला बनू किनाना के लोग ख़ुसूसियत से इस बीमारी में मुब्तला थे, भूखे होते थे लेकिन जब तक साथ खाने वाला कोई न हो खाते न थे, सवारी पर सवार होकर साथ खाने वाले की तलाश में निकलते थे। पस इस आयत में अल्लाह तआला ने अकेले खाने की रुख़्सत नाज़िल करके जाहिलियत की यह सख़्त रस्म मिटा दी। (तब्री : 19/224) इसआयत में भले तंहा खाने की रुख़्सत है लेकिन यह याद रहे कि लोगों के साथ मिलकर खाना अफ़ज़ल है और ज़्यादा बरकत भी इसी में है। मुस्नद अहमद में है कि एक शख़्स ने आकर कहा, या रसूलल्लाह (स.)! हम खाते तो हैं लेकिन आसूदगी हासिल नहीं होती। आपने फ़र्माया, शायद तुम अलग अलग खाते होंगे जमा होकर एक साथ बैठकर अल्लाह तआला का नाम लेकर खाओ तो तुम्हें बरकत दी जाएगी।" (अबूदाऊद, किताबुल अत्इमा, बाब फ़िल इज्तिमाइ अलत्तआम : 3764; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; हर्ब बिन वहशी मज्हूलुल हाल है नीज़ वलीद बिन मुस्लिम मुदल्लस की तसरीह नहीं है। इब्ने माजा : 2386; अहमद : 3/501; इब्ने हिब्बान : 5224) इब्ने माजा वग़ैरह में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मिलकर खाओ तंहा न खाओ बरकत मिल बैठने में है।" (इब्ने माजा, किताबुल अत्इमा, बाब अल्इज्तिमाइ अलत्तआम : 3287; वहुव हसन) फिर तालीम हुई कि घरों में सलाम करके जाया करो। हज़रत जाबिर (रज़ि.) का फ़र्मान है कि जब तुम घरों में जाओ तो अल्लाह तआला का सिखाया हुआ बाबरकत भला सलाम कहा करो, मैंने तो आज़माया है कि यह सरासर बरकत है। इब्ने ताउस (रह.) फ़र्माते हैं तुममें से जो घर में दाख़िल हो तो घरवालों को सलाम कहे। (तब्री : 19/225) हज़रत अता (रह.) से पूछा गया कि क्या यह वाजिब है? फ़र्माया, मुझे तो याद नहीं कि इसके वुजूब का क़ाइल कोई हो लेकिन हाँ

मझे तो यह बहुत ही पसंद है कि जब भी घर में जाओ सलाम करके जाओ। मैं तो इसे कभी नहीं छोड़ता हूँ! यह और बात है कि भूल जाऊँ। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं जब मस्जिद में जाओ तो कहो (अस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि) और जब अपने घर में जाओ तो अपने बाल बच्चों को सलाम करो और जब किसी ऐसे घर में जाओ जहाँ कोई न हो तो इस तरह कहो(अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहिस्सालेहीन) यह भी मरवी है कि यूँ कहो (बिस्मिल्लाहि वल ह़म्दु लिल्लाहिस् सलामु अ़लैना मिर्रब्बिनस्सलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहिस्सालेहीन)। ह़ज़रत क़तादा (रह.) कहते हैं कि अपने घर वालों के पास सलाम करके जाओ और ग़ैर आबाद घरों में जाते हुए यूँ सलाम करो (अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहिस्सालेहीन) यही हुक्म दिया जा रहा है ऐसे वक़्तों में तुम्हारे सलाम का जवाब अल्लाह तआला के फ़रिश्ते देते हैं।'' ह़ज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुझे नबी (ﷺ) ने पाँच बातों की वसिय्यत की है। फ़र्माया, ऐ अनस! कामिल वुज़ू करो, तुम्हारी उम्र बढ़ेगी। जो मेरा उम्मती मिले सलाम करो नेकियाँ बढ़ेंगी। घर में सलाम करके जाया करो घर की ख़ैरियत बढ़ेगी। ज़ुहा की नमाज़ पढ़ते रहो, तुमसे अगले लोग जो अल्लाह वाले बन गए थे उनका यही तरीक़ा था। ऐ अनस! छोटों पर रहम कर, बड़ों की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर कर, तू क़ियामत के दिन मेरा साथी होगा।'' (इसकी सनद में उ़बैद बिन अबी इमरान के सख़्त ज़ईफ़ होने की वजह से ज़ईफ़ है।) फिर फ़र्माता है यह दुआ-ए-ख़ैर है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हें सिखाई गई है। बरकत वाली और उ़म्दह है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने तो अत्तहिय्यातु क़ुरआन से सीखी है नमाज़ की अत्तहिय्यात यूँ है (अत्तहिय्यातुल मुबारकातुस्सलवातुत् तय्यिबातु लिल्लाहि अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू, अस्सलामु अ़लैका अय्युहन् नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहिस्सालेहीन) इसे पढ़कर नमाज़ी को अपने लिए दुआ करनी चाहिए फिर सलाम फेर दे, इन ही ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरफ़ूअन सह़ीह़ मुस्लिम में इसके सिवा भी मरवी है। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब तशह्हुद फ़िस्सलाति : 403) वल्लाहु आ़लम! इस सूरत के अह़काम का ज़िक्र करके फिर फ़र्माया कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के सामने अपने वाज़ेह अह़काम मुफ़ीद फ़र्मान खोल खोलकर इसी तरह बयान किया करता है ताकि वह ग़ौरो फ़िक्र करें सोचें समझें और अक़्लमंदी ह़ासिल करें।

***

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ
يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ
لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ

بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ
يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

तर्जुमा : ''ईमानवाले लोग तो वही हैं जो अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर यक़ीन रखते हैं और जब ऐसे मामले में जिसमें लोगों के जमा होने की ज़रूरत होती है, नबी के साथ होते हैं तो जब तक आपसे इजाज़त न लें कहीं नहीं जाते। जो लोग ऐसे मौक़े पर तुझे इजाज़त ले लेते हैं हक़ीक़त में यही हैं जो अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर ईमान ला चुके हैं। पस जब ऐसे लोग तुझसे अपने किसी काम के लिए इजाज़त तलब करें तो तू उनमें से जिसे चाहे इजाज़त दे दिया कर और उनके लिए अल्लाह तआला से बख़्शिश की दुआ माँगा कर। बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है। (62) तुम अल्लाह तआला के नबी के बुलाने को ऐसा मामूली बुलावा न समझो जैसे आपस में एक का एक होता है तुममें से उन्हें अल्लाह तआला ख़ूब जानता है जो नज़र बचाकर चुपके से खिसक जाते हैं। सुनो! जो लोग हुक्मे रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े या कोई दुख की मार न पड़े।'' (63)

आदाबे मज्लिस (आ. 62, 63) : अल्लाह तआला मोमिन बन्दों को एक अदब और भी सिखाता है कि जैसे आते हुए इजाज़त माँगकर आते हो वैसे ही जाने के वक़्त भी मेरे नबी से इजाज़त माँगकर जाओ। ख़ुसूसन ऐसे वक़्त जबकि मज्मआ हो और किसी ज़रूरी अम्र पर मज्लिस हुई हो, मस्लन नमाज़े जुम्आ है या ईद है या जमाअत है या कोई मज्लिसे शूरा है वग़ैरह वग़ैरह तो ऐसे मौक़ों पर जब तक हुज़ूर (ﷺ) से इजाज़त न ले लो हर्गिज़ इधर उधर न जाओ, मोमिने कामिल की एक निशानी यह भी है। फिर अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माया, जब यह अपने किसी ज़रूरी काम के लिए आप (ﷺ) से इजाज़त चाहें तो आप (ﷺ) उनमें से जिसे चाहें इजाज़त दे दिया करें और उनके लिए तलबे बख़्शिश की दुआएँ भी करते रहें। अबूदाऊद वग़ैरह में है ''जब तुममें से कोई किसी मज्लिस में जाए तो अहले मज्लिस को सलाम कर लिया करे और जब वहाँ से आना चाहे तो भी सलाम कर लिया करे, आख़िरी बार का सलाम पहली बार के सलाम से कुछ कम नहीं है।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िस्सलामि इज़ा क़ाम मिनल मज्लिस : 5208; व सनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 2706; अहमद : 2/287; अल्अदबुल मुफ़रद : 1008; इब्ने हिब्बान : 494)

नबी (ﷺ) का एहतिराम : लोग हुज़ूर (ﷺ) को जब बुलाते तो आप (ﷺ) के नाम या कुन्नियत से मामूली तौर पर जैसे आपस में एक दूसरे को पुकारा करते थे तो अल्लाह तआला ने इस गुस्ताख़ी से मना किया कि नाम न लो बल्कि ऐ अल्लाह के नबी! या ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ) कहकर पुकारा करो ताकि आप (ﷺ) की बुज़ुर्गी और इज़्ज़त व अदब का पास रहे। (तब्री : 19/230) इसी के मिस्ल आयत (لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا) (2/बक़रह : 104) है और इसी जैसी आयत (لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ) (49/हुजुरात : 2) है यानी ईमान वालों! अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ पर बुलंद न करो आप (ﷺ) के सामने ऊँची

ऊँची आवाज़ों से न बोलो जैसे कि बेतकल्लुफ़ी से आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो अगर ऐसा किया तो सब आमाल ग़ारत हो जाएँगे और पता भी न चलेगा, आख़िर तक। यहाँ तक फ़र्माया जो लोग तुझे हुज्रों के पीछे से पुकारते हैं उनमें से अक्सर बेअक़्ल हैं अगर वह सब्र करते यहाँ तक कि आप उनके पास आ जाते तो यह उनके लिए बेहतर था। पस यह सब आदाब सिखाए गए कि आप (ﷺ) से ख़िताब किस तरह करें। आप (ﷺ) से बातचीत किस तरह करें। आपके सामने किस तरह बोलें चालें। बल्कि पहले तो आप (ﷺ) से सरगोशियाँ करने के लिए सदक़ा करने का भी हुक्म था। एक मतलब तो इस आयत का यह हुआ। दूसरा मतलब यह है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की दुआ को तुम आपस की अपनी दुआओं की तरह न समझो, आप (ﷺ) की दुआ तो मक़्बूल व मुस्तजाब है ख़बरदार! कभी हमारे नबी (ﷺ) को तक्लीफ़ न देना, कहीं ऐसा न हो कि उनके मुँह से कोई कलिमा निकल जाए तो तुम तहस नहस हो जाओगे। (तब्री : 19/230) इससे अगले जुम्ले की तफ़्सीर में मुक़ातिल बिन हय्यान (रह.) फ़र्माते हैं जुम्अे के दिन ख़ुत्बे में बैठा रहना मुनाफ़िक़ों पर बहुत भारी पड़ता था और मस्जिद में आ जाने और ख़ुत्बा शुरू हो जाने के बाद कोई शख़्स बग़ैर हुज़ूर (ﷺ) की इजाज़त के नहीं जा सकता था जब किसी को कोई ऐसी ही ज़रूरत होती तो इशारे से आप (ﷺ) से इजाज़त ले लेता और आप (ﷺ) इजाज़त दे देते इसलिए कि ख़ुत्बे की हालत में बोलने से जुम्आ बातिल हो जाता है तो यह मुनाफ़िक़ आड़ ही आड़ में नज़रें बचाकर खिसक जाते थे। (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/231) सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं जमाअत में जब यह मुनाफ़िक़ होते तो एक दूसरे की आड़ लेकर भाग जाते, अल्लाह तआला के पैग़म्बर (ﷺ) से और अल्लाह तआला की किताब से हट जाते। सफ़ से निकल जाते ख़िलाफ़ पर आमादा हो जाते। जो लोग अम्रे रसूल का, सुन्नत का, रसूल का, फ़र्माने रसूल का, तरीक़-ए-रसूल का, शरअे रसूल का ख़िलाफ़ करें वह सज़ायाब होंगे। इंसान को अपने क़ौल फ़ेअल रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नतों और हदीसों से मिलाने चाहिएँ जो मुवाफ़िक़ हों अच्छे हैं जो मुवाफ़िक़ न हों, मर्दूद हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं जो ऐसा अमल करे जिस पर हमारा हुक्म न हो वह मर्दूद है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल अक़्ज़िया, बाब नक़्ज़ुल अहकामिल बातिलाति व रद्दु मुहदिसातिल उमूर : 1718; सहीह बुख़ारी : 2697; अबूदाऊद : 4606; इब्ने माजा : 14; अहमद : 6/240; इब्ने हिब्बान : 26 बि लफ़्ज़ि मुख़्तलिफ़) ज़ाहिर या बातिन में जो भी शरीअते मुहम्मदिया (ﷺ) के ख़िलाफ़ करे उसके दिल में कुफ़्र व निफ़ाक़ बिदअत व बुराई का बीज बो दिया जाता है या उसे सख़्त अज़ाब होता है या तो दुनिया में ही क़त्ल, क़ैद, हद वग़ैरह से या आख़िरत में अज़ाबे आख़िरत से। मुस्नद अहमद में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने आग जलाई जब वह रोशन हुई तो पतंगों परवानों का जमावड़ा हो गया और वह धड़ाधड़ उसमें गिरने लगे अब यह उन्हें हर चंद रोक रहा है लेकिन वह हैं कि शौक़ से उसमें गिरे जाते हैं और उस शख़्स के रोकने से रुक नहीं रहे। यही हालत मेरी और तुम्हारी है कि तुम आग में गिरना चाहते हो और मैं हर मुम्किन तरीक़ों से तुम्हें उससे रोक रहा हूँ कि आग में न गिरो, आग से बचो लेकिन तुम मेरी नहीं मानते और उस आग में घुसे चले जा रहे हो।'' यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में भी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्इन्तिहाउ अनिल मआसी : 6483; सहीह मुस्लिम : 2284; अहमद : 2/312; तिर्मिज़ी : 2874; इब्ने हिब्बान : 6408)

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَآ أَنتُمْ عَلَيْهِ ۖ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

तर्जुमा : "आगाह हो जाओ कि आसमान व ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह तआला ही का है जिस रविश पर तुम हो वह उसे बख़ूबी जानता है और जिस दिन यह सब उसकी तरफ़ लौटाए जाएँगे उस दिन उनको उनके किये हुए से वह ख़बरदार कर देगा। अल्लाह तआला सब कुछ जानने वाला है।" (64)

हर एक की हर हरकत को वह जानता है (आ. 64) : मालिके ज़मीन व आसमान, आलिमे ग़ैब व हाज़िर, बंदों के छुपे खुले आमाल का जानने वाला अल्लाह तआला ही है (क़द यअलमु) में (क़द) तहक़ीक़ के लिए है जैसे इससे पहले की आयत (قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ) (24/नूर : 63) में और जैसे (قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ) (33/अहज़ाब 18) में और जैसे (قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ) (58/मुजादिला : 1) में और जैसे (قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ) (6/अन्आम : 33) में और जैसे (قَدْ نَرٰى) (2/बक़रह : 144) में। और जैसे मुअज़्ज़िन कहता है (क़द क़ामतिस्सलात) तो फ़र्माता है कि जिस हाल पर तुम हो जिन आमाल व अक़ाइद के तुम हो अल्लाह पर ख़ूब रोशन है। आसमान व ज़मीन का एक ज़र्रा भी अल्लाह तआला पर छुपा हुआ नहीं। जो अमल तुम करो जो हालत तुम्हारी हो उस बारी तआला पर सब ज़ाहिर है। कोई ज़र्रा उससे छुपा हुआ नहीं, हर छोटी बड़ी चीज़ किताबे मुबीन में महफ़ूज़ है। बंदों के तमाम ख़ैरो शर्र का वह आलिम है, कपड़ों में ढक जाओ, छुप लुककर कुछ करो, हर पोशीदगी और ज़ाहिर उस पर यक्साँ हैं सरगोशियाँ और बुलंद आवाज़ की बातें उसके कानों में हैं तमाम जानदारों की चाबियाँ उसी के पास हैं जिन्हें उसके सिवा कोई और नहीं जानता। ख़ुश्की तरी की हर हर चीज़ को वह जानता है। किसी पत्ते का झड़ना उसके इल्म में है, ज़मीन की अंधेरियों के अंदर का दाना और कोई तर व ख़ुश्क चीज़ ऐसी नहीं जो किताबे मुबीन में न हो। और भी इसी मज़्मून की बहुत सी आयतें और हदीसें हैं। जब मख़्लूक़ अल्लाह तआला की तरफ़ लौटाई जाएगी उस वक़्त उनके सामने उनकी छोटी से छोटी नेकी और बुराई पेश कर दी जाएगी। तमाम अगले पिछले आमाल देख लेगा। अमलनामे को डरता हुआ देखेगा और अपनी पूरी उम्र के कारनामे उसमें पाकर हैरतज़दा होकर कहेगा कि यह कैसी किताब है जिसने बड़ी तो बड़ी कोई छोटी से छोटी चीज़ भी न छोड़ी जो जिसने किया था वह वहाँ मौजूद पाएगा। तेरे रब की ज़ात ज़ुल्म से पाक है। आख़िर में फ़र्माया अल्लाह तआला बड़ा ही दाना है हर चीज़ उसके इल्म में है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह नूर की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

मुनाजात

हकीम मुहम्मद सिद्दीक़ ग़ौरी

रब्बे-आज़म, अर्शे-आज़म पर है तेरा इस्तवा,
तू है आली, तू है आला, तू ही है रब्बुलउला।
हम्द, पाको किबरियाई मेरे सुब्हानो-हमीद,
सिर्फ़ है तेरे लिये जितनी तू चाहे किबरिया।
लामकां, बेख़ानमां, तू है नहीं हर्गिज़ रफ़ीअ
अर्श पर है तू यक़ीनन, है पता मुझको तेरा।
अर्श पर होक भी तू मेरी रगे-जां से क़रीब,
इतना मेरे पास है मैं कह नहीं सकता ज़रा।
अर्श पर है ज़ात तेरी, इल्मो-कुदरत से क़रीब,
तू हमारे पास है ऐ हाज़िरो-नाज़िर ख़ुदा।
अर्श पर है तू यक़ीनन और वह मकतूब भी
तेरी रहमत है फ़ज़ूं तेरे ग़ज़ब से ऐ ख़ुदा।
अरबों ख़रबों रहमतें हों, बरकतें लाखों सलाम,
उन पर उनकी आल पर जो हैं मुहम्मद मुस्तफ़ा।
काबिले-तारीफ़ है तू मेरे रब्बुल आलमीन,
तू है रहमानो-रहीम-मालिके-यौमे-जज़ा।
हम तुझी को पूजते हैं तू ही इक माबूद है,
हम मदद चाहते नहीं हर्गिज़ कभी तेरे सिवा।
तू है ज़ाहिर, तू है बातिन, अव्वलो-आख़िर है तू,
फ़क़र भी तू दूर कर दे, क़र्ज़ भी या रब मेरा।
मैं ज़मीनो-आसमां पर डालता हूं जब नज़र,
कोई भी पाता नहीं हूं मैं ख़ुदा तेरे सिवा।
चाँद-तारे दे रहे हैं अपने सानेअ की ख़बर,
तेरी कुदरत से अयां है बिलयक़ीन,होना तेरा।
मैं तुझे कुछ जानता हूं, तेरे कुछ औसाफ़ भी,
तू क़यामत में भी होगा जाना-पहचाना मेरा।
तू मेरा ज़ाकिर रहे मैं भी रहूं ज़ाकिर तेरा,
हो ज़मी पर ज़िक्र तेरा आसमां में हो मेरा।
क़ल्बे-मुज़्तर को सुकूं मिल जाये तेरी याद से,
और तेरे ज़िक्र से हो मुत्मइन ये दिल मेरा।
रोज़ो-शब, सुब्ह मसा, आठों पहर, चौसठ घड़ी,
तू ही तू दिल में हरे कोई न हो तेरे सिवा।
मैं हमेशा याद रक्खूं अपनी मजलिस में तुझे,
तू भी मुझको याद रक्खे अपनी मजलिस में सदा।
बन्द तेरी याद से मेरी ज़ुबां या रब न हो,
मरते दम तक, मरते दम भी ज़िक्र हो लब पर तेरा।
ज़िन्दगी दुश्वार हो तेरी मुहब्बत के बग़ैर,
माही-ए-बेआब हो बे-ज़िक्र ये बन्दा तेरा।
मैं दुआ के वक़्त तुझ से इतना हो जाऊं क़रीब,
गोया तहतुल अर्श में हूं तेरे क़दमों में पड़ा।
हालते सद-यास में भी ऐ ख़ुदा तेरी क़सम,
जी न हारूं और मैं करता रहूं तुझसे दुआ।
बह रही हो मेरी आँखें मेरी गर्दन हो झुकी,
नाक नगड़े, पस्त होकर, तुझसे मैं मांगू दुआ।
तेरे आगे आजिज़ाना, दस्त बस्ता,सर नगूं,
मैं रहूं या रब खड़ा भी तेरे क़दमों में पड़ा।
हर मेरी ऐसी दुआ हो तेरी नेअमत की क़सम,
जैसे कोई तीर हो अपने निशाने पे लगा।
हर मेरी ऐसी दुआ हो जिससे टल जाएं पहाड़,
ग़ार वालों से भी बढ़कर तेरी रहमत से ख़ुदा।
हर मेरी तौबा हो ऐसी जो अगर तक़्सीम हो,
तेरे बन्दों पर तो बख़्शे जाएं लाखों बे-सज़ा।
नेकियों में तू बदल दे और उनको बख़्श दे,
उम्र भर के अगले पिछले सब गुनाहों को ख़ुदा।
हज मेरे मबरूर हो सब कोशिशें मशकूर हों,
दे तिजारत तू भी वह जिमें न हो घाटा ज़रा।
तेरी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हो मेरी कुल ज़िन्दगी,
खाना-पीना, चलना फिरना, बैठना उठना मेरा।
जो क़सम खाई या खाऊं तुझ पे करके ऐतमाद,
मअ फ़लाहे दोजहां के साथ पूरी हो ख़ुदा।

मैं न छोडूं, मैं न छोड़ूं संगे-दर तेरा कभी,आ गया हूं,
आ पड़ा हूं, तेरे दर पर ऐ ख़ुदा ।
हर नज़ाई कोई शय हो मैं तेरी तौफ़ीक़ से,
सिर्फ़ चाहूं तुझसे या तेरे नबी से फैसला ।
ऊम्र भरे मेरी नज़र इस पर रहे हो जुस्तजू,
तूने या रब क्या कहा? मुस्तफ़ा ने क्या कहा?
आख़िरत में अपनी या रब कितनी ही मख़लूक़ पर,
मुझ को मेरी आल को तू फ़ौक़ियत करना अ़ता ।
उम्र मेरी आख़िरी है दिन है मरने के क़रीब,
मैं रहूं गिरयां के तू ख़न्दां मिले मुझसे ख़ुदा ।
फ़ज़्ल फ़र्मा मरते दम तक मैं रहूं इस हाल में,
तुझ से हो उम्मीद बेहद डर भी हो मुझको तेरा ।
मैं रहूं बेचैन बेहद तुझसे मिलने के लिये,
जान जब निकले तो तड़पे कब वह हो तन से जुदा ।
मौत की ताख़ीर भी हो मौत ही मेरे लिये,
हो दमे-आख़िर मुझे इतना तेरा शौक़े-लिक़ा ।
बख़्श दे तू, रहम कर, आला रफ़ीक़ों से मिलूं,
हो मुझे उस वक़्त बेहद शौक़ मिलने का तेरा ।
क़ौल साबित पर रहूं साबित ख़ुदाया हो नसीब,
ला इलाहा इल्ला अन्तल्लाह पे मरना मेरा ।
आख़री हिचकी मुझे दे तेरी रहमत की ख़बर,
आँख जब बन्द हो तो देखूं तेरी जन्नत की फ़िज़ां ।
तेरी रहमत की तरफ़ हो मेरा दुनिया से ख़ुरूज,
जांकनी के वक़्त पाऊं मुज़दा हाए जांफ़िज़ा ।
क्या मेरा मस्कन ज़मीनों-आसमां तक रो पड़े,
मेरे मरने पर ख़ुदाया अ़र्श हिल जाए तेरा ।
रब्बे राज़ी की तरफ़ चल हो के राज़ी तू निकल,
रूह से मेरी फ़रिश्ते यह कहे वक़्ते क़ज़ा ।
तेरी रहमत के फ़रिश्ते मुझको लेने के लिये,
आएं वह, लेकर चढ़ें, मुझको जहां है तू ख़ुदा ।
रूह का आसमां में हो फ़रिश्तों पर वरूद,
हो यही उनकी सदाएं मरहबा सद मरहबा ।

क़द्दे मुनी, क़द्दे मुनी ले चलो जल्दी चलो,
जब जनाज़ा ले चलें कहता रहे बन्दा तेरा ।
तू मुसल्ली हो मलाइक भी तेरे हों बिलख़ुसूस,
मुझ ग़रीबो-बेनवा का जब जनाज़ा हो पड़ा ।
हो मेरा मस्कन वहां, तुझ को जहां भी हो पसन्द,
जो ज़मीं हो तुझको पियारी वह बने मदफ़न मेरा ।
कर चुके जब दफ़्न मुझको आए मुन्कर नकीर,
रब्बे सब्बित रब्बे सब्बित हो लब पर ऐ ख़ुदा ।
क़ब्र हो मुश्ताक़ मेरी उसका बेहतर हो सुलूक,
पाऊं मैं आग़ोशे मादर की तरह उसको ख़ुदा ।
ज़िन्दगी के इस सफ़र में तू मेरा साहिब रहे,
कुल मेरे पसमान्दगां में तू ख़लीफ़ा हो मेरा ।
तू सफ़र में भी हज़र में भी क़ब्र में भी हश्र में,
मेहरबां मुझ पर रहे बेहद निगहबां भी मेरा ।
जांकनी हो, क़ब्र हो या हश्र हो या पुल-सिरात,
सहल तेरे फ़ज़्ल से हो मरहला इक इक मेरा ।
रब्बे सल्लिम रब्बे सल्लिम हसबुना नेअ़मुल वकील,
हश्र के कुल मरहालों में हो यही कलमा मेरा ।
रोज़े महशर हो तेरे रूए मुबारक पर नज़र,
जब तेरी पिण्डली खुले सज्दे में हो बन्दा तेरा ।
अ़र्श का साया मिले सातों तरह से हश्र में, मुझको,
मेरी आल को जो हो क़यामत तक ख़ुदा ।
गो पलक झपके न झपके मुझसे तै हो पुल-सिरात,
इस कठिन मंज़िल में मेरी मेरे मौला काम आ ।
जल्द इसको पार कर यह सर्द कर देगा मुझे,
जब जहन्नुम पर से गुज़रूं वह कहे तुझको ख़ुदा ।
आएगा बन्दा तेरा इक दिन कफ़न पहने हुए,
तेरे आगे, बख़्श देना आफ़ियत करना अ़ता ।
रास्ता सीधा दिखा, इन्आ़म कर हम पर मदाम,
उम्मते-अहमद में मुझको ख़ास दर्जा कर अ़ता ।
उम्र भर की कुल ख़ताएं उनकी ग़ाफ़िर बख़्श दे,
तू मेरे माँ-बाप की कर मग़्फ़िरत बेइन्तिहा।

●